राजस्थानी कहावत कोश

राजस्थानी कहावत कोश

सम्पादक :

भागीरथ कानोड़िया

गोविन्द अग्रवाल

पंचशील प्रकाशन, जयपुर

प्रकाशक : पंचशील प्रकाशन
फिल्म कालोनी, जयपुर–302003

मूल्य : साठ रुपये

संस्करण : प्रथम,

मुद्रक : शीतल प्रिंटर्स
फिल्म कालोनी, जयपुर–302003

RAJASTHANI KAHAWAT KOSH

Edited by Bhagirath Kanoria
Govind Agrawal

Price Rs. 60.00

आमुख

लोक संस्कृति शोध संस्थान, नगर–श्री, चूरू के यशस्वी लेखक श्री गोविन्द अग्रवाल ने एक और महत्त्वपूर्ण कृति साहित्य-जगत को प्रेषित की है। यह है, 'राजस्थानी कहावत कोश'।

कहावत या लोकोक्ति लोक-क्षेत्र की अपूर्व वस्तु है। रेवरेंड जेम्स लौंग ने सन् १८७५ में Oriental Proverbs में लिखा था—लोकोक्ति या कहावत नीचे गहराइयों से उछाली हुई स्फुलिंग है। लार्ड बेकन ने लिखा है कि किसी जाति की प्रतिभा, आत्मा और वाक्–वैदग्ध्य उसकी लोकोक्तियों में से उद्घाटित होता है।

लौंग की पुस्तक के ग्यारह वर्ष बाद सन् १८८६ में प्रकाशित एस. डब्ल्यू. फैलन की पुस्तक, A Dictionary of Hindustani Proverbs की भूमिका में टेम्पल महोदय ने लिखा कि,

"स्पेन की तरह भारत भी कहावतमय वार्त्तालापी देश है। कहावतें प्रमाण भी हैं एवं उनका उपयोग निरन्तर होता है और अनंत होता है। यहां के निवासी कहावतों का उपयोग दैनिक बात-चीत में, वाणिज्य-व्यवसाय में सामाजिक पत्राचार में और जीवन की विविध प्रवृत्तियों में, यहाँ तक कि न्यायालयों में भी करते रहते हैं।"

इसमें सन्देह नहीं कि भारत कहावतों का देश है। इन कहावतों का पहला संग्रह भी फैलन महोदय ने ही प्रस्तुत किया। फैलन महोदय के उक्त कहावत कोश को इधर सन् १९६८ (मार्च) में नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया ने देवनागरी लिपि में प्रस्तुत किया। इसके प्रकाशकीय वक्तव्य में श्री बालकृष्ण केसकर महोदय ने बताया है कि फैलन के पहले इस प्रकार की कोई कृति हिन्दी भाषा के सम्बन्ध में मौजूद नहीं थी। यह स्मरण रहे कि फैलन ने इस कोश में मारवाड़ी, पंजाबी, मराठी, भोजपुरी और तिरहुती कहावतों, प्रचलित वाक्य-खण्डों, सूत्रों एवं नीति-वाक्यों का संग्रह किया। इस प्रकार बहुत कुछ जो अन्यथा नष्ट होता, बच गया। कहावतों और मुहावरों में इतिहास के बहुत से तथ्य जीते चले जाते हैं। जिस इलाके में कहावत प्रचलित है, कई बार उसके इतिहास, रीति–नीति पर इन कहावतों, मुहावरों से नई रोशनी पड़ती है।

फैलन के बाद इस ग्रन्थ का संपादन और परिशोधन कप्तान आर सी. टेम्पल महोदय ने किया। उन्होंने दिल्ली निवासी लाला फकीरचंद वैश की सहायता ली, जो बंगाल सरकार के प्रथम उर्दू सहायक अनुवादक थे।

यह 'कोश' अकारादि क्रम से प्रस्तुत किया गया है। इस हिन्दी संस्करण का सम्पादन हिन्दी लोक-साहित्य के जाने-माने विद्वान् श्री कृष्णानंद गुप्त ने किया है। तो, फैलन महोदय का यह कोश हिन्दी-हिन्दुस्तानी कहावतों का पहला कोश है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि फैलन ने मार्ग-दर्शक कार्य किया। इसके बाद हिन्दी क्षेत्र में ही बहुत काम हुआ है, यद्यपि इस क्षेत्र में अभी बहुत करना शेप भी है।

राजस्थान भी इस क्षेत्र में पीछे नहीं रहा और राजस्थानी कहावतों के कतिपय संग्रह भी प्रकाशित हो चुके हैं। साथ ही यह बात भी ध्यान आकर्षित करती है कि राजस्थान के और भी कई क्षेत्र अभी ऐसे पड़े हुए हैं जो किसी संग्रह कर्त्ता की बाट जोह रहे हैं जैसे मेवाती बोली की कहावतें, जयपुरी की कहावतें, शेखावाटी की कहावतें, भरतपुर–करौली की कहावतें आदि आदि।

राजस्थानी कहावतों पर प्रथम शोध कर्त्ता विद्वान् डॉ० कन्हैयालाल सहल से सभी परिचित हैं। अब यह 'राजस्थानी कहावत कोश' पाठकों के सामने है। इसके संपादक हैं श्री गोविन्द अग्रवाल एवं श्री भागीरथ कानोड़िया।

यों तो श्री भागीरथ कानोड़िया जैसे लोक–वार्त्ता और लोक–साहित्य के महान् धनी का आशीर्वाद भी मिल जाता तो भी कार्य की सम्पन्नता में चार चांद लग जाते, किन्तु यहां तो वे स्वयं भी एक सम्पादक हैं, अतः इसमें संदेह के लिए स्थान नहीं रहा कि कोश बहुत उपयोगी सिद्ध होगा।

फिर, श्री गोविन्द अग्रवाल स्वयं लोक–संस्कृति और इतिहास के क्षेत्र में बहुत उपयोगी कृतित्व दे चुके हैं और बहुत यश अर्जित कर चुके हैं। इस कोश का काम उन्होंने एक संपादक के रूप में संपन्न किया है, यह एक और ठोस उपलब्धि उनके यश–वर्द्धक कार्यों से जुड़ी है।

इनका यह कार्य ऐसा है कि वस्तुतः इसे किसी भूमिका की आवश्यकता नहीं थी। इस कोश में ३२०९ कहावतें एवं लगभग ३५० संदर्भ कथाएँ भी यथा-स्थान दी गई हैं। ये संदर्भ कथाएँ इस कोश की उपयोगिता को और बढा देती हैं। साथ ही जिस कहावत के रूपान्तर या पाठान्तर मिलते हैं, वे भी दे दिये गये हैं। अर्थ भी सरल भाषा में दिये गये हैं। इस प्रकार संपादकों ने इसे सर्वतोभावेन उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया है। मेरी दृष्टि में यह अभिनंदनीय कार्य है।

मुझे पूरा भरोसा है कि इस कोश का अच्छा स्वागत होगा।

४ न २६,
जवाहर नगर, जयपुर

डॉ० सत्येन्द्र

दो शब्द

कहावतें या लोकोक्तियां अत्यन्त प्राचीन काल से ही संसार की विभिन्न भाषाओं में चलती आ रही हैं एवं इनका क्षेत्र बड़ा व्यापक रहा है। भारत के अन्य प्रदेशों की तरह राजस्थान में भी कहावतों का विपुल भण्डार है। ये कहावतें बड़ी सजीव तथा सार्थक हैं और देश-विदेश की किसी भी भाषा की कहावतों से होड़ लेने में समर्थ हैं।

राजस्थान शताब्दियों तक विभिन्न राजनीतिक इकाइयों में बटा रहा है, अतः स्थान एवं बोली भेद के कारण इन कहावतों के स्वरूप में थोड़ा-बहुत अन्तर अवश्य परिलक्षित होता है। प्रस्तुत संग्रह में मुख्य रूप से राजस्थानी कहावतों के चूरू एवं शेखावाटी क्षेत्र में प्रचलित स्वरूप को ही लिया गया है।

इस संग्रह में खेती-पाती, व्यापार-वाणिज्य, खान-पान, वेश-भूषा, पर्व-त्यौहार, रीति-रिवाज, पशु-पक्षी, घर-परिवार एवं देश और समाज आदि विभिन्न पहलुओं से सम्बन्धित कहावतें हैं जिनमें मानव-जीवन के कड़वे-मीठे अनुभव समाये हुए हैं।

सुदीर्घ काल से ये कहावतें लोक-मुख पर आसीन रह कर ही पीढी दर पीढी अपनी मंजिलें तय करती आ रही हैं। लेकिन अब इनका मार्ग अवरुद्ध होने लगा है और ये तेजी से विस्मृति के गर्त में समाती जा रही हैं। आधुनिक शिक्षा-प्रणाली के कारण आज का छात्र एवं युवा वर्ग इन कहावतों से कटता जा रहा है। पिछली पीढी के लोगों को जितनी कहावतें याद थीं, उतनी वर्तमान पीढी को नहीं हैं और जितनी वर्तमान पीढी को याद हैं, उतनी भावी-पीढी को याद नहीं रहेंगी। इसलिए लोक-मुख पर अवस्थित जितनी भी कहावतें लिपिबद्ध हो सकें उतना ही श्रेयस्कर है।

राजस्थान के जो लोग इस प्रदेश को छोड़कर अन्यत्र चले गये हैं और वहीं बस गये हैं, वे भी इन कहावतों के माध्यम से राजस्थान की धरती एवं यहां के जन-जीवन के साथ अपना सम्पर्क बनाये रख सकेंगे, राजस्थान की स्मृतियों को संजोये रख सकेंगे, ऐसी आशा है।

इन्हीं सब बातों को दृष्टिगत रखते हुए यह 'राजस्थानी कहावत कोश' प्रस्तुत किया जा रहा है। यदि यह आंशिक रूप में भी अपने उद्देश्य की प्राप्ति कर सका तो हम अपने प्रयत्न को सफल समझेंगे।

प्रस्तुत कहावत कोश में ३२०६ कहावतें दी गई हैं एवं अधिकांश कहावतों के सरल अर्थ या भावार्थ भी दे दिये गये हैं। लगभग ३५० कहावतों की सन्दर्भ कथाएँ भी संक्षेप में दी गई हैं, जिससे सम्बन्धित कहावत का आशय पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है। इनमें एक-दो प्रतिशत कहावतें ऐसी भी हैं जिनका भाव हमारे लिए भी एकदम स्पष्ट नहीं था, लेकिन ऐसी कहावतों के अर्थ खींच-तान कर बिठाने की चेष्टा नहीं की गई है। कहावत और मुहावरे का चोली-दामन का साथ है अतः सम्भव है कि एक-दो प्रतिशत मुहावरे भी इस कोश में प्रवेश पा गये हों।

यद्यपि प्रूफ संशोधन में पर्याप्त सावधानी बरती गई है, तथापि डाक द्वारा प्रूफ आने-जाने की व्यवस्था के कारण हम स्वयं केवल एक बार ही प्रूफ देख पाये हैं, अतः प्रूफ विषयक जो भी भूलें इस कोश में रह गई हों, उन्हें विज्ञ पाठक सुधार लेने की कृपा करेंगे।

प्रस्तुत कोश से पूर्व भी राजस्थानी कहावतों के कुछ संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। यद्यपि ये सभी कहावत-संग्रह हमारे देखने में नहीं आये, तथापि जिन प्रकाशित पुस्तकों या पत्र-पत्रिकाओं से सहायता ली गई है उनकी सूची अन्त में दे दी गई है।

लोक-साहित्य के मूर्द्धन्य विद्वान् श्रद्धास्पद डा० सत्येन्द्रजी ने प्रस्तुत कोश की भूमिका लिख देने की कृपा की है, इसके लिए हम उनके अत्यन्त कृतज्ञ हैं। प्रूफ संशोधन में चि० नन्दकिशोर अग्रवाल (सुपुत्र श्री गोविन्द अग्रवाल) ने पूरा समय व सहयोग दिया है।

भागीरथ कानोड़िया

गोविन्द अग्रवाल

१. **अंगड़ाई सासरै जावै जिकी के न्हाल करै ?**

अनिच्छा और मजबूरी से ससुराल जाने वाली स्त्री भला क्या निहाल करेगी। वे मन और दबाव से किया गया काम सन्तोषप्रद नहीं होता।

२. **अंजळ वड़ो बलवान।**

दाना-पानी बड़ा बलवान होता है। जहां का दाना-पानी लिखा होता है, मनुष्य को वहीं जाना पड़ता है।

कित कासी कित कासमीर, खुरासाण गुजरात।
दाणों पाणी परसराम बांह पकड़ लेजात।

रू० अंजळ वड़ो बलवान, काळ वड़ो सिकारी।

३. **अंत भलै को भलो।**

दूसरों की भलाई करने वाले का अन्त में भला ही होता है।

रू० अंत बुरै को बुरो।

४. **अंत भलो सो भलो।**

जिसका अन्त सुधर जाए, वही भला है।

५. **अंत मता सो गता।**

अंतिम समय में जिसकी जैसी मति होती है, उसी के अनुसार उसकी गति होती है।

सन्दर्भ कथा—एक स्त्री बाल-विधवा थी, केवल हथलेवे की गुनहगार। उसने अपनी सारी जिन्दगी संयम से बिता दी, किसी पुरुष के हाथ का स्पर्श भी नहीं होने दिया। जब उसका अंतिम समय निकट आया तो उसे दिखलाने के लिए किसी वैद्य को बुलवाया गया। वह चाहती थी कि वैद्य उसका स्पर्श न करे, लेकिन असमर्थता के कारण बोल नहीं पाई। वैद्य ने नब्ज देखने के लिए उसका हाथ पकड़ा तो स्त्री को अत्यधिक आनन्द की अनुभूति हुई। उसने मन ही मन पश्चाताप करते हुए कहा कि पुरुष से अलग रह कर वह संसार के सबसे बड़े आनन्द से वंचित रही है। इसी विचार के साथ उसके प्राण-पखेरू उड़ गये और अपनी अन्तिम भावना के अनुरूप वह अगले जन्म में एक सुन्दर लड़की के रूप में एक वेश्या के घर जन्मी।

६. **अद का फंद गोविन्द जाणै, गोविन्द का फंद कोई न जाणै।**

रू० नंद का फंद गोविन्द (श्रीकृष्ण) जाणै, गोविन्द का फंद कोई न जाणै।

७. **अंधाधुंध की सायबी, घटा टोप को राज ।**
अन्धाधुन्ध शासन करने वाले के राज्य में अन्धेर गर्दी और अराजकता की काली घटायें ही घिरी रहती हैं ।

८. **अंधाधुंध कै राज में गधा पंजीरी खाय ।**
जिस राज्य में अन्धेर गर्दी हो, वहां सर्वथा निकम्मे व्यक्ति ही गुलछर्रे उड़ाते हैं ।

९. **अन्धेर नगरी, चौपट राजा । टके सेर भाजी, टके सेर खाजा ।**

सन्दर्भ कथा—एक वार कोई साधु अपने चेले के साथ ऐसी ही किसी अंधेर नगरी में आ गया, जहां हर वस्तु टके-सेर विकती थी । गुरु ने चेले से कहा कि यहां रहना ठीक नहीं । लेकिन चेला पेटू था, अतः टके सेर वाली वात उसे वहुत भाई । गुरु तो अन्यत्र चला गया और चेला वहीं रह गया तथा मनचाही चीजें खा-खाकर मुस्टण्डा वन गया ।

एक दिन नगर में किसी मकान की दीवार गिर जाने से किसी गडरिये की भेड़ दव कर मर गई तो गडरिये ने राजा के पास शिकायत की । राजा ने मकान मालिक को वुलवाया, लेकिन उसने कहा कि राज ने दीवार मजवूत नहीं वनाई । इसलिए उसे ही दण्ड मिलना चाहिए, मैं तो निर्दोष हूं । यूं करते-कराते वात मन्त्री पर आकर रुकी । वह कोई माकूल जवाव नहीं दे पाया, अतः राजा ने मंत्री को फाँसी पर लटकाने का आदेश दे दिया । लेकिन मन्त्री दुवला-पतला था, इसलिए फँदा उसके गले में फिट नहीं बैठा । पर चूंकि किसी न किसी को दण्ड दिया जाना आवश्यक था । इसलिए राजा ने हुक्म दिया कि फँदा जिसके गले में ठीक वैठे, उसे ही फाँसी दे दी जाये ।

इस पर राज कर्मचारी उक्त चेले को पकड़ लाये । अव चेले को अपनी भूल ज्ञात हुई । उसने गुरु का स्मरण किया । गुरु तत्काल ही वहां पहुँच गया और सारी स्थिति जान कर उसने चेले के कान में कुछ कहा । इसके वाद दोनों फाँसी के तख्ते पर चढ़ने के लिए परस्पर झगड़ने लगे । गुरु कहता था कि मैं फाँसी के तख्ते पर चढूंगा और चेला कहता था कि मैं चढूंगा । राजा के पूछने पर गुरु ने कहा कि महाराज ! इस समय ऐसा उत्तम मुहूर्त्त है कि जो इस मुहूर्त्त में फाँसी पर चढेगा वह सीधा स्वर्ग को जाएगा । इस पर राजा ने उनसे कहा कि तव तो मैं स्वयं ही फाँसी पर लटकूंगा, तुम दोनों वहां से अलग हट जाओ । इतना सुनते ही गुरु-चेला तो वहां से तत्काल चम्पत हो गये और राजा फाँसी पर लटक गया ।

१०. **अंधेरी रात में मूंग काळा ।**
अंधेरी रात में हरे मूंग भी काले दिखलाई पड़ते हैं ।
अज्ञान के अंधेरे में वस्तुस्थिति का सही ज्ञान नहीं हो पाता ।

११. **अंधेरै में गासियो किसौ कान में जावै ।**
चाहे कितना ही अन्धेरा हो, हाथ का ग्रास मुँह में ही जाता है, कान में नहीं । मनुष्य हर परिस्थिति में अपने स्वार्थ के प्रति सजग रहता है ।

१२. **अंवळचंडी रांड, खावै लूण बतावै खांड ।**
औंधी खोपड़ी की बेढंगी रांड करती कुछ है, कहती कुछ है ।

१३. **अकास में बीजळी चिमकै, गधेड़ो लात बावै ।**
आकाश में बिजली चमकती है और गधा दुलत्ती चलाता है ।
निरर्थक आक्रोश का प्रदर्शन करना ।

१४. **अकास सें पड़ी, खिजूर में अटकी ।**
आकाश से तो गिरी लेकिन खजूर में अटक गई ।
संकटों पर संकट की स्थिति ।

१५. **अकूरड़ी पर किसौ आम कोनी ऊगै ?**
क्या घूरे पर कभी आम का पौधा नहीं उगता ?
कभी कभी निकृष्ट व्यक्ति के घर भी श्रेष्ठ औलाद पैदा हो जाती है ।

१६. **अक्कल अर अक्खड़ एक घर कोनी खटावै ।**
बुद्धिमान एवं उद्धत या निर्बुद्धि का निर्वाह एक स्थान में नहीं हो पाता ।

१७. **अक्कल आप में अर धन दूसरां कनै घणो दीखै ।**
आदमी को अक्ल अपने में और धन दूसरों के पास अधिक दिखलाई पड़ता है ।

१८. **अक्कल उधारी कोनी मिलै ।**
अक्ल उधार नहीं मिलती ।

१९. **अक्कल उमर आसरै कोनी होवै ।**
अक्ल सदैव उम्र पर निर्भर नहीं करती । छोटी अवस्था वाले बालक बुद्धिमान एवं बड़ी उम्र वाले वृद्ध भी निर्बुद्धि हो सकते हैं ।

२०. **अक्कल की पांती कोनी होवै ।**
भाई या साझेदार अलग-अलग होते समय चल-अचल सम्पत्ति का बँटवारा तो करवा लेते हैं, लेकिन अक्ल का बँटवारा नहीं करवा सकते । वह जिसके पास होती है, उसी की रहती है ।

२१. **अक्कल कै बळ नै सरीर को बळ कोनी नावड़ै ।**
बुद्धि की ताकत को शरीर की ताकत नहीं पा सकती ।

२२. **अक्कल कोई कै बाप की कोनी ।**
अक्ल किसी की वपौती नहीं ।

२३. **अक्कल को न दाणो, मन में भोत स्याणो ।**
निपट ना-समझ व्यक्ति भी अपने आप को बड़ा बुद्धिमान समझता है ।

२४. **अक्कल को मोल है ।**
अक्ल की कीमत होती है ।
रू० १. अक्कल की पूछ है, आदमी की कोनी ।
२. अक्कल को खाणों है ।

२५. **अक्कल तो आई, पण आई धणी मरयां पीछै ।**
औरत को अक्ल तो आई, लेकिन पति के मरने के वाद ।
विनाश हो चुकने के वाद समझ आने से कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता ।

२६. **अक्कल तो आपकी ही आडी आवै ।**
समय पर अक्ल तो अपनी ही काम आती है ।

संदर्भ कथा—एक दिन किसी वात के सिलसिले में मंत्री ने राजा से कह दिया कि अक्ल तो अपनी ही काम देती है। इस वात की परीक्षा लेने के लिए राजा ने मन्त्री को नगर के वाहर के ऊंचे वुर्ज में वन्द कर दिया और कह दिया कि तुम अपनी अक्ल के वल पर ही वुर्ज से निकलना ।

वुर्ज में केवल एक छोटा सा झरोखा था । मंत्री ने उसमें से झांक कर देखा तो उसे वुर्ज के पास से ऊंटों की एक कतार गुजरती हुई दिखलाई पड़ी । उसने कतार के मालिक को पुकार कर पास वुलाया और उससे कहा कि तुम एक लम्वी और मजवूत रस्सी यहां रख दो, उसके सिरे पर एक पतली रस्सी वांध दो तथा पतली रस्सी के साथ कपड़े के एक टुकड़े को वांध कर उस पर कुछ चीनी भिगो कर छिड़क दो । कतार का मालिक मन्त्री को जानता था । इसलिए उसने मन्त्री के कहे अनुसार कर दिया और अपनी कतार को लेकर आगे वढ़ गया ।

थोड़ी ही देर में वहुत सारी चींटियां कपड़े पर लगी चीनी पर जुट गई और कपड़े को खींचती हुई वुर्ज की दीवार पर चढ़ने लगीं । कपड़े के साथ पहले पतली रस्सी और फिर मोटी रस्सी भी ऊपर खिसकने लगी । अन्त में रस्सी वुर्ज के ऊपर पहुँच गई । मन्त्री उस रस्सी को वुर्ज की दीवार से वांध कर उसके सहारे नीचे उतर आया और उसने राजा के सामने यह सिद्ध कर दिखाया कि अक्ल अपनी ही काम आती है ।

२७. **अक्कल दुनियां में ड्योढ ई है, एक आप में अर आधी दुनियां में ।**
समूची दुनिया में अक्ल डेढ ही है, एक स्वयं अपने में और आधी शेष संसार में ।
हर आदमी अपने आपको ही सवसे अधिक अक्लमँद समझता है ।

२८. **अकल न वाड़ी नीपजै, हेत न हाट विकाय ।**
अक्ल वाड़ी में उत्पन्न नहीं होती और प्रेम वाजार में मोल नहीं विकता ।

३८. **अगम बुद्धि वाणियों, पिच्छम बुद्धि जाट ।**
तुरत बुद्धि तुरकड़ो, बामण सम्पट पाट ।।

३९. **अग्रे अग्रे ब्राह्मणाँ, नदी नाळा वरजन्ते ।**
लाभप्रद कार्यों में ब्राह्मण सबसे आगे, लेकिन हानि व खतरे के काम में पीछे।

४०. **अजगर पड़्यो उजाड़ में,दाता देवण हार ।**
अजगर जङ्गल में पड़ा रहता है, कोई उद्यम नहीं करता, फिर भी भगवान् उसका भरण-पोषण करते हैं ।

पद्य— १. इजगर पूछै विजगरा, कहा करत हो मित ।
पड़्या रहां हां धूळ में, हरी करत है चित ।।
२. अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम ।
दास मलूका कथ गये, सब के दाता राम ।।

४१. **अजमेरी घालै जिकै नै चैरासाही त्यार है ।**
न्योते में अजमेरी रुपया देने वाले के लिए वदले में 'चेहराशाही' रुपया तैयार है ।
(अजमेरी रुपये की कीमत चेहराशाही रुपये से लगभग आधी होती थी ।)

४२. **अटकळ सैं काम होवै जिसौ बळ सैं कोनी होवै ।**
युक्ति से जिस सहजता से काम वन जाता है, वैसा वल से नहीं वन पाता ।

४३. **अटकै सो भटकै ।**
जो अटक जाता है, वह लक्ष्य से भटक जाता है । गतिशील लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है ।
जिसका काम अटक जाता है, वह सहायता की आशा में दूसरों के द्वारों पर चक्कर लगाता है ।

४४. **अटक्यो बो'रो उधार दे ।**
जिस बोहरे की रकम क़र्ज़दार में अटक जाती है, उसे वसूल करने की ग़रज़ से वह और भी उधार देता है ।

४५. **अट्टा सट्टा करणियों भूख कोनी मरै ।**

संदर्भ कथा—एक गाँव में एक ठाकुर अपने परिवार सहित रहता था। उसकी माली हालत बहुत ही नाजुक थी । उसके दो युवा पुत्र भी थे । लेकिन दोनों ही कुँआरे थे । एक तो गरीबी के कारण कोई लड़की वाला उनके यहां आता ही नहीं था और कोई भूला-भटका आ भी जाता तो दो चार चुगलखोर काम नहीं बनने देते थे ।

एक दिन किसी दूर के गाँव के दो ठाकुर अपनी लड़कियों के सम्बन्ध करने हेतु उक्त ठाकुर के घर आये । मेहमानों के लिए घर में कुछ था नहीं, लेकिन उनकी आव-भगत करनी जरूरी थी । इसलिए दोनों लड़कों ने उन्हें

आदर सहित चौपाल में बिठाया और बोले—आजकल गांव में चोरियां बहुत होती हैं, इसलिए आपकी तलवारें हमें दे दीजिए तो उन्हें अन्दर सुरक्षित कर में रख दें। उन्होंने तलवारें दे दीं।

ये लोग तलवारों को गिरवी रखकर उनके लिए खाने-पीने का सामान मोदी की दुकान से ले आये और उन्हें भोजन कराने के लिए पड़ोसी सेठ के यहां से दो थाल, गिलास व कटोरियां भी मांग कर ले आये। आगन्तुक ठाकुरों ने छक कर भोजन किया। इसी बीच दो चुगलखोर वहां पहुंच गये। उन्होंने उन ठाकुरों को अपने गांव वाले ठाकुर के सम्बन्ध में अनेक बातें कहीं और यह भी कहा कि दोनों लड़के तुम्हारी तलवारें गिरवी रख कर भोजन का सामान लाये हैं, विश्वास न हो तो अपनी तलवारें मांग देखिये। आगन्तुक ठाकुरों ने अपनी तलवारें मांगीं तो लड़कों ने सेठ वाले बर्तन लाकर रख कर के गिरवी रख दिये और तलवारें लाकर ठाकुरों को दे दीं। चुगलखोरों ने पुनः उनसे कहा कि ये लोग सेठ के बर्तन गिरवी रख कर तलवारें लाये हैं। इस पर आगन्तुकों ने उनसे कहा कि जो लड़के इस प्रकार अट्टा-सट्टा (उलट-पुलट) करने में माहिर हैं, उनके घर आकर हमारी लड़कियां भूखों नहीं मर सकतीं। यों कह कर उन्होंने नारियल आदि देकर दोनों के सम्बन्ध पक्के कर दिए।

४६. **अठीनली छायां वठीनै आयां सरै।**
इधर की छाया उधर आती ही है।
उत्थान-पतन अवश्यंभावी है।

४७. **अठीनै पड़ै तो कूवो, वठीनै पड़ै तो खाड।**
इधर पड़े तो कुआं, उधर पड़े तो खड्ड।
तु० इन्नै पड़ां तो कूवो, बिन्नै पड़ां तो खाई।

४८. **अठै इस्यो गुड़ गीलो कोनी, जिको माख्यां ई चाटज्या।**
यहां ऐसी उदारता नहीं कि हर आदमी उसका फायदा उठाले।
यहां ऐसी पोल नहीं कि हर कोई अपना उल्लू सीधा करले।

४९. **अठै ई रेवड़ को रेवाड़ो अर अठै ई ना'रिये की घुरी।**
यहीं भेड़ बकरियों के रहने का स्थान और यहीं भेड़िये की मांद।
भक्ष्य के लिए भक्षक का पड़ौस सुरक्षित और सुखदायी नहीं हो सकता।

५०. **अठै चाव है, जैको वठै भी चाव है।**
जिसकी यहां दरकार है, उसकी परमात्मा के घर भी दरकार है।

५१. **अठै टर वठै टर, तेरै खातर छोड़दयूं घर?**
यहां भी टरें, वहां भी टरें, तो क्या तेरे लिए घर ही छोड़ दूं?

संदर्भ कथा—एक गडरिया भेड़-बकरियां चराने हेतु जंगल में जाया करता था। दोपहर की रोटी अपने साथ ले जाता और रोटी खाकर पास के तालाव पर पानी पी लिया करता। एक दिन जैसे ही उसने पानी पीना चाहा, एक मेंढक जोरों से टर्र-टर्र वोल उठा। वेचारा गडरिया डर गया कि न जाने क्या वला है। वह प्यासा ही घर की ओर दौड़ पड़ा। घर आकर जैसे ही पानी पीने को हुआ तो यहाँ भी घड़े के पीछे वैठे हुए मेंढ़क ने जोरोंसे टर्र-टर्र की आवाज की। लेकिन इस वार उसने मेंढ़क को देख लिया और समझ गया कि यही टर्र-टर्र कर रहा है, अत: वह वोल पड़ा—

अठै टर वठै टर, तेरै खातर छोड़दयूं घर ?

५२. **अठै अैयां वठै वैयां, ओ गणगोरो धुकै कैयां ?**

संदर्भ कथा—एक निहायत गरीव आदमी था। गनगौर का त्यौहार आया तो उसकी घरवाली ने उससे कहा कि आज तो कुछ गुड़-चावल लाओ, जिससे गनगौर धुके। उस वेचारे के पास पैसे तो थे ही नहीं, साथ ही कोई वस्त्र भी नहीं था, जिसमें वांध कर चीजें लाई जाएँ। उसकी स्त्री के पास भी केवल एक फटा-पुराना लहँगा था, जिसे वह पहने रहती थी। पति ने उससे कहा कि तुम मुझे अपना लहँगा दे दो और मेरे लौटने तक कोठरी वन्द करके वैठी रहो। पत्नी ने लहँगा दे दिया।

वह लहँगा लेकर चला गया। लेकिन उसके पास तो फूटी कौड़ी भी नहीं थी, इसलिए वह सामान चुराने की नीयत से चुपचाप एक दुकान में घुस गया। परन्तु दुकानदार ने उसे देख लिया और उसे दुकान में ही वन्द कर दिया। पत्नी घर में वन्द और पति दुकान में वन्द। इस स्थिति से दुखित होकर उसने कहा—

अठै अैयां वठै वैयां, ओ गणगोरो धुकै कैयां ?

५३. **अड़बी में तो अड़बी ई होवै।**

एक अड़ता है तो दूसरा भी अड़ता है।

रू० आंट में तो आंट ई होवै।

५४. **अड़वो न खावै न खावण दे।**

खेत में खड़ा 'अड़वा' (डरावा) न स्वयं खाता है और न खड़ी हुई फसल को पशु पक्षियों को खाने देता है।

यहां अड़वा से तात्पर्य ऐसे सूम व्यक्ति से है जो न तो स्वयं सम्पत्ति का उपभोग करता है और न दूसरों को करने देता है।

५५. **अड़ियो-दड़ियो वूढळी कै सिर पड़ियो।**

हर काम का भर-भार वुढिया के सिर।

हर वुराई और असफलता के लिए घर का वुजुर्ग ही जिम्मेदार।

५६. **अड़ो-बड़ी में आडो आवै जिको ई आप को।**
जो समय पर काम आये, वही अपना।

५७ **अणकमाऊ बीरो, नित उठ मांगै सीरो।**
भाई साहब कमायें-कजायें कुछ नहीं और खाने के लिए नित्य हलवे की मांग करें।

५८. **अणजाण अर आंधो बराबर होवै।**
अन्धा और अनजान एक समान।

५९. **अणजाण तो भाठै कै समान होवै।**
अनजान व्यक्ति पत्थर के बराबर होता है। अनजान को कोई लिहाज या अपनत्व नहीं होता।
रू० असैंधो मिनख भाठै बरोबर।

६०. **अणदोखी नै दोख, वींकी गति न मोख।**
निरपराध पर दोष मढने वाले की गति-मुक्ति नहीं होती।

६१. **अणधीज कै टाबर अर नादीदी कै खसम नै बतळायड़ो ही बुरो।**
जिसे जरा भी धैर्य या विश्वास न हो, ऐसी स्त्री के बालक एवं नदीदी स्त्री के पति से बात करना भी बुरा।
रू० अणधीज कै टाबर नै खिलायेड़ो ही बुरो।

६२. **अणपढ जाट पढै बरोबर पढ्यो जाट खुदा बरोबर।**

६३. **अणपढ्योड़ो दायमो, पढ्यो पढायो गोड़।**
बिना पढा हुआ दाहिमा (ब्राह्मण) भी पढ़े हुए गौड़ के बराबर।
रू० भणियो बूझै हैं'क दायमो ?

६४. **अणभणियां घोड़ां चढै, भणियां मांगै भीख।**
अनपढ़ तो घोड़ों पर चढ़ते हैं एवं पढ़े लिखे भीख मांगते हैं।
मध्ययुग में शक्ति को वरिष्ठता प्राप्त थी। प्रायः राजा व जागीरदार पढ़े-लिखे नहीं होते थे, लेकिन फिर भी उनके यहां घोड़ों के ठाट रहते थे एवं कवि और पण्डित उनके सामने हाथ पसारते थे।

६५. **अण मांगी तो दूध बरोबर, मांगी मिलै सो पाणी।**
वा भिच्छा है रगत बरोबर, जीं में ताणा ताणी॥
बिना मांगे जो भिक्षा मिले वह दूध के समान (सात्विक), जो मांगने से मिले वह पानी के समान और जो भिक्षा खींच तान करके प्राप्त की जाए वह रक्त के तुल्य होती है।

६६. **अणमांग्या मोती मिलै, मांगी मिलै न भीख।**
बिन मांगे तो मोती भी मिल जाते हैं और मांगने पर भीख भी नहीं मिलती।

६७. **अणमिलो का सै जती है ।**
भोग्या के अभाव में सभी यति हैं ।
रू० १. अण मिली का सै विरमचारी है ।
२. नई मिली नारी तो सदां विरमचारी ।

६८. **अणसमझ कै आगै रोवै, आपका दीदा खोवै ।**
ना समझ के आगे अपना दुखड़ा रोना व्यर्थ है ।
रू० आंधै कै आगै रोवै, आपका दीदा खोवै ।

६९. **अणसमझ कै भांवैं कीं नईं, समझदार की मौत ।**
ना समझ के लिए तो कीर्ति-अपकीर्ति समान हैं, लेकिन समझदार की सब तरह से आफत है, उसे भला बुरा सब सोचना पड़ता है ।

७०. **अणहूंत भाठै सें काठी ।**
तंगदस्ती पत्थर से भी कठोर होती है ।

७१. **अणहोणी होणी नहीं, होणी हो सो होय ।**
होनहार होकर रहती है, उसे कोई टाल नहीं सकता एवं अनहोनी कभी होती नहीं ।
पद्य—लाख जतन अर कोड़ बुध, कर देखो किण कोय ।
अण होणी होवै नहीं, होणी हो सो होय ।।

७२. **अणी चूकी, धार मारी ।**
जरा चूके कि नुकसान हुआ ।
उस्तरे की अनी जरा सी चूकते ही उसकी धार लग जाती है ।

७३. **अत तरणावै तीतरी, लक्खारी कुरळे ह ।**
सारसरे शृंगन भ्रमें, जद अत जोरे मेह ।।
तीतरी जोरों से बोले, लखारी कुरलाये एवं सारस गिरि शिखरों पर ऊंचे उड़ें तो जोरों की वर्षा हो ।

७४. **अत पित वाळो आदमी, सोवै निद्रा घोर ।**
अणपढिया आतम थकी, कहै मेघ अति जोर ।।
पित्त प्रकृति वाला मनुष्य घोर निद्रा में सोये तो वर्षा जोरों से हो ।

७५. **अति राम वैर है ।**
हर चीज की अति बुरी होती है, वह ईश्वर को भी अच्छी नहीं लगती ।
अति सर्वत्र वर्जयेत् ।

७६. **अति लोभ न कीजिए, लोभ पाप की धार ।**
एक नारेळ कै कारणै, पड़्या कुवै में च्यार ।

संदर्भ कथा—एक पंडित बड़ा लोभी था । एक दिन पूजा के लिए वह एक नारियल खरीदने हेतु बाजार में गया तो दुकानदार ने नारियल की

कीमत चार पैसे वतलाई । पंडित ने कहा कि तीन पैसे में देना हो तो दे दो । दुकानदार ने उत्तर दिया कि तीन पैसे में आगे मिल जाएगा । पंडित आगे वढ़ा तो अगले दुकानदार ने एक नारियल की कीमत तीन पैसे वतलाई । इस पर पण्डित बोला कि तीन पैसे तो अधिक हैं, दो पैसे में देना हो तो दे दो । दुकानदार ने उसे और आगे जाने के लिए कहा । आगे वाले दुकानदार ने नारियल की कीमत दो पैसे और उससे भी आगे वाले ने एक पैसा वतलाई । इस पर पण्डित ने उससे कहा कि कहीं मुफ्त में मिलता हो तो वतलाओ । दुकानदार ने उत्तर दिया कि आगे जाओ, वहां नारियल के वृक्ष खड़े हैं सो वृक्ष पर चढ़ कर नारियल तोड़ लो, कुछ भी नहीं लगेगा ।

आगे जाकर पंडित एक वृक्ष पर चढ़ा, लेकिन नारियल तोड़ते समय उसका पैर फिसल गया । वह गिरने लगा तो उसने दोनों हाथों से वृक्ष की डाल पकड़ ली । पंडित जहां लटक रहा था, ठीक उसके नीचे एक कुआँ था, जिसमें गिरते ही उसका प्राणान्त हो जाता । इसलिए वह वृक्ष की डाल को मजवूती से पकड़े लटकता रहा ।

कुछ देर वाद एक महावत अपने हाथी पर चढ़ा हुआ उधर से गुजरा तो पंडित ने प्रार्थना के स्वर में उससे कहा कि तुम मुझे नीचे उतार दो, मैं तुम्हें सौ रुपये दूंगा । महावत अपने हाथी को वहां ले गया, लेकिन जैसे ही उसने पंडित को उतारने के लिए उसके पैर पकड़े, हाथी वहां से सरक कर अलग जा खड़ा हुआ । अव दोनों लटकने लगे । थोड़ी देर वाद एक ऊंट वाला उधर से गुजरा तो दोनों ने उसे सौ-सौ रुपये देने किये, लेकिन महावत की तरह वह भी लटक गया । फिर एक घुड़-सवार आया, लेकिन उसकी भी वही हालत हुई ।

अव चारों वृक्ष से लटकने लगे । अधिक वोझ के कारण पंडित के हाथ वृक्ष से छूटने लगे तो घुड़सवार ने उससे कहा कि तुम हाथ न छोड़ देना, मैं तुमको एक हजार रुपये दूंगा । हजार रुपये पाने की वात सुनकर पंडित ने खुशी से दोनों हाथ फैलाकर कहा—ओह ! हजार रुपये तो इतने सारे होते हैं । पण्डित ने डाल छोड़ दी थी, अतः चारों कुएँ में गिरे और मर गये ।

७७. **अतै सो खपै ।**

अति करने वाले का विनाश अवश्यंभावी है ।

७८. **अत्तौताई बेटो जायो, नाळै पैली नाक कटायो ।**

अति उतावली स्त्री ने वेटा जना और नवजात शिशु को देखने की व्यग्रता में 'नाळै' से पहले नाक कटवा वैठी ।

रू० नादीदी कै गीगो जायो, नाळां पैली नाक कटायो ।

नाळां = आंवल-नाल, जेर ।

७६. **अद भण्यो घरकां नैं खावै ।**
अधूरी पढ़ाई करने वाला सदा घरवालों को परेशान किए रहता है ।

८०. **अधर छैल, काख में छाणो ।**
नाजुक छैला और बगल में गोबर का उपला ।

८१. **अधरम सैं धन होय, बरस पांच कै सात ।**
पाप से कमाया पैसा थोड़े समय तक ही फलता है ।

८२. **अनजी का बाजा अर अनजी का गाजा ।**
सारे गाजे बाजे अन्न के पीछे ही हैं ।

८३. **अनाड़ी को गरू अनाड़ी होवै ।**
अनाड़ी को अनाड़ी ही रास्ते पर ला सकता है ।

संदर्भ कथा—१. एक सेठ का इकलौता बालक अधिक लाड-प्यार में रहने के कारण अत्यन्त दुराग्रही हो गया था । एक दिन वह अपने मकान की छत पर चढ़ गया और अपनी माँ को दिक करने की गरज से बोला कि मैं छत पर से कूद कर प्राण दूंगा । बेचारी माँ का तो कलेजा ही बैठ गया । वह नीचे खड़ी-खड़ी उसके निहोरे खा रही थी कि वह ऐसा न करे । लेकिन वह नहीं मान रहा था । उसी समय एक जाट अपनी 'चौसींगी' (लम्बे डण्डे वाला एक कृषि उपकरण जिसके एक सिरे पर लकड़ी या लोहे के चार नुकीले सींग लगे होते हैं) लिये जा रहा था । सारी घटना देख-सुनकर उसने लड़के की माँ से कहा कि तुम अलग हट जाओ, मैं अभी इसे मना देता हूं । उसकी माँ अलग हट गई तो जाट ने अपनी चौसींगी के चारों सींग लड़के को दिखलाते हुए कहा कि तुम जल्दी से कूदो, विलम्ब न करो । जैसे ही तुम छत पर से कूदोगे, मैं इस चौसींगी के सींगों में तुम्हें ऊपर के ऊपर पिरो लूंगा । चौसींगी के सींगों के तीखेपन को देखकर लड़के के मन में भय समा गया और वह नीचे आकर अपनी मां से चिपट गया एवं कहने लगा कि फिर ऐसा कभी नहीं करूंगा ।

२. एक सेठ का लड़का केवल दही खाता था, अन्य किसी वस्तु को जीभ पर भी नहीं रखता था । सब लोगों ने उसे बहुत समझाया बुझाया, लेकिन वह नहीं माना । एक दिन सेठ के यहां कोई मेहमान आया तो सेठ ने उसके सामने भी अपना दुखड़ा रोया । इस पर मेहमान ने लड़के को बुला कर कहा कि दही खाना तुम कदापि नहीं छोड़ना, क्योंकि दही के गुण अनन्त हैं । लड़के के जिज्ञासा प्रकट करने पर मेहमान ने कहा कि यों तो दही के गुणों की कोई गिनती नहीं हो सकती, लेकिन मैं तुम्हें इसके चार ही गुण बतलाता हूँ—(१) निरन्तर दही खाने वाला व्यक्ति कभी जल में डूब कर

नहीं मर सकता, (२) उसके घर में कभी चोर नहीं घुसता, (३) उसको कभी कुत्ता नहीं काट पाता और (४) वह कभी बूढ़ा नहीं होता। लेकिन मेहमान की वातों को लड़का समझ नहीं पाया तो उसने अपने कथन का स्पष्टीकरण करते हुए कहा कि जो आदमी केवल दही ही दही खाता है, वह घोर आलसी वन जाता है, नहाना धोना उसे जरा भी नहीं सुहाता। इसलिए वह नदी या तालाव पर नहीं जाता जिससे डूव कर मरने का भय नहीं रहता। दूसरे, अधिक दही खाने से वह कफ-खांसी का मरीज हो जाता है, अतः रात भर खांसता ही रहता है, सो नहीं पाता। इसलिए उसके घर में चोर नहीं घुसता। तीसरे, वह असमय ही बूढ़ा हो जाता है जिससे उसे सदा लाठी के सहारे चलना पड़ता है, अतः लाठी को देखकर कुत्ता भी उसके पास नहीं आता और चौथे, श्वास-खांसी आदि रोगों के कारण वह जवानी में ही मर जाता है अतः उसे बुढ़ापा आता ही नहीं। इस प्रकार उल्टे तरीके से समझाने पर वात उसकी समझ में आ गई और उसने दही खाना छोड़ दिया।

८४. **अनियों नाचै अनियों कूदै, अनियों तोड़ै तान।**
पेट भरा होने पर ही राग-रंग सूझता है।
पद्य—अनियों नाचै, अनियों कूदै, अनियों करै गटरका।
आज अनियों घर में कोनी, तो कुण करै मटरका॥

८५. **अनोखो नाई, वांस को न्हैरणो।**
निराला नाई, वांस का नहरना।

८६. **अन्न खावै जिसी डकार आवै।**

८७. **अन्न खावै जिसी नीत होवै।**
अन्न के अनुसार ही नीयत होती है।
रू० अन्न जिसो मन।

८८. **अन्न छूट्या जांका घर छूट्या।**
खाना-पीना छूट जाने के वाद मनुष्य अधिक समय तक जीवित नहीं रह पाता।

८९. **अन्न जों को पुन्न।**
जो अन्न का दान करता है, उसका पुण्य वढ़ता है।

९०. **अन्नदेव मोटो है, माथै चढ़ा कर खाणो।**
अन्न की महिमा अपार है। जो मिले, उसे शिरोधार्य करके खाना चाहिए।

९१. **अन्न मुगतां, घी जुगतां।**
अन्न भर पेट, लेकिन घी समाई के अनुसार ही खाना चाहिए।

९२. **अपणी करणी पार उतरणी।**
अपनी अच्छी करनी ही मनुष्य को संसार सागर से पार लगाती है।

९३. **अपणी ढपड़ी, अपणो राग ।**
अपनी-अपनी डफली, अपना अपना राग ।
रू० आप आप की तुण तुणी, आप आप की राग ।

९४. **अब तो वीरा तन्नै कह्ग्यो जिको मन्नै ई' कह्ग्यो ।**
भाई ! अब तो जो तुझे कह गया वह मुझे भी कह गया ।

सन्दर्भ कथा—एक बुढ़िया अपने सामान की गठरी सिर पर उठाये किसी गाँव जा रही थी । उसके पास से एक घुड़सवार गुजरा तो बुढ़िया ने उससे कहा कि भाई, थोड़ी दूर तक तुम इस गठरी को अपने घोड़े पर रख कर ले चलो तो मुझे जरा आराम मिल जाए । इस पर घुड़सवार ने इनकार करते हुए उत्तर दिया कि बुढ़िया माई का और घुड़सवार का भला क्या साथ ।

यों कह कर वह तेजी से आगे बढ़ गया । लेकिन थोड़ी दूर जाने पर उसके मन में कलुष जगा कि बुढ़िया की गठरी को अपने घोड़े पर रख कर भाग चलूं तो बुढ़िया मुझे कहाँ पा सकेगी । सारा माल अपना ही हो जाएगा । यों सोच कर वह बुढ़िया की तरफ लौट पड़ा । लेकिन इधर बुढ़िया के मन में भी यह बात आई कि यदि मैं घुड़सवार को गठरी दे देती और वह उसे लेकर भाग जाता तो मैं उसका क्या कर लेती । इस लिए जब घुड़सवार ने बुढ़िया के पास पहुंच कर कहा कि बुढ़ियामाई ! ला, थोड़ी दूर तक तेरी गठरी मैं अपने घोड़े पर रख लेता हूं तो बुढ़िया ने सहज भाव से ना करते हुए कहा—"ना वीरा, अब तो जिको तन्नै कह्ग्यो वो मन्नै ई कह्ग्यो ।"

९५. **अब पिसतायां के बणै, जद चिड़ियां चुग गई खेत ।**
चिड़ियों के खेत चुग जाने के बाद पछताने से क्या लाभ ?
समय पर बरती जाने वाली सजगता ही लाभप्रद होती है ।

९६. **अभलै नाई की तो पून ई पून ।**
अभले नाई की तो केवल हवा ही हवा है ।

संदर्भ कथा—अभला नाम का एक गरीब नाई सुलफा गांजा पीने वाले ब्राह्मणों की संगति में रहता था । वे लोग उसे हमेशा तंग किया करते कि तू हमें एक दिन तो मन-इच्छा भोजन करवा दे । निदान उसने हां भर ली और उनसे कह दिया कि कल आप सब मेरे घर पर ही भोजन करें । लेकिन मेरे यहां बर्तन नहीं हैं सो आप सब भोजनके लिए आते समय अपना-अपना लोटा-थाली साथ लेते आवें ।

अभले ने एक हलवाई से मिठाइयों की व्यवस्था कर ली । सभी 'उस्ताद' भोजन करने बैठे तो अभला एक बड़ा सा पंखा लेकर उन्हें हवा

करने लगा। साथ ही वह कहता जाता था, "थारो ई चुन्न थारो ई पुन्न, अभलै नाई की तो पून ई पून।" भोजन के बाद वे अभले की तारीफ करते हुए जाने लगे तो अभले ने उनसे कहा कि आपके थाली लोटे मांज कर मैं आपके घर पहुँचा दूंगा। लेकिन उस्ताद लोगों के जाने के बाद अभले ने उनके सारे बर्तन मांज कर हलवाई की दुकान पर पहुँचा दिए और उससे कह दिया कि जो अपना थाली-लोटा मांगने आये, उससे अपने पैसे वसूल कर लेना और थाली-लोटा उसे संभला देना।

जब दो दिन तक उस्तादों के घर बर्तन नही पहुँचे तो उन्होंने अभले को टोका। अभले ने कहा कि आप सब के बर्तन अमुक हलवाई के यहां गिरवी रखे हैं सो छुड़वा कर ले आइये। इस पर वे नाराज होने लगे तो अभले ने उत्तर दिया कि मैंने तो आप सब से पहले ही कह दिया था "थारो ई चुन्न थारो ई पुन्न, अभलै नाई की तो पून ई पून।" मेरे पास तो केवल हवा ही हवा थी जो आप सबको खूब प्रेम से खिला दी, शेष सब तो आपका ही था। निदान सारे उस्तादों को पैसे देकर अपने थाली लोटे हलवाई के यहाँ से छुड़वाने पड़े।

९७. **अभागिये चोर नै बिल्ली घूंसै।**
चोर को देखकर कुत्ता तो भौंकता ही है, लेकिन अभागे चोर को देख कर बिल्ली भी गुर्राने लगती है।
रू० कुभागिये चोर ने बिल्ली घूंसै।

९८. **अभागियो टाबर त्यूंहार नै रूसै।**
अभागा बालक त्यौहार के दिन रूठता है। उस दिन अन्य लोग तो पकवान्न खाते हैं और रूठा होने के कारण वह अभागा दिन भर भूखों मरता है।
रू० कुलखणो टाबर त्यूंहार नै रूसै।

९९. **अभी किसा मियां मरग्या 'क रोजा घटग्या।**

१००. **अभी तो मण में कण ईं कोनी पीस्यो गयो।**
अभी तो मण भर में कण भी नहीं पीसा गया है। अभी से उकताने लगे?

१०१. **अमर नांव परमेसर को।**
संसार में भगवान् का नाम ही अमर है। शेष सब नश्वर है।

१०२. **अमली च्यार अर हुक्का तीन।**
नशेबाज चार और हुक्के तीन। हर नशेबाज एक हुक्का लेना चाहेगा अतः झगड़ा अवश्यंभावी है।

१०३. **अमीर की उगाळी अर गरीब को चारो।**
अमीर द्वारा छोड़ी गई जूठन से गरीब पेट भर लेता है।

१०४. **अमीर डील नैं छांटो ई भारी।**
अमीर आदमी को जरा सा भार भी बर्दाश्त नहीं होता।

१०५. **अम्मर को तारो हाथ सें कोनी टूटै।**
आकाश के तारे को हाथ से नहीं तोड़ा जा सकता।
असंभव काम संभव नही हो सकता।

१०६. **अम्मर टोकसी सो दीखै।**
अहंकार व अज्ञान में डूबे हुए मनुष्य को आकाश नारियल की 'टोपसी' जैसा तुच्छ दिखलाई पड़ता है।

१०७. **अम्मर डूभै भूत कमावै, आकाशी धन आपैं आवै।**
सौभाग्यशाली पुरुष के पास बिना कुछ किये-कराये ही अपार सम्पत्ति अपने आप चली आती है।
रू० करम कमावै सूत्यो खावै।

१०८. **अम्मर पटकी अर धरती झेली कोनी।**
कुदरत ने पैदा तो करदी, लेकिन धरती पर कहीं दो पैरों के लिए ठौर नहीं। सर्वथा आश्रय हीन।

१०९. **अम्मर पीळो, 'मे सीळो।**
वर्षा ऋतु में आसमान का रंग पीलापन लिए दिखाई पड़े तो वर्षा मन्द पड़ जाती है।

११०. **अम्मर रातो, 'मे मातो।**
वर्षा ऋतु में आकाश में लालिमा छाई हो तो वर्षा की प्रबलता होती है।
रू० अम्मर राच्यो, 'मे माच्यो।

१११. **अम्मर हरियो, चुवै टपरियो।**
आकाश का हरापन सामान्य वर्षा का द्योतक है।

११२. **अरजन जिसा ही फरजन।**
जैसा बाप वैसा ही बेटा।
फरजन = फर्जन्द = बेटा।

११३. **अलख पुरुष की माया, कठै धूप कठै छाया।**
सुख दुख: आदि समस्त सांसारिक व्यापार प्रभु की लीला है।
रू० राम तेरी माया, कठै धूप कठै छाया।

११४. **अलख भरोसै ऊकळै, आधण ईसरदास।**
भक्त ईश्वरदास का कथन है कि परमात्मा के विश्वास पर ही 'आधण' उबल रहा है, वही उसमे अन्न पूरेगा।

आधरण = चावल, खिचड़ी आदि पकाने के लिए पहले चूल्हे पर पानी को उबाला जाता था, इसे 'आधरण' कहते थे। 'आधरण' तैयार हो जाने पर इसमें अन्न डाला जाता था।

११५. **अलख राजी तो खलक राजी।**
जिस पर ईश्वर प्रसन्न हों, उससे संसार प्रसन्न रहता है।

११६. **अलूणी सिला कुण चाटै ?**
जिस काम में जरा भी स्वार्थ न सधे उसे कोई क्यों करे ?

११७. **अल्ला खावण नै दे तो सोणै बराबर सुख कोनी।**
पेट भरने की समस्या न हो तो मनुष्य सदा सोते रहने का आनन्द भोग सकता है।
रू० अल्ला देवै खावण नै तो कुतको जाय कमावण नै।

११८. **अल्ला तेरी आस, निजर चूल्है पास।**
मुँह से तो भगवान् पर भरोसा रखने की बात और नजर चूल्हे के पास।

११९. **अल्ला दिया तार-तार खुदा लेग्या सोड़ उतार।**
अल्लाह ताला ने थोड़ा-थोड़ा करके दिया और खुदा ताला एक साथ ही सारा ले गया।

सन्दर्भ कथा—एक धुनियाँ जाड़े के दिनों में रजाइयां भरने का काम करता था। उसके पास वहुतेरी रजाइयां रूई भरने के लिए आतीं और वह प्रत्येक रजाई में से थोड़ी-थोड़ी रूई चुरा कर जमा करता जाता। जव पर्याप्त रूई एकत्र हो गई तो उसने उस चुराई हुई रूई से अपने लिए भी एक रजाई भरी और रात को उसे ओढ़ कर खूव आराम से सोया। सवेरे उठ कर वह शौचादि के लिए गया तो पीछे से कोई उचक्का उसकी रजाई को उठा ले गया। जव वह लौटा तो रजाई गायव थी। इस पर उसके मुँह से निकल पड़ा, "अल्ला दिया तार-तार, खुदा लेग्या सोड़ उतार"।

१२०. **अल्ला सें माड़ो राम ई कोनी।**
राम भी अल्लाह से घटकर नहीं है।
चाहे राम कहें चाहे अल्लाह, एक ही वात है।

१२१. **अवेरयाँ तो घर वधै, छाप्यां वधै वाड़।**
सीधो वोल्यां हेत वधै, आडो वोल्यां राड़।।
मितव्ययिता और सार-सम्हाल से घर बढता है, छापते रहने से वाड़ वढ़ती है, सीधा वोलने से प्यार वढ़ता है और टेढा वोलने से झगड़ा वढ़ता है।

१२२. **असली तो औगण तजै, गुण नै तजै गुलाम।**
कुलीन तो अवगुणों का परित्याग करता है और गुलाम गुणों का।

१२३. **असली लाजै, छिनाळ गाजै ।**
कुलीन तो लज्जित होकर रह जाती है लेकिन छिनाल गरजती है ।

सन्दर्भ कथा—एक बार राजा ने अपने मन्त्री से पूछा कि कुलीन और छिनाल में क्या अन्तर होता है ? मंत्री ने उत्तर दिया कि कुलीन सहनशील होती है और कुलटा जरासी बात पर ही उछल पड़ती है । बादशाह ने इसका सबूत मांगा तो मंत्री ने कहा शीघ्र ही दूंगा ।

उसी दिन नगर में कोई मेला था । योजनानुसार राजा और मन्त्री वेश बदल कर एक स्थान पर खड़े हो गये । मेले से लौटने वाली हर औरत की ओर इशारा करके मंत्री कहता कि यह छिनाल है । वह बेचारी सुन कर संकोच के मारे चुपचाप चली जाती । अन्त में एक बनी-ठनी शौकीन औरत उधर से गुजरी और मन्त्री ने जैसे ही उसकी ओर उँगली उठा कर कहा कि यह औरत छिनाल है तो वह अपने पैर से जूती निकाल कर मंत्री पर बरस पड़ी और लगी जोर-जोर से गालियां देने—मैं क्यों छिनाल ? तेरी माँ छिनाल, तेरी बहिन छिनाल....आदि ।

लोगों ने बीच-बचाव करके मंत्री का पीछा छुड़वाया और उन सब के जाने के बाद मंत्री ने धीरे से राजा से कहा कि यही असली छिनाल है ।

१२४. **असलेखां बूठां, बैदां घरां बधावणा ।**
अश्लेषा नक्षत्र में वर्षा होने से रोग अधिक फैलते है, जिससे वैद्यों को विशेष आमदनी होती है ।

१२५. **असवार तो कोनी थी, पण ठाडां करदी ।**
सवार तो नहीं थी, लेकिन जबरदस्तों ने बलात् सवार बना दी ।

सन्दर्भ कथा—किसी औरत को कुछ डाकू जबरन ऊंट पर भगाये ले जा रहे थे । रास्ते में उस औरत का कोई परिचित मिल गया तो उसने आश्चर्य से पूछा कि अरी ! तू ऐसी ऊंट सवार कब से बन गई ? औरत ने जवाब दिया कि सवार तो नहीं थी, लेकिन जबरदस्तों के कारण मजबूरन सवार बन गई हूँ ।

१२६. **असाढ चूक्यो करसो अर डाळ चूक्यो बांदरो ।**
आषाढ में चूका किसान और वृक्ष की डाल से चूका बन्दर सहज ही नहीं संभल पाता । उचित समय पर किया गया कार्य ही फलदायी होता है ।

१२७. **अस्सी की आमद चौरासी को खरच ।**
आय से अधिक व्यय ।

१२८. **अस्सी बरस पूरा लिया, तो ई मन फेरां में ।**
अस्सी वर्ष की उम्र प्राप्त कर लेने पर भी शादी करने की वांछा ?

१२९. **अहारे व्योहारे लज्जा न कारे ।**
आहार और व्यवहार में लज्जा नहीं करनी चाहिए ।

१३०. **आंक वेपारी की आंख ।**
आंक व्यापारी की आंख । व्यापारी का हिसाब-किताब नियमित रूप से लिखा जाता रहे तो उसे अपने लेने-पावने और हानि-लाभ का ज्ञान सहज ही होता रहे ।

१३१. **आंका उडायोड़ा रूंखां ईं कोनी वैठै ।**
इनके उड़ाये हुए पंछी वृक्षों पर ही नहीं वैठते ।
किसी को इस प्रकार के भ्रम जाल में डाल देना कि वह कभी सही रास्ते पर न आ पाये ।

१३२. **आंको आयां ईं रोग जावै ।**
हर व्याधि अवधि पूरी होने पर ही जाती है ।

सन्दर्भ कथा—किसी साधु की पीठ में एक फोड़ा (अदीठ) हो गया । उसके शिष्यों ने वहुत उपचार किया, लेकिन वह ठीक नहीं हुआ । एक दिन साधु के आश्रम के पास उगी हुई एक जड़ी (वूटी) ने साधु से कहा कि यदि तुम मुझे घिस कर फोड़े पर लगालो तो फोड़ा ठीक हो जाएगा । साधु ने उससे पूछा कि तुम तो यहीं थी, फिर इतने दिनों तक क्यों नहीं कहा ? जड़ी ने उत्तर दिया कि — मैं तो यहीं थी, लेकिन तुम्हारे फोड़े की अवधि अभी पूरी हुई है । इस पर साधु ने उपेक्षा पूर्वक कहा कि अव तुझे घिस कर क्यों लगाऊं ? फोड़े की अवधि पूरी हो चुकी है, इसलिए अव इसे तो यों भी जाना ही पड़ेगा ।

१३३. **आंख अर कान को च्यार आंगळ को आंतरो ।**
यद्यपि आंख और कान की दूरी चार अंगुल ही होती है तथापि आंखों देखी वात ही प्रामाणिक मानी जाती है ।
रू० आंख्यां देखी साची, कानां सुणी काची ।

१३४. **आंख कान मोती करम, ढोल वोल अर नार ।**
अेता फूटा ना भला, ढाल तोप तलवार ।।
उपरोक्त सारी चीजों का न फूटना ही अच्छा है ।

१३५. **आंख कै आगै नाक, सूझै के राख ?**
जव आंखों के आड़े नाक है तव ईश्वर के दर्शन क्या खाक हों ?

सन्दर्भ कथा—एक नकटे आदमी को इस वात का दुःख था कि दूसरे लोगों की नाक सावित क्यों है । इसलिए उसने अपना पन्थ वढ़ाने की युक्ति निकाली । वह इस वात का प्रचार करने लगा कि उसकी नाक कट जाने के वाद उसे ईश्वर के दर्शन होने लगे हैं तथा जो कोई भी अपनी नाक कटवा

लेगा, उसे तत्काल ही ईश्वर के दर्शन होने लगेंगे। उसकी झाँसा-पट्टी में आकर एक आदमी ने अपनी नाक कटवा ली, लेकिन उसे ईश्वर के दर्शन नहीं हुए तो वह नाराज होने लगा। इस पर पहले वाले नकटे ने उसे समझाया कि यदि तुम ईश्वर के दर्शन न होने की बात कहोगे तो लोग तुम्हें चिढ़ायेंगे, इसलिए अब तो तुम यही कहो कि मुझे भगवान् के दर्शन होने लगे हैं। नये नकटे को यह बात ठीक लगी और वह उछल-उछल कर इस बात को दोहराने लगा कि उसे साक्षात् भगवान् के दर्शन हो रहे हैं। इसी प्रकार वे लोग अपना पंथ बढ़ाते गये।

१३६. **आंख गई संसार गयो, कान गया हँकार गयो।**
आँखों की दृष्टि के साथ संसार अदृश्य हो जाता है और बधिर होने के साथ अहँकार समाप्त हो जाता है।

१३७. **आंख न दीदा, काढै कसीदा।**

१३८. **आंख फरूकै दहणी, लात घमूका सहणी।**
स्त्री की दाई आंख का फड़कना संकट कारक माना जाता है।

१३९. **आंख फरूकै बाईं, कै बीर मिलै कै साईं।**
स्त्री की बाईं आंख फड़के तो उसे भाई या पति के मिलने का सुख प्राप्त हो।

१४०. **आंख फूटी, पीड़ मिटी।**
नुकसान हुआ, पर बखेड़ा तो मिटा।

१४१ **आंख मीच अंधेरो करणो।**
जान बूझ कर नज़र अन्दाज करना।

१४२. **आंख में काजळ को के बोझ।**
आँख में काजल का क्या भार?

१४३. **आंख में ताकू देऊं हूँ, कायर मत होई।**
तुम्हारी आँख में तकुआ घुसेड़ रहा हूँ, कमजोरी न लाना।
तुम्हारा बहुत बड़ा अपकार कर रहा हूँ, कोई ख्याल न करना।

१४४. **आंख में पड़चौ तुस, काणती नै लाध्यो मिस।**
कामचोर व्यक्ति को काम न करने का ज़रा सा बहाना चाहिए।
रू० आंख में पड़्यो तुस, बाई नै पाग्यो मिस।

१४५. **आंख है तो ज्यान है।**
आँख है तो संसार है।

१४६. **आंख्यां को काजळ पूनां भारी।**

१४७. **आंख्यां देखी परसराम, कदे न झूठी होय।**
प्रत्यक्षीकरण सबसे बड़ा प्रमाण है।

१४८. **आंख्यां देखे को पाप है ।**
यों तो न जाने संसार में क्या क्या होता रहता है, लेकिन किसी अपकर्म को आंखों से देख लेने पर मन में घृणा हो आती है ।

१४९. **आंख्यां में गीड़ मावै ई कोनी अर नांव मिरगानैणी ?**
आँखों में नेत्र-मल भरा है और नाम मृगनैनी ?

१५०. **आंख्यां सें आंधो, नांव नैणसुखराय ?**
आँखों का अन्धा, नाम नैनसुखराय ?

१५१. **आंगळियां धरम नै क्यूं नटणो ?**
अपनी उँगली के इशारे से ही किसी का उपकार होता हो तो ना क्यों की जाए ?

१५२. **आंगळियां सें नूं न्यारा कोनी होवै ।**
उँगलियों से नाखून अलग नहीं होते ।
मनमुटाव होने पर भी आत्मीयजन अपने होते हैं ।

१५३. **आंगळी पकड़तो-पकड़तो पूंचौ पकड़ लियो ।**
ज़रा सा आश्रय पाकर पूरा आधिपत्य जमा लिया ।

१५४. **आंगी में सें वेस कोनी नीकळै ।**
अँगिया में से पोशाक नहीं निकल सकती ।
रू० कांचळी में सें वेस कोनी नीकळै ।

१५५. **आंट में आयोंड़ो 'लो टूटै ।**
मरोड़ में आने पर लोहे जैसी सख्त धातु भी टूट जाती है ।
दाँव में आने पर बलवान् को भी हारना पड़ता है ।

१५६. **आंटै आई मरै विलाई ।**
दाँव में आने पर बिल्ली मरती है ।
चालाक और धूर्त आदमी को भी दाँव में फँसने पर मरना पड़ता है ।

१५७. **आंत भारी तो माथ भारी ।**
पेट में भारी पन हो तो सिर भी भारी रहता है ।

१५८. **आं तिलां में तेल कोनी ।**
यहाँ कोई सार नहीं । यहां किसी प्रकार के लाभ की आशा नहीं ।

१५९. **आंधां में काणो राजा ।**
मूर्खों की टोली में स्वल्प बुद्धि वाला भी विद्वान् माना जाता है ।
रू० आंधां में काणो राव ।

१६०. **आंधा स्यामी राम-राम, 'क आज तो तेरै ई नूंतो ।**
राम-राम करते ही गले बंध जाना ।

१६१. **आंधी आई जठै 'मे वी आसी ।**
आँधी आई है तो मेह भी आएगा ।
दुःख के बाद सुख भी होगा ।

१६२. **आंधी घोड़ी खोखळा चणां, खावै थोड़ा बखेरै घणां ।**

१६३. **आंधी तो आई ही कोनी, सूंसाट पैली ही माचग्यो ।**
कार्य के प्रारम्भ होने से पहले ही शोर-शराबा मच गया ।
भावी संकट के लक्षण पहले ही प्रकट होने लगे ।

१६४. **आंधी पीसै कुत्तो खावै ।**
अंधी पीसे, कुत्ता खाये ।
समुचित व्यवस्था और सार-सम्भाल के अभाव में अपनी मेहनत का लाभ अन्य लोग ही उठा ले जाते हैं ।

१६५. **आंधी मां पूत को मूंडो कद निरखै ।**
अँधी माँ को पुत्र के मुख दर्शन का सुयोग कब प्राप्त हो ?

१६६. **आंधी भैंस वरूं में चरै ।**
अँधी भैंस 'वरू' में चरती रहती है, भले ही आस-पास अच्छी घास खड़ी हो ।
अज्ञानी को अपने हिताहित का ज्ञान नहीं होता ।

१६७. **आंधी में भंभूळिये को के थाग ?**
तूफान में वातचक्र की क्या बिसात ?

१६८. **आंधी रांड 'मे को दाबी दबै ।**
आंधियां चलने लगती हैं तो वर्षा होने पर ही दबती हैं ।

१६९. **आंधै आळो वटबड़ सधगो ।**
अक्षम व्यक्ति को अनायास और अप्रत्याशित रूप से लाभ हो गया ।

सन्दर्भ कथा—एक युवक अपनी ससुराल से अपनी बहू को विदा करवा कर ला रहा था । बहू की गोद में एक छोटा बालक था । वे सब लोग एक बैलगाड़ी में बैठे जा रहे थे कि कुछ लुटेरों ने बैलगाड़ी को घेर लिया । उन्होंने युवक को मार डाला एवं वे सारा माल-असबाब लेकर भाग गये । बेचारी असहाय औरत अपने नन्हे बालक को जंगल में लिए बैठी रो रही थी कि एक अन्धा आदमी उधर से गुजरा । उसके पूछने पर औरत ने अपनी व्यथा उसे सुनाई तो अंधा बोला—अब तू कहां जाएगी ? अपने बच्चे को लेकर मेरे घर चल और वहीं रह । स्त्री ने अन्य कोई उपाय न देख कर अन्धे की बात मानली और तीनों बैलगाड़ी में बैठकर उसके घर की ओर चल पड़े । सारी स्थिति को जानकर किसी ने कहा—

उड़क सधगी आंधळा, जे तेरी आवै आडी ।
वेटै सुधां भू आवै, वळदां सुधां गाडी ।।

१७०. **आंधै की गफ्फी, बोळै को बटको ।**
राम छुटावै तो छूटै, नहीं सिर ही पटको ।।
अंधे के हाथों और वहरे के दांतों की पकड़ सहज ही नहीं छूटती ।

१७१. **आंधै की माखी राम उड़ावै ।**
असहाय का मालिक ईश्वर है । वही उसकी रक्षा और सहायता करता है ।
रू० आंधै को तंदूरो रामदेवजी वजावे ।

१७२. **आंधै कुत्तै कै भावैं खोळन ई खीर ।**
अंधा कुत्ता 'खोळन' को ही खीर समझ कर उसे संतोष पूर्वक चाटता रहता है ।
'खोळन'—देवमूर्ति को स्नान कराया जाने वाला जल जिसमें प्रायः जरासा दूध भी डाल देते हैं। दूध या खीर के पात्र को धोने पर निकलने वाले पानी को भी खोळन कहते हैं ।

१७३. **आंधै आगै ढोल बाजै ढम ढम क्यां की ?**
अंधे के सामने ही ढोल वज रहा है, फिर भी वह अनजान की तरह पूछता है कि यह ढम-ढम की आवाज काहे की हो रही है ?

१७४. **आंधै आळी लूंट हो'री है ।**
अंधे वाली लूट मची है ।

सन्दर्भ कथा—एक अन्धा ब्राह्मण किसी ब्रह्मभोज में भोजनार्थ गया । जब वह भरपेट खा चुका तो उसने अपनी सारी जेवें लड्डुओं से भर लीं । इतने पर भी उसे संतोष नहीं हुआ तो उसने अपनी धोती के 'पायचों' में भी वहुत सारे लड्डू भर लिये । भोजन कराने वालों ने सोचा कि अन्धा आदमी है, ले जाने दो । इसलिए वे चुप रहे । लेकिन अन्धे ने सोचा कि उसकी करतूत को कोई नहीं जानता । साथ ही उसे यह भी विचार आया कि अन्य लोग भी इसी प्रकार लड्डू ले जा रहे होंगे । यह वात उसे सह्य नहीं हुई और अपने को साहूकार एवं अन्य लोगों को चोर सावित करने के लिए वह जोर जोर से चिल्लाने लगा कि लोगों, दौड़ो-दौड़ो, इन लोभी ब्राह्मणों ने लूट मचा रखी है और ये लोग अपने वस्त्रों में भर भर कर लड्डू लिए जा रहे हैं ।

१७५. **आंधै कै भावैं जिसो दिन, विसो ही रात ।**
अन्धे के लिए जैसा दिन, वैसी ही रात । अन्धा दिन के प्रकाश का कोई लाभ नहीं उठा पाता । अज्ञानी के लिए ज्ञान वार्ता का कोई अर्थ नहीं होता ।

१७६. आंधै को हाथ कांधै पै ।
अंधे को सहारे के लिए किसी का कन्धा चाहिए ।

१७७. आंधै नै आंधो नईं कैणो ।
अंधे को अंधा कह कर पुकारने से उसे बुरा मालूम होता है । लेकिन यदि सहानुभूति पूर्वक उससे पूछा जाए तो वह सब कुछ वतला देता है कि वह अंधा क्योंकर वना ।
पद्य—(१) आंधै नै आंधो कैयां, भूंडा लागै वैण ।
धीरै धीरै पूछले, तेरा किस विध फूट्या नैण ।।
(२) आंधै नै आंधो नईं कैणो, कैणो भाई सैण ।
होळै होळै पूछले, थारा कीकर फूट्या नैण ।।

१७८. आंधै नै तो दो आंख्यां चाये ।
अंधे को तो दो आंखें चाहिएँ । यही उसकी सवसे वड़ी आकांक्षा होती है ।

१७९. आंधै नै तो लाठी चाये ।
अंधे को तो सहारा चाहिए ।

१८०. आंधै मामै सें काणो मामो ई चोखो ।
अंधे मामा की अपेक्षा काना मामा ही अच्छा जो भानजे का मुँह तो देख सकता है ।

१८१. आंधै सुसरै सें क्यांको घूंघटो ?
अंधे श्वसुर के सामने घूंघट की क्या आवश्यकता ?
रू० आंधै सुसरै सें क्यांकी लाज ?

१८२. आंधो आरसी को के करै ?
अंधा दर्पण का क्या करे ? अन्धे के लिए दर्पण की कोई उपयोगिता नहीं ।

१८३. आंधो कूकड़ो सूळचो धान, जिसा नाई उसा ही जजमान ।
अन्धा मुर्गा और कीट-भक्षित धान, जैसा नाई वैसा यजमान ।

१८४. आंधो जाणै, आंधै की वलाय जाणै ।
जिस पर आफत आये, वही उससे निपटे ।

१८५. आंधो नूंतै जिको दो जिमावै ।
जो अंधे को न्योता देगा, उसे एक के स्थान पर दो को भोजन कराना पड़ेगा अर्थात् जो व्यक्ति उसकी लाठी पकड़ कर लाएगा उसे भी जिमाना पड़ेगा । अंधे को न्योता देना जान बूझ कर दोहरा नुकसान उठाना है ।
रू० (१)—क्यूं आंधो नूंतै, क्यूं दो वुलावै ।
(२)—आंधो नूंतै दोय वुलावै, लकड़ी पकड़्यां सागै आवै ।

१८६. आंधो वजाज तोल कर तो देखै ।
अंधा वजाज किसी वस्तु की वढ़िया घटिया किस्म को आंखों से भले ही न देख पाये लेकिन उसे तौल कर हल्की भारी का पता तो लगा ही सकता है ।

सामान्य मनुष्य किसी बात की सूक्ष्मता को भले ही न जान पाए, लेकिन मोटे तौर पर तो अनुमान लगा ही सकता है।

१८७. **आंधो बांटै जेवड़ी, लैरां बाछो खाय।**
अंधा आगे-आगे रस्सी बटता जाता है और पीछे-पीछे उसे बछड़ा खाता जाता है।
अकुशल के श्रम को दूसरे चौपट करते रहते हैं और उसे कुछ पता ही नहीं चल पाता।

१८८. **आंधो बांटै सीरणी, फिर-घिर घरकां नैं ई दे।**
अंधा सीरनी (प्रसाद) बांटता है और घूम फिर कर अपने घर वालों को ही देता है। दूसरे लोग यह सोचते हैं कि अन्धेपन के कारण उसे अपने-पराये का ज्ञान नहीं रहता, लेकिन वह अपने अन्धेपन का उपयोग भी स्वार्थ-पूर्ति के लिए ही करता है।
रू० आंधो बांटै रेवड़ी, घरकां नै ई दे।

१८९. **आंबो नींबू वाणियों भींच्यां ई रस देय।**
आम, नींबू और बनिया दबाने पर ही रस देते हैं।
रू० (१) आंवो नींबू वाणियों, कंठ भींच्यां जाणियों।
(२) आंवो नींबू वाणियों, गळ भींच्यां रस देय।।

१९०. **आं मंदरां में तो अैई हरजस है।**
ऐसे मन्दिरों में तो ऐसा ही हरिकीर्तन होता है।

१९१. **आंसू वेचतां आसी।**
आंसू तो वेचते समय आएँगे। जब घटिया किस्म की चीज अज्ञानवश ऊंची कीमत में खरीद ली जाए तो उसे घाटा उठाकर वेचते समय दुकानदार को दुःख होता ही है।

सन्दर्भ कथा—एक बार किसी पंसारी ने अपने बेटे को हींग खरीद कर लाने के लिए भेजा और उसे समझा दिया कि हींग इतनी तेज होनी चाहिए कि उसे सूंघते ही आंखों में आंसू आ जाएँ। लड़का हींग विक्रेता के यहां पहुँचा तो उसने उसे कई प्रकार की हींग दिखलाई। वह हींग की डलियों को उठा-उठा कर सूंघने लगा। जब दुकानदार के पूछने पर लड़के ने अपने पिता की कही हुई बात उसे बतलाई तो वह झट समझ गया कि लड़का नासमझ है। इस लिए उसने कहा कि आंसू तो वेचते समय आएँगे, इस वक्त नहीं। यों कह कर उसने उसे बिल्कुल घटिया किस्म की हींग दे दी और आगे जाकर उस हींग विक्रेता का कथन बिल्कुल सही हुआ।

१९२. **आई अर समाई।**
अनचाही घटना घट ही जाए तो फिर सब्र करना ही पड़ता है।

घर में प्रायः पुत्र-जन्म की आकांक्षा की जाती है, लेकिन जब कन्या का जन्म हो जाता है तो फिर समाई तो करनी ही पड़ती है।

१९३. **आई गूगा जांटी, बकरी दूधां नाटी।**
गोगा नवमी (भादों वदि नवमी) के बाद प्रायः बकरियां दूध देना बंद कर देती हैं।

१९४. **आई चांदा छठ, कातरो मरग्यो पटांपट।**
भादों वदि ६ के बाद 'कातरा' (फसल को हानि पहुँचाने वाला एक कीड़ा) प्रायः मर जाता है।

१९५. **आई चूकै, जगत थूकै।**
अवसर चूकने पर स्वयं का नुकसान तो होता ही है, दुनिया भी निन्दा करती है।

१९६. **आई तो आवै जिकी आवै, अण आई भी आज्या।**
आने वाली आफत तो आती ही है, लेकिन कभी-कभास बेमतलब की आफत भी आ जाती है।

१९७. **आई बलाय, दी चलाय।**
बला आई, दूर भगाई।

१९८. **आई भू आयो काम, गई भू गयो काम।**
बहू ससुराल आती है तो काम बढ़ जाता है, चली जाती है तो घट जाता है।
काम की कमी-वेशी करने वाले के अनुसार घटती-बढ़ती रहती है।

१९९. **आई मौज फकीर की, देई झूंपड़ी बाळ।**
फकीर के मन में आई तो उसने अपने आश्रय स्थल झोंपड़े को ही आग लगा दी।

२००. **आई रांड आंचा में, पड़ी जेठ कै मांचा में।**
कामातुर का विवेक और धैर्य नष्ट हो जाता है।

२०१. **आई रुत खेती, क्यूं करै पछेती ?**
खेती करने की ऋतु आ गई है, अब विलम्ब क्यों ?
अवसर प्राप्त होने पर विलम्ब नहीं करना चाहिए।

२०२. **आई ही छा मांगण नै, घर की धिराणी बण बैठी।**
आई तो थी छाछ मांगने के लिए और घर की मालकिन बन बैठी।

२०३. **आई ही बिल्ली, पूंछ ही गीली।**

सन्दर्भ कथा—गुरु और शिष्य दोनों मठ की कोठरी में सोये हुए थे। चेला नितान्त आलसी किन्तु हाजिर-जवाब था। गुरु ने चेले से कहा कि जरा उठ कर देखो कि बाहर वर्षा हो रही है या नहीं। लेकिन चेले ने लेटे-

लेटे ही उत्तर दे दिया—'आई ही बिल्ली, पूंछ ही गीली' अर्थात् अभी एक बिल्ली यहां आई थी जिसकी पूंछ भीगी हुई थी, इससे स्पष्ट है कि बाहर वर्षा हो रही है। तब गुरु ने चेले को आदेश दिया कि दीपक बढ़ा दो (बुझा दो), परन्तु चेले ने फिर लेटे-लेटे ही उत्तर दिया कि गुरुजी, आंखें बन्द कर लीजिए और समझ लीजिए कि दीपक बुझ गया। अन्त में गुरु ने उससे कहा कि अच्छा किवाड़ तो बन्द कर लो। इस पर चेले ने तपाक से उत्तर दिया कि गुरुजी, दो काम तो मैंने कर दिए, अब यह तीसरा काम आप ही कर दीजिए।

यही कथा सास और आलसी बहू के नाम से भी कही जाती है।

२०४. **आई ही मिलवा बैठाण दी दळवा।**
आई तो थी मिलने, बिठा दी दलने।
मिलने के लिए आये हुए व्यक्ति को बेगार में फंसा लेना।

२०५. ***आऊं न जाऊं, घरां बैठी मंगळ गाऊं।***
कहीं आना न जाना, घर बैठे मंगल गाना।
किसी कार्य को सक्रिय रूप से करने की अपेक्षा केवल घर बैठे कार्य-साधन के मनसूबे बांधते रहना।

२०६. **आक में तो अकडोडिया ई लागै, आम कद लागै ?**
वृक्ष के अनुरूप ही फल लगते हैं।

२०७. **आक को कीड़ो आक में राजी, ढाक को ढाक में राजी।**
आक का कीड़ा आक में और ढाक का कीड़ा ढाक में सन्तुष्ट रहता है।
दाख छुहारा छाड़ि अमृत फल, विष कीड़ा विष खात।

२०८. **आकड़ै हाथी कद बंधै ?**
आक के तने से हाथी नहीं बंध सकता।
कमजोर के सहारे शक्तिशाली का निर्वाह नहीं हो सकता।

२०९. **आक न अैळो काटिये, नीम न घालिये घाव।**
रोहीड़ै का काटणियां, तेरो दरगा होसी न्याव।
अकारण तो आक एवं नीम को भी नहीं काटना चाहिए। लेकिन जो रोहीड़े के वृक्ष को काटता है, उसका न्याय तो भगवान् के दरबार में ही होगा।
मरुभूमि के लिए वृक्षों का बड़ा महत्त्व है, अतः उन्हें नहीं काटना चाहिए।

२१०. **आक में ईख अर ईख में आक।**
यदा-कदा नीच कुल में श्रेष्ठ और उच्च कुल में निकृष्ट संतान पैदा हो जाती है।

२११. **आक में ईख, फोग में जीरो।**

२१२. **आकरै देव नै सै निमैं ।**
उग्र देवता को सब कोई नमते हैं ।
खोटो ग्रह जप-दान ।

२१३. **आक सींचै पण पीपळ कोनी सींचै ।**
अपात्र की सेवा, पात्र की उपेक्षा ।

२१४. **आकास कानी थूकै जद आपकै ई मूंडै पर पड़ै ।**
ऊपर की ओर मुँह करके थूकने वाले का थूक स्वयं के मुँह पर ही पड़ता है । बढ़-बढ़ कर बोलना या अकारण ही श्रेष्ठ व्यक्ति की निंदा करना स्वयं के लिए ही हानिकर है ।
रू० सूरज कानी थूकै तो आपकै ई मूंडे पर पड़ै ।

२१५. **आखड़्या जिसा पड़्या कोनी ।**
जैसे चूके, वैसा नुकसान नहीं हुआ । चूके तो सही, लेकिन संभल गये ।

२१६. **आखर पाणी निवांण सिर आयां सरै ।**
पानी को चाहे कितना ही ऊंचा चढ़ा दें, लेकिन उसकी गति नीच है, अतः आखिरकार वह नीचे की ओर ही आता है ।

२१७. **आकास बिना खंभां कै खड़्यो है ।**
आकाश को सहारे के लिए खंभों की अपेक्षा नहीं ।
वह सत्य के सहारे टिका है ।

संदर्भ कथा—एक बार पार्वतीजी ने शिवजी से पूछा कि यह आकाश किस के आधार पर टिका हुआ है ? शिवजी ने उत्तर दिया कि आकाश सत्य और धर्म के खंभों पर टिका हुआ है । पार्वती ने इन खम्भों को दिखलाने का हठ किया तो शिवजी उनको साथ लेकर निकल पड़े ।

साधु और साध्वी का वेश बनाये दोनों एक वृद्ध किसान के खेत में पहुँचे । दोपहर हो चुकी थी, जेठ का महीना था । ऊपर से आकाश तप रहा था, नीचे धरती सुलग रही थी, लेकिन बूढ़ा किसान हल चलाये जा रहा था । शिवजी ने किसान से पूछा कि यदि तुम कहो तो थोड़ी देर तुम्हारी 'टापी' (खेत में स्थित टपरी) में विश्राम करलें । किसान ने स्वीकृति देते हुए कहा—हाँ, तुम दोनों 'टापी' में विश्राम करो, मैं भी वहीं आ रहा हूँ ।

दोनों टपरी में चले गये । कुछ देर बाद बूढा किसान भी वहां पहुँच गया । इतने में किसान की औरत 'छाक' (खेत में काम करने वाले के लिए दोपहर का भोजन) लेकर वहाँ आई । वह भी लगभग किसान जितनी ही बूढी थी । उसको देखकर साध्वी (पार्वती) ने किसान से पूछा कि चौधरी, तू इतना बूढा हो गया लेकिन ऐसी कठिन दोपहरी में स्वयं हल चलाता है और बूढी चौधराइन को 'छाक' लानी पड़ती है, तो क्या तुम्हारे कोई लड़का नहीं

है ? चौधरी ने उत्तर दिया कि लड़का कहां से होता ? हमने तो विवाह के वाद कभी पति पत्नी का सम्वन्ध ही स्थापित नहीं किया। पार्वती द्वारा इसका कारण पूछे जाने पर वृद्ध ने कहा—विवाह के समय हम दोनों की अवस्था वहुत छोटी थी। विवाह हो चुकने के वाद हम दोनों एक वैलगाड़ी वैठकर हमारे घर आ रहे थे। चूंकि 'फेरे' आधी रात के वाद हुए थे अतः इसे (चौधराइन को) नींद आ रही थी और मैं भी ऊंघ रहा था। उसी हालत में मेरा एक हाथ इसकी जंघा पर जा गिरा। यह चौंक कर उठी और वोली कि फिर कभी ऐसा किया तो तुम्हें राम-दुहाई (राम की आन) है। सो हम दोनों उसी राम-दुहाई का निर्वाह आज तक करते आ रहे हैं।

पार्वती ने दोनों से वड़ा आग्रह किया कि वहुत हो चुका, अव अपनी आन को तोड़ दो। लेकिन दोनों का एक ही उत्तर था कि इस राम-दुहाई को युवावस्था में ही नहीं तोड़ा, तो अव क्या तोड़ेंगे। पार्वती निरुत्तर हो गई। उसे यह विश्वास हो गया कि वस्तुतः इस प्रकार टेक निभाने वालों के वल पर ही आकाश टिका हुआ है।

२१८. **आखर रामजी कै घर न्याव है।**
आखिर तो ईश्वर के घर न्याय होता ही है।

२१९. **आखा थोड़ा अर देव घणां।**
'आखा' कम और देवता अधिक। किस किस को प्रसन्न किया जाए ?
आखा = अक्षत, अन्न के दाने।

२२०. **आखी रात पीस्यो, ढकणी में सांवरचौ।**
रात भर पीसने पर भी ढकनी (ढक्कन) भर आटा तैयार हो पाया।
भरपूर श्रम और समय लगाने पर भी नगण्य फल की प्राप्ति।

२२१. **आखै रावळै में अेक घाघरो, पैली उठै जिकी पैरै।**
पूरे रनिवास में एक घाघरा, जो पहले जगे वह पहने।
अभाव की चरम सीमा।

२२२. **आग नै बजराग नावड़ै।**

२२३. **आगम चौमासै लूंकड़ी, जे नहीं खोदै गेह।**
तो निस्चै करकै जाणजो, नहीं वरसै लो मेह॥
वर्षा काल से पूर्व यदि लोमड़ी अपनी 'घुरी' न खोदे तो जानो कि इस बार वर्षा नहीं होगी।

२२४. **आगम सूझै सांडणी, दौड़ै थळां अपार।**
पग पटकै वैसै नहीं, जद मेह आवणहार॥
ऊंटनी इधर-उधर दौड़े, पैर पटके, लेकिन वैठे नहीं तो जानो कि वर्षा आयेगी।

२२५. **आग लगन्तै झूंपड़ै, जो निकसै सो लाभ।**
आग लगने पर झोंपड़े में से जो निकाल लें, वही अपना है।

२२६. **आगली दाळ नै ईं पाणी कोनी।**
जो समस्या सामने है, वही निपटने में नहीं आ रही है।
रू० आगली ई बाड़ै को वड़ै नी।

२२७. **आगलै पग को ठांयचो देख कर लारलो पग उठाणो।**
जो पैर पहले उठ चुका है, उसे टिकाने का स्थान मिल जाए, तभी पीछे वाला पैर उठाना चाहिए।
एक काम जम जाए तो दूसरा शुरू करना चाहिए।

२२८. **आगै आग न लैरचां पाणी।**
मरने के बाद न कोई अग्नि संस्कार करने वाला, न पानी (जलाञ्जलि) देने वाला।
सर्वथा गईवाल।
रू० आगै आग न लारै भींटको।

२२९. **आगै ही गधेड़ा आवै तो लारै घोड़ां की किसी आस ?**
शोभा यात्रा में सबसे आगे गधे निकलें तो पीछे घोड़े क्या आयेंगे ?

२३०. **आगै तो बाईजी फूठरा था ही, फेर नींदां में उठ खड़्या रैया।**
बाई पहले से ही बदसूरत थी, फिर नींद में उठ जाने के बाद तो कहना ही क्या ?
बदसूरती और फूहड़पन का संयोग हो गया।
रू० (१) आगै तो बाबोजी फूठरा था ही, फेर लगायली राख।
(२) आगै तो बाबोजी फूठरा था ही, फेर घड़ायली टाट।

२३१. **आगै सें पीछा ई भला है।**
आगे आने वालों से पीछे वाले ही अच्छे हैं।

सन्दर्भ कथा—एक किसान औरत के पति का लघुताव्यंजक नाम 'लैटूरा' था। उसकी पड़ोसिनें उससे कहा करतीं कि भला यह भी कोई नाम है। तुम अपने पति से कहो कि वह 'लैटूरा' के स्थान पर अपना कोई अच्छा सा नाम रख ले।

एक दिन किसान की औरत नाम की वास्तविकता का पता लगाने के लिए घर से निकल पड़ी। थोड़ी ही दूर गई थी कि उसने कुछ आदमियों को एक मुर्दे की अर्थी को ले जाते देखा। पूछने पर पता चला कि अमरचन्द नामक व्यक्ति मर गया है। किसान की औरत यह सोचते हुए आगे बढ़ी कि जिसका नाम अमरचन्द है, वह मर कैसे गया। कुछ दूर जाने पर उसने देखा कि शूरसिंह नामक व्यक्ति डर के मारे भागा जा रहा है और-दो आदमी

उसका पीछा कर रहे हैं। यहां भी उसे नाम की सार्थकता दिखलाई नहीं पड़ी। पुनः आगे बढ़ने पर उसे पड़ौसी गाँव का चौधरी मिला जो अपनी 'चौधर' छिन जाने से दुखी हो रहा था। कुछ और आगे बढ़ने पर उसने लाछां (लक्ष्मी) नाम की स्त्री को कूड़ा बुहारते देखा। उसे नामों की अवास्तविकता का पता चल गया और वह वहीं से लौट पड़ी। घर आकर उसने अपनी पड़ौसिनों को सारी घटना सुनाते हुए कहा कि आगे वालों से पीछे वाले ही अच्छे हैं और मेरे पति का 'लैटूरा नाम ही ठीक है, क्योंकि—

अमरो तो मैं मरतो देख्यो, भाजत देख्यो सूरो।
चौधर तो मैं खुसती देखी, लाछ बुहारै कूड़ो,
आगै सें पीछो भलो, नाँव भलो लैटूरो।

रू० अमर मरंता देखिया, धनजी मांगै भीख।
लछमी छाणा बीणती, टंटणपाळ ही ठीक॥

२३२. **आ छाछ तो राळबा जोगी।**
यह छाछ तो धूल में गिराने लायक ही थी।

संदर्भ कथा—एक आदमी पैदल ही किसी गाँव जा रहा था। रास्ते में ताल की धरती भी आई, जहां एक गधे का पेशाब पड़ा था। राहगीर ने सोचा कि किसी मूर्ख ने छाछ जैसा दुर्लभ पदार्थ यहाँ डाल दिया है। उसे कई दिनों से छाछ के दर्शन नहीं हुये थे। अतः उसने वहाँ बैठकर छाछ को उँगली से मस्तक पर लगाते हुए कहा कि हे छाछ माता, तुझे कौन बेवकूफ यहाँ डाल गया? लेकिन जब उसने थोड़ी सी 'छाछ' उठा कर जीभ पर रखी तो उसे असलियत का पता लगा और वह तिरस्कार पूर्वक बोल उठा, "आ छाछ तो राळबा जोगी ही थी।"

२३३. **आछा जाया नानगी, तरै तरै की बानगी।**
नानगी ने अच्छे पूत जने, एक से एक न्यारा (गया गुजरा)।
रू० आछा जाया ये मामी, कोई साध कोई स्यामी।

२३४. **आछी म्हारी टाटी, खावां दाळ बाटी।**
अपनी झोंपड़ी ही अच्छी जिसमें बैठ कर दाल-रोटी खा लेते हैं, गुजर-बसर कर लेते हैं।

२३५. **आज ई मोडियो मूंड मुंडायो अर आज ई ओळा पड़्या।**
आज ही बाबाजी ने सिर मुंडवाया और आज ही ओले पड़े।
रू० आज ई टाट मुंडाई अर आज ई ओळा।

२३६. **आज काल परस्युं, भाणजै नै झुगला टोपी करस्युं।**
किसी काम के मंसूबे बांधते रहना और उसे आगे के लिए टालते रहना।

२३७. **आज की घड़ी अर काल को दिन ।**
झांसा पट्टी देकर निकल जाने और फिर कभी मुंह न दिखलाने पर इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

२३८. **आज की थाप्योड़ी आज कोनी बळै ।**
आज का थापा हुआ उपला (कंडा) आज नहीं जलता ।

२३९. **आज तो मारूजी का नैण राता ?**
आज तो 'मारूजी' (पति) के नैनों में मस्ती की लालिमा ?

२४०. **आज थारलै कूवै में मैं पड़ग्यो हूँ ।**
आज तुम्हारे वाले कुएँ में मैं गिर गया हूँ ।

संदर्भ कथा—एक किसान की औरत बड़ी चालाक थी । किसान खेत से आता तो वह उसे रूखी सूखी रोटी और राबड़ी खाने के लिए दे देती । जब वह अपनी औरत से भी खाने के लिए कहता तो वह अहसान जताते हुए उत्तर देती—तुम रोटी खालो, भले ही मैं रांड कुएँ में गिरूं, तुम्हारी बला से ।

किसान सोचता कि यह रोज ही ऐसा कहती है, फिर भी मुस्टंडी बनती जा रही है, अवश्य ही इसमें कोई रहस्य है । वस्तुत: वह औरत अपने लिए घी शक्कर से तर चूरमे के लड्डू बना कर छुपा देती थी और किसान की अनुपस्थिति में खा लेती थी । एक दिन किसान जान-बूझ कर खेत से जल्दी आ गया । उसकी स्त्री पड़ौसिन के यहां गई हुई थी, अतः किसान को अच्छा मौका मिल गया और लड्डुओं को ढूंढ कर चट कर गया । कुछ देर बाद घर लौटने पर उसने सदा की तरह अपने पति को राबड़ी और रोटी परोस दी । किसान ने उससे कहा कि आजा, तू भी रोटी खाले । औरत ने कुएँ में गिरने वाला वही रटा-रटाया उत्तर दिया तो किसान ने मुस्कराते हुए कहा कि आज तुम्हारे वाले कुएँ में मैं गिर पड़ा हूं, रोटी खाले, वरना भूखों मरेगी । इस प्रकार भेद खुल जाने से औरत लज्जित हो गई ।

२४१. **आज मरै जिकै नैं काल कद आवै ?**
जो आज मर रहा है, उसे कल कब आये ?

२४२. **आज मरां काल मरां, मरचा मरचा फिरां ।**
घाल कचोळै दळमळां, जद बनड़ा होयां फिरां ।।
पोस्त और अफीम के अभाव में पोस्ती एवं अफीमची निर्जीव से रहते है । लेकिन जब ये चीजें उन्हें मिल जाती हैं तो मानो दूल्हे बन जाते हैं ।

२४३. **आज मर्‌यो काल दूसरो दिन ।**
जो मरा सो गया ।

२४४. **आज मेरी मंगणी, कल मेरा व्याव ।**
टूट गई टंगड़ी, रह गया व्याव ।।
आज मेरी मंगनी है, कल व्याह होगा, लेकिन इसी बीच टांग टूट गई और व्याह बीच में ही रह गया ।
जब किसी कार्य के सम्पन्न होने की आशा में बड़ा उत्साह प्रदर्शित किया जाए और बीच में ही काम विगड़ जाए, ऐसी स्थिति में इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

२४५. **आज राज सो राज ।**
आज जिसका राज है उसी का हुक्म चलेगा ।

२४६. **आज हमां तो काल तमां ।**
जो आज हम पर वीत रही है, वह कल तुम पर भी वीत सकती है ।

२४७. **आटै में लूण खटावै, पण लूण में आटो कद खटावै ।**
रोटी वनाते समय आटे में थोड़ा सा नमक मिलाया जाता है, लेकिन उसी अनुपात में नमक और आटा नहीं चल सकता ।

२४८. **आटो कांटो घी घड़ो, खुल्लै केसां नार ।**
वायों भलो न जीवणो, ल्याळी जरख सुनार ।।
यात्रा करते समय शकुन विपयक मान्यता ।

२४९. **आठ पूरबिया, नौ चूल्हा ।**
अलगाव की गहरी प्रवृत्ति ।

२५०. **आठ हाथ की काकड़ी, नौ हाथ को बीज ।**
आठ हाथ लम्वी ककड़ी में नौ हाथ लम्वा वीज ।
सर्वथा झूठी और अनहोनी वात ।

२५१. **आड की होड, काग क्यूं डूबै ?**
आड की देखा देखी पानी पर तैरने की होड़ में काग क्यों अपने प्राण गँवाये ? आड = एक जल-पक्षी जो वखूवी पानी पर तैरता रहता है । पानी पर तैरने के कारण इसे 'जळ कागली' भी कहते हैं । लेकिन काग पक्षी होते हुए भी पानी पर नहीं तैर सकता ।
रू० (१) आड तिरै तो तिरण दे, तूं क्यूं तिरै रे कग्ग ।
नीची होसी नाड़की, थारा ऊंचा होसी पग्ग ।।
(२) आड तरन्ति देखकर, तूं क्यूं तरियो कग्ग ।
होड पराई जे करै, तळ मुंडी ऊपर पग्ग ।।

२५२. **आड कै वचियां नै कुण तिरणो सिखावै ।**
आड पक्षी के वच्चों को पानी पर तैरना सिखलाने की अपेक्षा नहीं होती । पानी पर तैरना उनका कुदरती गुण है ।

२५३. **आड़ू कै घी में कांकरा ।**
अनाड़ी के घी में भी कंकड़ ! अनाड़ी के हर काम में अनाड़ीपन भरा होता है ।

२५४. **आड़ू खा मरै 'क उठा मरै ।**
अनाड़ी और गंवार व्यक्ति या तो अधिक खा कर या बूते से अधिक भार उठाकर मरता है ।

२५५. **आड़ू नै टक्को देदेणो, अक्कल नईं देणी ।**
उज्जड और गँवार व्यक्ति को टका दे देना, सीख नहीं देनी ।

२५६. **आडै दिन खाती लापसी, जापै में खावै घाट ।**
सामान्य दिनों में तो घी युक्त तर माल खाती थी और प्रसवकाल में जब पौष्टिक आहार की अपेक्षा होती है तब घाट जैसा अति साधारण खाना खाती है ।
सर्वथा उल्टा काम करना ।

२५७. **आडै दिन रंगी-चंगी, वार त्यूंहार फिरै नंगी ।**
यों तो सदा सजी-धजी रहती है और त्यौहार के दिन फटे-पुराने कपड़े पहनती है ।

२५८. **आडै दिन सें बासीड़ो ही चोखो जिको मीठा चावळ तो मिलै ।**
सामान्य दिन की अपेक्षा 'वासीड़ा' ही अच्छा जो खाने के लिए मीठे चावल तो मिलें ।
वासीड़ा = होली के लगभग एक सप्ताह बाद मनाया जाने वाला शीतला-देवी का त्यौहार (शीतला-सप्तमी या शीतला अष्टमी) । इस दिन वासी खाना खाया जाता है । पहले दिन गुड़ के भात, 'राबड़ी' आदि बना कर रख लेते हैं और अगले दिन शीतला पूजन के बाद खाते हैं ।

२५९. **आडो आज्या जिकै नै काट कर काढै ।**
गर्भस्थ शिशु को प्रसव के समय आड़े रूप (विपरीत स्थिति) में आने पर काट कर पेट से बाहर निकाला जाता था । बच्चे को सही सलामत निकाल पाना दुष्कर होता था । लेकिन जच्चा की प्राण रक्षा तो हो जाए, इसी उद्देश्य से ऐसा किया जाता था ।
दो तरफा नुकसान से बचने के लिए एक नुकसान को सहन कर लेना ।

२६०. **आतमा सो परमातमा ।**
आत्मा, परमात्मा एक हैं ।

२६१. **आथणवाई को 'मे अर पावणो रीतो कोनी जावै ।**
संध्या समय का मेह बरसे बिना और सांध्य वेला में घर आया अतिथि भोजन किये बिना नहीं जाता ।

२६२. **आदमी कोनी कमावै, आदमी को दिन कमावै ।**
आदमी नहीं, आदमी का 'दिन' (भाग्य) कमाता है । आदमी का दिन खड़ा हो तो कमाई अपने आप होती है ।

सन्दर्भ कथा—एक छोटा भाई अपने बड़े भाई के साथ रहता था । लेकिन उसकी भौजाई बड़ी कर्कशा थी । एक दिन उसका देवर खेत में एक बरतन भूल आया तो भौजाई ने उसे शाम को घर आते ही बरतन लाने के लिए वापिस खेत भेजा । खेत में पहुँचते पहुँचते घना अंधेरा हो गया था, इसलिए उसने खेत में ही रात बिताने की सोची, लेकिन उसे नींद नहीं आई ।

कुछ अधिक रात बीतने पर उसने देखा कि एक विचित्र पुरुष के साथ उसके बहुत से सेवक आस-पास के खेतों से धान के पौधे ला-लाकर उसके भाई के खेत में रोप रहे हैं । लड़के ने साहस बटोर कर मुखिया से उसका परिचय पूछा तो वह बोला कि मैं तुम्हारे भाई का 'दिन' हूँ और ये सब मेरे सेवक हैं । मैं स्वयं उसको कमा कर देता हूँ । जब तक मैं खड़ा हूं, तुम्हारे भाई को हर काम में लाभ ही लाभ प्राप्त होगा । इस पर लड़के ने अपने 'दिन' के विषय में पूछा तो वह बोला कि तुम्हारा 'दिन' अमुक स्थान पर सोया पड़ा है, तुम जाकर उसे जगा सको तो निहाल हो जाओगे । लड़का बहुत कष्ट उठाकर अपने 'दिन' तक पहुँचा । उसने उसे जगाया और 'दिन' के खड़ा होने पर मालामाल हो गया ।

२६३. **आदमी को भाग पत्तै ओलै ।**
मनुष्य का भाग्य पत्ते की ओट में ।
न जाने कब हवा से पत्ता अलग हो जाए और मनुष्य का भाग्य खुल जाए । मनुष्य का भाग्य कब चमक उठे, कोई ठिकाना नहीं ।

२६४. **आदमी बस्यां, सोनो कस्यां ।**
आदमी की पहचान पड़ोस में बसने से और सोने की कसौटी पर कसने से होती है ।

२६५. **आदरा बाजै बाय, झूंपड़ी झोला खाय ।**
आर्द्रा नक्षत्र में हवा चले तो झोंपड़ी झूलने लगे अर्थात् अकाल पड़े, जिससे घर छोड़ कर अन्यत्र जाना पड़े ।

२६६. **आदरा भरै खादरा, पुनरबसु च्यारूं दिसू ।**
आर्द्रा नक्षत्र में सामान्य वर्षा होती है किन्तु पुनर्वसु में चारों दिशाओं में वर्षा हो जाती है ।

२६७. **आदरा भरै खादरा, पुनरबसु भरै तळाव ।**
न बरस्यो पुखै, तो बरसै ही घणा दुखै ।।

आर्द्रा नक्षत्र में साधारण वर्षा होती है, पुनर्वसु में वर्षा की बहुलता होती है। लेकिन यदि पुष्य नक्षत्र में वर्षा न हो तो फिर बड़ी मुश्किल से ही वर्षा होगी।

२६८. **आधो देई-देवता, आधो खेतरपाळ।**
आधा भाग तो सब देवी-देवताओं का और आधा अकेले क्षेत्रपाल का।

२६९. **आधी गिणी न पाछली, सोपो गिण्यो न सांझ।**
जण जण को मन राखती, वेस्या रै'गी वांझ॥
वेश्या के घर वक्त-बेवक्त जो भी (पुरुष) आया, वेश्या ने सब का मन रखा, फिर भी वह बांझ ही रह गई।
रू० बूढो गिण्यो न बाळको, तड़को गिण्यो न सांझ।
जण-जण को मन राखतां, वेस्यां रै'गी वांझ।

२७०. **आधी छोड़ पूरी न धावै, वींको आधी मुँह सें जावै।**
जो हाथ में आई हुई आधी को छोड़ कर लालच के कारण पूरी के लिए दौड़ता है, उसकी वह आधी भी चली जाती है।

सन्दर्भ कथा—एक कुत्ते को आधी रोटी मिल गई तो वह उसे मुँह में दबा कर चल पड़ा कि कहीं एकान्त में बैठकर आराम से खाऊंगा। रास्ते में पानी का एक नाला आया। कुत्ते को पानी में अपनी परछाई दिखलाई पड़ी। उसने सोचा कि कोई दूसरा कुत्ता आधी रोटी लिए जा रहा है, यदि मैं उसकी आधी रोटी छीन लूं तो मेरे पास पूरी रोटी हो जाएगी। यों सोच कर जैसे ही उसने भौंकने के लिए अपना मुँह खोला, वैसे ही उसके मुँह वाला टुकड़ा भी पानी में गिर कर डूब गया।
रू० (१) आधी छोड़ पूरी नै धावै, वींको आडी अेक न आवै।
(२) आधी छोड़ पूरी नै धावै, आधी रहै न पूरी पावै॥

२७१. **आधै आंगण सासरो, आधै आंगण पी'र।**
मुसलमानों में बहुधा निकट परिवार वालों (ताऊ-चाचा) में शादी हो जाती है जिससे घर का आधा आंगन लड़की के लिए पीहर और आधा ससुराल बन जाता है।
इस आशय की अन्य कहावतें भी प्रचलित हैं, जैसे—"अैई घर में जाई अर अैई घर में ब्याही।"

२७२. **आधै गांव होळी अर आधै गांव दिवाळी।**
आधे गाँव में होली और आधे गाँव में दीवाली मनाई जा रही है।
आपसी फूट और मतभेद से परस्पर विरोधी काम होते हैं।

२७३. **आधै पाणी न्याव होय।**
बेईमानी करने वाले को कभी न कभी उसका फल मिल ही जाता है।

२७४. **आधै माह, कांधै कामळ वाह ।**
माघ का आधा महीना बीतते-बीतते जाड़ा कम हो जाता है जिससे लोग कम्बल को कन्धे पर डालने लगते हैं ।
रू० (१) आधै 'मा, कांधै कामळ 'गा ।
(२) माह मांगळी, कांधै कामळी ।।

२७५. **आधै में गर, आधै में सर ।**
अग्रवाल वैश्यों में किसी समय गर (गर्ग) गोत्र के आदमी अधिक थे, इसी को लेकर यह कहावत चल पड़ी ।

२७६. **आधै में लूंकड़ी अर आधै में पूंछ ।**
आधी वास्तविकता, आधा आडम्बर ।

२७७. **आधो घड़ो झव झवै ।**
आधा भरा घड़ा छलकता है । अध जल गगरी छलकत जाए ।
पूर्ण ज्ञान के अभाव में अहं का जन्म होता है ।
रू० भरिया नाहीं ऊझळै, ऊझळसी आधा ।

२७८. **आधो रह्यो ऊंखळी, आधो रह्यो छाज ।**
सांगर साटै धरा गई, (अब) मदरो मदरो गाज ।।

सन्दर्भ कथा—वर्षा के अभाव में दुर्भिक्ष पड़ा तो एक किसान ने खेजड़े की थोड़ी सी पकी फलियों (खोखों) के बदले अपनी औरत बेच डाली । उनको कूटने की इच्छा से उसने थोड़ी सी फलियां ओखली में डालीं और शेष छाज में ही पड़ी थीं कि इतने में बादलों के गरजने की ध्वनि सुनाई पड़ी । इस पर किसान ने आह भरते हुए उपरोक्त दोहा कहा कि पत्नी तो 'सांगर' के बदले चली गई, अब भले ही गरजता रह ।

सांगर = खेजड़े के वृक्ष में लगने वाली हरी फलियों को 'सांगर' कहते हैं जो शाक बनाने के काम में आती हैं । इन्हें उबाल कर और सुखा कर रख लेने से ये साल भर काम देती हैं । पकी हुई फलियां मोटी होती हैं एवं इनका रंग भी कुछ भूरापन लिए होता है । इनको 'खोखा' कहते हैं । ये वैसे ही खाये जाते हैं और लोग इन्हें 'थळी' का मेवा कह कर भी पुकारते हैं ।

२७९. **आनी की पानी, पानी को पंसूरो ।**

२८०. **आनी की पानी, पानी को पूळो ।**
आयो भंभूळियो, लेग्यो समूळो ।।

२८१. **आप-आप की मूंछयां कै सै ताव देवै ।**
सब अपनी-अपनी मोंछों पर ही ताव देते हैं ।

२८२. **आप-आप की रोव्यां नीचै सै खीरा देवै ।**
सब अपनी-अपनी रोटियों के नीचे ही आँच देते हैं ।
हर व्यक्ति अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए ही सचेष्ट रहता है ।

२८३. **आप-आप की सै दळै ।**
सब अपनी-अपनी हाँकते हैं ।

२८४. **आप-आप कै खोळिये में सै ई मस्त ।**

सन्दर्भ कथा—राजा के पूछने पर राजज्योतिषी ने उसे बताया कि उसकी मृत्यु शीघ्र ही होने वाली है और अगले जन्म में वह अमुक चाण्डाल के घर शूकरी के पेट से जन्म लेगा । इस बात को सुन कर राजा को बड़ा दुःख हुआ और उसने अपने युवराज को बुला कर उसे आदेश दिया—अमुक चाण्डाल के घर शूकरी के पेट से जन्म लेते ही तुम मुझे मार डालना कि जिससे मुझे जन्म भर घूरों पर फिर-फिर कर विष्टा न खानी पड़े ।

कुछ समय पश्चात् राजा की मृत्यु हो गई और उसने उसी चाण्डाल के घर शूकरी के पेट से जन्म लिया । नया राजा उसे मारने के लिए चाण्डाल के घर पहुँचा । उसको देख कर शूकरी का बच्चा उसके पास आया और मनुष्य की वाणी में बोला—मैं पिछले जन्म में तुम्हारा पिता था । यद्यपि मैंने तुम्हें मार डालने का आदेश दिया था, लेकिन अब तुम मुझे मत मारो । मैं इस योनि में अत्यन्त सन्तुष्ट एवं प्रसन्न हूँ ।

शूकरी के बच्चे के स्थान पर नाली के कीड़े को लेकर भी यह कथा कही जाती है ।

रू० (१) आप-आप की खोड़ में सै मस्त ।
(२) आप-आप की खाल में सै मस्त ।

पद्य—क्या सीपी क्या घूंघची, क्या मोती क्या लाल ।
अपणी अपणी खाल में, सबही खाल खुसाल ।।

२८५. **आप-आप कै घर में सै ही ठाकर ।**
अपने अपने घर में सभी ठाकुर ।
अपने अपने घर में सभी बड़े हैं ।

२८६. **आप-आप कै दाणै पाणी में सै मस्त ।**
अपने अपने दाने पानी में सभी मस्त हैं ।

२८७. **आप-आप की तान में खोता भी मस्तान ।**

२८८. **आप-आप कै भाग को सै खावै ।**
सब अपने अपने भाग्य में लिखा खाते हैं ।
रू० आप आप को भाग सै सागै ल्यावै ।

२८९. **आप आप को जी सैं नै प्यारो लागै ।**
अपनी-अपनी जान सभी को प्यारी होती है ।

२९०. **आप आळो ई बुरी चींतै ।**
अपना आत्मीय ही अनिष्ट की आशंका करता है ।

२९१. **आप ई गावै अर आप ई बजावै ।**
सब काम स्वयं को ही करने पड़ते हैं ।

२९२. **आप कमाया कामड़ा, किण नै दीजे दोस ।**
अपनी ही गलती से जब अपना नुकसान होता है तब दोष किसे दिया जाए ?

संदर्भ कथा—(१) कोजाजी नामक भक्त को भू० पू० जोधपुर राज्य की ओर से पालड़ी नामक गाँव शासन में मिला हुआ था । कोजाजी ने वहां एक बावड़ी बनवाई और उनके शिष्यों ने बावड़ी के पानी से प्याज की खेती की । प्याज वहुत बड़े बड़े हुए जो राजा को भेंट-स्वरूप भेजे गये । इतने बड़े बड़े प्याज देख कर राजा को भी आश्चर्य हुआ और उस गाँव को खालसा कर लिया । इस पर उन्होंने खेद प्रकट करते हुए कहा—

आप कमाया कामड़ा, किण नै दीजे दोस ।
कोजैजी री पालड़ी, कांदां लीनी खोस ।।

(२) किसी कुएँ में बहुत सारे मेंढ़क रहते थे । एक दिन किसी पारस्परिक झगड़े के कारण बहुत सारे मेंढ़कों ने मिल कर एक मेंढक को खूब पीटा । इस पर वह पानी के चरस में बैठ कर कुएँ से बाहर आया और प्रचुर मात्रा में भोजन का लालच देकर एक अन्धे सांप को कुएँ में ले गया । सांप ने एक एक करके उसके सब शत्रुओं को उदरस्थ कर लिया ! अन्त में उसकी भी बारी आ गई । लेकिन अब वह निरुपाय था, अतः बोल पड़ा—

वैरी ल्यायो पावणो, करचो कुटम पर रोस ।
आप कमाया कामड़ा, दई न दीजे दोस ।।

(३) पति वहुत समय बाद दिसावर से घर आया और दिन भर परिवार के सदस्यों एवं पास-पड़ौस वालों से ही घिरा रहा । बड़ी रात गये पत्नी के पास पहुँचा तो उसने मान किया । बहुत मनाने पर भी जब वह नहीं मानी तो पति को भी गुस्सा आ गया और वह अविलम्ब ही फिर दिसावर चला गया । अब तो पत्नी ने पछता कर कहा—

आयो मुख बोली नहीं, पिउ चाल्यो करि रोस ।
आप कमाया कामड़ा, दई न दीजे दोस ।।

२९३. **आपका ई हाथ अर आपकी ई आरती ।**
अपने ही हाथों अपनी आरती उतारना ।
अपना सम्मान स्वयं ही करना ।

२९४. **आपका करयोड़ा आपनैं ई भोगणा पड़ै ।**
अपने किए हुए कर्मों का फल अपने को ही भोगना पड़ता है ।

२९५. **आपकी अक्कल नै घोड़ा ई कोनी नावड़ै ।**
अपनी अक्ल इतनी तेज कि उसे घोड़े भी नहीं पा सकते ।
हर आदमी अपने को बेहद अक्लमँद समझता है ।

२९६. **आपकी अेक फूटी को धोखो कोनी, पाड़ौसी की दोनूं फूटी चायै ।**
अपनी एक आंख के फूट जाने का गम नहीं, लेकिन पड़ौसी की दोनों आंखें फूटनी चाहिएँ ।

संदर्भ कथा—एक आदमी ने देवी को सन्तुष्ट कर यह वरदान मांगा कि जो वस्तु वह मांगे, उसे तत्काल मिल जाए । देवी ने उसे वरदान तो दे दिया, लेकिन साथ ही यह भी कह दिया कि जितना तुम्हें मिलेगा, उससे दुगना तुम्हारे पड़ौसी को मिलेगा ।

देवी के वरदान के कारण वह जो भी वस्तु मांगता, उसे तुरन्त मिल जाती, लेकिन साथ ही पड़ौसी को उससे दुगनी चीजें प्राप्त हो जातीं । ईर्ष्या के कारण उसे यह सह्य नहीं हुआ । इसलिए उसने देवी से याचना की कि उसकी एक आंख फूट जाए । वरदान के प्रभाव से उसकी एक आँख तत्काल फूट गई, लेकिन पड़ौसी की भी दोनों आंखें चली गईं । अब उसने देवी से पुनः याचना की कि उसके घर के दरवाजे के आगे एक कुआं खुद जाए । अविलम्ब ही कुआं खुद गया किंतु इसके साथ ही पड़ौसी के दरवाजे के आगे दो कुएँ खुद गये । पड़ौसी अंधा तो पहले ही हो चुका था अतः लाठी के सहारे घर से बाहर निकलते समय एक कुएँ में गिर कर मर गया । देवी से वरदान पाने वाले ने अब अपने वरदान को सार्थक माना ।

२९७. **आपकी कमाई पाणी में ई कोनी डूबै ।**
अपनी खरी कमाई का पैसा पानी में भी नहीं डूबता ।

२९८. **आपकी खाज आपकै हाथां ई खोरीजै ।**
अपनी खुजली अपने हाथ से ही अच्छी तरह खुजलाई जाती है ।

२९९. **आपकी गळी में कुत्तो ई ना'र ।**
अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है ।
रू० आपकी घुरी में गादड़ो ई सेर ।

३००. **आपकी गयै को धोखो कोनी, जेठ की रहे को धोखो है ।**
देवरानी को अपनी वस्तु के चोरी चले जाने का इतना दुःख नहीं, जितना जेठ की वस्तु के रह जाने का है । जेठ की वस्तु भी चोरी चली जाती तो उसे गम न होता ।

३०१. **आपकी गाय को घी चाये जठै खाल्यो ।**
अपनी गाय का घी जहाँ इच्छा हो वहाँ खा लीजिए ।
संदर्भ कथा—एक संपन्न किसान था । घर में सदा गाय रखता और अपने यहां आने वाले अतिथियों को गाय के घी से वना तर भोजन खिलाया करता । इसलिए जव वह स्वयं कहीं जाता तो उसे भी शुद्ध गो-घृत से तर भोजन मिलता । इस पर वह कहता कि अपनी गाय का घी चाहे जहाँ भी खाया जा सकता है । मैं अपने अतिथियों को घर की गाय के घृत से वना भोजन खिलाता हूँ और उसी के परिणाम स्वरूप मुझे भी वैसा ही भोजन मिलता है ।

३०२. **आपकी 'चा, गधो वाप ।**
अपनी गरज पूरी करने के लिए गधे को भी वाप कहना पड़ता है ।
जरूरत पड़ने पर निकृष्ट व्यक्ति की भी खुशामद करनी पड़ती है ।

३०३. **आपकी 'छा नै कोई खाटी कोनी बतावै ।**
अपनी छाछ को कोई खट्टी नहीं वतलाता ।
अपनी चीज को कोई खराव नहीं वतलाता ।

३०४. **आपकी छोड़ पराई तक्कै, सो सब जाय गैब कै धक्कै ।**
जो अपनी को छोड़कर पराई को तकता है उसका सर्वस्व नष्ट हो जाता है ।

३०५. **आपकी जांघ उघाड़्यां आप ई लाज मरै ।**
दूसरों के सामने अपने घर की या अपने आत्मीयजनों की वुराई करने से स्वयं को ही लज्जित होना पड़ता है ।

३०६. **आपकी डाढी कै ल्हसरको पैली देवै ।**
हर कोई अपना स्वार्थ पहले सिद्ध करना चाहता है ।

३०७. **आप आपकी धोती में सै उघाड़ा है ।**
धोती के भीतर सभी नंगे हैं ।
हर व्यक्ति की अंदरूनी कमजोरियां होती हैं ।

३०८. **आपकी नाक कटवा कर दूसरां को कसूण करै ।**
अपनी नाक कटवा कर भी दूसरों का अपशकुन करना ।
स्वयं हानि उठाकर भी दूसरों को नुकसान पहुँचाना ।

३०९. **आपकी नींद सोवै, आपकी नींद जागै ।**
अपनी मर्जी हो तव सोये और अपनी मर्जी हो तव जगे ।

३१०. **आपकी पराई अर पराई आप की ।**
अपनी तो पराई हो जाती है और पराई अपनी होती है ।
अपनी वेटी का विवाह कर उसे पराये घर भेजना पड़ता है और पराई वेटी को वहू के रूप में अपने घर लाते हैं ।

३११. **आपकी पगड़ी आपकै हाथ ।**
अपनी इज्जत अपने हाथ है ।

३१२. **आपकी पूठ आपनै कद दीखै ?**
अपनी कमियां अपने को दिखलाई नहीं पड़तीं ।

३१३. **आपकी मां नै डाकण कुण बतावै ?**
अपनी माँ को कोई डाकिन नहीं बतलाता ।
अपने आत्मीय जनों में मोह वश कमियां दिखलाई नहीं पड़तीं ।

३१४. **आपको मारो तीसरै पताळ जावै ।**
हर व्यक्ति को अपने बूते का झूठा अहँकार होता है ।

३१५. **आपकी लुळताई स्यामलै नै खावै ।**
अपनी नम्रता सामने वाले को परास्त करती है ।

३१६. **आपकै घरे उजाड़, दूसरे कै घरे धाड़ ।**
कोई किसी के घर मेहमान बन कर जाते हैं तो उनके स्वयं के घर में तो नुकसान होता है और सामने वाला (मेजबान) समझता है कि घर में 'धाड़' (लुटेरों की टोली) घुस आई है ।

३१७. **आपकी नाक पर माखी कोई नीं बैठण दे ।**
अपनी इज्जत को कोई ठेस नहीं लगने देना चाहता ।

३१८. **आपकै पेट की लाय सैं बुझावै ।**
अपना पेट तो सभी भरते हैं, लेकिन परोपकार बिरले ही कर पाते हैं ।

३१९. **आपकै रूप अर पराये धन को 'छे कोनी ।**
आदमी को रूप अपना और धन पराया अधिक लगता है ।

३२०. **आपकै लागै हीक में, दूसरै कै लागै भींत में ।**
अपनी पीड़ा को तो मनुष्य खूब अनुभव करता है, लेकिन दूसरे की पीड़ा का उसे जरा भी अहसास नहीं होता ।

३२१. **आपकै हाथां आपका कान कोनी बींध्या जावै ।**
अपने हाथों अपने कान नहीं बींधे जाते ।

३२२. **आपको घर हँग कर भर, दूसरै को घर थूक को डर ।**
अपने घर में आदमी चाहे जो करे, चाहे जैसे रहे, लेकिन दूसरे के घर पर तो उसे हर बात का संकोच रहता है ।

३२३. **आपको बिगाड़्यां बिना दूसरै को कोनी सुधरै ।**
दूसरे का काम सुधारना हो तो अपने काम की उपेक्षा करनी पड़ती है ।

३२४. **आपको बिगाड़चोड़ो अर दूसरै को सुधारचोड़ो ।**
अपने हाथ से बिगड़ा हुआ काम भी दूसरे के हाथ से सुधरे हुए काम के बराबर होता है ।

३२५. **आपको विरम कैवै जीं में फरक कोनी पड़ै ।**
अपना अंत:करण जो कहता है, उसमें फर्क नहीं पड़ता ।

३२६. **आपको सीर कोनी जिकी हांडी भांवें चढती ई फूटो ।**
जिस हँडिया में अपना हिस्सा नहीं, वह भले, चूल्हे पर चढते ही फूट जाए ।

३२७. **आपको सो आपको, दूसरै को सो हें हें ।**
अपने स्वार्थ-साधन में तो खूब सावधान रहते हैं, लेकिन जब दूसरे के मतलब की बात आती है तो खीसें निपोर देते हैं ।

३२८. **आप गरूजी कातरा मारै, औरां नै परमोद सिखावै ।**
गुरुजी खुद तो कातरे (एक कीड़ा) मारते हैं और दूसरों को अहिंसा का प्रबोध देते हैं ।
रू० आप गुरूजी कातरा मारै, चेलां नै परबोध सिखावै ।

३२६. **आप मरयां जुग परलै ।**
मरने वाले के लिए तो मानो उसकी मृत्यु के साथ ही प्रलय हो जाता है ।

३३०. **आप डूबतो पांडियो, ले डूब्यो जजमान ।**
स्वयं डूबता हुआ पंडा अपने यजमान को भी साथ ही ले डूबा ।

३३१. **आप न जावै सासरै, औरां नै दे सीख ।**
स्वयं तो ससुराल नहीं जाती और दूसरी औरतों को ससुराल जाने की शिक्षा देती है ।

३३२. **आप भलो तो जुग भलो ।**
जो स्वयं भला है, उसके लिए सारा संसार भला है ।
रू० आप भलो तो जुग भलो, नींतर भलो न कोय ।

३३३. **आप भुवाजी उघाड़ा फिरै, भतीजां नै झुगला टोपी ।**
बूआ के पास स्वयं के अंग ढांकने के लिए तो वस्त्र ही नहीं और भतीजों के लिए झुग्गे-टोपी !

३३४. **आप मरतां बाप कोंनै याद आवै ।**
अपनी विपदा के समय आत्मीय जनों के हित का भी ध्यान नहीं रहता ।

३३५. **आप मरयां डूम राणा ।**
अपने मरने के बाद भले ही डोम राणा बने ।

संदर्भ कथा—राणा प्रतापसिंह के समय से ही मेवाड़ और आमेर (बाद में जयपुर) के शासकों में विद्वेष चला आता था। यद्यपि कालान्तर में दोनों राज-घरानों में परस्पर विवाह सम्बन्ध होने लगे थे, फिर भी द्वेष भावना सर्वथा लुप्त नहीं हुई थी । किंवदंती है कि मेवाड़ के राणा की कोई राजकुमारी जयपुर के राजा को व्याही थी । मेवाड़ के शासकों की उपाधि राणा थी, अत: उनको नीचा दिखाने की इच्छा से जयपुर के राजा ने डोमों को 'राणा' की उपाधि देने

का निश्चय किया। इस पर मेवाड़ वाली रानी ने विरोध प्रकट करते हुए कहा कि मेरे जीते जी तो ऐसा नहीं होगा। यदि आप नहीं मानेंगे तो मैं प्राण दे दूंगी और मेरे मरने के बाद भले ही डोमों को राणा बना दें।

३३६. **आप मरयां बिना सुरग कोनी मिलै।**
स्वयं के मरे बिना स्वर्ग की प्राप्ति नहीं हो सकती।
जो स्वर्ग में जाने का आकांक्षी हो, उसे पहले मरना होगा।
रू० (१) आप मरयां बिना सुरग कोनी दीखै।
(२) आप मरयां बिना सुरग कठै?

३३७. **आप मियां मंगता, बारै खड़्या दरवेस।**
मियांजी स्वयं भिखमंगे हैं और उनके द्वार पर याचना के लिए फकीर खड़े हैं!

३३८. **आपनै सूझै कोनी, औरां नै बूझै कोनी।**
स्वयं को कोई युक्ति सूझती नहीं और दूसरे से पूछता नहीं, तब काम कैसे बने।
रू० आपनै उपजै कोनी, दूसरै की मानै कोनी।

३३९. **आप होवै जिसी ही दुनियां दीखै।**
स्वयं जैसा होता है, दुनिया भी उसे वैसी ही दिखलाई पड़ती है।

संदर्भ कथा—एक दिन राजा ने अपने नाई से पूछा कि तुम तो पूरे नगर में घूमते हो, अतः सच-सच बतलाओ कि लोगों की आर्थिक दशा कैसी है? नाई के यहां एक अच्छी भैंस थी और उसके पास लगभग दस तोला सोना था। इसलिए उसने राजा से कहा कि पृथ्वीनाथ! सब लोग बहुत खुशहाल है। नगर में ऐसा कोई घर नहीं होगा जिसमें एक भैंस और दस तोला सोना न हो।

राजा ने अपने मन्त्री से यह बात कही तो मन्त्री ने नाई द्वारा कही गई बात को गलत बतलाते हुए कहा कि बहुत से घरों में तो भैंस के स्थान पर बकरी और सोने के स्थान पर रांगा भी नहीं मिलेगा। राजा ने मन्त्री से पुनः कहा कि नाई ने अपनी बात बड़े विश्वास के साथ कही है, इसलिए तुम सही स्थिति का पता लगाओ।

इस पर मन्त्री ने नाई के घर से भैंस भी चुरवा कर मंगवा ली और सोना भी। फिर उसने राजा से कहा कि अब आप नाई से पुनः पूछिये। भैंस और सोने के चोरी चले जाने से नाई बहुत दुखी था। इसलिए जब राजा ने दुबारा उससे पूछा तो उसने बहुत खिन्न होकर कहा कि अन्नदाता! आजकल तो लोगों की माली हालत बहुत नाजुक है, न किसी के यहां भैंस है और न किसी के घर में सोना। नाई की बात सुनकर राजा को विश्वास हो गया कि मनुष्य जैसा आप होता है, उसकी दृष्टि में दूसरे भी वैसे ही होते है।

३४०. **आ फंस्यां को के मोल ?**

भारी आपत्ति में फँस जाने पर छुटकारे के लिए मुँहमांगी कीमत भी चुकानी पड़ती है ।

३४१. **आ बळद मनै मार ।**

आ बैल मुझे मार ।
जान बूझ कर आफत मोल लेना ।
रू० आवरै बळद मनै मार, सींग सें नई तो पूंछ सें ई मार ।

३४२. **आबरू लैर उधार ।**

साख के अनुरूप ही उधार मिलता है ।

३४३. **आम का आम गूंठळियां का दाम ।**

आम के आम गुठलियों के दाम । दोहरा लाभ ।

३४४. **आम खाणा 'क पेड़ गिणना ?**

आम खाने हैं या पेड़ गिनने हैं ?
आदमी को व्यर्थ की बातों में न पड़कर अपने मतलब की बात करनी चाहिए ।

३४५. **आम फळै नीचो निवै, अरंड अकासां जाय ।**

आम का वृक्ष फलने पर नीचे की ओर झुकता है व एरंड ऊपर की ओर जाता है । अधिकार और सम्पन्नता प्राप्त होने पर सज्जन विनम्र होता है एवं दुर्जन घमंड से इतराता है ।

३४६. **आम फळै परवार सें, महुवो फळै पत खोय ।**
वां को पाणी जो पीवै, अकल कठै सें होय ॥

आम पत्रों के रहते हुए ही फलता है । लेकिन महुआ 'पत' (पत्ते = प्रतिष्ठा) खोकर फलता है । इसलिए उसका पानी या उससे बनी शराब पीने वालों की अक्ल ठिकाने कैसे रह सकती है ?

३४७. **आयगी सेखै नै घाटो ।**

यह कहावत राव शेखा के घाटवा युद्ध से सम्बन्धित है । गौड़ों के साथ हुए इस युद्ध में यद्यपि राव शेखा की जीत हो गई थी तथापि अधिक घायल होने के कारण उनकी मृत्यु भी हो गई थी ।
रू० आयगी सेखै नै भाती ।

३४८. **आया तो लाख का, नई आया तो सवा लाख का ।**

आयें तो अच्छा, न आयें तो और भी अच्छा ।

३४९. **आया था हरि भजन कूं, ओटण लग्या कपास।**
मनुष्य देह प्राप्त कर आये तो थे हरि-भजन कर आवागमन से छूटने के लिए, लेकिन उलटे दुनिया के गोरख धंधे में फँस गये।
रू० आयो व्याज कमावण नै, चाल्यो मूळ गमाय।

३५०. **आया सराध वंधी आस, बामण उछ्ळै नौ-नौ बांस।**
गया सराध टूटी आस, बामण रोवै चूल्है पास॥
श्राद्ध जीमने के लिए व्यग्र भोजन भट्ट ब्राह्मण के प्रति व्यंग्य।

३५१. **आये गये नै पूछै बात, खेती में क्यूं आथ न साथ।**
जो स्वयं अपनी खेती को नहीं संभालता और केवल आने जाने वाले से अपनी खेती के हाल-चाल पूछता रहता है, उसे खेती से कोई लाभ नहीं हो सकता।

३५२. **आये वांडी आरो घालां, 'क पूंछ ई आरै में तुड़ाई है।**
'वांडी' (पूंछ कटी) को हर वक्त लड़ाई की चुनौती स्वीकार है। उसने तो अपनी पूँछ ही इसमें कटवाई है।

३५३. **आये भांण लड़ां, ठाली वैठी के करां।**
आओ वहिन लड़े, वेकार बैठी और क्या करें !

३५४. **आये म्हारी काणीं, तूं कठै ई नईं खटाणी।**
ऐबी मनुष्य कहीं नहीं खटाता।

३५५. **आयो चैत निवायो, फूड़ां मैल गमायो।**
चैत का गरम महीना आने पर फूहड़ भी अपने शरीर का मैल उतार देता हैं।

३५६. **आ रै मेरा सम्पट पाट, मैं तनै चाटूं तूं मनै चाट।**
दोनों एक जैसे गये गुजरे।
रू० आई आंधी मिलग्या पाट, नूंत्या बामण जीमग्या जाट।
आरै म्हारा सम्पट पाट, मैं तनै चाटूं तूं मनै चाट॥

३५७. **आ रै म्हारा लाल्या, सींत को चन्नण तूं भी लगाले, औरां नै भी बुलाल्या।**
आरे मेरे लाले, सेंत-मेंत का चंदन तू भी लगाले एवं औरों को भी वुलाले।

३५८. **आ रै राड़्या राड़ करां, ठाला वैठ्या के करां।**
अरे झगड़ालू ! भला निकम्मे बैठे क्या कर रहे हैं; आओ परस्पर झगड़ा ही करें।

३५९. **आरै सीरी सीर करां, सीर की रसोई करां।**
घी गुड़ आटा तेरा, फूंक वसन्दर पाणी मेरा॥
आओ भाई ! साझे में खाना बनायें। इसमें घी, गुड़ और आटा तुम्हारा रहेगा एवं हवा, अग्नि और पानी मेरा।
अपनी ओर से नाम मात्र का सहयोग देकर साझे से लाभ उठाने की दुष्प्रवृत्ति।

३६०. **आरोगो तो घात्यो ई कायनी ।**

'आरोगा' तो परोसा ही नहीं ।

संदर्भ कथा—किसी बारात में एक अन्धा देहाती भी था । भोजन के समय कन्या पक्ष के लोग बरातियों की पत्तलों में विविध प्रकार के पकवान परोस रहे थे और परोसते समय हर पकवान का नाम भी पुकारते जाते थे—लीजिए, मोतीचूर के लड्डू, लीजिए, जलेबी—आदि । अन्धे आदमी ने कभी इतने पकवानों के नाम नहीं सुने थे, लेकिन वह हाथ से पत्तल में टटोल कर जान लेता था कि यह अमुक पकवान है । जब सारी बानगियां परोसी जा चुकीं तो जिमाने वालों ने भोजन करने का आग्रह करते हुए कहा, "आरोगो' सा" (भोजन कीजिए) । अन्धे ने 'आरोगो' शब्द तो सुना, लेकिन इस नाम की वस्तु उसकी पत्तल में नहीं परोसी गई । उसने सोचा कि परोसने वाले जल्दी में उसे भूल गये हैं । इसलिए उसने जोरों से पुकार कर कहा, "आरोगो तो घात्यो ई कायनी" अर्थात् आरोगा तो मुझे परोसा ही नहीं गया । इस पर वहाँ खड़े किसी मसखरे ने एक बड़ा सा पत्थर लाकर उसकी पत्तल के पास रख दिया और कहा कि यह आरोगा लो ।

३६१. **आल पड़ै तो खेलूं खाऊं, सूक पड़ै घर जाऊं ।**

यदि वर्षा होगी और जमाना अच्छा होगा तो यहाँ रह कर मौज-मजे करूंगा अन्यथा अपने घर चला जाऊंगा ।

निपट स्वार्थ परायणता । सुख में साझीदार, लेकिन दुःख में किनारा कर जाना ।

३६२. **आळस नींद किसान नै खोवै, चोर नै खोवै खांसी ।**
टक्को ब्याज मूळ नै खोवै, रांड नै खोवै हांसी ।।

किसान को निद्रा व आलस्य नष्ट कर देता है, खांसी चोर का काम बिगाड़ देती है, टका रुपये का ब्याज (ऊंची दर का ब्याज) मूल को भी ले बैठता है और हँसी-मसखरी विधवा को बिगाड़ देती है ।

३६३. **आळसी को दाळद कोनी जा ।**

आलसी मनुष्य का दारिद्र्य नहीं जाता ।

संदर्भ कथा—किसी महात्मा ने एक आलसी को पारस दिया और कहा कि अमुक समय तक तुम इसे अपने पास रख कर चाहे जितना सोना बना सकोगे । आलसी खुशी से फूल कर कुप्पा हो गया कि अब तो जब चाहूँगा, धन कुबेर बन जाऊंगा । लेकिन उसने पूरी अवधि आलस्य में ही बिता दी । ठीक समय पर महात्मा ने उसके सामने प्रकट होकर अपना पारस माँगा । आलसी बहुत

गिड़गिड़ाया कि जरा देर और रुक जाइये। लेकिन महात्मा नहीं माना और अपना पारस लेकर अदृश्य हो गया। इतने समय तक पारस को पास रख कर भी आलसी अपने दरिद्रय को दूर नहीं कर पाया।

३६४. **आळा-आळा दे निवाळा।**

संदर्भ कथा—किसी राजा ने सांसी जाति की एक स्त्री के रूप पर मोहित होकर उसे पर्दे में डाल ली। अब वह महलों में रहने लगी। उसे सारी सुख-सुविधाएँ प्राप्त थीं, लेकिन फिर भी वह दिन-प्रतिदिन दुवली होती जा रही थी। राजा के पूछने पर उसने कहा कि मेरे लिए एक अलग महल वनवा दीजिए जिसमें कोई दास-दासी भी न रहे। राजा ने वैसा ही कर दिया। दासियां यथा-समय वहाँ भोजन का थाल रख आतीं, लेकिन महल में ठहरने की इजाजत किसी को न थी।

थोड़े ही दिनों में वह हृष्ट-पुष्ट होने लगी। इसका कारण यह था कि पहले उसे घर-घर भीख मांगने की आदत थी। लेकिन अन्त:पुर में अन्य स्त्रियों के साथ रहने से वह वैसा नहीं कर पाती थी। अव अलग महल में अकेली रहने के कारण उसे अपनी हवस पूरी करने का अवसर प्राप्त हो गया। इसलिए अब वह किवाड़ वन्द करके आलों में भोजन के ग्रास रख देती और फिर आलों से मांग-मांग कर खा लेती। राजा के कहने पर दासियों ने छुप कर सारी लीला देखी तो रहस्य प्रकट हो गया।

सांसिन के स्थान पर यही कथा डोमनी के संदर्भ में भी कही जाती है—

पद्य—जात सुभाव न जा कदे, मांग्योड़ो भावै।
राणी होगी डूमणी, आळै घर खावै॥

३६५. **आला बंचै न आप सें, सूका बंचै न बाप सें।**

ऐसी खराव लिखावट कि लिखने के वाद स्याही सूखने तक लिखने वाला स्वयं न पढ सके और सूखने के वाद तो उसका वाप भी न पढ पाये।

३६६. **आला सूका भेळाई बळै।**

अग्नि में गीला-सूखा सब स्वाहा हो जाता है।

३६७. **आलीजा जी आज्यो घरां, धान विनां भूखा मरां।**

परदेश में रहने वाले शौकीन किन्तु निठल्ले पति के प्रति पत्नी का कथन—आली हज़रत! घर पधारिये, यहाँ अन्न के विना सब भूखों मर रहे हैं।

३६८. **आली सूकै, सूकी झड़ै, वींनै पूरी कुण करै?**

गीली मूंज सूखती है और सूखी झड़ती है, अतः उसका वजन पूरा नहीं वैठ पाता।
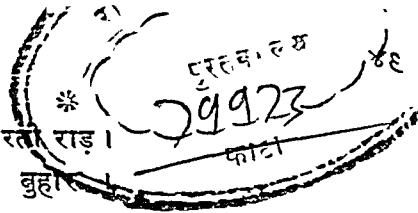
३६९. **आ ले पाडयोसरण झूंपड़ी, नित उठ करती राड़।**
आधो बगड़ बुहारती, सारो बगड़ बुहार।

संदर्भ कथा—दो स्त्रियों की झोंपड़ियां पास-पास थीं जिनके आस-पास पर्याप्त खुला स्थान था। दोनों आधी-आधी जगह को झाड़-बुहार लेतीं। लेकिन एक स्त्री बड़ी झगड़ालू थी और वह अपनी पड़ोसिन से नित्य झगड़ा किया करती। इससे तंग आकर वह अन्यत्र चली गई और जाते वक्त उपरोक्त कहावती दोहा कह गई।

३७०. **पावती वहू अर जलमतो पूत।**
घर में वहू आये और पहली ही बार वह पुत्र को जन्म दे तो फिर क्या कहना! दोहरे लाभ की प्राप्ति।

३७१. **आवतो नईं लाजै तो जावतो क्यूं लाजै?**
जिसे वेश्या के घर आते हुए लाज न आये, वह जाते समय क्यों लजाये?

३७२. **आव म्हारी हाट में देऊं थारी टाट में।**
लोभी दुकानदार इस ताक में रहता है कि कब कोई ग्राहक उसकी दुकान पर आये और कब वह उसे मूंडे।

३७३. **आवै कूंटा, पाड़ै भूंटा।**
बालक के मुंह में जब 'कूंटे' निकलते हैं तो उसे विशेष कष्ट देते हैं।
कूंटा = सामने के चौके के बाद पड़ने वाले नुकीले दांत।

३७४. **आ'वो को आ'वो ई काचो रहग्यो।**
आँवाँ का आँवाँ ही कच्चा रह गया, एक भी वर्तन नहीं पका।
जब किसी परिवार के सभी सदस्य एक से एक गये गुजरे निकलें तो इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

३७५. **आवोगा जद के ल्यावोगा, जावांगा जद के देवोगा?**
जब तुम हमारे यहां आओगे तो हमारे लिए क्या लाओगे; और जब हम तुम्हारे यहां आयेंगे तो हमें क्या दोगे?
दोनों तरफ अपने ही स्वार्थ की पूर्ति।

३७६. **आओ निकमाजी काम करां, माचो उधेड़ कर बाण वणां।**
निकम्मेजी आओ, कुछ काम करें। और कुछ नहीं तो वुनी-वुनाई खाट को उधेड़ कर रस्सी ही तैयार करें।

३७७. **आवो बैठो गावो गीत, नईं म्हारै पतासां की रीत।**
आइये, बैठिये, गीत गाइये, लेकिन हमारे यहां वताशे बांटने की रीति नहीं है।
आइये, बैठिये और गीत गाइये, लेकिन यहां देने-लेने या खिलाने-पिलाने को कुछ नहीं है।

३७८. **आवो बैठो पीवो पाणी, तीन चीज तो मोल न आणी ।**
सामान्य आव-भगत, जिसमें कौड़ी खर्च न हो ।

३७९. **आवो मियां खाणा खाओ, बिसमिल्ला झट हाथ धुलाओ ।**
आवो मिया छान उठाओ, हम बूढा कोई जवान बुलाओ ।।
भोजन के लिए सबसे आगे, काम करने के लिए सौ बहाने ।
रू० आओ मियां खाणा खाओ, थाळी छोटी परात मंगाओ ।
आओ मियां छान छवाओ, 'क औ काम काफर का ।।

३८०. **आवो म्हारा नवल बनां, थांकै घर की रोवै नाज बिनां ।**
उस निठल्ले छैले के प्रति व्यंग्य जो बना-ठना फिरता है, लेकिन घर वाली के लिए अन्न की व्यवस्था भी नहीं कर पाता ।

३८१. **आसण मोटो 'क भगती ?**
आसन (साधुओं का मठ, अखाड़ा या आश्रम) बड़ा है या भक्ति ?

३८२. **आसवाणी, भागवाणी ।**
आश्विन की वर्षा भाग्यशाली के खेत में होती है ।

३८३. **आसा खेती अमर धन ।**
सन्दर्भ कथा—एक गरीब बहेलिये की औरत ने अपने पति से कहा कि आज मेरा मन मृग का माँस खाने के लिए मचल रहा है, अतः एक मृग का शिकार करके लाओ । बहेलिये ने उत्तर दिया कि आज मैंने कुछ खाया नहीं है और भूखे पेट मृगों के पीछे दौड़ने में असमर्थ हूँ, इसलिए यदि तुम मुझे गरम-गरम रोटी बनाकर खिलाओ तो मैं मृग का शिकार करने के लिए जा सकता हूँ । लेकिन घर में तो अन्न का दाना भी नहीं था, इसलिये बहेलिये की औरत ने पड़ोसिन के घर जाकर उससे कहा कि तुम मुझे सेर भर बाजरा देदो, मेरा पति जिस मृग को मार कर लायेगा, मैं उसका पिंड तुम्हें दे दूंगी । सेर भर बाजरे के बदले में मृग का पिंड पाने की आशा में पड़ोसिन ने उसे सहर्ष बाजरा दे दिया ।

मृग तो कहीं जंगल में चर रहा होगा । वह शिकारी के हाथ आये न आये, लेकिन आशा की खेती अमर धन है, इसलिए पड़ोसिन ने मृग का पिंड पाने की आशा में ही बाजरा दे दिया—
पद्य—आसा खेती अमर धन, निरधनियां धनवंत ।
गोरी पींडा बेचती, मिरगा पान चरंत ।।

३८४. **आसाढां सुद नौमी, घण बादळ घण बीज ।**
कोठा खेर खखेरल्यो, झोळी राखौ बीज ।।
आषाढ शुक्ला नवमी को यदि आकाश में बादल और बिजली खूब हों तो कोठों में भरे अन्न को बुहार-झाड़ के बेच डालो, केवल बोने के लिए बीज रखो, क्योंकि जमाना भरपूर होगा जिससे अन्न सस्ता रहेगा ।

रू० आसाढ़ै सुद नौमी, घण वादळ घण वीज ।
कोठा खेर खंखेर दयो, राखो वळद अर बीज ।।

३८५ **आसाढे सुद नवमी, नै बादळ ना बीज ।**
हळ फाड़ ईंधण करो, बैठ्या चावो बीज ।।

आषाढ सुदि नवमी को यदि आकाश में बादल और विजली न हों तो हल को चीरफाड़ कर ईंधन के स्थान पर जला दो और खेत में बोने के लिये रखे हुए बीज (अन्न को चबा कर किसी तरह गुजारा करो, क्योंकि अकाल पड़ेगा ।

रू० सुदी असाढां नम्म नै, ससि जो निरमळ देख ।
जा पीव तूं माळवै, भीख मांगणी पेख ।।

३८६. **आसाढी पूनम दिनां, निरमल ऊगै चंद ।**
कोई सिंध कोई माळवै, जायां कटसी फंद ।।

यदि आषाढ मास की पूर्णिमा को चन्द्रमा निर्मल (विना बादलों के) उगे तो अकाल पड़ेगा और लोगों को जीवन-यापन हेतु सिन्ध, मालवा आदि जाना पड़ेगा ।

३८७. **आसाढी पूनो दिना, बादर झीणो चन्द ।**
तो भड्डर जोसी कहै, सगळां नरां अनन्द ।।

यदि आषाढ मास की पूर्णिमा को चन्द्रमा का उदय वादलों में हो तो भड्डर जोशी का कहना है कि सुकाल होगा जिससे सब लोग आनंदित होंगे ।

३८८. **आसोजां का पड़्या तावड़ा, जोगी होग्या जाट ।**

आसोज की तेज धूप से घबड़ा कर खेती करने के अभ्यस्त जाट भी खेती छोड़ कर जोगी हो गये ।

आश्विन की धूप वड़ी तेज होती है ।

३८९. **आसोजां में मोती बरसै ।**

आश्विन मास में होने वाली थोड़ी वर्षा भी खेती के लिए वड़ी मूल्यवान् होती है ।

३९०. **आसाढां धुर अस्टमी, चंद उगंतो जोय ।**
काळो व्है तो कुरियो—धोळो व्है तो सुगाळ ।
जो चंदो निरमळ हुवै तो पड़ै अचित्यो काळ ।।

आषाढ कृष्ण पक्ष की अष्टमी को यदि चांद का उदय काले वादलों में हो तो जमाना साधारण होगा, श्वेत बादलों में उदय होने पर भरपूर जमाना होगा और यदि वादल न हों तो दुर्भिक्ष पड़ेगा ।

३९१ **आसाढां सुद अस्टमी, ससि वादळ छायो ।**
च्यार कूंट पिंजर झरै, ज्यूं भांडो रायो ।।

आषाढ शुक्ला अष्टमी को यदि चांद गहरे वादलों में उगे तो चारों दिशाओं में खूब वर्षा हो ।

रू० आषाढां धुर अस्टमी, चंद सेवरा छाय ।
च्यार मास चू तो रहै, जिउं भांडै रै राय ।।

३९२. **आहारे विहारे लज्जा न कारे ।**
आहार और व्यवहार में लज्जा नहीं करनी चाहिए ।

३९३. **आ ही तो बीमारी ही ।**
यही तो बीमारी थी ।

संदर्भ कथा—एक बार अकाल पड़ा तो गाँव में रहने वाला एक गरीब किन्तु चालाक बनिया पास के शहर में गया और उसने एक विधुर सेठ के साथ अपनी लड़की का विवाह करना तय करके उससे पांच हजार रुपये ले आया । विवाह के लिए निश्चित तिथि के दिन उसने अपने घर में बहुत ऊंचा 'मांडा' छवा दिया । सेठ की बारात उसी को लक्ष्य करके उस घर की ओर बढने लगी ।

लेकिन बनिये के तो कोई लड़की थी ही नही । इसलिए लड़की वालों ने एक कुतिया को मार कर उसकी अर्थी बांधी और उसे कंधों पर उठा कर बारात के सामने चले । बारात वालों के पूछने पर उन्होंने गहरा दुःख प्रकट करते हुए कहा कि जिस लड़की की शादी होनी थी, वह अचानक मर गई । इस बात को सुन कर वे सब सकते में आ गये । लेकिन अर्थी जल्दी में बांधी गई थी, इसलिए कुतिया की पूंछ नीचे की ओर लटकती रह गई थी । बरातियों में से किसी ने पूछ लिया, यह क्या है ? बनिये ने तत्काल ही उत्तर दिया कि यही तो बीमारी थी । आज अचानक उसके पूंछ निकल आई, जिससे वह इतनी जल्दी मर गई । इस पर दूल्हा मन मार कर बरात सहित अपने घर की ओर लौट पड़ा ।

३९४. **इक मत के, दो मत कै ।**
'क' पर एक मात्रा लगाने से 'के' बनता है, लेकिन दो मात्राएँ लगाने से 'कै' (कई) । एक तो १ ही रहता है, लेकिन एक और एक मिलने पर ११ हो जाते हैं ।
रू० इक लग 'के' दो लग 'कै' ।

३९५. **इक लख पूत सवा लख नाती, उण रावण घर दीया न बाती ।**

३९६. **इकली लकड़ी ना जळै, नां'र उजाळा होय ।**
अकेली लकड़ी न तो अच्छी तरह जल पाती है और न उससे उजाला हो पाता है ।

३९७. **इक्कल हट्टी वाणियों, करै मन की जाणियों ।**
गांव में अकेली दुकान वाला बनिया मनमाने भाव लगाता है ।
एकाधिकार से मनमानी करने का अवसर प्राप्त होता है ।

३९८. **इज्जत भरम की, कमाई करम की, लुगाई सरम की ।**
जब तक भ्रम बना रहे तभी तक इज्जत है, कमाई भाग्य से होती है एवं नारी का लज्जाशील होना अपेक्षित है ।

३९९. **इण घर आही रीत, दुरगो सफरां दागियो ।**
यह कहावत मारवाड़ के राठौड़ वीर दुर्गादास से सम्बन्धित है । दुर्गादास ने मारवाड़ राज्य की बड़ी सेवा की, लेकिन अन्त में उसे राज्य से निष्कासित कर दिया गया एवं उसका अंतिम संस्कार सफरा नदी के तट पर हुआ ।

४०० **इत्ता बरस दिल्ली में रह कर भी भाड़ ई भूंजी !**
इतने वर्षों तक दिल्ली में रह कर भी कोरा ही रहा ।
रू० वारा बरस दिल्ली में रह कर भी भाड़ ई भूंजी ।

४०१. **इत्ती तो मरदां की छूट ई है ।**
इतनी तो मर्दों की छूट ही है ।

सन्दर्भ कथा—एक आदमी अपने समधी से मिलने के लिए उसके घर गया । समधिन चक्की चला रही थी और अपने पति को नीचे पटक कर स्वयं उसके ऊपर बैठी थी । फिर भी उसका पति वाजरे के दाने ले-ले कर चवा रहा था । समधी को देख कर वह सकुचाने लगा तो आगन्तुक ने उससे कहा कि समधी जी ! शर्माते क्यों हो ? मुझ पर भी ऐसी ही बीतती है, लेकिन तुम भाग्यशाली हो जो नीचे पड़े-पड़े ही वाजरा चवा रहे हो; मुझे तो इसकी भी इजाजत नहीं है । यह सुनकर नीचे पड़े हुए समधी के मन में होशियारी आगई और उसने अपनी मोंछों पर ताव देते हुए कहा—हाँ, मर्दों को इतनी तो छूट है ही ।

४०२. **इन्दर की मा भी तिसाई ?**
क्या इन्द्र की माँ भी प्यासी ही रही ?
रू० इन्दर की जाई, पाणी की तिसाई ।

४०३. **इसा ही म्हे, इसा ही म्हारा सग्गा ।**
म्हारै कोनी टोपली, वांकै कोनी झग्गा ।।
जैसे हम, वैसे ही हमारे समधी ! उनके सिर पर टोपी नहीं, हमारे तन पर कुरता नहीं ।

४०४. **इसी खाट इसा ही पाया, इसी रांड इसा ही जाया ।**
जैसी खाट, वैसे ही उसके पाये । जैसी माँ, वैसे ही (गये-गुजरे) उसके वेटे ।
रू० ईस जिसा पाया, मां जिसा जाया ।

४०५. **इसी खाण का इसा ही हीरा, इसी भाण का इसा ही वीरा ।**
ऐसी खानों में ऐसे ही हीरे निकलते हैं, ऐसी वहिनों के ऐसे ही भाई होते हैं ।

४०६. **इसी पोल रावळै में कठै, जिको दो वार जींमज्या ।**
रावले में ऐसी पोल कहां, जो कोई दो वार जीम जाए ?

४०७. **इसी रांडां का इसा ई नांव ।**
ऐसी रंडाओं के ऐसे ही नाम ।

४०८. **इसी लाय, जिकी न दीवा लेकर देखो ।**

४०९. **इसी ही रांड का जाया, कदे न गुड़ तेल ल्याया ।**
ऐसी ही रंडा का जाया, जो कभी घर में गुड़-तेल भी नहीं लाया ।

४१०. **इसै व्यावां का इसा ही नेगचार ।**
जैसे ब्याह, वैसे ही नेगचार ।

४११. **इसो ही हरि गुण गायो, इसो ही संख बजायो ।**
यहां हरि-गुण गाना और शंख बजाना बराबर है ।
सब धान बाईस पसेरी ।

४१२. **इसो कुण सो गाछ जींकै हवा नई लागी ?**
ऐसा कौनसा वृक्ष, जिसे कभी हवा न लगी हो ?

४१३. **इसो सोनो के काम को, जिको कान फाड़ै ?**

४१४. **इसो भोमियों भोळो कोनी जिको रेवड़ मांय सें भूखो ई आज्या ।**
रू० इसो भगवानियों भोळो कोनी जिको भूखो ई गायां चरावण नै चल्यो जा ।

४१५. **ईं हाथ दे, ऊं हाथ ले ।**
इस हाथ दे, उस हाथ ले ।

४१६. **ईलोजी घोड़ां का पारखू, पूंछ ऊंची कर दांत देखैं ।**
निपट अनाड़ी और अनभिज्ञ व्यक्ति जब ख्वाहमख्वाह किसी विषय में टांग अड़ाता है, तब व्यंग्य में इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

४१७. **उगतो ई कोनी तपै जिको छिपतो के तपैगो ?**
यदि उदय होते हुए सूर्य में ही प्रखरता नहीं तो छिपते हुए में क्या होगी ?

४१८. **उगाई अर गाही ।**
उधार दी गई रकम को वसूल करने के लिए जितने फेरे लगाये जाएँ, उसी के अनुरूप उसकी वसूली हो पाती है ।

४१९. **उघाड़ी देख कर मन चालज्या ।**

४२०. **उघाड़ै बारणै धाड़ नीं, उजाड़ गाँव में राड़ नीं ।**
जिस घर का दरवाजा खुला पड़ा रहता है वहां धाड़ा (डाका) नहीं पड़ता और निर्जन गांव में झगड़ा नहीं होता ।

४२१. **उघाड़ै मांस पर तो माखी ई बैठसी ।**
कुलटा के यहां तो लम्पट पहुँचेंगे ही ।

४२२. **उघाड्यां ई पत ऊवरै, ढक्यां ई पत जाय ।**

४२३. **उफळ्या समदर ना डटै ।**

यदि समुद्र अपनी मर्यादा तोड़ दे तो फिर उसे कौन रोक सकता है ?

४२४. **उठती मालण अर बैठतो बाणियों ।**

शाक-सब्जी बेचने वाली मालिन घर लौटने की जल्दी में बचा-खुचा सामान सस्ता दे देती है। बनिया सवेरे दुकान खोल कर बैठता है तो वह बोहनी करने के लिए कम मुनाफे पर अथवा लागत मूल्य पर भी चीज बेच देता है ।

४२५. **उठ बंदा, वही धंधा ।**

सो कर उठते ही आदमी के आगे नित्य-प्रति का धंधा तैयार रहता है ।

४२६. **उडेड़ो आटो बडेरां कै नांव ।**

चक्की से अनाज पीसते समय जो थोड़ा-बहुत आटा हवा में उड़ गया, वह पुरखों के निमित्त ही सही ।

४२७. **उणिहारां सें देस भरया पड़्या है ।**

४२८. **उत्तर ढींगा मेरी बारी ।**

एक के बाद दूसरे की भी बारी आती है ।

रू० उतर भीखा मेरी बारो ।

४२९. **उतर पातर, मैं मियों तूं चाकर ।**

कर्ज-मुक्त होने पर आदमी कर्ज देने वाले का दबेल नहीं रहता ।

४३०. **उतरा पांव पसारिये, जितरी लाम्बी सौड़ ।**

अपने बूते और साधनों के अनुरूप ही काम करना चाहिये ।

४३१. **उतर्चो गाँव भलाई डूमां नै दयो ।**

जब अपने से गांव छिन गया, तब भले ही किसी को दें ।

४३२. **उतर्चो घाटी हुयो माटी ।**

गले से उतरने के बाद स्वादिष्ट पक्वान्न भी मिट्टी बन जाता है ।

रू० ढळ्यो घाटी, होयो माटी ।

४३३. **उतर्चो हाकम ढेढ बरोबर ।**

पदमुक्त अधिकारी की कद्र नहीं रहती ।

४३४. **उतार दीनो लोई तो के करैगो कोई ।**

लज्जा की चादर उतार फेंकने पर लोक-निंदा का क्या डर ?

रू० (१) गेर दीनी लोई तो के करैगो कोई ।
(२) गेर दीनी लोई तो के करै सगो-सोई ।

४३५. **उतावळो सो बावळो ।**

४३६. **उधार अर हार ।**

उधार देने वाला हार में रहता है ।

४३७. **उधार तोलां, न मांगण जावां ।**
न उधार तोलें, न ऋण उगाहने के लिए जाएँ ।

४३८. **उधार दीजे, वैरी कीजे ।**
किसी को उधार देना, उसे बैरी बनाना है ।

४३९. **उधार दियो अर गायक गमायो ।**
उधार दिया और ग्राहक खोया ।

४४०. **उधारियो किसी पासंग देखै ।**
उधार लेने वाला 'पासंग' नहीं देखता ।

४४१. **उधारियो दिवाळियो, जिनसियो साह !**
सारा माल लोगों को उधार दे देने से दुकानदार का दिवाला पिट जाता है। लेकिन वही माल उसकी दुकान में पड़ा रहे तो वह शाह कहलाता है ।

४४२. **उधारो लियोड़ो तो लाय में ई कोनी बळै ।**
यदि किसी कर्जदार के घर में आग लग जाए तो वह यह कह कर बरी नहीं हो सकता कि घर की अन्य वस्तुओं के साथ उसका कर्जा भी जल गया है। घर में आग लग जाने के बाद भी कर्जा तो बरकरार रहता है ।

४४३. **उपासरै में कांगसिये को के काम ?**
उपासरे में कंघे की क्या उपयोगिता ?

४४४. **उलटा बांस बरेली नै भरै ।**

४४५. **उलटी गत गोपाल की, गई सिटल्लू मांय ।**
कावल में मेवा करया, टींट बिरज कै मांय ।।
भगवान् कृष्ण की भी उलटी रीति है जो काबुल में तो मेवे और व्रज भूमि में करील उत्पन्न किये ।
रू० कहूँ-कहूँ गोपाल की, गई सिटल्लू भूल ।
कावल में मेवा कर्‌या, व्रज कर्‌या बबूल ।।

४४६. **उलटो चोर कोतवाळ नै डंडै ।**
चोर उल्टे कोतवाल को दंड देता है !
चोर उल्टे साहूकार को दंड देता है !

४४७. **उलटो दिन बूझ कर कोनी आवै ।**
किसी का बुरा दिन उसकी पूर्व स्वीकृति लेकर नहीं आता ।

४४८. **ऊंखळी में सिर दे जिको धमकां सूं क्यूं डरै ?**
जो जान-बूझ कर ओंखली में सिर डाले, वह फिर मूसल की चोट से क्यों डरे ?

४४९. **ऊंगणियों अर पादणियों हामळ कोनी भरै ।**

४५०. **ऊंघै ही, विछायो लादग्यो ।**
ऊंघने वाली को विछौना मिल गया ।

सन्दर्भ कथा—एक ब्राह्मण के यहाँ हरहाई गाय थी। वह दूध तो जरा भी नहीं देती थी, लेकिन पराये खेतों में घुस कर नुकसान करती रहती, जिससे उसे नित्य उपालंभ मिलते। ऐसी गाय को कोई खरीदना भी नहीं चाहता था और ब्राह्मण होने के नाते वह उसे कसाई को भी नहीं दे पाता था। ब्राह्मण बड़ी साँसत में फँसा था। एक दिन गाय किसी खाई में गिर कर मर गई। ब्राह्मण का पिंड सहज ही छूट गया। उसने कहा—

बांगड़ गाय विड़ै में वासो, नित उठ रवै जीव नै सांसो।
दूध दही मैं कदे न खाद्यो, ऊंधै ही बिछायो लाद्यो।

४५१. **ऊँचा चढ चढ देखो, घर-घर यो ही लेखो।**

संदर्भ कथा—एक विधवा स्त्री अपने छोटे लड़के के साथ रहती थी। वह दुश्चरित्रा थी, इस लिए काजल-टीकी वगैरह शृंगार तो किया ही करती, लेकिन दिखावे के लिए तिलक-छापे भी लगाती और हाथ में माला लिये रहती। लड़का कुछ सयाना हुआ तो अपनी माँ के सारे करतब जान गया।

एक दिन उसने अपनी माँ से काजल-टीकी लगाने का कारण पूछा तो माँ ने रुष्ट होकर उसे एक गुरु को सौंप दिया। वह गुरु के घर पर रह कर ही पढने लगा। लेकिन गुरु की स्त्री भी व्यभिचारिणी थी। एक दिन गुरु किसी दूसरे गाँव गया तो उसने अपने जार को घर पर बुलाया। उसने उसके लिए वैंगन की सब्जी बनाई, लेकिन उसने कहा कि वैंगन मुझे 'वादी' (वायु-विकार) करता है, इसलिए यह सब्जी मैं नहीं खाऊंगा। इस पर गुरु की स्त्री ने वह सब्जी उस लड़के को दे दी। लड़के को वह सब्जी बहुत भाई और वह जोरों से बोल उठा—

कैईं कै वैंगण वायला, कैईं कै वैंगण पच्छ।
कैईं कै वादी करै, कैईं कै जावै जच्च॥

गुरु की स्त्री को यह बात बहुत बुरी लगी और उसने लड़के को घर से निकाल दिया। वहाँ से निकल कर वह किसी राजा की राजधानी में पहुँच गया और संयोग से राजा के यहाँ नौकर हो गया। राजा ने उसे अन्त:पुर की ड्योढी पर नियुक्त कर दिया। वहाँ रहते हुए उसे इस बात का पता चल गया कि राजा की रानी भी बदचलन है। उसने सोचा कि रंक से लगा कर राजा तक इसी प्रकार लुटिया डूबी हुई है और सहसा बोल उठा—

ऊंचा चढ-चढ देखो, घर-घर यो ही लेखो।

४५२. **ऊंचा जांका बैठणा, जांका खेत निवाण।**
वांको दोखी के करै, जांका मित दिवाण॥

४५३. **ऊंची दुकान, फीका पकवान ।**
दुकान तो बड़ी, लेकिन पकवान फीके ।
नाम के अनुसार गुण नहीं, नाम बड़ा दर्शन छोटा ।

४५४. **ऊंचे गढ़ां का ऊँचा ई कांगरा ।**
ऊंचे गढों के ऊंचे ही कंगूरे । बड़ों की बातें भी बड़ी ।

४५५. **ऊंचै चढ-चढ डोळी डाकै, नई मरद नै थापै ।**
राघो चेतन यूं कहै, थाक्यां रह'गी आपै ।।
जो पुंश्चली औरत दीवारें उलांघ-उलांघ कर अन्यत्र जाती रहती है एवं अपने पति को कुछ नहीं गिनती, वह तभी मानेगी, जब उसकी इन्द्रियां शिथिल हो जाएँगी ।

४५६. **ऊँट की नाड़ लांबी होवै तो काटण सारू कोनी होवै ।**
ऊँट की गर्दन लम्बी है तो काटने के लिए नहीं है ।

४५७. **ऊँट कै सागै बिल्ली बेचै ।**
सदर्भ कथा—किसी आदमी का ऊँट खो गया तो उसने घोषणा करदी कि यदि उसका ऊँट मिल जाए तो वह उसे दो टके में बेच देगा । जिस आदमी को ऊँट मिला, वह इस आशा से उसे उसके पास लाया कि वह ऊँट के मालिक से उसे दो पैसे में खरीद लेगा । लेकिन ऊँट के मालिक ने एक युक्ति निकाल ली । उसने ऊँट के गले में एक बिल्ली बांध दी और कहा कि ऊँट खरीदने वाले को यह बिल्ली भी खरीदनी होगी । ऊँट की कीमत तो उसने अपने वादे के मुताबिक दो टके ही रखी, लेकिन बिल्ली की कीमत उसने ऊँट की वास्तविक कीमत से भी अधिक बतलाई । इसलिए ऊँट को किसी ने नहीं खरीदा और ऊँट वाले की चालाकी के कारण उसका ऊँट बिना कुछ खर्च किये उसे वापिस मिल गया ।

४५८. **ऊँट को पाद धरती को न अकास को ।**

४५९. **ऊँट को रोग रैबारी जाणै ।**
ऊँट की बीमारी को रैबारी (ऊँट की विशेषज्ञ एक जाति)जानता है ।

४६०. **ऊंट खुड़ावै, अर गधो डामीजै ।**
ऊँट लंगड़ावे और डाम गधे को लगाया जाए ।
अपराध कोई और करे एवं दण्ड किसी और को दिया जाए ।

संदर्भ कथा—ढोला-मारू की सुप्रसिद्ध कथा में ऐसा प्रसंग है कि मारवणी को लाने हेतु पूगल जाने के लिए उत्सुक ढोला को जब मालवणि और अधिक रोक पाने में असमर्थ हो गई तो उसने ढोला के ऊँट (करहा) को प्रलोभन देकर इस बात के लिए राजी कर लिया कि वह लँगड़ा होने का

वहाना करके ढोला को रोके। ऊँट ने वैसा ही किया। इस पर उसे 'डाम' (गर्म लोहे से दाग लगाना) लगाने की तैयारी की जाने लगी। इतने में वाईं ओर गधा वोला। मालवणि ने सोचा कि गधे ने ढोला को अच्छा शकुन दे दिया। इससे वह गधे पर झल्ला उठी और उसने ऊँट को वचाने एवं गधे को दण्ड दिलाने के लिए ढोला से कहलवाया कि मेरे वाप के यहाँ ऊँटों के 'टोले' (समूह) रहते थे और जव कोई ऊँट खोड़ा हो जाता था तव गधे को 'डाम' लगाया जाता था—

ढोला म्हारा वाप रै, छो करहां रो वग्ग ।
जे करहो खोड़ो हुवै, गादह दीजै दग्ग ।।

इस पर ढोला ने उस गधे को पकड़वा कर मंगवा लिया और उसके 'डाम' लगवा दिया। ऊँट तो केवल वहाना वना रहा था, अतः चंगा हो गया और मालवणि की वात सच मानली गई

४६१. **ऊंट खोज्या तो मेरी टोपी उतार लेई।**
तुम्हारा ऊँट गुम हो जाए तो इसके वदले में मेरी टोपी उतार लेना।

सन्दर्भ कथा—एक चरवाहे के लड़के ने गाँव के चौधरी के पास जाकर कहा कि मैं आपके ऊँट जंगल में चरा लाया करूंगा। चौधरी ने उससे पूछा—यदि ऊंट खो जाएँ तो क्या होगा ? लड़के ने सहज भाव से उत्तर दिया—यदि ऊँट खो जाएँ तो मेरी टोपी उतार लेना।

४६२. **ऊंट गाजै अर विलोवणो वाजै।**
जिस घर में मस्त ऊँट वलवलाते रहते हैं और विलौने चलते रहते हैं, ग्राम्य जीवन में वह घर सम्पन्न माना जाता है।

४६३. **ऊंट घी देवताईं अरड़ावै अर फिटकड़ी देवताईं अरड़ावै।**
ऊँट को चाहे घी दें, चाहे फिटक़री, वह तो चिल्लायेगा ही।

४६४. **ऊंट चढे नै कुत्तो खाय, अण होणी को के उपाय।**
ऊँट चढे को कुत्ता काट खाये, इसकी संभावना प्राय नहीं होती। लेकिन यदि अनहोनी ही होनी हो तो फिर उसका क्या इलाज ?

४६५. **ऊंट छोड़्यो आक, बकरी छोड़्यो ढाक।**
ऊँट केवल आक को नहीं खाता और वकरी ढाक को छोड़ कर सव कुछ चट कर जाती है।

४६६. **ऊंट तो अरड़ावता ई लदै।**
ऊँट तो चिल्लाते हुए ही लादे जाते हैं।

४६७. **ऊंट न कूदियो, वोरा कूदिया, वोरां मांयला छाणा कूदिया।**
ऊँट तो उछला ही नहीं, उससे पहले ही उस पर लदे वोरे उछल पड़े और वोरों से भी पहले वोरों में भरे कंडे उछलने लगे।
मालिक के वोलने से पहले ही उसके नौकरों के भी नौकर जोश में आने लगे।

४६८. **ऊंट नै उठताई ढाण नहीं घालणो।**
ऊंट को उठते ही सरपट नहीं दौड़ाना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से वह बहुत जल्दी ही थक जाता है।

४६९. **ऊंट नै सुहाळियां सें के होवै ?**
ऊंट का काम 'सुहाळियों' से नहीं चलता।
रू० ऊँटा नै गुळ्याणी सें के होवै ?

४७०. **ऊंट पर सें पड़ै, भाड़ेती सें रूसै।**
ऊंट को किराये करने वाला व्यक्ति स्वयं ऊँट पर से गिर पड़ता है और रूठता है ऊँट के मालिक से, जिसका ऊँट किराये पर लिया गया है।
अपनी कमजोरी या गलती का दोष दूसरों को देना।

४७१. **ऊंट बड़ो होवै ज्यूं लारनै मूतै।**
ऊँट जैसे-जैसे बड़ा होता है, वह पीछे की ओर मूतता है।
शक्ति और संपन्नता की वृद्धि के साथ दुष्ट आदमी उल्टे काम करता है।

४७२. **ऊँट बिलाई ले गई, हांजी-हांजी कहणो।**
ऊँट को बिल्ली उठा लेजाए, यह संभव नहीं। लेकिन जबरदस्त की इच्छा के अनुसार ऐसा स्वीकार कर लेना पड़ता है।

इस संदर्भ की एक छोटी सी कथा है कि किसी गाँव से एक जाट का ऊँट चोरी चला गया। गाँव का ठाकुर चोरों से मिला हुआ था अतः जाट के पुकार करने पर उसने बनावटी छान-बीन के बाद यह फैसला दिया कि जाट के ऊँट को बिल्ली ले गई · जाट भी इस बात को जानता था कि ऐसा कदापि नहीं हो सकता। लेकिन उसे उसी गाँव में रहना था, अतः उसने अपनी घरवाली से कहा—

जाट कहे सुण जाटणी, अैई गांव में रहणो।
ऊँट बिलाई ले गई, हांजी-हांजी कहणो॥

४७३. **ऊंट मरै जद चींचड़ा ई मरै।**
ऊँट मरता है तो चींचड़े भी मरते हैं।
चींचड़ा = ऊँट आदि जानवरों की चमड़ी से चिपक कर खून चूसने वाला एक कीट

४७४. **ऊंट मरै तो ई मारवाड़ कानी जोवै।**
रू० ऊँट मरै तो ई लंका कानी जोवै।

४७५. **ऊंट मरचो, कपड़ै कै सिर।**
ऊँट मर गया तो उसकी कीमत भी कपड़े से वसूल की जाएगी।

संदर्भ कथा—कपड़े के व्यापारी पहले दिसावरों से ऊँटों पर ही कपड़ा मंगवाते थे। किसी व्यापारी का एक ऊँट रास्ते में मर गया। जब उसे इस बात की सूचना दी गई तो उसने कहा—कोई बात नहीं, ऊँट मर गया है तो उसकी कीमत भी कपड़े का दाम बढा कर वसूल करली जाएगी।

४७६. **ऊंट में सीधोपण कठै ? वो तो मूतै ई आडो-टेडो।**
ऊँट में सीधापन कहाँ ? वह तो मूतता ही आड़ा-टेडा है।

४७७. **ऊंट लादणै सें गयो, पण पादणै सें तो कोनी गयो।**

४७८. **ऊंट होवै तो झै-झै करां ?**
पास में ऊँट हो तब तो उसे बिठाने के लिए "झै झै" करें ?

४७९. **ऊंटा कै ब्या में गधेड़ा गीत गावै।**
ऊँटों के विवाह में गधे ही गीत गाते हैं और सारा बानक भी वैसा ही होता है।
पद्य—ऊँट बनो जांगड़ गधो, स्वान करै जस केळ।
मैंस भुवा ले बारणा, मिल्यो अमोलक मेळ।।

४८०. **ऊंटां टेटां टेगड़ां, गुड़ गाडर गाडां।**
अतरा में दुख ऊपजै, जे मींडक बोलै नाडां।।

४८१. **ऊंडो बावणियों अर घूस को देवणियों हार में कोनी रैवै।**
गहरा बोने वाला और रिश्वत देने वाला घाटे में नहीं रहता।

४८२. **ऊंदरी का जाया तो बिल ई खोदै।**
चुहिया की संतान तो बिल ही खोदेगी।

४८३. **ऊगन्तै का माछला. आंथवतै की मोख।**
डंक कहै हे भड्डली, नदियां चढसी गोख।।
यदि सूर्योदय के समय आकाश में छोटे-छोटे बादलों के समूह एवं सूर्यास्त के समय मोख दिखाई दे तो वर्षा खूब हो, जिससे नदियों में बाढ़ आ जाए।
रू० आथण मोग सवारे गोळा।
भरी दुपैरी 'मे का रोळा।।

४८४. **ऊगतै का गीत, ढळतो बिकै न सींत।**
जिसका अभ्युदय हो उसकी प्रशस्ति सब कोई गाते हैं, लेकिन पतनोन्मुख को कोई नहीं पूछता।

४८५. **ऊगा सूर भागा भूर, कुण खोदै आली धूड़।**
सूर्य के उगने पर जाड़ा मिट गया तो अब गीली बालू को कौन खोदे ?

सन्दर्भ कथा—एक सियार-सियारिन जंगल में रहते थे। लेकिन-दोनों ही इतने आलसी थे कि अपने रहने के लिए 'घुरी' भी नहीं खोदते थे। रात को जाड़ा पड़ता तो दोनों यह तय करते कि सवेरा होते ही अवश्य घुरी खोदेंगे।

लेकिन सूर्योदय के साथ जैसे ही कुछ गरमाहट महसूस करते, रात की बात को भुला कर बोल पड़ते—

ऊगा सूर भागा भूर, कुण खोदै आली धूड़ ।

ऐसी एक कथा किसी डोम के विषय में भी कही जाती है । रात को जाड़े के मारे ठिठुरने पर तो वह कहता कि सवेरा होते ही अपना हुक्का बेच कर 'सौड़' भरवाऊंगा । लेकिन सूर्योदय के साथ ही अपने वादे को भुला कर बोल उठता—वह देखो सौ "सौड़-सौड़ियों" का स्वामी उग आया है, अब 'सौड़' भराने की क्या आवश्यकता है ?

४८६ **ऊगै सो आथरणै, जलमै सो मरै ।**

उदय होने वाला अस्त भी होता है, जन्म लेने वाला मरता भी है ।

४८७. **ऊठ बींद फेरा ले, हाय राम मौत दे ।**

नितान्त आलसी और अकर्मण्य व्यक्ति बड़े से बड़े लाभ के लिए भी जरा सा श्रम करना नहीं चाहता ।

४८८ **ऊठो सासूजी सांस ल्यो, मैं कातूं थे पीसल्यो ।**

बहू अपनी सास के आराम का बड़ा खयाल रखती है ! वह सास से कहती है कि—सासजी, चर्खा तो मैं कात लेती हूँ, तुम चक्की पीस लो, जिससे तुम्हें थोड़ा आराम मिल जाए ।

सास से उपेक्षाकृत कड़ा श्रम करवा कर भी बहू उस पर अहसान थोपती है ।

४८९. **ऊत गये की चिट्ठी आई, बांचै जींनै राम दुहाई ।**

कुपुत्र की चिट्ठी आई है, जो कोई इसे पढे उसे राम की आन है ।

४९०. **ऊत गयो दक्खण, रैया वैही लक्खण ।**

कपूत कहीं चला जाए, उसके लक्षण सुधरते नहीं ।

रू० ऊत गयो दक्खण, वठे का ल्यायो लक्खण ।

४९१ **ऊत गाँव में ऊंट आयो, लोग जाणै परमेसर आयो ।**

मूर्खों के गाँव में ऊंट आया तो उन्होंने समझा कि भगवान् आ गये ।

४९२. **ऊत गाँव में कुम्हार ई महतो ।**

४९३. **ऊतां कै किसा सींग होवै ?**

मूर्खों के सिर पर पशुओं की तरह सींग नहीं होते, लेकिन व्यवहार में वे पशु-तुल्य ही होते है ।

४९४. **ऊदळतियां नै किसा दायजा मिलै ?**

घर छोड़ कर भाग जाने वालियों को दहेज नहीं मिला करता ।

४९५. **ऊधो को लेणो न माधो को देणो ।**

न उधो से कुछ लेना, न माधो को कुछ देना ।

४९६. **ऊपर कायनी तो हेटै भी कायनी ।**

ऊपर कुछ नहीं है तो नीचे भी कुछ नहीं ।

सन्दर्भ कथा—एक बारहठ किसी अनजान गाँव में पहुँच गया। वहाँ के ठाकुर से उसकी कोई जान-पहचान नहीं थी। भोजन का वक्त हो गया था, भूख जोरों से लग रही थी, इसलिए कुछ सोचकर ठाकुर की गढी की ओर चल पड़ा। राह में किसी से एक कोरा कागज लेकर उसे चिट्ठी की तरह लपेट लिया। गढी में पहुँचा तो ठाकुर सा'ब अन्य आदमियों के साथ थाल पर बैठने ही वाले थे। बारहठ ने ठाकुर से 'जय माताजी' की कह कर अपना परिचय दिया और बोला कि आपके लिए एक आवश्यक पत्रिका लाया हूँ। ठाकुर ने 'पत्रिका' लेकर अपने पास रख ली और बारहठजी के लिए भी भोजन का थाल लगवा दिया। बारहठजी ने खूब छक कर भोजन किया। भोजन के बाद जब बारहठजी जाने लगे तो ठाकुर सा'ब ने पत्रिका उठाई, लेकिन उस पर नाम-ठाम कुछ नहीं लिखा था। उन्होंने कहा 'ऊपर तो कायनी' अर्थात् उसके ऊपर तो कुछ भी नहीं लिखा है। इस पर बारहठजी ने उत्तर दिया—'ऊपर कायनी तो हेटै भी कायनी' अर्थात् ऊपर कुछ नहीं है तो नीचे भी कुछ नहीं है और यों कह कर वे शीघ्रता से चलते बने।

४९७. **ऊपर तो लहरचो, पण नीचै के पहरचो ?**
सिर पर तो लहरिये का सजीला साफा और नीचे नंग-धड़ंग।
रू० (१) ऊपर बागा, नीचै नागा।
(२) ऊपर चीरो, नीचै वस।
(३) पून उघाड़ी सिर पर चीरो, वो आयो बाईजी थारो बीरो।

४९८. **ऊपर थाळी नीचै थाळी, मांय परोसी डेढ सुहाळी।**
बांटण आळी तेरा जणी, हांते थोड़ी हाल घणी ॥
ऊपर थाली, नीचे थाली और उनमें रखी है केवल डेढ सुहाली (सुहाली = मैदे आदि की पपड़ी) और इसे बाँटने के लिए तेरह स्त्रियां चली हैं।
सार नगण्य, आडम्बर बेशुमार।
रू० च्यार सुहाळी चवदा थाळी, वांटण आळी सत्तर जणी।
फळसै सेती गीत परूंध्या, हांते थोड़ी हाल घणी ॥

४९९. **ऊपर भरै, नीचै भरै, जैंको गरु गोरखनाथ के करै ?**
पर्याप्त मात्रा में पौष्टिक पदार्थ खाने वाले किन्तु संयमहीन व्यक्ति को गुरु गोरखनाथ भी नहीं बचा सकते।

५००. **ऊपर सैं बाबोजी दीखै, नीचै खोज गधां का।**
ऊपर से देखने में तो महात्मा लगते हैं, लेकिन करनी उल्टी है।

सन्दर्भ कथा—एक साधु बावा जंगल में रहा करता था। उसकी कुटिया के पास ही एक किसान का खेत था। साधु रात को खड़ाऊँ पहन कर खेत में जाता और खेत में से सिट्टे-मतीरे आदि तोड़ कर ले आता। खड़ाऊँ

इस प्रकार बनाई गई थीं कि उनको पहन कर चलने पर साधु के खोज (पद चिह्न) गधे के खोज की तरह अंकित होते थे। प्रातः काल उन चिह्नों को देख कर किसान यही सोचता कि कोई गधा रात को खेत में घुस कर नुकसान पहुँचा जाता है।

एक रात को किसान खेत में छुप कर बैठ गया। अपने निश्चित समय पर बाबाजी खड़ाऊँ पहन कर खेत में घुसे, लेकिन जब सिट्टे आदि तोड़ कर चलने को तैयार हुये तो किसान ने बाबाजी को पकड़ लिया और बोला—

गटमरण-गटमरण माळा फेरै, तिलक करै सिधां का।
ऊपर सें बाबोजी दीखै, नीचै खोज गधां का॥

५०१ **ऊबो मूतै सूत्यो खाय, वींको दाळद कदे न जाय।**
खड़े-खड़े मूतने वाले और लेटे-लेटे खाने वाले आलसी का दारिद्रय कभी नहीं जाता।

५०२. **ऊबै खेजड़ां बेज कोनी नीकळै।**
खड़े खेजड़े में सहज ही छेद नहीं निकलता। जल्दबाजी करने से काम नहीं होता।

पद्य—पावरगा आया तन ही तन का।
घर में नई करगूका अन्न का।
जा रै पावरगा मत कर जेज।
ऊभै खेजड़ां पड़ै न बेज॥

रू० खड़े खेजड़ां बेज कोनी नीकळै।

५०३. **ऊमस कर घृत माट गमावै, ढूंडा कीड़ी बाहर लावै।**
नीर बिनां चिड़ियां रज न्हावै, मेह बरसै धर माँह न मावै॥
यदि उमस के कारण बिलौने में पड़ा घी पिघल जाए, चींटियां अपने अंडों को बाहर लाने लगें और चिड़ियां रेत में स्नान करें तो भरपूर वर्षा हो।

५०४. **अेक अर अेक तो दो होवै, परग अेकै-अेकै ग्यारा होज्या।**
एक और एक को जोड़ने से तो दो (१ + १ = २) होते हैं, लेकिन उनमें अेका होने से ग्यारह (११) हो जाते हैं।

५०५. **अेक आंख को के मीचै अर के खोलै।**
जिसके एक ही आंख हो, वह उसे क्या खोले और क्या बंद करे।
प्रायः एक पुत्र वाली माताएँ अपनी मनःस्थिति को व्यक्त करने के लिए इस कहावत का प्रयोग करती हैं।

५०६. अेक करोट की रोटी बळै ।

रोटी को अच्छी तरह सेंकने के लिए उसे पलटना जरूरी है अन्यथा वह जल जाती है । यही बात कुछ अन्य चीजों पर भी लागू पड़ती है—

पान सड़ै घोड़ो अड़ै, विद्या वीसर जाय ।
रोटी जरै अंगार पर, कहु चेला किण दाय ?
गुरुजी, फेरी नहीं ।

५०७. अेक काचर को बीज सौ मण दूध नै फाड़ गेरै ।

एक काचर का बीज सौ मन दूध को फाड़ डालता है ।
एक कुटिल व्यक्ति बड़े से बड़े काम को बिगाड़ देता है ।
एक बदकार आदमी सारे समाज को दूषित कर देता है ।

५०८. अेक काणो, अेक खोड़ो, चोखो राम मिलायो जोड़ो ।

एक काना है और दूसरा लँगड़ा, भगवान् ने अच्छी जोड़ी मिलादी है ।

५०९. अेक कूकड़ी सौ जगां हलाल कोनी होवै ।

एक मुर्गी सौ जगह हलाल नहीं होती ।

५१०. अेक कैवै जिको दो सुणै ।

जो किसी को एक अपशब्द कहता है, उसे बदले में दो सुनने पड़ते हैं ।

५११. अेक खसम नईं होवै जिकी कै संस खसम होज्या ।

पति के न होने पर अन्य लोग स्त्री पर हुकूमत चलाने की चेष्टा करते हैं अथवा हर कोई उसे हथिया लेना चाहता है ।

५१२. अेक गळै, अेक नळै ।

एक गले पड़ा है, दूसरा पेट में है ।
कम अन्तर से अधिक संतान पैदा करने वाली स्त्री की स्थिति ।

५१३. अेक घर तो डाकण ई छोड़ै ।

एक घर तो डाकिन भी छोड़ देती है ।
दुष्ट आदमी से भी यह अपेक्षा की जाती है कि कहीं न कहीं तो वह लिहाज बरतेगा ।

५१४. अेक घर होळी अर अेक घर दिवाळी ।

एक घर में होली और दूसरे में दिवाली ।
एक घर में जशन तो दूसरे में मातम ।

५१५. अेक चंदरमा नो लख तारा, अेक सखी अर नगर सारा ।

असंख्य तारों के बावजूद चांद से ही आकाश की शोभा होती है । इसी प्रकार पूरे नगर में एक भी दातार हो तो नगर की शोभा बनी रहती है ।

५१६. **अेक चुप सौ लपरां नै हरावै ।**
मौन रहने वाला सौ वाचालों को हराता है ।

५१७. **अेक टको मेरी गांठी, मगद खाऊं 'क माठी ।**
मेरी गांठ में केवल एक टका है उससे मगद खरीद कर खाऊं या माठी ?
साधन स्वल्प और आकांक्षाएँ वड़ी ।

५१८. **अेक दिन की सोवा, सैंस दिन का रोवा ।**
विवाह-शादी जैसे अवसरों पर दिखावे और प्रदर्शन हेतु बूते से अधिक खर्च करके एक दिन के लिए भले ही वाहवाही लूट ली जाए, लेकिन बाद में वहुत दिनों तक तकलीफ उठानी पड़ती है ।

५१९. **अेक दिन पाँवणो, दूजै दिन अणखांवणो, तीजै दिन बाप को मुहांवणो ।**
पहले दिन पाहुना, दूसरे दिन अनखावना और तीसरे दिन बाप-मुआ ।
रू० (१) पैलै दिन पाँवणो, दूसरै दिन अण खांवणो, तीसरै दिन बाप को मुहांवणो ।
(२) अेक दिन पाँवणो, दूजै दिन पई ।
तीजै दिन रहै तो, अक्कल कठै गई ।।

५२०. **अेक नन्नो सौ दुख हड़ै ।**
एक 'ना' कह देने से सौ झँझट टल जाते हैं ।

५२१. **अेक पग उठावै अर दूसरै की आस ई कोनी ।**
आदमी का जीवन क्षण-भंगुर है । वह एक कदम उठाता है, लेकिन दूसरे की आश नहीं ।

५२२. **अेक पहिये सें गाड़ी कोनी चालै ।**
एक पहिए से गाड़ी नहीं चलती ।
गृहस्थ की गाड़ी को सुचारु रूप से चलाने के लिए स्त्री-पुरुष रूपी दो पहियों की अपेक्षा रहती है ।

५२३. **अेक फूल सें माळा कोनी गूंथी जावै ।**
एक फूल से माला नहीं गूंथी जा सकती ।

५२४. **अेक वर खावै नेमी-धेमी, दो वर खावै बडो ।**
तीजां खावै टाबर टीकर, चौथां खावै गधो ।।
संयम—नियम से रहने वाले लोग दिन-रात में एक ही बार भोजन करते हैं । सामान्य बालिग व्यक्ति दो बार और बालक तीन बार । लेकिन इससे अधिक बार खाने वाले लोग गधे माने जाते हैं ।

५२५. **अेक बांदरी कै रूस्यां किसो विंदराबन सूनो होवै ?**
एक बंदरिया के रूठ कर चली जाने से वृन्दावन सूना नहीं हो जाएगा ।
रू० (१) अेक बांदरी कै रूस्यां के अजोध्या खाली होवै ?
(२) रेवड़ में एक लरड़ी तूज्या तो के फरक पड़ै ?

५२६. **अेक वात लेई है, अेक वात छोड़ी है ।**
हर नियम हर जगह लागू नहीं पड़ता ।
सामाजिक नियमो में लचीलापन होता है ।

५२७. **अेक बार जोगी, दो वार भोगी, तीन बार रोगी ।**
योगी दिन रात में एक वार शौच जाता है, सामान्य आदमी दो वार और रोगी तीन वार अथवा वार-वार शौच जाता है ।

५२८. **अेक विरती सदा वैर ।**
हमपेशा सदा वैरी ।

५२९. **अेक बुरे बुराई कोनी होवै ।**
पारस्परिक झगड़ा केवल एक के कसूर से नहीं होता । कम-अधिक कसूर दोनों पक्षों का होता है । दो वुरों के मिलने से ही बुराई होती है ।

५३०. **अेक भेड़ कुवै में पड़ै तो सै जा पड़ै ।**
एक भेड़ भूल से भी कुएँ में गिर पड़ती है तो उसका अन्धानुकरण करके उसके साथ की अन्य भेड़ें भी कुएँ में जा गिरती हैं ।

५३१. **अेक मसखरी, सौ गाळ ।**
किसी के साथ मसखरी करने वाले को उसकी सौ गालियां भी सुननी पड़ती हैं ।

५३२. **अेक 'मे, अेक 'मे करता वडका ई मरग्या ।**
राजस्थान की मरु भूमि में सदा से ही वर्षा की कमी रही, इसलिए यहां के लोग एक वर्षा की प्रतीक्षा करते-करते ही मर जाते थे ।

५३३. **अेक म्यान में दो तलवारां कोनी खटावै ।**
एक म्यान में दो तलवारें नहीं खटा सकतीं ।
एक स्थान में दो प्रतिद्वन्द्वी नहीं खटा सकते ।

५३४. **अेक रती विन अेक रती को ।**
ओज, कान्ति या प्रतिभा के बिना आदमी का रत्ती भर भी मूल्य नहीं होता ।
रू० अेक रती विन पाव रती को ।

५३५. **अेक रोटी अर दो टुकड़ा ।**
एक रोटी के दो टुकड़े, वरावर की हिस्सेदारी ।

५३६. **अेक लिख्या, सौ झख्या ।**
चाहे कोई लाख कहता रहे, लेकिन लिखित प्रमाण को ही सच्चा माना जाता है ।

५३७. **अेकलो चणो उछळ कर के भाड़ फोड़ै ।**
अकेला चना उछल कर भाड़ नहीं फोड़ सकता ।

५३८. **अेक सेर की सोळा पोई, सवा सेर की अेक ।**
वो निगोड़्यो सोळा खाग्यो, मैं बापड़ी अेक ।।
घर वाली ने एक सेर आटे की सौलह रोटियां बनाईं और सवा सेर की एक रोटी । निगोड़ा पति अकेला ही सौलह रोटियां खा गया जब कि बेचारी घरवाली को उस एक रोटी पर ही संतोष करना पड़ा ।

५३९. **अेक सें दो भला ।**
एक से दो अच्छे ।
सन्दर्भ कथा—एक लड़का कमाने के लिए दिसावर जाने लगा तो उसकी माँ ने उससे कहा कि अकेले जाना ठीक नहीं । एक की अपेक्षा दो अच्छे होते हैं । लेकिन और कोई उसके साथ जाने वाला नहीं था, अतः उसकी मां ने एक नेवले को उसकी पिटारी में रख दिया । रास्ते में लड़का एक वृक्ष के नीचे सोया तो एक सांप ने बांबी से निकल कर उसे डसना चाहा । लेकिन नेवले ने सांप को मार डाला और इस प्रकार 'एक सें दो भला' वाली कहावत चरितार्थ हो गई ।
नेवले के स्थान पर 'झावा' (hedge hog) भी कहा जाता है ।

५४०. **अेक हळदी की गांठ लेकर पंसारी वणग्यो ।**
रू० अेक सूंठ को गांठियो लेकर पंसारी वण बैठ्यो ।

५४१. **अेक हळ हत्या, दो हळ काज ।**
तीन हळ खेती, च्यार हळ राज ।।
एक हल की खेती नगण्य, दो की सामान्य, तीन हलों की सार्थक और चार हलों की खेती का तो कहना ही क्या ?

५४२. **अेक हळा, सैंस कळा ।**

५४३. **अेक हाथ लील में, अेक हाथ कसूमे में ।**
गृहस्थी का एक हाथ नील में और दूसरा कुसुंभा (लाल रंग) में रहता है । गृहस्थ में सुख-दुःख लगे ही रहते हैं और कभी-कभी गृहस्थी को हर्ष व शोक की दोनों प्रक्रियायें साथ-साथ निभानी पड़ती हैं ।

५४४. **अेक हाथ सें ताळी कोनी बाजै ।**
एक हाथ से ताली नहीं बजती ।

५४५. **अेकी मेरी, दोकी ल्यूं, तेकी आवै तो जूतियां की द्यूं ।**
हर प्रकार से अपने ही स्वार्थ की पूर्ति के लिए तत्पर रहना ।

५४६. **अेकै घर में दो मता, जड़ामूळ सें जाय ।**
एक घर में दो मत होने से विनाश अवश्यंभावी है ।
रू० देव पूजणो सायबो, भूत पूजणी जोय ।
अेकै घर में दो मता, कुसळ कठै सें होय ।।

५४७. **अेडी रगड़ी, बहू बिगड़ी ।**
अधिक सिंगार-पिटार करते रहने से बहू बिगड़ जाती है ।

५४८. **अे परवाई वाई, गाढा मेह कठै सें ल्याई ?**
सुण रे सूरचा भाई, अेक घड़ी मैं चालण पाऊं,
तो खूंटै बंध्या पाडा प्याऊं ।।
'परवा' (पुरवैया) हवा थोड़ी देर भी चले तो वर्षा को ले आती है ।

५४९. **अेंठवाड़ो खा लेवणो, पण अेंठवाड़ी बात नईं करणी ।**
जूठन भले ही खा ली जाए, लेकिन झूठी बात नहीं करनी चाहिए ।

५५०. **अेंक मुरदै का पीळा पांव, मूंड कूटतो तूं भी आव ।**

सन्दर्भ कथा—नगर-सेठ बाजार से गुजरा तो उसने अपने एक परिचित सुनार को अपनी दुकान पर उदास मुँह बैठे देखा । उदासीनता का कारण पूछने पर सुनार ने सेठ से कहा कि आजकल तो सोना आंख से भी नहीं दिखलाई पड़ता, तब भला रौनक कहां से आये ? इस पर सेठ ने पुनः उससे कहा कि यदि आंखों से देख लेने से ही तुम्हारी भूख भगती हो तो कल हमारी हवेली पर आ जाना और चाहे जितना सोना देख लेना ।

अगले दिन सुनार उक्त सेठ की हवेली पहुँच गया । सेठ ने उसके बदन से सारे कपड़े उतरवा लिये, केवल एक लंगोट रहने दिया और फिर उसे अपने खजाने वाले कमरे में जाने की अनुमति दे दी । सुनार को वहां भरपूर सोने के दर्शन हुए । तभी संयोग से एक बिल्ली वहां आ गई । सुनार ने फुर्ती से एक चांदी की सिल्ली उठा कर उसके ऊपर रखदी जिससे बिल्ली मर गई । अब सुनार ने सोने की एक छड़ उसके पेट में घुसेड़ दी और स्वयं बाहर निकल आया । सेठ ने उसकी तलाशी लेली और वह कपड़े पहन कर अपनी दुकान पर चला गया ।

दो-तीन दिन बीते तो मरी हुई बिल्ली की दुर्गन्ध के मारे सेठ और अन्य लोगों का हवेली में रह पाना कठिन हो गया । अन्त में मरी हुई बिल्ली का पता लगने पर सेठ ने उसे उठवा कर बाहर फिकवाई । सुनार तो इस ताक में था ही । उसने भंगी को एक रुपया दिया और कहा कि वह मरी हुई बिल्ली को उसके घर पर डाल आये । भंगी उसे उठा कर चला तो सुनार भी उसके पीछे-पीछे हो लिया । इस पर एक धूर्त आदमी को संदेह हो गया और वह बोल पड़ा "अें मुरदै का पीळा पांव" । सुनार ने सोचा कि बात फूटने से तो सारा मामला ही गड़बड़ हो जाएगा, अतः बोला, 'मूंड कूटतो तूं भी आव' । वह आदमी भी पीछे-पीछे सुनार के घर पहुँच गया । सुनार ने उसे कुछ दे-दिला कर विदा किया और फिर सोने की छड़ निकाल कर ठाट से दुकान पर जा बैठा । सेठ ने इस आकस्मिक परिवर्तन को तो देखा । लेकिन इसका रहस्य उसकी समझ में नहीं आया ।

५५१. **ग्रैई काम मेरी मा करती, मैं बैठी देख्या करती ।**
ऐसे ही काम मेरी माँ किया करती थी और मैं बैठी बैठी सब कुछ देखा करती थी ।

५५२. **ग्रैई पत्थर जुवानी में पड्या था ।**
ऐसे ही पत्थर जवानी में पड़े थे । युवावस्था में भी कोई करामात वाली बात न थी ।

सन्दर्भ कथा—एक बूढे मियां डगमगाते कदमों से चले जा रहे थे । ऐंठ तो बड़ी थी, लेकिन शरीर में ताक़त नहीं थी । अचानक लड़खड़ाकर गिर पड़े तो बुढापे के सिर दोष मढते हुए बोले—हाय बुढापे ! फिर उन्होंने इधर-उधर नजर घुमा कर देखा और जब उन्हें यह यकीन हो गया कि आस-पास कोई नहीं है तो खिन्न स्वर में कह उठे—ऐसे ही पत्थर जवानी में पड़े थे अर्थात् जवानी में भी कोई तीसमारखां नहीं थे ।

५५३. **ग्रै कुण 'क ग्रोपरा, ग्रां नै दयो खांड खोपरा ।**
ग्रै कुण 'क घर का, ग्रां कै दयो ठरका ।
परायों को भेंट-उपहार, घरवालों को दुत्कार ।

५५४. **ग्रै घर घोड़ी ग्रापणा, वा थी बाकानेर ।**
घास घणेरो घालस्यां, दाणों दयां नीं सेर ।।

सन्दर्भ कथा—कोई बारहठ बीकानेर गया । वहां कई दिन रहा । राज्य की ओर से उसकी अच्छी आवभगत हुई । उसकी घोड़ी को भी पर्याप्त दाना मिलता था । बारहठ अपने घर आया तो दाने का वक्त होने पर घोड़ी हिनहिनाई, लेकिन वहां दाना कहां ? घोड़ी की हिनहिनाहट सुन कर बारहठ ने उपरोक्त दोहा कहा ।

रू० वै घोड़ी घर पार का, वो दाणो वा घास ।
ग्रै घर घोड़ी ग्रापणा, लीपी चांकी ल्हास ।।

५५५. **ग्रै चोखा, थे भला ।**
ये अच्छे हैं, आप भले हैं ।

सन्दर्भ कथा—एक बनिया पास के किसी गांव गया था । लौटते समय पड़ौसी गाँव के दो ठाकुर उसे राह में मिल गये । उन्होंने बनिये को लूटने की युक्ति विचारी और उसके पास पहुँच कर बोले—सेठजी यह बतलाइये कि हम दोनों में से कौन अच्छा है और कौन बुरा ? बनिया उनकी चाल को समझ गया कि जिसको बुरा बताया जाएगा, वही उसे लूट लेगा । इसलिए वह एक को अच्छा और दूसरे को भला बतलाता हुआ आगे बढता रहा । यों करते-करते गांव नजदीक आ गया और बनिया तेजी से भाग कर गांव में घुस गया । दोनों ठाकुर ताकते रह गये ।

५५६. **अैदी कसूण नै उडीकै।**
आलसी आदमी इसी ताक में रहता है कि कोई अपशकुन हो जाए तो उसे काम न करने का सहज ही वहाना मिल जाए।

५५७. **अैबी घोड़ो निसांण तळै दबै।**

५५८. **अैयां ई रांडां रो वोकर सी, अैयां ई पावणा जीम वोकरसी।**
औरतें इसी प्रकार झींखती रहेंगी और पाहुने इसी तरह जीमते रहेंगे।

५५९. **अैरट की बारा मास, इन्दर की दो घड़ी।**
अरहट के निरन्तर बारहों महीने चलते रहने पर भी कुएँ से उतना ही पानी नहीं निकल पाता, जितना इन्द्र दो घड़ी में बरसा देता है।

५६०. **अैरण की चोरी करी, करचो सुई को दान।**
ऊंचो चढ कर देखण लाग्यो, कद आवै बीवांण।
निहाई जैसी बड़ी वस्तु की चोरी की एवं सुई जैसी नगण्य वस्तु का दान दिया; फिर भी इस प्रतीक्षा में आसमान की ओर आंखें लगाये हैं कि उनको ले जाने के लिए स्वर्गीय विमान कब पहुँच रहा है।
रू० अैरण की चोरी करी, करचो सुई को दान।
चढ चौबारै देखण लागी, कद आवै बीवांण।।

५६१. **अैसे कूं वैसा मिल्या, मिल्या बामण कूं नाई।**
वो दीनी आसका, वो आरसी दिखाई।।
दोनों पक्ष एक जैसे। ब्राह्मण से नाई की भेंट हुई तो ब्राह्मण ने उसे आशीर्वाद दिया, बदले में नाई ने उसे दर्पण दिखला दिया।

५६२. **ओ ई पूत पटेलां में, ओ ई गोबर चुगवा में।**
पटेलाई करने से लगा कर गोबर एकत्र करने तक का काम एक ही आदमी के जिम्मे। पीर बवर्ची भिश्ती खर।

५६३. **ओगड़ क्यां सें मोटो, लावो गिणै न टोटो।**
ओगड़ इतना मोटा क्यों है? इसलिए कि उसे लाभ-हानि की कोई चिन्ता नहीं।

५६४. **ओछा नाचो बिल तको, चलो अपूठी ढाण।**
मोसी मिरदंग भूलगी, हो'गी तीन पगां कै पाण।।
सन्दर्भ कथा—एक बूढी बिल्ली जब चूहों का शिकार कर पाने में अशक्त हो गई तो तिलक-छापे लगाकर और गले में मृदंग डाल कर चूहों के बिलों के पास आकर भजन-कीर्तन करने लगी। चूहों ने अपने बिलों में से मुँह निकाल कर देखा तो बिल्ली ने उन्हें आश्वस्त करते हुए कहा—मैं अब सभी तीर्थों में स्नान कर आई हूं, मैंने अहिंसा का व्रत ले लिया है और रात-दिन भगवान् का भजन-कीर्तन ही करती रहती हूँ। इसलिए तुम डरो नहीं और मेरे साथ हरि-कीर्तन करो।

चूहे कीर्तन में शामिल हो गये और तालियां बजा-बजा कर कीर्तन करने लगे। इतने सारे चूहों को देख कर बिल्ली के मुँह में पानी भर आया और उसके तेवर बदलने लगे, वह एक ही झपाटे में कई चूहों को दबोच लेना चाहती थी। लेकिन एक समझदार चूहे ने बिल्ली के बदलते हुए पैंतरे को भांप लिया और उसने गाते-गाते ही चूहों से उपरोक्त दोहा कहा जिसे सुनकर चूहे फुर्ती से अपने बिलों में जा घुसे।

५६५. **ओछी डांडी लांबी तणी, जच्चै जियां तोलै धणी।**
तकड़ी की डंडी छोटी और उसकी तनियां लम्बी हों तो दुकानदार इच्छानुसार कम तौल कर ग्राहक को आसानी से ठग सकता है।

५६६. **ओछी पूंजी धणी नै खावै।**
थोड़ी पूंजी से व्यापार करने वाला टोटे में रहता है।

५६७. **ओछी पोटी में मोटी बात कोनी खटावै।**
अल्प सामर्थ्य वाले के मन में बड़ी बात नहीं खटाती।

५६८. **ओछी रांड उधारा गिणावै।**
ओछी औरत हर घड़ी उधार दी गई चीज का बखान करती है।

५६९. **ओछै की प्रीत, कटारी को मरबो।**
ओछे आदमी की प्रीति कटारी से मरने के तुल्य है।

५७०. **ओछै की प्रीत, बाळू की भींत।**
ओछे की प्रीति बालू की दीवार की तरह अस्थायी होती है जो चाहे जब ढह जाती है।

५७१. **ओछो बो'रो, गोद को छोरो, मूरै की सांड, नातै की रांड न्हचाल कोनी करै।**
क्षुद्र बोहरा, गोद का बेटा, मोहरे की सांड और नाते की औरत कभी निहाल नहीं करती।
पद्य—ओछो बोरो, गोद को छोरो।
मूरै की सांड, नातै की रांड।
चालणी को चाम, घोड़ै की लगाम।
संजोगी को जाम, कदे न आवै काम।।

५७२. **ओत पड़ै सो करो।**
जिसमें किफायत हो, वही काम करें।

सन्दर्भ कथा—किसी राजा के राज्य में आय की अपेक्षा खर्च ज्यादा था। करों का बोझ पहले ही काफी था और आय का एक बड़ा भाग फिजूलखर्ची में चला जाता था। इसलिए राजा की इच्छा थी कि व्यय में कमी करके इस समस्या का हल किया जाए। राजा ने अपने मंत्री से पूछा तो मंत्री ने उत्तर दिया—अन्नदाता, बनिये बड़े किफायती होते हैं अतः इस विषय में किसी सुयोग्य बनिये का सहयोग प्राप्त करना चाहिए।

अपनी बात को प्रमाणित करने के लिए मंत्री ने तत्काल ही नगर के एक कुशल वनिये को दरवार में बुलाया और उससे कहा —अन्नदाता का हुक्म है कि तुम्हें मृत्यु दण्ड दिया जाए। वनिये के यह पूछने पर कि उसका अपराध क्या है, मंत्री ने उत्तर दिया—ज्यादा वात करने की आवश्यकता नहीं, प्राण दण्ड तुम्हें अवश्य दिया जाएगा; हाँ, इतनी रियायत तुम्हारे साथ वरती जा सकती है —तुम चाहो तो तुम्हें शूली पर चढा कर प्राण दण्ड दिया जा सकता है और तुम चाहो तो तुम्हें फाँसी पर लटकाया जा सकता है। इस पर वनिये ने उत्तर दिया कि मुझे तो दोनों तरह से मरना ही है अतः जिस तरीके में 'ओत पड़े' (किफायत हो) वही कीजिए। वनिये का उत्तर सुन कर राजा वहुत प्रसन्न हुआ और उसने राज्य के खजाने का प्रबंध उसे सौंप दिया।

५७३ **औरू जांट चढसी जिको सीरणी वोलसी।**

जो दुबारा खेजड़े के वृक्ष पर चढेगा वही शीरनी वोलेगा।

संदर्भ कथा—'सांगर' (खेजड़े की फलियां) तोड़ने के लिए एक आदमी खेजड़े के ऊंचे वृक्ष पर चढ गया। वृक्ष पर वड़ी संख्या में 'मकोड़े' (वड़े चींटे) थे जो उसे काटने लगे। वृक्ष पर से उतरना उसके लिए दूभर हो गया। तव उसने देवता की मनौती मानी कि यदि वृक्ष पर से उतर जाऊं तो तुम्हारी सवा पांच आने की शीरनी (प्रसाद) वांट दूंगा। यों कह कर वह वृक्ष पर से उतरने लगा। जव आधी दूर तक उतर आया तो शीरनी की राशि में कटौती करके देवता से कहा कि सवा पांच आने की तो नहीं, लेकिन अढाई आने की शीरनी जरूर वांट दूंगा। यों दूरी के साथ-साथ शीरनी की राशि भी कम होती गई और अन्त में जव वह वृक्ष पर से उतर गया तो देवता को धता वतलाते हुए वोला—मैं तो अव दुवारा 'जांट' पर चढने से रहा, अतः जो फिर जांट पर चढेगा, वही तुम्हारी शीरनी वोलेगा।

५७४ **ओस चाट्यां किसी तिस मिटै।**

ओस चाटने से प्यास नहीं वुझती।

रू० ओस सें घड़ो कोनी भरै।

५७५. **ओ ही काळ को पड़बो, ओही वाप को मरवो।**

इसी वर्ष अकाल पड़ा और इसी वर्ष वाप की मृत्यु हुई।

दुर्भाग्य की दोहरी मार।

५७६. **और काम सै कळ का, गीत ढोल कै वळ का।**

५७७. **और मास सूत्यो भलो, ऊभो, भलो असाढ।**

शुक्ल पक्ष की द्वितीया के चन्द्रमा का उदय अन्य महीनों में तो लेटे हुए एवं आषाढ़ में खड़ा होना चाहिए। ऐसी मान्यता है कि आषाढ में चन्द्रमा खड़ा उगे तो वह हलों को भी खड़े करता है।

रू० सीयाळै सूत्यो भलो, ऊभो भलो असाढ।

५७८ **औरत नै खोवै मिठाई, मरद नै खोवै खटाई ।**
औरत को मिठाई और मर्द को खटाई खराब करती है ।

५७९. **और सै सांग आज्या, बोरै आळो सांग कोनी आवै ।**
और सब स्वांग भरे जा सकते हैं, लेकिन 'बोहरे' (ऋण दाता) का स्वांग नहीं भरा जा सकता । भांड भी बोहरे का स्वांग नहीं भरता ।
रू० और सै सांग आज्या, रिपिये आळो सांग कोनी आवै ।

५८०. **औसर चूकी डूमणी, गावै आळ-पताळ ।**
अवसर चूकी हुई डोमनी ताल-बेताल गाती है ।

संदर्भ कथा—राजधानी में राजा की वर्ष गांठ का जलसा था जिसमें भाग लेने के लिए स्थान-स्थान से 'कलावंत' आये थे । भोजन के लिए सभी आगन्तुकों को राज्य की ओर से 'चिट्ठियां' दी गई थीं, जिनको दिखला कर वे भंडारी से अपना 'पेटिया' (भोजन की सामग्री) तुलवा लेते थे । एक डोमनी चिट्ठी लेकर विलम्ब से भंडारी के यहाँ पहुँची । भंडारी तब तक भंडार को ताला लगा कर जा चुका था । डोमनी अवसर चूक गई और भूखी रह गई । जब जलसे में उसके गाने की बारी आई तो वह ताल बेताल गाने लगी । इस पर किसी ने कहा—

भंडारो रस्तै लग्यो, आई दुवारै चाल ।
औसर चूकी डूमणी, गावै आळ-पताळ ।।

५८१. **औसर चूकै नै मौसर कद मिलै ?**
चूका हुआ अवसर दुबारा हाथ नहीं आता ।

५८२. **औसांण आवै जिको ई हथियार ।**
औसान ही सबसे बड़ा हथियार है ।

५८३. **कगाल की छोरी, लाडू बिनां दोरी ?**
दरिद्र की लड़की और लड्डू के लिए रूठे ?
बूते से अधिक की आकांक्षा ।

५८४. **कंगाल को काळजो पोचो ।**
गरीब का कलेजा कच्चा होता है ।

५८५. **कंगाल छैल गांव नै भारी ।**
दरिद्र शौकीन गांव के लिए भार स्वरूप होता है ।

५८६. **कंगाली में आटो गीलो ।**
गरीबी में दोहरी मार ।
गरीब आदमी किसी प्रकार आटे का जुगाड़ बिठाये और आटा अधिक गीला हो जाने के कारण उसकी रोटी न बन पाये ।
रू० बेईमान को आटो गीलो ।

५८७. **कंचन कै काट कोनी लागै ।**
सोने को जंग नहीं लगता ।
खरे आदमी को कलंक नहीं लगता ।

५८८. **कंचन जैड़ी ऊजळी, उत्तर बीज सुहाय ।**
अगम देवै सूचना, बेगी बिरखा आय ॥
स्वर्ण आभा जैसी बिजली उत्तर दिशा में चमके तो जानो कि वर्षा शीघ्र ही आयेगी ।

५८९. **कंठी लोनी खोल, पूरां पादती ई डोल ।**
बावाजी ने पूरां (चेली का नाम) के गले में बांधी गई कंठी खोलली । अब वह कहीं आये-जाये, बावाजी को उससे कोई वास्ता नहीं ।
कंठी = दीक्षा गुरु की ओर से शिष्य या शिष्या के गले में पहनाई जाने वाली माला । जिनके गले में कठी बांध कर दीक्षा दी जाती थी, उन्हें कंठीबंध शिष्य या शिष्या कहते थे ।

५९०. **कंथौ अेक, दिसावर घणां ।**
पति एक और दिसावर अनेक ।
पति कभी एक दिसावर चल जाता है तो कभी दूसरे और इस प्रकार वह घर पर पत्नी के पास नहीं रह पाता ।

५९१. **कंवरजी का दसकत डागळै सूकै ।**
कुंअरजी के दस्तखत छत पर सूख रहे हैं ।
संदर्भ कथा—एक बनिये का लड़का सर्वथा निरक्षर और मूर्ख था । इसलिए घरवालों ने उसे गोबर के उपले थापने का काम दे रखा था । वह उपले थाप कर छत पर सुखा दिया करता । एक बार कोई लडकी वाला उसकी सगाई करने आया और उसने लड़के के बाप से पूछा कि कुंअरजी कितने पढ़े हुए हैं ? बाप ने उत्तर दिया कि वाह ! कुंवरजी के क्या कहने हैं, उनके दस्तखत तो छत पर सूख रहे हैं ।

उन दिनों काठ की पाटी पर अक्षर जमाये जाते थे और पाटी भर जाने पर सूखने के लिए धूप में रखदी जाती थी । इसलिए लड़की का पिता उसकी लिखावट देखने छत पर गया तो उसे असलियत ज्ञात हो गई और वह छत से उतर कर चुपचाप चला गया ।

५९२. **कंसळै की अेक टांग टूट्यां किसौ पांगळो होवै ।**
कनखजूरे का एक पैर टूट जाने से वह पंगु नहीं हो जाता, क्योंकि उसके अनेक पैर होते हैं ।
समर्थ व्यक्ति के लिए छोटी-मोटी हानि विशेष महत्त्व नहीं रखती ।

५६३. **कक्कै को फूट्यो आंक आवै कोनी अर नांव विद्याधर ।**

है तो निरक्षर भट्टाचार्य्य, लेकिन नाम रखा है विद्याधर ।
गुण के सर्वथा विपरीत नाम ।
रू० कनै कोनी काणी कोडी, नांव किरोड़ीमल ।

५६४. **कच्चो अेवज होयां तो पक्को होवतां बार कोनी लागै ।**

कच्चा माल पास में हो तो उसे पक्के में परिवर्तित करते देर नहीं लगती ।

५६५. **कटेड़ी आंगळी पर ई कोनी मूतै ।**

कटी उंगली पर भी पेशाब नहीं करता ।
ऐसी मान्यता है कि कटे हुए अंग पर पेशाब करने से वह अच्छा हो जाता है। इस कहावत का प्रयोग ऐसे निकृष्ट व्यक्ति के लिए होता है जो अपना कुछ खोये बिना भी कभी किसी के कोई काम न आवे ।

५६६. **कटै काऊ का, सीखै नाऊ का ।**

नाई अपने लड़के को हजामत करने का अभ्यास करवाता है तो उसके उस्तरे से हजामत बनवाने वालों की चमड़ी भी कटती है, लेकिन नाई की बला से ? उसका लड़का तो इस प्रकार होशियार हो ही जाता है ।

५६७. **कठैई जावो, सगळै पीसां की खीर है ।**

कहीं भी चले जाएँ, सब जगह पैसे से ही काम बनता है ।

५६८. **कठैई बोलै, कठैई लाधै ।**

बोले कहीं, मिले कहीं ।
कहे कुछ, करे कुछ

५६९. **कठै कळ सैं तो कठै बळ सैं ।**

कहीं युक्ति से और कहीं बल से काम बनता है ।

६००. **कठै की ईंट कठै को रोड़ो, भाणमती यूं कुणबो जोड़यो ।**

कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानमती ने कुनबा जोड़ा ।
बे-मेल वस्तुओं का अनुपयोगी संग्रह ।

६०१. **कठै टोर सूना, कठै ढ़ोर सूना ।**

कहीं एक वस्तु की कमी तो कहीं दूसरी की ।

६०२. **कठै राजा भोज अर कठै गांगलो तेली ?**

कहाँ राजा भोज और कहाँ गंगू तेली !
दोनों में कोई समानता नहीं, दोनों में दिन-रात का अन्तर ।
रू० (१) कठै राम-राम, कठै ट्यां-ट्यां ?
(२) कठै राजा की रिवाड़ी, कठै कुम्हार को थेचाकूटो ?

६०३. **कड़की कठैई, पड़ी कठैई ।**
विजली की गर्जना तो कहीं और हुई, किन्तु गिरी कहीं और ।
आफत आने की आशंका किसी और पर थी, लेकिन आन पड़ी किसी और पर।

६०४. **कड़वी वेल की कड़वी तूमड़ी, अड़सठ तीरथ न्हाई ।**
गंगा न्हाई गोमती न्हाई, मिटी नहीं कड़वाई ।।
तूंवे के कड़वे फल से बनी 'तूमड़ी' को तीर्थों के जल में स्नान कराने से उसकी कटुता नहीं जाती ।
तीर्थों के जल में शारीरिक स्नान करने मात्र से मन का कलुष नहीं धुलता ।
संदर्भ कथा—महाभारत का युद्ध समाप्त होने के वाद जब पाण्डव तीर्थों के स्नान हेतु जाने लगे तो उन्होंने भगवान् कृष्ण से भी साथ चलने के लिए कहा । कृष्ण ने उनसे कहा कि मैं तो नहीं चल सकता, लेकिन मेरी ओर से इस तूंवी को स्नान करवा लाना । यों कह कर उन्होंने एक तूंवी उन्हें दे दी । पाण्डवों ने सभी तीर्थो में स्नान किया और साथ ही वे तूंवी को भी स्नान कराना नहीं भूले । जव वे स्नान करके लौटे तो भगवान् कृष्ण ने सव को उस तूंवी का एक-एक टुकड़ा प्रसाद-स्वरूप दिया । लेकिन सभी ने उन्हें चख कर कहा कि भगवन्, यह तो वहुत कड़वी है । इस पर भगवान् कृष्ण ने पूछा कि क्या इतने तीर्थों के पवित्र जल में स्नान करने के वाद भी इसकी कड़ुआहट नहीं गई ? उनके कहने का तात्पर्य यही था कि मन की पवित्रता के विना केवल शारीरिक स्नान से कुछ नहीं होता ।
रू० अड़सठ तीरथ न्हाय तूमड़ी खारी ।

६०५. **कढी होठां, चढी कोठां ।**
मुंह से वात निकल जाने पर वह कई गुना होकर सर्वत्र फैल जाती है ।
रू० निकळी होटां, वंधगी पोटां ।

६०६. **कण-कण जोड़्यां मण जुड़ै ।**
थोड़ा-थोड़ा संचय करते रहने से वड़ा संग्रह हो जाता है ।
रू० कण-कण कोठी भरीजै ।

६०७. **कण-कण भीतर रामजी, ज्यूं चकमक में आग ।**
जिस प्रकार चकमक में आग रहती है, उसी प्रकार भगवान् कण-कण में निवास करते हैं ।

६०८. **कणक पुराणा घी नया, घर सिलवंती नार ।**
चौथो पीठ तुरंग की, सुरग निसाणी च्यार ।।
खाने के लिए गत वर्ष का गेहूँ एवं ताजा घी, घर में शीलवती पत्नी तथा चढने के लिए घोड़ा—ये चारों सुलभ हों तो स्वर्गिक सुखों के तुल्य हैं ।

रू० धान पुराणा घी नवां, घर कुळवंती नार ।
चौथी पीठ तुरंग री, घरमतणां फळ च्यार ॥

६०९. कण थोड़ा अर कांकर घणां ।
अनाज के दाने कम और कंकड़ ज्यादा ।
सत्य स्वल्प और झूठ अधिक ।
सार कम और आडम्बर बेशुमार ।

६१०. कण देख्यां मण की ठा पड़ै ।
थोड़ी वानगी देखने से ही पूरे ढेर का पता चल जाता है ।

६११. कतरणी काटै ई काटै, सूई सांठै ई सांठै ।
कैंची सदैव काटती ही है, सूई सदा जोड़ती ही है ।
कुटिल व्यक्ति सदैव काम को बिगाड़ता ही है, सज्जन पुरुष सदैव उसे सुधारता ही है ।
रू० काग कुहाड़ो कुटिल नर, काटै ही काटै ।
सुई सुहागो सा-पुरष, सांठै ही सांठै ॥

६१२. कथणी सें करणी दौरी ।
कहना सरल लेकिन करना कठिन ।
रू० कहणो सौरो, करणो दौरो ।

६१३. कद नटणी वांस चढै, कद भोजन पावै ।
कब नटिनी वांस पर चढे और कब उसे भोजन प्राप्त हो ।
नटिनी नित्य वांस पर चढ कर और खेल दिखला कर ही भोजन का जुगाड़ बिठा पाती है ।

६१४. कद वांझ ब्यावै अर कद तूर वाजै ।
न वंध्या कभी पुत्र जने और न खुशी के वाद्य वजें ।

६१५. कद मरी सासु, कद आया आंसू ।
सास तो कभी की मर गई और वहू अब बनावटी आंसू बहा रही है ।
रू० (१) काल मरी सासु, आज आया आंसू ।
(२) पर मरी सासु, अैस आया आंसू ।

६१६. कद मरै सासु कद आवै आंसू ।
कब सास मरे और कब बहू को आंसू बहा कर अपना दु:ख प्रकट करने का अवसर प्राप्त हो ।

६१७. कद राजा आवै' कद दाळ दळूं ?
निरर्थक और अन्तहीन प्रतीक्षा ।
रू० कद बावो आवै अर कद ताळी वाजै ?

६१८. **कदे ई हींजड़ां नै कतार लूटतां देखी नीं ।**
हिजड़ों ने भला किस दिन कतार लूटी थी ?
कापुरुष कभी कोई वीरता का कार्य नहीं कर सकते ।

संदर्भ कथा—एक गाँव से थोड़ी ही दूरी पर एक ऐसा रास्ता निकलता था, जहाँ से होकर कतारें गुजरा करती थीं । उस गाँव के कुछ लोग उधर से गुजरने वाली कतारों को लूटने का ही काम किया करते थे । उनकी देखा-देखी उस गाँव में रहने वाले हिजड़ों ने भी एक मत होकर कतारों को लूटने का निश्चय किया । योजनानुसार उन्होंने रात्रि को डाकुओं का वेश बनाया और जैसे हथियार मिल सके उन्हें लेकर वे सब उस रास्ते पर जा खड़े हुए । आधी रात के बाद एक कतार उधर से गुजरी तो उन्होंने कतारियों को डपटते हुए कहा कि जान प्यारी हो तो ऊंटों को यहीं छोड़ कर भाग जाओ । उस स्थान का ऐसा आतंक छाया हुआ था कि एक ऊंट पर एक ठाकुर को छोड़ कर शेष सारे लोग भाग गये । डाकू वेशधारी हिजड़ों ने ठाकुर से भी भाग जाने को कहा । लेकिन वह तलवार निकाल कर अपनी जगह पर डटा रहा और 'डाकुओं' को ललकारते हुए बोला कि तुम सामने आ जाओ, मैं तुम्हारी तरह हिजड़ा नहीं हूँ जो भाग जाऊं । हिजड़ों ने सोचा कि इसने हमें पहचान लिया है । उनकी हिम्मत टूट गई और वे तालियां बजाते हुए और "भला पिछाण्या जी 'क भला पिछाण्या जी" कहते हुए वहाँ से भाग गये ।
रू० हींजड़ा किसै दिन कतार लूंटी ही ?

६१९. **कदे 'क कहती नूर महम्मद, कदे 'क कहती है नूरा ।**
अब तो रंडी यूं उठ बोली, भैंस चराल्या वे नूरा ।।
धन सम्पत्ति के समाप्त हो जाने पर स्त्री भी पति का अपमान करने लगती है ।

संदर्भ कथा—मियां नूर मुहम्मद के पास पहले बहुत धन था । लेकिन धीरे-धीरे वह गरीब हो गया और अब उसकी बीबी भी बात-बात पर उसका निरादर करने लगी । एक दिन उसने अपने पति से कहा—अबे ! यहाँ बैठा क्या करता है, भैंस को जंगल में ले जा कर चरा क्यों नहीं लाता ? बीबी की बात सुन कर उसे बड़ा दुःख हुआ और उपरोक्त कहावती पद उसके मुँह से बरबस निकल पड़ा ।

६२०. **कदे 'क दूध बिलाई पीज्या, कदे 'क रहज्या काचो ।**
कदे 'क नार बिलोवै कोनी, कदे 'क चूंघज्या बाछो ।।
घर में गाय होने पर भी गृह-स्वामी को कभी दूध-दही नहीं मिल पाता । कभी दूध को बिल्ली पी जाती है तो कभी वह कच्चा रह जाता है । कभी घर वाली बिलौना नहीं डालती तो कभी बच्छा चूंघ जाता है ।
साधनों के बावजूद कार्य सिद्धि में एक न एक बाधा का उपस्थित होते रहना ।

६२१. **कदे गधो गूण पर तो कदे गूण गधै पर ।**
कभी गधा बोरे पर तो कभी बोरा गधे पर ।
समय-समय की बात ।

६२२. **कदे गाडो न्याव में तो कदे न्याव गाडै में ।**
कभी गाड़ा नाव में तो कभी नाव गाड़े में ।
आवश्यकतानुसार हर चीज का अपना महत्त्व होता है ।

६२३. **कदे घी घणां तो कदे मुट्ठी चणां ।**
कभी घी से तर भोजन प्राप्त होता है तो कभी मुट्ठी भर चने भी कठिनता से मिल पाते हैं ।
सब दिन एक समान नहीं रहते ।

६२४. **कदे दिन बड़ा, कदे रात ।**
कभी दिन बड़े होते है, कभी रात ।
मनुष्य जीवन में समय का उतराव-चढाव आता ही रहता है ।
रू० कोई समै का दिन बड़ा, कोई समै की रात ।

६२५. **कदे न घोड़ा हींसिया, कदे न खींच्या तंग ।**
कदे न रांड्या रण चढ्या, कदे न बाजी बंब ।।
कायर कभी वीरतापूर्ण कार्य नहीं कर सकते ।

६२६. **कदे न भोपा रण चढै, सदां बजावै संख ।**
देवी-देवताओं के भोपे कब रण में चढते है और कब रण-वाद्य बजाते है ?
वे तो सदा पूजा-वाद्य के रूप में देवी-देवताओं के सामने शंख ही बजाया करते है ।

६२७. **कदे बिल्ली रांड नै मंगळ गाया देख्या नीं ।**
बिल्ली को कभी मंगल-गान गाते नहीं देखा, वह तो सदा म्याऊं-म्याऊं ही करती है ।
कुटिल व्यक्ति से कभी किसी का भला नहीं होता ।

६२८. **कदे सासरै गई न भू कुहाई ।**
न कभी सुसराल गई और न वहू कहलाने की नौबत आई ।
रू० (१) कळ खायो न वळ आयो ।
सासरै गई न भू कुहाई ।।
(२) खळ खाई न मळ आई ।
सासरै गई न भू कुहाई ।।

६२९. **कदे सेर नै ई सवा सेर मिलज्या ।**
बदमाश को कभी न कभी उससे भी ज्यादा बदमाश मिल जाता है जो उसे सीधा कर देता है ।

संदर्भ कथा—एक आदमी चोरी से दूसरे के बाग में से आम तोड़ कर लाया करता था। आम के वृक्ष के पास जाकर वह उससे पूछता, "अम्बसार, अम्बसार, लेलूं दो चार ?" फिर स्वयं ही स्वीकृति दे देता, "ले ले दस-बीस यार।" बाग के मालिक ने एक दिन छिप कर सारी लीला देखली और चोर को पकड़ लिया। फिर उसने अपनी लाठी से पूछा, "लट्ठसार, लट्ठसार, लगाऊं दो चार ?" और फिर अपने से ही कह दिया, "लगादे, दस-बीस यार।" यों कह कर जैसे ही उसने चोर को लट्ठ जमाने शुरू किये, वह घिघियाने लगा और फिर कभी आमों की चोरी न करने की प्रतिज्ञा करके वहाँ से चला गया।

६३०. **कनफड़ा दोनूं दीन बिगाड़्या।**
कनफटे साधु दोनों तरफ के ही न रहे।
योग न सधने पर वे पुन: गृहस्थ में भी नहीं आ सकते क्योंकि कान फटे होने से उनकी पहचान स्पष्ट हो जाती है।

६३१. **कन्या फूलै, तुल फळै, वृश्चिक ल्यावै लाण।**
कन्या राशि में फूल उत्पन्न हों, तुला राशि में फल लगें तो वृश्चिक राशि में फसल काटो।

६३२. **कपड़ा फाट गरीबी आई, जूती फाटी चाल गमाई।**
फटे कपड़े पहनने से गरीबी प्रकट होती है, फटे जूते पहनने से चाल बिगड़ती है।

६३३. **कपड़ा सपेत अर घोड़ा कुमेत।**
पुरुष की पोशाक सफेद अच्छी और घोड़े का रंग कुमेत अच्छा।

६३४. **कपड़ै को पेट मोटो।**
कपड़े के व्यापार में अधिक मुनाफे की गुंजाइश रहती है।

६३५. **कपड़ो कवै—तूं मेरी इज्जत राख, मैं तेरी इज्जत राखूं।**
कपड़ा मनुष्य से कहता है कि यदि तुम मेरी इज्जत रखोगे अर्थात् मुझे साफ-सुथरा रखोगे तो मैं तुम्हारी इज्जत रखूंगा।

६३६. **कपड़ो पैरै तीन बार, बुध बिसपत शुकरवार।**
नूतन वस्त्र बुध, बृहस्पति और शुक्रवार को पहनने चाहिएँ।

६३७. **कपूत कलाळ कै जावै अर सपूत सुनार कै।**
कुपुत्र कलाल के यहाँ शराब पीने जाता है जिससे बाप-दादों की अर्जित सम्पत्ति और कीर्ति नष्ट होती है। सुपुत्र आभूषण बनवाने हेतु सुनार के यहाँ जाता है जिससे सम्पत्ति तो सुरक्षित होती ही है साथ ही घर की इज्जत भी बढती है।

६३८. **कपूत जायो भलो न आयो ।**
कुपुत्र न घर मे जन्मा हुआ अच्छा होता है, न गोद आया हुआ ।
रू० (१) कुपातर जायो भलो न आयो ।
(२) कुमाणस आयो भलो न जायो ।

६३९. **कपूत दूसरां नै कुमा कर घालै ।**
कुपुत्र घर वालों को तो निहाल नहीं करता, लेकिन दूसरे लोग बातें बनाकर उससे अपना काम करवा लेते है ।

६४०. **कपूत सें तो निपूती भली ।**
कुपुत्र को पैदा करने की अपेक्षा तो स्त्री का पुत्र- प्रसव न करना ही अच्छा ।

६४१. **कब्बर दीख्यां सबर आवै ।**
मनुष्य की लालसाओं का अन्त उसके मरने पर ही होता है ।

६४२. **कवित्त सोवै भाट नै, खेती सोवै जाट नै ।**
कवित्त रचना भाट को और खेती करना जाट को शोभा देता है ।

६४३. **कबूतर नै कूवो ई दीखै ।**
विपत्ति पड़ने पर गरीब को तो अपना आश्रयदाता ही सूझता है और वह दौड़ कर उसी के पास जाता है ।

६४४. **कम खाणो अर गम खाणो चोखो ।**
कम खाना और गम खाना दोनों ही लाभप्रद होते है ।

६४५. **कम खालेणो, पण कम कायदै नई रैणो ।**
कम आय पर निर्वाह कर लेना अच्छा, लेकिन इज्जत गँवा कर रहना अच्छा नही ।

६४६. **कमजोर की लुगाई, सँकी भौजाई ।**
कमजोर की औरत सब की भाभी ।
रू० चोदू की जोरू गाँव की भाभी ।

६४७. **कमजोर गुस्सा जादा, अैई मार खाणै का इरादा ।**
कमजोर होते हुए भी अधिक गुस्सा दिखलाने पर आदमी पिट जाता है ।
रू० कमजोर गुस्सो भारी, मार खावण की धारी ।

६४८. **कमर तपै जद सूत कतै ।**
सूत कातने के लिए कमर तपानी होती है अर्थात एक स्थान पर लम्बे समय तक जम कर बैठना होता है ।

६४९. **कमाई करम की, इज्जत भरम की, लुगाई सरम की ।**
कमाई भाग्य से होती है; जब तक भ्रम बना रहे तभी तक इज्जत है और जब तक शील-संकोच बना रहे तभी तक स्त्री, स्त्री है ।

६५०. **कमाई गैल समाई ।**
आय के अनुसार ही व्यय करने की सामर्थ्य होती है ।
आय के अनुरूप ही व्यय करना ठीक रहता है ।

६५१. **कमाऊ आवै डरतो, निखट्टू आवै लड़तो ।**
कमाने वाला तो घर में डरता हुआ प्रवेश करता है, लेकिन निखट्टू जो कभी कानी कौड़ी नहीं कमाता, वह लड़ाई-झगड़ा करते ही आता है । कमाऊ को हर समय इज्जत-आबरू का खयाल रहता है, लेकिन निखट्टू की बला से !

६५२. **कमा कर खाणै में दोस कोनी. चोरी करणै में दोस है ।**
छोटा-बड़ा कोई भी काम करके आजीविका कमाना बुरा नहीं, चोरी करना बुरा है ।
रू० काम को छोटै-बड़ै को लंजण कोनी, चोरी अन्याई को लंजण है ।

६५३. **कमावै तो वर, नई आगो ई मर ।**
यदि कमाने की हिम्मत हो तो किसी की कन्या का वरण करो अन्यथा बिना ब्याहे ही मर जाओ ।
रू० कमावै तो वर, नई तो माटी रो ई ढळ ।

६५४. **कमावै थोड़ो, खरचै घणो, पैलो मूरख उण नै गिणो ।**
आय से अधिक व्यय करने वाले की गिनती अव्वल दर्जे के मूर्खों में होती है ।

६५५. **कमेड़ी बाज नै कद जीतै ?**
कमेड़ी कभी बाज को नहीं जीत सकती ।
निर्बल व्यक्ति सबल को नहीं जीत पाता ।

६५६. **कम्मर को मोल है, तलवार को मोल कोनी ।**
तलवार की अपेक्षा उसे धारण करने वाले की शक्ति और सामर्थ्य का मूल्य अधिक होता है ।

संदर्भ कथा—एक सेठ ऊंट पर सवार होकर कहीं जा रहा था । सुरक्षा की दृष्टि से उसने एक विश्वस्त ठाकुर को भी साथ लेलिया था । राह में उन्हें दो डाकू मिले । उन्होंने सेठ को लूटना चाहा । लेकिन ठाकुर ने अपनी तलवार से दोनों को मार डाला । सेठ ने ठाकुर की प्रशंसा की तो ठाकुर बोला कि यह सब इस तलवार के भरोसे पर ही संभव हो पाया है, इसके एक-एक वार में ही दोनों काम आये ।

सेठ ने मुँहमाँगी कीमत देकर ठाकुर से वह तलवार ले ली और उसे अपनी हवेली के कमरे में खूंटी से लटका कर चोर-डाकुओं की तरफ से निश्चिंत हो गया । एक रात को सेठ की हवेली में चोर घुसे । सेठ जाग गया और उसने तलवार को आदेश दिया कि वह चोरों को मार डाले और जैसा

करतब उसने ठाकुर के साथ रहते हुए दिखलाया था, वैसा ही फिर दिखलाये। लेकिन तलवार तो टस से मस भी नहीं हुई। चोर काफी मालमत्ता ले गये और तब सेठ की समझ में यह बात आई कि वस्तुत: कीमत तलवार की नहीं, उसे धारण करने वाले की सामर्थ्य और बहादुरी की है।

६५७. **करंता सो भोगंता, खोदंता सो पड़ंता।**
जो जैसा करता है, उसे वैसा ही फल भोगना पड़ता है; जो दूसरों के लिए खाई खोदता है, वह स्वयं ही उसमें गिरता है।

सन्दर्भ कथा—बादशाह का वजीर वेश बदले नगर में घूम रहा था कि उसने एक लड़के को गड्ढा खोदते देखा। वजीर ने उससे गड्ढा खोदने का कारण पूछा तो लड़का बोला—इससे तुम्हें क्या प्रयोजन है? जो करेगा सो भरेगा, जो खोदेगा सो पड़ेगा।

वजीर को वह लड़का होनहार दिखलाई पड़ा, अत: वह उसे अपने यहाँ ले आया और उसे पढाने-लिखाने लगा। स्वयं वजीर के भी एक उतना ही बड़ा लड़का था, लेकिन वह इस लड़के की तुलना मे मन्द-बुद्धि था। इससे वजीर को ईर्ष्या हो गई और उसने उस लड़के को मरवा देने का निश्चय कर लिया। वजीर ने एक कसाई के घर जाकर कहा कि थोड़ी ही देर में तुम्हारे घर एक लड़के को भेजूंगा सो उसे आते ही मार डालना। घर लौट कर वजीर ने उस लड़के को एक रुपया देकर उस कसाई के यहां से मांस लाने के लिए भेजा। जब वह जा रहा था तो उसे राह में वजीर का लड़का मिला जो अन्य लड़कों के साथ खेल रहा था और सात बाजियां हार चुका था। उसने अपने सहपाठी को अपने पास बुला कर कहा कि तुम मेरी जगह खेलो, मांस मैं ला देता हूँ। वजीर का लड़का मांस लाने के लिए कसाई के घर पहुँचा और कसाई ने उसे तुरंत मार डाला। बाद में जब वजीर को इस घटना का पता चला तो उसके मुँह से हठात् निकल पड़ा—करंता सो भोगंता, खोदंता सो पड़ंता।

रू० करै सो भरै, खोदै सो पड़ै।

६५८. **करक मैदै को के भाव? 'क चोट जाणिये।**
किसी ने पंसारी से पूछा कि कर्क मैदा का क्या भाव? पंसारी ने उत्तर दिया कि चोट के अनुसार।
वस्तु की वास्तविक कीमत की अपेक्षा गर्जमन्द की मजबूरी से अधिक लाभ प्राप्त करने की प्रवृत्ति।

६५९. **करणी आपो आप की, के बेटो के बाप।**

संदर्भ कथा—अपना पेट भरने और अपने कुटुम्ब को पालने के लिए एक आदमी ने डकैती का धंधा अख्तियार कर रखा था। वह राहगीरों को

लूट कर उनका धन तो छीन ही लेता था, साथ ही उन्हें मार भी डालता था कि जिससे न रहे बांस, न वजे बांसुरी।

एक दिन उसने किसी साधु को पकड़ लिया और उसे मारने को तत्पर हुआ तो साधु ने उससे पूछा कि यह सब तुम किस लिए करते हो? डाकू ने उत्तर दिया कि अपने कुटुम्बियों को पालने के लिए। साधु ने फिर पूछा कि जो कुछ तुम्हें लूट-पाट में मिलता है, उसमें तो उन सब का हिस्सा होता है, लेकिन इस प्रकार के दुष्कृत्य से जो पाप होता है, क्या वे सब भी उसमें भागीदार बनते हैं? इस बात का उत्तर पाने के लिए वह अपने घर पर गया और उसने अपने वेटों से, स्त्री से एवं अन्य सब लोगों से भी यह प्रश्न पूछा। सब का एक ही उत्तर था कि जो पाप करेगा, उसका फल तो स्वयं उसे ही भोगना पड़ेगा। यह सुनकर उसकी आंखें खुल गई और उसने लूट-पाट एवं हत्या करना छोड़ दिया।

६६०. **करणी जिसी भरणी।**
जैसी करनी, वैसा ही फल।

६६१. **करणी पार उतरणी।**
अपनी करनी के सहारे ही मनुष्य पार उतर सकता है।

६६२. **करणो अर मरणो बरावर।**
आलसी व्यक्ति को काम करते मौत आती है अर्थात् उसके लिए काम करना और मरना वरावर है।
रू० करणो मरणै सैं दौरो।

६६३. **करणो राम को, बोनती आप की।**
करना-कराना तो सब भगवान् के हाथ है, मनुष्य तो केवल उससे विनती कर सकता है।

६६४. **करत बिदया है।**
निरन्तर अभ्यास से आदमी कठिन काम में भी प्रवीणता प्राप्त कर लेता है।

६६५. **करता कै संग कीजिए, सुण रै राजा भील।**
सोनै कै घुण लागग्या, तो छोरै नै लेगी चील ॥
हे राजा भील सुनो! जो अपने साथ जैसा व्यवहार करे, वदले में उसके साथ भी वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। यदि सोने को घुन लग गये तो लड़के को भी चील झपट ले गई।

संदर्भ कथा—एक आदमी सपरिवार तीर्थ-स्नान के लिए जाने लगा तो घर के सारे स्वर्ण-आभूषण अपने पड़ोसी को संभला गया। लेकिन पड़ोसी की नीयत खराब हो गई और उसने उन लोगों के लौटने पर कह दिया कि तुम्हारे आभूषणों को तो घुन लग गये और वे सारे के सारे आभूषणों का

भक्षण कर गये। वात असंभव थी, लेकिन वे चुप मार गये। दो चार दिन के वाद जब उसका छोटा लड़का उनके घर खेलने के लिए आया तो उन्होंने लड़के को छिपा दिया और पड़ोसी के पूछने पर कह दिया कि लड़के को एक चील उठा ले गई। वह शिकायत लेकर राजा के पास पहुँचा तो राजा ने उसके पड़ोसी को तलव किया। उसने दरवार में पहुँच कर सारी स्थिति वतलादी। राजा समझ गया कि वादी ने प्रतिवादी के आभूषण दवा लिए हैं और प्रतिवादी ने वदले में उसके लड़के को छिपा दिया है। इसलिए उसने प्रतिवादी को उसके आभूषण और वादी को उसका लड़का दिलवा दिया।

इसी से मिलती जुलती एक और कथा है जिसका पद्य इस प्रकार है—

अेकै ठगणी ठग ठग्या, ठगणी नै ठगली ठगां।
लोह नै खाग्या ऊंदरा, तो वाई नै चुगली वुगां॥

६६६. **करता गरू, न करता चेला।**
निरन्तर अभ्यास करते रहने से अकुशल व्यक्ति भी कुशल वन जाता है और अभ्यास छोड़ देने पर कुशल व्यक्ति की क्षमता भी घट जाती है।
रू० करता उस्ताद, न करता सागिर्द।

६६७. **करतै सें न करै जिको वावळो, अर नै करतै सें करै जिको वावळो।**
जो अपने साथ जैसा करे, उसके साथ वैसा ही सलूक करना चाहिए। जो अपने साथ वुराई करे, उससे चूकना नहीं चाहिए और अपने साथ जो वुराई न करे, उसके साथ अपने को भी वुरा वर्ताव नहीं करना चाहिए।

६६८. **करतै सें न करै, वींको गुर पीर झूठो।**
अपना वुरा करने वाले से जो चूके, उसके गुरु और पीर दोनों ही झूठे।

६६९. **कर भला, हो भला।**
दूसरे का भला करोगे तो स्वयं का भी भला होगा।

६७०. **करम अर छियां सागै ई रवै।**
साया और भाग्य मनुष्य के साथ ही रहता है।

६७१. **करम कमेड़ी को सो, मन राजा को सो।**
भाग्य तो कमेड़ी जैसा क्षुद्र और आकांक्षाएँ वहुत वड़ीं !

६७२. **करम कै कारी कोनी लागै।**
फूटे भाग्य का कोई उपचार नहीं।

६७३. **करम चलैगो दो डग आगै।**
प्राणी का भाग्य उससे सदैव दो कदम आगे ही रहता है।

६७४. **करम फूटे नै भाग फूट्यो ई मिलै।**
करम हीन को भाग्य हीन ही मिलता है।

रू० (१) करम फूटे नै भाग फूट्यो सौ कोस की उँळाई खाकर ई मिलज्या ।
(२) रोवतै नै वार घालतो ई लावै ।

६७५ **करम फूट्या रै केसवा, गूंदी कै लाग्या ल्हेसवा ।**
भाग्य के विपरीत होने पर अनहोने काम होते हैं ।

६७६. **करम में ग्यारस तो कठै लिखी है; पण सागार तो ल्यूं 'क ?**
भाग्य में एकादशी का व्रत करना तो कहाँ वदा है, लेकिन शाकाहार तो लेलूं ।
कष्ट उठाने के लिए इनकार, लाभ में तैयार ।

संदर्भ कथा—सास ने बहू से पूछा कि बहू, आज एकादशी है, क्या तुम व्रत रखोगी ? वहू ने चतुराई से टालते हुए कह दिया—ना जी, एकादशी के व्रत का पुण्य–लाभ मेरे भाग्य में कहाँ वदा है ? लेकिन जब शाकाहार का समय हुआ तो वहू भी सास के पास आ बैठी और बोली कि एकादशी का व्रत तो भाग्य में नहीं लिखा सो नहीं लिखा, लेकिन शाकाहार तो ले ही लूं, क्या इतना भी न करूं ?

६७७. **करम में लिख्या कंकर तो के करै स्योसंकर ।**
यदि स्वयं के भाग्य हीं फूटे हुए हों तो भगवान् शंकर भी क्या करें ?

सन्दर्भ कथा—एक बूढा और उसकी बुढिया जंगल से लकड़ियां लाकर शहर में वेचते और अपने पेट पालते थे । एक दिन जिस रास्ते से वे लकड़ियों के भार लेकर जा रहे थे, उसी रास्ते से शिव-पार्वती भी गुजर रहे थे । उन दोनों की दशा देख कर पार्वती को वड़ी दया आई । उन्होंने शिवजी से कहा कि आप इन्हें धन दीजिए । शिवजी ने उत्तर दिया कि इनके भाग्य में धन लिखा ही नहीं है तो मैं कैसे दूं ? लेकिन पार्वती नहीं मानी तो शिवजी ने रुपयों से भरी एक थैली उनकी राह में डालदी ।

उधर उन दोनों ने विचार किया कि हम बूढे तो हो गये लेकिन यदि अन्धे भी हो जाएँ तो कैसे चल पाएँगे । इस बात का तजरुबा करने के लिए वे दोनों अंधे-अंधी वन कर चले और रुपयों की थैली को उलांघ कर निकल गये । इस पर शिवजी ने पार्वती से कहा कि देखलो, रुपयों की थैली भर कर इनके आगे डालदी तो भी ये उसे उठा नहीं पाये ।

६७८. **करमहीण खेती करै. क काळ पड़ै कै वळद मरै ।**
भाग्य हीन व्यक्ति खेती करता है तो या तो अकाल पड़ जाता है अथवा उसका वैल मर जाता है ।
हतभाग्य व्यक्ति का कोई कार्य सिद्ध नहीं हो पाता ।

६७९. **करम ही रांड्यो तो के करै बापड़ो पांड्यो ?**
यदि यजमान का भाग्य ही फूटा हुआ हो तो वेचारा ज्योतिषी क्या करे ?

६८०. **करम हो कपूत तो सपूत नर के करैं ।**
यदि भाग्य साथ न दे तो सुयोग्य व्यक्ति भी सफल नहीं हो पाता ।

६८१. **करमां का कोढ कठै जावै ।**
अपने कर्मों के फल तो भोगने ही पड़ेंगे ।

६८२. **करमां में घोड़ी लिखी तो खोल कूण ले जाए ?**
यदि भाग्य में घोड़ी लिखी है तो उसे खोल कर कौन ले जा सकता है ?

संदर्भ कथा—गारबदेसर (बीकानेर) के ठाकुर किसनसिंह भगवान् के भक्त थे । एक रात को उनके यहाँ चोर घुसे और उनकी घोड़ी को खोल कर ले जाने लगे । ठाकुर के सेवक देवा ने चोरों को देख लिया और उसने ठाकुर से यह बात कही तो ठाकुर ने उत्तर दिया—

देवा दुवधा दूर कर, हर चरणां चित लाय ।
मस्तक में घोड़ी लिखी, तो खोल कूण ले जाय ?

और हुआ भी ऐसा ही । चोर भटक गये और घूम-फिर कर ठाकुर के घर ही आ गये । उन्होंने ठाकुर से क्षमा मांग कर घोड़ी उनको संभला दी ।

६८३. **कर ये महती मालपुआ, बोहरो लेसी हुया-हुया ।**
मुफ्तखोर पति अपनी पत्नी से कहता है कि खूब माल-पूये बनाओ और गुलछर्रे उड़ाओ । हमारे पास कुछ होगा तभी तो वोहरा हमसे अपने ऋण की अदायगी करेगा, नहीं तो क्या लेगा ?
उधर लाकर भी गुलछर्रे उड़ाने की प्रवृत्ति ।

६८४. **करले सो काम अर भजले सो राम ।**
काम और भगवान् का भजन जितना कर लिया जाए, वही अपना है ।

६८५. **करातो को मन होवै, जिसो ब्यातो को कोनी होवै ।**
गर्भ धारण करते समय जैसा मन होता है, वैसा प्रसव करते समय नहीं होता ।

६८६. **करा तो ली, पण ढकसी कूण ?**
किवाड़ करवा भी लिये हैं तो उन्हें बंद कौन करेगा ?
साधन जुट जाने पर भी फूहड़ व्यक्ति उनका उपयोग नहीं कर पाता ।

सन्दर्भ कथा—एक फूहड़ स्त्री के घर की पोली के किवाड़ नहीं थे, इसलिए उसके घर में कुत्ते बे-रोक आते-जाते थे और जो कुछ इधर-उधर रखा मिल जाता, खा जाते । उसका पति दिसावर से आया तो घर की दुर्दशा देख कर उसे बड़ा अफसोस हुआ और उसने पोल के किवाड़ बनवा दिये । इससे कुत्तों में बड़ी घबराहट फैल गई कि गाँव में उनका एक मात्र आश्रय-स्थल ही बंद हो गया और उन्होंने उस गाँव को छोड़कर रेवाड़ी जाने का निश्चय कर लिया । लेकिन जब वे चलने को हुए तो काने कुत्ते ने शकुन

विचार कर शेष कुत्तों से कहा—यह तो ठीक है कि फूहड़ के घर में किवाड़ लग गये हैं, लेकिन उन्हें बंद कौन करेगा ? वे तो सदा खुले ही पड़े रहेंगे और हम सब उसके घर में पहले की तरह ही निर्बाध प्रवेश करते रहेंगे। इसलिए हमें कहीं भी जाने की आवश्यकता नहीं है।

पद्य—फूड़ कै घर होई किवाड़ी,
कुत्ता रळ कर चाल्या रिवाड़ी,
कारणियें कुत्तै लीन्या सूण,
करा तो ली पण ढकसी कूण ?

६८७. **करी नईं तो कर देखो, करी जिकां का घर देखो।**
बुरे कामों का नतीजा बुरा ही होता है। किसी ने न किये हों तो करके देखले अथवा जिन्होंने किये हैं उनके घर देख लें।

६८८. **करी नेकी, पाणी में फेंकी।**
किसी का उपकार करके उसे उसी क्षण भूल जाना चाहिए।

६८९. **करेलो अर नीम चढ्यो।**
करेला स्वयं ही कड़वा होता है, फिर नीम पर चढने के बाद तो कहना ही क्या ?
रू० गिलोय अर नीम चढी।

६९० **करै आसकी, खालाजी को डर ?**
आशिकी भी करे और खालाजी का डर भी सताये ? दोनों बातें साथ नहीं निभ सकतीं।

६९१. **करै कोई भरै कोई।**
अपराध कोई करे और दण्ड कोई भोगे।

६९२. **करै जिकै नै छाजै, बाकी का मूंड घेसळा बाजै।**
जिसका जो काम हो, वही उसे ठीक तरह से कर सकता है और उसे ही वह फबता है। यदि कोई अनधिकार चेष्टा करता है तो हानि ही उठाता है।

सन्दर्भ कथा—एक धोबी के घर में रात को चोर घुसे। धोबी ने उस दिन कुत्ते को पीटा था और खाना भी नहीं दिया था, इसलिये कुत्ता चोरों को देख कर भी नहीं भौंका। धोबी के गधे ने कुत्ते से भौंक कर मालिक को जगाने का आग्रह किया, लेकिन कुत्ता नहीं माना। इस पर मालिक को जगाने के लिए गधा खूब जोरों से रेंका। मालिक मीठी नींद में सो रहा था, उसकी नींद टूट गई। चोरों की बात तो उसे ज्ञात नहीं हो पाई, लेकिन नींद टूट जाने के कारण वह लट्ठ लेकर गधे पर पिल पड़ा। तभी कहा है—

आप आप का जामा कामा, करै जिकै नै छाजै।
कूकर काज गधो करै, जद मगरां मूसळ बाजै॥

६९३. **करै जिको कैवै कोनी ।**

करने वाला डींग नहीं हांकता, वह करके ही दिखलाता है ।

६९४. **करै पाप तो खावै धाप, करै धरम तो फूटै करम ।**

कलियुग में जो पाप करते हैं, वे मौज उड़ाते हैं और जो धार्मिक मान्यताओं को लेकर चलते हैं, वे कष्ट उठाते हैं ।

६९५. **करै सो पावै, बावै सो लूणै ।**

जो जैसा करता है, वैसा ही पाता है; जैसा बोता है, वैसा ही काटता है । इस संदर्भ की एक छोटी बाल क़था भी है—

चीड़ी चीख मारती, कागलियोजी सुणै ।
साची कथी है सायरां, बावै सो लूणै ।।

६९६. **करो कोई लाख, करइयो एक और है ।**

मनुष्य चाहे लाख करले, लेकिन करने वाला कोई और ही है अर्थात् परमात्मा की इच्छा से ही सब कुछ होता है ।

६९७. **करोत आवती भी काटै, जावती भी काटै ।**

दुष्ट व्यक्ति आता है तो भी हानि पहुँचाता है और जाता है तो भी हानि पहुँचाता है । लोभी बोहरा ऋण देते समय भी कटौती करता है और ऋण की भरपाई करते समय भी ।

६९८. **करो बेटा फाटका, घर का रैवो न घाट का ।**

सट्टा करने वाला न घर का रहता है न घाट का । सट्टे-फाटके में सब कुछ गँवा देने पर भी किसी अन्य काम में उसका जी नहीं लगता ।

रू० करो बेटा फाटका, बेचो थाळी-बाटका ।

६९९. **करो बेटा फाटका, पीवो दूध का बाटका ।**

सट्टा करने वाले को कभी-कभी आशातीत लाभ हो जाता है तो वह दूसरों से भी कहता है कि सट्टा करोगे तो मौज उड़ाओगे ।

७००. **करो सेवा तो पावो मेवा ।**

सेवा करोगे तो मेवा पाओगे ।

रू० करोगा बंदगी तो पावोगा चंदगी ।

७०१. **कलकत्तै को धारो, बाप सें बेटो न्यारो ।**

कलकत्ते का यही नियम है कि बाप और बेटा भी अलग-अलग रहते हैं ।

७०२. **कलकत्तै नइँ जाणा, यारो झैर खाय मर ज्याणा ।**

कलकत्ता जैसी खर्चीली महानगरी में सामान्य स्थिति वाले मनुष्य का रहना अत्यन्त कष्टपूर्ण होता है । इसलिए वह कहता है कि कलकत्ता जाकर रहने की अपेक्षा तो विष खाकर मर जाना अच्छा है ।

७०३. **कळजुग में झूठ फळापै।**

कलियुग में झूठ बोलने से फल की प्राप्ति होती है।

संदर्भ कथा—एक सेठ बहुत मालदार था। उसने अपने एक गरीब मित्र को काम-धंधा करने के लिए दो हजार रुपये उधार दिये थे। कुछ समय बाद सेठ मर गया और उसके मरने के बाद शीघ्र ही उसका सारा कारोबार चौपट हो गया। स्त्री और बच्चों को दो जून भोजन मिलना भी दूभर हो गया। उधर सेठ के उस गरीब मित्र के पास अपार सम्पदा हो गई। एक दिन मृत सेठ की विधवा अपने एक मात्र छोटे से पुत्र को साथ लेकर नये सेठ के यहाँ पहुँची और उससे अपने पति द्वारा दिये गये रुपयों की मांग की। लेकिन नये सेठ ने उसे दुत्कारते हुए कहा कि मेरे पास रुपयों की क्या कमी थी जो मैं तुम्हारे पति से दो हजार रुपये उधार लेता। पास बैठे हुए लोगों ने भी उसकी बात का समर्थन किया और सेठ की विधवा से कहा कि तुम्हारे पास कोई सबूत या लिखा-पढी हो तो दिखलाओ। विधवा ने उत्तर दिया कि मेरे पास कोई लिखा-पढी तो नहीं है, लेकिन यदि मैं झूठ बोलती होऊं तो मेरा यह इकलौता लड़का मर जाए। उसके इतना कहते ही लड़का तुरन्त मर गया और सभी लोग उसे झूठी मान कर उसकी भर्त्सना करने लगे।

वह बेचारी अपने भाग्य को कोसती हुई सेठ की हवेली से बाहर निकल आई। बाहर आने पर उसे पुरुष वेश में 'कलियुग' मिला। विधवा ने उसके सामने अपना दुखड़ा रोया तो वह बोला कि तुमने सत्ययुग की बात कही, इसलिए तुम्हारा लड़का मर गया। यह युग मेरा है अर्थात् कलियुग है और इसमें झूठ बोलने से ही फल की प्राप्ति होती है। अब तुम पुन. सेठ के पास जाकर कहो कि मेरे पति ने तुम्हें बीस हजार रुपये दिये थे, मैंने भूल से दो हजार बतला दिये और इसीलिए मेरा लड़का मर गया। यदि मेरे पति ने तुम्हें बीस हजार रुपये दिये हों तो मेरा लड़का तुरन्त जी उठे। विधवा ने वैसा ही किया। लड़का जी उठा और नये सेठ को झख मार कर बीस हजार रुपये मृत सेठ की विधवा को देने पड़े।

७०४. **कलम दीवानी वह गई, क्या बंदे का सा'रा ?**

दीवानी कलम ने जो लिख दिया सो लिख दिया, बंदा उसमें अब कुछ भी रद्दो-बदल नहीं कर सकता।

सन्दर्भ कथा—एक बार जोधपुर के राजा ने किसी चारण को बीलाड़ा नामक गाँव दिया। चारण जब गाँव का पट्टा लिखने वाले काजी के पास गया तो काजी ने चारण से अपनी 'दस्तूरी' मांगी। लेकिन चारण ने कहा कि मुझे यह गाँव महाराजा ने दिया है, इसमें तुम्हारी दस्तूरी कैसी ? तब काजी ने चारण से कहा कि बीलाड़ा में क्या धरा है, तुम चाहो तो बीलाड़ा

के स्थान पर बाजरगढ का पट्टा लिख दूं ? बांजरगढ का नाम सुन कर चारण खुश हो गया और बोला, "बीलाड़ी पर पड़ो सीलाड़ी, म्हे तो लेस्यां बांजरगढ।" काजी ने बांजरगढ का पट्टा चारण के नाम लिख दिया। लेकिन जब चारण को इस बात का पता चला कि बांजरगढ तो नाम मात्र का ही बांजरगढ है और बीलाड़ा की तुलना में कुछ भी नहीं है तो वह फिर काजी के पास पहुँचा, लेकिन काजी ने उसे टरकाते हुए कह दिया, "कलम दीवानी वह गई, क्या बंदे का सा'रा ?"

७०५. **कळ सें कळ दवै ।**

यथोचित दवाव पड़ने से कठिन काम भी सहजता से बन जाता है क्योंकि एक से एक दबता है।

७०६. **कळ सें होवै जिसो बळ सें कोनी होवै ।**

युक्ति से जो काम आसानी से हो जाता है, वैसा बल से नहीं होता।

७०७. **कळसै पाणी गरम हो, चिड़ियां न्हावै धूळ ।**
इंडा ले चींटी चढै, जद बिरषा भरपूर ।।

कलशों में भरा पानी गर्म हो जाय, चिड़ियां धूल में नहायें, कीड़ियां अपने अंडों को लेकर दीवारों पर चढने लगें तो जानो कि भरपूर वर्षा होगी।

७०८. **कळै कळासै, पैंडै को पाणी तासै ।**

गृह-कलह से पानी—घर में रखा पानी भी त्रसित हो उठता है।

रू० (१) कळै कळासैं, पैंडै को पाणी नासै ।
(२) कळै कळाई कसै, पैंडै को पाणी हँसै ।

७०९. **कळै को मूळ हांसी, रोग को मूळ खांसी ।**

कलह का मूल हँसी और रोग का मूल खांसी।
कभी कभी हँसी बहुत बड़े झगड़े का कारण बन जाती है। इसी प्रकार खांसी से भी भयंकर रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

रू० राड़ को घर हांसी, रोग को घर खांसी।

७१०. **कवि चतारो पारधी, कामणगारी नार ।**
इक्कल हट्टी बाणियों, पांचूं नरक दुआर ।।

कवि, चित्रकार, पारधी, जादू-टोना करने वाली स्त्री और इक्कल हट्टी चलाने वाला बनिया ये पांचों नर्क के द्वार हैं।

रू० कवि चतारो पारधी, नट बेस्यां अर भट्ट ।
आंस्यूं कपट न कीजिये, आंका रच्या कपट्ट ।।

७११. **कस कर बांधै पागड़ी, घुरड़ लिवावै नूं ।**
करड़ी पैरै मोचड़ी, अण मांग्या दुख यूं ।।

खूब कस कर पगड़ी बांधना, नाखूनों को खूब घुरड़ कर कटवाना और तंग जूते पहनना ये तीनों ही बिना मांगे कष्ट हैं।

रू० करड़ी वांधै पागड़ी, घुरड़ लिवावै नक्ख ।
कसटी पैरै मोचड़ी, अरण सिरज्या ई दुक्ख ॥

७१२. **कसाई कै दाणां नै बापड़ी बकरी कद खावै ?**
कसाई के अन्न को खाने की हिमाकत बकरी कब करे ?
रू० कसाई कै चून नै मींढो कद खावै ?

७१३. **कसाई रोवै मांस नै, बकरो रोवै जीव नै ।**
कसाई को मांस की पड़ी है और वेचारा बकरा अपने प्राणों को रो रहा है ।
रू० खटीक रोवै खाल नै, छाळी रोवै जीव नै ।

७१४. **कहँ चन्नण मलयागिरी, कहँ सायर कहँ नीर ।**
जाजा पड़ै अवत्थड़ी, सांसा सहै सरीर ॥
इस कहावत के पीछे कुसुमपुर के राजा चन्दन, उसकी रानी मलयागिरि एवं राजकुमार सायर व नीर की कथा है जो चारों विछुड़ जाते हैं, अनेक कष्ट उठाते हैं, लेकिन अन्त में सबका मिलन हो जाता है तथा राजा को उसका राज्य मिल जाता है ।

७१५. **कहाणी विनां किस्यो बरत ?**
कहानी के विना कैसा व्रत ?
राजस्थान में प्राय: हर व्रत के साथ कोई न कोई कथा होती है जिसे व्रत करने वाली स्त्रियां आवश्यक रूप में सुनती हैं ।

७१६. **कांई चारण की चाकरी, कांई आरण की राख ?**
कांई भील को गावणों, कांई साटिये की साख ?
उपरोक्त चारों वातों का विशेष महत्व नहीं माना जाता ।

७१७. **कांकड़ आई कतार लुटगी ।**
गाँव की सीमा में आने के वाद कतार लुट गई ।
मंजिल पूरी होते-होते विघ्न उपस्थित हो गया ।

७१८. **कांकड़ खेती करणी नईं, बूढो बैल विसाणो नईं ।**
गाँव की सरहद्द में खेती नहीं करनी चाहिए और बूढा वैल खरीदना नहीं चाहिए ।

७१९. **कांकड़ बाण्यों फारगती, गाँव में ज्यूं का ज्यूं ।**
गाँव की सीमा पर तो ऋण की फारखती, लेकिन गाँव में वनिये का ऋण ज्यों का त्यों ।

सन्दर्भ कथा—एक वनिये का अपने पड़ोसी गाँव के ठाकुर पर कुछ ऋण था । एक दिन वनिये ने ठाकुर से अधिक कहा-सुनी की तो ठाकुर एक निश्चित तिथि तक रुपये अदा कर देने का वादा करके चला गया । इसी वीच वनिया अपने लेन-देन के सम्बन्ध में पास के एक गाँव में गया और जव

वह लौट रहा था तो अपने गाँव की सीमा में प्रवेश करते समय उसी ठाकुर ने बनिये को पकड़ लिया एवं उसे ऋण की फारखती लिखने के लिए मजबूर किया। बनिया जानता था कि ठाकुर अनपढ है, इसलिए उसने अपने मन के मुताबिक फारखती लिख कर ठाकुर को दे दी। ठाकुर संतुष्ट होकर चला गया। अगले दिन ठाकुर उक्त बनिये की दुकान के सामने से अकड़ के साथ निकला। बनिये ने ठाकुर को पुकार कर उससे रुपये मांगे तो ठाकुर ने फारखती दिखलाई। लेकिन उसे ब्याज सहित रुपये देने पड़े, क्योंकि फारखती में लिखा था—

भर ढळतां ठाकर मिल्या, म्हांनै जीव की जोख्यूं।
कांकड़ कांकड़ फारगती अर गाँव मे ज्यूं का ज्यूं।
जे ठाकर दुकान पर आज्या तो व्याज फळा कर पूरा ल्यूं।

७२०. **कांकरा कूंळा होवै तो गादड़ा ई कद छोड़ै ?**
यदि कंकड़ कोमल हों तो गीदड़ उन्हे कभी के चट कर जाएँ।

७२१ **कांकरी की मारै जिको पंसेरी की खा।**
जो कंकड़ी की मारता है, उसे पंसेरी की मार सहनी पड़ड़ी है।

७२२. **कां गोरख कां भरथरी, कां गोपीचंद गोड़।**
सिद्ध गयां ईं पूजिये, सिद्ध रह्यां री ठोड़॥
सिद्ध पुरुषों के चले जाने के वाद भी उनके स्थानों की पूजा होती है। गोरखनाथ, भर्तृहरि और गोपीचंद कभी के चले गये, लेकिन उनके स्थान आज भी पूजे जाते हैं।

७२३. **कांच दबावण गई छोरै की, गैल सें धणी की और आ पड़ी।**
एक काम सुधरवाने गई, पीछे से दूसरा और विगड़ गया।

७२४ **कांचळी तो राणीजी की लेई, पण पसवाड़ा कीं का लेसी ?**
कंचुकी तो रानी जी से मांग कर लेली, लेकिन वगलें तो अपनी ही रहेंगी।

७२५. **कांजर की कुत्ती कठै जावती व्यावै ?**
कंजर स्थायी रूप से एक स्थान पर न रह कर घूमते रहते हैं, अतः पता नही उनकी कुतिया कहां जाकर व्याये ?

७२६. **कांट कंटीली भाड़खी, लागै मीठा बोर।**
झड़वेरी भले ही कांटों से युक्त हो, लेकिन उसमें मीठे वेर तो लगते है।

७२७. **कांटै कांटै बाड़, बचनां बचनां राड़।**
कांटों से वाड़ वनती है और दुर्वचनों से झगड़ा होता है।

७२८. **कांटै सें कांटो नीकळै।**
कांटे से कांटा निकलता है।

७२९. **कांटो गड़ै, वींकै ई रड़कै।**
कांटा जिसको चुभता है, उसी को सालता है।

७३०. **कांटो बुरो करील को श्रौर बदळी को घाम ।**
सोत बुरी है चून की श्रौर साझै को काम ।।
करील का कांटा बुरा, बदली की घाम बुरी, साझे का काम बुरा श्रौर सौत तो श्राटे की भी बुरी ।

७३१. **कांदै श्राळा छूंतका, छोलै जिती ई बांस श्रावै ।**
प्याज के छिलके जितने छीलते जाएँगे, उतनी ही श्रधिक दुर्गन्ध श्राती जाएगी श्रौर श्रन्त तक छील डालने पर भी सार कुछ नहीं निकलेगा ।

७३२. **कांधै गेरी झोळी, भांवी गिणँ न थोरी ।**
जब कंधे पर झोली डाल कर मांगने निकल गये तब ऊंच-नीच क्या देखना ?

७३३. **कांधै टाकर डांगरो बरस ब्यावणी नार ।**
कुवेलां को पावणो, तीन्यां को मुँह बाळ ।।
कंधे पर घाव वाला पशु (बैल श्रादि), हर साल प्रसव करने वाली स्त्री श्रौर बे वक्त का पाहुना इन तीनों से भगवान् बचाये ।
रू० कुवेळां की बीजळी, सुवेळां री परिणहार ।
फूहड़ जावै बळीतै नै, श्रै तांनू ई रुळियार ।।

७३४. **कांसी कुत्ती कुभारजा, श्रणछेड़ी कूकंत ।**
कांसी, कुतिया श्रौर कुभार्या बिना छेड़े ही कूकने लगती हैं ।
रू० कांसी कुती कुभारिया, श्रणछेड़ी कूकंत ।
सीसो सोनो सापुरुष, मधुरा ई बोलंत ।।

७३५. **कांसी सेती फूट प्यारी, फोड़-फोड़ बेचै बिणजारी ।**
कांसी की श्रपेक्षा 'फूट' महँगी है, इसलिए बनजारी बर्तनों को तोड़-तोड़ के बेच रही है ।

७३६. **कांसै काई जमै, श्राभ नीलै रंग श्रावै ।**
कीड़ी काढै ईंड, चिड़ी रेती में न्हावै ।
माखण गळियो माट, पवन मुख बैठै छाळी ।
डेडका डहक वाड़ां चढै, विषधर चढ बैठै वड़ां ।
माघिया पंडत कूड़ा पतड़, घण बरसै श्रेतै गुणां ।
यदि कांसी पर काई जमे, श्राकाश का रंग नीला हो जाए, चींटियां श्रपने श्रंडों को लेकर चल पड़ें, चिड़ियां रेत में स्नान करें, बिलौने में मक्खन गल जाए, बकरी पवन के सामने मुख करके बैठे, मेंढक बाड़ों पर चढ जाएँ श्रौर सांप वट-वृक्षों पर जा चढें तो पंडित माघ कहता है कि वर्षा का योग न बताने वाले सारे पतड़े झूठे हो जाएँगे श्रौर वर्षा खूब होगी ।

७३७. **काकड़ी में बीज हा ई कोनी ।**
ककड़ी में बीज थे ही नहीं ।
सर्वथा सच्ची बात को एक दम झुठलाना ।

७३८ **काका खोखो पायो, 'क काकै कै सागै तो यूं हीं गैरा करैगो।**

सन्दर्भ कथा—काका के पीछे-पीछे उसका बालक भतीजा भी चला जा रहा था। भतीजे को खेजड़े के वृक्ष के नीचे एक 'खोखा' (खेजड़े की पकी फली) पड़ा मिल गया तो उसने खुशी से काका को पुकारते हुए कहा—काका मुझे खोखा मिला है। इस पर काका ने भतीजे पर झूठ मूठ का अहसान थोपते हुए कहा—काका के साथ तो इसी प्रकार माल उड़ाओगे।

७३९. **काकी का जाया मिल्यां ईं ठा पड़ै।**

काकी के जाये मुकाबिले में मिलें, तभी बहादुरी का पता चले।
बराबरी का प्रतिपक्षी मिलने से ही अपनी बहादुरी का पता चलता है।

७४०. **काकै की पीयोड़ी, भतीजै नै ऊगै।**

शराब पीता है काका और उसका नशा चढता है भतीजे को।

७४१. **काको कैयां काकड़ी कोई कोनी देवै।**

काका कह देने से ही कोई ककड़ी नहीं दे देता।

७४२. **काकोजी अंटी में है।**

काकाजी अंटी में हैं।

सन्दर्भ कथा—साधारण स्थिति का एक आदमी अनाज लाने के लिए अपने एक परिचित की दुकान पर गया। दुकान पर स्वयं दुकानदार नहीं बल्कि उसका भतीजा बैठा था। आगन्तुक ने जब लड़के से एक रुपये का बाजरा तौल देने के लिए कहा तो लड़के ने सोचा कि यह उधार ले रहा है, अतः उसे टालने के लिए बोला—दुकान पर काकाजी नहीं हैं, वे आयें तब ले जाना। इस पर आगन्तुक ने अपनी अंटी में से एक नकद रुपया निकाल कर लड़के को दिखलाया और कहा कि यह देख, काकाजी अंटी में हैं' इस पर लड़के ने अनाज तौल दिया।

इसीलिए कहा है—अंटी जमा रहे तो खातिर जमा रहे।

७४३. **काकोजी नै मरतां देख कर मरणै सें मन फाटग्यो।**

काकाजी को मरते देख कर मरने से मन फट गया अर्थात् मरने से अरुचि हो गई।

७४४. **काख उठायां काळजो दीखै।**

नितान्त अभाव की स्थिति।

सन्दर्भ कथा—एक सुलफेबाज ने अपना सारा घर चिलमों में फूंक दिया। घर में खाने को अन्न का दाना भी न रहा। एक दिन उसका साला अपनी बहिन से मिलने आया। उसे खिलाने के लिए बहिन के पास कुछ भी नहीं था। इसलिए वह पड़ोसिन के यहाँ थाली गिरवी रख कर थोड़ा सा अनाज लाई और उसे उतावली-उतावली चक्की में पीसने लगी। इतने में

उसका पति भी घर आ गया। सारी स्थिति समझ कर सुलझेबाज पति बोला—

पावणो आयो सिरै मोड़ ।
रांड लगाई थाळी पर दोड़ ।
घम्मड़ घम्मड़ चाकी पीसै ।
काख उठायां काळजो दीसै ।

७४५. **काख में कटारी, चोर नै घूतां सें मारै ।**
बगल में कटारी के होते हुए भी चोर को घूँसों से मारता है ।
साधन होते हुए भी उनका उपयोग न करना ।

७४६. **काख में छोरो, गांव में ढिंढोरो ।**
बगल में छोरा, गाँव में ढिंढोरा ।
रू० कांधै पर छोरो, गाँव में ढंढोरो ।

७४७. **कागद का कड़ावा को बणैनी ।**
कागज के कड़ाहे नहीं बन सकते ।

७४८. **काग पढायो पींजरै, पढग्यो च्यारू वेद ।**
समझायो समझै नईं, रैयो ढेढ को ढेढ ।
जन्मजात संस्कार जाते नहीं ।
संदर्भ कथा—एक गुरुजी ने एक कौवे को पकड़ कर पिंजड़े में बंद कर दिया और अपनी विद्या के बल से उसे चारों वेद पढा दिये । लेकिन जैसे ही पिंजड़े का द्वार खोला गया कौवा उड़ कर विष्टा के ढेर पर जा बैठा और उसमें चोंच मारने लगा ।

७४९. **कागलां की जान में डोड काग ई बड़ जानी ।**
कौवों की बरात में द्रोण काग ही बड़ा बराती ।

७५०. **कागलां कै काछड़ा होवता तो उडतां कै ई दीखता ।**
कौवों के कच्छे होते तो उड़ते हुओं के ही दिखलाई पड़ जाते ।
रू० कागलां कै वागा होता तो उडतां कै ई घेर पड़ता ।

७५१. **कागलां कै सराप सें ऊंट कोनी मरै ।**
कौवों के शाप देने से ऊंट नहीं मरते ।
रू० कागलां कै सराप सें भैंस धोळी कोनी होवै ।

७५२. **कागलै की चांच, पाव की पांच ।**
कौवे की चोंच बड़ी होती है और उसमें काफी सामान समा जाता है ।

७५३. **कागलो चाल्यो हंस की चाल, आप आळी ही भूलग्यो ।**
हंस की चाल सीखने के फेर में कौवा अपनी चाल भी भूल गया ।

७५४. **कागलो जीव सें गयो, पण ठाकर को ई वेरो पड़ग्यो।**
यद्यपि कौवे के प्राण तो गये ही, लेकिन उसे ठाकुर की असलियत का भी पता चल गया।

संदर्भ कथा—किसी ठाकुर के यहाँ एक कौवा हिल गया जो उसे बहुत तंग किया करता था। साथ ही वह इतना चालाक भी था कि किसी तरह भी ठाकुर की पकड़ाई में नहीं आता था। एक दिन ठाकुर ने कौवे को भुलावे में डालने के लिए अपने लड़के से पुकार कर कहा कि मेरी शमशेर ला, आज इस दुष्ट के प्राण शमशेर से ही लूंगा, कौवा सोच रहा था कि जब तक ठाकुर के हाथ में शमशेर आयेगी, तब तक तो मैं कहाँ का कहाँ पहुँच जाऊंगा। लेकिन तभी ठाकुर ने पास पड़े हुए धनुष पर तीर रखा और कौवे को लक्ष्य करके छोड़ दिया। कौवे को तीर का तो गुमान भी नहीं था। तीर कौवे को लगा और वह वहीं ढेर हो गया, किन्तु मरते-मरते उसने ठाकुर से कहा—

वचन पलट्टै सो मुवा, कागा मुवा न जाण।
नाम लियो समसेर को, मार्‍यो तीर कबाण।।

७५५. **कागां कुत्तां कुमाणसां, तीन्यां अेक निकास।**
ज्यां ज्यां सेर्‍यां नीसरै, त्यां त्यां करै बिनास।।
कौवे, कुत्ते और दुर्जन तीनों एक समान होते हैं। ये जिस मार्ग से निकलते हैं, वहीं नुकसान पहुँचाते हैं।
रू० कागां कुत्तां कुमाणसां, तीनूं जात कुजात।

७५६. **कागा किसका धन हड़ै, कोयल किस कूं देय।**
जीभड़ल्यां कै कारणै, जग अपणो कर लेय।
कौवा किसी का धन छीनता नहीं और कोयल किसी को कुछ देती नहीं। लेकिन अपनी मीठी वाणी के द्वारा वह संसार को अपने वश में कर लेती है।

७५७. **कागा रै तूं मळमळ न्हाय, तेरी काळस कदे न जाय।**
कौवा भले कितना ही मल-मल कर स्नान करे, उसका कालापन जाने का नहीं।

सन्दर्भ कथा—किसी तालाव पर एक हंस रहा करता था। एक कौवा भी वहाँ पानी पीने के लिए आया करता। कौवे ने हंस के स्वच्छ व श्वेत रंग को देख कर सोचा कि यह हंस इस तालाब में सदा नहाता रहता है और इसी से यह श्वेत वर्ण हो गया है। अपना रंग बदलने के लिए कौवा भी नित्य मलमल कर उस तालाव के पानी में स्नान करने लगा, लेकिन उसका रंग जरा भी नहीं बदला।
रू० काळा रै तूं मळमळ न्हाय, तेरी काळस कदे न जाय।
यह बात तन के काले और मन के काले दोनों पर लागू होती है।

७५८. **कागो मोती देवै नीं, चिड़ी रोवती रैवै नीं ।**
न कौवा चिड़ी को उसका मोती दे और न चिड़ी रोने से वाज आये ।
इस संदर्भ की एक वाल कथा बहु प्रचलित है ।

७५९. **काच कटोरो नैण जळ, मोती दूध 'र मन्न ।**
इतणा फाट्या ना मिलै, लाखां करो जतन्न ।।
काँच का कटोरा, आंखों का पानी (हया), मोती, दूध और मन एक वार फटने के वाद लाख प्रयत्न करने से भी फिर नहीं मिलते ।

७६०. **काचरियां विना किसो व्या अटकै ?**
काचरियों के अभाव में विवाह थोड़े ही रुकता है ।
नगण्य वस्तु के अभाव में कोई वड़ा काम नहीं रुकता ।

७६१. **काची काया को के गारवो ?**
नश्वर काया का कैसा गर्व ?
रू० काया अर माया को के गारवो ?

७६२. **काचै घड़ै पाणी कोनी भरयो जावै ।**
मिट्टी के कच्चे घड़े में पानी नहीं भरा जा सकता ।

७६३. **काचो कूंपो ऊंट को, या में मीन न मेख ।**
वामण कै सिर पर चढ्यो, संगत का फळ देख ।।
मरे हुए ऊंट के चमड़े का स्पर्श यों तो ब्राह्मण निषिद्ध समझते थे । लेकिन जव उसी चमड़े के कुप्पे वना कर उनमें घी भर दिया जाता था तो वे उसे स हर्ष सिर पर उठा लेते थे ।

७६४. **काछड़ो चोखो गायो ।**
काछड़ा अच्छा गाया ।
स्वल्प और तात्कालिक जानकारी के आधार पर किसी विषय में प्रवीणता का प्रदर्शन करना हास्यास्पद वन जाता है ।

संदर्भ कथा—किसी रईस के वेटे की शादी के अवसर पर शानदार महफिल सजाई गई थी और गाने के लिए एक नामिक वेश्या वुलाई गई थी। गाने की समाप्ति पर जानकार लोग वाह-वाह कर उठते थे लेकिन स्वयं रईस इस मामले में एक दम कोरा था । वह एक भी राग-रागिनी का नाम तक नहीं जानता था । यह वात उसे वहुत अखरी और अगले दिन उसने वेश्या से कहा कि मैं एक दिन में सारी राग-रागिनियां जानना चाहता हूँ । तुम मुझे सिखला दो, मैं तुम्हें मुँहमांगी रकम दूंगा । वेश्या ने कहा कि यों तो संगीत-शास्त्र का ज्ञान प्राप्त करने में जिन्दगी वीत जाती है, लेकिन मैं एक काम-चलाऊ नुसखा आपको वतला देती हूँ । गाना समाप्त होने पर मैं संकेत से उस राग-रागिनी का नाम आपको वतला दिया करूंगी, जैसे कान को हाथ

लगाऊं तो आप कान्हरा समझें और सिर को हाथ लगाऊ तो सोरठ समझें। इस प्रकार वेश्या ने संक्षेप में कई बातें रईस को बतलादीं जिनके बल पर रात की महफिल में उस ने अच्छी वाहवाही ले ली। लेकिन एक बार जब वेश्या ने परज गाया और वह पैर को हाथ लगा कर रईस को संकेत देने जा रही थी तभी उसे काछ पर कुछ खुजलाहट महसूस हुई और उसका हाथ पहले काछ पर चला गया। रईस को इस राग का नाम नहीं बतलाया गया था, लेकिन कुछ सोच कर वह बोल उठा—'काछड़ा अच्छा गाया', और उसकी बात सुनते ही सब लोग हँसी से लोट-पोट हो गये।

७६५. **काजळ की कोटड़ी मांय सें कोई अण-दाग कोनी नीकळै।**
काजल की कोठरी में प्रवेश कर कोई बे-दाग नहीं निकल पाता।

७६६. **काजळ घालतां आंख फूटी।**
अच्छा करते, बुरा हो गया।

७६७. **काजी करै सो न्याव, पासो पड़ै सो डाव।**
काजी करदे सो न्याय और पासा पड़े सो दाँव।

संदर्भ कथा—एक बार काजी और तेली के बैल की परस्पर टक्कर हो गई। काजी का बैल तगड़ा था, अतएव उसने तेली के बैल को मार डाला। तेली ने काजी जी के सामने मामला रखा तो वे बोले—यह तो जानवरों की बात है, इसका भला क्या न्याय किया जाए—

बळद का बळद पर पड़ग्या दाव।
इसका क्या करेगा काजी न्याव?

तेली वहाँ से चला आया, लेकिन उसे काजी की बात लग गई। उसने एक तगड़ा बैल खरीदा और उसे खिला-पिला कर खूब ताकतवर बना दिया। फिर उसने मौका पाकर अपने बैल को काजी के बैल से भिड़ा दिया। काजी का बैल चारों खाने चित्त पड़ा। तेली के बैल ने उसे जान से मार डाला। जब इस बात का पता काजी को चला तो उसने तेली को तलब किया। तेली ने कहा यह तो जानवरों का मामला है, भला मैं इसमें क्या कर सकता हूँ? लेकिन काजी ने कानून की लाल किताब उठाई और उसके पन्ने उलटता हुआ बोला—

लाल किताब उठ बोली यूं, तेली बळद लड़ाया क्यूं?
खिला पिला कर किया मुसंड, बैल का बैल और सौ रुपये डंड।

निदान तेली को बैल के बदले बैल और सौ रुपये नकद दण्ड के भरने पड़े।

७६८. **काजी की मारी हलाल होवै।**
काजी की मारी हलाल (जायज) होती है।

७६९. **काजी कै घर का ऊंदरा ई स्याणा ।**
काजी के घर के चूहे भी सयाने ।

७७०. **काजीजी की कुत्ती मरी जद तो सारो गांव बैठण नै आयो अर काजीजी मरचा तो उठावणियों कोनी पायो ।**
काजीजी की कुतिया मरी तब तो खुशामद के मारे पूरे गाँव के लोग मातम-पुरसी के लिए आये, लेकिन जब काजीजी स्वयं मरे तो उनके जनाजे को उठाने वाला भी न मिला क्योंकि अब काजीजी न तो किसी का भला कर सकते थे और न किसी का कुछ बिगाड़ सकते थे ।

७७१. **काटर कै हेज घणो ।**
दूध न देने वाली गाय अपने बछड़े से अधिक प्यार जताती है ।

७७२. **काठ की हांडी अेक बार ई चढै ।**
काठ की हंडिया एक बार ही चढती है ।
धोखेबाज का विश्वास एक बार ही किया जाता है ।

७७३. **काठ कै सागै 'लो तिरै ।**
काठ के सहारे लोहा भी तैर जाता है ।
अच्छी संगति से पापी का भी उद्धार हो जाता है ।

७७४. **काठ लुळै, पण राठ लुळै नीं ।**
सूखा काठ भले ही झुक जाए, लेकिन राठ नहीं झुकता ।

७७५. **काढै कढारा देवै उधारा, जांका जाई जामता फिरै कुंआरा ।**
जो स्वयं अन्य लोगों से उधार लाकर दूसरों को उधार देत हैं, उनके पुत्र कुंआरे ही रह जाते हैं ।
इस तरह का लेन-देन करने वाला सदा घाटे में ही रहता है ।

७७६. **काढो काढ में काढो काढ अर घालो घाल में घालो घाल ।**
देखा देखी का सौदा ।

७७७. **काढ्यां ई काढ्यां तो कूवा ई रितज्या ।**
यदि मनुष्य कुछ कमाये नहीं और जमा पूंजी को ही निकाल-निकाल कर खर्च करता रहे तो बड़े से बड़ा खजाना भी समाप्त हो जाता है ।

७७८ **काढ्यो पाणी पीवै ।**
इतनी सी आय, जिसमें किसी प्रकार गुजर हो जाए ।

७७९. **काणती को काजळ ई कोनी सारचो जावै ।**
कानी का शृंगार ही पूरा होने में नहीं आता ।

७८०. **काणती को काजळ ई कोनी सुहावै ।**
कानी का काजल भी गाँव को नहीं सुहाता ।

७८१. **काणती छोरी तनै कुण ब्यासी ? 'क मेरै भाई-भतीजां नै ईं खिलास्यूं ।**
कानी लड़की तुझे कौन व्याहेगा ? कोई न सही, मैं अपने भाई-भतीजों को ही खेलाया करूंगी ।

७८२ **काणती दादी छा घाल । 'क बोल्यो तूं इस्यो सुप्यार जिको तनै घी को लूंदो घालूं ।**
कानी दादी छाछ घाल । दादी ने उत्तर दिया—हाँ तुम्हारी बोली इतनी सुहानी है कि तुझे छाछ ही क्या, घी का लौंदा ही घाल दूं !
रू० काणां वाणियां गुड़ दे, 'क तनै खांड देस्यूं ।

७८३. **काणती भेड़ की चाल ई न्यारी ।**
कानी भेड़ की चाल ही अलग ।
रू० काणती भेड़ को राड़्यो ही न्यारो ।

७८४. **काण धड़ै में नीसरज्या ।**
तकड़ी की काण (असंतुलन) घड़े में निकल जाती है ।

७८५. **काणी आंख में ईं काजळ ?**
कानी आंख में भी काजल ?

७८६. **काणी आंख सूझण नै तो कोनी, पण दुखण नै त्यार ।**
कानी आंख से दिखलाई भले ही न पड़े, लेकिन खटकने के लिए तो वह भी तैयार रहती है ।
कुटिल व्यक्ति से भला चाहे न हो, लेकिन बुरा करने के लिए तो वह तैयार ही रहता है ।

७८७. **काणी कै ब्याह में सौ कौतक ।**
कानी के विवाह में सौ कौतुक ।
कानी के विवाह में सौ विघ्न ।

७८८. **काणी छोरी जाई, टोक टोक खाई ।**
कानी छोरी क्या जनी, दुनिया ने टोक-टोक कर परेशान कर डाली ।

७८९. **काणी नै काणो प्यारो, राणी नै राणो प्यारो ।**
राणी को राणा प्यारा लगता है तो कानी को काना ही प्यारा लगता है ।
रू० काणी नै काग प्यारो, राणी नै राज प्यारो ।

७९०. **काणी नै कुण सरावै ? 'क काणी की मा ।**
कानी को और कोई चाहे न सराहे, लेकिन उसकी माँ तो उसकी सराहना करती ही है ।

७९१. **काणै सें राम-रमी ईं नईं करणी ।**
काने से पहले राम-राम भी नहीं करनी चाहिए ।
काने से बच कर रहना चाहिए ।

संदर्भ कथा—एक आदमी ने यद्यपि यह सुन रखा था कि काने से राम-राम भी नहीं करनी चाहिए, लेकिन एक बार वह किसी गाँव गया तो वहाँ एक अनजान काने से राम-राम कर बैठा। काने ने तत्काल ही उससे कहा कि मैंने अपनी एक आंख तुम्हारे पास पांच रुपये में गिरवी रखी थी सो अपने रुपये व्याज सहित लेलो और मेरी आंख मुझे लौटा दो। काने की बात सुन कर वह बड़ा चकराया। लेकिन उसने यह सुन रखा था कि यदि काने से पाला पड़ जाए तो उसका प्रतिकार गंजा ही कर सकता है। इसलिए वह उस काने को साथ लेकर उसी गाँव में रहने वाले अपने एक गंजे मित्र के पास गया तो गंजे ने काने से कहा कि तुम कल सवेरे रुपये और व्याज लेकर आ जाना, तुम्हारी आंख देदी जाएगी। दूसरे दिन सवेरे ही काना वहां आ गया। गंजे ने उससे रुपये ले लिये और उसे बाहर ही बैठ जाने के लिए कहा। उसके यहाँ मरे हुए जानवरों की बहुत सी आंखें एक हंडिया में भरी रखी थीं। गंजे ने उनमें से एक आंख निकाल कर काने के पास भेजी, लेकिन काने ने उसे लेने से इनकार कर दिया। इसी प्रकार उसने चार-पांच आंखें उसके पास भेजीं, लेकिन वह हर बार यही कहता रहा कि यह मेरी आंख नहीं है। इस पर गंजे ने बाहर आकर उससे कहा कि हमारे यहां बहुत लोगों की आंखें गिरवी रखी हुई है सो यों तो कुछ पता नहीं चलता कि तुम्हारी आंख कौनसी है, अतः हम तुम्हारी दूसरी आंख निकाल लेते हैं और उसकी जोड़ी की आंख ढूंढ कर तुम्हें ला देंगे। यों कह कर गंजा जैसे ही उसकी ओर बढ़ा, काना वहाँ से ऐसा भागा कि उसने पीछे मुड़ कर भी नहीं देखा।

रू० (१) काणो कुचमादी होवै।

(२) काणै कै अेक रग वत्ती होवै।

(३) काणो खोड़ो खोयरो, अैंचाताणो होय।

इण नै जद ही छेड़िये, हाथ घेसळो होय।

७९२. **कातण आळी वात करै, पीसण आळी वोल वाली मरै।**

कातने वाली तो आराम से बैठी बातें करती है, लेकिन पीसने वाली चुपचाप मरती रहती है क्योंकि कातने की अपेक्षा पीसने में कहीं अधिक जोर लगाना पड़ता है।

७९३. **कातिक की छांट बुरी, वाणियें की नाट बुरी।**
भायां की आंट बुरी, राजा की डांट बुरी।

कार्तिक मास की वर्षा बुरी, वनिये की 'नहीं' बुरी, भाइयों की अनवन बुरी और राजा की डांट-डपट बुरी।

७९४. **कातिक कुत्तो, माह बिलाई।**
फागण मरद, ब्या लुगाई।

उपरोक्त चारों में उपर्युक्त अवसरों पर कामोत्तेजना विशेष होती है।

७९५. **कातिक को 'मे कटक बरोबर ।**
कार्तिक की वर्षा सेना की तरह फसल को हानि पहुँचाने वाली होती है ।

७९६. **कातिक सुद एकादसी, बादळ बिजळी होय ।**
तो असाढ में भड्ढळी, बिरखा चोखी होय ।।
यदि कार्तिक शुक्ला एकादशी को आकाश में बादल और बिजली हों तो आगामी आषाढ में अच्छी वर्षा होगी ।

७९७. **काती दीया बाती ।**
कार्तिक में दिन इतने छोटे होने लगते हैं कि दीया-बत्ती करते ही बनता है ।

७९८. **काती में सै साथी ।**
देर से बोई फसलें भी कार्तिक में साथ ही पक जाती हैं ।

सन्दर्भ कथा—एक बूढा किसान भादों के महीने में हल चला रहा था । उसके खेत में जेठ के महीने में भी वर्षा हो चुकी थी और जेठ वाली फसल खूब अच्छी खड़ी थी । राजा की सवारी उधर से निकली तो राजा ने किसान से पूछा कि तुम्हारी पहले वाली फसल तो पकने जा रही है, लेकिन अब जो फसल बो रहे हो, वह भला कब पकेगी ? इस पर किसान ने पहले अपने सिर पर एवं फिर मोंछों पर हाथ लगाते हुए कहा कि मोंछों के बाल सिर के बालों से बीस वर्ष छोटे हैं, लेकिन जैसे वृद्धावस्था को पाकर दोनों ही सफेद हो गये हैं, वैसे ही कार्तिक में यह फसल भी पहले वाली फसल के साथ ही तैयार हो जाएगी ।

७९९. **काती वद बारस, बादळ री छाया ।**
तो आषाढे धुर बरसैलो भाया ।।
कार्तिक वदि बारस को आकाश में बादलों का छाये रहना आगामी आषाढ में वर्षा का सूचन करता है ।

८००. **कात्या जांका सूत, जाया जांका पूत ।**
सूत कातने वाले का और पुत्र जन्म देने वाले का ।

८०१. **कादै में भाठो फंक्यां आपकै ई छांटा लागै ।**
कीचड़ में पत्थर फेंकने से उसके छींटे उछल कर फेंकने वाले पर ही पड़ते हैं ।

८०२. **कानां में गासिया लियां पेट कोनी भरै ।**
कानों में ग्रास लेने से पेट नहीं भरता ।
रू० सिर पर ओक मांड्यां पेट कोनी भरै ।

८०३. **कानां में मुंदरा होयां आपै ई आ आदेस करसी ।**
कानों में कुंडल होंगे तो लोग स्वयं आकर 'आदेस बाबाजी' कहेंगे ।

८०४. **कानूड़ो तो कुळ में आयो, रात बड़ी दिन छोटा ल्यायो ।**
कृष्ण जन्माष्टमी (भादों वदि अष्टमी) से रातें बड़ी और दिन छोटे होने लगते हैं ।

८०५. काप दरजी को बाप, कोक दरजी की रोक ।

८०६. काबल में किस्या गधा कोनी होवै ।
क्या काबुल में गधे नहीं होते ?
मूर्ख तो सभी जगह मिल जाते हैं ।

८०७. काम अर लाम कै बैर है ।
काम और जल्दबाजी में परस्पर बैर है ।
जल्दबाजी करने से काम बिगड़ जाता है ।

८०८. काम ई करता तो घरे ई घणो हो ।
यदि काम ही करना होता तो अपने घर पर ही बहुतेरा काम था ।
जो काम चोर व्यक्ति काम से जी चुरा कर घर छोड़ देता है, वह दूसरे का काम क्या करेगा ?
रू० (१) काम ई करता तो बाबोजी क्यूं बणता ?
(२) बाबोजी, आछड़ा घेरियो, 'क बाछड़ाई घेरता तो बाबोजी क्यूं बणता ?

८०९. काम ई करम है ।
काम करते रहना ही मनुष्य का कर्तव्य है ।
काम के अनुसार ही भाग्य बनता है ।

८१०. काम करै ऊधोदास, जीम ज्यावै माधोदास ।
काम कोई करे और उसका लाभ कोई और ले जाए ।

८११. काम की कहद्यो अर कूवै में गेरद्यो ।
काम चोर व्यक्ति से किसी काम के लिए कहना निरर्थक है ।

८१२. काम की न काज की, ढाई सेर नाज की ।
काम को तो हाथ भी न लगाये और खाने के लिए अढाई सेर अनाज चाहिए ।

८१३. काम की मा उरैसी, पूत की मा परैसी ।
बेटे की माँ से भी अधिक अच्छी काम करने वाली लगती है ।

८१४. काम की मेदा नीं, पीसै की पैदा नीं ।
काम तो बेशुमार और उससे आय कुछ भी नहीं ।
निरर्थक पच-पच के मरना ।

८१५. काम को नांव ई खाणो है ।
काम करने से ही खाना मिलता है ।

८१६. काम जिसा दाम ।
जैसा काम, वैसे दाम ।

८१७. **कामण करचा हा सुहाग नै, होग्या दुहाग नै।**
'कामण' (जादू-टोना) किये तो थे सोहाग के लिए, लेकिन उल्टे वैधव्य के निमित्त बन गये।
काम तो भले के लिए किया था, उल्टा बुरे का कारण बन गया।

८१८. **काम नईं पड़ै इत्तै सै चोखा है।**
जब तक किसी के साथ काम न पड़े, तब तक सभी अच्छे हैं। लेकिन अच्छे-बुरे का वास्तविक ज्ञान तो उसके साथ काम पड़ने से ही होता है।
रू० काम पड़्यां ई कूंतिये, जो नर जैड़ो होय।

८१९. **काम नै काम सिखावै।**
काम को काम सिखलाता है।
किसी काम को करते-करते मनुष्य उसमें कुशलता प्राप्त कर लेता है।

८२०. **काम नै सिलाम है।**
काम को नमस्कार है।
कर्तव्य पालन वंदनीय है।

८२१. **काम प्यारो है, चाम प्यारो कोनी।**
चमड़ी की सुन्दरता की अपेक्षा काम प्यारा होता है।

८२२. **काम सरचा दुख बीछड़्या, वैरी होग्या बैद।**
रोग मुक्त होने के बाद आदमी अपने चिकित्सक से किनारा करने लगता है।
रू० काम सर्‌यो जुग वीसर्‌यो, कुणवो बारा बाट।

८२३. **कामी कै साख नईं, लोभी कै नाक नईं।**
व्यभिचारी को नाते-रिश्ते का कोई खयाल नही रहता और लोभी व्यक्ति को मान-मर्यादा का विचार नहीं रहता।
रू० (१) कामी कै जात नईं, लोभी कै साख नईं।
(२) कामी कै साख नईं, लोभी कै जात नईं।

८२४. **कामी नर दूती बिना, राजा मंत्री हीन।**
बिना वसीलै नौकरी, तीनूं तेरा तीन।
कामी मनुष्य दूती के अभाव में, राजा मंत्री के अभाव में एवं नौकरी जरिये के अभाव में तीन-तेरह रहती है।

८२५. **काया राख धरम है।**
शरीर का अस्तित्व रखते हुए ही धर्म का पालन अभीष्ट है।

८२६. **काया राम की, धन राज को।**
शरीर तो राम का है और सम्पत्ति राज्य की।
रू० काया राम की, माया राज की।

८२७. **कारटिये को खा लेणो, ऊगटिये को नईं खाणो।**

महाब्राह्मण का दाना भले ही खा लिया जाए लेकिन ऊगटिये का नहीं खाना चाहिए।

ऊगटिया=जो बार-बार गिनावे; बोली या ताना मारे।

८२८. **कारीगरां कमणीगरां कै बणिये की हट्ट।**
इतणी जगां ना मिलूं तो डूमां कै अलबत्त॥

झूठ अपने रहने के स्थान बतलाता है कि मैं कारीगरों और कमंगरों के यहां अथवा बनिये की दुकान पर रहता हूँ और कदाचित् वहां न मिलूं तो डोनों के यहां तो निश्चित रूप से ही मिल जाता हूँ।

रू० कारीगरां कमणीगरां और बजाजां हट्ट।
जो अेता में ना मिलूं तो डूमां में अलबत्त॥

८२९. **काळ आज्या, पण काल कोनी आवै।**

कल, कल करते हुए काल भले ही आ जाए, लेकिन कल कभी नहीं आता। लम्बी अवधि की निश्चित तिथि भी यथा-समय आ जाती है, लेकिन कल कभी नहीं आता।

सन्दर्भ कथा—एक सेठ किसी खाती के कुछ रुपये मांगता था। वह ऋण की वसूली करने के लिए नित्य खाती के घर जाता, लेकिन खाती 'कल दूंगा' कह कर टाल देता। यों करते-कराते बहुत दिन बीत गये। एक दिन सेठ उसके घर आया तो खाती कहीं गया हुआ था और उसका बेटा घर पर था। उसने सेठ से कहा कि सेठजी, क्यों नित्य चक्कर काटते हो ? वो देखो, सामने हमने कुछ वृक्षों के बीज बोये हैं, वे उगेंगे, बढेंगे और बढ़कर पूरे वृक्ष बनेंगे, तब इन वृक्षों की डालों को चीर कर उनके 'फाटके' (तख्ते) निकालेंगे और फिर उन 'फाटकों' से बनी चीजों को बेच कर तुम्हारे रुपये दिये जाएँगे। इस पर सेठ ने उससे पूछा कि ये सब काम हो जाने के बाद तो निश्चित रूप से हमें रुपये मिल जाएँगे न ? खाती के बेटे ने सेठ को भरोसा दिलाया कि हाँ, तब निश्चित रूप से मिल जाएँगे। इस पर सेठ आश्वस्त होकर लौट गया। उसके जाने ने बाद जब खाती घर आया तो उसके बेटे ने सारी घटना अपने बाप को बतलाते हुए कहा कि अब सेठ रोज-रोज नहीं आयेगा। इस पर खाती ने अफसोस प्रकट करते हुए अपने बेटे से कहा कि तुमने बड़ी गलती की। अब ये रुपये एक न एक दिन हमें देने ही पड़ेंगे, चाहे बीस वर्ष बाद ही सही। लेकिन मेरे वाला 'कल' न कभी आता और न मैं सेठ को रुपये देता।

८३०. **काळ आयां कोई कोनी बंचै।**

चाहे कोई लाख उपाय करले, लेकिन मृत्यु आने पर कोई नहीं बचता।

सन्दर्भ कथा—एक ब्राह्मण अपनी स्त्री और लड़के के साथ अपनी झोंपड़ी में सोया हुआ था। आधी रात को एक काला नाग झोंपड़ी पर से उतरा और उसने ब्राह्मणी व उसके लड़के को डस लिया, जिससे दोनो तत्काल मर गये। सांप जाने लगा तो ब्राह्मण ने उसका पीछा किया। थोड़ी दूर जाने के बाद वह सांप एक शेर की शक्ल में बदल गया, लेकिन ब्राह्मण ने उसका पीछा करना नहीं छोड़ा। तब शेर ने सहसा मनुष्य का रूप धारण कर के ब्राह्मण से पूछा कि तू मेरा पीछा क्यों कर रहा है ? ब्राह्मण ने पूछा कि तुम कौन हो, यह मुझे सच-सच बतलाओ। उसने उत्तर दिया कि मैं काल-भगवान् हूं जो समयानुसार सब का भक्षण करता हूँ। ब्राह्मण ने पुनः पूछा कि तुमने मेरी स्त्री और पुत्र का तो भक्षण कर लिया, लेकिन मुझे क्यों छोड़ दिया ? काल भगवान् ने उत्तर दिया कि उन दोनों की अवधि पूरी हो गई थी, इसलिए मैंने उनका भक्षण किया, तुम्हारी अवधि बारह वर्ष बाद पूरी होगी और तब मैं हरिद्वार में गंगाजी के बीच मगरमच्छ बन कर तुम्हारा भक्षण करूंगा।

यों कह कर काल तो अदृश्य हो गया और ब्राह्मण ने यह दृढ़ निश्चय कर लिया कि वह कभी हरिद्वार जाएगा ही नहीं। लेकिन समय पर ऐसा बानक बना कि उसे वहाँ जाना पड़ा और काल ने मगरमच्छ बन कर उसका भक्षण किया।

८३१. **काल की जायोड़ी लूंकड़ी अर म्हारै जमानै में 'मे भोत बरस्यो।**

कल की जन्मी लोमड़ी और हमारे जमाने में वर्षा बहुत हुई।

कम उम्र के व्यक्ति द्वारा प्रत्यक्षदर्शी की तरह पुरानी बातों को बढ़ा-चढ़ा कर कहने पर इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

रू० काल की जोगण अर कड़ियां सुधी जटा।

८३२. **काळ टळै, पण कलाळ नइं टळै।**

मृत्यु भले ही टल जाए, लेकिन कलाल नहीं टलता। वह शराब में मिलावट किये बिना नहीं रहता।

८३३. **काळ कुसूमैं ना मरै, बामण बकरी ऊंट।**
वो मांगै वा फिर चरै, वो सूका चावै ठूंठ॥

ब्राह्मण, बकरी और ऊंट दुर्भिक्ष के समय भी भूख के मारे नहीं मरते, क्योंकि ब्राह्मण मांग कर खा लेता है, बकरी इधर-उधर चर कर गुजारा कर लेती है और ऊंट सूखे ठुंठ चबा कर ही जीवित रह जाता है।

८३४. **काल ताईं चोखली चमारी ही, आज नाना बामणी बण बैठी।**

रू० काल ताईं चोखली चमारी ही, आज पाबूजी की पंडी बण बैठी।

८३५. **काळ पड़ै जद पी'र अर सासरै सागै ई पड़ै ।**
अकाल पड़ता है तो पीहर और सुसराल दोनों में एक साथ ही पड़ता है। यदि औरत की सुसराल में अकाल पड़े तो वह पीहर चली जाए, लेकिन यदि वहां भी अकाल हो, तव कहाँ जाए ?

८३६. **काळ वागड़ सें ऊपजै, बुरो वामण सें होय ।**
अकाल वागड़ से पैदा होता है और बुरा ब्राह्मण से होता है ।

८३७. **काळ में अधक मास ।**
विक्रम संवत् की गणना में प्राय: हर तीसरा वर्ष १३ महीनों का होता है। यदि उस वर्ष अकाल हो तो एक महीना अधिक होने से कष्ट की अवधि और लम्बी हो जाती है ।

८३८. **कालर को खेत, चोदू को हेत ।**
कालर का खेत और हीन व्यक्ति का हेत लाभ-प्रद नहीं होता ।
कालर = कालर की भूमि खेती के अयोग्य होती है। अच्छी वर्षा होने पर भी इसमें फसल नहीं होती ।

८३९. **काळ सें आळ नई करणी ।**
जान वूझ कर मृत्यु से छेड़खानी नहीं करनी चाहिए ।

८४०. **काळा काळा सै ई वाप का साळा !**
काले काले सभी वाप के साले !
ख्वाहमख्वाह अपना वहुमत जताने की चेष्टा ।

८४१. **काळा कुत्तम सदा उत्तम, भूरा कुत्ता सरासरी ।**
जे हो कुत्ती किरड़ कावरी, वीं की के वरावरी ।।
सन्दर्भ कथा—एक भोजन-भट्ट पंडितजी को भोजन का निमंत्रण मिला। यजमान ने वहुत वढिया खीर वनाई, लेकिन एक कुत्ता उसमें मुँह डाल गया। यजमान ने पंडितजी से पूछा कि खीर तो वहुत वढिया वनाई थी, लेकिन उसे कुत्ता जूठी कर गया, इसलिए अव यह खीर आपको परोसी जाए या नहीं ? पंडितजी ने सोचा कि 'खीर-खांड' के भोजन सदा तो मिलते नहीं और फिर मीठे के साथ जूठा भी चलता ही है, अत: इनकार नहीं करना चाहिए। फिर भी उन्होंने घर वालों से पूछा कि कुत्ता कैसा था ? इस पर एक ने कहा—काले रंग का था, दूसरे ने कहा भूरे रंग का था और तीसरे ने कहा कि कवरी कुतिया थी। पंडित जी एक वार तो दुविधा में पड़ गये, लेकिन फिर उपरोक्त कहावती दोहा कहते हुए उन्होंने खीर परोसने की स्वीकृति देदी ।

८४२ **काळी ऊन कुमाणसां चढै न दूजो रंग ।**
काली ऊन और कुटिल व्यक्ति पर दूसरा रंग नहीं चढता ।

८४३. **काळी पड़वा कातकी, जे बुधवारी आय ।**
कठै 'क विरखा होवसी, बाकी काळ बताय ।।
कातिक वदि १ को यदि बुधवार हो तो आगामी वर्ष में किसी-किसी स्थान पर ही वर्षा होगी, बाकी जगहों में अकाल पड़ेगा ।

८४४. **काळी भली न कोड्याळी, भूरी भली न सेत ।**
राखो रांडां च्यारवां नै एकै ही खेत ।।
न काली अच्छी है, न चितकबरी, न भूरी अच्छी है और न सफेद रंग वाली । चारों एक जैसी हैं और इन चारों का ही काम तमाम कर डालो ।
इस कहावत के पीछे चार जादूगरनियों की कथा है जो अपने शिकार को हाथ से निकलते देख कर चार रंगों की चीलें बन कर उसका पीछा करती हैं ।

८४५. **काळी हांडी कनै बैठ्यां काळस ई लागै ।**
काली हँडिया के पास बैठने से कालिख ही लगती है ।
बुरी संगति से कलँक ही लगता है ।
रू० काळै कनै बैठ्यां काळो ई लागै ।

८४६. **काळै कै काळो नईं तो कोड्याळो जरूर जामै ।**
काले के काला न जन्मे तो भी कबरा जरूर जन्मे ।
पुत्र में पिता के सारे अवगुण न भी आएँ तो भी कुछ तो आ ही जाते हैं ।

८४७. **काळै केरड़ा, सुकाळै बोर ।**
कैर अधिक पैदा हों तो अकाल और बेर अधिक हों तो सुकाल होता है ।

८४८. **काळै नै ऊजळो कद सुहावै ?**
कुटिल व्यक्ति को सज्जन अच्छा नहीं लगता ।

८४९. **काळै 'मूं' की कूकरी, घुस घुस लावा लेय ।**
म्हारी तरियां तूं फिरै, कातिक आवण देय ।।
सन्दर्भ कथा—कोई रात्रि-अभिसारिका अपने संकेत स्थल की ओर जा रही थी । राह में उसे एक कुतिया भौंकने लगी । जब वह भौंकने से नहीं रुकी तो अभिसारिका ने तिरस्कार पूर्वक उससे कहा कि तू मुझे क्या भौंकती है, कार्तिक का महीना आयेगा तो तू स्वयं भी कामान्ध हुई इसी प्रकार डोलती फिरेगी ।

८५०. **काळो आंक भैंस बराबर ।**
काला अक्षर भैंस के बराबर ।
निरक्षर भट्टाचार्य्य ।

८५१. **काळो विप्पर गोरो सुदर, वां सूं डरपै विरमा रुदर ।**
काले ब्राह्मण एवं गोरे शूद्र से ब्रह्मा और रुद्र भी डरते हैं ।

८५२. **कासी जी गया अर म्हेई जीत्या, क्यूंकै म्हे म्हारी ई म्हारी दळी, दूसरै की सुणी ई कोनी ।**
हमने काशीजी में जाकर शास्त्रार्थ किया तो जीत हमारी ही हुई, क्योंकि हम अपनी ही दलते रहे, किसी दूसरे की बात तो हमने सुनी ही नहीं ।

८५३. **किण किण को मन राखिये, वाट विचाळै खेत ।**
रास्ते पर खेत है, अब किस-किस का मन रखा जाए ?

८५४. **किण किण न समझाइये, कूवै भांग पड़ी ।**
जब कुएँ में भांग पड़ गई हो और उसे पीकर पूरे गाँव के लोग ही बावले बन गये हों तब भला किस किस को समझाया जाए ?
रू० कुण सुणै किणनै कहूं, ऐसी आन अड़ी ।
किण किण नै समझाइये, कूवै भांग पड़ी ।।

८५५. **किरती अेक जबूकड़ो, ओगण सै गळियां ।**
कृतिका नक्षत्र में एक बार भी बिजली चमक जाए तो वह वर्षा संबंधी सभी पूर्व अपशकुनों को मिटा देती है ।

८५६. **किरपण कै दाळद नईं, नां सूरां कै सीस ।**
दातारां कै धन नईं, नां कायर कै रीस ।।
कृपण के यहाँ दारिद्रय का क्या काम ? क्योंकि वह माया को जोड़ता ही रहता है, खर्च करना वह जानता ही नहीं । शूरवीर तो अपना सिर हथेली पर ही लिये रहता है । दातार कभी धन का संग्रह नहीं करता, उसके हाथ में जैसे ही धन आता है, वह बांट देता है और कायर गुस्सा नहीं करता ।

८५७. **किरपण कै धन को, लुगाई कै मन को वेरो कोनी पड़ै ।**
कृपण के धन और स्त्री के मन का कुछ पता नहीं चलता ।

८५८. **किसन करी तो वाजी लीला, म्हे वाजां लंगवाड़ा ।**
कृष्ण ने गोपियों के चीर हरण किये तो यह भगवान की चीर हरण लीला कहलाई, लेकिन अन्य कोई ऐसा करे तो उसे लुच्चा कहा जाता है ।

८५९. **कीं की रांड मरै अर कीं कै सुपनै आवै ।**
किसी की औरत मरे और किसी को स्वप्न में दिखलाई दे ।

८६०. **कीकर काट'र हळ घड़ै, रस कस की रांधै खीर ।**
न्यूंत जिमावै भाणजो, कदे न निरफळ जाय ।
खेती के लिए कीकर की लकड़ी का हल बनाना और भानजे को न्योता देकर खीर खिलाना व्यर्थ नहीं जाता ।

८६१. **कीकर छोड़ो कैर पधारो, इतरो कारज म्हारो सारो ।**
कीकर को छोड़ कर कैर में पधारिये, कृपया इतना सा काम हमारा कर दीजिए ।

संदर्भ कथा—एक जाट ने हवेली चिनवाई तो किवाड़ों और चौखटों के लिए मजबूत काठ की आवश्यकता हुई। जाट के खेत में कीकर का एक बड़ा वृक्ष था। उसने सोचा कि यदि इसे काट कर काम में लिया जाए तो सारी चौखटें और किवाड़ बन जाएँगे। लेकिन गाँव वालों ने कहा कि इस कीकर वृक्ष में 'खेतरपाळ' (क्षेत्रपाल) का निवास है और इसे काटने से वह नाराज हो जाएगा। जाट की स्त्री ने भी अनिष्ट की आशंका से अपने पति को कीकर काटने से मना कर दिया।

तब जाट ने एक तरकीब निकाली। अगले सवेरे वह सोकर उठा तो उसने अपनी स्त्री एवं पास पड़ौस के लोगों को बुला कर कहा कि रात को स्वप्न में मुझे कीकर वाले 'खेतरपाळ' के दर्शन हुए। उन्होंने मुझ से कहा कि इस कीकर में रहते रहते मैं ऊब गया हूँ, अतः अब इस पास वाले कैर में प्रवेश करता हूँ। तब मैंने भी उनसे कहा—

खेतरपाळ बलिहारै थारै, थोड़ो सो कारज अड़्यो हमारै।
कीकर छोड़ो कैर पधारो, इतरो कारज म्हारो सारो॥

इस पर 'खेतरपाळ' कीकर को छोड़ कर पास वाले कैर में प्रवेश कर गये, अतः अब इस कीकर को काटने में कोई आपत्ति नहीं है। इस पर सब लोग मान गये।

८६२. **कीड़ा पड़ै गोबर कै मांय, पपैयो मीठो बोल सुणाय।**
अमल चामड़ो गीलो होय, बिरखा हुवै न संसै कोय॥
यदि गोबर में कीड़े पड़ें, पपीहा मीठी वाणी में बोले, अफीम और चमड़े में गीलापन आ जाए तो निश्चय ही वर्षा होगी।

८६३. **कीड़ी कण आसाढ में, बारै न्हाखै लाय।**
भील कहे सुण भीलणी, मेह घणेरो थाय।
आषाढ मास में यदि चींटियां अन्न के कणों को अपने बिलों से बाहर निकाल कर डालें तो वर्षा खूब हो।

८६४. **कीड़ी कण आसाढ में, मांय लेजाती देख।**
तो अन-त्रण रो काळ व्है, इण में मीन न मेख॥
आषाढ मास में यदि चींटियां अन्न के कणों को बिलों में ले जाएं तो अन्न के साथ-साथ त्रण (घास-फूस) का भी अकाल रहेगा।

८६५. **कीड़ी चाली सासरै, नौ मण सुरमो सार।**
चींटी भी नौ मन सुरमा आंखों में डाल के सुसराल को चली।
जब अकिंचन व्यक्ति भी अधिक आडम्बर करे।

८६६. **कीड़ी छूंक्यां किसो काम सरै।**
कीड़ियों को छौंकने से भला क्या काम सरेगा ?
अकिंचन व्यक्तियों को बिना बात सताने से कोई गरज पूरी नहीं होगी।

८६७. **कीड़ी नै करण, हाथी नै मरण ।**
ईश्वर सब की यथोचित पूर्ति करता है, कीड़ी को कन और हाथी को मन वही पूरता है ।
रू० कण कीड़ी मण कूंजरां, सैं नै पूरै राम ।

८६८. **कीड़ी नै मूत को रेळो ई घणों ।**
कीड़ी के लिए पेशाव की धार ही वहुत है । वह उसी में वह जाती है ।
गरीव के लिए थोड़ी सी क्षति भी वहुत होती है ।

८६९. **कीड़ी पर के कटक करै ?**
कीड़ी पर कैसी फौजकशी ?
रू० कीड़ी पर के पंसेरी वावै ?

८७०. **कीड़ी संचै तीतर खाय, पापी को धन परलै जाय ।**
कीड़ी अन्न का संचय करती है, लेकिन उस संचित अन्न को तीतर खा जाता है । इसी प्रकार पापी नाना प्रकार के पाप करके धन का संचय करता है लेकिन वह नष्ट हो जाता है ।
जो व्यक्ति दिखावे के लिए तो कीड़ी नगरा सींचता है, लेकिन लुक-छिप कर तीतर को मार कर खाता है, उसका धन व्यर्थ जाता है ।

८७१. **कुंआरां का के न्यारा गाँव वसै है।**
अविवाहितों के कोई अलग गाँव थोड़े ही वसते हैं ?
रू० काळां का किसा न्यारा गाँव वसै है ?

८७२. **कुंआरी कन्या सैंस बर ।**
कन्या जव तक कुंआरी रहती है, उसके विवाह के लिए अनेक सम्वन्ध आते रहते हैं ।

८७३. **कुंआरी कोनी छूटै, व्यायोड़ी छूटज्या ।**
यों तो सगाई होने पर भी जव तक कन्या का विवाह न हो, तव तक सगाई छूट सकती है । लेकिन राजपूतों में एक वार सगाई होने पर उसका छूटना वड़ा कठिन होता था ।

ऐसा उदयपुर की राजकुमारी कृष्णा कुमारी के सम्वन्ध में हुआ था । उदयपुर के महाराणा भीमसिंह की पुत्री कृष्णा कुमारी की सगाई की वात जोधपुर के महाराजा भीमसिंह के साथ हुई थी । लेकिन विवाह से पूर्व ही जोधपुर के महाराजा भीमसिंह का देहान्त हो जाने के कारण महाराणा ने अपनी पुत्री की सगाई जयपुर के महाराजा जगतसिंह के साथ कर दी । जोधपुर के नये महाराजा मानसिंह ने इसका कडा विरोध किया और कृष्णा कुमारी के सम्वन्ध को लेकर वड़ा भारी संघर्ष हुआ । अन्त में झगड़े की समाप्ति के लिए कृष्णाकुमारी को विष का प्याला पीना पड़ा ।

८७४ **कुचां विना की कामणी, मूंछ विना को जवान ।**
श्रै तीनूं फीका लगै, बिना सुपारी पान ।।
विना स्तनों की स्त्री, बिना मूंछ वाला युवक श्रौर विना सुपारी का पान ये तीनों ही फीके लगते हैं ।
यहां 'विना मूंछ के जवान' से तात्पर्य उस पुंस्त्व हीन युवक से है जिसके चेहरे पर मूंछ उगती ही नहीं ।

८७५. **कुछ करणी कुछ करम गत, कुछ भावी का खोट ।**
गीहूं नै उमग्यो फिरै, लिख्या करम में मोठ ।।
जव भाग्य में मोठ ही लिखे हैं तो गेहूँ कहाँ से मिलेंगे ?

सन्दर्भ कथा–एक गरीव वारहठ मोठ की रोटी खाते खाते ऊव गया तो गेहूँ की रोटी खाने के लिए एक वड़ी जागीर वाले ठाकुर के यहाँ पहुँचा । ठाकुर के यहाँ मोठ वहुत वढिया होते थे, इसलिए उसने वारहठ के लिए उन मोठों की रोटी विशेप रूप से वनवाई । वारहठ के सामने जव भोजन की थाली श्राई तो उसमें मोठ की रोटियों को देखकर उसके मुँह से उपरोक्त कहावती–दोहा श्रनायास ही निकल पड़ा ।

८७६. **कुण कीं कै श्रावै, दाणो पाणी ल्यावै ।**
कौन किसके घर श्राता है । लेकिन दाना-पानी बलवान् होता है श्रौर वही मनुष्य को दूसरों के यहाँ खींच कर ले जाता है ।

८७७. **कुणसै जलम का कुणसै जलम में ऊघड़ज्यावै ।**
पता नहीं किस जन्म में किये हुए कर्म किस जन्म में प्रकट हों ।

सन्दर्भ कथा—महा भारत के युद्ध में धृतराष्ट्र के सभी एक सौ पुत्र मारे गये थे । इस पर उसने पश्चाताप करते हुए कहा कि मुझे श्रपने पिछले सौ जन्मों का हाल मालूम है श्रौर इन सौ जन्मों में भी मेरे से ऐसा कोई पाप नहीं बना कि जिसके फलस्वरूप मेरे सौ पुत्र मारे जाएँ । इस पर श्रीकृष्ण ने धृतराष्ट्र से कहा कि यह सही है कि पिछले सौ जन्मों में तुम्हारे से ऐसा कोई पाप नहीं हुश्रा था, लेकिन १०१ जन्म पहले तुमसे ऐसा दुष्कर्म हो गया था, जिसके कारण तुम्हारे सौ पुत्र मारे गये । उस जन्म में भी तुम राजा थे । एक समय तुम्हारे राज्य में वर्षा नहीं हुई श्रौर सारे ताल-तलैया सूख गये । उस समय एक हंस-हंसनी का जोड़ा तुम्हारे पास श्राया । उन्होंने तुम्हें श्रपने एक सौ वच्चे संभलाये श्रौर कहा कि श्रगले साल वर्षा होने पर जव हम यहां श्रायेंगे तो श्रपने वच्चों को ले लेंगे । तुमने उनकी रक्षा का भार श्रपने ऊपर ले लिया श्रौर वे उड़ गये ।

कुछ दिनों वाद तुम्हारे रसोइये ने हंस-हंसी के उन बच्चों में से एक को मार कर तुम्हारे लिए विशेष भोजन वनाया । उस दिन तुम्हें भोजन व[illegible]

स्वादिष्ट लगा और तुमने इसके लिए रसोइये की बड़ी प्रशंसा की। इससे उत्साहित होकर रसोइया तुम्हारे लिए नित्य एक बच्चे को मारने लगा। और जिस दिन सारे बच्चे समाप्त हो गये, उस दिन तुम्हें खाना उतना स्वादिष्ट नहीं लगा। रसोइये से इसका कारण पूछने पर जब उसने हंस के बच्चों को मारने की बात बतलाई तो तुम्हें बड़ा दुःख हुआ, लेकिन फिर क्या हो सकता था। अगले साल जब हंस-हंसी लौटे और उन्हें यह सब ज्ञात हुआ तो उन्होंने तुम्हें शाप दिया कि एक दिन तुम्हारे भी सौ पुत्र मारे जाएँगे और जैसे आज हम रो रहे हैं वैसे ही तुम भी रोओगे। और हंसों का वह शाप इस प्रकार सत्य हो गया।

८७८. **कुतड़ी जाया कूकरिया, अेकै डोरै ऊतरिया।**
कुतिया ने जितने पिल्ले जने, वे सब के सब एक जैसे।
जब किसी औरत की सारी ही औलाद एक जैसी गई गुजरी हो।

८७९. **कुत्तां की टोळी में आटै को दीवो कद खटावै ?**
कुत्तों की टोली में आटे का दीपक कब तक टिके ?

८८०. **कुत्तां कै संप होवै तो गंगाजी न्हायावै।**
कुत्तों में एकता हो तो क्या वे सब गंगा स्नान न कर आयें ?
किसी अच्छे कार्य के संपन्न होने में पारस्परिक द्वेष बाधक होता है।

८८१. **कुत्ता तेरी काण 'क तेरै धणी की।**
लिहाज कुत्ते का नहीं, उसके मालिक का है।

८८२. **कुतिया चोरां रळ गई, पैरा किसका देय ?**
पहरा लगाने वाली कुतिया जब चोरों से मिल गई तब वह पहरा क्या दे ?

८८३. **कुनी कुती को मेळो, अेक घुचरियो तेरो, अेक घुचरियो मेरो।**
कुतिया ब्याई तो बच्चों का मेला लग गया। बच्चे एकत्र होकर घर-घर घूमते हैं और कुतिया के लिए खाने का सामान एकत्र करते हैं तथा उसके पिल्लों को परस्पर बांट लेते हैं कि एक पिल्ला मेरा है, दूसरा तेरा।
जब कई लोग किसी सामान्य कार्य के लिए घर-घर घूम कर पैसा एकत्र करते हैं तो प्रायः यह कहावत कही जाती है।

८८४. **कुत्ती कै पाण गाडो कोनी चालै।**
कुतिया के बूते पर गाड़ा नहीं चल रहा है।

सन्दर्भ कथा—दो बैल एक गाड़े को खींचे ले जा रहे थे। एक गांव के पास गाड़ा रुका तो एक कुतिया गाड़े के नीचे आकर खड़ी हो गई। गाड़ा चलने लगा तो कुतिया भी साथ-साथ चलने लगी। कुतिया को यह वहम हो गया कि गाड़ा उसी के बल पर चल रहा है और वह घमंड से बोल पड़ी कि यह गाड़ा तो मेरे ही बूते पर चल रहा है। दोनों बैल उसकी बात को सुनने

के लिए रुके तो कुतिया ने देखा कि बैलों के साथ ही गाड़े का चलना भी रुक गया है और यों उसका भ्रम दूर हो गया।

८८५. **कुत्ती क्यूं घूंसै ? 'क टुकड़ै खातर।**
कुत्ती क्यों भौंकती है ? टुकड़े के लिए।

८८६. **कुत्ती घुंस घुंस कर मरज्या अर धणी कै भावैं ई कोनी।**
कुतिया भौंक भौंक कर मरी जा रही है और उसके मालिक को इसका कोई खयाल ही नहीं।

८८७. **कुत्तै की पूंछ बारा बरस भाठै तळै दबी रैई, पण नीकळी जद टेढी की टेढी।**
कत्ते की पूंछ बारह वर्षो तक पत्थर के नीचे दबा कर रखी गई, लेकिन जब निकाली गई तो टेढी की टेढी।
किसी का जन्मजात स्वभाव छूटता नहीं।

८८८ **कुत्तौ कुत्तै नै देख कर घूंसै।**
कुत्ता कुत्ते को देख कर भौकता है।
कुछ लोग अपनी जाति वालों को देख कर गुर्राते हैं और कुछ राजी होते हैं।
पद्य—बामण नाई कूकरो, जात देख घुर्राय।
कायथ कागो कूकड़ो, जात देख हरखाय।।

८८९. **कुत्तो सो कुत्तै नै पाळै, कुत्तो सो कुत्तै नै मारै।**
कुत्तो सो भैण घर भाई, कुत्तो सो सासरै जंवाई।
बो कुत्तो सैं में सिरदार, सुसरो फिरै जंवाई लार।
कुत्ते को पालना अथवा मारना दोनों ही बुरे हैं। यदि भाई अपनी बहिन के घर और दामाद ससुराल में रहने लगे तो उनकी कद्र भी कम होकर कुत्ते के समान हो जाती है। लेकिन यदि श्वसुर अपना पेट भरने के लिए दामाद के पीछे लगा रहे तो वह सबसे गया गुजरा माना जाता है।

८९०. **कूदचो मोडियो अर बैकूंठ कै मांय।**
बाबाजी कूदे और सीधे वैकुण्ठ के अन्दर।

८९१. **कुन्नण जमै न जड़ाव पर, जमै सळायन कीट।**
कह जड़ियो सुणज्यो जगत, उड़ै मेह की रीठ।।
जब जड़ाव पर कुन्दन न जमे और सलाइयों पर कीट जम जाए तो जड़िये का कथन है कि वर्षा खूब होगी।

८९२. **कुपढ मिलरचा है।**
सभी अनपढ मिल गये हैं।

सन्दर्भ कथा—एक बार कोई गीदड़ शहर में आ निकला तो उसे एक पुराना लिखा हुआ कागज कहीं पड़ा मिल गया। गीदड़ ने जंगल में जाकर वह कागज अन्य गीदड़ों को दिखलाया और बोला कि हमें शहर में रहने का

यह गीदड़ पट्टा मिला है। इसलिए अब हम सब शहर में चलकर रहेंगे। यह सुनकर गीदड़ों ने उसका बड़ा सम्मान किया और उपहार स्वरूप कहीं से बैल का जूआ लाकर उसके गले में पहना दिया। अब सारे गीदड़ों को अपने पीछे कर, गले में 'हार' पहने और हाथ में गीदड़-पट्टा लिए वह शहर की ओर चला। वे सब शहर के निकट पहुँचे तो उनको आते देख कर कुत्तों का एक झुंड भौंकता हुआ उनकी ओर दौड़ा। सारे गीदड़ भाग चले, लेकिन सरदार के गले में भारी-भरकम 'हार' पड़ा था, अतः वह भाग नहीं सका। कुत्तों ने उसे चारों ओर से घेर लिया। भागते हुए गीदड़ों ने अपने सरदार से पूछा कि इनको गीदड़–पट्टा क्यों नहीं दिखलाते ? इस पर सरदार ने खेद प्रकट करते हुए उत्तर दिया कि किसे दिखलाऊं ? ये तो सभी अनपढ़ हैं। निदान कुत्तों ने उसे चीर डाला।

रू० काम कुत्तां सें पड़ग्यो।

८९३ **कुम्हार की गधी, घर-घर लदी।**

कुम्हार की गधी घर-घर लदती रहती है। उसकी कोई इज्जत नहीं।

रू० भाड़ै की गधी, घर घर लदी।

८९४ **कुम्हार को कुम्हारी पर तो जोर कोनी चालै, गधेड़िये का कान ईंठै।**

कुम्हार का कुम्हारी पर तो वश नहीं चलता अतः वह अपना गुस्सा उतारने के लिए बेचारे गधे के कान ऐंठता है।

रू० खसम की झाळ पूत पर।

८९५. **कुम्हार को गधो मरै, धोवण सती होवै !**

कुम्हार का गधा मरे और धोबिन सती हो !

सर्वथा असंबद्ध और अप्रासंगिक बात।

रू० कुम्हार को गधो मरै, घुरसली भद्दर होवै।

८९६. **कुम्हार खांडी में रांधै।**

कुम्हार स्वयं मिट्टी के बर्तन बनाता है और उसके यहाँ बर्तनों की कोई कमी नहीं होती, फिर भी वह खंडित हंडिया को ही रांधने के काम में लेता है क्योंकि उसे कोई खरीदता नहीं।

रू० कुम्हार कै खांडी ई चढै।

८९७ **कुम्हार गधै चढले, 'क कोनी चढूं', पण फेर आपै ई चढले।**

जो मनुष्य बार-बार कहने पर भी किसी काम को न करे, लेकिन फिर झख मार कर अपने आप करले।

८९८. **कुरज उड़ी कुरळाय, पाछी जै आवै नईं।**
मेह गयो नईं आय, औ लक्खण नईं मेह का।

कुरज नामक पक्षी यदि व्याकुल आवाज करता हुआ उड़ जाए और वापिस न आये तो जानो कि अब वर्षा भी नहीं आयेगी।

८९९. **कुल्लड़ियो भरचो अर आपकै पी'र ।**
कुल्हड़ भरा और पीहर भेजा ।
सन्दर्भ कथा—किसी गाँव में एक निहायत गरीब चमार परिवार रहता था । एक दिन चमार ने परिहास में चमारी से कहा कि मैं एक ऐसी बढिया भैंस लाऊंगा जो नित्य बीस सेर दूध दिया करेगी । चमारी का पीहर उसी गाँव में था, इसलिए उसने उत्तर दिया कि तब तो मैं भी रोज ही दूध-दही के कुल्हड़ भर कर अपने पीहर भेजा करूंगी । उसकी बात सुन कर चमार को गुस्सा आ गया और बोला कि मैं तेरे पीहर के लिए भैंस नहीं ला रहा हूँ । दोनों में तकरार बढ गई । चमार ने चमारी को पीट दिया तो वह चिल्लाने लगी । उसका चिल्लाना सुन कर पास-पड़ोस के लोग आकर इकट्ठे हो गये । जब उन्हें झगड़े का कारण ज्ञात हुआ तो उन्होंने चमार से कहा कि पहले भैंस तो लाओ, पहले से ही क्यों मार-पीट करते हो ? तुम्हारी ऐसी सामर्थ्य ही कहाँ है जो भैंस खरीद कर ला सको ।
सूत न कपास, जुलाहे से लट्ठम-लट्ठा ।

९००. **कुलड़ी में गुड़ कोनी फूटै ।**
कुल्हड़ी में गुड़ नहीं फूटता ।

९०१. **कूकड़ी कै तो ताकलै को डाम ई भारी ।**
मुर्गी को तो तकुए का डाम ही भारी ।
गरीब के लिए थोड़ी सी हानि भी असह्य होती है ।

९०२. **कूकड़ी मांदी अर भैंस की बळि ?**
मुर्गी बीमार और उसके लिए भैंस का बलिदान ?

९०३. **कूकड़ो नईं बोलै तो दिन ईं कोनी ऊगै के ?**
यदि मुर्गा नहीं बोलेगा तो क्या सवेरा ही नहीं होगा ?
सवेरा होने से पूर्व मुर्गा बांग देता है, लेकिन दिन का उगना मुर्गे की बांग पर आश्रित नहीं है ।

९०४. **कूण किसी को देत है, देण हार करतार ।**
जो तोकूं दिल्ली दई, मोकूं दियो हँसार ।।
कोई किसी को देने वाला नहीं, सब को ईश्वर ही देता है । जिसने तुझे दिल्ली दी, उसी ने मुझे हिसार दिया है ।
ददरेवा के चौहान कर्मसिंह को मुसलमान बना कर उसका नाम क्यामखां रखा गया था जो बाद में हिसार का सूबेदार भी बना । दिल्ली के सुल्तान ने जब उससे हिसार छीनना चाहा तो उसने उपरोक्त कहावती दोहा कहा ।

९०५. **कूदिये न कूवा, खेलिये न जूवा ।**
कुएँ के ऊपर से कूदना और जूआ खेलना, दोनों हीं वर्जित हैं ।

९०६. **कूवा खिणाया बावड़ी, छोड़ चल्या परदेस ।**
कुएँ, बावड़ी आदि सब यहीं रह जाते हैं और मनुष्य को सारे ठाट-बाट छोड़ कर इस दुनिया से जाना होता है ।

९०७. **कूवा तेरी मा मरी 'क मरो, जीई 'क जी ई ।**
कुएँ में मुँह डाल कर जैसा कहा जाएगा, वैसी ही प्रतिध्वनि सुनाई पड़ेगी ।

९०८. **कूवै की छायां कूवै में ई रैवै ।**
कुएँ की छाया कुएँ में ही रहती है ।

९०९. **कूवै में पड़ां कोनी तो ई झांक जरूर आवां ।**
तुम्हारे कहने से कुएँ में गिरें नहीं तो भी उस में झांक जरूर लेंगे ।

९१०. **कूवै में पाणी तो घणो ई है, पण काढले सो आपको ।**
कुएँ में पानी तो बहुत है, लेकिन जितना निकाल लें उतना ही अपना है । संसार में अर्थ, ज्ञान आदि तो भरपूर हैं, लेकिन जितना अर्जित कर सकें वही अपना है ।

९११. **कूवै में होयां ई खेळ-कोठां में आवै ।**
कुएँ में पानी होगा, तभी 'खेळ-कोठों' में आएगा ।

९१२. **कूवै सें कूवो कोनी मिलै, पण मिनख सें मिनख तो मिलई ज्या ।**
कुएँ से कुआं नहीं मिलता, लेकिन मनुष्य तो मनुष्य से मिल ही जाता है ।

९१३. **के करूं मेरै घर को घणी, मारी थोड़ी घींसी घणी ।**

सन्दर्भ कथा—एक औरत बड़ी कर्कशा थी । वह घर वालों से ही नहीं, पास-पड़ोस के लोगों से भी सदा लड़ती-झगड़ती रहती । इसलिए सभी उससे रुष्ट रहते थे । एक दिन थोड़ी रात बीते उसके यहां कुछ पाहुने आये तो वह उनसे भी झगड़ा करने लगी । लेकिन वे लोग उसकी आदत को जानते थे अत: उन्होंने दीपक बुझा कर उसे खूब पीटा । हो-हल्ला सुन कर उसके घर के निकट रहने वाला एक साधु एवं उसका पड़ोसी गंगू तेली भी आगया । ये दोनों भी उससे चिढे हुये थे अत: अच्छा मौका देख कर उन्होंने भी अपने हाथ हल्के किये । कुछ देर बाद जब उसका पति घर आया तो वह फिर पाहुनों को गालियां देने लगी । इस पर उसके पति ने भी उसकी पिटाई की और उसे घसीट कर घर के बाहरी चौक में पटक दी । वह रात भर वहीं पड़ी रही और सवेरे पास-पड़ोस की औरतों को आप बीती सुनाते हुए बोली -

बात कहूं तो बातां झूठी, दियो नंदा कर पांवणां कूटी ।
फेर आग्यो मोडियो स्यामी, वो भी दो दड़ादड़ धामी ।
फेर आग्यो गांगलो तेली, वो भी दो दड़ादड़ देली ।
के करूं मेरै घर को धणी, मारी थोड़ी घींसी घणी ।।

९१४. **के करै नर बांकड़ो, जद थैली को मुँह सांकड़ो !**
धन के अभाव में योग्य और प्रतिष्ठित व्यक्ति भी असहाय और असमर्थ बन जाता है।

९१५. **के करै बापड़ी बिल्ली धोळी !**
सफेद बिल्ली का घर में होना शुभ माना जाता है, लेकिन जब अन्य चार अशुभ लक्षण साथ में हों, तब अकेली बिल्ली क्या करे ?

लच्छण अेक कुलच्छण च्यार, भुग्गो बिछायां बैठी नार।
आगै अरंड पिछोकड़ पोळी, के करै बापड़ी बिल्ली धोळी।

९१६. **के करची राजा की राणी, हाथ पखाळ्या नीं वैं'तै पाणी।**
राजा की रानी होकर भी यदि दान-पुण्य आदि न किया तो क्या किया ? सम्पन्न होकर भी यदि सार्वजनिक हित के कार्य न करे तो वह संपन्नता किस काम की ?

९१७. **के कहूं कही न जाय, नौ भैंस अर दो रोटी कुत्ती लियां जाय।**
क्या कहूँ ! कुछ कहने में नहीं आता, नौ भैंसें और दो रोटियों को कुतिया लिये जा रही है।

संदर्भ कथा–(१) एक किसान भैंसें खरीदने के लिए किसी दूसरे गाँव जा रहा था। उसके पास नौ भैंसें खरीद सकने लायक रुपये थे। उसने राह में खाने के लिए गुड़ और दो रोटियां अपने अंगोछे के पल्ले बांध रखी थीं। रास्ते में किसी धर्मशाला में ठहरा और शौच के लिए बाहर जाने लगा तो रुपयों वाली पोटली को भी अंगोछे में लपेट कर आले में रख गया। पीछे से एक कुतिया आई और गुड़ व रोटियों के लालच में अंगोछे को ले भागी। इसे देख कर किसान के मुँह से उपरोक्त कहावती वाक्य निकल पड़ा।

रू० अक्कल नईं ही फैम ही, फैम सें अक्कल लागी।
दो रोटी अर सौ मण गीहूँ, गंडकड़ी ले भागी।।

सन्दर्भ कथा–(२) एक राजा शिकार खेलते हुए जंगल में भटक गया। संगी-साथी सब पीछे छूट गये। प्यास के मारे राजा का दम निकलने लगा। तभी एक ग्वाले ने अपनी 'लोटड़ी' से राजा को पानी पिलाया। राजा ने प्रसन्न होकर ग्वाले को एक पीपल के पत्ते पर ६० गाँव लिख कर दे दिये। ग्वाला बड़ा प्रसन्न था कि वह अब ६० गाँवों का स्वामी बन गया है। उसने पत्ते को एक ढेले के नीचे रख दिया और सो गया। लेकिन पत्ते को बकरी चर गई। जब वह जगा और उसे यह बात मालूम हुई तो उसने दूसरे ग्वाले से कहा—

के कहूँ कुछ कह्यो न जाय, कह्यां बिना पण रह्यो न जाय।
मन की बात मन में रही, साठ गाँव बकरी चर गई।।

९१८. के गूजर को दायजो, कै बकरी कै भेड़ ।

गूजर का दहेज क्या ? या तो बकरी या भेड़ ।

९१९. के छठ की चोदस करै है ?

कौनसी षष्ठी से चतुर्दशी कर देगा ।

संदर्भ कथा—जूये में युधिष्ठिर के हार जाने के बाद यह तय हुआ था कि पाण्डव १२ वर्ष तक वन में रहें एवं एक वर्ष अज्ञातवास में । यदि अज्ञातवास की अवधि में वे पहचान लिये जाएँ तो फिर उसी तरह १३ वर्ष काटें । पाण्डवों ने १२ वर्ष वन में बिता दिये और १३वां वर्ष भी छद्मवेश में राजा विराट के यहाँ बिता रहे थे । १३वां वर्ष भी लगभग बीत चुका था कि कौरवों को इसकी भनक मिल गई । त्रिगर्त के राजा सुशर्मा ने उन से मिल कर विराट पर चढाई की । पाण्डवों ने विराट का साथ दिया । यद्यपि विजय विराट की हुई लेकिन पाण्डव पहचान लिये गये । उस दिन षष्ठी तिथि थी और अज्ञातवास का वर्ष चतुर्दशी को पूरा होता था । लेकिन विजयी पाण्डवों ने सुशर्मा को इस बात के लिए विवश कर दिया कि वह उसी दिन चतुर्दशी मानले ।

पद्य—घर वर तिय बेटा जणै, खावै घी अजवाण ।
जो छठ की चौदस करै, सो बेटा परवांण ॥

९२०. के जेठ कै सा'रै बेटी जाई है ?

क्या जेठ के भरोसे बेटी जनी है ?

सन्दर्भ कथा – दो भाई साथ-साथ रहते थे । छोटे भाई की बेटी के विवाह का प्रसंग आया तो बड़े भाई की वहू झगड़ा करने लगी । बेचारी ननद अपने दोनों भाइयों को बुलाने इधर-उधर भाग-दौड़ करने लगी । देवरानी का पति आया तो उसने उससे कहा कि मैंने जेठ के भरोसे बेटी नहीं जनी है । चकले को हटा कर खाई खोल दो और विवाह का सारा सामान ले आओ—

दौर जिठाणी लड़बा लागी, नणद फिरै छै भागी भागी ।
खोलो चकळो काढो खाई, के जेठ कै सा'रै बेटी जाई ॥

९२१. के तातै पाणी घर बळै है ?

गर्म पानी से कौनसा घर जल जायेगा ?

रू० के फूंक सें पहाड़ उड़ै है ?

९२२. के दड़ में 'मे बरस्यो है ?

कौनसा दड़ में मेह बरसा है ?

यद्यपि घर में पुत्र या पौत्र का जन्म बड़ा आल्हादकारी माना जाता है तथापि किसान इससे भी अधिक महत्त्व 'दड़' में मेह बरसने को देता है क्योंकि इस मरु भूमि में वर्षा ही उसके पूरे परिवार के जीवन का आधार होती है।
दड़ = खेत को पहले बिना बीज के ही जोतते हैं और यदि यह पूर्व-पश्चिम जोता गया हो तो दुबारा इसे उत्तर-दक्षिण जोत कर इसमें ग्वार बो देते हैं। इससे खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ जाती है। इसे दड़ कहते हैं। इस प्रकार तैयार की गई भूमि में वर्षा होने पर फसल बहुत अच्छी होती है।

सन्दर्भ कथा—एक जाट के घर बहुत दिनों बाद पौत्र का जन्म हुआ। मां-बाप को तो इससे बड़ी प्रसन्नता हुई लेकिन दादा ने कहा कि घर में पौत्र का जन्म हुआ है, यह तो खुशी की बात है, लेकिन कोई 'दड़' में मेह थोड़े ही बरस गया है। बच्चे की मां को यह बात बहुत अखरी और वह अपने पति से कह कर श्वसुर से अलग हो गई। संयोग से अगले २-३ वर्षों में लगातार अकाल पड़े और जाट दम्पत्ति के पास खाने के लिए एक दाना भी न रहा। वे अपने बच्चे को लेकर रोटी-रोजी की तलाश में गांव छोड़ कर निकल पड़े।

चलते-चलते वे एक साधु के मठ के पास पहुँचे। बच्चा भूख के मारे बिलबिला रहा था और उन दोनों के पाँव भी आगे बढने से जवाब दे रहे थे। मां-बाप ने सोचा कि ऐसी हालत में बच्चा अधिक समय तक जीवित नहीं रह सकेगा, यदि इस साधु को देदें तो इसकी प्राण-रक्षा तो हो जाएगी। यों सोच कर उन्होंने थोड़े से अनाज के बदले में बच्चे को साधु के हाथों बेच दिया और आगे बढ़ गये। साधु ने सोचा कि बड़ा होने पर इसे चेला बना लेंगे। लेकिन लड़के का दादा उनके पीछे-पीछे आ रहा था। उसने साधु को दुगना अनाज देकर बच्चे को वापिस ले लिया और घर लाकर उसे अच्छी तरह खिलाने-पिलाने लगा।

अगले साल अच्छी वर्षा होने पर जाट जाटनी बड़ी हीन दशा में घर लौटे। जाटनी तो सूख कर कांटा हो गई थी। जाट के बाप ने अपने बेटे से पूछा कि बच्चा कहां है तो उसने उदास होकर कहा कि वह चल बसा। जाटनी भी सिसक-सिसक कर रोने लगी। इस पर बूढे ने दोनों से कहा कि यह क्यों नहीं कहते कि अमुक साधु को पांच सेर अनाज के बदले बच्चे को बेच गये थे। तभी दादा ने पोते को पुकारा तो वह हँसता-खेलता वहां आ गया। दोनों के सिर शर्म से झुक गये, लेकिन उन्हें दड़ में मेह बरसने के महत्त्व का भी पता चल गया।

९२३. के दोराणी आगड़ी, के जिठाणी घाट।

देवरानी और जेठानी में कोई भी एक दूसरी से कम नहीं।

६२४. के पूछै पंडत जोसी, पून फिरयां 'मे होसी ।
पंडित और जोशी को क्या पूछते हो ? हवा का रुख पलटने से वर्षा होगी ।

६२५. के बाड़ पर सोनो सूकै ?
कौन सा बाड़ पर सोना सूख रहा है ?
ऐसी कौनसी बहुतायत है ?
रू० के छान पर सोनो सूकै ?

६२६. के मोठां को पीसणो, के सासु को रूसणो ।
मोठों का पीसना क्या और सास का रूठना क्या ?
दोनों ही साधारण बातें हैं ।

६२७. के रोऊं ग्रे जणी, तूं ग्रांगी दी न तणी ।
माँ की मृत्यु पर बेटी कहती है कि तुझे क्या रोऊं ? तूने तो मुझे दहेज में ग्रांगी या तनी कुछ भी तो नहीं दी ।

६२८. के लेग्या राव ग्रर के लेग्या ग्रमराव ?
इस संसार से जाते समय कोई कुछ भी साथ नहीं ले जा पाता ।

६२९. के है भोळी बातां में, जूती लेल्यो हाथां में ।
भोली-भाली बातों में क्या रखा है ? अब तो यही उचित है कि जूतियों को हाथों में लेकर तेजी से भाग चलो ।
विपत्ति के समय जब बचाव का कोई उपाय न हो तो वहाँ से भाग निकलना ही ग्रच्छा है ।

६३०. कैंकी जाई कैंका देव धोकै ।
पता नहीं किसके यहाँ जन्मी लड़की को विवाह के बाद किस घर जाकर उनके देवता धोकने पड़ें ।

६३१. कैं घड़ बैठै ऊंट ?
क्या पता ऊंट किस करवट बैठे ?

सन्दर्भ कथा—(१) एक दिन एक ऊंट माली की बाड़ी में घुस गया । कुछ बूटे उसने खाये, कुछ तोड़ डाले । माली की लड़की उस समय बाड़ी में थी । उसको बड़ा रंज हुग्रा, लेकिन सामने ही कुएँ पर कुम्हार की लड़की खड़ी थी । वह खिलखिला कर हँसने लगी तो माली की लड़की ने कहा—

> गड़ गड़ हँसै कुम्हार की, माळी का चर रैयो बूंट ।
> तूं के हँसै कुम्हार की, कैं घड़ बैठै ऊंट ।।

इस पर कुम्हार की लड़की ने उत्तर दिया कि ऊंट हमारे कौन से बूटे खायेगा ? हम तो ग्राग पर खेती करती हैं । लेकिन संयोग से ऊंट बाड़ी से निकल कर कुम्हार के ग्रांवे की तरफ जा निकला जहां कुम्हार ने बहुत सारे

वर्तन तैयार करके पकाने के लिए रख छोड़े थे। ऊंट वही लोट लगाने लगा जिससे कुम्हार के सारे वर्तन फूट गये।

(२) एक कुम्हारी और एक मालिन ने हाट जाने के लिए साझे पर ऊंट किराये लिया। एक तरफ कुम्हारी ने अपने वर्तन भर लिये और दूसरी तरफ मालिन ने शाक सब्जियां भर ली। चलते-चलते ऊँट शाक सब्जियों में मुँह मार लेता तो कुम्हारी हँसने लग जाती। इस पर मालिन ने कुम्हारी से कहा कि ऊंट मुझे हानि पहुँचा रहा है तो तुम हँस रही हो, लेकिन क्या पता ऊंट किस करवट वैठे ? और आगे चल कर जव ऊंट वैठा तो वैठते ही लोटने लगा, जिससे कुम्हारी के सारे वर्तन फूट गये। अव मालिन के हँसने की वारी थी।

९३२. **कै कमावै वेटो, कै कमावै फेंटो।**

या तो वेटा कमाता है अथवा दुकान पर ग्राहकों की भीड़भाड़ रहे तो उससे कमाई होती है।

९३३. **कै कोडां, कै गोडां।**

दीवानी मुकद्दमे दीर्घ काल तक चलते रहते हैं। कई वार किसी एक पक्ष के पास अर्था-भाव होने से अथवा अदालतों एवं वकीलों आदि के घर चक्कर लगाते-लगाते थक जाने पर ही मुकद्दमे का अन्त आता है।

९३४. **कै खागी पल्लू पापणी, कै गिटग्यो कोट किलूर।**
जावै सो आवै नहीं, यो ही वड़ो फितूर॥

इस संदर्भ की एक वड़ी प्रसिद्ध कथा है जिसके अनुसार कोट किलूर के राजा को मजवूरन अपनी लड़की पल्लू की शादी किसी नवाव के साथ करनी पड़ी। लेकिन सुहाग रात को ही नवाव को भोजन मे विष देकर मार डाला गया। इस पर आप के प्रति पल्लू के मन मे प्रतिहिंसा की भावना भड़क उठी और जव उसके वाप ने उसके भाइयो को महल में पता लगाने के लिए भेजा तो पल्लू ने वारी वारी से सभी को मार डाला।

९३५. **कै गीतड़ा, कै भींतड़ा।**

मनुष्य की कीर्ति या तो गीतों से वनी रहती है अथवा भवन निर्माण से। लेकिन इन दोनो में भी गीतों को विशिष्टता प्रदान की गई है—

रह ज्यासी गीतड़ा, ढह ज्यासी भीतड़ा।

९३६. **कै जागै जोगी, कै जागै भोगी।**

रात्रि को या तो योगी योग साधना के लिए जगता है अथवा भोगी काम-वासना की पूर्ति हेतु जगता है।

६३७. कै जागै बेटी को बाप, कै जागै जींकै घर में सांप।
रात्रि को या तो उस व्यक्ति को चिंता के मारे नींद नहीं आती जिसके विवाह-योग्य बेटी हो अथवा उस व्यक्ति को, जिसके घर में सांप हो।

६३८ कै ठगावै रोगी, कै ठगावै भोगी।
या तो रोगी ठगाता है अथवा भोगी ठगाता है।

६३९. कै डरिये काळां, कै डरिये बाळां।
या तो कालों (काले बालों अथवा काले नागों) से डर कर रहना चाहिए अथवा अपनी संतान से।
मनुष्य अपने पर तो नियन्त्रण रख सकता है लेकिन संतान पर नियन्त्रण रख पाना कठिन होता है। कहावत है—आपो रहज्या, जापो कोनी रैवै।

६४०. कै तो गैली सासरे जावै ई कोनी अर जावै तो पूठी याबड़ै ई कोनी।
या तो पगली ससुराल जाये ही नहीं और चली जाए तो फिर लौटे ही नहीं।
रू० कै तो गैली पैरै ई कोनी अर पैरै तो खोलै ई कोनी।

६४१. कै तो घर को नास करूं, कै कात्यो कूत्यो कपास करूं!
या तो घर का विनाश करूं अथवा सारे काते-कताये को कपास करूं!
दोनों तरफ हानि।

६४२. कै तो घोड़ो घोड़यां में, नईं तो चोर ले ही ग्या।
या तो घोड़ा घोड़ियों में चला गया है नहीं तो उसे चोर ले ही गये हैं।
रू० कै तो भैंसो भैंस्यां में, कै कसाई कै खूंटै!

६४३. कै तो डालियो कोनी, कै कसार को लाडू कोनी।
या तो आज डालियां नहीं, या कसार का लड्डू नहीं।
इस संदर्भ की एक छोटी सी कथा भी प्रचलित है।

६४४. कै तो तिल कोरा भला, कै ल्यो तेल कढाय।
अधबिचली कूलर बुरी, तेल तिलां सें जाय॥
या तो कोरे तिल रख लेना ठीक है, नहीं तो उनका तेल कढ़वा लेना चाहिए। अधबिचली कूलर बुरी होती है जिसमें तेल और तिल दोनों से ही वंचित होना पड़ता है।

६४५. कै तो नांव सपूतां, कै नांव कपूतां।
या तो नाम सपूतों से या नाम कपूतों से।
सपूत अपने बाप का नाम उजागर करते हैं और कपूत बदनाम करते हैं। लेकिन बदनाम करने पर भी नाम तो हो ही जाता है—बदनाम भी होंगे तो क्या नाम न होगा?

६४६. कै तो नुहाया दाई माई, कै नुहासी पांच भाई ।

या तो जब जन्मे थे तब दाई ने नहलाया था या जब मरेंगे तब पांच भाई नहलाएँगे ।

उस अघोरी एवं गलीज व्यक्ति के प्रति व्यंग्य, जो जिन्दगी भर स्नान ही नहीं करता ।

संदर्भ कथा—दो समधी बहुत समय बाद परस्पर मिले । दोनों ही बड़े गलीज थे । नहाने-धोने के विषय में बात छिड़ी तो एक ने कहा—साल में दो बार नहाता हूँ; एक बार होली पर और दूसरी बार दीवाली पर । यह सुन कर दूसरे ने अचंभे में भर कर कहा कि तुम तो पानी के मेंढक ही बन गये जो एक साल में दो बार नहा लेते हो । मुझे तो जन्म के समय दाई ने नहलाया था और मरने पर पाँच भाई-बन्धु नहलाएँगे ।

६४७. कै तो पेट ई पळै, क बेटा ई पळै ।

नन्हें शिशु की माँ को खाने-पीने का बड़ा ध्यान रखना होता है । यदि वह जीभ के स्वाद के वशीभूत होकर चाहे जो खा लेती है तो उसका विकार दूध में उतर आता है जो बच्चे के लिये संकट का कारण बन जाता है ।

६४८. कै तो फूड़ चालै ई कोनी, जै चालै तो नौ घर हालै ।

या तो फूहड़ चलती ही नहीं और जब चलती है तो पास-पड़ौस के घरों को भी हिला डालती है ।

रू० कै तो पैल बळद चालै कोनी, जै चालै तो सात गाँव की सींव फोड़ै ।

६४९. कै तो बाप बताणो पड़सी, नईं मोसर करणो पड़सी ।

या तो बाप बतलाना पड़ेगा अन्यथा मौसर करना पड़ेगा ।

संदर्भ कथा—किसी युवक का बाप बहुत दिनों तक घर नहीं लौटा तो पंचों और बिरादरी वालों ने उससे कहा कि यदि तुम्हारा बाप जिन्दा है तो बतलाओ कि वह कहाँ है और यदि मर गया है तो उसका मौसर करो । दोनों में से एक काम तो अवश्य करना पड़ेगा ।

रू० कै तो बाप बतासी, नईं सराध करसी ।

६५०. कै तो राखै राम, कै राखै डाम ।

बीमार होने पर ऊंट को या तो राम ही बचाता है अथवा डाम ही ।

ऊंट की अनेक बीमारियों पर उसे डाम लगाया जाता है अर्थात् लोहे को गर्म करके उससे दागा जाता है ।

६५१. कै तो लड़ै सूरमा, कै लड़ै गिंवार ।

या तो शूरवीर लड़ता है या गँवार लड़ता है ।

रू० कै लड़ै लड़ायतो, कै लड़ै अणजाण ।

६५२. कै तो हर, कै भर।

या तो इस पार या उस पार।

६५३. कै मारै वादळ की घाम, कै मारै वैरी को जाम।

या तो वदली की घाम जान लेवा होती है या वैरी का पुत्र।

६५४. कै मोड्यो बांधै पागड़ी, कै रहै उघाड़ी टाट।

वावाजी वांधें तो सिर पर पगड़ी ही वांधें नहीं तो नंगे सिर ही रहें।

रू० कै तो सरव सुहागण, कै फरड़क रांड।

६५५. कैयां कातूं सासूजी ?

सासजी मैं कैसे कात सकती हूँ ?

काम चोर व्यक्ति काम न करने का एक न एक वहाना ढूँढ ही लेता है।

संदर्भ कथा—सास ने वहू से सूत कातने के लिए कहा तो वहू वोली कि सासजी, आज तो पहल 'पड़वा' (प्रतिपदा) है, इसलिए आज कैसे सूत कात सकती हूँ ? अगले दिन सास ने फिर सूत कातने के लिये वहू से कहा तो वहू वोली कि आज तो भैया दूज है, अतः आज भला कैसे सूत कात सकती हूँ। इसी प्रकार वह कजली तीज, करवा चौथ, नाग पंचमी, 'छाना छठ', सीतला सप्तमी, दुर्गा अष्टमी, रामनवमी, दशहरा, निर्जला एकादशी, वत्सवारस, धन तेरस और रूप चौदस आदि कह कर टालती रही। पूर्णिमा को होली एवं अमावस्या को दीवाली वतला कर सूत कातने में असमर्थता प्रकट कर दी और इस प्रकार वहू ने कभी सूत कातने का अवसर नहीं आने दिया।

६५६. कैर को ठूंठ टूटज्या, पण लुळै कोनी।

कैर का ठुंठ टूट भले ही जाए, भुकता नहीं।

उजड्ड आदमी नुकसान भले ही उठाले, लेकिन अपने दुराग्रह को नहीं छोड़ता।

६५७. कैर, वोर, पीलू पकै, नीम आम पक जाय।
दूध दही रस कस घणां, कातिक साख सवाय।

कैर, वेर, पीलू, नीम और आम अधिक फलें तो दूध-दही आदि रस-कस पदार्थों की वहुलता रहेगी और कातिक में फसल सवाई होगी।

६५८. कै रूवां, कै धूवां, कै दूवां।

जाड़ा रूई से, आग तापने से अथवा दो जनों के मिल कर सोने से दूर होता है।

९५९. कै रोसी वोहरो, कै वोहरै की जोय ।
गैरो साटो देय कर, पतळा मांडा पोय ।
मुफ्त का माल उड़ाने वाला व्यक्ति जो वोहरे से रुपये उधार लाया है, अपनी घरवाली से कहता है कि या तो वोहरा रोयेगा या वोहरे की स्त्री रोयेगी, अपने तो चकाचक माल उड़ने दो ।
रू० खाओ वेटा घी अर खांड, कै रोसी वोरो कै वोरै की रांड ।

९६०. कैवै खेत की, सुणै खळै की ।
कहते कुछ है, सुनता कुछ है ।

९६१. कैवै जिको कुहावै ।
जो दूसरो को अपशब्द कहता है, वदले में उसे भी अपशब्द सुनने पड़ते हे ।
रू० कोई नै रै कवै जिको तूं कुहावै ।

९६२. कै सहरां, कै डहरां ।
मनुष्य या तो शहर मे कोई धंधा या मजदूरी करके जीवन निर्वाह कर सकता है अथवा उपजाऊ खेत पर निर्भर रह कर ।

९६३. कै सुणै जणी, कै सुणै धणी ।
औरत के मन की वात या तो उसकी माँ सुनती है अथवा उसका पति ।

९६४. कै सोवै राजा को पूत, कै सोवै जोगी अवधूत ।
या तो राजा का वेटा निश्चिन्त होकर सोता हे या अवधूत जोगी ।

९६५. कै हंसा मोती चुगै, कै लंघण कर ज्याय ।
या तो हंस मोती चुगते है नही तो लंघन ही कर जाते है ।

९६६. कोई कनै नो म्हौर होसी, जिको ई तेरै जीमण नै आसी ।
जिसके पास नौ मोहरे होंगी, वही तुम्हारे घर भोजन करने आयेगा ।

सन्दर्भ कथा—एक साधु ने वर्षो तक भिक्षा मांग कर जो कुछ जोड़ा था उससे सोने की ९ मोहरे खरीद ली थी । इन मोहरों को वह सदैव अपनी जटा में छिपाये रखता था । हर सवेरे जव वह शौच के लिए जंगल में जाता तव एक उनको वार गिनकर और सम्भाल कर फिर जटा में बांध लिया करता । एक दिन एक जाट ने ये मोहरें देखलीं और वह वावाजी की कुटिया पर जाकर उन्हें अपने भोजन करने के लिये घर लिवा लाया । वावाजी को गाढ़ी खीर परोसी गई, लेकिन वावाजी भोजन करने को तैयार हुये तो जाट अपनी औरत को डाँट कर पूछने लगा कि मैंने अभी अभी ९ मोहरे यहां रखी थी, वे कहाँ गईं ? औरत साफ नट गई तो वावाजी की वारी आई और उनकी जटा से ९ मोहरे वरामद हो गईं । वावाजी खिन्न-मन, विना भोजन किये ही वहां से चले गये । कुछ समय वाद वही जाट उन वावाजी को पुनः भोजन का निमन्त्रण देने उनकी कुटिया पर गया तो वावाजी वोले—जिसके पास नौ मोहरे होंगी वही तुम्हारे घर जीमने जाएगा ।

९६७. **कोई की जवान चालै तो, कोई का हाथ चालै ।**
किसी की जवान चलती है तो किसी के हाथ चलते हैं ।
कोई गाली निकालता है तो कोई वदले में उसे पीट देता है ।

९६८. **कोई कै वेंगण वायला, कोई कै वेंगण पच्च ।**
कोई कै वादी करै, कोई कै जावै जच्च ।।
एक ही वस्तु किसी के लिये हित कर होती है तो किसी के लिये अहितकर ।

९६९ **कोई कैवै रामदेवजी, कोई कैवै पव्वा ।**
दो-दो रोटी वांट लेई, आप-आप कै ढव्वां ।
कोई रामदेवजी के नाम पर तो कोई पाबूजी के नाम पर अपनी आजीविका कमाता है ।
सब किसी न किसी हीले से रोटी कमाते हैं ।

९७०. ***कोई को घर बळै, कोई तपै ।***
किसी का घर जल रहा है और कोई उससे आग ताप रहा है ।

९७१. **कोई खाय कर राजी होवै तो कोई खुवाय कर राजी होवै ।**
कोई किसी दूसरे के यहां खाना खाकर राजी होता है, लेकिन कोई अपने यहाँ दूसरों को खिलाकर प्रसन्न होता है ।

९७२. **कोई गावै होळी का तो कोई गावै दिवाळी का ।**
कोई होली के गीत गा रहा है तो कोई दीवाली के ।

९७३. **कोई चालो चाकरी, ताज्यो तुरक त्यार ।**
कोई भी चाकरी के लिये जाये, ताजिया तुर्क उसके साथ चलने के लिये हर घड़ी तैयार रहता है ।
कोई आदमी भले ही कोई काम करे ताजिया तुर्क अपनी टांग अड़ाने के लिए वीच में आ धमकता है ।

९७४. **कोई तातो थूकै जिकै न राख ।**
जो कोई गर्म थूके, उसे रखलो ।

संदर्भ कथा—किसी सेठ के यहां एक नौकर रहता था जो वड़ा ही अड़ियल था । सेठ उसे किसी प्रकार निभाये जा रहा था, लेकिन वह जाने के लिये कोई न कोई वहाना ढूंढ रहा था । एक दिन वह सेठ के हाथ धुलवा रहा था कि उसने जानवूझ कर सेठ के हाथ पर थूक दिया । सेठ को वड़ा बुरा लगा, लेकिन उसने अपने गुस्से को दवाते हुए नौकर ने कहा, वाह ! तुम्हारा थूक तो वड़ा शीतल है । वस, नौकर को वहाना मिल गया । उसने उत्तर दिया कि जो गर्म थूके उसे रखलो, मैं तो यह चला । यों कहकर वह वहां से चल दिया ।

९७५. **कोई ना देखो, पण राम तो देखै है ।**
भले ही और कोई न देखे, लेकिन भगवान् तो सब कुछ देखता है ।

संदर्भ कथा—एक बार किसी साधु के पास दो युवक शिष्य बनने की इच्छा से आये । साधु ने उनकी परीक्षा लेनी चाही और दोनों को एक-एक कबूतर देकर उनसे कहा कि इनको ऐसे स्थान पर मार कर ले आओ जहाँ कोई न देखता हो । दोनों युवक कबूतरों को लेकर अलग-अलग दिशा में चल पड़े । एक ने तो वृक्षों से घिरा एक जन शून्य स्थान देखा और उन वृक्षों की ओट में जाकर कबूतर की गरदन मरोड़ लाया । लेकिन दूसरा वैसा न कर सका । वह कबूतर को सही-सलामत लेकर साधु की कुटया पर लौट आया ।

पहले युवक ने साधु को विश्वास दिलाते हुये दृढ़ता पूर्वक कहा कि मैंने कबूतर को ऐसे स्थान पर ले जाकर मारा है, जहाँ कोई नहीं देखता था । लेकिन दूसरे ने अपनी मजबूरी प्रगट करते हुये कहा कि मुझे कोई ऐसा स्थान नहीं मिला, जहां कोई न देखता हो । और कोई देखे या न देखे, लेकिन भगवान् की आंखें मुझे साफ देख रही थीं । दोनों की बात सुनकर साधु ने पहले युवक से कहा कि तुम मेरे शिष्य बनने के सर्वथा अयोग्य हो, अतः यहां से चले जाओ । फिर उसने दूसरे से कहा कि तुम स्वयं ज्ञानी हो और भगवान् को घट घट में देखते हो, अतः तुम्हें किसी का शिष्य बनने की आवश्यकता ही नहीं है, और यों कहकर उसे भी विदा कर दिया ।

९७६. **कोई निरखै कांच कांगसी, कोई निरखै मणियारी ।**
कोई कांच-कंघी देख रहा है तो कोई उन्हें बेचने वाली मनिहारी पर टकटकी लगाये है ।

९७७. **कोई मा कै पेट सें सीख कर कोनी आवै ।**
कोई भी आदमी माँ के पेट से सीख कर नहीं आता ।
काम करने से ही मनुष्य प्रवीण होता है ।

९७८. **कोई मानै नी तानै नी, मैं लाडै की भूवा ।**
कोई माने न ताने, मैं दूल्हे की बूआ ।
ख्वाहमख्वाह रिश्ता जोड़ कर अपनी प्रमुखता जताना ।

९७९. **कोई सागै आयो न कोई सागै जावै ।**
संसार में न कोई किसी के साथ आया है, न साथ जाएगा ।

९८०. **कोट कडुंबो खीचड़ो खग बावां की काछ ।**
इतणा तो जाडा भला, छाती बोरो छाछ ।
उपरोक्त सारी चीजें पुष्ट एवं मोटी होनी चाहिएँ ।

९८१. **कोट की सोभा कांगरा ई कह देवै ।**
किले की शोभा तो उसके कंगूरे ही बतला देते हैं ।

९८२. **कोट कै लैर कर अर मंदर कै आगै कर ।**
किले के पीछे से और मन्दिर के आगे से निकलना चाहिए ।
रू० गढ़ की अगाडी अर घोड़ै की पछाड़ी मारै ।

९८३. **कोठै होवै सोई होठै आवै ।**
जो बात पेट में होती है, वह होठों पर आये बिना नहीं रहती ।

९८४. **कोडी कुटावै भोडी ।**
कौड़ी ही सिर फुड़वाती है ।
अर्थ ही सारे अनर्थों की जड़ है ।

९८५. **कोडी-कोडी करतां भी लंक लागै ।**
कौड़ी-कौड़ी जोड़ने पर भी बड़ी राशि जमा हो जाती है और कौड़ी-कौड़ी खर्च करने से सब समाप्त हो जाता है ।

९८६. **कोडी साटै हाथी जा, 'क कोनी लेणो; लाख में जावैगो जद लेवांगा ।**
एक कौड़ी में हाथी बिक रहा है तो नहीं लेना है, जब लाख रुपये में बिकेगा तब लेंगे ।

संदर्भ कथा—एक सेठ किसी समय बड़ा सम्पन्न था, लेकिन धीरे-धीरे उसकी सारी सम्पत्ति समाप्त हो गई और स्थिति यहां तक बिगड़ी कि दो जून खाने के भी लाले पड़ गये । उन्हीं दिनों उस गाँव में से एक हाथी गुजरा । हाथी का मालिक उसे एक कौड़ी में भी बेचने को तैयार था । सेठ के बेटे ने आकर अपने बाप से कहा तो सेठ बोला—एक कौड़ी का हाथी हमें नहीं लेना है; जिस दिन हम इस योग्य हो जायेंगे कि लाख रुपये देकर भी हाथी खरीद सकें, उस दिन एक रुपये देकर भी हाथी खरीद लेंगे । हम उस समय उसे अच्छी तरह खिला-पिला भी सकेंगे और हमारे घर के दरवाजे पर बंधा हुआ हाथी अच्छा भी लगेगा । यदि एक कौड़ी में आज हाथी खरीद भी लेंगे तो न हम उसे खिला-पिला सकेंगे और न वह हमारे दरवाजे पर शोभा देगा ।

९८७. **कोढ तो थी ही, पांव और होगी ।**
कोढ तो पहले से थी ही, उसमें खाज और हो गई ।

९८८. **कोढिये को मन सुवासणी पर विटळै ।**
कोढी का मन सुआसिनों पर चलता है ।
रू० कोढिये को काड़ सुवासणी पर उठै ।

९८९. **कोढिये को दाणों ठाकुर दुआरै क्यूं ?**
कोढी का दाना ठाकुर द्वारे क्यों चढ़े ?
पापी का पैसा सत्कर्म में कब लगे ?

९९०. कोथळी से टक्का होवै जितरा ई नीसरै ।
थैली मे जितने टके डाले गये है, उतने ही तो निकलेगे ।
शरीर मे जितने श्वास डाले हुये है, उतने ही आयेगे ।
ऐसा विश्वास है कि आदमी की जिन्दगी श्वासों की गिनती के अनुसार होती है । इसलिए लम्बे श्वास लेने से आयु बढ़ती है ।
रू० कोथळी मे आटो होवै, जितरी ई रोटी होवै ।

९९१. कोथळी मे न्याणो तो बेटो परणीजे काणो ।
रुपये खर्च करने पर काना बेटा भी व्याहा जाता है ।
रू० (१) कोथळी मे टक्का तो अे रही मक्का ।
(२) नगद न्याणा, बीन परणीजै काणा ।

९९२. कोपीन रांड ई पोसाक में गिणी जावै है के ?
क्या क्षुद्र लंगोटी की गिनती भी पोशाक मे होती है ?

९९३. कोयलां की दलाली में हाथ काळा ।
कोयलों की दलाली मे हाथ काले ।

९९४. कोस तो चाली ई कोनी अर तिसाई भी होगी ।
कोस भर तो चली ही नहीं और प्यासी भी हो गई ।
रू० पैंड तो चाली ई कोनी अर काका तिसाई ।

९९५. क्यां पर ल्याया कंचनी, क्यां पर ऊंट पचास ?
गैणै मे ल्याया झालरो, च्यारूं भाई साथ ।
सार स्वल्प और आडम्बर बेशुमार ।
संदर्भ कथा—किसी गॉव मे चार भाई रहते थे । एक भाई के लड़के का विवाह निश्चित हुआ तो बारात बड़ी धूमधाम से चली । पचास ऊंटों पर पूरे एक सौ आदमी सवार, नाचने गाने के लिये पातुर और चारो भाई बड़ी ऐंठ के साथ बरात सजा कर लड़के को व्याहने चले । लेकिन वधू के लिये गहने के नाम पर केवल एक 'झालरा' मात्र था । तब वधू पक्ष की ओर से ताना मारते हुये किसी ने उपरोक्त कहावती दोहा कहा ।
झालरा = गले मे पहनने का सामान्य आभूषण जो प्रायः चादी का होता है ।

९९६ क्युंई घोड़ै को घटसी तो क्युंई सवार को ई घटसी ।
यदि घोड़ा पीछे रह गया तो जहाँ घोड़े की प्रतिष्ठा कम होगी, वहाँ सवार की भी कम होगी ।

९९७. क्युंई डरै, क्युंई डरावै ।
कुछ स्वयं डरे, कुछ प्रतिपक्षी को डरावे, इसी नीति से काम बन सकता है ।
दोनो पक्षो के थोड़ा-थोड़ा झुकने से ही काम बनता है ।

९९८. क्युईं तो लौ खोटो, क्युईं लुहार खोटो।

कुछ तो लोहे में खोट है, कुछ लुहार में।
दोष दोनों पक्षों का है।

रू० १. कीं तो कवाडियो भोठो कीं वव चीकणी।
२. कीं तो काठ चीकणो, कीं कुहाड़ियो भूठो।
३. क्युईं गुड़ ढीलो, क्युईं वाणियों ढीलो।
क्युईं ताखड़ी में काण, तीनूं वातां ईं हाण॥

९९९. क्युईं तो रांड बावळी ही अर क्युईं भूतां खदेड़ी।
कुछ तो रांड पहले से ही वावली थी और फिर भूतों ने खदेड़ दी तो रही-सही कसर भी पूरी हो गई।

१०००. क्यूं कुस टूटै क्यूं घर आऊं, क्यूं राजा घर वैद कुहाऊं?
औरूं न खाऊं रांड की खीर, सहाय करी मेरा गोगा पीर॥

संदर्भ कथा—एक किसान अपने खेत में काम कर रहा था कि उसकी कुश (लोहे का एक कृषि उपकरण) टूट गई। वह दूसरी कुश लेने को घर आया। उसकी औरत बड़ी चालाक थी और पति की अनुपस्थिति में नित्य खीर बना कर खाया करती थी। उस दिन भी वह खीर बनाकर पड़ोसिन के यहाँ चली गई थी। लेकिन इसी बीच किसान घर पहुँच गया और वह सारी खीर खा गया। उसकी औरत घर आई तो पूरी बात जानकर वह झुंझला उठी। आज उसकी पोल खुल गयी थी। उसने मन ही मन पति को इसका मजा चखाने का संकल्प कर लिया।

अगले ही दिन राजा के कुँअर को साँप डस गया। बहुत उपचार कराया गया, लेकिन वह ठीक नहीं हुआ। किसान की औरत को अच्छा अवसर मिल गया और पति को राजा से दण्ड दिलवाने की नीयत से उसने राजा से कह दिया कि उसका पति बड़ा करामाती है और वह तत्काल ही सांप का विष उतार देगा। राजा ने तुरन्त ही किसान को बुलवाया। किसान ने बहुत आनाकानी की कि वह कुछ नहीं जानता, लेकिन राजा को लगा कि यह झूठ बोल रहा है। इसलिए उसने हुक्म दिया कि यदि यह राजकुमार को ठीक नहीं करे तो इसे जूते लगाओ। इस पर लाचार होकर वह राजकुमार का विष उतारने के लिए झाड़ा देने लगा—
क्यूं कुस टूटै, क्यूं घर आऊं, क्यूं राजा घर वैद कुहाऊं।
औरूं न खाऊं रांड की खीर, सहाय करी मेरा गोगा पीर॥

१००१. क्यूं राम की मा नै लातां सैं मारै।
क्यों झूठी डींग हांकते हो?

१००२. कृतिका तो कोरी गई, अदरा मेह न बूंद ।
तो यूं जाणो भड्डली, काळ मचावै दूंद ॥
सूर्य के कृतिका एवं आर्द्रा नक्षत्र पर रहते यदि जरा भी वर्षा न हो तो अकाल पड़े ।

१००३. खग पांख्यां फैलाय, उभकि चूंच पवनाँ भखै ।
तीतर गूंगा थाय, इन्द्र धडूकै माघजी ॥
यदि पक्षी अपने पंखों को फैलाकर बैठें और चोंच खोल कर पवन का भक्षण करें, तीतर नामक पक्षी बोलना बन्द करदें तो जानें कि वर्षा शीघ्र होगी ।

१००४. खड्या ई कोनी दीखै जिका पड्या के दीखैगा ?
जो खड़े हुए भी कोई कारगुजारी नहीं दिखला सकते, वे पड़ने के बाद क्या दिखलाएँगे ?
जब पद पर रहते हुये भी कुछ नहीं कर पाते तो पदच्युत होने के बाद क्या कर सकेंगे ?

१००५. खर घूघू मूरख नरां, सदा सुखी प्रिथिराज ।
गधा, उल्लू और मूर्ख मनुष्य सदा सुखी (निश्चित) रहते हैं, क्योंकि उन्हें अपने कर्तव्य का जरा भी भान नहीं होता ।

१००६. खरची का कसाला, भूखा मरै रिसाला ।
राज्य के खजाने में धन का अभाव होने से सेना भूखों मरने लगती है ।
अर्थ के अभाव में अत्यावश्यक कार्य भी रुक जाते हैं ।

१००७. खरची खूटी, यारी टूटी ।
अर्थाभाव में यारी टूट जाती है ।
पैसा रहा न पास यार मुख से नहीं बोले ।

१००८. खर बायों, बिस जीवणों ।
यात्रा करते समय गधे का बाईं ओर मिलना एवं सांप आदि विषैले जन्तुओं का दाईं ओर मिलना अच्छा समझा जाता है ।

१००९. खरबूजै नै देखकर खरबूजो रंग पलटै ।
खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है ।
एक की देखादेखी दूसरा भी तेवर बदलने लगता है ।

१०१०. खरबूजै पर चक्कू पड़ो चाए चक्कू पर खरबूजो पडो, नास तो खरबूजै को ई है ।
चाहे खरबूजे पर चाकू गिरे, चाहे चाकू पर खरबूजा, दोनों तरफ नाश तो खरबूजे का ही होगा ।

१०११. खरी मजूरी, चोखा दाम ।
खरी मजदूरी, पूरे दाम ।

१०१२. **खळ काकड़ा भूरी खाती, घी को देती लुम्मो ।**
इंदरियो धररायो जद, अब याद आयो कुम्मो ।
मनुष्य हर सूरत में अपने स्वार्थ को प्राथमिकता देता है ।
संदर्भ कथा—एक किसान के यहाँ भूरी भैंस और कुम्मा नाम का बैल था । भैंस से उसे नित्य दूध और घी का लौंदा मिलता था, इसलिए वह उसे ही खिलाता-पिलाता था और बेचारे बैल की सुध भी नहीं लेता था । लेकिन जब वर्षा-ऋतु आई और बादल गरजने लगे तो किसान हल जोतने की मंशा से बैल के पास गया । इस पर उपरोक्त कहावती पद्य बैल की ओर से कहा गया ।

१०१३. **खळ गुड़ एकं भाव ।**
खली और गुड़ एक भाव ।
जहाँ भले-बुरे एवं न्याय-अन्याय में कोई अन्तर न हो ।
रू० गुड़ खळ एक भाव ।

१०१४. **खसम मरे को धोखो कोनी, सुपनो साचो होणो चाये ।**
पति के मरने का धोखा नहीं, लेकिन घरवाली का सपना सच होना चाहिए ।
अपने क्षुद्र अहं की पूर्ति के लिए सर्वनाश की भी परवाह न करना ।

१०१५. **खसम मारी बरसोलै की, के मुँह लेकर बोलैगी ?**
जब पति ही अपनी स्त्री को पीटे तो वह किसके आगे जाकर पुकारे ?

१०१६. **खसले दादी पोतां सॅ. हाड तोड़ दे गोतां सॅ ।**
दादी तो पोतों से सेवा की अपेक्षा रखती थी, लेकिन पोते ऐसे निकले कि उसकी-हड्डी पसली ही तोड़ डालें ।

१०१७. **खांड गळी का सै सीरी, गांड गळी को कोई कोनी ।**
खाने-पीने के अवसर पर तो सब आ जुटते हैं, लेकिन विपदा के समय कोई नहीं आता ।
रू० खांड गळी को सो जग सीरी, गांड गळी को कोई ना ।

१०१८ **खांड नै खांड हरावै, रांड नै रांड हरावै ।**
खांड को खांड हराती है, रांड को रांड ।
पहले बिना दानेदार चीनी ही काम में ली जाती थी जिसे खांड कहते थे । यह खांड घटिया बढ़िया अनेक किस्मों की होती थी । बोरियों से खांड की बानगियाँ परखियों के द्वारा निकालकर और हरे रंग की चद्दर पर रखकर इनकी तुलना की जाती थी । एक बानगी दूसरी से अच्छी साबित होती जाती थी और इस प्रकार एक खांड दूसरी से हारती जाती थी ।

१०१९. **खांड बिना सब रांड रसोई ।**
खांड के बिना भोजन शृंगार रहित विधवा की तरह लगता है ।
रू० खांड बिना मोडी रांड रसोई ।

१०२०. खां सा'ब कै रिपिये का सौ टक्का ।

खां साहब के रुपये के सौ टके ।

संदर्भ कथा—एक खां साहब सौदा-सुलफ खरीदने के लिए मोदी की दुकान पर गये । उन्होंने मोदी से हल्दी का भाव पूछा तो मोदी ने एक रुपये की सवा सेर हल्दी बतलाई । इस पर खां साहब ने रौब से कहा कि सवा सेर का भाव तो सर्व-साधारण लोगों का है, खां साहब एक रुपये की एक सेर ही लेंगे । मोदी को इसमें कोई ऐतराज नहीं था । उसने एक रुपये की एक सेर हल्दी तौल दी । इसी प्रकार खां साहब ने पांच-सात रुपये की चीजें और खरीदीं । मोदी खुश था कि आज अच्छी मुर्गी फँसी है ।

अन्त में खां साहब ने मोदी से टके का भाव पूछा तो मोदी ने कहा कि एक रुपये के बत्तीस । इस पर खां साहब ने तुनक कर कहा कि बत्तीस टके तो सामान्य लोगों के रुपये के होते हैं, खां साहब के रुपये के सौ टके होते हैं । इसलिए सौ के भाव से पाँच रुपये के टके भी दे दो । खां साहब की बात सुन कर मोदी सिटपिटाया, लेकिन अन्त में उसे सौ के भाव से ही पांच रुपये के टके खां साहब को देने पड़े और कुल मिला कर मोदी के लिए यह सौदा घाटे का ही रहा ।

१०२१. खांसी करूं खुर्रो करूं, फेर भी न मरै तो के करूं ।

तम्बाकू के सेवन से आदमी चाहे मरे नहीं, लेकिन खाँसी आदि रोगों का शिकार तो हो ही जाता है ।

१०२२. खाइये त्यूंहार, चालिये ब्योहार ।

मिष्टान्न आदि विशेष भोजन तो पर्व-त्यौहार जैसे खास अवसर पर ही करना चाहिए (नित्य नहीं) और व्यावहारिक ढंग से चलना चाहिए, फैल-फितूर नही करना चाहिए ।

१०२३. खाई दाळ तबेलै की, अक्कल होई धेलै की ।

राजा या ठिकानेदार के तबेले (अस्तबल) की दाल खाते ही चरवादार (साईस) की बुद्धि नष्ट हो जाती है ।

सरकारी नौकरी पर लगते ही दिमाग फिर जाता है ।

१०२४. खाकर पिसतावै न्हाकर स्यावै ।

खाने के बाद शरीर में आलस्य आता है, लेकिन नहाने के बाद ताजगी और स्फूर्ति ।

१०२५. खाकर सो ज्याणो, मार कर भाग ज्याणो ।

खाना खाकर सो जाना चाहिए कि जिससे वह अच्छी तरह पच जाए और मार कर भाग जाना चाहिए अन्यथा मार खाये हुए व्यक्ति के हिमायती आकर उसे पीट सकते हैं ।

१०२६. खाज, दाद अर राज वड़भागी नै मिलै ।

खाज, दाद और राज किसी बड़-भागी को ही नसीब होते हैं (व्यंग्य) ।

१०२७. खाज पर आंगळी सीदी जावै ।

शरीर में खुजलाहट महसूस होने पर उँगली वहां सीधी जाती है ।
अपने स्वार्थ की ओर मनुष्य का ध्यान तुरन्त जाता है ।
रू० खाज पर आँगळी गये बिना कोनी रैवै ।

१०२८. खाट पड़े ले लीजिए, पीछै देवै न खील ।
आं तीन्यां का एक गुण, वेस्यां बैद उकील ।।

वेश्या अपने ग्राहक से और वैद्य अपने रोगी से खाट पर पड़े हुये ही जो लेले सो ठीक है, पीछे मिलने की उम्मीद न करे । इसी प्रकार वकील अपने मवक्किल से जितना पहले हथिया ले वही उसका है ।

१०२९. खाणो'क न खाणो तो न खाणो, जाणो'क न जाणो तो जाणो ।

यदि मन में यह दुविधा हो कि खाना खायें या न खायें तो न खाना अच्छा है, लेकिन ऐसी ही दुविधा शौच जाने के सम्बन्ध में हो तो शौच जाना अच्छा ।

१०३०. खाणो थोड़ो, थूकणो वोळो ।

खाये थोड़ा, थूके अधिक ।

१०३१. खाणो परायो, पण पेट तो आपको ।

खाना तो पराया है, लेकिन पेट तो अपना है ।
किसी के यहाँ खाना खाने जाएँ तो दूसरे का माल देखकर इतना नहीं खा लेना चाहए कि जो पेट में पीड़ा उत्पन्न करे ।
रू० घर तो परायो, पण पेट तो आपको ।

१०३२. खाणो पीणो खेलणों, सोणो खूंटी ताण ।
आछी डोवी कंथड़ा, नामरदी कै पाण ।।

पत्नि अपने निठल्लू पति से कहती है कि खाना, पीना, खेलना और खूंटी तान कर सोना, बस ये ही तुम्हारे काम रह गये हैं । अपनी अकर्मण्यता के कारण तुमने सब कुछ चौपट कर दिया है ।

१०३३. खाणो मन भातो, पैरणो जग भातो ।

खाना तो अपनी रुचि के अनुसार खाना चाहिये, लेकिन वस्त्र वैसे पहनने चाहिएँ जो दुनिया को बुरे न लगें ।
रू० खाणों घर सुहातो, पैरणो जग सुहातो ।

१०३४. खाणो मा कै हाथ को होवो भलाई झैर ई ।

बैठणो भायां को, होवो, भलाई वैर ई ।

चालणो गैलै को, होवो भलाई फेर ई ।

छायां मौकै की, होवो भलाई कैर ई ।

धीणों भैंस को, होवो भलाई सेर ई ।

भोजन तो माँ के हाथ का ही खाना चाहिए, भले जहर ही हो। बैठना भाइयो मे ही चाहिए, भले परस्पर अनबन ही हो। चलना सही रास्ते से ही चाहिए, भले इसमे चक्कर ही पडे। छाया मौके की अच्छी, चाहे कैर की ही क्यो न हो। धीना भैंस का अच्छा, भले सेर ही क्यो न हो।

१०३५. खात अर पाणी, के करै बिनाणी ।

खेत को खाद और पानी यथेष्ठ मिले तो फसल अच्छी होगी ही।

१०३६. खातण होय बळीतै नै क्यूं जावै ?
तेलण होय लूखो क्यूं खावै ?

खातिन ईंधन के लिए क्यो जाए और तेलिन लूखा क्यों खाए ?

१०३७ खात पड़ै तो खेत, नईं तो कूढो रेत ।

खाद डालने से ही खेत सुधरता है, नही तो वह बालू का ढेर ही है।

रू० खेती खात सेती।

१०३८. खातां खाण न पीतां पाणी ।

सन्दर्भ कथा—एक मठ मे बहुत से साधु रहते थे। लेकिन ओढने के लिए मठ मे केवल एक ही बड़ी 'सौड' थी। जाडे के दिन थे और शाम होते ही जाडा बरसने लगता था। इसलिए हर साधु एक से एक पहले सोड मे घुस जाने को व्यग्र रहता था। हर साधु सौड को अपनी ओर खीचता था और इस प्रकार रात भर खीचा तानी मची रहती।

पद्य—अेक सोड अर जणा पचास, सारा करै ओढण की आस।
सॉझ पडे ई खीचा ताणी, खातां खाण न पीता पाणी।।

रू० अेक टाट सात को सीर, नितकी जेठ रंधावै खीर।
रात्यूं रैवै खीचाताणी, खाता खाण न पीतां पाणी।

१०३९. खातां खातां ई बंचग्यो सो बीज को बाजरो ।

जो खाते-खाते बच गया वही बीज का बाजरा।

खेत मे बोने के लिये किसान अच्छी किस्म का बाजरा बीज के लिये बचा कर रखते है, लेकिन अभाव मे वह भी खाया जाता है, इसलिये जो बच जाए वही बीज का बाजरा।

१०४०. खाती कै गई ही सो मेरै मारी ।
क्यांकी ?
'क वठै ई घाटो हो के ?
खाती के यहाँ शारीरिक चोट पहुँचाने वाली चीज की क्या कमी ?

१०४१. खाद करै उपाध ।
पेट भरा होने पर उत्पात सूझता है ।
अच्छा खाना खाते रहने से बल बढ़ता है और शारीरिक विकास विशेष रूप से होता है ।

१०४२. खानजादा खेती करै, तेली चढ़ै तुरंग ।
खानजादे तो खेती करते हैं और तेली घोड़ों पर चढ़े घूमते हैं ।
संदर्भ—फतहपुर के कायमखानी नवाब सरदारखां ने एक रूपवती तेलिन पर्दे में डाल ली थी । इसलिए उसके यहाँ कायमखानियों की अपेक्षा तेलियों को प्रमुखता प्राप्त हो गई थी । इसी को लेकर कहा गया है—
देखो खेल खुदाय का, के के पलटै रंग ।
खानजादा खेती करै, तेली चढै तुरंग ।।

१०४३. खाता पीता ना मरै, ऊंघतड़ा मर जाय ।

१०४४. खा, बाणियां गुड़ तेरो ई है ।
बनिये ! गुड़ तुम्हारा ही है, भले ही शौक से खाओ ।
जब आदमी अपनी ही वस्तु का उपभोग करते हुए यह समझकर संतुष्ट हो कि वह मुफ्त में ही पराई वस्तु का उपभोग कर रहा है ।
सन्दर्भ कथा—किसी बनिये के यहाँ भिवानी से गुड़ की कतारें आया करती थीं । एक बार वह यात्रा पर गया तो किसी धर्मशाला में रुका । वहाँ कुछ कतारिये भी ठहरे हुये थे जो गुड़ लाये थे । गुड़ की बानगी देखने के बहाने बनिया उसमें से गुड़ खाने लगा । लेकिन वस्तुतः वह गुड़ उसी के यहाँ जा रहा था । बनिया तो कतारियों को नहीं जानता था, लेकिन एक कतारिया बनिये को जानता था । इसलिये उसने चालाकी से बनिये को गुड़ खाते देखकर कहा, 'खा बाणियां गुड़ तेरो ई है ।'

१०४५. खावा-पीवा में तो कैई सौक नै ऊपर आणदयूं नीं, छूं तो काम में ई मठी छूं ।
काम करने में भले ही ढीली होऊं, लेकिन खाने-पीने के मामले में तो इतनी तेज हूँ कि अपनी किसी सौत को आगे न निकलने दूं ।

१०४६. खावो सीरा को अर मिलवो वीरा को ।
खाना तो हलवे का और मिलना भाई का ।
रू० (१) खावो खीर को, वा'वो तीर को ।
(२) खावो कोळा को, पैरवो चोळा को ।

१०४७. खायां खूटै, खींच्यां टूटै ।

निरन्तर खाते रहने से बड़ा खाद्य-भण्डार भी समाप्त हो जाता है और अधिक खींचने से कोई भी बात या वस्तु टूट जाती है ।

१०४८. खाया-खाया माई जाया गेर दे, इतणै में लालच मत करै ।

भाई ! जितना तुमने खाया है, वह सब उगलना पड़ेगा । इसमें जरा भी लालच करने से काम नहीं चलेगा ।

१०४९. खाया गटका, आवै भटका ।

कभी जो गुलछर्रे उड़ाये थे, उनकी याद अब साल रही है ।

१०५०. खाया जिता चाया कोनी ।

जैसा खाया, वैसा चाहा नहीं ।

१०५१. खाया सोई खरचिया, दीन्यां सोई सत्थ ।

जो खालें-पीलें सो ही अपना है और दिया हुआ दान ही साथ चलता है ।

संदर्भ कथा—कहा जाता है कि जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह को बहुमूल्य आभूषण धारण करने का बड़ा शौक था । एक बार उन्होंने अपने मन्त्रियों से कहा कि मेरे मरने के बाद मेरे आभूषण शरीर से न उतारे जाएँ । मन्त्रियों ने महाराजा को वैसा ही विश्वास दिला दिया । इसकी परीक्षा लेने के लिए एक दिन महाराजा ने श्वास खींच कर समाधि लगाली । सबने यही जाना कि महाराजा की मृत्यु हो गई । इसलिए मन्त्रियों ने उनके शरीर से सारे बहुमूल्य आभूषण उतार लिए और उनके स्थान पर वैसे ही नकली आभूषण पहना दिये । इतने में महाराजा की समाधि टूटी और उन्होंने सारी स्थिति को समझ कर कहा—

खाया सोई खरचिया, दीन्यां सोई सत्थ ।
जसवंत धर पोढाणियां, माल बिराणै हत्थ ।।

१०५२. खाये जींका गाये ।

जिसका खाना, उसी के गीत गाना ।

रू० (१) खाजा जींका बाजा ।
(२) खाजा जिता ई बाजा ।

१०५३. खायो-पीयो अेक नाम, मारचो कूट्यो अेक नाम ।

चाहे एक कौर खाएँ, चाहे भरपेट, भोजन करने वालों में तो गिनती हो ही जाती है । इसी प्रकार चाहे किसी को थोड़ा पीटें या अधिक, पीटने का नाम तो हो ही जाता है ।

१०५४. खारा खावै जिको ई मीठा खावै ।

जो खारे खाता है, वही मीठे भी खाता है ।
जो दुःख उठाता है, वही सुख भी भोगता है ।
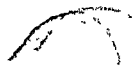
१०५५. खारा बोल्योड़ा अर मीठा खायोड़ा भूलै कोनी ।

किसी के द्वारा कहे गये कटु वचन और किसी के यहाँ खाया हुआ मीठा भोजन, भूलता नहीं ।

१०५६. खारी बोली मावड़ी, मीठा बोल्या लोग ।
साच कहै थी मावड़ी, झूठ कहै था लोग ।

माँ की बात कड़वी और दूसरे लोगों की बात मीठी लगती थी । लेकिन अब पता चलता है कि माँ की बात खरी और हितकर थी जब कि अन्य लोगों की बात झूठी और परिणाम में अहितकर थी ।

रू० खारी बोली मावड़ी, मीठा बोल्या लोग ।
खारी लागी मावड़ी, मीठा लाग्या लोग ।।

१०५७. खारो कड़ुवो गन्धलो, जे बरसैलो तोय ।
करसण री हांणी हुवै, देस नास लो जोय ।

खारा, कडुआ और दुर्गन्ध युक्त पानी बरसे तो खेती के साथ देश का भी विनाश हो ।

१०५८. खाल पराई लाकड़ो, जाणें भुस में जाय ।

दूसरे की खाल में लकड़ी घुसेड़ी जाती है तो मानो भुस में घुसेड़ी जाती है । दूसरे की पीड़ा को किंचित् भी महसूस न करना ।

रू० पराई खाल में जावै, जाणै तूंतड़ां की धड़ में जावै ।

१०५९. खाली हाथ मूंडै कानी कोनी जा ।

खाली हाथ मुँह की तरफ नहीं जाता ।
बिना स्वार्थ के आदमी किसी काम में प्रवृत्त नहीं होता ।

१०६०. खाले-पीले सो आपको ।

मनुष्य जो खाले-पीले, वही अपना है ।

रू० खाणा पीणा खेलणा, तीन बात है तत्थ ।
आखर नै मर जायगा, धर छतियन पर हत्थ ।।

१०६१. खावणें का सांसा, पावणां का वासा ।

घर में तो खाने का टोटा, तिस पर पाहुनों का आवागमन ।

१०६२. खावण-पीवण नैं खेमली, नाचण नै नगराज ।

खाने-पीने को खेमली और नाचने के लिए नगराज ।
मौज मजे कोई करे और काम किसी को करना पड़े ।

रू० खावण-पीवण नैं दीवाळी, कूटण नै छाज ।
दीवाली के दूसरे दिन प्रातः ही स्त्रियां छाज को बेलन से पीटती हैं ।

१०६३. खावण में आगै, काम सें भागै ।

खाने पीने में सबसे आगे और काम से दूर भागे ।

१०६४. खावै आपकी, बात बणावै जगत की ।

लोग रोटी अपनी खाते हैं और बात दूसरों की बनाते हैं ।

१०६५. खावै जिकै नै खुवाणो पड़ै ।

जो दूसरों के यहाँ खाकर आता है, उसे दूसरों को अपने यहाँ खिलाना भी पड़ता है ।

१०६६. खावै जितरी भूख, सोवै जितरी नींद ।

खाने-पीने और सोने की जैसी आदत डाली जाए, वैसी ही पड़ जाती है ।

१०६७. खावै तो ई डाकण, न खावै तो ई डाकण ।

खाये तो भी डाकिन, न खाये तो भी डाकिन ।

बदनाम मनुष्य यदि बुरा काम न भी करे तो भी उस पर लांछन लग जाता है।

१०६८. खावै-पीवै खसम को, गीत गावै बीरै का ।

खाये-पीये पति का और गीत गाये भाई के ।

१०६९. खावै पूणो जीवै दूणो ।

जो पौना खाना खाता है, वह दुगना जीता है ।

डट कर खाने की अपेक्षा थोड़ी भूख रख कर खाना अच्छा है ।

१०७०. खावै बकरी की ज्यूं, सूकै लकड़ी की ज्यूं ।

खाये बकरी की तरह, सूखे लकड़ी की तरह

१०७१. खिजूर खासी जिको झाड़ चढसी ।

जिसे खजूर खाने होंगे, वही खजूर के वृक्ष पर चढेगा ।

१०७२. खिलाये को नांव कोनी होवै, रुवाये को होज्या ।

पराये बच्चे को खेलाते रहें तो कोई शाबाशी नहीं, लेकिन रुलाने पर उपालंभ तैयार ।

१०७३. खीर खीचड़ी मंदी आंच ।

खीर और खिचड़ी मंदी आच से अच्छी पकती है ।

१०७४. खीर बिगड़गी तो भी राबड़ी से त्याऊ कोनी ।

खीर यदि बिगड़ भी जाए तो भी रावड़ी से बुरी नहीं।

१०७५. खीर सबड़कै की ।

सबड़का लगाकर खाने से ही खीर का मजा आता है ।

संदर्भ कथा—एक बार किसी राजा ने अपने सभी दरबारियों को भोज दिया । भोजन में सबको खीर परोसी गई । लेकिन खाने से पूर्व यह घोषणा कर दी गई कि कोई भी आदमी सबड़का लगा कर खीर न खाये। यदि कोई ऐसा करेगा तो उसका सिर धड़ से अलग कर दिया जाएगा । सब लोग चुप-चाप खीर खाने लगे । लेकिन तभी राजा की दृष्टि दूर बैठे एक दरबारी पर गई जो सबड़के लगा-लगा कर मौज से खीर खा रहा था । राजा ने उसके

पास जाकर पूछा कि क्या तुम्हें इस वात का पता नहीं कि जो भी सवड़का लगा कर खीर खायेगा, उसका सिर धड़ से अलग कर दिया जाएगा ? दरवारी ने नम्रता से उत्तर दिया कि महाराज ! मुझे पता है, लेकिन खीर सवड़के से ही खाई जाती है और तभी उसके खाने का मजा है। मुझे सवड़के लेकर पेट भर खीर खा लेने दीजिए, फिर भले ही मेरा सिर काट लें। उसके उत्तर से राजा वहुत खुश हुआ और बोला कि सारे दरवारियों में यही एक व्यक्ति वास्तव में खीर खाने वाला है।

१०७६. **खीरां मेली खीचड़ी, टीलो आयो टच्च।**

जैसे ही खिचड़ी चूल्हे पर से उतार कर अंगारों पर रखी, टीलू झट खाने के लिए आ वैठा।

पेटू आदमी इसी ताक में रहता है कि कव खाना तैयार हो और कव वह जीमने वैठे।

१०७७. **खुद ई नाचै खुद ई वारणा ले।**

खुद ही नाचे, खुद ही निछावर करे।

रू० आप ई नाचै, आप ई वारणा ले।

१०७८. **खुदा की खुदाई नै कुण जाणै।**

खुदा की खुदाई (ईश्वरता) को कौन जानता है ?

संदर्भ कथा—एक दिन एक मियां नमाज पढ़ने के वाद कह रहा था कि या खुदा, तेरी खुदाई को कौन जानता है ? वहीं एक जाट खड़ा था। उसने मियां से कहा कि खुदा की खुदाई को मैं जानता हूं ? मियें ने जाट की वात का प्रतिवाद किया तो दोनों में होड लग गई। फैसला करवाने के लिए दोनों दिल्ली के वादशाह के दरवार में पहुँचे। जाट ने वादशाह से कहा कि हुजूर, मेरे साथ यमुना के किनारे चलें, वहीं मैं आपको खुदा की खुदाई दिखलाऊंगा। जव वे सव यमुना नदी के किनारे पर पहुँचे तो जाट ने नदी की ओर हाथ करके कहा कि यह खुदा की खुदाई है या इसे मियां के वाप-दादों ने खुदाई है ? वादशाह ने जाट के हक में फैसला दे दिया और वह होड जीत गया।

१०७९. **खुदा तेरी खुदाई, मारै हो गधी मरगी गाई।**

या खुदा ! तेरी भी कैसी खुदाई है ? मैं मारना चाहता था पड़ोसी की गधी और मर गई मेरी स्वयं की गाय।

सन्दर्भ कथा—एक मियां के घर के पास ही कुम्हार का घर था। मियां की कुम्हार से अनवन हो गई तो उसने खुदा से फरियाद की कि वह कुम्हार की गधी को मार दे। लेकिन अगले ही दिन उसकी स्वयं की गाय मर गई। इस पर मियां ने खुदा को उपालंभ देते हुए कहा कि या खुदा, यह

क्या किया ? तुझे खुदाई करते इतने जुग बीत गये लेकिन अभी तक गाय और गधी का फर्क भी मालूम न हुआ । मैंने पड़ोसी की गधी मारने के लिए अर्ज की थी और तूने मेरी ही गाय मार दी ।

१०८०. **खुर तातो, खर मातो ।**

ग्रीष्म ऋतु के आगमन के साथ जैसे-जैसे गधे के खुर गर्म होते हैं, वैसे-वैसे उस पर मस्ती छाती है । इसीलिए शायद उसे वैशाखनंदन भी कहा गया है ।

१०८१. **खूंटै कै पाण बाछो कूदै ।**

खूंटे के बल पर बछड़ा कूदता है ।
जब कोई छोटा आदमी किसी बड़े आदमी के बल पर ऐंठ दिखलाये ।

१०८२. **खूट्यो बाणियों जूना खत जोवै ।**

घाटे की स्थिति में बनिया लेन देन के पुराने कागजों को देखता है, संभव है किसी में कुछ लेना निकल आये ।

१०८३. **खेत नै खोवै गेली, मोडै नै खोवै चेली ।**

खेत के बीच से होकर निकलने वाला रास्ता खेत के लिए बड़ा नुकसानदायक होता है और साधु का चेली रखना उसकी बदनामी का कारण बन जाता है।
रू० खेत नै खोवै गेली जाट नै खोवै हेली ।

१०८४. **खेत बड़ा, घर सांकड़ा ।**

खेत विस्तृत और घर सँकरे होने चाहिएँ ।

१०८५. **खेत में होवै सोई खळै में आवै ।**

खेत में जो पैदा होगा, वही खलिहान में आयेगा ।

१०८६. **खेती करै न बिणजी जाय, विद्या कै बळ बैठ्यो खाय ।**

खेती या वाणिज्य न करने पर भी विद्वान् व्यक्ति अपनी विद्या के बल पर घर बैठा अपना निर्वाह कर लेता है ।

१०८७. **खेती करै बिणज नै ध्यावै, दो में आडी अेक न आवै ।**

खेती भी करे और व्यापार के लिए भी दौड़े तो ये दोनों काम साथ-साथ नहीं निभ सकते । परिणाम यह होता है कि दोनों ही फलदायक नहीं होते । आदमी एक ही काम को दत्तचित्त होकर करे तो उसमें सफलता प्राप्त कर लेता है ।

१०८८. **खेती करै सो राखै गाडो, राड़ करै सो बोलै आडो ।**

जो खेती करता है, वह गाड़ा भी रखता है । जो झगड़ा करने पर उतारू हो वह टेढा बोलता है ।

१०८९. खेती गोरी मोठ की ।

गोरी मोठ की खेती उत्तम होती है ।

पद्य–खेती गोरी मोठ की, बीणो धोळी गाय ।
वो'रो करणो वाणियों, दे ज्यूं हीं ले जाय ।।

१०९०. खेती देख कर कूंत होवै ।

खेती को देख कर ही फसल का अनुमान लगाया जा सकता है ।

१०९१. खेती धणियां सेती ।

खेती तो स्वयंमेव करने से ही होती है, दूसरों के भरोसे नहीं ।

रू० खेती खुन सेती ।

पद्य (१) खेती पाती बीनती, परमेसर को जाप ।
पर हाथां नहँ कीजिये, इतरा करिये आप ।।
(२) खेती पाती बीनती, मोरां तणी खुजाळ ।
जे सुख चावै आपणो, हाथूं हाथ समाळ ।।
(३) खेती पाती बीनती, अर घोड़ै को तंग ।
अपणैं हाथ संवारिये, लाख लोग हों संग ।।

१०९२. खेती बादळ में है ।

खेती वर्षा पर निर्भर करती है ।

१०९३. 'खे देख कर घोड़ा नईं काटणा ।

दूर से खेह उड़ती देख कर ही भय की आशंका से अपने घोड़ों को नहीं काट डालना चाहिए ।

१०९४. खेती सूक्यां पछै बिरखा के काम की ?

का बरषा जब कृषि सुखानें ।

पद्य—खड़ सूखा गोभू मुआ, बाला गया विदेस ।
ओसर चूका मेहड़ा, वूठा काह करेस ।।

१०९५. खेमला खीर मीठी, 'क खावै सो जाणै ।

जिसने जो चीज चक्खी ही नहीं, वह उसका स्वाद क्या बतलाये ?

१०९६. खेमली खिलकां की भूखी ।

खेमली तमाशे की भूखी ।
किसी किसी को दो पड़ोसियों या दो परिवारों में कलह उत्पन्न करवा के तमाशा देखने की कुटेव होती है । यहां खेमली का आशय ऐसी ही किसी स्त्री से है ।

१०९७. **खैंचो वणियां खैंचो तणियां, खेंचम खेंच विकाय।**
चिनेक ढीली छोड़ दे, जड़ामूळ सें जाय।
वनिया अपना सौदा पूरी कसावट के साथ करे तभी लाभदायक होता है। जरा सी ढील मे ही काम एक दम विगड़ जाता है। इसी प्रकार तनी भी पूरी तौर पर कसी रहे, यह अपेक्षित है।

१०९८. **खैरात बंटै जठै मंगता आपेई पूंच ज्यावै।**
जहाँ खैरात वँटती है वहाँ भिक्षुक अपने आप पहुँच जाते हैं।

१०९९. **'खो की माटी 'खो लागज्या।**
खोह की मिट्टी खोह में ही लग जाती है।
अधर्म की कमाई निरर्थक जाती है।
रू० कूवै की माटी कूवै में लागज्या।

११००. **खोटी संतान, रूस्यो भगवान।**
भगवान् रूठे तो खोटी संतान पैदा होती है।

११०१. **खोटो पीसो अर कपूत वेटो ओड़ी वरियां आडो आवै।**
खोटा पैसा और कुपुत्र वक्त जरूरत काम आता है।

११०२. **खोदै जठै खाडो, गेरै जठै भराव।**
जिस स्थान को खोदा जाए वहां खड्डा और जहां उस मिट्टी को डाला जाए वहां भराव।

११०३. **खोदचो डूंगर, निकळचो ऊंदर।**
खोदा पहाड़, निकली चुहिया।
भारी परिश्रम के वाद नगण्य फल की प्राप्ति।

११०४. **खोपरी-खोपरी बुध न्यारी।**
हर आदमी की बुद्धि भिन्न।

११०५. **खोयो ऊंट घड़ै में ढूंढै।**
गुम हुआ ऊंट घड़े में ढूंढे।
ऊंट कभी घड़े में नहीं समा सकता, लेकिन जिसका ऊंट खो जाए वह उसे घड़े में भी ढूंढता है।
गुम हुई वस्तु को आदमी ऐसी जगह भी तलाश करता है, जहाँ उसके होने की कोई सम्भावना नहीं होती।

११०६. **खोळी रैयां तो पूर और घलज्या।**
यदि खोल वच जाए तो उसमें चिथड़े तो और भरे जा सकते हैं।
वीमार आदमी यदि निहायत दुर्बल होकर भी वच जाए तो वह पुनः शक्ति और पुष्टता प्राप्त कर सकता है।

११०७. ख्याल खिलदारचां का, घोड़ा असवारां का ।
खेल खिलाड़ियों के और घोड़े सवारों के ।
जो जिस काम में निपुण हो, उसे ही वह काम फबता है ।
रू० खेल खिलाड्यां का, घोड़ा असवारां का ।

११०८. गंगा गया गंगादास, जमना गया जमनादास ।
सिद्धान्त हीन मौका परस्ती ।

११०९. गंगाजी कै घाट पर, बामण वचन परवांण ।
गंगाजी की रेणका, तूं चन्नण करकै मान ।।

संदर्भ कथा—एक जाट अपने मृत पिता के 'फूल' गंगाजी में प्रवाहित करने के लिये हरिद्वार गया । हर की पैड़ी पर उसे एक पंडा मिला और उसने जाट से कुछ ऐंठने की नीयत से उससे कहा कि घाट पर मेरे साथ चलो, मैं सारा काम करवा दूंगा । जाट उसके साथ घाट पर चला गया लेकिन पंडे के पास तो कोई सामग्री नहीं थी । इसलिये उसने गंगाजी की रेती से जाट के माथे पर तिलक लगाते हुए कहा कि ब्राह्मण के वचनों को प्रमाण मानकर इस रेती को ही चन्दन समझ लो । इस पर जाट ने गंगाजी की एक मेंढकी उसके हाथ में पकड़ा दी और बोला कि तुम भी जाट के वचनों को प्रमाण मान कर इस मेंढकी को ही गाय समझलो और इस प्रकार गो-दान का संकल्प पूरा कर दिया—

गंगाजी कै घाट पर, जाट वचन परवांण ।
गंगाजी की मींडकी, तूं गऊ करकै जाण ।।

१११०. गंगाजी को न्हायबो, विपरन को व्योहार ।
डूब जाय तो पार है, पार जाय तो पार ।।
गंगाजी में स्नान करते समय आदमी डूब भी जाए तो यह सोच लेना चाहिए कि वह भवसागर से पार हो गया । इसी प्रकार ब्राह्मण को दिया गया ऋण न भी आये तो देने वाले को पुण्य लाभ तो हो ही जाएगा, यह मानकर संतोष कर लेना चाहिये ।

११११. गंगाजी तूतिये में कद मावै ।
गंगाजी 'तूतिये' में नहीं समा सकतीं ।
तूतिया = एक बहुत छोटा नालीदार पात्र ।

१११२. गंजी ई माथो गुंथावण चाली ?
गंजे सिर वाली औरत भी माथा गुंथवाने चली ।

१११३. गंजो नाई कने के धरावै ?
गंजा आदमी नाई की क्या परवाह करे ?

१११४. गंडक अर गोती गाँव-गाँव में मिलै ।

कुत्ते और सगोत्री गाँव-गाँव में मिल जाते हैं ।

सगोत्री होना कोई निकट का रिश्ता नहीं माना जाता ।

१११५. गंडक की पूँछ कै न्योळी बंधरी है ।

कुत्ते की पूंछ से रुपयों की 'न्योळी' बंधी रहे तो भी वह उन रुपयों का कोई उपयोग नहीं कर पाता ।

अपात्र के पास धन हो भी जाए तो किस काम का ?

१११६. गंडक नारेळ को के करै ?

कुत्ता नारियल का क्या करे ?

रू० (१) भेड़ सुपारी को के करै ?

(२) गधो मिसरी सार के जाणै ?

(३) बांदरो अदरख को सुआद के जाणै ?

१११७. गंडकां से गाँव की गळियां छानी कोनी ।

कुत्तों से गाँव की गलियाँ छिपी नहीं हैं ।

रू० मुंगतां से गाँव की गळियां छानी कोनी ।

१११८. गई तिथ बामण ईं को बांचैनीं ।

बीती हुई तिथि का महात्म्य ब्राह्मण भी नहीं बांचता ।

जो बीत गया सो बीत गया, अब वर्तमान की बात करो ।

१११९. गई बात नै घोड़ा ई कोनी नावड़ै ।

बीती हुई बात को घोड़े भी नहीं पा सकते ।

११२०. गई बात नै जाणदे, रही बात नै सीख ।

जो बीत चुका सो बीत चुका, अब आगे की सुधि लो ।

संदर्भ कथा—एक साहूकार की बेटी ने अपने बाप से कह दिया कि वह विवाह नहीं करेगी । बहुत समझाने-बुझाने पर भी जब वह नहीं मानी तो साहूकार ने उसके लिये एक अलग महल बनवा दिया और महल पर पहरेदार नियुक्त कर दिये जो रात-दिन पहरा देते थे ।

महल में रात को लड़की का एक प्रेमी साँप बनकर आता था और महल में पहुँच कर वह सुन्दर युवक बन जाता था । दोनों परस्पर चौपड़-पांसा खेलते । एक रात पहरेदारों ने पांसों की अवाज सुनी तो उन्होंने जाकर साहूकार को सूचना दी । साहूकार ने उन्हें आदेश दिया कि जो भी महल में प्रवेश करे, उसे तुरन्त मार डालो । अगली रात को जब महल में सांप घुसने लगा तो पहरेदारों ने उसे मार डाला । लड़की को बड़ा दुःख हुआ । उसने मरे हुये सांप को हार में जड़वा कर अपने गले में पहन लिया ।

साहूकार ने अब उसका विवाह भी कर दिया। जब वह सुसराल गई तो उसने सांप की केंचुली को बत्ती में डालकर उसका दीपक जलाया। जब उसका पति महल में आया और पलँग पर बैठने लगा तो पत्नी ने कहा—

पिव पाये पिव ढोलिये,पिव को गळ बिच हार।
पिव को ही दिवलो जगै, चातर करो विचार।।

इस पर पति वहीं रुक गया, उससे कोई उत्तर देते नहीं बना लेकिन उसकी भौजाई जो बाहर ही खड़ी थी, बोली—

गई गई नै जाणदे, रही रही नै सीख।
अब क्यूं कूटै बावळी, मुवै सांप की लीक।।

जेठानी की बात सुनते ही देवरानी लजा गई और उसने अपना संकल्प बदल दिया।

११२१. गई रांड सो घर-घर डोलै, गयो घर सो घुग्घू बोलै।
गयो राज सो मानै गोलै, गयो साह सो घाटू तोलै।।

घर-घर डोलने वाली स्त्री निकम्मी बन जाती है, जिस घर में उल्लू बोलता है वह घर बर्बाद हो जाता है, जिस राजा के यहाँ गोलों की प्रधानता होती है वह राज्य नष्ट हो जाता है और कम तौलने वाले दुकानदार की साख समाप्त हो जाती है।

रू० गई हाट जहँ मंडी हथाई।

११२२. गई साख तो बंची राख।

साख का बड़ा महत्व होता है। साख के नष्ट हो जाने पर शेष क्या रह जाता है?

११२३. गाऊ अर बेटी नै जठीनै टोरदे, बठीनै ई चाल पड़ै।

गाय को जिधर हांक देते हैं, वह उधर ही चल पड़ती है। इसी प्रकार बेटी के मां-बाप जिसके साथ उसका विवाह कर देते हैं, उसी के साथ उसे जाना पड़ता है।

११२४. गटका खासी जिको झटका भी सहसी।

जो माल-मलीदा खायेगा, उसे झटके भी सहन करने पड़ेंगे।

११२५. गडवै सें भेर होंगी।

गड्डुवे के स्थान पर भेर बन गई।

सन्दर्भ कथा—राजा के सुनार के घर के आगे बहुतेरी खाली जमीन पड़ी थी। एक परिचित खाती के मांगने पर उसने कुछ समय के लिये वह जमीन उसे काम करने के लिए दे दी। धीरे धीरे खाती ने सारी जगह रोक ली और काठ-कबाड़ से भर दी। दिन भर खटाखट रहने लगी। सुनार जब

भी खाती से जगह खाली करने के लिये कहता, वह झगड़ा करने पर उतारू हो जाता।

इसी बीच राजा ने सुनार को सोने का एक गडुवा घड़ कर लाने का आदेश दिया। सुनार खजाने से सोना ले गया, लेकिन खाती की खट-पट के कारण वह गडुवा तैयार नहीं कर पाया। राजा का बुलावा नित्य आने लगा, लेकिन सुनार गडुवा नहीं बना पाया। एक दिन सुनार और खाती के बीच खूब जोरों से झगड़ा हुआ और तभी राजा का बुलावा फिर आ गया। सुनार गड़ुवा घड़ने को बैठा, लेकिन वह बहुत झल्लाया हुआ था। उसके दिमाग में खाती वाली बात ही घूम रही थी। उसी धुन में वह सोने के पात को पीट-पीट कर बढ़ाता गया और उसने गडुवे के स्थान पर 'भेर' बना डाली। भेर को लेकर वह राजा के पास पहुँचा तो राजा को बड़ा गुस्सा आया। उसने सुनार को कड़ा दण्ड दिये जाने की आज्ञा दी। सुनार को अपनी भूल का भान हुआ और उसने राजा के सामने अपने को बेकसूर बतलाते हुये कहा—

खोटा काम ठेठ सें कीन्या, घर खाती नै मांग्या दीन्या।
घड़तां-घड़तां हुई अबेर, घड़ैं हो गडवो हो'गी भेर॥

११२६. गडूं 'क बळूं?

कब्र में दफन होऊं या चिता में जलूं?

संदर्भ कथा—एक गांव में सारे घर मुसलमानों के ही थे। इसलिए उस गांव से होकर गुजरने वाले हिन्दू पथिक को वहां खाने-पीने के लिए कुछ भी नहीं मिलता था। गाँव वालों को भी यह बात बहुत अखरती थी कि उनके गाँव में आने वाला कोई बटाऊ निराहार जाए। इसलिये वे इसका कोई उपाय सोचने लगे।

उस गाँव में एक गरीब मुस्लिम विधवा अपनी छोटी बेटी के साथ रहती थी। उसके घर में कोई कमाने-कजाने वाला था नहीं, इसलिये गांव के सब लोगों ने मिलकर उससे कहा कि हम तुम्हारे खाने-पीने की सारी व्यवस्था कर देंगे और तुम एक ब्राह्मणी के रूप में रहने लग जाओ, जिससे गाँव में आने वाला बटाऊ तुम्हारे घर भोजन कर सके। विधवा ने उनकी बात स्वीकार कर ली। वह इजार के बदले साड़ी पहनने लगी और ब्राह्मणी के वेश में रहने लगी। गांव वालों की ओर से समुचित व्यवस्था कर दी गई और गांव में आने वाला प्रत्येक हिन्दू पथिक अब उस 'ब्राह्मणी' के यहां बसेरा लेने लगा।

एक दिन एक पंडित उसके यहां ठहरा। जब वह नहा धोकर और पूजा-पाठ करके जीमने बैठा तो उक्त ब्राह्मणी भी उसके पास आ बैठी।

उसने अपनी सारी राम कहानी उसे सुना कर पूछा कि अब तुम मुझे यह बतलाओ कि मैं इस लड़की की निकाह करूं या फेरे फेरूं ? उसकी बातें सुनकर पंडितजी के हाथ का ग्रास हाथ में और मुंह का ग्रास मुंह में रह गया। उसने बड़ी संजीदगी के साथ 'ब्राह्मणी' से पूछा कि मुझे तो तू ही बतला कि अब मैं क्या करूं ? 'गडूं या जळूं' ?

११२७. गढां कै गढ ई पावणां ।
गढों के गढ ही पाहुने ।
बड़ों के बड़े ही पाहुने ।

११२८. गणगोरयां नै ई घोड़ा नई दौड़ैगा तो कद दोड़ैगा ?
यदि गणगौर के दिन ही घोड़े नहीं दौड़ेंगे तो भला फिर कब दौड़ेंगे ?
मध्य युग में घोड़ों का बड़ा महत्व था। राजाओं और ठाकुरों के यहां काफी संख्या में घोड़े रहा करते थे और गनगौर के अवसर पर उनकी दौड़ प्रतियोगिता आयोजित की जाती थी।
यथा अवसर काम न होगा तो फिर कब होगा ?

११२९. गधां की यारी में लातां की त्यारी ।
गधों की यारी में लातों की तैयारी ।
मूर्खों की यारी में लड़ाई-झगड़ा ही होता है।

११३०. गधेड़ां ई मुलक जीतले तो घोड़ां नै कुण पूछै ?
यदि गधे ही मुल्क फतह करलें तो फिर घोड़ों को कौन पूछेगा ?
यदि मूर्ख ही किसी काम को पेश चढ़ादें तो अक्लमंद को कौन पूछे ?

११३१. गधेड़ै की गूणती में नौ मण को वांधो कोनी पड़ै ।
गधे के बोरे में नौ मन की भूल नहीं पड़ सकती ।

११३२. गधेड़ै कै जेठ में घूदी चढै ।
गधे पर जेठ के महीने में मस्ती छाती है ।

११३३. गधेड़ै को मांस खार घाल्यां सीजै ।
गधे का माँस खार डालने पर ही सीझता है ।
दुष्ट को यथोचित दण्ड देने से ही वह सीधा होता है ।
रू० गधै को मांस कैर घाल्यां ई सीजै ।

११३४. गधेड़ै में ग्यान कोनी, दरांती कै म्यान कोनी ।
गधे में ज्ञान नहीं, हंसिया के म्यान नहीं ।
रू० गधेड़ै में ग्यान कोनी, मूसळ कै म्यान कोनी ।

११३५. गधेड़ो कुरड़ी पर राजी ।
गधा घूरे पर ही संतुष्ट और प्रसन्न रहता है ।
रू० गधेड़ो कुरड़ी देख कर भूंकै ।

११३६. गधै की लीद का पापड़ बर्णै तो उड़द मूंग नै कुण पूछै ?

गधे की लीद से ही पापड़ तैयार हो जाएँ तो फिर उरद और मूंग को कौन पूछे ?

११३७. गधै नै घी देवै, 'क मेरी आंख फोड़ै ।

गधे को घी पिलाया जाए तो वह कहता है कि मेरी आँख फोड़ी जा रही है ।

ना समझ व्यक्ति उपकार को भी अपकार समझता है ।

११३८. गधै नै नुहायां घोड़ो थोड़ो ई होज्या ।

गधे को नहलाने से वह घोड़ा थोड़े ही बन जाएगा ।

११३९. गधो घोड़ो एक भाव ।

गधा और घोड़ा एक मोल !

जहां गुण-अवगुण की कोई परख न हो ।

११४०. गम खाणी भोत मुसकल ।

सहनशीलता रखनी अत्यन्त कठिन है ।

सन्दर्भ कथा—एक दिन गांव के ठाकुर ने सेठ से पूछा कि आप इतने मोटे-ताजे हो रहे हैं, भला क्या खाते हैं ? सेठ ने उत्तर दिया कि हम गम खाते है । ठाकुर बोला कि तब तो हम भी गम खाया करेंगे । सेठ ने ठाकुर की बात का प्रतिवाद करते हुए कहा कि आप से गम नहीं खाया जाएगा, इसे खाना बहुत मुश्किल है। ठाकुर बोला कि खाया क्यों नहीं जाएगा, हम अवश्य खाएँगे । इस पर सेठ ने पुनः कहा कि 'रांघड़' कभी गम नहीं खा सकता । इस लघुता व्यंजक नाम को सुनते ही ठाकुर ने झट तलवार निकाल ली । इस पर सेठ ने हँसते हुये ठाकुर से कहा कि मैंने तो पहले ही कह दिया था कि आपसे गम नहीं खाया जा सकता, जरासी बात पर तलवार निकाल बैठे । यह सुनकर ठाकुर लज्जित हो गया ।

११४१. गम बड़ी चीज है ।

गम खाना बहुत बड़ी बात है ।

संदर्भ कथा—एक किसान की औरत बदचलन थी और वह अपनी सुसराल न जाकर पीहर में ही रहती थी । एक बार उसका पति उसे लेने के लिये आया तो घर वालों ने उसे उसके साथ भेज दी । राह में दोनों एक कुएँ पर विश्राम के लिये रुके । किसान गहरी निद्रा में सो गया । उसकी स्त्री ने अच्छा मौका देख कर उसे निद्रावस्था में ही कुएँ में डाल दिया और अपने बाप के घर आकर कह दिया कि उसका पति उसे जंगल में छोड़ कर चला गया । उधर किसान को किसी ने कुएँ से निकाल दिया और वह अपने घर आ गया ।

समय के साथ पीहर में उसकी कद्र कम हो गई तो वह अपने पति के पास चली आई। कालान्तर में उसके बेटे-पोते हो गये। एक दिन किसान अपने नन्हें पोते को गोद में लिये खेला रहा था और कहता जाता था—गम बड़ी, भाई गम बड़ी। जब वह बहुत देर तक ऐसे ही कहता रहा तो उसकी औरत ने पूछा कि आज यह क्या रट लगाई है? किसान ने उत्तर दिया कि उस दिन वाली बात भूल गई क्या? यदि मैं गम नहीं खाता तो आज यह पोता कहाँ से आता? पति की यह बात सुनते ही वह एकदम लजा गई।

रू० (१) गम बड़ी गम सार।

(२) गम खाणा चीज बड़ी है, कोई देखो नी गम खाय कै।

११४२. गम्योड़ी खेती अर कमायोड़ी चाकरी बराबर।

खेती बिगड़ भी जाये तो भी कमाई हुई नौकरी के बराबर तो हो ही जाती है।

११४३. गया बदरी काया सुधरी।

बदरीजी की यात्रा करने से काया सुधर जाती है।

११४४. गयेड़ै न भूलज्या, आयेड़ै नै कोनी भूलै।

गये हुये को भूल जाते हैं, लेकिन आये हुये को नहीं भूल पाते।

समय पाकर मृत व्यक्ति को तो भूल जाते हैं, लेकिन उस समय मातमपुरसी के लिये आने वाले की याद बनी रहती है।

११४५. गये बिचयारे रोजड़े, बाकी रहे नौ-बीस।

अब तो बेचारे रोजे चले ही गये, केवल नौ और बीस अर्थात् उन्नतीस ही तो और रहे हैं।

संदर्भ कथा—एक मियांजी थोड़ी देर भी भूखे नहीं रह सकते थे। एक बार काजी के अधिक कहने-सुनने पर उन्होंने पूरे महीने भर रोजे रखने का वादा कर लिया। जैसे-तैसे करके उन्होंने बड़ी कठिनाई से पहला दिन व्यतीत किया। लेकिन जब शाम को खाने के लिये बैठे तो इतमीनान से बोले अब तो बेचारे रोजे गये ही समझो, अब केवल उन्नतीस रोजे ही तो शेष रहे हैं।

११४६. गयो बरस पूर्वा बाळै।

सूर्य पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र पर हो और इन दिनों में वर्षा हो जाये तो इनसे वर्ष भर के अकाल सम्बन्धी दोषों का निराकरण हो जाता है।

११४७. गयो हो नमाज छुटावण नै, रोजा और गळै घलग्या।

गये तो थे नमाज छुड़वाने, लेकिन रोजे और गले पड़ गये।

सन्दर्भ कथा—एक गरीब मिया जंगल से लकड़ी लाकर अपना निर्वाह किया करता था। एक दिन वह काजी के घर लकड़ी का भार डालने गया

तो काजी ने उससे पूछा कि तुम पांच वक्त की नमाज पढ़ते हो या नहीं ? मियां ने उत्तर दिया कि मैं तो किसी प्रकार भाग दौड़कर अपना गुजारा चला पाता हूँ, नमाज पढ़ने के लिये मुझे समय ही नहीं मिल पाता । इस पर काजी ने उसे बहुत ऊँच नीच समझाया और दोजख की यातनाओं का भय दिखला कर उसे नमाज पढ़ने के लिए मजबूर कर दिया । मियां ने कुछ दिनों तक तो जैसे-तैसे करके नमाज पढ़ी, लेकिन वह शीघ्र ही उकता गया और नमाज छुड़वाने के लिये पुनः काजी के घर गया । काजी ने उसकी बात को अनसुनी करते हुए उससे कहा कि पांच वक्त की नमाज गुजारने लगे हो यह तो अच्छी बात है, लेकिन अब रमजान का महीना शुरू हो रहा है, इसलिये पूरे महीने रोजे भी जरूर रखो । काजी की बात सुनकर मियां पछताने लगा कि मैं तो नमाज छुड़वाने के लिये आया था लेकिन यहाँ आते ही रोजे और गले पड़ गये ।

११४८. गरज को के मोल ?

गरज का क्या मोल ? अपनी गरज पूरी करने के लिए मुँह मांगी कीमत चुकानी पड़ती है ।

रू० (१) गरज को मोल है ।
(२) गरज दीवानी होवै ।
(३) आपकी गरज गधै नैं बाप कैवणो पड़ै ।

११४९. गरज मिटी, गूजरी नटी ।

गरज पूरी होते ही गूजरी नट गई ।

पद्य–(१) गरज दीवानी गूजरी, नूंत जिमावै खीर ।
गरज मिटी गूजरी नटी, छाछ नहीं रे बीर ।
(२) गरज दीवानी गूजरी, अब आई घर कूद ।
सावण छाछ न घालती, भर बैसाखां दूध ॥
(सांवण छाछ न घालती, जेठ परोसै दूध)

११५०. गरज मिटी रै गांगला, गाँव सें आटो मांगल्या ।

जब तक बाबाजी को चेले की गरज थी, तब तक तो उसकी बड़ी खुशामद करते थे । लेकिन गरज पूरी होते ही उससे कह दिया कि यों बैठे-बैठे काम नहीं चलेगा, गाँव में जाकर आटा माँग लाया कर ।

११५१. गरजै जिको बरसै कोनी ।

जो गरजता है वह बरसता नहीं ।

रू० गरजै सो बरसै नहीं, बरसै घोर अंधार ।

११५२. गरबै मतना गूजरी, देख मटूकी छाछ ।
नवसै हाथी घूमता, राजा नळ कै बार ।।

हे गुजरी ! मथनी भर छाछ देख कर गर्व मत कर, कभी राजा नल के द्वार पर नौ सो हाथी झूमते थे, लेकिन उसे भी दर-दर भटकना पड़ा, फिर तू तो किस गिनती में है ?

जब कोई व्यक्ति थोड़ीसी सम्पत्ति पाकर ही घमंड में भर जाए ।

रू० सेरां सोनो पैरती, मोत्यां मरती भार ।
सो कासी कै चौवटै, हरिचंद बेची नार ।।

११५३. गरीब की हाय बुरी ।

गरीब की हाय बुरी होती है ।

गरीब को मत सता, गरीब रो देगा ।
गरीब की हाय पड़ी तो जड़ा मूल से खो देगा ।

११५४. गरीब को के दातार अर मालदार को के सूंजी ।

गरीब का क्या दातार और मालदार का क्या कंजूस ?

गरीब अधिक से अधिक जितना दे सकता है, उतना देना मालदार के लिए मामूली बात है ।

११५५. गरू की चोट, बिदया की पोट ।

गुरु की मार से विद्या आती है ।

रू० (१) गरू मारै घम-घम, विदया आवै छमछम ।
(२) चोटी करै चमचम, विदया आवै घमघम ।।

११५६. गरू कवै ज्यूं करणो, पण गरू करै ज्यूं नईं करणो ।

शिष्य को गुरु जैसा कहे, वैसा करना चाहिए, लेकिन जैसा गुरु करे उसकी देखा-देखी वैसा नहीं करना चाहिए ।

११५७. गरु गुड़ ई रैया, चेला चीणी होग्या ।

शिष्य गुरु से भी अधिक तेज हो गया ।

११५८. गरु चेलो लालची, दोनूं खेलै डाव ।
दोनूं भेळा डूबसी, बैठ पथर की न्याव ।।

गुरु और चेला दोनों लालची हैं और एक दूसरे से बाजी मारने के लिये परस्पर दांव खेल रहे हैं, इसका परिणाम यह होगा कि दोनों ही डूबेंगे ।

११५९. गरु सैं चेला आगळा ।

निश्छल भाव से सेवा करने पर शिष्य अपने गुरु से भी आगे बढ़ जाता है ।

पद—गुरु गूंगा गुरु पांगळा, गुरु देवां का देव ।
गुरां सैं चेला आगळा करै गुरां की सेव ।

रू० गुरु से चेला [illegible] ।

११६०. गळियारै में टट्टी बैठे, उलटा घुरिया काढै ।
गली में टट्टी बैठे और उल्टे आंखें दिखलाये ।
स्वयं बुरा काम करे और तिस पर भी दूसरों को डांट बताये ।

११६१. गळै बंध्यो ढोल तो बजायां ई सरै ।
जब गले में ढोल बंध ही गया तो उसे बजाना भी पड़ेगा ।
इच्छा न होते हुए भी जब किसी काम की जिम्मेदारी सिर पर आ पड़ती है तो उसे निभाना ही पड़ता है ।

११६२. गळै रोहणी म्रिग तपै, आदरा बाजे बाय ।
डंक कहै हे भड्ळी, दुरभिख होण उपाय ।।
रोहिणी गल जाये, मृगशिरा तपे और आर्द्रा नक्षत्र में तेज वायु चले तो इन लक्षणों से अकाल पड़े ।

११६३. गहणो अर गनायत ओड़ी बरियां आडो आवै ।
गहने और सम्बन्धी आपत्काल में काम आते हैं ।

११६४. गहणो धायां को सिणगार, भूखां को आधार ।
गहना सम्पन्न का शृंगार और विपन्न का आधार ।
विपत्ति के समय जब और कोई सहारा न हो तब आदमी गहनों को बेचकर या उन्हें गिरवी रख कर काम चलाता है ।

११६५. गांगै की गाय, सांगै को बाछो ।
गाय किसी की, बछड़ा किसी का ।
दोनों में परस्पर कोई सम्बन्ध नहीं ।

११६६. गॉव करे सो गै'ली करै ।
गाँव के लोग जैसा करते हैं, पगली भी उनकी देखा देखी वैसा ही करती है ।

११६७. गॉव कसौटी होवै ।
दुनिया कसौटी होती है जो हर भली-बुरी बात को परख लेती है ।

११६८. गाँव की नेपै बाड़ा ई कहदे ।
गाँव की उपज बाड़े ही बतला देते हैं ।
रू० गाँव की सोभा बाड़ा ई कह दे ।

११६९. गाँव को छोरो छोरो, दूसरै गाँव को छोरो बींद ।
अपने ही गाँव में ब्याहने वाले दूल्हे की उतनी कद्र नही होती, जितनी दूसरे गाँव से आने वाले दूल्हे की ।
पद्य—पांच कोस को आणो जाणो, बीस कोस को बड़ो ठिकाणो ।
तीस कोस माथै को मोड़, गाँव गुंवाई गंडक ठौड़ ।।

११७०. गाँव कोटवाळी आपै ई सिखा देवै ।
गाँव के लोग परस्पर एक दूसरे का भेद देकर अकुशल कोतवाल को भी होशियार बना देते हैं ।

११७१. गाँव को मूँ'डो कुण पकड़ै ?
गाँव का मुँह कौन पकड़े ?
लोगों की जबान पर कौन काबू करे ?
रू० दुनियां की जबान कुण पकड़ै ?

११७२. गांव गयो अर सूत्यो जागै ।
दूसरे गाँव गया हुआ आदमी न जाने कब लौटे, सोया हुआ आदमी न जाने कब जगे । दोनों ही बातें अनिश्चित ।

११७३. गाँव-गाँव खेजड़ी, गाँव-गाँव गूगो ।
गाँव-गाँव में खेजड़ी (शमी) वृक्ष हैं और गाँव-गाँव में गोगा है ।
राजस्थान के गाँव-गाँव में गोगाजी की मान्यता है और गाँवों में गोगाजी का स्थान प्रायः खेजड़ी के वृक्ष के नीचे होता है ।

११७४. गाँव-गाँव में होतो नाथो, तो क्यां नै लोग माळवै जातो ।
प्रत्येक गाँव में यदि नाथा जैसे दानशील व्यक्ति होते तो अकाल के समय लोगों को मालवा क्यों जाना पड़ता ।
नाथा=कोई व्यक्ति विशेष, जिसने अकाल के समय लोगों को यथोचित रूप से अन्न वितरित किया ।

११७५. गाँव गैल ढेढवाड़ो सगळै ई होवै ।

११७६. गाँव गैं'ली नै गिणै नीं, गैं'ली गाँव नै गिणै नीं ।
गाँव के लोग पगली को नहीं बदते तो पगली भी गाँव के लोगों को कुछ नहीं गिनती ।

११७७. गाँव तो वस्यो ई कोनी, मुंगता तो आ खड़्या रैया ।
गाँव तो बसा ही नहीं, भिखमंगे पहले ही आ खड़े हुये ।
रू० (१) गाँव तो वस्यौ ई कोनी, मालजादां का माचा तो आघल्या ।
(२) गहण तो लाग्यो ई कोनी, मुंगता पैली ई फिरग्या ।

११७८. गाँव बळै, डूम त्यूंहारी मांगै ।
गाँव तो जल रहा है और डोम त्योहारी मांग रहा है ।
त्यूंहारी=त्योहार के अवसर पर कारुओं को दिया जाने वाला अन्न, गुड़ आदि ।

११७९. गाँव बसायो वाणियों, पार पड़ै जद जाणियों ।
वनिये ने गांव बसाया है, लेकिन जब पार पड़ जाए तभी जानें ।

११८०. गाँव मांय तो कूतरा, रोही मांय सियार।
ये जो रोवै तो पड़ै गोहत्यारो काळ ।।
गाँव में कुत्ते और जंगल में सिआर रोयें तो घोर अकाल पड़े जिसमें गायें बड़ी संख्या में मरें।

११८१. गाँव में घर कोनी, रोही में खेत कोनी।
गाँव में रहने के लिये घर नहीं, जंगल में जोतने के लिने खेत नहीं।
सर्वथा अकिंचन और अभावग्रस्त।

११८२. गाँव में पड़्यो भजाड़ो, के करैगो स्यां'मी तारो ?
जब किसी भी भय की आशंका से गाँव में भगदड़ मची हो तब सामने का तारा क्या देखना।

११८३. गाँव म्हारो, नांव थारो।
गाँव हमारा, नाम तुम्हारा।
नाममात्र के मालिक तुम, वास्तविक मालिक हम।
रू० घर बार थारा, ताळा कूंची म्हारा।

११८४. गाछ चढे नै दो दीखै।
वृक्ष पर चढे हुए को एक के बदले दो दिखलाई पड़ते हैं।

संदर्भ कथा– एक बागवान की औरत पुंश्चली थी। एक दिन बागवान अपने बाग में एक वृक्ष पर चढ़ा हुआ फल तोड़ रहा था एवं उसकी औरत किसी दूसरे वृक्ष के नीचे अपने जार से बातें कर रही थी कि बागवान की नजर उन दोनों पर पड़ गई। उसने अपनी औरत को डांट कर पुकारा कि तुम्हारे पास यह कौन खड़ा है ? औरत ने कहा कि कोई नहीं है। इस पर बागवान वृक्ष पर से उतर कर उनकी ओर चला। इसी बीच स्त्री ने अपने जार को भगा दिया, इसलिये जब उसका पति वहाँ पहुँचा तब वह अकेली ही थी। तब बागवान की स्त्री उसी वृक्ष पर चढ़ी जिस पर से उसका पति उतरा था। वृक्ष पर चढ़ कर उसने अपने पति से पुकार कर पूछा कि तुम्हारे पास यह औरत कौन है ? तुम किससे बतिया रहे हो ? बागवान ने उत्तर दिया कि कोई नहीं है। इस पर औरत ने कहा, तुम झूठ बोल रहे हो, मैं अभी वहाँ आ रही हूँ। यों कहकर वह शीघ्रता से वृक्ष पर से उतर कर वहां पहुँची तो वहाँ केवल उसका पति ही था। इस पर बागवान ने उसे आश्वस्त करते हुये कहा कि यहाँ कोई औरत नहीं थी, यह सब इस वृक्ष का ही दोष है। इस पर चढ़ने वाले को एक के स्थान पर दो दिखलाई पड़ते है।
रू० ऊंट चढ़ै नै दो दीखै।

११८५. गाजर की पूंगी वाजी, तो वाजी नई तोड़ खाई ।

गाजर की पूंगी वजी तो वजी, नहीं तोड़ खाई ।

गाजर की पूंगी न भी वजे तो खाने के काम तो ग्रा ही जाती है । इसलिए वजे तो ठीक, न वजे तो कोई हानि नहीं ।

रू० गाजर की पूंगी वाजी जितरै वाजी, फेर तोड़ खाई ।

११८६. गाजा-वाजा सै बींद कै वाप पर ।

सारे गाजे वाजे दूल्हे के वाप पर ।

११८७. गाजै वाजै करै डफांण, वाय लंकाऊ दूध उफाण ।
रंग रूप जे घणां जतावै, तो यूं ग्वाळचो काळ वतावै ।।

ग्राकाश में वादलों की गर्जना हो, विजलियां चमकें, वादल विभिन्न प्रकार के रूप रंग दिखलाएँ ग्रौर उस समय यदि दक्षिण दिशा का वायु हो तो उस वर्ष ग्रकाल पड़े ।

११८८. गाजो न वाजो, वींदराजा ग्राय विराज्यो ।

न गाजे न वाजे, दूल्हे राजा ग्राय विराजे ।

११८९. गाडर ल्याया ऊन नै, वैठी चरै कपास ।
वहूज ल्याया काम नै, वैठी करै फरमास ।।

भेड़ को लाये तो थे ऊन के लिए लेकिन वह तो उल्टे वैठी-वैठी कपास चर रही है । इसी प्रकार वहू को लाये तो थे घर का काम-धंधा करने के लिए ग्रौर वह वैठी वैठी फरमाइशें करती रहती है ।

रू० इण वहुग्रड़ नै देख कर, उठै काळजै ग्राग ।
दियो वाजरो पीसणो, चाव गई निरभाग ।।

११९०. गाडिये लुहार को किसो गांव ?

गाड़िये लुहार घुमन्तु होते हैं, ग्राज यहाँ तो कल वहाँ । इसलिए उनका कोई एक निश्चित गाँव नहीं होता ।

११९१. गाडी को पहियो ग्रर मरद की जवान फिरती ई चोखी ।

गाड़ी के पहिये का तो फिरते रहना ठीक है, इसी से वह गतिशील रहती है । लेकिन ग्रादमी ग्रपनी जवान (वचन) से न फिरे यह ग्रपेक्षा की जाती है । इसलिए जो ग्रादमी ग्रपनी जवान को वदलते रहते हैं, उनके लिए व्यंग्य में ही ऐसा कहा गया है ।

११९२. गाडी को फाचरो, लुगाई को चाचरो ठोक्यां ई काम दे ।

फाचरो = लकड़ी के पहियों में लगाई जाने वाली काठ की कीलें ।

चाचरो = सिर का ग्रग्रभाग ।

११९३. गाडी नै देख कर लाडी का पग सूजै ।

गाड़ी को देख कर लाडी (छोटी वहू) के पैर फूल जाते हैं ।

गाड़ी को सामने देख कर कोई पैदल क्यों चलना चाहे ?

११९४. गाडै नै देख कर पाडे का पग सूजै ।

गाड़े को देख कर भैंसे के पैर भारी हो जाते हैं कि अब इसे खींचना पड़ेगा।

११९५. गाडै में छाजलै को के भार ?

गाड़े में छाज का क्या भार ?

गाड़े का मालिक छाज से गाड़े में सामान भर कर छाज को भी उसके ऊपर रख देता है। संभवतः इसी से यह कहावत चल पड़ी है।

११९६. गाडै लीक सो गाडी लीक ।

बड़ों की लीक पर ही छोटे चलते हैं।

११९७. गाडो सी भू को दो लातां सें के बीगड़ै ?

संड-मुसंड बहू का दो लातों से क्या बिगड़ता है ?

समर्थ व्यक्ति के लिए छोटी-मोटी क्षति कोई महत्त्व नहीं रखती।

११९८. गाणो अर रोणो सै जाणै ।

गाना और रोना सब जानते हैं।

११९९. गादड़ बिना नाड़ी कोनी कटै ।

गीदड़ के बिना नाड़ी नहीं कटती, जरूर उसी ने नाड़ी काटी है।

नाड़ी = बिना कमाये हुए चमड़े की डोरी।

१२००. गादड़ मारी पालखी, 'मे धड़ूक्यां हालसी ।

गीदड़ पलथी लगा कर बैठ गया है, अब वह वर्षा की गरज सुन कर ही उठेगा।

इस कहावत का प्रयोग उस कच्चे दिल वाले व्यक्ति के लिए किया जाता है, जो किसी बात की घोषणा तो बड़ी दृढ़ता के साथ करता है, लेकिन जरा-सा डर दिखलाते ही विचलित होकर भाग खड़ा होता है।

संदर्भ कथा—एक गीदड़ जंगल में स्थित तालाब की पाल पर मिट्टी की चौंतरी बना कर बैठ गया। जो भी छोटे-मोटे जानवर तालाब पर पानी पीने के लिए आते, उनसे वह घुड़क कर कहता कि मेरी आज्ञा के बिना तुम पानी नहीं पी सकते। मैं तुम्हें तभी पानी पीने की आज्ञा दूंगा कि जब तुम यों कहोगे—

रूपै की तेरी चूंतरी, सोनै ढोळी है ।
कानां में तेरै कोकरू, जाणैं सेठ बैठ्यो है ।।

बेचारे जानवर मजबूरन ऐसा कहते और पानी पीकर चले जाते।

थोड़ी ही देर में एक लोमड़ी वहां पानी पीने के लिए आई तो गीदड़ ने उससे भी वैसा ही कहा। लेकिन लोमड़ी चालाक थी, अतः उसने गीदड़ से कहा कि प्यास के मारे मेरे से बोला नहीं जाता। पहले पानी पीलूं, फिर तुम जैसा कहोगे, वैसा ही कह दूंगी। इस पर गीदड़ ने लोमड़ी को पानी

पीने की इजाजत दे दी। पानी पीकर वह जाने लगी तो गीदड़ ने उसे पुनः टोका। इस पर लोमड़ी बोली—

माटी की तेरी चूंतरी, गोबर ढोळी है।
कानां में तेरै खूंसड़ा, जाणै ढेढ बैठ्यो है।।

इतना सुनते ही गीदड़ गुस्से में भर कर उसके पीछे दौड़ा। लोमड़ी शीघ्रता से भाग कर एक ऊंचे वृक्ष पर चढ गई और गीदड़ को सुना कर बोली—

लूंकां चढगी बांस, उतरसी छठै मास।

लेकिन गीदड़ उसके भुलावे में नहीं आया। वह पलथी लगा कर वहीं बैठ गया और उसने पूरे दम-खम के साथ यह घोषणा कर दी—

गादड़ मारी पालखी, 'मे घड़ूक्यां हालसी।

इस पर लोमड़ी ने दूसरी युक्ति सोची। वह वृक्ष पर और भी ऊंची चढ गई और उत्तर दिशा में दूर तक देखने का अभिनय करती हुई बोली—

कांधै जेळी गंडक घणां, चाल्या आवै च्यार जणां

अर्थात् चार आदमी जिनके कंधों पर 'जेळियां' हैं और जिनके साथ बहुत से कुत्ते हैं, इधर ही चले आ रहे हैं।

कुत्तों के आने की बात सुन कर गीदड़ का धैर्य छूट गया और वह दुम दबा कर भाग खड़ा हुआ। तब लोमड़ी भी हँसती हुई वृक्ष पर से उतर कर अपनी राह चली गई।

जेळी = लकड़ी या लोहे के दो लम्बे सींगों वाला एक कृषि उपकरण जिससे कँटीली झाड़ियां आदि हटाई जाती हैं।

१२०१. गादड़ियोजी ग्यारस करै, कैंकी काटै नाड़ी ?

गीदड़ ने आज एकादशी का व्रत कर रखा है, भला वह किसकी नाड़ी काटे।

संदर्भ कथा—एक हिरन, कौवा और गीदड़ दोस्त थे। वे एक जाट के खेत में खाने के लिए जाया करते थे। एक दिन जाट ने खेत में जाल फैलाया तो हिरन उसमें फँस गया। कौवे ने गीदड़ से जाल की डोरी काटने के लिए कहा तो गीदड़ ने बहाना बना दिया कि मैंने तो आज एकादशी का व्रत रखा है, इसलिए मैं किसी चीज को मुँह नहीं लगाता। लेकिन वस्तुतः उसके मन में कुटिलता थी और उसे आशा थी कि जाट जब हिरन को मारेगा, तो उसे भी कुछ मिलेगा।

तब कौवे ने हिरन को एक युक्ति बतलाई। इसके अनुसार जब अगले दिन जाट खेत में आया तो हिरन मृतक के समान होकर पड़ रहा। उसे मरा समझ कर जाट अपने जाल को समेटने में लग गया और जब वह हिरन से दूर निकल गया तो वृक्ष पर बैठा कौवा कांव-कांव करने लगा। कौवे का संकेत पाते ही हिरन फुर्ती से उठ कर भाग गया। जाट को उसकी धूर्तता

पर बड़ा गुस्सा आया। उसने उसे मारने के लिए अपनी कुल्हाड़ी फेंकी। लेकिन हिरन तो बच गया और वह कुल्हाड़ी गीदड़ को लगी जो हिरन का मांस खाने की आशा में वहीं छुपा हुआ था। गीदड़ तुरंत ही मर गया—

गादड़ियो जी ग्यारस करै, कँकी काटै नाड़ी।
भायलै पर दगो बिचारयो, कांधै पड़ी कुहाड़ी।।

१२०२ **गादड़ै की उतावळ सें बेर कोनी पाकै।**

गीदड़ की उतावली से बेर नहीं पकते। वे तो समयानुसार ही पकते हैं।

रू० (१) गादड़ै की उतावळ सें काकड़िया कद पाकै?

(२) लूंकड़ी की उतावळ सें बेर कोनी पाकै।

कहते हैं कि लोमड़ी बेरों को बिना चबाये यों हीं निगल जाती है जो शौच के साथ ज्यों के त्यों निकल जाते हैं। इस संदर्भ की एक कथा भी है जिसका पद्य यों है—

अल्ला तेरी अलड़ी, पके बेर पाये।
रेत लगी न फूस लग्यो, भुंडै पर ठैराये।।

१२०३. **गादड़ै की मौत आवै जद गांव कानी भागै।**

जब गीदड़ की मौत आती है तो वह गाँव की तरफ भागता है, जहां उसे कुत्ते चीर डालते है।

१२०४. **गादड़ै कै मूंडै न्याय है।**

गीदड़ के मुँह न्याय है। वह जो कहदे, वही न्याय है।

संदर्भ कथा—(१) एक नर-भक्षी शेर को जंगल में किसी ने पिंजड़े में बंद कर दिया। एक ब्राह्मण उधर से गुजरा तो शेर ने बड़े विनीत स्वर में उससे प्रार्थना की कि वह उसे पिंजड़े से बाहर निकाल दे। शेर ने ब्राह्मण को पूरा भरोसा दिलाया कि वह उसे खायेगा नहीं। लेकिन ब्राह्मण द्वारा पिंजड़ा खोले जाने पर जब शेर बाहर आया तो उसने ब्राह्मण को खाना चाहा। ब्राह्मण ने बहुत प्रार्थना की, लेकिन वह नहीं माना। तब ब्राह्मण ने शेर से कहा कि इस हरे वृक्ष से पूछलो कि मुझे मारना उचित है या अनुचित। दोनों की बातें सुनकर वृक्ष बोला—आदमी बड़ा कृतघ्न होता है। मैं उसे शीतल छाया देता हूं, मीठे फल देता हूँ, फिर भी वह मुझे निर्ममता से काटता है और जलाता है। इसलिए उचित है कि शेर इस आदमी का भक्षण करले। तब वे दोनों एक गाय के पास पहुँचे, लेकिन गाय ने भी शेर के पक्ष में ही फैसला सुनाया। इसी समय ब्राह्मण को एक गीदड़ दिखलाई पड़ा तो उसने शेर से कहा कि इस गीदड़ से और पूछलें, यह जो निर्णय दे देगा, वही मुझे मान्य होगा। शेर ने उसकी बात मान ली। ब्राह्मण ने गीदड़ से बात कही तो गीदड़ बोला—तुम्हारा कथन अविश्वसनीय है। जंगल का राजा शेर

कभी पिंजड़े में बंद नहीं हो सकता। तब दोनों उसे पिंजड़े के पास ले गये और शेर ने ब्राह्मण की बात का समर्थन करते हुए कहा कि मैं इस पिंजड़े में बन्द था। लेकिन गीदड़ ने उससे कहा कि मुझे इसमें घुस कर दिखलाओ। शेर पिंजड़े में चला गया। तब गीदड़ ने ब्राह्मण से पूछा कि क्या पिंजड़े का दरवाजा बन्द था और इसे सांकल लगी हुई थी ? ब्राह्मण ने स्वीकृति सूचक सिर हिलाया तो गीदड़ ने कहा कि मुझे वैसा ही करके दिखलाओ। ब्राह्मण ने पिंजड़े का फाटक बन्द करके सांकल लगा दी। तब गीदड़ ने उससे कहा कि अब न्याय हो गया, शेर को पिंजड़े में बन्द रहने दो और तुम अपनी राह लगो।

(२) एक ठाकुर किसी तेली के रुपये मांगता था। एक दिन वह अपनी घोड़ी पर सवार होकर तेली के गाँव गया। तेली ने कहा कि वह पांच-सात दिनों में रुपये दे देगा। ठाकुर वहां खा-पीकर सो गया। रात को ठाकुर की घोड़ी ने एक बछेड़ा प्रसव किया तो तेली ने उसे लेजाकर अपनी घानी से बांध दिया। सवेरे जब ठाकुर को इस बात का पता चला तो तेली ने कहा कि यह बछेड़ा मेरी घानी ने प्रसव किया है। उसने दो आदमियों की झूठी गवाहियां भी दिलवादीं। लाचार ठाकुर अपनी घोड़ी को लेकर चल पड़ा, लेकिन घोड़ी अपने बछेड़े को छोड़ कर जाना नहीं चाहती थी। वह बार-बार अड़ रही थी और ठाकुर उसे मार-पीट कर लिये जा रहा था।

ऊंचे टीले पर बैठे एक गीदड़ ने यह सब देख कर ठाकुर से पूछा तो ठाकुर ने सारी घटना सुना दी। गीदड़ ने कहा कि तुम हाकिम के पास पुकार करो, मैं तुम्हारी गवाही दूंगा। ठाकुर ने अपने गांव पहुंच कर तेली पर दावा किया तो हाकिम ने तेली को तलब किया। तेली ने हाकिम के सामने उपस्थित होकर कहा कि बछेड़ा उसकी घानी ने ही जना है और उसने अपने कथन के समर्थन में दो गवाहियां भी दिलवादीं।

अब हाकिम ने ठाकुर से अपना गवाह पेश करने के लिए कहा तो ठाकुर ने गीदड़ को पेश किया। गीदड़ ने कीचड़ और राख में लोट-पोट कर अजीब सूरत बना रखी थी और वह बार-बार ऊंघ रहा था। हाकिम के पूछने पर गीदड़ ने कहा कि हुजूर, रात को समुद्र में आग लग गई थी सो रात भर उसे बुझाने में जुटा रहा। इसी कारण कीचड़ और राख में सना हुआ हूँ और थकावट व नींद के मारे आंखें भी नहीं खोल पा रहा हूँ। हाकिम ने पूछा कि क्या कभी समुद्र में भी आग लगा करती है ? गीदड़ ने जवाब दिया कि जब तेली की निर्जीव घानी एक बछेड़े को जन्म दे सकती है तो समुद्र में आग क्यों नहीं लग सकती ? गीदड़ की बात सुनकर हाकिम जान

गया कि तेली सर्वथा भूठा है। इसलिए उसने तेली और उसके भूठे गवाहों को सजा सुनाते हुए ठाकुर को उसका बछेड़ा दिला दिया।

१२०५. **'गायक अर मौत को ठिकाणो कोनी, कद आज्या।**

ग्राहक और मौत का कोई ठिकाना नहीं कि कब आ जाए।

१२०६. **'गायक अर राम आगै रोजे ई रोजे।**

ग्राहक और भगवान् के आगे तो निरन्तर और अधिक के लिए ही मांग करते रहना चाहिए।

१२०७. **गाय का भैंस तळै अर भैंस का गाय तळै करै।**

इधर का उधर और उधर का इधर करते रहना।

१२०८. **गाय की भैंस के लागै ?**

गाय और भैंस का भला क्या रिश्ता ?

रू० अलड़ी की मां मलड़ी की के लागी ?

१२०९. **गाय गई अर गळांवड़ो ई लेगी।**

गाय गई और साथ में 'गळांवड़ा' भी ले गई।

गळांवड़ा = गाय-भैंस आदि के गले में बांधी जाने वाली रस्सी आदि का गोल पट्टा।

रू० कुत्ती गई अर पटियो भी लेगी।

१२१०. **गाय दूं'ई अर गंडकां नै गेरी।**

गाय का दूध निकाला और कुत्तों को पिलाया।

घर में मां या पत्नी से धन छीना और किसी कुलटा को दिया।

सुपात्र से छीन कर कुपात्र को देना।

१२११. **गाय न बाछी, नींद आवै आछी।**

जो घर में गाय-बछिया नहीं रखता वह आराम से निश्चिंत होकर सोता है।

१२१२. **गाय न्याणै की, भू घराणै की।**

गाय 'न्याणै' की लानी चाहिए और बहू अच्छे घराने की।

'न्याणा' = वह रस्सी जिससे दूध निकालते समय गाय की पिछली टांगें बांधी जाती है। यहां न्याणा की गाय से तात्पर्य है, जो मर्यादा के बन्धन को स्वीकारे। कुछ गायें ऐसी होती हैं जो न्याणा नहीं लगाने देतीं।

१२१३. **गाय मारणी अर गळी सांकड़ी।**

गाय मारने वाली है और गली सँकरी। बचकर निकलने का कोई रास्ता नहीं।

रू० बळद मारणो अर गळी सांकड़ी।

१२१४ **गायां कै भाग को वरसै ।**
गायों के भाग्य से ही वर्षा होती है।
मनुष्य के कर्म तो ऐसे हैं कि जिनके कारण वर्षा न हो, लेकिन भगवान् गायों की ओर देखकर वर्षा करते हैं।

१२१५. **गायां तो उछरगी अर पोटा लैरनै छोड़गी ।**
गायें तो जंगल में निकल गईं और अपने पीछे गोबर छोड़ गईं।
समर्थ और दिलदार व्यक्ति तो चले गये, पीछे केवल निठल्ली और अकर्मण्य संतान रह गई।

१२१६. **गायां भायां बामणां, भाज्यां ई भला ।**
गायों, भाइयों और ब्राह्मणों से बच कर रहना ही अच्छा है, क्योंकि इनकी गलती होने पर भी इन्हें मारना या इनसे झगड़ा करना उचित नहीं।

१२१७. **गाया-गाया सै गीतां में आ ज्यासी ।**
जो भी गाया है, वह सब गीतों के अन्तर्गत आ जाएगा।

१२१८. **गारड़ बिना झैर कोनी ऊतरै ।**
गारुड़ी के बिना सांप का जहर नहीं उतरता।

१२१९. **गाल-थाप में के आंतरो ?**
गाल और थप्पड़ में क्या दूरी ?
प्रमाण लगे हाथ दिया जा सकता है।

१२२०. **गाळ्यां सें किसा गूमड़ा नीकळै ?**
गालियों से फोड़े थोड़े ही निकलते हैं ?
किसी के द्वारा गाली देने पर उपेक्षा का भाव।

१२२१. **गावतै डूम को अर रोवतै टाबर को के बीगड़ै ।**
गाते हुए डोम का और रोते हुए बच्चे का क्या बिगड़ता है।
ये तो इनकी स्वभावगत विशेषताएँ हैं।

१२२२. **गावै तो सीठणां, लड़ै तो गाळ ।**
गाये तो सीठने गाये और लड़े तो गाली दे।
जो गाने और लड़ने दोनों में ही गाली का प्रयोग करे।
यदि किसी को यों ही गाली दी जाए तो वह नाराज होता है। लेकिन वही गाली जब कोई समधिन अपने सगों को गाती है तो उन्हें 'सीठना' कहा जाता है और सुनने वाले उनका बुरा नहीं मानते बल्कि आनन्दित होते हैं।

१२२३. **गिण कर पोवै समाळ कर खा ।**
जो गिन कर रोटी पोये और संभाल कर खाये, उसमें भला क्या अन्तर पड़ेगा।

१२२४. गिण्यो पान गोपाळो चरै ।
गोपाला अन्न गिने हुए पान ही चर रहा है; कुछ न कुछ शीघ्र ही घटने वाला है ।

१२२५. गिरस्ती कनै कोडी न हो तो दो कोडी को अर साधु कनै कोडी हो तो दो कोडी को ।
यदि गृहस्थी के पास सम्पत्ति न हो तो उसका मूल्य दो कौड़ी भी नहीं होता और यदि साधु के पास सम्पत्ति हो तो उसका मूल्य केवल दो कौड़ी होता है ।

१२२६. गिरस्ती को अेक हाथ लील में अर एक हाथ कसूमै में ।
गृहस्थी का एक हाथ नील में और दूसरा कसूंभे में ।
गृहस्थ में सुख-दुःख लगे ही रहते हैं । कभी-कभी गृहस्थी को हर्ष व शोक की प्रक्रियाएँ एक साथ भी निभानी पड़ती हैं ।
यहाँ नील शोक का और कसूंभा उल्लास का सूचक है ।

१२२७. गिरै जाणै अर डाकोत जाणै ।
अब ग्रह जानें और डाकोत जाने ।
डाकोत (थावरिया) के कहे अनुसार हमने तो क्रूर ग्रहों की शान्ति करवादी, अब ग्रह जानें और डाकोत जाने अर्थात् वही उनसे निवटे ।

१२२८. गिरै बिनां घात नईं, भेद बिनां चोरी नईं ।
घातक ग्रह के विना मृत्यु और भेद के विना चोरी नहीं होती ।

१२२९. गीतां में गाण जोगी न रोज में रोण जोगी ।
न गीत ही गा सकती है, न रो ही सकती है; किसी काम के योग्य नहीं ।
हर दृष्टि से निकम्मा आदमी जो न प्रशंसा के योग्य हो और न मरने पर रोने योग्य ।

१२३०. गुड़ खावै अर गुडियाणी का पच्छ करै ।
गुड़ तो खाये और जिस गुड़ से गुडियानी तैयार हो, उससे परहेज करे ।

१२३१. गुड़ खासी जिको कान विंधासी ।
जो गुड़ खायेगा, उसे कान विंधवाने पड़ेंगे ।
लाभ प्राप्त करने वाले को कष्ट भी झेलना होगा ।

१२३२. गुड़ घालै जिसो ही मीठो होवै ।
भोज्य पदार्थ में जितना गुड़ डाला जाएगा, उसी के अनुरूप वह मीठा बनेगा ।
रू० घी घालै जित्तो ई मीठो होवै ।

१२३३. गुड़ जठै माख्यां, घी जठै कीड़्यां ।
गुड़ पर मक्खियां और घी पर चींटियां पहुँच ही जाएँगी ।
रू० गुड़ जठै मकोड़ा, गढ जठै घोड़ा ।

१२३४. **गुड़ डळियां, घी आंगळियां ।**
डली डली करके गुड़ और उँगली ऊँगली करके घी समाप्त हो जाता है।

१२३५. **गुड़ दियां मरै जिकै नै भैर क्युं देणो ?**
जो गुड़ देने से मर सके, उसे जहर क्यों दिया जाए ?
मीठा बोलने से काम चल जाए तो कटु शब्द क्यों बोले जाएँ ?

१२३६. **गुड़ देकर जी ल्यायोड़ो है ।**
गुड़ के बदले जी (प्राण) लाया हुआ है ।
जो व्यक्ति जरा भी पीड़ा सहन न कर सके, उसके लिए इस कहावत का प्रयोग होता है ।

१२३७. **गुड़ दे नईं छोरी हो जास्यूं ।**
गुड़ दे दो, नहीं तो लड़के से लड़की बन जाऊंगा ।
जरा-जरा सी बात के लिए बड़ा नुकसान कर देने की धमकी देना ।

१२३८. **गुड़ बिनां किसी चौथ, जैतल बिनां किसो रातीजगो ?**
गुड़ बिना कैसी चौथ और जैतल बिना कैसा रतजग्गा ?
चौथ के व्रत में गुड़ का प्रयोग आवश्यक रूप से होता है एवं घरेलू रतजग्गों में जैतलदे का गीत भी अवश्य गाया जाता है।

१२३९. **गुण की पूजा है ।**
गुणों के अनुसार पूजा या प्रतिष्ठा होती है ।
रू० गुण गैल पूजा ।

१२४०. **गुणां का किसा गाडा भरचा जावै ?**
गुणों के कौन से शकट भरे जाते हैं ?
गुण कोई स्थूल वस्तु नहीं कि जिससे शकट भरे जाएँ ।

१२४१. **गुणं कै माल में गधै को के सीर ?**
गधे की पीठ पर लदे बोरे के माल में गधे का क्या साझा ?
रू० गधेड़ी चावळ ल्यावै तो बींनै कुण घालै ?

१२४२. **गुपतदान महापुन्न ।**
गुप्त दान का पुण्य अधिक होता है क्योंकि ऐसे दान में दाता को नाम की भूख नहीं होती ।

१२४३ **गुरु दिन ग्रहण जे होय तो, दुगणो लाभ चौमास ।**
रूपो तेल कपास घी, संग्रह करजो तास ।।
ग्रहण के दिन गुरुवार हो तो रूपा, तेल, कपास और घी का संग्रह करलें, चातुर्मास में इनसे दुगना लाभ होगा ।

१२४४. **गुलगुला भावै, पण गुड़ तेल कठै सैं आवै ?**
गुलगुले खाने की तो बड़ी तमन्ना है, लेकिन गुड़-तेल कहां से आये ?
बिना साधनों के इच्छा पूर्ति कैसे हो ?

पद्य—गुड़ कोनी गुलगुला करती, ल्याती तेल उधारो ।
परींडै में तो पाणी कोनी, वळीतै को दुख न्यारो ।
कड़ायो तो मांग कर ल्याती, पण ग्राटै को दुख न्यारो ।

१२४५. गुवाड़ को जायोड़ो, कीं नै बांप कैवै ?
गाँव के सार्वजनिक चौक में जन्मा बच्चा किसको बाप कहे ?
रू० भगतण को जायो कींनै बाप कैवै ?

१२४६. गूंगा तेरी सैन में, समझै तेरी माय ।
गूंगे के संकेत को उसकी मां ही ठीक से समझ सकती है।
रू० (१) गूंगा तेरी सैन में, समझै कुळ में दोय ।
कै गूंगै की मावड़ी, कै गूंगै की जोय ।।
(२) गूंगा तेरी सैन में, और न समझै कोय ।
कै समझै तेरी मावड़ी, कै समझै तेरी जोय ।।

१२४७. 'गू खायां काळ कोनी कटै ।
विष्टा खाने से अकाल का समय थोड़े ही निकल पाता है ?

१२४८. गूगो चाल्यो गांवां नैं, कुण डाटैगो भावां नैं ?
गोगा-नवमी तक यदि यथोचित वर्षा होती रहे तो फिर अनाज के भावों को कौन रोक सकेगा ?
गोगा नवमी तक पर्याप्त वर्षा होते रहने से अच्छा जमाना होने की उम्मेद हो जाती है। इसलिए न किसान अन्न को रोकना चाहता है और न व्यापारी उसका संग्रह करना चाहता है, जिससे भाव गिरने लगते हैं।

१२४९. गूगो बड़ो 'क राम ?
'क बड़ो तो है जिको ई है, पण सांपां सें बैर कुण बांधै ?
किसी ने पूछा कि गोगा बड़ा है या राम ? तो उत्तर मिला कि बड़ा तो जो है सो ही है, लेकिन गोगा के बड़प्पन को नकार कर सांपों से बैर कौन बांधे ? गोगाजी सांपों के देवता माने जाते हैं और यह लोक विश्वास दृढ है कि गोगाजी के आदेश के बिना सांप किसी को नहीं डसता ।
रू० गांड फाटतो गूगो धोकै ।

१२५०. गूजर किसका पाळती, किसका मित्र कलाळ ?
गूजर किसका आसामी और कलाल किसका मित्र ?

१२५१. गूजर सें ऊजड़ भली ।
गूजर के पड़ौस से तो ऊजाड़ ही अच्छा।
रू० गूजर सें ऊजड़ भली, ऊजड़ सें भली ऊजाड़ ।

१२५२. गेडिया रळग्या ।
आज तो गेडिये मिल गये ।

संदर्भ कथा किसी गाँव के मन्दिर में एक अनपढ़ पुजारी पूजा किया करता था। वह मन्दिर की कोठरी के एक कोने में पन्द्रह गेडिये रखता था और तिथि के बदलने के साथ उनमें से एक गेडिया उठाकर कोठरी के दूसरे कोने में रख देता। इन्हीं गेडियों को गिनकर वह पूछने वालों को बतला दिया करता कि आज अमुक तिथि है। एक दिन जब वह बाहर गया हुआ था तो बच्चों ने दोनों कोनों के सारे गेडिये परस्पर मिला दिये। पुजारी के लौटने पर जब किसी औरत ने मंदिर में आकर पूछा कि पुजारीजी, आज कौन तिथि है तो पुजारी तिथि का पता लगाने के लिये कोठरी में गया। लेकिन वहाँ तो सारे गेडिये रले-मिले पडे थे, अतः वह कोई निर्णय नहीं कर पाया और बाहर आकर उसने पूछने वाली से कह दिया 'आज तो गेडिया रळग्या'।

गेडिया = हाकी स्टिक की तरह मुड़े हुये अग्र भाग वाली मोटी छड़ी।

रू० आज तो वार गेडियां रळग्या।

१२५३. गैल-गैल की घोळ-मथोळ।

पीछे-पीछे की बात गोलमोल अर्थात् विगत में जो हुआ उसे जाने दो।

संदर्भ कथा—एक दामाद अपनी ससुराल गया। उसके लिये खिचड़ी बनाई गई और खिचड़ी में भरपूर घी डाला गया। लेकिन सास को यह सह्य नहीं हुआ कि सारा घी उसका दामाद अकेला ही खा जाये। इसलिए उसने अपने छोटे लड़के को उसके साथ जीमने को बिठला दिया। परन्तु जब सास ने देखा कि सारा घी तो दामाद की तरफ रह गया है और उसके लड़के को बिना घी की खिचड़ी खानी पड़ेगी तो वह थाली के पास बैठ गई और खिचड़ी में पड़े घी को उंगली से अपने लड़के की ओर करती हुई बोली कि देखोजी, आपकी माँ ने मेरी लड़की से ऐसा कहा, वैसा कहा, यह किया, वह किया आदि। हर बात के साथ वह उँगली से एक रेखा खिचड़ी में बना देती, जिसके फलस्वरूप सारा घी उसके बेटे की तरफ बह आया। दामाद ने सोचा कि यह तो खूब रही। उसने भी एक तरकीब निकाली और अपने हाथ से सारे घी को खिचड़ी में मिलाकर फेंटते हुये बोला—अजी, जाने भी दो, आगे से ऐसा नहीं होगा, 'गैल गैल की घोळ-मथोळ।'

१२५४ गैली सं सं पैली।

किसी भी काम में पगली सबसे आगे।

१२५५ 'गो चौड़ी तो सांप लांबो।

गोह चौड़ी अधिक है तो साँप लम्बा ज्यादा है।

दोनों में से कोई घटकर नहीं।

रू० इन्नै सोल्यो भांयें इन्नै, गांड तो मार्नै के बीच में रैंसी।

१२५६ **गोड़ में भी झोड़ ?**

गौड़ में भी झंझट ?

संदर्भ कथा—किसी गाँव में ब्रह्मभोज हो रहा था। एक मियां भी ब्राह्मण का वेश बनाकर जीमने के लिये आ गया। लेकिन 'बंधे' (प्रवेश द्वार) पर बैठ हुये लोगों को उस पर सन्देह हो गया। इसलिये उन्होंने उससे पूछा कि तुम कौन हो ? उत्तर मिला 'वामन'। प्रश्न हुआ, 'कौनसा वामन' ? उत्तर मिला 'गौड़ वामन'। उन्होंने फिर पूछा कि 'गौड़ वामन' तो ठीक है, लेकिन गोत्र क्या है ? ब्राह्मण वेशधारी मियां इससे अधिक कुछ जानता नही था। इसलिये उसके मुँह से सहसा निकल पड़ा, "या अल्लाह गाड़ में भी झोड़ ?"

१२५७. **गोत आळी गाळ तो गंडक कै ई लागै।**

गौत्र की गाली तो कुत्ते को भी बुरी लगती है।

रू० गोत आळी गाळ तो भैंस कै ई लागै।

१२५८. **गोद को छोरो, राखणो दोरो।**

गोद के बेटे को रखना कठिन होता है क्योंकि दोनों तरफ ही आत्मीयता का अभाव होता है।

१२५९. **गोद मोल का छोरा, न्हयाल करैगा दोरा।**

गोद-मोल के बेटे कभी मुश्किल से ही निहाल करते हैं।

१२६०. **गोद लडायो गीगलो, चढ्यो कचेड़चां जाट।**
पी'र लडाई पदमणी, तीनूं हिं बारा बाट॥

अधिक लाड़-चाव में पला लड़का, कचहरियों मे मुकद्दमेबाजी करते रहने वाला जाट, पीहर में लडाई गई स्त्री—ये तीनों ही बारहवाट हो जाते है।

१२६१ **गो'दां सें हळ कोनी बाया जावै।**

सांडों से हल नहीं जोते जाते।

साँड = बिना खस्सी किया हुआ बैल जिसे केवल जोड़ा खिलाने के लिये पालते है एवं हिन्दू लोग मृतक की स्मृति में दाग लगा कर छोड़ देते है।

१२६२. **गोदी आळै नै गेर कर पेट आळै की आस के करणी।**

गोदी वाले का परित्याग करके पेट वाले की आशा क्या करनी ?

उपलब्ध को त्यागकर अनुपलब्ध की क्या आशा करें ?

सन्दर्भ कथा—किसी स्त्री के केवल एक ही बच्चा था। वह चाहती थी कि उसे और अधिक बच्चे हों। किसी ने उसे कहा कि यदि वह अमुक देवी को अपने पहले बच्चे की बलि चढ़ादे तो उसे और बच्चे हो जायेंगे। वह इसके लिये तैयार हो गई, लेकिन उसकी पड़ोसिन ने उसे समझाया कि तू यह कैसी मूर्खता कर रही है जो और बच्चों को पाने की आशा में गोद
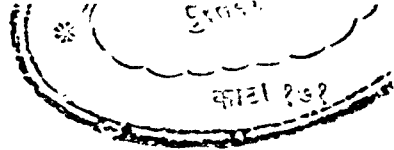
वाले बच्चे को मार रही हैं। यदि और बच्चा न हुआ तो जो अभी मौजूद है, उससे भी हाथ धो बैठेगी। तब वह मान गई।

१२६३. **गोबर का लाग्या जिका कुस का लागसी।**

गोबर के दाग लग गये हैं तो कुश के भी लगेंगे ही।

ऊंट के दाग लगाते समय पहले गोबर से दाग लगाते हैं और फिर लोहे को तप्त कुश से।

१२६४. **गोबर को घड़ो अर काठ की तलवार।**

गोबर का घड़ा और काठ की तलवार। दोनों तरफ ठगाई का सौदा।

सन्दर्भ कथा—एक ठग ने गोबर से एक घड़ा भर लिया और केवल मुंह पर थोड़ा सा गाढ़ा घी डालकर वह शहर में घी बेचने चला। वहाँ उसे एक दूसरा ठग मिला जो एक काठ की तलवार को एक सुन्दर म्यान में डाल कर बेचने लाया था। घी वाले को वह तलवार पसन्द आ गई और उसने अपने घी के घड़े के बदले में वह तलवार ले ली। दोनों ही ठग अपनी-अपनी कारगुजारी पर प्रसन्न होते हुये चले गये। लेकिन घर जाने पर जब रहस्य खुला तो दोनों ही पछताये कि वे ठगे गये।

१२६५. **गोयरो लड़्यो, 'क परैसी पड़ी।**

गोयरा अधिकतर खेजड़े के वृक्ष के खोखलों में रहता है और सांप से भी अधिक जहरीला माना जाता है। उसके काटते ही आदमी तत्काल जमीन पर गिर पड़ता है। इसलिये गोयरा आदमी को काट कर उससे कहता है कि तुम कहीं मेरे ऊपर गिरकर मुझे दबा न लेना, अलग ही गिरना।

१२६६ **गो'र को दिन माड़ो आवै जद गायां चंवरा वाछा ल्यावै।**

जब गो'र का दुर्दिन आता है तो गायें चवरे बछड़ों को जन्म देती हैं।

गो'र = गायों को बांधे जाने का स्थान।

रू० भैंस्यां की जावती आवै जद च्यानणां पाडा ल्यावै।

१२६७. **गो रयो को गाय न को गो'दो।**

गोह की गिनती न गायों में न सांड़ों में।

१२६८ **गोरी में गुण होसी तो ढोलो आपै ई आ मिलसी।**

पत्नी में गुण होंगे तो पति स्वयं ही आ मिलेगा।

१२६९ **गोला किसका गुण करै, औगणगारा आप।**
मायड़ जिणकी खावळी, सोळा जिणका वाप।

वर्णशंकर किसी का भला नहीं कर सकते, क्योंकि वे स्वयं अवगुणी होते हैं।

१२७० **गोला कीं का गोठिया, पातर कीं की नार?**

गोला किसका मित्र और वेश्या किस की स्त्री?

१२७१ गोळी को घाव भरज्या, पण बोली को कोनी भरै ।

बन्दूक या पिस्तौल की गोली का घाव भर जाता है, लेकिन बोली का घाव नही भरता ।

१२७२. गोलै को गुर जूतो ।

गोले का गुरु जूता ही होता है ।

रू० गोलै कै सिर ठोलो ।

१२७३. गोलो अर मूंज पराये बळ आंवसै ।

गोला और मूंज पराये वल पर ही ऐंठते हैं ।

१२७४. गौर भी मानज्या अर टाबर भी फळ-ढोकळा खाले ।

गनगौर भी मनजाए और बच्चों को भी फल–ढोकले खाने को मिल जाएँ । दो काम एक साथ सध जाएँ । एक पंथ दो काज ।

गणगौर के त्यौहार पर मुख्यतया बाजरे के आटे के 'फळ-ढोकळे' भाप से सिजा कर बनाये जाते थे ।

१२७५. ग्यान गिणै सो मूरख हारै, सो जीतै सो पैली मारै ।

सोच-विचार करते रह जाने वाला मूर्ख हारता है और पहले वार करने वाला जीतता है ।

१२७६. ग्यानी काटै ग्यान सें, मूरख काटै रोय ।

आपतकाल को ज्ञानी तो ज्ञान से काटता है औ र मूर्ख रो-धोकर ।

१२७७. ग्यानी सें ग्यानी मिलै, करै ग्यान की बात ।
मूरख सें मूरख मिलै, कै जूता कै लात ।।

दो ज्ञानी मिलते हैं तो ज्ञान-वार्ता करते हैं; दो मूर्ख मिलते हैं तो झगड़ा-फसाद करते हैं ।

१२७८. ग्यारस को कड़दो बारस में नीकळै ।

एकादशी को व्रत रखने वाला द्वादशी को भोजन की कसर पूरी करता है ।

१२७९. घट तोला मिठ बोला ।

कम तौलने वाला दुकानदार मीठा बोलता है ।

१२८०. घड़ी दोय दिन पाछलै, बादळ धनुष धरेह ।
डक्क कहै हे भड्डळी, जळ थळ अेक करेह ।।

सूर्यास्त से दो घड़ी पहले यदि आकाश में इन्द्र धनुप दिखलाई पड़े तो भरपूर वर्पा हो ।

१२८१. घड़ी में तोळा, घड़ी में मासा ।

जरा जरा देर में पलटने वाला आदमी ।

रू० पल में तोळा, पल में मासा ।

१२८२. घड़ै कुम्हार, भरै संसार ।

कुम्हार मिट्टी के घड़े बनाता है और सारी दुनिया पानी भरती है ।

रू० घड़ै सुनार, पैरै संसार ।

१२८३ घड़े गैल ठीकरी, मा गैल डीकरी ।

घड़े के अनुरूप ठीकरी होती है और माँ के अनुरूप बेटी ।

ठीकरी = मिट्टी के टूटे बर्तन का छोटा टुकड़ा ।

१२८४. घड़ै सें घड़ो कोनी भरै ।

एक ही माप के एक घड़े के पानी को दूसरे में उँडेलने से वह पूरा नहीं भर पाता ।

१२८५. घड़ो फूट कर गिरगणों ई' हाथ आवै ।

घड़ा फूट जाने पर उसका 'गिरगणा' ही हाथ लग पाता है ।

गिरगणा = घड़े के मुँह का गोलाकार घेरा ।

पहली पत्नी के मरने पर जब दूसरी पत्नी पहले वाली से घटिया मिलती है, तब प्रायः इस कहावत का प्रयोग करते हैं ।

१२८६. घण कतवारी नै नागी बाळी ।

अधिक कातने वाली को नंगी ही जलाई ।

जिसने जीवन में खूब कमाया वह भी नितान्त अभावग्रस्त अवस्था में मरा ।

१२८७. घण जायां घण ओळमा, घण बरस्यां कण हाण ।

अधिक संतान अधिक उपालंभ दिलाने वाली और अधिक वर्षा अन्न का नाश करने वाली होती है ।

रू० (१) घण जायां कुळ मेहणो, घण बूठां कण हाण ।

(२) घण जायां घण नास ।

१२८८. घण जीतै सूरमा हारै ।

शत्रुओं की संख्या अधिक हो तो शूरवीर भी हार जाता है ।

रू० घण जीतै रै लिछमणां ।

१२८९. घण दूधी, थुड़ मोली, पाडी की सी मा ।

भैंस यदि अधिक दूध देने वाली हो, मोल कम हो और उसके साथ पाडी हो तो फिर क्या चाहिये ?

भैंस के साथ पाडी एवं गाय के साथ बछड़ा हो तो कीमत अधिक मिलती है ।

१२९०. घणा गोलां ई' कोटड़ी सूनी ।

गोलों की संख्या अधिक होने पर भी 'कोटड़ी' सूनी ।

गाँवों में ठाकुर निवास के स्थान को कोटड़ी कहा जाता था । ठाकुरों के यहां गोले रहते थे, लेकिन ठाकुर के स्वयं के संतान न होने पर गोलों के बड़ी संख्या में रहने पर भी ठाकुर की कोटड़ी सूनी ही रहती थी ।

रू० सौ गोलां ई' कोटड़ी सूनी ।

१२६१ घणा गोलां घर ऊजड़ै ।
गोलों की अधिकता घर को बर्बाद कर देती है ।
रू० घणां मोडां मंडी ऊजड़ै ।

१२६२. घणा में घुण पड़ग्या ।
घने में घुन पड़ गये । घने को घुन लग गये ।
जो मालिक बहुतेरा देने का आश्वासन तो देता रहे, लेकिन दे कुछ नहीं ।

१२६३. घणा हेत टूटण का, बड़ा नैण फूटण का ।
अधिक घनिष्ठता भी टूट जाती है, बड़े नेत्र भी फूट जाते हैं ।
रू० घणौ मीठै में कीड़ा पड़ै ।

१२६४. घणी खींच्यां टूटै ।
अधिक खींच-तान करने से बात बिगड़ जाती है ।
रू० घणों बट दियां घुंडी पड़ै ।

१२६५ घणी गई थोड़ी रैई ।
अधिक तो बीत गई और थोड़ी शेष है, इसलिए अब बात क्यों बिगाडी जाए ?

सन्दर्भ कथा एक राजा बड़ा कंजूस था । एक दिन एक नट-मंडली उस राजा के नगर में आई । मंडली के सरदार ने दरबार में उपस्थित होकर राजा से उनकी मंडली का तमाशा देखने की अर्ज की । लेकिन राजा ने बात आगे के लिए टाल दी । नट-मंडली राजा की स्वीकृति की प्रतीक्षा करते करते तंग आ गई और उसकी जमा पूंजी भी समाप्त हो गई । तब एक दिन मंडली के सरदार ने पुनः राजा के सामने तमाशा देखलेने की प्रार्थना की । लेकिन राजा ने कोई स्पष्ट उत्तर नहीं दिया । इस पर मन्त्री ने राजा से कहा कि इतने दिनों तक ठहराने के बाद भी नट-मण्डली का तमाशा नहीं देखा गया तो ये लोग जहाँ भी जाएँगे, आपकी निंदा करेंगे । इसलिए आप इनका तमाशा देख लीजिए, खर्च का प्रबन्ध मैं स्वयं कर दूंगा । इस पर राजा ने स्वीकृति दे दी ।

रात को तमाशे का आयोजन हुआ । नगर भर के लोग तमाशा देखने के लिए इकट्ठे हो गये । राजा भी एक ऊँचे मंच पर बैठ गया । नट और नटी ने जी खोलकर तमाशा दिखलाया, लेकिन राजा ने कोई उत्साह प्रकट नहीं किया । वह गुमसुम बैठा देखता रहा । उसने तो कभी कुछ देने का नाम ही नहीं सीखा था और राजा के न देने के कारण दूसरे लोग भी देने की पहल नहीं कर रहे थे । यों करते कराते रात बीत चली, सिर्फ घड़ी भर रात शेष रही । नृत्य करते-करते नटी थक कर चूर हो गई थी और राजा

के व्यवहार ने उसकी थकावट और भी बढ़ा दी थी। इसलिये उसने गाते हुये ही नट को संकेत दिया—

रात घडी भर रह गई, थाके पिंजर आय।
कहे नटी सुन हो पिया, मधरा ताल बजाय॥

अर्थात् हे पिया! नृत्य करते-करते सारी रात बीत चली है और मैं एकदम थक गई हूँ, इसलिए अब तुम धीमे-धीमे ताल दो, क्योंकि तुम जितनी तेजी से ताल लगाते हो, उतनी ही तेजी से मुझे नाचना पड़ता है।

इस पर नट ने सोचा कि केवल घड़ी भर के लिये क्यों सारे किये कराये पर पानी फेरा जाये? इसलिए उसने नटी को सुना कर कहा—

घणी गई थोड़ी रही, थोड़ी भी अब जाय।
भाखत नट सुण नायिका, ताल भंग नहीं लाय॥

नट की बात सुनते ही दर्शकों में बैठे एक साधु ने अपना कम्बल शरीर पर से उतार कर नट को दे दिया। युवराज ने अपनी उँगली से बहुमूल्य अंगूठी उतार कर नट को दे दी तो राजकुमारी ने अपना कंगन उसे दे दिया। यह सब देखकर राजा को दुःख भी हुआ और आश्चर्य भी।

राजा ने साधु को अपने पास बुलाकर उससे पूछा कि इस जाड़े में ओढने के लिये तुम्हारे पास सिर्फ एक कम्बल ही था और वह भी इस तुमने नट को दे दिया, इसका क्या कारण है? साधु ने उत्तर दिया कि महाराज! मैं दुनिया में रहते हुए भी आज तक इसके भोगों से विरक्त रहा, लेकिन आज आपकी नगरी में आकर मेरा मन भोग के लिये ललचा गया। परन्तु इस नट ने चेतावनी देकर मुझे विषयों के गर्त में गिरने से बचा लिया। इसलिये मैंने सहर्ष अपना कम्बल उसे दे दिया।

तब राजा ने राजकुमारी से पूछा तो उसने कहा कि पिताजी! मैं विवाह-योग्य हो गई और आप रुपया खर्च होने के डर से मेरा विवाह नहीं करते, इसलिये मैंने मन्त्री के लड़के के साथ भाग निकलने की योजना बनाई थी। किन्तु इस नट के दोहे को सुनकर मैंने अपना विचार बदल दिया है, जिससे आपके कुल को भी कलंक लगने से रह गया है। इसी बात की खुशी में मैंने अपना कंगन नट को दे दिया। इसके बाद राजा ने युवराज से पूछा तो वह बोला कि मैं राजा का बेटा होकर भी गरीबों जैसी तंगी भुगत रहा हूँ। इसलिये मैं सोच रहा था कि आपको खाने में विष दिलवाकर मरवा डालूं और पूरे राज-पाट का मालिक बन जाऊं। लेकिन इस नट के दोहे को सुन कर मैंने अपना विचार बदल दिया। सोचा, कि पिताजी की उम्र तो अब बीत ही चुकी है, अब तो ये थोड़े ही दिनों के मेहमान हैं। इनके मरने के

बाद तो सब कुछ अपना ही है, अतः थोड़े समय के लिये पितृहत्या का यह जघन्य पाप अपने पल्ले क्यों बांधू ? नट ने मुझे एक भारी पाप-कर्म से बचाया और इसी के उपलक्ष्य में मैंने उसे अपनी अंगूठी दे दी।

अब राजा की आँखें खुलीं। उसने नट-नटी को भरपूर पुरस्कार दिया। फिर उसने मन्त्री के लड़के के साथ राजकुमारी की शादी कर दी और युवराज को सारा राज-पाट सौंप कर स्वयं वन में तपस्या करने चला गया।

१२६६. घणी दाई घणा पेट फाड़ै।

प्रसव के समय यदि दाइयां अधिक संख्या में एकत्र हो जाएं तो वे जच्चा को हानि ही पहुँचाती हैं, क्योंकि सभी अपनी अपनी होशियारी जतलाती हैं।

१२६७. घणी भगती चोर का लच्छण।

अधिक भक्ति का प्रदर्शन करने वाला अन्त में चोर निकलता है।

१२६८. घणी भू बटाउवां खातर थोड़ी ई है ?

घर में अधिक बहुएं हैं तो क्या बटोहियों के लिए हैं ?
घर में अधिक सम्पत्ति है तो राह चलतों के लिये नहीं है।
रू० घणो दूध किसो बाड़ में ढोळै ?

१२६९. घणी सराई खीचड़ी, दांतां कै चिपज्या।

किसी की अधिक सराहना करने पर जब वह उल्टा गले पड़ने लगे।
रू० घणी सराई खीचड़ी दांतां लागी।

१३००. घणी सूदी छिपकली घणा जिनावर मोसै।

ऊपर से अधिक सीधा लगने वाला व्यक्ति अधिक घातक होता है।

१३०१. घणो खाऊं न कुवेळां जाऊँ।

न अधिक खाऊं, न बेवक्त जाऊं।

संदर्भ कथा—एक सेठ की औरत ने शाम के वक्त कुछ अधिक खाना खा लिया तो रात को उसे शौच की हाजत हुई। वह शौच के लिये घर से बाहर निकली तो एक चोर ने सेठानी को पकड़ कर कहा कि तुझे मेरे साथ चलना पड़ेगा। सेठानी जरा भी नहीं घबराई और उसने चोर को चकमा देने के लिये कहा—यह तो बड़ा अच्छा है, मैं तो इस घर से और बूढ़े पति से स्वयं ही उकताई बैठी हूँ, लेकिन तुम कहो तो मैं अपना गहनों का डिब्बा भी ले आऊँ। चोर ने उत्तर दिया कि नेकी और पूछ-पूछ ? तुम गहनों का डिब्बा लेकर शीघ्र आ जाओ, मैं बाहर बैठा हूँ। चोर के पूछने पर सेठानी ने अपना नाम 'समझी' बतलाया और वह घर में चली गई। उसने घर में घुसकर किवाड़ों को सांकल लगादी। कुछ देर की प्रतीक्षा के बाद चोर ने

'समझी, समझी' कह कर दवी आवाज में पुकारा तो सेठानी ने वारी खोल कर अन्दर से ही उसे उत्तर देते हुये कहा हां भाई, समझ गई, न अधिक खाऊं, न रात को वेवक्त वाहर जाऊं। चोर अपना सा मुंह लेकर चला गया।

१३०२. घणो खावै जिको घणो मरै।
अधिक खाना नुकसानप्रद ही होता है।
रू० घणो खावै जिको घणो डवकै।

१३०३. घणो घूंसै जिको खावै कोनी।
अधिक भोंकने वाला कुत्ता काटता नहीं।
पद्य—घण गाजण वरसै नईं, घुसण कुता नईं खाय।
घण वोल्या घण जावसी, अणवाल्या मर जाय॥

१३०४. घणो लडायेड़ो टावर ईतरै।
अधिक लाड़-चाव से वालक इतरा जाता है।

१३०५. घणो स्याणो कागलो होवै जिको भिस्टा में चांच देवै।
अधिक सयाना कौवा होता है जो विष्टा में चोंच मारता है।
अधिक सयानप दिखलाने वाला व्यक्ति कहीं न कहीं कालीधार डूबता है।

१३०६. घर आई लिछमी नै ठोकर नईं मारणी।
घर आई लक्ष्मी कभी ठुकरानी नहीं चाहिये।
प्रायः यह कहावत उस समय कही जाती है जब कोई लड़की वाला अपनी लड़की का सम्वन्ध लेकर आता है और लड़के वाला ना-नुकर करता है।
रू० मूंडै आगै आयोड़ी थाळी कै ठोकर नईं देणी।

१३०७. घर आयो नाग न पूजिये, वांवी पूजण जाय।
घर आये नाग की तो पूजा न करे और उसकी पूजा करने हेतु उसकी वांबी पर जाये।
हाथ में आये अवसर को गंवाकर उसके लिये व्यर्थ का श्रम उठाते फिरना।

१३०८. घर आयो वैरी ई पावणो।
घर पर आया हुआ शत्रु भी पाहुना।
घर आये वैरी का भी सत्कार करना चाहिये।

संदर्भ कथा—एक वार राजा भोज वेश वदले हुये रात्रि को अपनी नगरी में घूम रहा था कि उसे चार योगनियां मिलीं। योगनियों ने राजा से कहा कि अगली रात को एक भयंकर काला नाग तुम्हें डसने के लिये तुम्हारे महल में आयेगा।

राजा महल में आ गया और उसने नाग को मारने की अपेक्षा उसका सत्कार करना चाहा। उसने अपने महल के चारों ओर साफ बालू बिछवाई और उसे केवड़े एवं गुलाबजल से तर कर दी। चन्दन आदि का उत्तम इत्र वहाँ छिड़कवा दिया एवं केशर युक्त दूध के प्याले भरवा कर रखवा दिये। आधी रात को काला विषधर जोरों से फुफकारता हुआ वहाँ पहुँचा, लेकिन गुलाबजल एवं केवड़ाजल से शीतल बालू में लेटने से उसे बड़ी शान्ति प्राप्त हुई। विभिन्न प्रकार की सुगन्धियों से महकते हुये वातावरण में नाग मस्त हो गया और उत्तम दूध पीने से उसे बड़ी तृप्ति हुई। इस पर क्रोध रहित होकर जब नाग राजा के पास पहुँचा तो राजा ने दण्डवत करके उसका सत्कार किया। इससे नाग बड़ा संतुष्ट हुआ और राजा को डसने के स्थान पर मुँह मांगा वरदान देकर लौट गया।

रू० (१) घर आयो सोई पावणो।

(२) वैरी सतकार सार।

१३०९. घरकां नै नाज नां मिलियो, लकड़ियां नै भेज देगा।

संदर्भ कथा—एक डोम का लड़का नितान्त आलसी था। उसके माँ-बाप गाँव में भीख मांग कर किसी तरह गुजारा करते थे। लेकिन जब वे भीख मागने के लिये गाँव में जाते तो लड़का पीछे से यही मनाया करता कि उन्हें भीख में अनाज न मिले अन्यथा वे चूल्हा जलाने के लिए मुझे ही लकड़ियां लाने हेतु भेजेंगे।

१३१०. घर का घर सळट लिया।

घर मे ही परस्पर समझौता कर लिया।

सन्दर्भ कथा—एक सियार और सियारी तालाब पर पानी पीने के लिये गये तो उन्होंने तालाब के किनारे एक शेर को बैठे देखा। दोनों बहुत प्यासे थे और पानी पीना अत्यावश्यक था, इसलिये दोनों ने मिलकर एक युक्ति सोची। सियार को अपने पीछे लेकर सियारी ने शेर के पास जाकर स्त्रियोचित कोमलवाणी में कहा कि जेठजी आप हमारा न्याय कर दीजिये। शेर के पूछने पर सियारी ने अपनी बात को स्पष्ट करते हुये कहा कि हम पति-पत्नी अपना-अपना हिस्सा अलग कर रहे हैं। हमारे तीन बच्चे है, जिनमें से दो को सियार लेना चाहता है। लेकिन मैंने बच्चों को जन्म दिया है, उन्हें कष्ट उठा कर पाला-पोसा है, अतएव मुझे दो बच्चे मिलने चाहिएँ और सियार को एक।

शेर ने सोचा कि दो तो ये हैं और तीन इनके बच्चे हैं, अतः पांचों को मिलाकर अच्छा नाश्ता हो जायेगा। इसलिये उसने सियारी से कि कहा तू

जाकर तीनों बच्चों को यहाँ लेग्रा, मैं समुचित न्याय कर दूंगा । यह सुनकर सियारी वहाँ से चली ग्रौर चलते समय पेट भरकर पानी भी पीती गई ।

जब कुछ समय बीत गया ग्रौर सियारी बच्चों को लेकर नहीं लौटी तो सियार ने नम्रता पूर्वक शेर से कहा कि सियारी की नीयत में फर्क है । वह सोचती है कि जंगल के राजाजी कहीं सियार को दो बच्चे न दिलवादें ग्रौर इसीलिये वह बच्चों को लेकर यहाँ नहीं ग्राई है । लेकिन मुझे ग्रापसे न्याय की पूरी ग्राशा है, ग्रतः मैं जाकर ग्रभी उन चारों को ग्रापके पास ले ग्राता हूँ । शेर ने ग्राज्ञा दे दी ग्रौर सियार भी पानी पीकर चलता बना ।

कुछ देर तक तो शेर प्रतीक्षा करता रहा । लेकिन जब भूख ग्रधिक सताने लगी तो वह स्वयं ही चलकर सियार की 'घुरी' पर ग्राया ग्रौर दोनों को पुकार कर कहा कि तुम ग्रपने तीनों बच्चों को लेकर शीघ्र ग्रा जाग्रो, मैं ग्रभी तुम्हारा न्याय कर देता हूँ । शेर की बात सुनकर दोनों मन ही मन हँसे ग्रौर सियारी ने घुरी के ग्रन्दर से ही कह दिया—जेठजी, हम तो ग्रपने घर में ही सलट लिये हैं । सियार दो बच्चे मांगता है तो इसे दो दे दूंगी ग्रौर मैं एक पर ही सन्तोष कर लूंगी । ग्रापने यहाँ तक ग्राने का कष्ट व्यर्थ ही किया, ग्रब ग्राप भले ही पधार जाएँ ।

सियारी की बात सुनकर शेर ग्रपना सा मुँह लेकर चला गया ।

१३११. घर का घोड़ा बाट खुदा की ।

घोड़ा तो घर का है ग्रौर रास्ता खुदा का, चाहे जितना दौड़ाग्रो ।

१३१२. घर का देव, घर का पुजारा, घर का ई धोक देवण ग्राळा ।

जब किसी काम में ग्रपने ही ग्रपने लोगों का बोलबाला हो ।

१३१३. घर का पूत कुंग्रारा डोलै, पाड़ोस्यां का नौ-नौ फेरा ।

घर के पूत तो कुँग्रारे डोलते हैं ग्रौर पड़ौसी के बेटों के विवाह नौ-नौ फेरों से किये जाते हैं ।

जब कोई ग्रादमी ग्रपने घर के काम के प्रति सर्वथा उदासीन रहे ग्रौर दूसरों के काम को तरजीह दे ।

रू० घर का टाबर भूखा मरै, पाड़ोस्यां नै खीर चूरमो ।

१३१४. घर को कस्सी घर को छाज, करावो कोई काल ग्राळो ग्राज ।

कुदाल ग्रौर छाज घर के हैं, कोई कल वाला काम ग्राज भी करवा ये ।

संदर्भ कथा—एक जाट रोजगार की तलाश में शहर में गया, लेकिन उसे कोई काम न मिला । भटकते-भटकते वह शाम को कब्रिस्तान में पहुँच गया । वहाँ एक जनाजा रखा था ग्रौर कुछ मुसलमान जनाजे के ग्रास-पास एकत्र हो रहे थे । उनके पास कोई कब्र खोदने वाला नहीं था । जाट

ने कब्र खोद दी और उन लोगों ने उन्हें पांच रुपये दे दिये। जाट खुश हो गया और मन ही मन बोला कि बड़ा अच्छा काम मिल गया है।

अगले दिन उसने बाजार में जाकर एक कुदाल एवं एक छाज खरीदा और इनको लेकर वह मुसलमानों के मोहल्ले में जा कर आवाज लगाने लगा—

घर की कस्सी, घर को छाज।
करा ल्यो कोई काल आळी आज॥

उसकी बात को कोई नहीं समझ पाया। लेकिन जब वह उस घर के सामने पहुँचा कि जिसके मृतक व्यक्ति की कब्र वह पिछले दिन खोद चुका था तो मृतक की बीवी तुरन्त ही उसका आशय समझ गई। उसने झल्ला कर उससे कहा, 'तेरों की खोद, तेरों की।' उसके कहने का तात्पर्य यह था कि तेरे घर वालों की कब्र खोद। लेकिन जाट उसकी बात को नहीं समझा और बोला कि तेरों (१३) की तो पैसे लेकर खोदूंगा, बाकी एक-दो छोटी-मोटी यों हीं खोद दूंगा।

१३१५. घर की खांड किरकरी लागै, गुड़ चोरी को मीठो।

घर की तो चीनी भी किरकरी लगती है और चोरी का गुड़ भी मीठा लगता है।

यह कहावत प्रायः उस व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होती है जो अपनी विवाहिता सुन्दर पत्नी को छोड़ कर बाजारू औरतों की टोह में रहता है।

रू० (१) घर की खांड किरकरी लागै, गुड़ हाट्यां को मीठो।
(२) घरे तो नागर वेल छाई अर पाड़ोसण को खोसै फूस।

१३१६. घर की छीज, लोक की हांसी।

घर की क्षति और दुनिया हँसे।

इस सन्दर्भ की कई कथाएँ हैं। एक कथा का पद्य इस प्रकार है—

पद्य—नणद भौजाई इसी लड़ी, सासु जा कूवै में पड़ी।
घर कै धणी लीनी फांसी, घर की छीज लोक की हांसी।

रू० घर की हाण लोक की हांसी।

१३१७. घर की मुरगी दाळ बरोबर।

अपने वालों को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता।

१३१८. घर को जोगी जोगनो, आण गांव को सिद्ध।

अपने गांव में योग्य व्यक्ति की भी कद्र नहीं होती, जब कि बाहर से आये हुए अपेक्षाकृत कम योग्य व्यक्ति की भी पूजा होने लगती है।

१३१९. **घर को भेदी लंका ढावै ।**
घर का भेदी लंका ढहाये ।
घर का भेदी लंका जैसे सुदृढ किले और रावण जैसे बलशाली राजा का भी पतन करा देता है ।

१३२०. **घर खोयो साळां, भींत खोई आळां ।**
घर को साले और दीवार को आले कमजोर बना देते हैं ।
रू० (१) घर रोक्यो साळां, भींत रोकी आळां ।
(२) घर में साळो, भींत में आळो ।
आज नईं तो, काल दिवाळो ।।

१३२१. **घर गैल पावणो 'क पावणैं गैल घर ?**
घर की समाई के अनुसार ही पाहुने की आवभगत हो सकती है, पाहुने की हैसियत के अनुसार नहीं ।

१३२२. **घर-घर माटी का चूल्हा है ।**
सभी घरों में मिट्टी के चूल्हे हैं ।
ऐसा नहीं कि किसी के घर मेहमान बनकर अनिश्चित काल तक मौज उड़ाते रहें ।

१३२३. **घर जाये का दिन गिणूं 'क दांत ?**
घर में जन्मे पशु के दिन गिनूं या दांत ?
ऊंट-बैल आदि घरेलू पशुओं की उम्र का अनुमान उनके दांतों को देख कर लगाया जाता है । लेकिन अपने घर में जन्मे पशु के दांत क्या देखना ? घर के मालिक को तो यह पता ही रहता है कि अमुक पशु कब जन्मा था ।

१३२४. **घरणी बिनां किसो घर ?**
स्त्री के बिना कैसा घर ?
रू० घर दीपै घरआळी सें ।

१३२५. **घर तरसै, बारै बरसै ।**
घर के लोग तो अन्न के लिए तरसते हैं और बाहर दान-पुण्य !
रू० (१) घर में तो फाका पड़ै, मोडा नूंतण जाय ।
(२) घर का टाबर चाकी चाटै, ओझैजी नै सीधो ।

१३२६. **घर तो घोसियां का ई बळसी, पण सुख ऊंदरा भी कोनी पावै ।**
घोसियों के घर तो जलेंगे ही, लेकिन चूहे भी सुख नहीं पायेंगे ।
घोसी = एक जाति विशेष ।

१३२७. **घर दीवा तो मसीत दीवा ।**
घर में दीपक जला कर ही मस्जिद में दीपक जलाया जाता है ।

१३२८. **घर में आई जोय, बांकी पगड़ी सीधी होय ।**
घर में पत्नी के आने पर पति की सारी अकड़ निकल जाती है ।

१३२९. घर में ईं मोतियां को चौक पूर राख्यो है ।
कल्पना के महल सजाना ।
अपने मुँह मियां मिट्ठू बनना ।

१३३० घर में कसाला, ओढै दुसाला ।
फाकामस्ती में भी अमीरी का प्रदर्शन !
रू० घर में फाका, बारै बांका ।

१३३१ घर में कोनी तेल तळाई, रांड मरै गुलगुलां आई ।
घर में गुड़-तेल आदि कुछ नहीं और गुलगुले खाने को लालायित ।
रू० (१) घर में भूंजी भाग कोनी खीर की मड़मड़ी आवै ।
(२) घर में कोनी अखत को बीज, ना'र मनावै आखा तीज ।

१३३२. घर में घोघड़ आठ मुख, चौवटिये में च्यार ।
पर घर जातां दोय मुख, निरमुख राज दुआर ।।
शरीर से सण्ड-मुसण्ड किन्तु बुद्धि से हीन व्यक्ति घर में तो खूब झखता रहता है मानो उसके आठ मुँह हों, किन्तु बाजार में आने पर उसके चार मुँह ही रह जाते हैं । दूसरे के घर जाने पर उसके केवल दो मुँह रह जाते हैं और कोट-कचहरी में जाने का काम पड़ जाए तो उसकी बोलती एक दम बन्द हो जाती है ।

१३३३. घर में चाकी ग्यारस करै ।
फाकामस्ती की स्थिति ।
रू० घर में ऊंदरा कल्लाबाजी खावै ।

१३३४. घर में जनानो पग तो टिक्यो !
घर में जनाना पैर तो टिका !

सन्दर्भ कथा—एक मियां जन्म से कुँआरा था, अतः औरत के लिए बड़ा नदीदा रहता था । एक दिन पड़ौसी की मुर्गी उसके घर में घुस आई तो किसी ने मियां को सावधान करते हुए कहा कि मियांजी आपके घर में मुर्गी घुस आई है । लेकिन मियां ने इसे अपना अहोभाग्य माना और बोला—खुदा का शुक्र है जो आज मेरे घर में जनाना पैर तो टिका ।

१३३५. घर में धन आतां लोग हँसै तो हँसण दे ।
सीरो खातां जाड़ घसै तो घसण दे ।।
अपने घर में धन आते यदि लोग हँसते हों तो हँसने दो, उनकी परवाह न करो, यदि हलवा खाने से भी जाड़ घिसती हो तो घिसने दो ।

१३३६. घर में ब्याव अर बहू पींपळां ।
घर में तो व्याह रचा है और बहू पीपलों जी पूजा करती डोल रही है ।
रू० घर में ब्याव अर बहू छाणां चुगवा जाय ।

१३३७ **घर मोटो टोटो घणो, मोटो पिव को नांव ।**
श्रं कारण धण दूबळी, म्हारो रस्ता ऊपर गाँव ।।
घराना बड़ा है, पति का नाम भी खूब है, लेकिन वर्तमान में घर की आर्थिक स्थिति बड़ी नाजुक है, फिर गांव भी मुख्य रास्ते पर है जिससे मेहमानों का आवागमन प्रचुर रहता है और इसी चिंता में घर की मालकिन घुली जाती है।
रू० घर बड़ो वर बड़ो, वड़ो कुहड़ दरबार।
घर में एक पछेवड़ो, ओढण आळा च्यार ।।

१३३८. **घर रैई भली 'क ऊछरी भली, के ठा पड़ै ?**
कौन जाने कि गायों का घर पर रहना अच्छा या चरने के लिए जंगल में जाना। भविष्य का कोई पता नहीं होता।

१३३९. **घर सीर, वटोड़ा न्यारा !**
पूरा घर तो साझे में और 'वटोड़े' अलग !
वटोड़ा = गोबर के उपलों का ऊंचा ढेर जिसे—गोबर से ही लीप दिया जाता है और आवश्यकतानुसार उसमें से उपले निकाल लिये जाते हैं।

१३४०. **घर सें उठ बन में गया अर बन में लगी लाय।**
अभागा मनुष्य घर से ऊब कर वन में गया तो वहाँ भी आग लग गई। अभागे व्यक्ति को कहीं सुख नहीं।
रू० घर तायो वन में गयो वन में लागी लाय।

१३४१. **घर सें घर कोनी चालै।**
एक घर से दूसरा घर नहीं चल सकता।
कोई व्यक्ति किसी की थोड़ी बहुत मदद तो कर सकता है, लेकिन सदैव ही उसके घर का निर्वाह नहीं कर सकता।

१३४२. **घर सें बेटी नीसरी, जम ल्यो भांवैं जंवाई ल्यो।**
विवाह के बाद बेटी पराई हो जाती है, माँ-बाप का उस पर कोई अधिकार नहीं रह जाता।

१३४३. **घर होण देदेणी वर होण नईं देणी।**
बेटी को गरीब घर में भले ही व्याह दें, लेकिन अयोग्य पति को नहीं देनी चाहिए।

१३४४. **घरे घाणी, तेली लूखो क्यूं खावै।**
तेली के घर में जब घानी चलती हो, तब वह रूखा क्यों खाये ?

१३४५. **घरे बैठ्यां गंगा आ'गी।**
घर बैठे गंगा आगई।

१३४६ घाघरी को साख नजीक को हो ज्यावै ।

पगड़ी के साख की अपेक्षा घाघरी का साख प्रिय हो जाता है ।

विवाह के बाद लड़के को माँ-बाप, भाई बहिन आदि की अपेक्षा सास ससुर, साले-सलहज आदि प्रिय लगने लगते हैं ।

पुरुष के पिता, चाचा, भाई आदि पगड़ी के साख के अन्तर्गत एवं उसकी सुसराल वाले घाघरी के साख के अन्तर्गत आते हैं ।

रू० मा नै मारै, सासु नै सिणगारै ।

१३४७. घाटो तो लूण को ई बुरो ।

घाटा तो नमक का भी बुरा ।

दैनिक व्यय में थोड़ा सा टोटा रहे तो वह भी बुरा ।

१३४८. घाटो–बाधो करमां को ।

हानि–लाभ तो कर्माधीन हैं ।

१३४९. घाटो है तो मणां को है, कणां को कोनी ।

घाटा है तो मन का है, कन का नहीं ।

घर में भले ही बहुतायत न हो, लेकिन आये हुए मेहमान की आव-भगत तो कर ही सकते हैं ।

१३५०. घाणी सें खळ ऊतरी, रैई बळीतै जोग ।

घानी से उतरने के बाद खल इंधन के योग्य ही रह जाती है ।

पद से हटने के बाद आदमी की कद्र कम हो जाती है ।

१३५१. घायल की गत घायल जाणै ।

घायल की पीड़ा को घायल ही जान सकता है ।

१३५२. घालो घाल में काढो काढ लागगी ।

उल्टा चाक चलने लगा ।

एक दम विपरीत स्थिति पैदा हो गई ।

१३५३. घालो घाल में घालो घाल, काढो काढ में काढो काढ ।

जो ढर्रा चल पड़ता है, चल पड़ता है ।

एक की देखा-देखी दूसरा भी वैसा ही करता है ।

१३५४. घाव तो बैरी का भी सराया जावै ।

वीरता तो वैरी की भी प्रशंसनीय है ।

१३५५. घाव भरज्या, पण सैनाण कोनी जा ।

घाव के भर जाने पर भी उसका चिह्न बाकी रह जाता है ।

विवाद के मिट जाने पर भी उसकी कटु स्मृति शेष रह जाती है ।

१३५६. घींघलै कै तो गोबर ई गुड़ ।

गुबरैला के लिए तो गोबर ही गुड़ ।

१३५७. घी का तो मारचा ई फिरां हां ।

घी की मार से आहत हुए तो डोल ही रहे हैं ।

जो उपचार बतला रहे हो, वही तो व्याधि की जड़ है ।

संदर्भ कथा—एक सेठ के घर में घाटा था । वह कुछ कमाता कजाता न था और जैसे-तैसे अपना निर्वाह कर रहा था । एक दिन उसकी स्त्री ने खिचड़ी बनाई । सेठ जीमने बैठा तो सेठानी ने उसे थाली में खिचड़ी परोस कर उसमें जरा सा घी भी डाल दिया । सेठ ने और घी मांगा तो सेठानी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया, लेकिन जब वह बार-बार घी मांगने लगा तो सेठानी को गुस्सा आ गया और उसने 'डोई' (लकड़ी की कलछी) उठा कर उसके सिर पर दे मारी । सिर से रक्त बहने लगा, लेकिन सेठ चुप-चाप उठ कर बाहर चला गया । जब किसी ने सेठ के मस्तक पर लगी चोट देखी तो उसने सहानुभूति जताते हुए उससे कहा कि इस पर थोड़ा सा घी लगालो, जख्म ठीक हो जाएगा । उसकी बात सुन कर सेठ ने ठंडी सांस लेकर कहा—इस घी के मारे तो यों फिर ही रहे हैं, सारी खराबी की जड़ तो यही है ।

१३५८ घी खाणो तो पगड़ी राख कर खाणो ।

घी खाये तो इज्जत की रक्षा करते हुए खाना चाहिए ।

मनुष्य के लिए घी का बड़ा महत्त्व माना गया है, लेकिन इज्जत का महत्त्व उससे भी अधिक है, अतः घी खाने के लिए इज्जत नहीं गँवानी चाहिए ।

१३५९. घी घालै तो घालै, नईं खीचड़ी तो ठंडी होवै ई है ।

मेजबान यदि खिचड़ी में घी डाल दे तो बड़ी अच्छी बात है अन्यथा खिचड़ी तो ठंडी हो ही रही है । खिचड़ी के ठण्डी होने तक तो यूं भी प्रतीक्षा करनी ही होगी, इस बीच वह खिचड़ी में घी डाल दे तो नफे में है ।

१३६०. घी घाल्योड़ो तो अंधेरै में ई छानो कोनी रैवै ।

यदि मेजबान चावल-खिचड़ी आदि में अंधेरे में भी घी डाले तो वह छिपा नहीं रह सकता ।

अनजान में किया गया उपकार भी अज्ञात नहीं रह पाता ।

रू० घी घाल्योड़ो ती मूंगां में ई दीस्यावै ।

१३६१. घी-चीणी का गारा—नांव न्यारा न्यारा ।

मिठाइयों के नाम भले ही अलग-अलग हों, लेकिन उनमें घी और चीनी की ही प्रमुखता होती है ।

१३६२. घी जाट को, तेल हाट को ।

घी जाट का अच्छा और तेल हाट का ।

तेली के यहां तेल ताजा मिलता है जिसमें गाद मिली होती है, लेकिन दुकान में पड़े रहने के कारण तेल की गाद नीचे बैठ जाती है और वह साफ हो जाता है ।

१३६३. घी ढुळचो तो मूंगां में।

घी गिरा तो मूंगों में ही गिरा, व्यर्थ नहीं गया।

संदर्भ कथा—दो भाइयों में बड़ा प्रेम था, लेकिन घर में स्त्रियों की नहीं पटती थी इसलिए दोनों अलग अलग रहते थे। एक बार बड़े भाई के घर भोज था। छोटे भाई को भी न्योता दिया गया, लेकिन उसकी भौजाई ने उसे बुलावा नही देने दिया। यद्यपि राजस्थान में ऐसी प्रथा थी कि यदि न्योता देने के बाद बुलावा नहीं दिया जाता था तो जीमने के लिए नहीं जाते थे, तथापि बड़े भाई की मजबूरी को समझ कर छोटा भाई बिना बुलावे ही जीमने चला गया।

भोजन में सब को चावल और मूंग परोसे गये तथा बड़ा भाई स्वयं घी का बर्तन लेकर सब को घी डालने के लिए चला। सब को घी डाल चुकने के बाद जब उसके छोटे भाई की बारी आई तो उसे अपनी पत्नी की नाराजी का ख्याल आया कि छोटे भाई को घी डालने पर वह कलह करेगी। इसलिए छोटे भाई के पास पहुँचते-पहुँचते उसने ठोकर खाकर गिर पड़ने का उपक्रम किया और गिरते–गिरते छोटे भाई की थाली में घी डाल दिया। घी चावलों में न गिर कर मूंगों में गिरा। सारी परिस्थिति को समझ कर पास मे बैठे आदमी ने कहा—

भाई कै भाई मन भायो, बिना बुलावै जीमण आयो।
आखड़ियो पण पड़ियो नांहि, घी ढुळ्यो तो मूंगां मांहि॥

१३६४ घी नै अर खुदा नै कुण देख्यो है?

घी को और खुदा को किसने देखा है?

सन्दर्भ कथा किसी आदमी ने अपने जीवन मे पहली बार घी देखा था। उन दिनों जेठ का महीना था और घी पिघला हुआ था। इसलिए उसने सोचा कि घी तो पानी जैसा ही होता है। लेकिन उसी के एक मित्र ने माघ के महीने में पहली बार घी को देखा जो जमा हुआ था और डली के रूप में था। एक बार दोनों मित्रों में होड लग गई। पहले ने कहा कि घी पानी जैसा होता है। लेकिन दूसरे ने कहा कि नहीं, डली जैसा होता है। इसका निर्णय कराने के लिए दोनों जने काजीजी के पास गये। लेकिन काजीजी को अपनी जिन्दगी में एक बार भी घी के दर्शन नही हुये थे। इसलिए दोनों की बात सुन कर वे पसोपेश में पड़ गये। फिर सोच कर बोले कि तुम दोनों ही झूठे हो, घी को और खुदा को भला किसने देखा है?

१३६५ घी सुंवारै खीचड़ी नांव बहू को होय।

घी डालने से खिचड़ी अच्छी बनती है और यश बहू को मिलता है।

किसी कार्य के सुधरने का निमित्त तो कुछ और हो एवं यश किसी और को मिले।

रू० घी सुंवारै साग नै, नांव बहू को होय।

१३६६. **घूंघटै सें सती नईं, मूंड मुंडायां जती नईं ।**

घूंघट निकालने से ही कोई स्त्री सती नहीं बन जाती और सिर मुंडवाने से ही कोई यति नहीं बन जाता ।

१३६७. **घूस चालती तो वाणियों धरमराज नै भी घूस दे देतो ।**

यदि धर्मराज घूस स्वीकार करता तो वनियां उसको भी घूस देकर स्वयं को अमर बना लेता ।

रू० धरमराज घूस लेतो तो वाणियों वीं सें ईं कोनी टळतो ।

१३६८. **घोकत विदया, खोदत पानी ।**

रटने से विद्या आती है और खोदते रहने से पानी निकल आता है ।

रटने से कठिन विद्या भी कंठाग्र हो जाती है और जमीन को खोदते रहने से गहराई में भी पानी निकल आता है ।

रू० झखत विदया, पचत खेती ।

१३६९. **घोघड़ कै घड़ मोटो, 'क लाबो गिणूं न टोटो ।**

नादान व्यक्ति जो कभी लाभ-हानि की चिंता नहीं करता, वह शरीर से मोटा हो जाता है ।

१३७०. **घोड़ां दूभर भादुवो, भैंस्यां दूभर जेठ ।**
मरदां दूभर पीसणो, नारी दूभर पेट ।।

घोड़ों के लिए भादों का और भैंसों के लिए जेठ का महीना कष्टदायी होता है । मर्दों के लिए चक्की चलाना दुखदायी होता है और नारी के लिए गर्भस्थ शिशु से बोझिल पेट असुविधाजनक होता है ।

रू० कांकर दौरी करहळां, थळ दौरी तुरियांह ।
गाडी दौरी गिखरां, लांबी नार नरांह ।।

१३७१. **घोड़ी कठै बांधू ? 'क म्हारी जीभ कै ?**

घोड़ी कहां बांधूं ? मेरी जीभ से ।

संदर्भ कथा—एक सेठ अपनी हवेली के चबूतरे पर बैठा था कि उधर से एक ठाकुर अपनी घोड़ी पर चढा हुआ निकला । प्रातःकाल का समय था और सेठ ने सामान्य तौर पर ठाकुर से राम-राम की । बस ! ठाकुर को तो बहाना मिल गया । उसने सेठ से पूछा कि सेठजी घोड़ी कहां बांधूं ? राह चलती आफत सेठ के गले पड़ गई । इसलिए सेठ ने व्यंग्य से कहा, घोड़ी को मेरी जीभ से बांधिये, क्योंकि इसने चुप रहने की बजाय आप के साथ राम-राम करने की गलती की ।

१३७२. **घोड़ी कै सींग हा ।**

घोड़ी के सींग थे ।

यथा अवसर बात को इस तरह मोड़ देना कि सहज ही पीछा छूट जाए ।

संदर्भ कथा— एक बनिये का लड़का अपने खेत की रखवाली कर रहा था कि एक चोर एक घोड़ी को चुरा कर लाया और उधर से गुजरा। पीछे-पीछे कोतवाल भी अपने सिपाहियों सहित वहाँ पहुँचा। उसने लड़के से पूछा कि क्या तुमने इधर से किसी को एक घोड़ी ले जाते हुये देखा है? लड़के ने कहा, देखा है। इस पर कोतवाल ने लड़के से कहा कि तुम हमारे साथ चलो और बताओ कि वह किधर गया है। लड़के ने सोचा कि यह तो बिना बात की आफत आ गई। इसलिये उसने टालने के लिये कोतवाल से कहा कि घोड़ी के बड़े-बड़े सींग हैं और वह आदमी उसके सींगों में रस्सी बांध कर उसे इसी तरफ ले गया है, आप इसी रास्ते से चले जाएँ। इस पर कोतवाल को विश्वास हो गया कि लड़के ने घोड़ी नहीं, बल्कि गाय देखी है और वह अपने सिपाहियों सहित आगे बढ़ गया।

१३७३. **घोड़ै री लात सैं घोड़ो कोनी मरै।**
घोड़े की लात से घोड़ा नहीं मरता।

१३७४. **घोड़ै कै नाळ जड़तां गधेड़ो भी पग उठावै।**
घोड़े को नाल जड़ी जाती हुई देख कर गधा भी अपना पैर उठाता है।
योग्य व्यक्ति का सन्मान होते देखकर अयोग्य व्यक्ति भी वैसा ही सम्मान पाने की आकांक्षा करता है।

१३७५ **घोड़ो खावो घोड़ै कै धणी नै।**
घोड़ा खाये घोड़े के मालिक को।
जिसकी समस्या हो, वही उससे निपटे।

१३७६ **घोड़ो घास सैं यारी करै तो खावै के?**
घोड़ा घास से यारी करने लगे तो खाये क्या?
तु० भैंस खळ सैं यारी करै तो के खावै?

१३७७. **घोड़ो चाये निकासी नै, बावड़तो सो आये।**
दूल्हे की निकासी के लिए घोड़े की तत्काल आवश्यकता, और कहे कि फिर आना।

१३७८. **घोड़ो ठाण सिर बिकै।**
घोड़ा चाहे कितना ही अच्छा हो, यदि वह गरीब के घर बन्धा हो तो उसकी पूरी कीमत नहीं मिलती। लेकिन वही घोड़ा किसी समर्थ व्यक्ति के यहाँ बंधा हो तो मुँह माँगी कीमत मिलती है।

१३७९. **घोड़ो मरद मकोड़ो, पकड़्यां पीछै छोडै दोरो।**
घोड़ा, मर्द और मकोड़ा इनकी पकड़ जबरदस्त होती है पकड़ने के बाद ये कठिनाई से ही छोड़ते हैं।

१३८०. **चंगा माढू घर रह्यां, तीनूं ओगण होय ।**
कपड़ा फाटै रिण वधै, नांव न जाणै कोय ।।
तन्दुरुस्त और भला-चंगा आदमी यदि अकर्मण्य होकर घर बैठा रहे तो घर में दरिद्रता आती है, कर्ज बढ़ता है और वह कोई नाम नहीं कमा सकता ।

१३८१. **चंदा तूं गिगनापति, किसो भलेरो देस ?**
संपत होय तो घर भलो, नईं भलो परदेस ।
किसी ने चांद से पूछा कि तुम गगन के स्वामी हो और सब कुछ देखते हो, अतः यह बतलाओ कि संसार में कौनसा देश अच्छा है, जहाँ जाकर रहा जाए ? इस पर चाँद ने उत्तर दिया कि सब में परस्पर मेल हो तब तो घर अच्छा है अन्यथा विदेश में जाकर रहना ठीक है ।

१३८२. **चंवरी सें उतारी, बींद कै मूंड मारी ।**
विवाह वेदी से उतरने के बाद लड़की जाने और दूल्हा जाने ।

१३८३. **चढज्या बेटा सूळी, भली करै करतार ।**
बेटे सूली पर चढ़जा, भगवान् सब ठीक करेंगे ।
स्वयं अलग रह कर दूसरे को कष्ट उठाने के लिये उत्साहित करना ।

संदर्भ कथा—एक सेठ-सेठानी रात को अपनी हवेली में सो रहे थे । उनके कोई सन्तान नहीं थी । एक रात को घर की दीवार लांघकर एक चोर उनके घर में उतरा तो उन दोनों ने चोर को देख लिया । लेकिन उन्होंने उसे युक्ति से पकड़ने की तरकीब निकाली । सेठ ने सेठानी से कहा कि मुझे अभी स्वप्न में भगवान् दिखलाई पड़े हैं और वे हमें एक पुत्र दे गये हैं । उन दोनों को बोलते देखकर चोर एक खम्भे के पीछे छिप गया । लेकिन सेठ ने उसके पास जाकर सेठानी से कहा कि भगवान् ने हमें जो पुत्र दिया है, वह यही है । सेठानी ने भी बड़ी प्रसन्नता प्रकट की ।

सवेरा हुआ तो सेठ ने उसे नहला-धुलाकर अच्छे कपडे व गहने पहनाये एवं उसे खिला पिलाकर अपनी दुकान पर ले गया । जिस किसी ने भी उसके बारे में पूछा, सेठ ने उसे अपना बेटा बतलाया । चोर मन ही मन खुश था कि अब उसके भाग्य खुल गये हैं । लेकिन सेठ ने छिपे तौर पर सारी घटना राजा को कहलवादी । राजा के सिपाही आये और चोर को पकड़ कर ले चले । सेठ भी उसकी तसल्ली के लिये साथ हो लिया । उस राज्य का नियम था कि जो कोई चोरी करे, उसे सूली पर चढ़ा दिया जाये । इसलिये राजा ने चोर को तत्काल सूली पर चढ़ा देने का हुक्म दे दिया । इस पर सेठ ने चोर-बेटे की पीठ थपथपाते हुये कहा—'चढ़ज्या बेटा सूळी, भली करै करतार ।"

रू० (१) चढज्या बेटा सूळी, मैं तेरै कन्नै ईं खड़्यो हूँ ।
(२) चढज्या बेटा सूळी, राम करै सो होय ।

१३८४ चढतां चढतां ईं रायबी होवै ।
चढने का अभ्यास करते-करते ही आदमी कुशल घुड़सवार बन पाता है ।

१३८५. चढै सो पड़ै ।
जो ऊंट-घोड़े आदि पर चढ़ेगा, वही गिरेगा । न चढ़ने वाला क्या गिरेगा ?
जो ऊंचा चढ़ेगा, वह नीचे भी गिरेगा ।
रू० चढ़सी जिकै नै गिरणां सरसी ।

१३८६. चणा चाब कर आंगळी चाटणै में के सुआद है ?
चने चबा कर उँगलियां चाटने में कौनसा स्वाद आता है ?

१३८७. चणा चाब कहै, म्हे चावळ खाया ।
नईं छान पर फूस, कहै हेली सें आया ।
चने चबा कर किसी तरह गुजारा करते है, लेकिन दूसरों से कहते हैं कि हम तो चावल खाते है । छप्पर पर फूस भी नहीं और कहते है कि हवेली से आ रहे है ।
झूठ-मूठ की शेखी बघारना ।

१३८८. चणां है जठै जाड़ कोनी अर जाड़ है जठै चणा कोनी ।
जहाँ चने है वहाँ दांत नहीं और जहाँ दांत है वहाँ चने नहीं ।
जहाँ सम्पत्ति है वहाँ उसे भोगने वाला नहीं और जहाँ भोगने वाला है, वहाँ सम्पत्ति नहीं ।

१३८९. चणो अर चुगल जाड़ कै लाग्योड़ो बेगो कोनी छूटै ।
भुना चना और चुगलखोर एक बार लग जाने के बाद जल्दी नही छूटता ।

१३९०. चणो उछळ कर किसी भाड़ फोड़ गेरै ?
चना उछल कर भाड़ को नहीं फोड़ सकता ।
अकिंचन व्यक्ति नाराज होकर भी समर्थ का क्या बिगाड़ लेगा ?

१३९१. चत्तर नै चौगुणी, मूरख नैं सौ गुणी ।
दूसरे के पास की सम्पत्ति चतुर को चार गुनी और मूर्ख को सौ गुनी दिखाई देती है ।

१३९२. चमड़ी जा पण दमड़ी नईं जा ।
चमड़ी भले ही चली जाये, लेकिन दमड़ी न जाने पाये ।
संदर्भ कथा—एक सेठ बड़ा कंजूस था । घरवाली की जिद के कारण एक बार वह गंगा स्नान के लिये गया, लेकिन भिखारियों के डर से मुर्दाघाट पर ठहरा । भगवान् ने उसके पन की परीक्षा लेनी चाही और वे एक

ब्राह्मण के रूप में उसके पास याचना के लिये आये। ब्राह्मण ने यजमान से बहुत कुछ कहा-सुना, लेकिन सेठ ना ही करता रहा। अन्त में बहुत दिक् करने पर सेठ ने उसे टालने के लिये कहा कि अभी तो मेरे पास कुछ भी नहीं है, कभी घर आओगे तो एक दमड़ी दे दूंगा। ब्राह्मण संतुष्ट होकर चला गया और सेठ अपने घर आ गया।

कुछ दिन बाद वही ब्राह्मण उक्त सेठ के घर पहुँच गया। सेठ ने उसे दूर से ही पहचान लिया और मृत होकर पड़ रहा। सेठ के आदेशानुसार सेठानी ने ब्राह्मण से कह दिया कि सेठ तो मर गया। ब्राह्मण ने कहा कि यह तो बुरा हुआ, लेकिन सेठ मेरा यजमान था, अतः मैं भी श्मशान तक तो साथ जाऊंगा ही। सेठ के सगे संबंधी उसकी अर्थी बना कर मरघट में ले गये। अर्थी चिता पर रख दी गई तो सेठ के बेटे ने अपने बाप के कान के पास मुंह लेजा कर कहा कि ब्राह्मण तो किसी प्रकार टलता नहीं, यहीं खड़ा है। सेठ ने कहा, उसे खड़ा रहने दो, तुम चिता में आग लगा दो। चिता में आग लगा दी गई तो ब्राह्मण वेशधारी भगवान् उसके पन को देख कर प्रसन्न हो गये और उसे चिता से बाहर निकाल कर उससे वरदान मांगने के लिये कहा। सेठ ने कहा कि यदि वरदान ही देना चाहते हो तो मेरी दमड़ी माफ कर दो।

१३९३. **चरतियां में पीतियां में, उछरतियां में सैसैं आगै।**

जो व्यक्ति खाने-पीने आदि के लाभप्रद मामलों में सबसे आगे रहे।

१३९४. **चल सुन्दर मंदर चलां, तो बिन चल्यो न जाय।**
माता देती आसका, वै दिन पूंच्या आय।

राजस्थान में माताएं अपने बालकों को 'बूढो डोकरो हो' कह कर दीर्घायु होने का आशीर्वाद देती हैं। वृद्धावस्था प्राप्त होने पर ऐसा ही एक आदमी मां के आशीर्वाद को याद करके अपनी लाठी से कहता है कि हे सुन्दरि, अब तो तेरे सहारे बिना चला ही नहीं जाता, माता जो आशीर्वाद दिया करती थी, अब वे दिन आ पहुँचे हैं।

१३९५ **चलती में न चलावै जिको बावळो अर न चलती में चलावै जिको बावळो।**

चलती में जो न चलाये वह बावला और जहां पोल न चल सके, वहां जो पोल चलाने की चेष्टा करे वह भी बावला।

१३९६ **चांच दी है जिको चुग्गो भी देसी।**

जिसने चोंच दी है, वह चुग्गा भी देगा।

जिसने पैदा किया है, वह खाने को भी देगा।

सन्दर्भ कथा—एक साधु किसी के घर भिक्षाटन के लिये गया तो एक गर्भवती स्त्री उसे भिक्षा डालने के लिये द्वार पर आई। उसके स्तनों को

ओर देखकर साधु ने पूछा—माई ! तुम्हारे सीने पर इतने बड़े-बड़े फोड़े बने हैं, क्या ये तुम्हें पीड़ा नहीं पहुँचाते ? स्त्री ने उत्तर दिया कि मुझे बच्चा होने वाला है और भगवान् ने उसके लिये इनमें दूध पैदा कर दिया है, ये फोड़े नहीं हैं। उसकी बात सुनकर साधु को ज्ञान हो गया कि जो ईश्वर बच्चे के पैदा होने से पहले ही उसके लिये दूध का प्रबन्ध करता है, वही उसका भी प्रबन्ध करेगा और उसने उसी समय से भिक्षा मांगना छोड़ दिया।

१३९७. **चांद आगै लूंकड़ी कितीक बार ल्हुकै ?**
चांद के सामने लोमड़ी कितनी देर छिपी रह सकती है।
सबल के आगे निर्बल कब तक छिपा रह सकता है।

१३९८. **चांद घैण कूकरां भारी।**
चांद ग्रहण कुत्तों को भारी पड़ता है। ग्रहण के समय याचक भिक्षा के लिए घूमते हैं, जिन्हें देख-देख कर कुत्ते भौंकते हैं और उन्हें याचकों की मार भी खानी पड़ती है।

१३९९. **चांद छोडै हिरणी तो लोग छोडै परणी।**
अक्षय तृतीया को यदि चन्द्रमा मृगशिरा से पूर्व ही अस्त हो जाए तो भयंकर अकाल पड़े, जिससे लोगों को अपनी स्त्रियों को छोड़-छोड़कर निर्वाह हेतु अन्यत्र जाना पड़े।

१४००. **चांद सूरज कै कुंडळ होय, पांच पो'र में बिरखा जोय।**
निपट नजीक लाल रंग साजै, तो घड़ी पलक में मेवलो गाजै॥
सूर्य और चन्द्रमा के चारों ओर कुण्डल हो तो पांच पहर में वर्षा होगी। यदि यह लाल रंग का हो और अत्यन्त समीप हो तो बहुत जल्द ही वर्षा होगी।

१४०१. **चांद सूरज कै भी काळो लागै।**
सामान्य मनुष्य की तो बात ही क्या है, चांद सूरज को भी ग्रहण के रूप में कलंक लगता है।

१४०२. **चांदी की मेख, खड़ी तमासा देख।**
चांदी के बल पर हर काम बन जाता है।

१४०३. **चांदी देख्यां चेतना, मुख देख्यां ब्योहार।**
चांदी को आंखों से देखने पर चेतना आती है और किसी को आमने-सामने देखने पर ही उससे व्यवहार होता है।

जिन दिनों चांदी के रुपये प्रचलन में थे, तब दुकानदार प्रायः उपरोक्त कहावत को दोहराते हुये ग्राहक से कहा करता था कि 'न्योळी' से रुपये निकालो जिससे सौदा बन पाये, केवल बातें करने से सौदा नहीं पटता।

१४०४. चाकरी घणी आकरी ।
नौकरी बड़ी कठिन ।

१४०५ चाकी को पीस्यो खाणो, दांत को पीस्यो नईं खाणो ।
चक्की का पिसा हुआ खाना चाहिये, दांत का पिसा हुआ नहीं ।
ऐसा काम नहीं करना चाहिये जिससे दुनिया तरह-तरह की बाते बनाये ।
रू० गाँव कै दांतै नईं चढणो ।

१४०६. चाकी मांय कर साबतो कोई कोनी निकळै ।
चक्की के बीच से कोई साबित नहीं निकल पाता ।
धरती और आकाश रूपी दो पाटों के बीच कोई अमर नहीं ।
दो पाटन के बीच में साबित बचा न कोय ।

१४०७. चाकी मांय कर साबतो नीकळयावै ।
ऐसा धूर्त और चालाक आदमी जो चक्की में से भी साबित निकल आये ।
जो किसी तरह पकड़ में न आये ।

१४०८. चाकी में गाळो घाल्यां ईं आटो हाथ आवै ।
चक्की के मुँह में अन्न डालने से ही आटा हाथ आयेगा ।

१४०९. चाखै तो चांदी, रगडै तो गोडा ।
यहां कोई ज्ञानी जानी नहीं ।

१४१०. चारो चरै मींगणां करै, वींको बाणियों के करै ?
बनिया ऐसी चीज को खरीद कर क्या करे, जिससे लाभ के स्थान पर हानि हो ।

संदर्भ कथा —एक बनिया थोड़ी सी पूंजी लगा कर अपना कारोबार करता था । एक दिन कोई आदमी उसके पास एक ऊंट लेकर आया और बोला, सेठजी ऊंट ले लीजिए । सेठ ने कहा हां भाई ! ले लेंगे, दुकान में डाल दो । आगन्तुक ने जब यह कहा कि कहीं ऊंट भी दुकान में डाला जाता है, तो सेठ ने उत्तर दिया कि जो वस्तु दुकान में नहीं डाली जा सकती तथा जिसे चारा खिलाना पड़े एवं बदले में केवल मेंगने प्राप्त हों, ऐसी वस्तु को खरीद कर मैं क्या करूं ?

१४११ चाल चटकै की, मौत पटकै की ।
चाल में फुर्ती हो, मृत्यु चटपट हो यह नहीं कि दीर्घकाल तक खाट में पड़े सड़ते रहें ।

१४१२. चालणी को पींदो, पूत मुई की छाती ।
पुत्र की मृत्यु से मां का कलेजा चलनी के पेंदे की तरह छलनी हो जाता है ।

१४१३. चालणी में दूध दूवै, करमां नै दोस देवै ।
चलनी में दूध दूहे और भाग्य को दोष दे ?

१४१४. **चालती को नांव गाडी है।**

चलती का नाम गाड़ी है।

१४१५. **चालतै चाक में सै माट-मटकण उतरज्या।**

चलते चाक पर छोटे-बड़े सभी प्रकार के बर्तन तैयार हो सकते हैं, लेकिन उसके रुकने के बाद एक दीपक भी नहीं बन सकता।

कारोबार चलता रहे तो गृहस्थी के छोटे बड़े खर्च उसी से निकलते रहते हैं।

१४१६. **चालतै नै चाल कोनी आवै, बोलतै नै बोली कोनी आवै।**

नितान्त कमज़ोर व्यक्ति जो कुछ भी कर पाने में समर्थ न हो।

१४१७ **चाल रै बळदिया तेरो धणी चलावै जियां चाल।**

चल रे बैल, जैसे तेरा मालिक चलाये, वैसे ही चल।

संदर्भ कथा—एक जाट अपनी जाटनी से नाराज हो गया और वह उसे पीटने का कोई न कोई बहाना ढूंढने की फिक्र में था। उसने अपने बैलों को जोता तो एक का मुँह उत्तर की ओर तथा दूसरे का दक्षिण की ओर कर दिया एवं उन्हे मार-मार कर चलाने का प्रयास करने लगा। लेकिन बेचारे बैल चलें तो कैसे चलें? जाट यह सब जानबूझ कर कर रहा था। वह सोच रहा था कि जाटनी यह कहेगी कि इस प्रकार बैल क्योंकर चल सकते हैं तथा उसके इतना कहते ही उसे पीटने का बहाना मिल जाएगा। लेकिन जाटनी भी उसके मन की बात ताड़ गई। वह बोली--चलो रे बैलो, जैसे तम्हारा मालिक चलाये वैसे ही चलो। जाटनी की बात सुनकर जाट की योजना असफल हो गई।

१४१८ **चाली परवा पून, मतीरी गळ-गळ गई**
मिरियां मिरियां घाल सगी धी, वा बिरियां तो टळ गई।।

संदर्भ कथा—एक बार अकाल पड़ा तो एक जाट अकाल का समय काटने के लिये अपने सगे (समधी) के यहाँ गया, क्योंकि उसकी तरफ जमाना अच्छा था। जाट अपने समधी के खेत पर पहुँचा तो उस वक्त उसकी सगी (समधिन) ही खेत पर थी। समधी को आया देखकर उसने सोचा कि यह अकाल का मारा आया है और यदि इसे ठहरा लिया तो फिर यह टलने का नाम नहीं लेगा। इसलिये उसने सगे की बात भी नहीं पूछी। उस वक्त परवा हवा चल रही थी जिससे खेत में लगी मतीरियां गली जा रही थीं, लेकिन सगी ने उसे एक गलती हुई मतीरी भी खाने के लिए नहीं दी। वह बेचारा अपना सा मुँह लेकर चला गया।

अगले वर्ष उस जाट के यहां भी अच्छा जमाना हुआ। इस बार वह सगे के घर गया तो सगी ने सोचा कि इस बार सगे के यहां भी बहुत अच्छी

फसल है और वह एक दो दिन से ज्यादा नहीं रुकेगा। इसलिये सगी ने उसकी बड़ी आवभगत की और उसकी मनुहार करती हुई खिचड़ी में खूब घी डालने लगी। इस पर जाट ने कहा कि उस वक्त तो तुमने एक पिलती हुई मतीरी भी खाने को नहीं दी थी, अब चाहे जितना घी डालो, वह बात वापिस आने की नहीं।

१४१९. चालै है तो चाल निगोड्या, मैं तो गंगा न्हाऊंगी।

कलहारी औरत अपने पति से कहती है कि तुझे चलना है तो तू भी चल, अन्यथा मैं तो गंगा स्नान के लिये अवश्य जाऊंगी, चाहे कुछ भी हो जाए।

भरपूर नुकसान उठाकर भी अपने मन की बात को पूरी करना।

पद्य—चाकी फोडूं चूली फोडूं, घर कै आग लगाऊंगी।
चालै है तो चाल निगोड्या, मैं तो गंगा न्हाऊंगी॥

१४२० चावळ मिलता ल्हास में, होळी दिवाळी तेल।
गोहूं रांड गरमी करै, देख दई का खेल॥

जिस आदमी को कभी 'ल्हास' के समय ही गुड़ के चावल नसीब होते थे और होली दिवाली पर ही तेल के दर्शन होते थे, स्थिति परिवर्तन के साथ वही आदमी अब कहता है कि मुझे गेहूँ भी अब गर्मी करते हैं, भाग्य का खेल विचित्र है।

ल्हास = खेत पर सामूहिक रूप से दिन भर काम करने वालों को सामान्यतया गुड़ के भात बना कर खिला देते थे। यह सामूहिक काम बारी के अनुसार परस्पर एक दूसरे के खेत पर किया जाता था जिसे ल्हास करना कहते थे।

रू० ल्हासां मिलतो खीचड़ो, होळी दिवाळी तेल।
गीहूँड़ा गरमी करै, देख दई का खेल॥

१४२१. चावळां की भग्गर क्यां जोगी कोनी होवै।

चावलों की भग्गर का कोई उपयोग नहीं।

अभाव की स्थिति पैदा होने पर अमीर का लड़का शारीरिक श्रम करके अपना पेट भरने में भी असमर्थ रहता है।

१४२२. चावळां को खाणो, फळसै ताईं जाणो।

चावल हल्का-फुल्का खाद्य है, उसे खाकर दूर की पैदल यात्रा नहीं की जा सकती।

रू० (१) दाळ-भात को खाणो, फळसै ताईं जाणो।
(२) रोटी कहे मंजिल पहुँचाऊं, बाटी कहे फेर ले आऊं।
चावळ कहे मेरा हळका खाणा, मेरै भरोसै कदीं न जाणा।

१४२३. चिड़पड़ै सुहाग सूँ तो रंडापो ई चोखो।

अकर्मण्य और नामर्द पति की अपेक्षा तो वैधव्य ही अच्छा।

१४२४. **चिड़ियां जे माळौ करै, कोठां कमरां मांय ।**
बिरखा आयां आगमच, तो च्यार मास बरसाय ।।
वर्षा ऋतु के आगमन से पूर्व यदि चिड़ियें अपने घोंसले घर के कमरों में बनाने लगें तो जानो कि चौमासे के चारों महीने बरसतें निकलेंगे ।

१४२५. **चिड़ी चिड़ै की लड़ाई, चाल चिड़ा में आई ।**
पति-पत्नी का क्या रूठना ? जरा सी बात पर रूठ जाते हैं और जरा देर बाद मन जाते हैं ।

१४२६. **चिड़ी ज न्हावै धूळ में, मेहा आवण हार ।**
जळ में न्हावै चिड़कली, मेह विदा लिए वार ।।
चिड़ियों का धूल में नहाना वर्षा के आगमन का सूचन करता है और उनका जल में नहाना, मेह के विदा होने का ।

१४२७. **चित भी मेरी, पुट भी मेरी ।**
दोनों तरफ हाथ मारना ।

१४२८. **चित्रा दीपक चेतवे, स्वाते गोबरधन्न ।**
डंक कहै हे भड्डळी, अथक नीपजै अन्न ।।
यदि दिवाली चित्रा नक्षत्र में और गोवर्द्धन स्वाति नक्षत्र में हो तो डंक भड्डली से कहता है कि फसल भरपूर होगी ।

१४२९. **चिमतकार नैं निमसकार है ।**
चमत्कार को नमस्कार है ।
जो चमत्कार दिखलाता है, दुनिया उसे नवती है ।

१४३०. **चिरमिराट मिटज्या गिरगिराट कोनी मिटै ।**
मार की चरपराहट तो मिट जाती है, लेकिन 'गिरगिराट' (ऊहापोह) नहीं मिटता ।

संदर्भ कथा— एक ठाकुर अपने घोड़े पर चढ़ा जा रहा था । प्रात-काल का समय था, जाड़े की ऋतु थी और ठंड खूब पड़ रही थी । ठाकुर अपने शरीर पर एक उम्दा कम्बल लपेटे था । राह मे एक डोम मिला जो जाड़े के मारे ठिठुर रहा था । उसने नमस्कार करके ठाकुर से कम्बल मांगी तो उसकी स्थिति पर तरस खाकर ठाकुर ने कम्बल उसे दे दी और स्वयं आगे बढ़ गया ।

उधर डोम के मन में यह बात आई कि ठाकुर ने मांगते ही इतनी बढ़िया कम्बल मुझे दे दी, यदि मैं उससे उसका घोड़ा मांगता तो शायद वह घोड़ा भी दे देता । इसी ऊहापोह में वह ठाकुर के घोड़े के पीछे-पीछे दौड़ चला और उसने ठाकुर के पास जाकर घोड़े की मांग कर डाली । डोम की बात सुनकर ठाकुर को बड़ा गुस्सा आया और उसने तीन-चार कोड़े डोम

के लगा दिये। अब डोम का संशय मिट गया और उसने ठाकुर से कहा—ठाकरां! कोड़े की मार वाली यह चरपराहट तो मिट जायेगी, लेकिन मन की गिरगिराहट कभी न मिटती। यदि मैं आपसे घोड़ा न मांगता तो मेरे मन में सदैव यह बात खटकती रहती कि घोड़ा न मांग कर मैंने बड़ी भूल की, क्या पता ठाकुर घोड़ा दे ही देता।

१४३१. **चीकणी चोटी का सैं लगवाळ।**
पैसे वाले से सभी कुछ न कुछ ऐंठने की ताक में रहते हैं।

१४३२. **चीकणै घड़ै कै छांट न लागै, जै लागै तो चीटो।**
पापी कै परमोद न लागै, पैजारां सैं पीटो॥
चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता। हां, उस पर 'चीटा' (तेल या घी का किट्ट) अवश्य चिपक जाता है। इसी प्रकार पापी पर प्रबोधन का असर नहीं होता, वह तो जूतों से पीटने पर ही मानता है।

१४३३. **चुगल कोनी चूकै, और सै चूकज्या।**
और सब चूक सकते हैं, लेकिन चुगलखोर चुगली खाने से कभी नहीं चूकता।

१४३४. **चुगलखोर चुगली करै, जड़ामूळ सैं जाय।**
दूसरों की चुगली करने से स्वयं चुगलखोर का ही विनाश हो जाता है।

१४३५. **चुस्सी धन कै जोर पर कूदै।**
चुहिया धन के बल पर कूदती है।

सन्दर्भ कथा—एक बार कोई साधु किसी मठधारी साधु के यहां गया। रात को दोनों साधु परस्पर बात-चीत करने लगे। लेकिन मठधारी साधु का ध्यान दूसरी तरफ लगा हुआ था। एक चुहिया छींके पर टंगी हुई भोज्य-सामग्री की तरफ बार-बार कूदती थी और मठ वाला साधु एक फटे बांस को जमीन पर मार कर उसे हर बार भगाता था। आगन्तुक साधु ने जब उससे पूछा कि तुम मेरी बात को ध्यान से क्यों नहीं सुनते, तो मठ वाले साधु ने सारी स्थिति उसे बतला दी। इस पर उसने कहा कि अवश्य ही इस चुहिया के बिल में धन है और यह उसी के बल पर कूदती है। उसके कहने पर मठ वाले साधु ने चुहिया के बिल को खोदा तो सचमुच ही वहां कुछ द्रव्य मिला। इस पर आगन्तुक साधु ने मठ वाले साधु से कहा कि अब तुम निश्चिन्त होकर सो जाओ, अब यह चुहिया छींके तक नहीं कूद सकती। थोड़ी देर बाद चुहिया आई, वह कूदी, लेकिन उसकी छलांग अब छींके से आधी भी नहीं रह गई थी।

१४३६ **चूहसै कै बिल में ऊंट कद मावै?**
चूहे के बिल में ऊंट कब समाये?
छोटा आदमी बड़ी चोरी को नहीं पचा सकता।

१४३७. चूस्रै नै पा'गी हळदी की गांठ अर पसारी बरा बैस्यो ।

चूहे को हल्दी की गांठ मिल गई तो वह पंसारी बन बैठा।

रू० सूंठ को गांठियो लेकर पसारी वरा बैठ्यो।

१४३८. चूंटी चून, घड़ा दस पाणी का ।

व्यर्थ का प्रदर्शन।

१४३९. चूड़ै ग्राळी नै घर-घर सुहाग ।

चूड़े वाली को घर-घर सोहाग ।

१४४०. चूड़ै में चूड़ी खटाज्या ।

चूड़े मे चूड़ी खटा सकती है ।

व्यभिचारिणी स्त्री का पति जीवित हो तो उसका व्यभिचार छिप जाता है। पति की जीवित ग्रवस्था में वह दूसरे के गर्भ को भी पति का गर्भ बतला कर बच सकती है, लेकिन पति के न होने पर वैसा नहीं कर सकती ।

रू० चूड़ै में बंगड़ी खटाज्या, खाली बंगड़ी टंट फोड़ गेरै ।

१४४१. चूड़ो भळकै, पेट कळपै ।

सोहागिन तो है, लेकिन पुत्रवती नहीं ।

१४४२ चूतियां को माल मसखरा खावै ।

१४४३. चूनड़ ग्रोढै गांठ की, नांव पी'र को होय ।

वह भले ही ग्रपने पैसे से तैयार करवाकर चुंदरी ग्रोढे, लेकिन नाम पीहर वालों का ही होता है ।

१४४४. चूनै में भाठो, घी में लाठो ।

१४४५. चूल्है पर ली तेरी, तवै परली मेरी ।

चूल्हे वाली तेरी, तवे ऊपर की मेरी ।

ग्रत्यंत ग्रभाव की स्थिति ।

१४४६. चेजो चला कर देखो, ब्या मांड कर देखो ।

खर्चीले होने के ग्रतिरिक्त दोनों ही कामों में विविध प्रकार की सामग्री एवं साधन जुटाने होते है, ग्रनेक प्रकार की प्रक्रियायें निभानी पड़ती है तथा दोनों ही काम कठिनता से निपटने में ग्राते हैं ।

१४४७. चैत चिड़पड़ो तो सावरा निरमळो ।

चैत्र मास में बूंदा-बांदी होती रहे तो सावन में ग्राकाश निर्मल (विना बादलों के) रहे, ग्रर्थात् वर्षा न हो ।

रू० (१) चैत में पाणी तो सावरा में धूळ उडाणी ।

(२) चैत चिरपड़ो माघजी, फळै नहीं बरााराय ।

माय बिसारै डीकरा, बच्छ बिसारै गाय ।।

१४४८. चैत मास में वीज ल्हुकोवै, वैसाखां में केसू धोवै ।
जेठ मास जै जाय तपंता, तो कुण रोकै जळ वरसंता ।।
चैत मास में बिजली न चमके, वैशाख में कुछ वर्षा हो और जेठ मास खूब तपे तो फिर वर्षा को कौन रोक सकता है ? अर्थात् भरपूर वर्षा हो ।

१४४९. चैते गुड़ वैसाखै तेल, जेठे पंथ असाढे वेल ।
सावण साग भादवो दही, क्वार करेला काती मही ।
अगहन जीरा पूसे धाणा, माहे मिसरी फागण चिणा ।।
चैत में गुड़, वैशाख में तेल, जेठ में पैदल यात्रा, आषाढ में बेल-फल, सावन में हरे शाक, भादों में दही, आसोज में करेला, कार्तिक में छाछ, मार्गशीर्ष में जीरा, पौष में धनिया, माघ में मिसरी और फाल्गुन में चना वर्जित है ।

१४५० चोखो दिन आवै जद उगाई आवै, न्याऊ दिन आवै जद डूबत आवै ।
अच्छा दिन आता है तो मनुष्य की डूबी हुई उगाही भी आ जाती है और बुरा दिन आने पर रकम डूब जाती है ।

१४५१. चोदू को हिमायती हारै ।
पोचे आदमी की हिमायत करने वाले को भी नीचा देखना पड़ता है ।

१४५२ चोदू जात मजूर की, मत करिये करतार ।
दांतण करै न हर भजै, करै उंवार-उंवार ।।

१४५३. चौधरी गंगा न्हायो के ? 'क खोदी कुण ही ?
जब किसी काम के कर्त्ता से ही पूछा जाए कि उसे उस काम की कोई जानकारी है क्या ?
रू० चौधरी पोकर न्हायो के ? 'क खोदयो कुण हो ?

१४५४ चोपड़ी अर दो दो !
चुपड़ी और दो दो ?

१४५५ चोव जितरी सोभ ।
व्यय के अनुरूप ही शोभा ।

१४५६. चोर कनै वागळी ई कोनी ।
चोर के पास 'वागळी' भी नहीं ।
ऐसा अभावग्रस्त या नौसिखिया चोर जिसके पास 'वागळी' भी नहीं ।
वागळी = वह थैली जिसमें वस्तु डाल कर बगल में छिपाई जा सके ।

१४५७. चोर की मा घड़ै में मूंडो देकर रोवै ।
चोर की माँ घड़े में मुँह डाल कर रोती है जिससे भेद न खुले ।
चोर नारि जिमि प्रगटि न रोई ।

१४५८ चोर कै पग कोनी होवै ।
चोर के पाँव नहीं होते । जरासी आहट पाते ही वह भाग छूटता है ।

१४५९ चोर-चोर मौसेरा भाई।

चोर-चोर मौसेरे भाई।

१४६०. चोर चोरी करै पण घर में बोलै साच।

चोर चोरी करता है लेकिन घर वालों को सच-सच बतला देता है कि कितनी चोरी की है।

१४६१. चोर चोरी सें गयो पण हेरा-फेरी सें तो कोनी गयो।

चोर ने चोरी करनी छोड़ दी तो क्या हेरा-फेरी से भी गया?

संदर्भ कथा—एक चोर किसी साधु के उपदेश से चोरी करना छोड़ कर उसका शिष्य बन गया। साधु के और भी बहुत से शिष्य थे। नया शिष्य रात को उनकी तूंबियां और लगोटियां इधर-उधर कर दिया करता। एक की तूंबी दूसरे के पास और दूसरे की लंगोटी तीसरे के पास। तब उन सबने मिल कर गुरु से इसकी शिकायत की। गुरु ने नये शिष्य को बुला कर पूछा तो उसने अपना अपराध स्वीकार करते हुए गुरु से कहा कि बाबाजी! चोर चोरी से गया तो क्या हेरा फेरी से भी गया?

१४६२. चोर नै कैवै लाग, साहूकार नै कैवै जाग।

चोर से कहता है चोरी कर और साहूकार को सावधान करता है कि जगता रह।

दोनों ओर भाठे भिड़ाने वाला व्यक्ति।

१४६३. चोर नै के मारै, चोर की मा नै ई मारै।

चोर को मारने की अपेक्षा चोर की माँ को मारना उचित है, जिससे चोर का जन्म ही न हो।

समस्या का सही हल ढूंढना अपेक्षित है।

१४६४. चोर नै च्यानणो कद सुहावै?

चोर को चाँदना कब सुहाये?

१४६५. चोर पेई लेग्यो तो के होयो, चाबी तो मेरै कन्नै ई है।

चोर संदूक चुरा कर ले गया तो क्या हुआ? उसकी चाबी तो मेरे पास ही है।

सन्दर्भ कथा—एक बुढिया ने अपनी सारी पूंजी एक पेटी में रख कर उसे ताला लगा दिया और चाबी अपने पास सम्हाल कर रखने लगी। एक रात को एक चोर उसकी पेटी चुरा ले गया। सवेरे जगने पर उसे चोरी की बात मालूम हुई तो वह बड़े इतमीनान से बोली कि पेटी ले गया तो क्या हुआ, उसकी चाबी तो मेरे ही पास है।

१४६६. चोरां कुतिया रळ गई, पैरा किसका देय?

जब कुतिया चोरों के साथ मिल गई तो पहरा क्या दे?

१४६७ **चारी को धन मोरी में जा ।**

चोरी का धन व्यर्थ जाता है ।

रू० चोर को माल चिड़ाळ खावै ।

१४६८ **चोरां कै चौबारा कोनी होवै ।**

चोरों के चौबारे नहीं बनते ।

रू० (१) चोरां कै टोडा कोनी झुकै ।

(२) चोरां कै धन होवै तो सगळा ई चोरी करण नै लाग ज्यावे ।

१४६९ **चोरां कै भी चोर लागज्या ।**

कभी कभी चोरों के भी चोर लग जाते हैं ।

१४७०. **चांदा कुंडळ तारा माहीं, वाय वजावै विरखा नाहीं ।**
जे बरसै तो झड़ी लगावै, सोता नाग पताळ जगावै ।।

चन्द्रमा के चारों ओर बड़ा कुण्डल हो, उसके बीच में तारे दिखलाई पड़ें और वायु जोरों से चले तो वर्षा न हो, लेकिन कदाचित् वर्षा हो तो फिर झड़ी ही लग जाए ।

१४७१. **चौमासै को गोबर लीपणै को न थापणै को ।**

चौमासे का गोबर न लीपने के काम आता है और न थापने के ।

निकृष्ट व्यक्ति किसी काम नहीं आता ।

रू० बिल्ली को गू लीपणै को न पोतणै को ।

१४७२ **चौमासो तीनां बुरो, छेळी ऊंट रबाब ।**

चौमासा बकरी, ऊंट और रबाब (एक वाद्य) तीनों के लिए बुरा होता है ।

१४७३. **च्यानणी रात करम में लिखी होती तो रातीनो ई' क्यूं होवतो ?**

यदि भाग्य में चांदनी रात का सुख भोगना बदा होता तो रतौंधी क्यों होती ?

१४७४. **च्यार डांगां चोधरी, पांच डांगां पंच ।**
जोंकै घर में छः डांग, वो पंच गिणै न ढंच ।।

जिसके घर में चार लठैत हों वह चौधरी, पांच लठैत हों वह पंच एवं जिसके घर में छह लठैत हों तो वह किसी पंच-पंचायती की परवाह ही नहीं करता ।

आज जिसके घर में शक्ति संपन्न लोगों की बहुलता है, समाज में उसी का सिक्का जम जाता है ।

१४७५. **च्यार थंभ है बरस का, जाणै जाणनहार ।**
जे च्यारूं हो जाय तो, होवै जय जय कार ।।

वर्ष के चार स्तम्भ माने गये हैं । जिस वर्ष ये चारों ही आ जाते हैं तो प्रजा में सुख चैन रहता है ।

चैत शु० प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र होना जल का स्तम्भ माना जाता है । ऐसा योग बने तो वर्षा भरपूर हो । वैशाख शु० प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र

हो तो यह त्रण स्तम्भ कहा जाता है, इसके फल-स्वरूप घास खूब हो। जेठ शु० प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र वायु स्तम्भ और आषाढ शु० प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र का होना अन्न का स्तम्भ माना जाता है जिससे अन्न खूब होता है।

१४७६. **च्यार दिनां की च्यानणी, फेर अंधेरी रात।**

सुख-ऐश्वर्य अस्थायी हैं।

१४७७. **च्यारुं धार दुहारै में पड़ै, जद भरतां के बार लागै ?**

जब चारों धार एक साथ दुहारे में गिरें तो उसे भरते क्या देर लगे ?

जब चारों ओर से आमदनी हो तो सम्पन्नता आते देर नहीं लगती।

१४७८. **छछियारी नै छछियारी कोनी सुहावै।**

एक छछियारी (दूसरों के घर से छाछ मांग कर लाने वाली) को दूसरी छछियारी नहीं सुहाती, क्योंकि वह सोचती है कि दूसरी छछियारी उसका हिस्सा बटा लेगी।

१४७९. **छठ उजाळी पोस की जे विरखा हो जाय।**
सावण महीना मांय नै, अवसै विरखा होय॥

पौष शु० ६ को यदि वर्षा हो जाए तो आगामी सावन में अवश्य वर्षा हो।

१४८०. **छदाम की छाजली, छै टका गंठाई का।**

छदाम की छाजली छोटा छाज) और छः टके उसकी गठाई पर खर्च किये जाएं !

१४८१. **छह ग्रह एक रास पर आवै।**
महाकाळ नै नूंत र लावै॥

एक राशि पर छः ग्रह एकत्र हों तो घोर दुर्भिक्ष पड़े अथवा महा विनाश हो।

१४८२. **छत्री मार निछत्री कीधो, सूई ले ओलो ले लीधो।**

कहा जाता है कि जब परशुरामजी ने क्षत्रियों का विनाश किया तब कुछ क्षत्रियों ने सुई लेकर अर्थात् दर्जी का पेशा अख्तियार करके अपने प्राणों की रक्षा की।

१४८३ **छा अर बेटी मांगणै में लंजण कोनी।**

छाछ और बेटी मांगने में कोई सामाजिक लांछन नहीं।

बेटी मांगने से तात्पर्य लड़के वाले की ओर से अपने लड़के के विवाह संबंध के लिए लड़की वाले से उसकी बेटी मांगना है।

अब तो दहेज प्रथा की प्रबलता के कारण लड़की वाले को ही लड़के की तलाश में भटकना पड़ता है और उसके निहोरे खाने पड़ते हैं, लेकिन पहले जब बेटे वाले को किसी की बेटी जँच जाती थी तो वह स्वयं अपने बेटे के लिये उसकी मांग कर लेता था।

१४८४. **छाछ घालतां छाती फाटै, दूध घालणो दोरो ।**
रोटी घालतां रोज आवै, वात वणाणो सोरो ।।
अतिथि को खिलाना-पिलाना तो दूभर, केवल वातें बनाना आसान ।

१४८५. **छाछ छांवळी छोकरा अर छन्दगाळी नार ।**
च्यारूं छ छ्‌छा जद मिलै, जद तूठै करतार ।।
समुचित छायादार आवास, घर में 'धीना', पुत्रों की औलाद एवं नखराली पत्नी ये चारों भगवत् कृपा से ही प्राप्त हो सकते हैं ।

१४८६. **छा छाळी, भैंस वुढाळी ।**
छाछ बकरी की अच्छी, भैंस प्रौढा अच्छी, क्योंकि उसके घी ज्यादा होता है ।
रू० छा छाळी की, घी भैंस को अर दूध गाय को ।

१४८७. **छा छीतरी, छोरी ईतरी ।**
अधिक पानी मिली हुई छाछ और इतराई हुई बेटी अच्छी नहीं होती ।

१४८८. **छाज तो बोलै जिको बोलै, चालणी रांड के बोलै जिकी में ठोतर सै वेज ।**
छाज (सूप) तो बोले सो बोले, लेकिन चलनी क्या बोले जिसमें १०८ (अनगिनत) छिद्र हैं ।
सदाचारी और ईमानदार व्यक्ति तो दूसरों से कुछ कहे तो ठीक है, लेकिन जो स्वयं कदाचारी और भ्रष्टाचारी हो उसे दूसरों से कुछ कहने का क्या हक है ?

१४८९. **छाजैजी का छाज करै, राजैजी का राज करै ।**
प्राय: छाज बनाने वाले राजाओं के साथ अपने परिवारिक सम्बन्ध जोड़ते हुये कहा करते हैं कि एक बाप के दो बेटे थे—छाजा और राजा, सो छाजा के वंशज तो हम छाज बनाते हैं और राजा के वंशज राज करते हैं ।

१४९०. **छाटी गेरयां पीछै क्यांकी जगात ?**
जब छाटी ही डाल दी तब फिर जकात काहे की ?
जब सारा माल ही सौंप दिया तब जकात किस चीज की ?
छाटी = अनाज भरने का बड़ा और मजबूत बोरा जिसे प्राय: बकरी के बालों या जट से तैयार करते थे ।

१४९१ **छाती पर बेरियो पड्यो, 'क कोई मुंह में गेरदे तो खाल्यूं ।**
आलसी आदमी अपनी छाती पर पड़े बेर को भी उठाकर मुंह में डालने का श्रम नहीं करना चाहता ।

संदर्भ कथा—दो आलसी आदमी एक झड़बेरी के नीचे सोये हुये थे । एक की छाती पर एक पका हुआ बेर आकर गिरा, लेकिन आलस्य के कारण उसने बेर को मुंह में नहीं डाला । कुछ देर बाद उधर से एक घुड़सवार निकला तो उसने घुड़सवार से कहा कि भाई ! मेरी छाती पर जो बेर पड़ा

है उसे मेरे मुँह में तो डाल दो। घुड़सवार ने उसे झिड़कते हुये कहा कि तुम बड़े आलसी हो जो अपनी छाती पर पड़े बेर को भी उठा कर अपने मुँह में नहीं डाल सकते। तब पास लेटे हुये दूसरे आलसी ने उसकी बात का समर्थन करते हुये कहा कि हां भाई ! यह बड़ा ही आलसी है। रात भर एक कुत्ता मेरे मुँह को चाटता रहा और इसने कुत्ते को दुत्कारा भी नहीं।

१४६२. **छानी बुलाई, ऊंट चढी आई।**

कहा तो था छुप कर आने के लिये और आई ऊंट पर चढ़ कर।

जिस काम को छिपा कर करने को कहा था, उसका भरपूर प्रदर्शन कर डाला।

१४६३. **छायां छायां आई, छायां छायां जाई।**

छाया में ही आना और छाया होने पर ही जाना।

संदर्भ कथा—एक सेठ मरते समय अपने बेटे को यह शिक्षा दे गया कि बेटा ! दुकान पर छाया-छाया जाना और छाया-छाया ही आना। पिता की आज्ञा का पालन करने की दृष्टि से पुत्र ने घर से लगाकर दुकान तक का पूरा रास्ता चाँदनियों से छवा दिया जिससे दिन भर पूरे रास्ते में छाया ही बनी रहती। लड़का दोपहर तक घर में पड़ा रहता और कुछ देर के लिये दुकान पर जाकर पुनः घर लौट आता। दुकान का काम न सम्भालने से दुकान में घाटा होने लगा। इसका कारण पूछने पर बूढ़े मुनीम ने कहा कि आपके पिता ने आपको जो सीख दी थी, उसका सही आशय आपने नहीं समझा। उनके कहने का तात्पर्य यह था कि छाया रहते-रहते अर्थात् धूप होने से पहले दुकान पर जाना और पुनः छाया होने पर सूर्यास्त होने पर। घर लौटना। लड़के की समझ में बात आ गई और वह वैसा ही करने लगा, जिससे उसका कारोबार फिर चमक उठा।

१४६४. **छा रोटी रायतो, कहो बहू न खाय तो।**

घर में तो छाछ-रोटी ही है, बहू को भूख लगे तो खाले।

घर की स्थिति के अनुकूल ही अपने को ढालना होता है।

संदर्भ कथा—किसी धनी आदमी की लड़की सयोग से किसी गरीब घर में ब्याही गई। घर में इस कदर तंगी थी कि शाक-दाल भी नहीं बन पाता था। घर के लोग या तो छाछ के साथ रोटी खाते थे अथवा छाछ में नमक-मिर्च डाल कर रायता बना लिया जाता था। बहू ने अपने बाप के घर में कभी ऐसा खाना नहीं खाया था, अतः वह या तो भूखी रह जाती थी अथवाकभी मन मार कर एक-आधी रोटी खा लेती थी। एक बार बहू ने तीन-

दिनों तक रोटी नहीं खाई और बैठी-बैठी बार-बार इसी बात को दोहरा रही थी—छा रोटी रायतो, छा रोटी रायतो। उसके श्वसुर ने यह बात सुन ली तो उसने उसे सुना कर कहा कि हां बहू, यहाँ तो छाछ रोटी और रायता ही मिलेगा, खाना हो तो खालो। निदान बहू ने सोच लिया कि अब तो जिन्दगी भर यहीं रहना है, अतः जो कुछ मिलता है, वही खाना पड़ेगा।

१४९५. **छिण छाया छिण तावड़ो, बिरखा रुत कै मांय।**
इण लखणां सें जाणज्यो, बिरखा गई बिलाय॥
वर्षा ऋतु में छन में धूप निकले और छन में छाया हो तो जानो कि वर्षा चली गई।

१४९६. **छींकत खाये छींकत पीये, छींकत रहिये सोय।**
छींकत पर घर कदे न जाये, आछी नाहीं होय।
खाते, पीते, और सोते समय की छींक तो अच्छी होती है, लेकिन, दूसरे के घर प्रस्थान करते समय की छींक अहितकारी मानी जाती है।

१४९७. **छींकतां ईं किसा नाक कटै ?**
किसी के छींक देने पर उसकी नाक थोड़े ही काट ली जाती है ?

१४९८. **छींकतां ईं नाक कटै।**
अति सामान्य बात के लिये भी दण्डित किया जाता है।

१४९९. **छींट अर छिनाळ दूर सें घणी फूठरी लागै।**
छींट और छिनाल औरत दूर से ज्यादा आकर्षक लगती है।

१५००. **छींट की भांत अर ऊत की जात को नमेड़ कोनी।**
जैसे छींट की भांत अनेक प्रकार की होती हैं, वैसे ही बेवकूफ भी तरह-तरह के होते हैं।

१५०१. **छेळी खटीक नैं धीजै।**
बकरी खटीक को ही पतियाती है, भले ही वह उसकी खाल निकाल ले।

१५०२. **छेळी दूध तो देवै, पण देवै मींगणी करकै।**
बकरी दूध तो देती है, लेकिन देती है मेगनी करके।
वह आदमी जो देता तो है, लेकिन देता है परेशान करके।
रू० बकरी दूध तो देवै, पण देवै मींगणी रळा कर।

१५०३. **छोटी मोटी कामणी सगळी विष की बेल।**
छोटी हो या बड़ी, सभी कामिनियां विष की बेल हैं अथवा विषय-वासना की ओर ले जाने वाली हैं।

१५०४. **छोटो जितोई खोटो।**
जितना छोटा, उतना ही खोटा।

१५२०. जठै पड़ै मूसळ, वठै खेम कुसळ ।

मूसल से चूरमा कूटा जाना क्षेम-कुशल का द्योतक है। वार-त्योहार एवं खुशी के अन्य अवसरों पर भी राजस्थान में घर-घर चूरमा बनाने की परम्परा है ।

१५२१. जठै बिरछ नईं, वठै अरंड ई रूंख ।

जहाँ वृक्ष न हों, वहाँ एरंड ही वृक्ष ।

१५२२. जठै भागां भागी जाय, वठै भाग अगाऊ जाय ।

चाहे कोई कहीं भी भाग कर चला जाए, उसका भाग्य उससे पहले ही वहाँ पहुँच जाता है ।

रू० जा देखो धरती को ओड़, वोही माथो वाही खोड़ ।

१५२३. जठै राणोजी वसै, वठै ही उदैपुर ।

जहाँ राणाजी बसें, वहीं उदयपुर ।

जहाँ राजा वसे, वही राजधानी ।

१५२४. जठै रोजगार वठै ई घरवार ।

मनुष्य जहाँ रोटी-रोजी कमाता है, कारोबार करता है, उसका घर-बार भी वहीं हो जाता है ।

राजस्थान के अनेक लोगों ने राजस्थान से बाहर जाकर देश के विभिन्न भागों में अपना कारोबार प्रारम्भ किया और कालांतर में उन्होंने वहीं अपने घर बसा लिए ।

१५२५. जणनो तो सीखी 'क !

वहू जनना (प्रसव करना) तो सीखी !

काम का प्रारम्भ तो हुआ । भले ही उसमें पहले पहल लाभ न हुआ हो अथवा कम हुआ हो । लेकिन आगे जाकर विशेष लाभ भी हो सकता है ।

संदर्भ कथा—किसी ठाकुर के लड़के का विवाह हुए कई वर्ष बीत गये, लेकिन उसके कोई संतान नहीं हुई । बहुत समय बाद वहू के एक लड़की हुई । बांदी ने इसकी सूचना ठाकुर को दी तो ठाकुर ने संतोष प्रकट करते हुए कहा कि अच्छी बात है—वहू ने जनना तो सीखा । आज बेटी हुई है तो अगली बार बेटा भी हो जाएगा ।

१५२६. जत्ती है तो जत्तण क्यूं ?

यदि यति (ब्रह्मचारी) है तो पास में औरत क्यों ?

रू० जत्तण है तो जत्ती क्यूं ?

१५२७ जद कद दिल्ली तँवरां ।

जब-कब दिल्ली पर पुनः तँवरों का अधिकार होगा ।

दिल्ली पर किसी समय तँवरों का शासन था जो छिन गया। लेकिन तँवरों को यह गुमान रहा कि कभी न कभी पुनः दिल्ली पर तँवरों का अधिकार होगा। परन्तु उनकी यह आशा सफलीभूत नहीं हुई। फिर भी यह आम कहावत बन गई और किसी स्थान पर पुनः अधिकार करने की आशा में यह कहावत गर्वोक्ति की तरह प्रयुक्त होती है।

१५२८. जद चोखा दिन बावड़ै, पाक्या पावै बोर।
घर भूरी घोड़ी जणै, मरिया पावै चोर॥

जब अच्छे दिन आते हैं तो सब काम अनायास ही लाभप्रद होते जाते हैं।

सन्दर्भ कथा— एक ठाकुर बड़ा अकर्मण्य था और कभी कुछ कमाता-कजाता नहीं था। एक दिन ठुकरानी ने ठाकुर से अधिक कहा-सुनी की तो वह बोला कि मैं कल कमाने जाऊंगा। ठुकरानी जानती थी कि ठाकुर जाएगा तो भी १-२ दिन बाद वापिस आ जाएगा, क्योंकि वह पहले भी कई बार ऐसा कर चुका था। इसलिये उसने गुस्से में आकर ठाकुर के लिये चूरमे के जो लड्डू राह में खाने हेतु बनाये, उनमें तेज विष मिला दिया।

ठाकुर घर से चल पड़ा और शाम होते-होते एक तालाब के किनारे पहुँचा। वहां बहुतेरी झड़बेरियां खड़ी थीं जिनमें पके और मीठे बेर लगे हुए थे। ठाकुर ने भर पेट बेर खाये और लड्डुओं की पोटली को सिरहाने रख कर वहीं सो गया। आधी रात के बाद वहां चार चोर आये जो नजदीकी शहर में से काफी माल-मत्ता चुराकर लाये थे। उन्होंने ठाकुर के सिरहाने से पोटली निकाली और चारों विष मिले लड्डू खा कर सो गये—लेकिन फिर कभी नहीं उठे।

सवेरे ठाकुर जगा तो उसे सारी स्थिति समझते देर नहीं लगी। वह सारा धन लेकर घर आ गया। उधर उसकी अनुपस्थिति में रात को एक चारण ने उसके घर आश्रय लिया। चारण की घोड़ी सगर्भा थी और उसी रात को उसने एक बछेड़े को जन्म दिया। चारण अफीमची था और बड़े तड़के ही जब वह वहां से विदा हुआ तो अन्धेरे में बछेड़े को देखकर भी उसने यही समझा कि यह ठाकुर की भैंस का कटरा है और इस प्रकार उपरोक्त कहावती पद चरितार्थ हो गया।

१५२९. जननी जणै तो भक्त जण, कै दाता कै सूर।
नातर रहजे बांझड़ी, मती गंवाजे नूर॥

जननी यदि पुत्र प्रसव करे तो ऐसा पुत्र जन्मे जो भक्त, दाता या शूरवीर हो अन्यथा वह पुत्र प्रसव कर क्यों अपना सौन्दर्य गंवाये?

१५३०. जब लग जीणा, तब लग सीणा ।

जब तक जीना है, तब तक सीना ही है अर्थात् आयु पर्यन्त काम ही करते रहना है ।

१५३१. जब तक तेरे पुण्य का, बीता नहीं करार ।
तब लग तुझ को माफ है, औगण करो हजार ।।

जब तक मनुष्य का पुण्य समाप्त नहीं होता, तब तक वह भले कितने ही अपराध करे, कोई उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता ।

१५३२. जबान में ई रस, जबान में ई विष ।

जबान या बोली में ही रस भी होता है और विष भी । प्रिय एवं मीठी बोली से काम बन जाता है तथा अप्रिय और कड़वी बात कहने से बिगड़ जाता है ।

सन्दर्भ कथा–(१) एक बार बादशाह ने अपने एक हिन्दू वजीर से पूछा कि सबसे मीठी और सबसे कड़वी चीज क्या होती है ? वजीर ने उत्तर दिया कि—जबान । बादशाह ने इसका प्रमाण मांगा तो वजीर ने एक दिन बादशाह की प्रधान बेगम को अपने यहाँ आमन्त्रित किया । बेगम अनेक दासियों के साथ वजीर के यहाँ आई तो वजीर ने उसकी इतनी आवभगत की कि बेगम अत्यन्त प्रसन्न हुई और उसने सोचा कि बादशाह सलामत से कहकर इसे प्रधान वजीर बनाऊंगी । लेकिन जब वह जाने लगी तो वजीर ने उसे सुना कर अपने सेवकों से कहा कि घर में तुर्किन के आने से घर अपवित्र हो गया है, अत: सारे घर को गंगाजल से धो डालो । बेगम ने वजीर की यह बात सुनी तो उसके बदन में आग लग गई । उसने महल में जाकर बादशाह से वजीर को कड़ा दण्ड देने की प्रार्थना की । बादशाह ने वजीर को तलब किया तो वजीर ने सारी बात का खुलासा करते हुये बादशाह से कहा कि मैंने तो आपके प्रश्न का ही उत्तर दिया है । सुनकर बादशाह संतुष्ट हो गया ।

(२) एक दिन एक राहगीर किसी जाट के घर पहुँचा और उसने जाटनी से कहा कि मेरे पास चावल और दाल तो हैं, यदि तुम मुझे पकाने के लिए एक बर्तन दे दो और स्थान बतलादो तो मैं खिचड़ी पकालूं । जाटनी ने उसे एक बर्तन दे दिया और घर के आंगन में खड़े नीम के नीचे स्थान बतला दिया । मुसाफिर ने खिचड़ी चढ़ा दी । फिर उसने जाट के घर की ओर देखा । जाट बड़ा सम्पन्न था, घर में कई गायें भैंसें बंधी थीं । राहगीर ने जाटनी से कहा कि तुम्हारे घर का दरवाजा बहुत छोटा है, यदि यह भैंस घर के अन्दर ही मर जाए तो इसे काट कर ही बाहर निकालना पड़े । जाटनी को यह बात बहुत बुरी लगी और उसने राहगीर से कहा कि

तू अपनी खिचड़ी पकाले और व्यर्थ की बातें न कर। लेकिन राहगीर से चुप नहीं रहा जाता था। थोड़ी देर बाद उसने जाटनी के चूड़े की ओर इशारा करके कहा कि तुम्हारा नया चूड़ा बड़ा कीमती है, लेकिन यदि जाट आज मर जाए तो तुम्हें अपना नया चूड़ा आज ही फोड़ना पड़े। राहगीर की बात सुनकर जाटनी तमक कर उठी। उसने राहगीर की अधपकी खिचड़ी उसके अंगोछे में डाल दी और उसे घर से निकाल दिया।

अंगोछे में से अधपकी खिचड़ी का पानी टपक रहा था। रास्ते में किसी ने पूछा कि यह क्या है, तो उसने उत्तर दिया—मेरी जबान का रस टपक रहा है।

१५३३. जबान हारी जिको जलम हार्यो।

जो अपने वचन का पालन नहीं करता, उसका जीना धिक्कार है।

१५३४. जम सूं जब्बर बाणियों।

बनिया यमराज से भी जबरदस्त होता है।

संदर्भ कथा—एक बनिया बड़ा मालदार था, लेकिन साथ ही कंजूस भी अव्वल दर्जे का। उसने अपनी जिन्दगी में कोई दान-पुण्य नहीं किया। हां केवल अपनी पत्नी के बहुत कहने सुनने पर उसने एक मरियल गाय एक ब्राह्मण को दान में दी थी जो सवा पहर जीने के बाद मर गई। जब बनिया मृत्यु के बाद यमराज के यहां पहुँचा तो यमराज ने उससे पूछा कि पहले पाप का फल भोगना चाहते हो या पुण्य का? बनिये ने कहा पुण्य का। इस पर यमराज ने वह गाय लाकर उसके आगे खड़ी कर दी और कहा कि तुम्हारे खाते में तो सारे पाप ही पाप हैं, केवल यह गाय तुमने दान में दी थी जो सवा पहर जीने के बाद मर गई, इसलिए सवा पहर के लिए यह गाय तुम्हारी इच्छा के मुताबिक काम कर देगी।

यमराज की बात सुनकर बनिये ने गाय की पूंछ पकड़ली और गाय से कहा कि अपने तीखे सींगों को यमराज के पेट में घुसेड़ कर उसे मार डाल। बनिये का आदेश सुनते ही गाय क्रोध में भरकर यमराज की तरफ लपकी यमराज डर कर भाग पड़ा और पुकार लेकर विष्णु भगवान् के पास पहुँचा। गाय और बनिया भी उसके पीछे-पीछे वहां पहुँच गये। यमराज ने सारी बात विष्णु भगवान् को बतलाई तो उन्होंने बनिये से कहा कि तुम्हारी सवा पहर बीत चुकी है और अब तुम्हें सदा के लिए कुम्भी पाक नरक में रहना होगा। इस पर बनिये ने भगवान् से प्रार्थना की कि भगवन्! जो भी पापी आपका नाम स्मरण कर लेता है, वह भी स्वर्ग का अधिकारी हो जाता है और मैंने तो साक्षात् आपके दर्शन कर लिए हैं तो क्या अब भी मुझे नरक भोगना पड़ेगा? बनिये की

बात सुनकर भगवान् मुस्कराये और उन्होंने यमराज से कहा कि तुम जाओ, बनिया स्वर्ग में ही रहेगा।

१५३५. जम सें बुरी जनेत।

किसी समय जनेत (बारात) जाना यम यातना से भी कष्टकर समझा जाता था क्योंकि न तो आवागमन के समुचित साधन थे और न अन्य सुविधाएँ।

पद्य—भूख मरण भूमि पड़न, पड़ै बुगं में रेत।
राघो चेतन यूं कवै, जम सें बुरी जनेत।।

१५३६. जमीं जोरू जोर की, जोर हट्यां है और की।

शक्ति के अभाव में जमीन और स्त्री पर भी दूसरे लोग अपना हक जमा लेते हैं।

रू० जर जमी जोरू जोर की, जोर हट्यां है और की।

१५३७. जयो चींचड़ो दायमो, खटमल माछर जूं।
अकल गई करतार की, इता बणाया क्यूं ?

भगवान् ने इन सबको व्यर्थ ही बनाया।

१५३८. जळ को डूब्यो तिर निकळै, तिरिया डूब्यो बह ज्याय।

पानी में डूबा हुआ आदमी तैर कर निकल सकता है, लेकिन नारी में आसक्त नहीं निकल पाता।

१५३९. जलम को दुखियारो अर नांव सदासुखराय !

जन्म से ही दुखियारा और नाम सदासुखराय !
गुण के सर्वथा विपरीत नाम।

१५४०. जलम घड़ी अर मरण घड़ी टळै कोनी।

जन्म और मृत्यु की घड़ी टलती नहीं।
रू० जलम रात अर फेरां रात टळै कोनी।

१५४१. जळ में मूतै जिको ई जाणै।

जो जल में मूते, वही जाने।
जो छिप कर (पर्दे में) पाप करे, वही जाने।

१५४२. जवाहर चूड़ो जायफळ, बिडंग सुपारी वैण।
इतणा तो जाडा भला, साह धणी अर सैण।।

उपरोक्त सब पुष्ट होने अपेक्षित हैं।

१५४३. जांका ऊंचा बैठणा, जांका खेत निवाण।
वांका बैरी के करै, जांका मित दीवाण।।

जिनकी बैठक बड़े आदमियों में है, जिनके खेत निचाई में हैं और दीवान जिनके मित्र हैं, उनका दुश्मन क्या बिगाड़ सकते हैं।

१५४४. जांका पड़या सुभाव 'क जासी जीव सूं ।
नीम न मीठा होय, सींचो गुड़ घीव सूं ।

जिसका जैसा स्वभाव वन गया है, वह जीते जी छूटने का नहीं । नीम को चाहे घी और गुड़ से सींचा जाए, वह मीठा नहीं होने का ।

सन्दर्भ कथा—एक बुढिया का ऐसा स्वभाव वन गया था कि कोई भी पास-पड़ोसी चाहे किसी भी जरूरी काम से जा रहा हो, वह उसे टोके विना नही रहती थी । वर्षा की ऋतु आई और पड़ोसी किसान अपने खेतों में हल जोतने के लिये जाने लगे तो उन्होंने बुढ़िया से पहले ही कह दिया कि बुढिया माई, तू हमें टोकना मत । फसल पकने पर हम सब तुम्हें आधा-आधा मन अनाज ला देंगे । बुढिया हां भर ली । लेकिन जब वे जाने लगे तो बुढिया ने उन्हें पीछे से आवाज देकर बुलाया और बोली कि तुम्हारे खेतों में भले ही पाव भर अनाज भी न हो, लेकिन मैं तो तुम्हारे वादे के अनुसार बीस-बीस सेर अनाज तुम सबसे ले लूंगी ।

१५४५ जांका मरग्या वादस्या, रुळता फिरै वजीर ।

जिनके वादशाह मर गये, उनके वजीर यों हीं भटकते फिरते हैं । उनको कोई पूछ नहीं ।

रू० (१) जांका मरग्या सायबा, वांका के घरवार ।
(२) नहीं नगीनो नगर में, नहीं नगर में सीर ।
जिणका मरग्या वादस्या, रुळता फिरै वजीर ।।

१५४६. जांके हांगा डील का, वांका दिल दरियाव ।

जिनके शरीर में भरपूर शक्ति होती है, उनके हौसले भी बड़े होते हैं ।

१५४७ जां घर माई वापरै, वो घर वारावाट ।

जिस घर में मौसी (सौतेली मां) आ जाती है, वह घर बर्बाद हो जाता है । प्राय: पहले वाली स्त्री की सन्तान तो बहुत ही दुखी हो जाती है ।

इस प्रकार के दुखों से उकता कर जब एक लड़का घर से निकल भागा तो उसे पहले पहल एक तेली मिला—जिसे अच्छा शकुन नहीं माना जाता । लेकिन लड़के ने मन ही मन कहा—'एक तेली कहा करि है उनको, सौ तेली बसे जिनके घर मांहि ।

१५४८. जांवण लाग्यां ईं दूध जमै ।

जामन लगने से ही दूध जमता है ।
उपयुक्त उपचार से ही काम बनता है ।

१५४६. जाम्रो लाख, रैवो साख ।

लाख रुपये जाएँ तो जाएँ, लेकिन साख बनी रहनी चाहिए ।

साख बनी रहे तो आदमी लाख रुपये फिर कमा सकता है, लेकिन साख गिर जाने के बाद वह कहीं का नहीं रहता ।

१५५०. जाग मछंदर गोरख आयो ।

गोरखनाथ के गुरु मछन्दरनाथ (मत्स्येन्द्रनाथ) थे । प्रायः गुरु ही शिष्य को उद्बोधन देकर जाग्रत करते हैं । लेकिन गोरखनाथ माया में फँसे अपने गुरु को निकाल कर लाये थे । यह कहावत इसी से सम्बन्धित है ।

१५५१. जाग सें नींद भली, पीव दिखाई दे ।

वियोगी के लिए जागने की अपेक्षा नींद ही अच्छी जो स्वप्न में प्रिय के दर्शन तो हो जाएँ ।

१५५२. जागै सो पावै, सोवै सो खोवै ।

जो जागता है सो पाता है, जो सोता है सो खोता है ।

संदर्भ कथा—राजा भोज एक रात्रि को वेश बदलकर अपनी नगरी में गश्त लगा रहा था कि उसे चार स्त्रियां मिलीं जो रो रही थीं । राजा के पूछने पर उन्होंने कहा कि हम योगनियां हैं । कल रात को एक विषैला नाग राजा को डस लेगा जिससे उसकी मृत्यु हो जाएगी । भोज न्यायशील राजा है और उसकी मृत्यु से प्रजा पर संकट आ पड़ेगा, इसी दुःख के कारण हम रो रही हैं ।

राजा ने इस पूर्व सूचना को बड़ी उपलब्धि माना । अगली रात को उसने काले नाग का बड़ा स्वागत-सत्कार किया जिसके फलस्वरूप सांप ने राजा को डसने की बजाय उसे एक दुर्लभ वस्तु प्रदान की और इस प्रकार यह कहावत चरितार्थ हो गई कि जो जागता है सो पाता है ।

१५५३. जा जाती, खोखा खाती ।

ऐसी जाए कि कहीं रुकने का नाम ही न ले ।

१५५४. जाट की बेटी अर काकोजी की सूं !

जाट की बेटी और काकाजी की सौगन्ध !

१५५५. जाट को के जजमान, रावड़ी को के पकवान ।

जाट का क्या यजमान और रावडी का क्या पकवान ।

रू० म्हैसरी को के जजमान, लापसी को के पकवान ।

१५५६. जाट को चोको बारा कोस में होवै ।

जाट का चौका बारह कोस में होता है ।

१५५७. जाट को पंचोळ अर सांड को लखाव छानो कोनी रैवै ।

जाट की पंचायती और ऊंटनी का सगर्भा होना छिपा नहीं रहता ।

१५५८. जाट जंवाई भाणजो, रैवारी सुनार ।
कदे न होसी आपणा, कर देखो व्योहार ।।
जाट, जंवाई, भानजा, रैवारी और सुनार ये कभी अपने नहीं होते ।

१५५९. जाट जठैई ठाट ।
जाट जहाँ रहता है वहीं (दूध-दही और अन्न के) ठाट लग जाते हैं ।

१५६०. जाट डूबै धोळी धार, वाणियों डूबै काळी धार ।
जाट धौली धार डूबता है और बनिया काली धार ।

१५६१. जाट न मानै गुण करचो, चणो न मानै वाह ।
चअण विड़ो कटाय कर, अब क्युं भुरै वराह ।।

संदर्भ कथा—एक जाट बैलों के अभाव में अपना खेत नहीं जोत सका तो शूकरों के सरदार ने उस से कहा कि यदि तुम आधी फसल हमें दो तो हम खेत खोद दें । जाट ने हां भरली और शूकरों ने खेत खोद डाला । खूब चने हुए । शूकर पास के एक खेत में चरने जाया करते तो उस खेत का मालिक उन पर कुल्हाड़े से वार करता, लेकिन शूकरों के साझीदार जाट के खेत में चंदन का एक वृक्ष था, जिससे रगड़ने से उनके घाव भर जाते थे । यह देख कर जाट ने उस वृक्ष को कटवा डाला और सारे शूकर मारे गये । अब पूरे खेत पर जाट का अधिकार हो गया ।

१५६२. जाट नै नित नया गुण चाये ।
जाट को नित्य एक न एक नई बात (कौतुक) चाहिए ।

१५६३. जाट विगाड़चा दो जणां, जांभो अर जसनाथ ।

१५६४. जाट रै जाट, तेरै सिर पर खाट ।
मियां रै मियां, तेरै सिर पर कोल्हू ।
'क तुक जची कानी ।
'क तुक भलाईं ना जचो, बोझ तो मरसी ।
एक मियें ने जाट से मजाक में कहा कि जाट, तेरे सिर पर खाट । जाट ने मियें से कहा कि मियें, तेरे सिर पर कोल्हू । मियें ने पुनः जाट से कहा कि तुम्हारी तुक जँची नहीं तो जाट बोला कि तुक भले ही न जँचे, लेकिन तुम्हारे सिर पर भरपूर बोझ तो रहेगा ही ।

१५६५. जाण की पिछाण, रीस करै सो रूडा ।
राजा भोज नै मोगरी, गांगलै नै मुद्दा ।
जानकारों में ही समुचित सत्कार होता है, अनजान को यथोचित सम्मान नहीं मिलता, इसके लिए गुस्सा करना मूर्खता है ।

सन्दर्भ कथा—एक बार राजा भोज गंगू तेली के साथ तेलियों के मोहल्ले में आ निकला। सभी तेली जानते थे कि गंगू की राजा भोज के दरबार में भी बड़ी प्रतिष्ठा है इसलिए उन्होंने उसकी खूब आव भगत की और उसे बैठने के लिए मूढा दिया। लेकिन राजा भोज को वे नहीं जानते थे इसलिए उन्होंने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। पास में ही एक मोगरी पड़ी हुई थी और राजा उसी पर बैठ गया। तभी कोई जानकार आदमी वहाँ आ निकला और सारी परिस्थिति जानकर उसने उपरोक्त कहावती पद कहा।

१५६६. **जाणन आळा जाणग्या, के जाणै अणजाण।**
जो जानकार (दूरदर्शी) थे वे रहस्य को जान गये, अज्ञ क्या जानें?

सन्दर्भ कथा—(१) एक रात को किसी गाँव से होकर एक हाथी गुजरा। सवेरे जब गाँव के लोगों ने उसके 'खोज' (पदचिन्ह) देखे तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि इतने बड़े बड़े खोज किस जानवर के हो सकते हैं? उस गाँव में 'बुझक्कड़जी' ही सर्वाधिक बुद्धिमान समझे जाते थे। इसलिए सब लोग मिल कर उनके पास गये। बुझक्कड़जी ने 'खोज' देखे और झट से बोल पड़े—

जाणन आळा जाणग्या, के जाणै अणजाण।
पगां कै चाकी बांध कर, कूद गया मिरगाण॥

अर्थात् जानने वाले इस रहस्य को जान गये, तुम मूर्ख लोग भला क्या जानो? ये तो हिरन अपने पैरों में चक्की के पाट बांध कर कूदे हैं जिससे ही इतने बड़े बड़े खोज अंकित हो गये हैं।

(२) एक बार गाँव के लोगों को एक बड़ी और पुरानी ओखली मिल गई तो वे उसे लेकर बुझक्कड़जी के पास आये। बुझक्कड़जी ने ओखली को ध्यान से देखकर इतमीनान से कहा—

लाल बुझक्कड़ बूझते, और न बूझे कोय।
हो न हो अल्लाह की, सुरमादानी होय॥

१५६७. **जाण मारै बाणियों, पिछाण मारै चोर।**
बनिया जानकार को अधिक ठगता है और चोर पहिचान कर (भेद प्राप्त कर) के चोरी करता है।

१५६८. **जाणै जित्तोई बखाणै।**
जो जितना जानता है, उतना ही बखानता है।
रू० जाणै सोई बखाणै।

१५६९. **जात चिंडाळ कोनी, करम चिंडाळ है।**
चाण्डाल जाति से नहीं, कर्म से होता है।

सन्दर्भ कथा—एक पंडितजी कथा वाचन करके अपने घर जा रहे थे। रास्ते में एक चाण्डालिन से उनका दुपट्टा छू गया। पंडितजी बिगड पड़े। चाण्डालिन ने बड़ी क्षमा प्रार्थना की, लेकिन पंडितजी बिफरते ही चले गये। तब चाण्डालिन ने कस कर पंडितजी का हाथ पकड़ लिया और बोली कि तुम तो मेरे पति हो, तुम यहाँ कहाँ फिर रहे हो, मेरे साथ घर चलो। उसकी बात सुनते ही पंडितजी को मानो काठ मार गया। उनका सारा गुस्सा काफूर हो गया। वे चाण्डालिन से हाथ छोड़ देने की प्रार्थना करने लगे। इस पर उसने हाथ छोड़ते हुए पंडितजी से कहा कि अब आप जा सकते हैं। इतनी देर तक आप के सिर पर क्रोध रूपी चाण्डाल सवार था, अब वह उतर गया है और आप फिर से ब्राह्मण बन गये हैं।

१५७०. जात नै जात बतावै।
जाति को जाति बतला देती है।

१५७१. जात-पांत पूछै ना कोय, हरि नै भजै सो हरि का होय।
भगवान् के यहाँ जाति पांति को कोई नहीं पूछता, जो भी भगवान् को भजता है, वही भगवान् का हो जाता है।

१५७२. जात सुभाव न जाय, रांघड़ के बोदो होवै।
किसी का जातिगत स्वभाव छूटता नहीं।

संदर्भ कथा—राजा के दरबार में नगर सेठ का बड़ा सम्मान था और वह राजा के सन्निकट रहा करता था। राजनर्तकी ने एक बिल्ली के बच्चे को प्रारंभ से ही सिखलाना शुरू कर दिया था और वह बिल्ली का बच्चा पान देने, दीपक पकड़ने और चामर डुलाने आदि कार्यों में पटु हो गया था। राजनर्तकी ने एक दिन राजा के सामने बिल्ली के बच्चे की बड़ी प्रशंसा की तो नगर सेठ ने उससे कहा कि यह सब तो ठीक है, लेकिन उसका जाति गत स्वभाव नहीं छूट सकता। नर्तकी ने सेठ की बात का प्रतिवाद किया तो सेठ बोला कि मैं इसका प्रमाण दूंगा।

एक रात राजा उक्त नर्तकी के साथ चौसर खेल रहा था और बिल्ली का बच्चा सावधानी से दीपक पकड़े हुए था। इतने में सेठ ने एक चूहा वहाँ छोड़ दिया। चूहे को देखते ही बिल्ली के बच्चे ने दीपक को पटक दिया और वह तेजी से उस पर झपटा। राजा को प्रमाण मिल गया।

१५७३. जान नै अर धाड़ नै जावतां के वार लागै ?
बारात और धाड़ (डाकुओं की टोली) को जाते क्या देर लगती है ?

संदर्भ कथा—एक बार चमारों की एक बारात किसी गांव जाने लगी तो दूल्हे का बाप ठाकुर से विदाई लेने गया। ठाकुर ने पूछा कि गांव कितनी दूर है ? दूल्हे के बाप ने उत्तर दिया कि बीस कोस। ठाकुर ने पुनः कहा कि

तब तो वहाँ पहुँचने में ही काफी समय लग जाएगा। इस पर दूल्हे के बाप ने तपाक से उत्तर दिया कि नहीं, बारात और धाड़ को जाते क्या देर लगती है। लड़की वालों का गाँव २० कोस है और हम सब बराती भी २० ही हैं अतः एक-एक कोस ही तो सबके हिस्से में आयेगा।

१५७४. जान में कुरण कुण आया?
बींद अर बींद को भाई, खोड़ियो ऊंट अर काणियों नाई।
किसी ने पूछा—बारात में कौन कौन आये? उत्तर मिला—दूल्हा, दूल्हे का भाई, खोड़ा ऊंट और काना नाई।
जब किसी बारात में बहुत ही कम बराती हों और वे भी काने खोड़े।
रू० बींद बींद को भाई, तीजो बामरण चौथो नाई।

१५७५. जापा जाया पदमणी, जटा थोड़ी जूं घणी।
पद्मिनी ने अच्छी संतान जनी है, जिनके सिर पर बाल तो कम हैं, और जूएँ अधिक।
किसी औरत की गन्दी संतान पर व्यंग्य।

१५७६. जापै पैली न्हाण करै।
प्रसव से पहले ही नहान?
काम करने से पूर्व ही मजदूरी?
रू० बड़ां पैली तेल पीवै।

१५७७. जा भैंस पाणी में।
किसी काम के काबू से बाहर हो जाने पर इस कहावत का प्रयोग होता है।
सन्दर्भ कथा—एक ग्वाला बाईं आंख से काना था। तालाब के किनारे उसकी भैंस चर रही थी और वह एक वृक्ष के नीचे पड़ी मोर की पांखों को चुग रहा था और साथ ही यह भी ध्यान रख रहा था कि भैंस पानी में न चली जाए। पांखें चुगते हुए उसने ऊपर की ओर देखा तो वृक्ष पर बैठे एक मोर ने अपनी एक पांख गिराई और वह संयोगवश ग्वाले की दाहिनी आंख में आकर टिकी। आंख फूट गई। अब वह भैंस की निगरानी क्या करे? सहसा उसके मुंह से निकल पड़ा—

पांख चुगतां आंख फूटी, फूटी आंख दाणी।
दोनूं आंख बराबर होगी, जाये भैंस पाणी॥

रू० (१) पांख झूड़तां आंख फूटी, गयो टींटको काणी में।
दोनूं आख सपासप होगी, जा भैंस पाणी में॥
(२) घड़लो ले मैं घर सें चाली, खोजो लाग्यो आणी में।
दोनूं पाट बराबर मिलग्या, जाये भैंस पाणी में॥

१५७८. जायोड़ै नैं पोतड़ा होयां सरसी।
जो जन्मा है उसके लिए कोई न कोई व्यवस्था होगी ही।

१५७९. जायो नाम जलम को, रैणो किस विध होय ?
जब जन्म लेने को ही 'जायो' कहते हैं तब मनुष्य अमर कैसे हो सकता है ?
राजस्थानी में जन्म लेने को भी 'जायो' कहते हैं और जाने को भी ।

१५८०. जाळां घणी जवार, कैरां घणो कपास ।
आकां घणो गऊं, खेजड़ां घणो बाजरो ।।
जिस वर्ष जाल वृक्ष ज्यादा फलें उस वर्ष ज्वार अधिक हो, कैर अधिक फलें तो कपास, आक अधिक फलें तो गेहूं और खेजड़े अधिक फलें तो बाजरा खूब हो ।

१५८१. जावै तो बरजूं नईं, रैवै तो या ठोड़ ।
हंसां नै सरवर घणां, सरवर हंस किरोड़ ।।
जाते हो तो रोकता नहीं, रहना चाहते हो तो खुशी से रहो । हंस के लिए सरोवर बहुत हैं एवं सरोवर के लिए हंस बहुतेरे हैं ।

१५८२. जिकी आंगळी कै लागै, वीं कै ई पीड़ होवै ।
जिस उँगली में चोट लगती है, पीड़ा की अनुभूति उसी को होती है ।
एक हाथ में पांच उँगलियां होती हैं और वे सब पास-पास रहती हैं, लेकिन एक की पीड़ा से दूसरी को कोई वास्ता नहीं ।

१५८३. जिकी हांडी में खावै, वीं में ई छेद करै ।
जिस हँडिया में खाता है, उसी में छेद करता है ।
जिससे जीविका कमाता है, उसी को हानि पहुँचाता है ।

१५८४. जिकी हांडी में सीर कोनी, बा भांवें चढती ई फूटो ।
जिस हँडिया में अपना साझा नहीं, वह भले चूल्हे पर चढ़ाते ही फूट जाए ।

१५८५. जिकै खातर नाक कटायो, वोई कैवै नकटो ।
जिसके लिए नाक कटवाई, वह भी नकटा कहे ।
जिसकी भलाई के लिए स्वयं का नुकसान किया, वह भी उल्टे दोष दे ।

१५८६. जिकै गांव नईं जाणो, वींको गैलो ई क्यूं पूछणो ?
जिस गांव जाना ही नहीं, उसका रास्ता क्यों पूछते फिरें ?

१५८७. जिण गांव लोभी वसै, निरधन भूखो सोवै क्यूं ?
जिस गांव में लोभी बोहरा बसता हो, उसमें गरीब भी भूखा क्यों सोये ?
लोभी बोहरा अधिक ब्याज के लालच में गरीब को भी उधार दे देता है ।

१५८८. जितणा मूंडा, उतणी बात ।
जितने मुँह, उतनी बात ।
कोई कुछ कहता है, कोई कुछ ।

१५८९. जितणै की ताल कोनी, उतणै का मजीरा फूटग्या ।
ताल से अधिक कीमत के तो मजीरे फूट गये ।

१५९०. जित्ता भाई, वित्ता घर ।

जितने भाई, उतने घर ।

१५९१. जिद चिब्योड़ो जाट तूंबो भी खाज्या ।

जिद कर लेने पर जाट तूम्बे जैसा कड़वा फल भी खा जाता है ।

१५९२. जिमावै जिको ई चळू करावै ।

जो भोजन करवाता है, वही 'चळू' भी करवाता है ।

चळू करवाना = भोजन के बाद हाथ-मुँह धुलवाना और कुल्ले करवाना ।

१५९३. जिसा कंथा घर रैया, विसा ई परदेस ।

पुंसत्व हीन पति चाहे घर पर रहे, चाहे परदेश में ।

पद्य कदे न हँस कर कुच गह्या, कदे न रिस कर केस ।
जिसा कंथा घर रैया, विसा ई परदेस ॥

१५९४. जिसा देव, विसी ही पूजा ।

जैसे देव, वैसी ही पूजा ।

रू० (१) जिसा देव विसा ही पुजारा अर विसा ही जात देवण हारा ।
(२) देव जिसा पुजारा ।
(३) जिसा साजन, विसा भोजन ।

१५९५. जिसा बोलै डोकरा, विसा बोलै छोकरा ।

घर में जैसे बड़े-बूढे बोलते हैं, बच्चे भी वैसी ही वाणी बोलने लग जाते हैं ।

१५९६. जिसा मेरा खाणा दाणा, विसा मेरा काम जाण्या ।

जैसा मेरा खाना-पीना है, वैसा ही मेरा काम है ।

१५९७. जिसो अंस, विसो बंस ।

जैसा अंश, वैसा वंश ।

१५९८. जिसो पीवै पाणी, विसो बोलै बाणी ।

जैसा पानी पीते हैं, वैसी ही वाणी बोलने लग जाते हैं ।

१५९९. जिसो राजा, विसी ही परजा ।

यथा राजा तथा प्रजा ।

१६००. जींकी खाये बाजरी, वीं की दीजे हाजरी ।

जिसकी बाजरी खाई जाती है, उसी की हाजरी देनी पड़ती है !

रू० जैकी चाबै घूघरी, वींका गावै गीत ।

१६०१. जीं की मोगरी, वीं की टाट ।

जिसकी मोगरी, उसी का सिर ।

रू० तेरी जूती, तेरो ई सिर ।

१६०२. जीं की मौत होवै, वो ही मरै ।

जिसकी मौत आती है, वही मरता है ।

संदर्भ कथा—एक खेत में चार ग्वाले गायें चरा रहे थे। सहसा आकाश में गहरे बादल घिर आये, वर्षा होने लगी और घोर गर्जना के साथ बिजलियां चमकने लगीं। चारों ग्वाले एक जांट (शमी वृक्ष) के नीचे खड़े हो गये, लेकिन बिजलियां बार-बार उसी वृक्ष पर कौंधने लगीं। ग्वालों ने सोचा कि यहां खड़े रहने से तो बिजली हम सब पर गिरेगी और हम सभी मारे जाएँगे। इससे अच्छा तो यही होगा कि प्रत्येक व्यक्ति सामने के वृक्ष को हाथ लगा कर आये, जिस पर बिजली गिरनी होगी, उस पर गिर जाएगी। इस निर्णय के अनुसार तीन ग्वाले उस वृक्ष को हाथ लगा-लगा कर लौट आये, लेकिन बिजली नहीं गिरी। इसलिए चौथे ने सोचा कि अब तो यह बिजली अवश्य मेरे ऊपर ही गिरेगी। इसलिए वह वहाँ से जाना नहीं चाहता था, लेकिन शेष तीनों ने जबरन उसे वहां से धकेल दिया। जैसे ही वह उस वृक्ष की ओर बढ़ा, बिजली कड़क के साथ शेष तीनों पर गिरी और वे तीनों ही मर गये। चौथा बच गया।

१६०३. **जींकी लाठी, बींकी भैंस।**

जिसकी लाठी, उसकी भैंस।

शक्ति के अनुसार सत्ता का परिवर्तन। यह शक्ति 'सोट' (लाठी) की भी हो सकती है, वोट की भी।

सन्दर्भ कथा—एक ब्राह्मण को उसके यजमान ने भैंस दी। भैंस को लेकर वह अपने गाँव जा रहा था कि राह में पड़ने वाले जंगल में उसे एक लुटेरा मिल गया। उसके हाथ में एक लम्बी और मजबूत लाठी थी। उसने ब्राह्मण को ललकारा और जमीन पर लट्ठ ठोकते हुए बोला कि भैंस को छोड़ कर शीघ्रता से भाग जा, नहीं तो तेरी हड्डी-पसली तोड़ डालूंगा। ब्राह्मण निहत्था था, इसलिए उसने लुटेरे से कहा कि भैंस तो तुम ले लो, लेकिन मैं ब्राह्मण हूं, इसलिए भैंस के बदले में मुझे कुछ न कुछ अवश्य दो। लुटेरे ने कहा कि मेरे पास क्या धरा है, यह लाठी है, सो तुम ले लो। यों कह कर लुटेरे ने अपनी लाठी ब्राह्मण को दे दी। लेकिन लाठी हाथ में आते ही ब्राह्मण का रंग बदल गया। उसने कड़क कर लुटेरे से कहा कि जान की खैर चाहता है तो यहां से भाग जा, नहीं तो तेरी खोपड़ी के टुकड़े-टुकड़े कर डालूंगा। पहले लाठी तुम्हारे हाथ में थी, अब मेरे हाथ में है, अतः जिसके पास लाठी है, भैंस भी उसी की रहेगी। निदान, लुटेरा अपना सा मुँह लेकर वहां से चलता बना।

१६०४. **जींकै घर में दूझै गाय, सो क्यूं छाछ पराई जाय ?**

जिस के स्वयं के घर में गाय दूध देती हो, वह दूसरों के यहां छाछ मांगने क्यों जाए ?

१६०५. जीं को बाप बीजळी सें मरै, वो कड़कै सें डरै ।
जिसका बाप बिजली गिरने से मरा हो, वह बिजली की कड़क से भी डरता है।

१६०६. जीं नै देख्यां ताप आवै, वो ही निगोड़्यो ब्यावण आवै !
जिसको देखने से ही मुझे ज्वर चढता है, वही निगौड़ा मुझे व्याहने के लिए आ रहा है।
इच्छा के सर्वथा विपरीत और बेमेल काम।

१६०७. जीजा ! तेरी मेरी सगाई होई; 'क अभी के साख नीकळग्यायो ।
साली ने जीजा से कहा कि तेरी और मेरी सगाई हुई। जीजा ने उत्तर दिया कि अभी क्या सम्बन्ध हो गया?

१६०८. जीजी कै ब्या, मेरै ढमढमी ।
विवाह तो जीजी के यहाँ है और बाजे अपने घर बजवा रही हूँ।

१६०९. जी, जी सैं कै एक सो ।
जीव (प्राण) तो सब का एक जैसा है। जैसी अनुभूति अपने को होती है, वैसी ही दूसरों को भी होती है।

१६१०. जीभ की चाट, घाटै की ठाट ।
चटोरा आदमी दिन भर कुछ न कुछ खाता ही रहता है जिसके फलस्वरूप वह घर की सम्पत्ति को चाट जाता है, और उसके घर में घाटा आ जाता है।

१६११. जीभड़ली मेरी आळ-पताळ, कड़कोला खा मेरो लाडलो कपाळ ।
जिसकी जिव्हा वश में नहीं और जो बिना विचारे चाहे जो कह देता है, वह मार ही खाता है।

१६१२. जीभ बिना हाड की है, फिरतां के बार लागै ?
जीभ तो बिना हाड की है, इसे फिरते (बदलते) क्या देर लगती है?
जो आदमी अपनी जबान का जरा भी पाबन्द न हो।

१६१३ जीम कर ई पड़्या था ।

सन्दर्भ कथा—एक बनिया अपने समधी के यहाँ गया। समधी ने उससे खाना खाने के लिए बहुत बार कहा लेकिन वह बराबर ना करता रहा। मेजबान ने भोजन की थाली उसके पास मंगवाली और बार बार आग्रह करने लगा, लेकिन जैसे जैसे वह आग्रह करता जाता था—समधी ना कहता हुआ पीछे खिसकता जाता था। पीछे एक कुआं था (जहाँ पानी गहरा नहीं होता, वहाँ कहीं कहीं घरों में कुएँ होते हैं)। समधी को इसका पता नहीं था और वह पीछे खिसकता हुआ कुएँ के अन्दर जा गिरा। मेजबान ने उसे बाहर निकाला और बोला कि लो अब तो खाना खालो। इस पर समघी ने कहा कि नहीं जी, खाना खाकर ही तो कुएँ में गिरा था।

१६१४. जीम्यां पीछै तो चळू ई होवै ।

भोजन कर चुकने के बाद तो 'चळू' करना ही शेष रहता है।

पटाक्षेप हो जाने पर क्या हो सकता है ?

१६१५. जीम्या अर पातळ फाड़ी ।

भोजन किया और पत्तल फाड़ी।

रू० भात खाया अर पातळ फाड़ी ।

१६१६. जीव कै जीव लागू।

जीव जीव का भोजन है।

रू० जी में जी, सक्कर में घी ।

१६१७. जीव जायो, जीवका मत जायो ।

जान जाये तो जाये, लेकिन आजीविका नहीं जानी चाहिए।

१६१८. जीवतड़ां नई दान, मरयां नै पकवान ।

जीवित मां-बाप की तो बात भी न पूछे और मरने के बाद लोक-दिखावे के लिए पकवान जिमाये।

रू० (१) जीवतड़ां नै रोटी कोनी, मरयां पीछै लाडू गुड़कावै ।
(२) जीवत पिता की करी ना सेवा, मरयां पीछै लाडू मेवा ।
(३) जीवत पिता कै रह्यो न नेड़ो, मरयां पीछै बांटै हेड़ो ।
(४) जीवत पिता सें जंगम जंगा, मरयां पीछै हर हर गंगा ।

१६१९. जीवती माखी नईं गिटणी ।

जान बूझ कर किसी का हक नहीं मारना चाहिए।

१६२०. जीवतै की दो रोटी, मरयोड़ै की सो रोटी ।

जीते हुए की दो रोटी, मरे हुए की सौ रोटी।

१६२१. जीवतै जी नै सोवयूं करणो पड़ै ।

जीवित रहते हुए आदमी को सभी कुछ करना पड़ता है।

किसी प्रिय संबंधी की असामयिक मृत्यु से आदमी को गहरा आघात लगता है, लेकिन फिर बेमन से ही सही, उसे समयानुसार सभी काम करने पड़ते हैं।

१६२२. जीवतो लाख को, मरयां पीछै सवा लाख को ।

जीवित हाथी लाख का और मरने के बाद सवा लाख का।

१६२३. जीवैगा नर तो फेर करैगा घर ।

आदमी जिन्दा रहेगा तो फिर नया घर बना लेगा।

१६२४. जुआं कै मिस घाघरो कोनी गेरयो जावै ।

जुओं के मिस घाघरा थोड़े ही फेंक दिया जाता है ?

किसी सामान्य अड़चन के कारण समूचे काम को ही नहीं त्यागा जा सकता।

१६२५. जुआरी को खरचो बादस्या भी कोनी पूर सकै ।

जुआरी के खर्च को बादशाह भी पूरा नहीं कर पाता ।

सन्दर्भ कथा—एक बार किसी बादशाह ने अपने सभी दरबारियों से पूछा कि उनका मासिक खर्च कितना कितना है ? किसी ने पांच, किसी ने पचास, किसी ने सौ और किसी ने हजार रुपये मासिक का खर्च बतलाया । अन्त में एक जुआरी की बारी आई तो पहले तो उसने बतलाने में अपनी असमर्थता प्रकट की । लेकिन बादशाह के जोर देकर पूछने पर बोला कि हुजूर ! आप मेरा खर्चा क्या पूछते हैं ? मैं आपके जैसी सात बादशाहतें एक ही दाँव पर लगा सकता हूँ । जुआरी का उत्तर सुन कर बादशाह चुप हो गया ।

१६२६. जुग कोनी मरै, जुग टूट्यां ई स्यार मरै ।

चौपड़ के खेल में जब तक दो 'स्यार' (गोटी) एक 'ढाणे' (खाने) में रहती हैं, दूसरा खिलाड़ी उन्हें नहीं मार सकता । लेकिन जैसे ही खिलाड़ी को उन दोनों में से एक 'स्यार' को चलने की आवश्यकता हो जाती है और उस खाने में एक ही गोटी रह जाती है तो प्रतिपक्ष का खिलाड़ी उसे आसानी से मार लेता है ।

संगठन टूटने से ही नाश होता है ।

सन्दर्भ कथा—एक जाट के खेत में चार जने मतीरे खाने के लिए घुस गये—एक ब्राह्मण, एक ठाकुर, एक बनिया और एक नाई । जाट आया तो उसे उनको मतीरे खाते देख कर बड़ा गुस्सा आया, लेकिन वे चार थे, इसलिए उसने तरकीब से काम निकालना ही ठीक समझा ।

पहले उसने नाई को पकड़ा और ब्राह्मण की ओर इशारा करके कहा कि ये तो दादा-गुरु हैं, ठाकुर मालिक है और ये सेठ हैं जिनसे सारे काम निकलते हैं, अतः इन तीनों की तो कोई बात नहीं । लेकिन तुझे तो हर काम के पैसे देता हूँ, फिर तू इनके साथ खेत में कैसे घुसा ? यों कह कर उससे नाई को ठोंक-पीट कर खेत से बाहर निकाल दिया, शेष तीनों आदमी चुप रहे । अब सेठ की बारी आई । उसने सेठ से कहा कि ब्राह्मण देवता तो दादा हैं और ठाकुर मालिक है, लेकिन तुम्हारे से जो रुपया उधार लेता हूँ तो उसका मुँह मांगा ब्याज तुम्हें देता हूँ, फिर तुम खेत में क्योंकर घुसे ? यों कह कर उसने सेठ को भी मार-पीट कर खेत से बाहर निकाल दिया । फिर उसने ठाकुर से कहा कि मैं खेत जोतता हूँ तो तुम्हें लगान देता हूँ, फिर तुम बिना पूछे खेत में कैसे घुसे ? यों कह कर उसने ठाकुर को भी धक्के देकर बाहर निकाल दिया । अब पंडितजी की बारी आई और उनकी भी वही गति हुई ।

१६२७. जुग जीत्यो रै काण्यां, 'क वेरो पड़सी उठाण्यां ।

वाह ! काने ने जुग जीत लिया ! यह तो उठाने पर ही पता लगेगा ।

सन्दर्भ कथा वर पक्ष वाले चालाकी से अपने काने लड़के को व्याह कर बड़े प्रसन्न थे । जब फेरे हो चुके तो उन्होंने घमंड से कहा—

जुग जीत्यो रै काण्यां ।

लेकिन धू पंगु थी । इसलिए कन्या पक्ष वालों ने भी उत्तर में कहा—

वेरो पड़सी उठाण्यां ।

एक पक्ष धोखेबाज तो दूसरा उसका भी उस्ताद ।

१६२८. जुग देख कर जीणो है ।

संसार को देख कर जीना है ।

अपने से हीन और विपरीत परिस्थितियों में दूसरों को जीते देख कर जीने का सम्बल प्राप्त होता है ।

सन्दर्भ कथा—एक निहायत गरीब आदमी कहीं जा रहा था । भूख बहुत जोरों से लग रही थी, लेकिन पास में केवल एक पैसा था । उसने उस पैसे की मूलियां लीं और चलते हुए ही वह उन्हें खाने लगा । जैसे-जैसे वह मूलियां खाता जाता था, उनके पत्ते तोड़-तोड़ कर पीछे की ओर फेंकता जाता था । उसे अपनी हीन दशा पर बड़ा क्षोभ था और सोचता था कि यह भी कोई जीवन है, इससे तो मर जाना ही अच्छा ।

चलते-चलते ही उसने पीछे की ओर दृष्टि डाली तो देखा कि उसके पीछे-पीछे एक दूसरा आदमी आ रहा है जो उससे भी बदतर हालत में है । वह मूली के जिन पत्तों को फेंकता चलता है, पीछे आने वाला आदमी उन्हें ही सहर्ष उठा-उठा कर खा रहा है । यह देख कर उसको कुछ तसल्ली मिली कि अभी तो उससे भी अधिक गरीब लोग इस संसार में मौजूद हैं ।

१६२९. जुर जाचक अर पावणों, चौथो मंगण हार ।
लंघण तीन कराय दे, फेर न आवै दुआर ॥

ज्वर, याचक, पाहुना और मांगने वाला (ऋणदाता) इन को तीन दिन भूखे रखदो, फिर ये दुबारा नहीं आयेंगे ।

१६३०. जुळिये नै पुळियो कोनी नावड़ै ।

धीमी गति से, किन्तु निरन्तर अपने काम में लगे रहने वाले को फुर्तीला किन्तु आलसी आदमी नहीं पा सकता ।

सन्दर्भ कथा—एक कछुवे और खरगोश में किसी निश्चित स्थान पर पहले पहुँचने की होड़ लग गई । कछुआ अपनी मंथर गति से तत्काल चल पड़ा । उसकी धीमी चाल को देख कर खरगोश को हँसी आई और उसने सोचा कि मैं इसके साथ ही क्यों दौड़ना शुरु करूँ । वह रेंगता हुआ कुछ दूर जाता

है तो जाने दो, तब तक मैं एक झपकी ले लेता हूँ। उठने के बाद तो इसे तुरन्त ही दौड़ कर पकड़ लूंगा। यों सोच कर खरगोश गहरी नींद में सो गया और जब वह उठा तब तक कछुआ गंतव्य स्थान पर पहुँच चुका था।

१६३१. **जुवारी नै आपको ही आपको दाव सूझै।**
जुआरी को सदा अपना ही दाँव सूझता है।
सूझ जुआरिहि आपन दाऊ।

१६३२. **जूं बिना खाज नीं, कुळ बिना लाज नीं।**
जूं के बिना खाज नहीं और कुल के बिना लज्जा नहीं।
अकुलीन को कैसी लज्जा?

१६३३. **जूठै हाथ सैं कदे गंडकड़ै नै ई कोनी मारै।**
ऐसा कंजूस कि जो कभी जूठे हाथ से कुत्ते को भी न निकाले।

१६३४. **जूत को मारचो ऊपर नै अर टूक को मारचो नीचै नै देखै।**
जूते की मार मारने से आदमी अकड़ता है, आंखें दिखलाता है, लेकिन टुकड़े की मार से वह नीचे देखने लगता है, नम्र बन जाता है।
टुकड़े की मार का आशय रुपये-पैसे आदि के प्रलोभन से है।

१६३५. **जे टाबरिया ई काम करले तो बाबो बूढळी क्यूं ल्यावै।**
यदि बालक ही काम करलें तो बाबा को 'बूढली' क्यों लानी पड़े।

१६३६. **जे टूट्या तो ई टोडा।**
यह घराना बड़ा है। यद्यपि इस समय घर में कसाला है, फिर भी बहुत कुछ शेष है।

१६३७. **जेठ गळचो, गूजर पळचो।**
ज्येष्ठ मास में वर्षा हो जाए तो गूजर पल जाता है।

१६३८. **जेठ को सो पेट को।**
जेठ का पुत्र भी अपने पुत्र जैसा ही।

१६३९. **जेठजी की पोळ में जेठजी ई पोढै।**
जेठ जी की पोल में जेठ जी ही पौढें, दूसरों को इससे कोई प्रयोजन नहीं।

१६४०. **जेठ मास जो तपै निरासा, तो जाणो बिरखा की आसा।**
ज्येष्ठ मास में पूरे महीने अधिक गर्मी पड़े तो आगे अच्छी वर्षा होगी।
रू० जेठ मास जे रवि तपे, वाजै ऊनी वाय।
तो जाणीजे भड्डळी, पुंहमी नीर न माय॥

१६४१. **जेठ मूंघा तो सदा सूंघा।**
जेठ में मँहगाई रहे तो शेष वर्ष में चीजें सस्ती रहें।

१६४२. **जेठ में चालै परवाई, तो सावण सूखो जाई।**
जेठ के महीने में परवा हवा चले तो अगला सावन सूखा ही निकले।

रू० (१) जै दिन जेठ वहै परवाई, तै दिन सावण धूड़ उडाई।
(२) जेठ महीनै वैरण वाजै, नूका सरवर भाण तपै।
इन्दर राजा अरज सामळो, थां वूठां म्हारा काज सरै।।

१६४३. जेठ सरीखा वाजरा कोनी, कातिक सरीखा जौं कोनी।
ज्येष्ठ मास में बाजरा और कातिक में जौं बोना उत्तम है।
रू० जेठ वायो वाजरो, सावण घाल्या वूंट।
भर भादूड़ै भरदेसी, वो वाजरै का ऊंट।।

१६४४. जेठा अन्त विगाड़िया, पूनम नैं पड़वा।
ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा और आषाढ मास की प्रतिपदा को छींटों का पड़ना कृषि के लिए अच्छा नहीं माना जाता।

१६४५. जेठो वाजरो अर मोवी पूत राम दे तो पावै।
ज्येष्ठ महीने का बाजरा एवं पुत्र रूप में पहली संतान की प्राप्ति प्रभु कृपा से ही होती है।
रू० (१) जेठो वाजरो अर मोवी पूत वड़ो होवतो ई दीखै।
(२) जेठो वेटो, भाई वरोवर।

१६४६. जे तूं आती थोड़ी सी मोड़ी, तो मैं गुवातो नूं तोड़ी।
यदि तू थोड़ी देर और ठहर कर आती तो मैं नखों तक गवाता।
अपनी अनभिज्ञता का सोत्साह प्रदर्शन करने पर यह कहावत कही जाती है।

संदर्भ कथा—किसी राजा की महफिल लगी हुई थी। गायिका बहुत अच्छा गा रही थी और श्रोता वाह-वाह कर रहे थे। लेकिन राजा इस मामले में एक दम कोरा था। गाना पूरा हुआ तो दर्शकों में से कुछ ने कहा कि कान्हरा बहुत अच्छा गाया। इस पर राजा ने सोचा कि राग-रागिनियों के नाम तो शरीर के अंगों के नाम पर ही होते हैं। इसलिए अगली बार गाना समाप्त होते ही सबसे पहले राजाजी बोल उठे 'नाकड़ा' बहुत अच्छा गाया। लोग-बाग मुंह पर हाथ रख कर हँसने लगे। पुनः गाना समाप्त हुआ तो राजाजी बोले—इस बार 'आंखड़ा' अच्छा गाया। निवास के अन्दर से रानी यह सब देख रही थी। राजा की अज्ञता पर वह भी मन ही मन कुढ़ रही थी। उसने अपनी दासी को राजा के पास भेज कर उसने कहलवाया कि शरीर के अंगों से राग-रागिनियों के नामों का कोई संबंध नहीं है। इस पर राजा ने दासी से कहा—
जे तूं आती थोड़ी सी मोड़ी, तो मैं गुवातो नूं तोड़ी।
रू० जे तूं आती थोड़ी सी मोड़ी, तो मैं गुवातो भी तोड़ी।

१६४७. जे धन दीखै जांवतो तो आधो दीजे वांट ।

यदि सारा ही धन हाथ से निकलता दिखलाई पड़े तो आधा देकर आधा बचा लेना ही अच्छा है ।

पद्य बादीला मत बाद कर, छोड़ पुराणी आंट ।
जे धन दीखै जांवतो, तो आधो दीजे वांट ।।

१६४८. जे नईं देख्यो जैपरियो तो कुळ में आकर के करियो ।

संसार में आकर यदि जयपुर ही नहीं देखा तो क्या देखा ?

१६४९. जे पुरवा लावै पुरवाई तो सूखी नदियां नाव चलाई ।

पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र पर सूर्य के रहते हुए यदि परवा हवा चले तो इतनी अधिक वर्षा हो कि सूखी नदियों में भी नावें चलने लगें ।

१६५०. जे बरसै उतरा तो धान न खावै कुतरा ।

सूर्य के उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में आ जाने पर वर्षा हो तो इतना अधिक अन्न उत्पन्न होगा कि कुत्ते भी नहीं खाएंगे ।

१६५१. जे वरसै पुनरवसु अर स्वात ।
ना चालै चरखो, ना चालै तांत ।

पुनर्वसु या स्वाति नक्षत्र पर सूर्य के रहते वर्षा होने पर कपास नहीं होता जिससे न कातने के लिए चर्खा चलता है न धुनने हेतु तांत ही बजती है ।

१६५२. जे बसन्त फूलै नहीं, फळै नहीं बणराय ।
राजा परजा सहु दुखी, दुखिया गोधा गाय ।

वसन्त ऋतु में यदि वनस्पति न फूले-फले तो राजा-प्रजा और पशु सभी दुखी होंगे, क्योंकि अकाल पड़ेगा ।

१६५३. जे भीज्यो कोनी काकड़ो, तो क्यूं फेरै हाळी लाकड़ो ?

कर्क संक्रांति पर वर्षा न हो तो हल जोतना व्यर्थ है क्योंकि अकाल पड़ेगा ।

१६५४. जेर सें ईं सेर होवै ।

नवजात शिशु ही जो जन्म के समय सर्वथा नाजुक होते हैं, समयानुसार ताकतवर बन जाते हैं ।

१६५५. जे रिण तेरै बाप को तो साडा मूंग बुहाय ।

यदि बाप का ऋण उतारना हो तो आषाढ में ही मूंग बो दो, क्योंकि वे बड़े लाभदायक होते हैं ।

१६५६. जेवड़ी बळज्या, पण बळ कोनी जा ।

रस्सी जल जाती है, पर ऐंठन नहीं जाती ।
जो आदमी सर्वस्व गँवा देने पर भी झूठा अहँकार लिए फिरे ।

१६५७. जे सुख चावै जीव को तो खेल्योड़ी सें खेल ।

१६५८. जैसे कूं तैसा मिल्या, मिल्या बामण कूं नाई ।
वो दीनी आसका, वो आरसी दिखाई ॥

दोनों ही एक जैसे मिल गये । ब्राह्मण ने नाई को आशीर्वाद दिया तो नाई ने बदले में ब्राह्मण को दर्पण दिखला दिया ।

१६५९. जोक चाये जद भंगी कै जाणो पड़ै ।

जोंक की आवश्यकता होने पर भंगी के घर जाना पड़ता है ।

१६६०. जोजरै घड़ै की जोजरी अवाज ।

जर्जर घड़े की आवाज भी जर्जर ।
दुर्बल की आवाज भी दुर्बल ।

१६६१. जोड़ी मिली रे जोगिया, मांगो अर खाओ ।

हे जोगिया, तुम्हारी अच्छी जोड़ी मिल गई है; अब मांगो और खाओ ।

१६६२. जोसी कै मुखड़ै सोई पतड़ै ।

जो जोशी (ज्योतिषी) की जबान पर है, वही पत्रे में है ।

१६६३. ज्यूं ज्यूं भीजै कामळी, त्यूं त्यूं भारी होय ।

जैसे जैसे कम्बल भीगती जाती है, वैसे वैसे अधिक भारी होती जाती है ।

पद्य वातड़ियां घर ऊजड़ै, चूल्है दाळद होय ।
ज्यूं ज्यूं भीजै कामळी, त्यूं त्यूं भारी होय ॥

१६६४. ज्यूं ज्यूं मुरगी मोटी होय, त्यूं त्यूं गांड सांकड़ी होय ।

जैसे जैसे आदमी के पास संपत्ति बढ़ती जाती है, पैसे के प्रति उसका मोह भी बढ़ता जाता है ।

१६६५. झगड़ै ई झगड़ै, पण कूंजड़ी कैवै ज्यूं तेरो फीणो तो समाळ ।

केवल झगड़ते ही झगड़ते हो, अपना फीना तो संभालो ।
फीणो = कुंजड़िन या मालिन को शाक-सब्जी के बदले दिया जाने वाला अन्न । वस्तु विनिमय की प्रथा पाणिनि काल में भी थी । इसे तब निमान कहा जाता था । मालिन और कुंजड़िन आज भी अनाज के बदले शाक सब्जी देती हुई देखी जा सकती हैं ।

१६६६. झगड़ो झूठो, कबजो साचो ।

मकान पर जिसका कब्जा है, उसका पक्ष प्रबल रहता है, शेष बातें गौण ।

१६६७. झगड़ो तो बधावै जित्तोई बधज्या ।

झगड़े को जितना बढ़ाया जाए, उतना ही बढ़ जाता है ।

१६६८. झट काढी अर पट वाई ।

झट से तलवार निकाली और पट से वार किया ।
किसी काम को तुरत-फुरत कर डालना ।
तु० झट रोटी, पट दाळ ।

१६६९. **झींगरियां बोलै घणी, नाड़ी तत्ता नीर।**
मेघ घुमण्डे माघजी, पूरब वहै समीर॥
झिंगुर खूब बोलें, तालावों का पानी गरम हो जाए और परवा हवा चले तो वर्षा शीघ्र हो।

१६७०. **झूठ कित्ती दूर चालै ?**
झूठ अधिक दूर तक नहीं चल सकती।
रू० (१) झूठ कै पग कोनी होवै।
(२) झूठ की दौड़ डागळै ताईं।

१६७१. **झूठ को बोलणियों अर धरती पर सोवणियों संकड़ेलो क्यूं भोगै ?**
झूठ बोलने वाला और जमीन पर सोने वाला तंगी क्यों भोगे ?
जब झूठ ही बोलना है तब कसर क्यों रखी जाए और जमीन पर ही सोना है तब भले कितनी ही दूर में पैर फैला कर सोएँ।

१६७२. **झूठ तो आटै लूण जित्ती ई खटावै।**
झूठ उतनी ही चल सकती है जितना आटे में नमक।

१६७३. **झूठ तो रावड़ी रोटी है।**
जो आदमी सदा झूठ ही बोलता है, उसके लिए झूठ बोलना रावड़ी-रोटी खाने के समान है।

१६७४. **झूठ विनां झगड़ो नईं, धूळ विनां धड़ो नईं।**
झूठ के विना झगड़ा नहीं और धूल के विना धड़ा नहीं।
धड़ा = तराजू में चीज तौलने से पूर्व खाली वर्तन का संतुलन करना।
यह संतुलन धूल से वड़ी सुगमता से हो जाता है।

१६७५. **झूठ अर साच में च्यार आंगळ को आंतरो।**
झूठ और सच में चार अंगुल की दूरी। कानों से सुनी हुई बात झूठी और आंखों से देखी हुई सच्ची।

१६७६. **झूठी राख छाणी, लादी न दाजी धाणी।**
निरर्थक श्रम किया, लाभ कुछ नहीं मिला।

१६७७ **झूठै की के पिछाण ? 'क वो बात-बात पर सौगन खा।**
झूठे आदमी की यही पहिचान है कि वह बात-बात पर सौगन्ध खाता है।

१६७८. **झूठै की पत कोनी।**
झूठे आदमी का विश्वास नहीं, उसकी कोई इज्जत नहीं।
लाखपती को झूठ सें, दो कौड़ी को मोल।

१६७९. **झूठो झगड़ो रोटियां सें मँहगो कोनी।**
झूठा झगड़ा रोटियों से मँहगा नहीं।

जब कोई आढतिया किसी दुकानदार के यहाँ दूसरे गाँव से हिसाब करने आता था तब उसे रोटी तो खिलानी ही पड़ती थी, लेकिन बहुधा हिसाब में कोई न कोई झगड़ा डाल कर रोटी से अधिक पैसा काट लिया जाता था।

रू० झूठो झगड़ो रोटियां सैं कोनी जा।

१६८०. झैर खासी जिको मरसी।

जो जहर खायेगा, वही मरेगा।

जो अपराध करेगा, उसे ही उसका दण्ड भोगना पड़ेगा।

१६८१. झैर सैं झैर मरै।

जहर से जहर मरता है।

विषस्य विषमौषधम्

रू० झैर नै झैर मारै

१६८२. टका दाई लेगी अर कुंडो फोड़गी।

सर्वथा निकम्मे और अकर्मण्य व्यक्ति के लिए प्रयुक्त।

रू० दाई रांड मांगत का ई लेगी।

१६८३. टकां बिना टकटकी लगायां ई देखो।

टके के बिना कोई काम नहीं होता।

१६८४. टकै आळी को झूंझणियो बजासी।

टके वाली का बालक झुनझुना बजायेगा।

सन्दर्भ कथा—एक आदमी मेले में जा रहा था। पास पड़ौस की स्त्रियां उससे कहने लगीं कि मेरे लड़के के लिए मेले से अमुक चीज लाना, मेरे लड़के के लिए अमुक चीज लाना। लेकिन पैसा किसी ने भी नहीं दिया। तब एक स्त्री ने उसके हाथ में एक टका देते हुए कहा कि मेरे नन्हे के लिए एक झुनझुना लेते आना। इस पर उस आदमी ने कहा कि अन्य स्त्रियों की फरमाइशें तो पूरी नहीं होंगी, लेकिन तूने टका दिया है, इसलिए तेरा मुन्ना अवश्य झुनझुना बजायेगा।

१६८५. टकै की डोकरी, दो टका टाट मुंडाई का?

एक टके की बुढ़िया और दो टके उसकी टाट मुंडवाई के?

१६८६. टकै की हांडी फूटी, गंडक की चाल पिछाणी।

थोड़ी हानि तो अवश्य उठानी पड़ी, लेकिन यह पता चल गया कि अमुक आदमी कैसा है।

१६८७. टकै की हांडी लेवै जिको भी बजाकर लेवै।

जो एक टके की हँडिया लेता है, वह भी ठोंक-बजा कर लेता है।

संदर्भ कथा—एक महात्माजी अपनी भक्त मण्डली में बैठे प्रवचन कर रहे थे। एक बार कुम्हार आदमी भी वहां रुक गया। प्रवचन की अपेक्षा
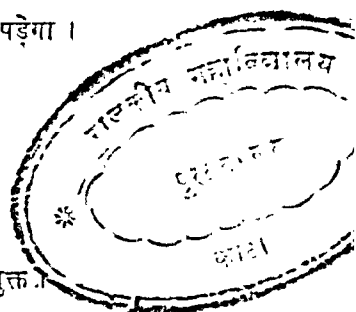
उसे महात्माजी की घुटी हुई और चमचमाती टाट बड़ी आकर्षक लगी। वह अपने को रोक नहीं सका और मौका देखकर उसने महात्माजी के सिर में एक 'ठोला' (ठोंग) जमा दिया। उसकी इस बेहूदा हरकत से सारे भक्त एवं शिष्य रोष में भर गये और उसे पीटने के लिये उतारू हुए। लेकिन महात्माजी ने उन्हें ऐसा करने से मना किया और बोले कि कोई आदमी एक टके की हांडी लेता है तो उसे भी अच्छी तरह ठोंक बजा कर लेता है, फिर यह तो मुझे गुरु बनाना चाहता था और इसलिए इसने 'ठोला' मारकर मेरी परीक्षा ली है कि मैं इस योग्य हूँ भी या नहीं।

आगन्तुक व्यक्ति पर इस बात का बड़ा असर पड़ा और उसने उसी समय महात्माजी का शिष्यत्व स्वीकार कर लिया।

१६८८. टकै टकै की न्यूंत है।

जरा-जरासी बात पर झगड़ते हैं।

रू० ठीकरी में घाली ई कोनी रळै।

१६८९. टको टूंसी एक न यार, तोरण मारण होग्यो त्यार।

पास में न एक टका, न कोई आभूषण और विवाह करने को उत्सुक।

टूंसी = ठुसी = एक आभूषण।

१६९०. टको ब्याज मूळ नै खावै।

टके, रुपये का ब्याज मूल को भी ले बैठता है।

रू० (१) करड़ो ब्याज मूळ नै खावै।

(२) सौ नै लेग्यो पंजो, पंजै नै लेग्यो पाव।
अब के है सेठाणी, आव भलाई जाव॥

१६९१. टट्टू नै मारयां टार कांपै।

टट्टू को मारने से टार (घोड़ा) कांपता है।

एक अपराधी को दण्डित होते देखकर दूसरा अपराधी डरता है।

संदर्भ कथा– एक राजा कुछ महीनों के लिए बाहर गया और कहता गया कि जब भी मैं लौटूंगा, सारे मुकद्दमे मामले एक दिन में निबटा दूंगा। राजा लौटा तो उसके सामने अनेक लोग अपने-अपने मामले लेकर उपस्थित हुए। राजा ने सबसे पहले अपने साले का मामला लिया जिसने किसी गरीब आदमी की औरत जबरन अपने घर में डाल ली थी। जब राजा को यह विश्वास हो गया कि मामला सच्चा है तो उसने अपने साले को तत्काल ही मृत्यु दण्ड देने की आज्ञा दी। यह देखकर सब सन्नाटे में आ गये और उन्होंने परस्पर समझौता कर लेना ही श्रेयस्कर समझा। इस प्रकार सारे मामले एक बारगी ही निबट गये।

१६६२. टाट में दियां पिदो वाजै ।
सर्वथा अभाव की स्थिति ।

१६६३. टाटी कै घर नै फेरतां के वार लागै ?
छप्पर के घर का द्वार फेरने में क्या देर लगती है ?
ऐसा सामान्य काम जिसमें परिवर्तन करना कठिन न हो ।

१६६४. टाबर कुटाबर होज्या, मायत कुमायत कोनी होवैं ।
पुत्र भले ही कुपुत्र हो जाए, लेकिन मां बाप वैसे नहीं बन सकते ।

१६६५. टाबर खावै हाड वधावै, मोट्यार खावै घणो कमावै, बूढो खावै अैळो जावे ।
बेटे की बहू अपने पति और बच्चों के खाने को तो सार्थक समझती है एवं बूढ़े सास-श्वसुर के खाने को निरर्थक ।

१६६६. टाबर, पण खावै बराबर ।
कहने को तो बालक है, लेकिन खाना बड़ों के जितना ही खाता है ।
रू० टाबर है, पण वडोड़ां का कान कतरै ।

१६६७. टाबरां को सी बकरिया चरै ।
बच्चों के जाड़े को बकरी के बच्चे चर जाते हैं ।
बच्चों को जाड़ा नहीं सताता, वे योंहीं खेलते-कूदते फिरते हैं ।
रू० टाबर नै मैं छेड़ूं कोनी, जवान मेरा भाई ।
बूढां नै तो छोड़ूं कोनी, ओढो भांवैं रजाई ।।

१६६८. टाबरां विना किसो घर ?
बालकों के विना कैसा घर ? जिस घर में बच्चों की किलकारियां न सुनाई दें, वह घर सूना-सूना लगता है ।

१६६९ टीकै आळो ल्याई है ।
गाय ने टीके वाला बछड़ा प्रसव किया है ।
जब खुशी के मारे कोई आपा भूल जाए तब इस कहावत का प्रयोग होता है ।

संदर्भ कथा—एक पंडितजी की गाय जंगल में ब्या गई । गाय का बछड़ा बड़ा सलौना था और उसके माथे पर तिलक था । पंडितजी हर्ष से नाच उठे । लेकिन गाय को बांध कर घर ले आने के लिये रस्सी नहीं थी । इसलिये पंडितजी ने झट से अपनी धोती खोलकर गाय के गले में बांध दी, नवजात बछड़े को अपने कंधे पर उठा लिया और गांव की तरफ चल पड़े । जो भी आदमी पंडितजी को मिलता, वह उन्हें टोकता कि पंडितजी यह क्या ? लेकिन पंडितजी अपनी ही धुन में उत्तर देने लगते कि है क्या ? टीके वाला लाई है । आखिरकार पंडितजी अपने घर पहुंचे । पत्नी ने किवाड़ खोले तो पति

को इस अवस्था में देखकर वड़ी लज्जित हुई। उसने खीझते हुए पंडितजी से पूछा कि यह क्या स्वांग बनाया है? इस पर पंडितजी को अपनी भूल का भान हुआ।

१७००. **टीकै की वरियां माथो टाळै।**
तिलक के समय माथा टालता है।
कहते है कि जोधपुर बसाने वाले राव जोधाजी की मृत्यु पर उनके पुत्रों मे से जोगाजी को टीका (राज तिलक) दिया जा रहा था। लेकिन वे स्नान करके आये थे और उनके यह कहने पर कि मेरे वाल सुखा लेने तक ठहर जाओ, सरदारों ने जोगा के दूसरे भाई सातल को टीका दे दिया।
रू० आई लोडी सिर क्यूं टाळै? (व्यंग्य)

१७०१ **टीटूड़ी कै इंडो एक, कवै फोगसी काळ विसेक,**
दो इण्डा टीटूड़ी धरै, तो निस्चै आधो काळ पड़ै,
जे हो ज्यावै इंडा तीन, तो रोग दोष से परजा छीण,
जे मिल ज्यावै इण्डा च्यार, नव खण्ड निपजै साध विचार।

टिटहरी के एक अण्डा हो तो पूरा अकाल पड़े, दो अण्डे हों तो आधा अकाल पड़े, तीन अण्डे हों तो रोग फैले और चार अण्डे हों तो भरपूर जमाना हो।

१७०२. **टीटूड़ी समद उळीचियो, परवारां कै पांण।**
पारिवारिक या जातीय संगठन के वल पर टिटहरी नामक क्षुद्र पक्षी ने समुद्र को उलीच डाला।
इस संदर्भ की एक कथा है कि टिटहरी (एक छोटी चिड़िया) ने समुद्र के किनारे अण्डे दिये तो समुद्र उनको बहा ले गया। इस पर टिटहरी ने उससे वदला लेने की ठानी। पक्षियों के राजा गरुड़ सहित तमाम पक्षियों ने उसका साथ दिया और अन्त में समुद्र को हार मानकर टिटहरी के अंडे लौटाने पड़े।

१७०३. **टुकड़ा दे दे बछड़ा पाळ्या, सींग होया जद मारण आया।**
जिन को छुटपने से ही पालपोप कर बड़ा किया, वे ही अब समर्थ होने पर मारने आते है।
कृतघ्न व्यक्तियों के लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

१७०४. **टूटतै अकास कै वळो कोनी लागै।**
टूटते हुए आकाश को आधार स्तम्भ नहीं लगाया जा सकता।
अत्यन्त समर्थ व्यक्ति का पराभव होता है तो सामान्य साधनों से उसे नही रोका जा सकता।

१७०५. टूटी कै बूंटी कोनी।

आयु पूरी हो जाने पर कोई दवा नहीं लगती।

रू० टूटी कै बूंटी नईं, नईं काळ की टाळ।

१७०६ टूटी डाळी उडग्या मोर, धी मरी जंवाई चोर।

वृक्ष की डाली टूटी और उस पर बैठा मोर उड़ गया।

बेटी मरी और जँवाई की कद्र गई।

१७०७. टूट्यो पेट गोडां नै आवै।

पेट टूटता है तो उसका भार घुटनों पर ही आता है।

१७०८. टेढी खीर कोनी खाई जावै।

हमसे तो टेढी खीर नहीं खाई जाएगी।

संदर्भ कथा—एक सेठ ने किसी सूरदास को भोजन का निमन्त्रण दिया तो सूरदास ने पूछा कि भोजन में क्या पदार्थ बनाओगे? सेठ बोला कि खीर बनाई जाएगी। सूरदास का कभी खीर से वास्ता नहीं पड़ा था, इसलिये उसने सेठ से पूछा कि खीर कैसी होती है? सेठ ने उत्तर दिया कि बगुले जैसी सफेद होती है। सूरदास ने फिर पूछा कि बगुला कैसा होता है? इस पर सेठ ने अपनी कोहनी मोड़ कर बगुले जैसी आकृति बनाई और कहा कि बगुला ऐसा होता है। सूरदास ने 'बगुले' पर हाथ फेर कर देखा और बोल पड़ा—सेठजी! यह तो टेढी खीर है, हमसे नहीं खाई जाएगी, हमें आपका न्योता स्वीकार नहीं है।

१७०९. टोटा तेरा तीन नाम, लुच्चा गुण्डा बेईमान।

घाटे में आदमी को चाहे जो कह दिया जाता है।

१७१०. ठठेरां की बिल्ली खुड़कां सै कोनी डरै।

ठठेरों की बिल्ली खट-खट की आवाज से नहीं डरती, क्योंकि वह तो रात-दिन यह आवाज सुनती ही रहती है।

बखेड़े-बाजी करते रहने का अभ्यस्त आदमी सामान्य घुड़कियों से नहीं घबड़ाता।

१७११. ठण्डो लो ताते 'लो नै काटै।

ठंडा लोहा गरम लोहे को काटता है।

विनम्र व्यक्ति अपनी विनम्रता से उग्र व्यक्ति को हरा देता है।

१७१२. ठगां कै ठग ई पावणा।

ठगों के ठग ही पाहुने।

१७१३. ठग्यां ठग, ठगायां ठाकर ।

ठगने वाला ठग और ठगाने वाला ठाकुर ।

१७१४. ठाकर आडा भी चालै, ऊभा भी चालै ।

ठाकुर आड़े भी चलते हैं, खड़े भी चलते हैं ।

संदर्भ कथा—गाँव के ठाकुर के घर में घाटा था । बाजरी के सिट्टे तोड़कर लाने की मंशा से एक शाम को वह उसी गाँव के एक जाट के खेत में छिपकर घुसा । ठाकुर ने सोचा कि जाट की नजर मुझ पर न पड़ जाए, इसलिए वह घुटनों के बल चल रहा था । बाजरी के बूटों की खड़खड़ाहट हुई तो जाट ने कड़क कर पूछा—कौन है ? जाट की आवाज सुनकर ठाकुर सीधा खड़ा हो गया और रोब से बोला—क्यों मैं हूँ ! ठाकुर को पहचान कर जाट ने नम्र स्वर मे पूछा कि ठाकुर साहब ! घुटनों के बल कैसे चल रहे हैं ? इस पर ठाकुर ने बड़ी बेपरवाही से उत्तर दिया—यह हमारी मर्जी है, ठाकुर जो हैं । ठाकुर तो आड़े भी चलते हैं और खड़े भी ।

१७१५. ठाकर आया ये ठुकराणी, चूल्है आग न पैंडै पाणी ।

ठाकुर सा'ब घर आये, लेकिन घर में तो आग-पानी कुछ भी नहीं है ।

ठाकुरों के यहां आय तो प्रायः कम होती थी और व्यय अधिक, इसलिये अधिकतर ठिकानों में घाटे की स्थिति ही रहती थी ।

ठाकुरों के यहां सख्त पर्दा रहता था । यदि घर में बांदी होती तो वह पानी एवं ईंधन ले आती अन्यथा ठुकरानी यों हीं बैठी रहती थी ।

१७१६. ठाकर चालै जेरां केरां, ढेढां आधी रात ।
डूम तो दोपारां चालै, जाटजी परभात ।।

किसी दूसरे गाँव जाना हो तो ठाकुरों का कोई निश्चित समय नहीं होता । लेकिन चमार आधी रात को, डोम दोपहर में और जाट प्रातः काल जाना पसन्द करते हैं ।

१७१७. ठाकर तो कूंळै मांड्योड़ो ई बुरो ।

ठाकुर को तो कौंले पर मांडना भी बुरा ।

संदर्भ कथा—एक सेठ ने एक हवेली चिनवाई और हवेली तैयार हो जाने के बाद जब उस पर भित्ति चित्र बनाये जा रहे थे तो सेठ का एक परिचित ठाकुर उधर आ निकला । हवेली के मुख्य द्वार के आगे एक हथियार-बन्द जमादार का चित्र बनाया गया था । ठाकुर ने सेठ से पूछा कि यह किसका चित्र है ? सेठ ने मजाक में कह दिया कि आपके 'बाबो सा' का । ठाकुर बोला कि यह तो बहुत अच्छी बात है, लेकिन आप उनका नाम भी चित्र के नीचे लिखवा दीजिए । सेठ ने नाम लिखवा दिया और ठाकुर चला गया ।

कुछ वर्ष बाद वही ठाकुर पुन: सेठ के पास आया । कुशल क्षेम पूछने के बाद ठाकुर ने सेठ से कहा कि मैं अपने 'बावोसा' की नौकरी का हिसाब लेने आया हूँ सो दिलवा दीजिये । सेठ ने पूछा—कैसी नौकरी ? ठाकुर बोला कि जब से आपकी हवेली बनी है तब से ही मेरे 'बावो'सा' रात-दिन आपकी हवेली का पहरा लगा रहे हैं और यही कारण है कि आपके यहां आज तक न चोरी हुई और न डाका पड़ा । सेठ दुविधा में पड़ गया । उसने ठाकुर से कहा कि मैं इस चित्र को मिटवा देता हूँ । इस पर ठाकुर बोला कि भले ही मिटवा दें, लेकिन आज तक की नौकरी का हिसाब तो देना ही पड़ेगा । निदान, सेठ को रुपये देने ही पड़े ।

१७१८. ठाकर नै चाकर घणां ।
ठाकुर को चाकरों की क्या कमी ?

१७१९. ठाकरां ! ऊत गई, 'क गयाईं जावै है, अभी के थामो लागग्यो है ?
किसी ने ठाकुर से कहा कि ठाकुर साहब, आपके यहां तो सभी 'ऊत' (निकम्मे) गये । इस पर ठाकुर ने जवाब दिया कि अभी तो जा ही रहे हैं, रुके कहां हैं ?

१७२०. ठाकरां ! खळ खावो हो ? 'क या ही गंडकां कै मुं मांय सैं खोसी है ।
किसी ने ठाकुर से पूछा कि ठाकुर साहब ! आप खली खा रहे हैं ? ठाकुर ने उत्तर दिया कि खली भी कहाँ नसीब होती है, यह भी कुत्तों के मुँह से छीनी है ।

१७२१. ठाकरां ! खांगा बैठो; 'क खांगा बैठ्यां खरचो लागै ।
किसी ने ठाकुर से कहा कि ठाकुर साहब, जरा ऐंठ से बैठिये ।
ठाकुर ने उत्तर दिया कि ऐंठ से बैठने में खर्चा लगता है ।

१७२२. ठाकरां गैर वखत ? 'क गैर वखत तो म्हेईं हां ।
किसी ने ठाकुर से पूछा कि ठाकुर साहब, गैर वक्त (चोरी-डाका पड़ने के समय) किधर ?
ठाकुर ने उत्तर दिया—गैर वक्त तो हम स्वयं ही हैं अर्थात् हमीं तो चोरी-डाका डलवाते हैं ।

१७२३. ठाकरां ! घोड़ी ठेका तीन देसी, 'क ठाकर यार तो पैलै ईं ठेकै में तळै आसी, दो तो एकली ईं देसी ।
किसी ने कहा कि ठाकुर साहब ! यह घोड़ी तीन उछालें मारेगी, सावधान रहना । इस पर ठाकुर बोला कि ठाकुर तो पहली उछाल में ही नीचे आ गिरेंगे, शेष दो उछाल तो घोड़ी अकेली ही लगायेगी ।

१७२४. **ठाकरां ! टाबर कित्ताक ?**
'क भाई कै साळै कै दो डावड़ा है ।
किसी ने ठाकुर से पूछा कि ठाकुर साहब ! आपके बाल बच्चे कितने हैं ? ठाकुर ने उत्तर दिया कि भाई के साले के दो लड़के है ।

१७२५. **ठाकरां ! ठाडा किसाक ? 'क चोदू का तो वैरी ई पड़्या हां ।**
किसी ने ठाकुर से पूछा कि आप कैसे वीर बहादुर है ?
ठाकुर ने उत्तर दिया—कमजोर के तो दुश्मन ही है ।

१७२६. **ठाकरां ! दूबळा क्यूं ? 'क करड़ खा'गी ।**
ठाकुर साहब ! दुबले क्यों ?
उत्तर मिला—ऐंठ खा गई ।

१७२७. **ठाकरां ! धोळा आग्या अर भागो हो ?**
'क भागतां भागतां ईं धोळा लिया है, नईं तो काळै केसां ईं मारचा जाता ।
ठाकुर साहब ! आपके बाल सफेद हो गये है और अब भी पीठ दिखला कर भाग रहे हैं ?
उत्तर मिला—भागते-भागते ही तो सफेद बाल हो पाये हैं, न भागते तो कभी के मारे जाते ।

१७२८. **ठाकरां परै सरको ।**
'क दुख पासी जिको आपै ई सरक जासी ।
किसी ने ठाकुर से कहा कि ठाकुर साहब ! कुछ आगे सरकिये ।
ठाकुर ने उत्तर दिया—जो दुःख पायेगा, वह अपने आप सरक जाएगा ।

१७२९. **ठाकरां, बोरियां में तो कीड़ा है ।**
'क और खावां के झख मारण नै हां ?
किसी ने ठाकुर से कहा कि ठाकुर साहब ! आप जो बेर खा रहे है, इनमें तो कीड़े बहुत है ।
ठाकुर ने उत्तर दिया कि नहीं तो क्या झख मारने के लिये खा रहे है ? अर्थात् कीड़े है तभी तो खा रहे है ।

१७३०. **ठाकरां ब्याया 'क कुँआरा ? 'क आधा ब्यायोड़ा ।**
आधा कैयां ? 'क म्हे तो त्यार बैठ्या हां, आगलो बेटी देवै तो पूरो ब्या होज्या ।
किसी ने ठाकुर से पूछा कि ब्याहे हुए हो या कुँआरे ?
ठाकुर ने उत्तर दिया कि आधे ब्याहे हुये, क्योंकि हम तो ब्याहने के लिये तैयार ही हैं, कोई लड़की वाला अपनी लड़की दे तो पूरा ब्याह हो जाए ।

१७३१. ठाकरां भागल्यो कितराक, 'क लैर की दव्वी जाणिये

ठाकुर साहब ! आप कितना तेज भाग सकते हैं ?

उत्तर मिला—पीछे का दबाव जानिये ।

१७३२. ठाकरां मरग्या सुण्या, 'क सांपरत खड़्या हां नी !

नईं सा, म्हानैं भी एक ठावो आदमी कैवै हो ।

किसी ने ठाकुर से कहा कि हमने तो सुना था कि आप मर गये ? ठाकुर ने उत्तर दिया कि मैं तो आपके सामने प्रत्यक्ष खड़ा हूँ । लेकिन पूछने वाले ने ठाकुर की बात को झुठलाते हुए कहा—ऐसा नहीं हो सकता, हमें एक बहुत ही विश्वसनीय आदमी ने यह बात कही है, वह झूठ बोलने वाला व्यक्ति नहीं है ।

१७३३. ठाकरां हाथ तो पतळा-पतळा दीखै, 'क लाग्यां वेरो पड़ै ।

ठाकुर साहब ! आपके हाथ तो पतले पतले (कमजोर) लगते हैं ?

ठाकुर ने उत्तर दिया कि झापड़ लगे तो पता चले ।

रू० ठाकरां पूंचो तो पतळो दीखै, 'क लागै जिकै नै वेरो पड़ै ।

१७३४. ठाडै का दो वांटा ।

सबल के दो हिस्से ।

रू० नागै का दो वांटा ।

१७३५. ठाडै कै धन का फरेस्ता रखाळा ।

समर्थ के धन की रखवाली फरिश्ते करते हैं ।

रू० (१) भागवान कै धन की रुखाळी फरिस्ता करै ।

(२) ठाडै कै धन को खोजो-खोजो रुखाळो ।

१७३६. ठाडै निमळै का दो गैला ।

सबल और निर्बल के भिन्न रास्ते ।

१७३७. ठाडै को डोको डांग नै फाड़ै ।

सबल का सरकंडा लाठी को चीर डालता है ।

रू० ठाडै को डोको निमळै की डांग नै फाड़ै ।

१७३८ ठाडो काढै गाळ, हांसियां में ई टाळ ।

सबल की गाली को हँसी में टालना ही अच्छा है ।

१७३९. ठाडो मारै भी रोवण भी कोनी दे ।

सबल मारता भी है और रोने भी नहीं देता ।

रू० ठाडो मारै रोवण देनी, लाट मारने रोवण देनी, चौर मारे रोवण देनी ।

१७४०. ठाल कै हेज घणो, नापीरी कै तेज घणो ।

दूध न देने वाली गाय अपने बछड़े पर अधिक प्यार जताती है और जिसके पीहर में कोई न हो, वह अधिक आक्रोश प्रकट करती है ।

१७४१. ठालप सें वेगार भली ।

निकम्मा रहने की अपेक्षा तो वेगार करना ही अच्छा ।

रू० बेकार सें वेगार भली ।

१७४२. ठाली बैठी डूमणी घर में घाल्यो घोड़ो ।
दूध बाजरी खावती, घास खोदवो दोरो ॥

किसी डोमनी के यहाँ एक गाय थी जिससे उसे दूध दही खाने को मिल जाते थे । लेकिन् उसने गाय को बेच कर एक घोड़ा खरीद लिया । अब उसे दूध-दही के दर्शन तो दुर्लभ हो गये एवं घोड़े के लिए नित्य प्रति घास और खोदनी पड़ने लगी ।

किसी लाभप्रद काम को छोड़कर निरर्थक काम में फँसना ।

रू० (१) दूध दही सें धापगी, चढवा नैं मन चाल्यो ।
ठाली बैठी डूमणी, घर में घोड़ो घाल्यो ।
(२) बाजू बेच बंदूखड़ ल्याया सिर गोळी की खाई ।
छायां बैठ्या वेजो वणता, काईं मड़मड़ी आई ॥

१७४३. ठाली बैठी नायण पाडड़ा मूंडै ।

वेकार बैठी नाइन भैंस के बच्चों को मूँड़ती है ।

रू० (१) निकमी नायण पाटड़ा मूंडै ।
(२) ठालो बैठ्यो वाणियों के करै, ग्रैं कोठी को धान वीं कोठी में धरै ।
(३) सोनीजी थोड़ो सोनो दचो ।
'क सोनो मांग्यो मिलै है के ?
'क मांग्यो तो कोनी मिलै, पण ठाली जीभ के करै ।

१७४४. ठावां ठावां टोपला बाकी का लंगोट ।

प्रभाव और प्रतिष्ठा के अनुसार भेंट पूजा ।

१७४५. ठिकाणैं सें ई ठाकर बाजै ।

ठिकाने से ही ठाकुर कहलाता है ।

रू० ठिकाणैं ठाकर पूजीजे ।

१७४६. ठोकर खायां ईं हुंसियार होवै ।

ठोकर खाकर ही आदमी होशियार बनता है ।

१७४७. ठोठ मजूरी आगड़ी, कारीगर स्याबास ।

अनाड़ी मजदूर तो अपनी पूरी मजदूरी ले लेता है और कारीगर को केवल वाहवाही मिलती है ।

१७४८. ठोड को मणियों ठोड सोवै ।

हर आदमी यथास्थान ही शोभित होता है ।

१७४९. डर कनै गयां ई डर नीसरै ।

डर के पास जाने से ही डर निकलता है ।

बहुत बार अंधेरे में किसी वस्तु को दूर से देखकर आदमी डर जाता है, लेकिन उसके पास जाने से उसकी वास्तविकता प्रकट हो जाती है ।

१७५०. डरती हर हर करती ।

डर के मारे ही भगवान् का स्मरण करती है ।

१७५१. डर तो घणों खाये को है ।

अधिक खाना नुकसानप्रद है ।

१७५२. डरै जिकै नै घणों डरावै ।

जो डरता है, उसे अधिक डराया जाता है ।

रू० चिड़ै जिकै नै घणों चिड़ावै ।

१७५३. डरै जिकै नै बीच में सुवावै ।

जो डरता है उसे बीचोंबीच सुलाते है ।

१७५४. डरै तो करै क्यूं ?

यदि डरे तो अपराध करे ही नहीं ।

संदर्भ कथा—एक स्त्री बड़ी चटोरी थी । उसका पति जो कुछ कमाता, वह खाने-पीने में उड़ा देती । इससे वह सदा दुखी रहता । एक दिन उसकी बहिन ने उसे चार खूंटियां दीं और उससे कहा कि इनको रसोईघर के चारों कोनों में गाड़ दो । भाई ने चारों खूंटियां रसोई में गाड़ दीं और काम पर चला गया । पीछे से उसकी स्त्री ने सदा की तरह चूल्हे पर कड़ाही चढ़ाई तो एक खूंटी बोली—देखो, यह चटोरी स्त्री क्या करती है ? दूसरी ने कहा—यह तो सदा ही ऐसा करती है । तीसरी ने पूछा कि क्या ऐसा करते हुये यह डरती नहीं ? चौथी ने जवाब दिया—यदि डरती तो करती ही क्यों ? चारों खूंटियों की बातचीत सुनकर वह वास्तव में डर गई और उसने अपनी आदत बदल ली ।

१७५५. डांग टूटी तो ई ठोवरां जोगी ।

लाठी टूट गई है तो भी मिट्टी के भांडों को तोड़ने के लिए तो काफी है ।

१७५६. डाकण का हाथ माता में ई पड़ै ।

शीतला में हर समय खराबी की आशंका बनी रहती है और सीता निकलने से ही डाकिन भी बन जाती है ।

शीतला में डाकिन के दांव पड़ने के अधिक अवसर रहते हैं ।

१७५७. डाकण बेटा दे 'क ले ?
डाकिन बेटा दे या ले ?
डाकिन के पास देने को कहाँ ? वह तो सदा दूसरों के बेटे लेती ही है।
वह आदमी जो सदा दूसरों का हिस्सा हड़पने को उतारू रहता है।

१७५८. डाकण ही अर जरख चढ़गी।
डाकिन यों हीं बहुत भयंकर होती है और जरख पर चढने के बाद तो उसकी भयंकरता और भी बढ़ गई।
डाकिन की सवारी जरख (लकड़बग्घा) है, इसलिए उसे जरखवाहिनी भी कहते हैं।

१७५९. डाकणां कै ब्या में न्यू'तारां का गटका।
डाकिनों के यहाँ विवाह होता है तो वे निमन्त्रित व्यक्तियों को ही डकार जाती हैं।

१७६०. डाकणां से गांव का नळा के छाना ?
डाकिनों से गाँव के बच्चों के आँवलनाल क्या छिपे हैं ?

१७६१. डाकियां का डाव, आधै पाणी न्याव।
जबरदस्तों के दाँव लगने पर वे आधा पानी न्याय कर देते है।
आधा भाग तो स्वयं ही डकार जाते है।

१७६२. डाढी मूं'छ आळा भी डूबै है।
छोटे-मोटे की तो बिसात ही क्या, बड़े-बड़े भी डूब रहे हैं।
संदर्भ कथा—दाढ़ी मोंछों वाला एक प्रौढ़ आदमी अपने छोटे पौत्र को साथ लेकर नदी तट पर गया। पोते को अपनी छाया पानी में दिखलाई पड़ी तो उसने दादा से कहा कि एक लड़का पानी में डूबा जा रहा है। इस पर दादा ने पानी में देखा तो उसे भी अपना प्रतिबिम्ब दिखलाई पड़ा। इसे देखकर उसने पोते से कहा कि छोकरों की क्या बिसात, यहाँ तो दाढी-मोंछों वाले भी डूब रहे हैं।

१७६३. डिगमरां कै गांव में धोबियां को के काम ?
दिगम्बरों के गाँव में धोबियों का क्या काम ?

१७६४. डूं'गर चढ़तो पांगळो, सीस अणूतो भार !
पंगु पहाड़ पर चढ़े और सिर पर बेशुमार बोझ।

१७६५. डूं'गर बळती दीखै, पगां बळती कोनी दीखै।
पहाड़ पर लगी आग को तो सब देखते है, लेकिन अपने पैरों में लगी आग को कोई नहीं देखता।
हर आदमी दूसरों के दोष ही देखता है, अपने नहीं देखता।

१७६६. डूंगरां नै छायां कोनी होवै ।
पहाड़ों को छाया नहीं की जा सकती ।
सामान्य आदमी बड़ों को प्रश्रय नहीं दे सकते ।

१७६७. डूबती-तिरती कोनी देखै ।
नफे नुकसान का विचार किये बिना जो झट से किसी काम को कर डाले ।

१७६८. डूबतै नै तुणकै को ई सा'रो ।
डूबते को तिनके का सहारा ।

१७६९. डूबतो सिवाळां नै हाथ घालै ।
पानी में डूबता हुआ मनुष्य शैवालों को हाथ मारता है, लेकिन उनसे कोई बचाव नहीं हो सकता ।

१७७०. डूबी पर नौ बांस तिरै ।
डूबी हुई पर नौ बांस तैर रहे हैं । नौ बांस जितनी गहरी डूब गई है । इतनी गहरी डूब गई है कि बचाव का कोई रास्ता नहीं ।
बांस = एक माप (चार बांस, चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण) ।

१७७१. डूब्या बंस कबीर का, जाया पूत कमाल ।
कमाल जैसा पुत्र पैदा होने से कबीर का वंश डूब गया ।
कहा जाता है कि कबीर जो बात कहते थे, कमाल उससे सर्वथा विपरीत कहते थे । जैसे, कबीर ने कहा—'मन का कहना मानिये, मन है पक्का मीत', तो कमाल ने कहा—'मन का कहा न मानिये, मन है पक्का चोर ।'

१७७२. डूम किसै दिन संख बजाया ?
डोमों ने किस दिन शंख बजाये ?

१७७३. डूम की जात नै सी घणो लागै ।
डोम को जाड़ा अधिक सताता है । साल भर में कभी उसका जाड़ा नहीं उतरता ।
रू० सीयाळां सी ऊतरै, आवै जातां मात ।
तुरियां फागण ऊतरै, नर बांदर बैसाख ।
डूमां कदे न ऊतरै, चितिया बारै मास ।

१७७४. डूम (डूमणी) कै रोणै में भी राग ।
डोम रोता भी है तो राग में ।
डोम प्रारम्भ से ही अपने बच्चों को ताल-धुन आदि का ज्ञान कराने लगता है, जैसे छोटे बालक से कुत्ते को हांकने के लिये वह ताल लगाते हुए ही कहता है—

दाळ-बाटी की रसोई, दाळ-बाटी की रसोई,
छोरा कुत्तै नैं हांक, छोरा कुत्तै नैं हांक,
कुत्ता दुर्र रै, कुत्ता दुर्र रै।

१७७५. डूमड़ो गा-गा कर हारग्यो, धणी कै भांवैं ई कोनी।

डोम तो गाते-गाते थक गया और मालिक ने उसकी तरफ ध्यान ही नहीं दिया।

१७७६. डेढ घड़ो अर डीडवाणो प्याऊं ?

पास में केवल डेढ़ घड़ा पानी और पूरे डीडवाने को पानी पिलाने की आकांक्षा ?

साधन अत्यन्त सीमित, महत्वाकांक्षा बहुत बड़ी।

१७७७. डूब गई सिरकार मुसायब डूमड़ा।
डूब गई पणिहार 'क सिर में गूमड़ा।

वह सरकार डूब गई जिसमें डोम मुसाहिब हों; वह पनिहारिन डूब गई जिसके सिर में फोड़े हों।

कहते हैं कि अमिया ढोली जैसे ओछी बुद्धि के लोग जोधपुर के राजा रामसिंह के प्रीतिभाजन थे और राजा उनका कहना मानता था, जिसके परिणाम स्वरूप उसे राज्य से हाथ धोना पड़ा।

राजस्थान में पुरुष अपने कंधों पर पानी की दोघड़ ले जाते हैं और स्त्रियां सिर पर उठा कर। इसलिए जिस पनिहारिन के सिर में फोड़े हों, वह पानी की दोघड़ नहीं ले जा पाती।

१७७८. डूमकी कीं जाणै तो बखाणै ?

डोम की स्त्री कुछ जाने तो बखाने (यश वर्णन करे)।

रू० डूम कीं जाणै तो बखाणै ?

१७७९. डूम कै डार, डार कै डोई, डोई कै कोई न कोई।

डोम के याचक डार, डार के याचक डोई, लेकिन डोई के कोई नहीं।

१७८०. डूमां आडी डीकरी, बळदां आडी भैंस।
बिदया आडी बीनणी, उद्यम आडी ऐस॥

डोमों के लिए लड़की, बैल के लिए भैंस, विद्या प्राप्त करने में वहू और उद्यम के लिए ऐश-आराम बाधक हैं।

१७८१. डेरै में डेरी कोनी खटावै।

एक घर में दूसरे का हस्तक्षेप नहीं खटाता।

सन्दर्भ कथा—एक सेठ ने बीस हजार की लागत से एक मकान बनवाया। फिर उसने उस मकान को इस शर्त पर दूसरे आदमी को दस हजार

में बेच दिया कि मकान के आंगन के बीच में जो एक खम्भा है, वह सेठ का रहेगा और सेठ जब भी चाहेगा मकान में आकर अपने खंभे को सम्भाल सकेगा। मकान लेने वाले ने यह शर्त मान ली और आधी कीमत पर सहर्ष मकान खरीद लिया।

अब हर आधी रात को सेठ अपना खंभा संभालने के लिए आता और मकान के किवाड़ खट-खटाता। घर वाले दरवाजा खोल देते। सेठ कुछ देर तक खंभे के पास बैठा रहता और फिर घरवालों को बिना कहे ही चला जाता एवं घर का दरवाजा खुला ही छोड़ जाता। इससे हमेशा चोरी की आशंका बनी रहती, लेकिन सेठ को इससे कोई मतलब नहीं था। मकान खरीदने वाले के लिये मुसीबत खड़ी हो गई और उसने क्रय मूल्य पर ही वह मकान सेठ को वापिस बेच दिया।

१७८२. डोकरी कै कंये सें खीर कुण रांधै ?

बुढिया के कहने से खीर कौन रांधता है ?

किसी नगण्य और उपेक्षित आदमी की इच्छा पूर्ति की कोई परवाह नहीं करता।

१७८३. डोकरी माई ! ऐ मुसाण कीं का ? 'क आया गयां का।

किसी ने पूछा कि बुढिया माई, ये मसान किन के हैं ?

बुढिया ने उत्तर दिया कि आने-जाने वालों के।

१७८४. डोकरी माई ! तूं डाकण है तो रायसलिये को काळजो खाले।

खंडेला पर कभी निरवाण चौहानों का अधिकार था। कहा जाता है कि रायसल (दरबारी) खंडेला व्याहे थे और उन्होंने छल से खंडेला पर अधिकार कर लिया था। निरवाणों में इतनी शक्ति नहीं थी कि वे बल पूर्वक पुनः खंडेला पर अधिकार करलें। इसलिए जब वे किसी बुढ़िया को देखते तो कहते कि डोकरी माई ! यदि तू डाकिन है तो रायसल का कलेजा खाले।

१७८५. ढोळ जिसा पंचोळ।

अपने ढोल के अनुसार ही पंचायती।

१७८६. ढक दिया ताळा, बैठग्या रुखाळा।

आदमी बूढा और अशक्त हो जाता है तो घर में बहू-बेटों की चलने लगती है। वृद्ध मां-बाप अपनी इच्छा से कुछ भी खर्च, दान-पुण्य आदि नहीं कर पाते।

रू० जड़ दिया ताळा, बैठग्या रुखाळा।

१७८७. दब्बां खेती, दब्बां न्याय।

दब से ही खेती होती है, दब से ही न्याय होता है।

रू० दब्बां खेती, दब्बां न्याय, दब्बा ही हुई तो दबाय।

१७८८. ढांढा मारण, खेत सुकावण, तूं क्यूं चाली आधै सावण ?

आधा सावन बीत जाने पर नागोरण हवा का चलना पशुओं और खेतों के लिए हानिप्रद होता है।

रू० नाड़ा टांकण, बळद विकावण, तूं क्यूं चाली आधै सावण ?

१७८९ ढूंगां में लंगोटी कोनी अर जै बोलो तम्बू की।

पहनने के लिए लंगोटी नहीं और जय बोलते हैं तम्बू की।

१७९०. ढेढ को गाडो सैं सें आगै चालै।

ढेढ का गाड़ा सबसे आगे चलता है।

मंदी वस्तु सबसे पहले विकती है।

१७९१. ढ़ेढ को मन लहचावड़ै में रैवै।

लह्चावड़ा = गुड़ और मामूली घी या तेल से बना एक घटिया खाद्य पदार्थ।

१७९२. ढेढणी, अर भींव्योड़ो भावै कोनी !

ढेढनी और किसी का छुआ खाती नहीं !

१७९३. ढ़ेढणी के बोलै, चरू बोलै।

ढेढनी क्या बोलती है, चरू ही बोलती है।

चरू = टोकनी, देग।

संदर्भ कथा—एक चमारी अपने गाँव के ठाकुर के यहाँ गाय-भैंस का काम करने के लिए जाया करती थी। एक दिन उसने ठुकरानी को उदास देखकर पूछा कि आज आप उदास क्यों हैं ? ठुकरानी ने कहा कि लड़की विवाह योग्य हो गई, लेकिन कोई सम्बन्ध नहीं हो रहा है। इस पर चमारी ने कहा कि इसमें उदास होने की क्या बात है ? मेरे एक लड़का है जिसकी जोड़ी आपकी बेटी के साथ खूब फबेगी। चमारी की बात सुनकर ठुकरानी को गुस्सा तो आया, लेकिन वह कुछ बोली नहीं। दूसरे दिन भी वही बात हुई तो ठुकरानी ने ठाकुर से कहा। ठाकुर बोला कि इसमें कोई न कोई रहस्य है। जिस जगह पर खड़ी होकर चमारी ने ठुकरानी से बात की थी, ठाकुर ने वह जगह खुदवाई तो वहाँ द्रव्य से भरी एक 'चरू' निकली। ठाकुर ने ठुकरानी से कहा कि चमारी क्या बोलती थी, यह चरू ही बोलती थी अर्थात् इस द्रव्य के बल पर ही वह ऐसी बहकी-बहकी बातें करती थी। अगले दिन चमारी आई तो ठुकरानी ने उसके लड़के की बाबत पूछा। लेकिन आज ठुकरानी की बात सुनकर वह सकपका गई और अपने पूर्व कथन के लिए माफी मांगने लगी।

१७९४. ढेढणी ही अर रावळै जा आई !

ढेढनी थी और रनिवास में जा आई, अब किसको क्या समझे ?

१७९५. ढेढ नै कूवै में भी वेगार ।

चमार को कुएँ में भी वेगार ।

संदर्भ कथा—नित्य की वेगार से उकता कर एक चमार कुएँ में गिर पड़ा। लेकिन कुएँ में रहने वाले मेंढक को जब यह पता चला कि यह तो चमार है तो उसने उससे कहा कि जरा ये सिवार साफ कर दो, मैं तैरूंगा।

रू० ढेढ नै सुरग में भी वेगार ।

१७९६ ढेढां दिवाळी आ'री है ।

१७९७. ढोल में पोल है ।

ऊपर दिखावा अधिक है, लेकिन अन्दर पोल है ।

१७९८. ढोसी का डूंगर चीकणा होता तो नारनौळ का कुत्ता कदई का चाट ज्याता ।

ढोसी के पहाड़ चिकने होते तो नारनौल के कुत्ते कभी के चाट जाते ।

ढोसी की पहाड़ी नारनौल के पास है। कहा जाता है कि च्यवनऋषि का आश्रम यहीं था ।

१७९९. तंगी में कुण संगी ?

तंगदस्ती में कोई साथ नहीं देता ।

१८००. तन रूड़ो, मन कूड़ो ।

तन सुन्दर, किन्तु मन मैला ।

१८०१. तनै पराई के पड़ी, तूं तेरी तो नमेड़ ।

तुझे दूसरे की क्या पड़ी ? अपना घर तो सम्भाल !

पद्य—बाजरा दे बजंगी, कुलंगी न छेड़ ।
तनै पराई के पड़ी, तूं तेरी तो नमेड़ ।

१८०२. तनै हुकहुको आवै तो मनै लुटलुटी आवै ।

तेरे से बोले बिना नहीं रहा जाता, तो मेरे से लोटे बिना नहीं रहा जाता ।

सन्दर्भ कथा—एक ऊँट जंगल में चरा करता था। वहीं एक गीदड़ भी रहता था। पास में ही एक नदी बहती थी। गीदड़ को इस बात का पता था कि नदी के दूसरे किनारे के खेतों में पान बहुत अच्छी है, लेकिन वह स्वयं नदी को पार नहीं कर सकता था। इसलिये उसने ऊँट को मित्र बना लिया। रात को ऊँट ने गीदड़ को अपनी पीठ पर बिठला कर नदी पार की और दोनों उस किनारे के खेतों में चरने लगे। गीदड़ का पेट

जल्दी भर गया। अब उसे इस बात की चिंता नहीं रही कि ऊंट का पेट भरा है या नहीं। इसलिए उसने ऊंट से कहा कि मुझे 'हुक हुकी' लगी है और मैं बोले बिना नहीं रह सकता। ऊंट ने उत्तर दिया कि मैं तो अभी भूखा हूं, मुझे पेट भर चर लेने दो। लेकिन गीदड़ नही माना और ऊंचा मुँह करके जोरों से बोलने लगा। उसकी आवाज सुनकर किसान लट्ठ लेकर आया। गीदड़ तो छिप गया, लेकिन ऊंट कहाँ छिपता ? किसान ने ऊंट को खूब पीटा और उसे नदी की तरफ भगा दिया। गीदड़ भी वहाँ आ पहुँचा। ऊंट ने उसे अपनी पीठ पर बिठला लिया। लेकिन जब वह मँझधार में पहुँचा तो ऊंट ने गीदड़ से कहा कि मुझे तो 'लुट लुटी' लगी है, इसलिए मैं तो यहां लोटूंगा। गीदड़ ने बहुत मना किया, लेकिन ऊंट नहीं माना। वह वहीं लोट गया, जिसके फलस्वरूप गीदड़ उसकी पीठ पर से गिर कर नदी में डूब गया।

१८०३. **तपेसरी सो राजेसरी, राजेसरी सो नर केसरी।**

पूर्व जन्म की तपस्या से ही मनुष्य राजा और नर शार्दूल बनता है।

१८०४. **तरवार को घाव भरज्या पण बोली को घाव कोनी भरै।**

समय पाकर तलवार का घाव भर जाता है, लेकिन बोली का घाव आजन्म नहीं भरता।

१८०५. **तळै पड़्यो हूं, पण टांग तो मेरी ई ऊपर है।**

नीचे पड़ा हूँ, लेकिन टांग तो मेरी ही ऊपर है।
हारते हुए भी अपनी जीत का झूठा दावा करना।

१८०६. **तवै की काची नै, सासरै की भाजी नै कठैई ठोर कोनी।**

तवे पर कच्ची रह गई रोटी खाने योग्य नहीं और सुसराल से भगी स्त्री के लिए समाज में कोई स्थान नहीं।

१८०७. **तवै परलो तेरी, चूलै मांयली मेरी।**

चूल्हे में सिकने वाली रोटी मेरी और तवे वाली तेरी, अर्थात् पहले मैं रोटी लेलूं, बाद में तुम भी ले लेना।
रोटी पहले तवे पर सेंकी जाती है और फिर अंगारों पर।
जब घर में तंगी हो और खाने वाले अधिक हों तब पहल के लिए स्पर्धा होनी स्वाभाविक है।
रू० तवै चढे नै घाड़ खाय।

१८०८. **ताखड़ी आगै साच है।**

कम-अधिक का निर्णय तकड़ी स्वयं कर देगी।
यह न तुम्हारी बात रखेगी, न मेरी।

१८०६ तातो खावै छायां सोवै, वीं को वैद पिछोकड़ रोवै ।

जो सदा गरम खाना खाता है और छाया में सोता है, उसे वैद्य की आवश्यकता क्यों पड़े ?

१८१०. तातो खायो कोनी, रातो पैरयो कोनी ।

निकम्मे पति के प्रति पत्नी की उक्ति—तुम्हारे पीछे आकर न कभी गरम भोजन नसीब हुआ, न पहनने को समुचित वस्त्र ।

रू० (१) तातो कवो न मुख भल्यो, कदे न रातो वेस ।
जैसो कंतो घर रह्यो, वैसो ही परदेस ॥

(२) पिउ पासे सूता थकां, हेज नईं लवलेस ।
जिसड़ो कंतो घर रैयो, विसड़ो ई परदेस ॥

१८११. तानो सीर को होवै ।

ताना पूरे समाज या परिवार पर लागू पड़ता है ।

रू० भूंड तो सीर की होवै ।

१८१२ ताळी लाग्यां ई ताळो खुळै ।

सही चाबी लगने से ही ताला खुलता है ।

यथोचित जरिये से ही काम बनता है ।

१८१३. तार टूट्यो अर राग पूरी होई ।

तार टूटा और राग पूरी हुई ।

सांस टूटी और जिन्दगी का खेल खत्म हुआ ।

१८१४. तावड़े में बैठ कर धोळा कोनी करया ।

धूप में बैठ कर बाल सफेद नहीं किये हैं ।

१८१५ तावड़े में 'मे बरसै, भूत भूतणियां को व्या होवै ।

धूप में जब बूंदा-बांदी होती है, तब भूत-भूतनियों के विवाह होते हैं ।

१८१६. तिरिया चिरत न जाणै कोय, खसम मार कर सत्ती होय ।

नारी-चरित्र को कोई नहीं जान पाता । एक कुलटा नारी स्वयं अपने पति की हत्या करके भी अपने को लोक में शीलवती (सतवंती) सिद्ध करने के लिए पति के मृत शरीर के साथ सती हो जाती है ।

नारी-चरित्र संबंधी अनेक लोक कथाएँ प्रचलित हैं ।

१८१७ तिरिया तेरा, मरद अठारा ।

स्त्री १३ वें वर्ष से और पुरुष १८ वें वर्ष से युवावस्था की ओर उन्मुख होने लगता है ।

१८१८ तिरिया तेल हमीर हठ, चढ़ै न दूजी वार ।

विवाह से पूर्व भावी वधू को एक ही बार तेल चढाया जाता है । इसी प्रकार हठीला हम्मीर भी अपनी बात पर अडिग रहा है ।

यह कहावत रणथंभौर के चौहान नरेश. हम्मीर से संबंधित है, जिसने शरणागत की रक्षा हेतु अपने वचन का पालन करने के लिए अलाउद्दीन खलजी जैसे प्रचंड सुल्तान से जम कर लोहा लिया और प्राण देकर भी अपने वचन का पालन किया ।

रू० सिंघ संग सापुरष वच, केल फळै इक वार ।
तिरिया तेल हमीर हठ, चढ़ै न दूजी वार ।।

१८१९. तिथ टूटै, वार कोनी टूटै ।

तिथि ही टूटती है, वार कभी नहीं टूटता ।

संदर्भ कथा—एक वर्ष अकाल पड़ा तो एक किसान अपने परिवार को लेकर अपनी बहिन के यहाँ गया क्योंकि उसकी तरफ जमाना अच्छा था । लेकिन बहिन ने भाई को नहीं रखा । अगले वर्ष बहिन के यहाँ अकाल पड़ा एवं भाई के यहाँ अच्छा जमाना हुआ तो बहिन अपने बाल-बच्चों को लेकर भाई के घर आ गई । भाई ने उन सब को अपने यहाँ रखा और उनकी यथोचित सहायता की । इस पर बहिन ने लज्जित होकर कहा—

बखत पड़्यां रै बीर, तूं म्हांनै मोटा करचा ।
तिथ टूटै रै बीर, वार कदे टूटै नईं ।।

१८२०. तिल तिड़क्या, दिन भड़क्या ।

मकर सक्रांति पर तिल का प्रयोग विशेष रूप से होता है । इसलिए उसे 'तिल संकरांत' भी कहते हैं । मकर संक्रांति (जो प्राय: १४ जनवरी को ही पड़ती है) से सूर्य उत्तरायण आने लगता है जिससे दिन शनै: शनै: बढने लगते हैं और वातावरण में उष्मा आने लगती है ।

१८२१. तिसायो होसी जिको मत्तै ई कूवै आ ढुकसी ।

जो प्यासा होगा, वह स्वयं ही कुएँ के पास आ जाएगा ।
कुआँ कभी प्यासे के पास नहीं जाता ।
गरजमन्द स्वयं ही गरज पूरी करने वाले के पास पहुँचता है ।

१८२२. तीज तिवारां बावड़ी, ले डूबी गणगौर ।

सावन शु. तीज से त्योहारों का प्रारम्भ हो जाता है और गनगौर (चैत्र शु. ३) के साथ उनका समापन हो जाता है अर्थात् गनगौर के बाद हरियाली तीज तक त्यौहार बहुत कम आते है ।

१८२३ तीतर कै 'मूंडै कुसळ है ।

तीतर के मुँह कुशल है अर्थात् अमुक व्यक्ति जो कहदे वही ठीक है ।

१८२४. तीतर छोड वणी में दीन्या भटजी भया निराळा ।
भट्टजी ने तीतर पाल रखे थे जिन्हें खिलाने-पिलाने का झंझट सदा बना रहता था । जब उन्होंने उन्हें वन में छोड़ दिया तो वे उनसे एक बारगी ही निवृत्त हो गये ।

१८२५ तीतर जाणै तीतर की, मैं जाणूं तेरै भीतर की ।
एक तीतर दूसरे तीतर की बात जानता है और मैं तेरे मन की गुप्त बात को जानता हूँ ।

१८२६. तीतर पंखी बादळी, विधवा काजळ रेख ।
वा बरसै वा घर करै, ईं में मीन न मेख ।।
आकाश में तीतर पंखी बादली छाये और विधवा अपनी आंखों में काजल सारे तो यह निश्चित है कि बदली तो बरसेगी और विधवा नया पति करेगी ।

१८२७. तीतर बोल्यो बोळा, कै पंदरा कै सोळा ।
तीतर ने बहुत अधिक कहा तो या तो पन्द्रह या सोलह ।
हैसियत के अनुसार ही अनुमान ।

१८२८. तीन बुलाया तेरा आया, भई राम की वाणी ।
राघो चेतन यूं कहै, दे दाळ में पाणी ।।
तीन को भोजन का निमंत्रण दिया और तीन के स्थान पर तेरह आ गये तो अब इसका यही उपाय है कि दाल में पानी ठेल दो ।

१८२९ तीन लोक सैं मथरा न्यारी ।
तीनों लोकों से मथुरा न्यारी ही है ।
रू० ईं की गोकल सैं मथरा न्यारी ई है ।

१८३०. तीर नईं तो तुक्को ई सही ।
तीर नहीं तो तुक्का ही सही ।

१८३१ तीसरो सूको, आठवों अकाळ ।
राजस्थान की मरु भूमि में औसतन तीसरे वर्ष सूखा एवं आठवें वर्ष अकाल पड़ जाता है ।

१८३२. तुरक की यारी, तूंबै की तरकारी, अन्त खारी की खारी ।
तूंबा — एक अत्यंत खारा फल ।

१८३३. तुरकणी कै रांधेड़ै में के फरक पड़ै, जिकी चाख-चाख'र रांधै ।
तुर्किन के रांधे हुए में क्या फर्क पड़ जाता है ? क्योंकि वह पकाये जाने वाले पदार्थ को बीच-बीच में चख कर देखती रहती है ।
रू० तुरकणी कै रांधोड़ै में ईं फिरको ?

१८३४ **तुरत दान महा पुन्न ।**
यथा अवसर तुरत-फुरत दान करने से महापुण्य होता है ।
रू० तुरत दान महापुन्न, करै सो पावै ।
हाथ को दियो, कठै ई नईं जावै ।।

१८३५ **तुलै बूचकी तीखा कान ।**
फुर्ती से नौ-दो ग्यारह हो जाना ।

१८३६. **तूं आंटीलो मैं अणखीली क्यूंकर होय खटाव ?**
जब पति-पत्नी दोनों ही अकड़ैत हों तब निर्वाह कैसे हो ?
दोनों ही पक्ष अपनी-अपनी ऐंठ पर अड़े रहें तो बात नहीं बन सकती ।

१८३७ **तूं आप फिरै उघाड़ै तणै ।**
तू स्वयं ही नंगे बदन डोल रही है तो दूसरों को वस्त्र क्या देगी ?
सदर्भ कथा—एक बिल्ली बूढी और अशक्त हो गई । अब चूंहे उसकी पकड़ में नहीं आते थे । इसलिए उसने एक चूहे के बिल के पास जाकर चूहे को पुकारते हुए कहा कि हे अभागे चूहे, तेरे पास न पहनने के लिए झुग्गा है, न सिर पर ओढने के लिए पाग; यदि तू मेरे पास आये तो मैं दोनों चीजें तुझे देदूं—
आ रै चूसिया निरभाग, तनै झुग्गो दयूं अर पाग ।
लेकिन चूहा समझदार था । उसने बिल में से ही कहा—
तूं के कातै तूं के बुणै, तूं आप फिरै उघाड़ै तणै ।
अर्थात् तू क्या कातती है, क्या बुनती है और जब तू स्वयं ही नंगे बदन डोल रही है तब मुझे झुग्गा और पाग कहाँ से देगी ?

१८३८. **तूं ईं तो देखण जोगी ही अर तूं ईं काको कै बैठी ।**
साथ की सब स्त्रियों में तू ही तो देखने योग्य (खूबसूरत) थी और तू ही काका कह बैठी ! अब तो रिश्ता ही दूसरा बन गया ।

१८३९. **तूं ईं राणी मैं ईं राणी, कुण घालै चूल्है में छाणी ?**
तू भी रानी, मैं भी रानी, अब चूल्हे में आग कौन जलाये ?
साझे के घर में जब अनेक स्त्रियां होती हैं तब कोई भी घर का काम नहीं करना चाहती । हर स्त्री यही सोचती है कि मैं क्यों करूं ? मेरी बला से !
रू० तूं ईं राणी मैं ईं राणी, कुण भरै पैंडै को पाणी ।

१८४०. **तूं क्यूं रोवै नाई का, करम फूटग्या बाई का ।**
नाई के बेटे, तू क्यों रो रहा है ? कर्म तो बाई (भावी वधू) के फूटे हैं ।
पुराने जमाने में नाई और ब्राह्मण आदि ही लड़के-लड़कियों का संबंध तय करवा देते थे । जब किसी नाई ने अपने यजमान की लड़की का संबंध किसी

अयोग्य लड़के के साथ करवा दिया तो उसे डांटने पर वह रोने लगा। इस पर किसी ने उपरोक्त बात कही जो कहावत बन गई।

१८४१. तूं क्यूं लाडो उणमणी, तेरै सेलो आळो साथ ?

मां अपनी लाडली लड़की से कहती है कि—तू अनमनी क्यों है ? भाला धारण करने वाला तेरा पति तेरे साथ है।

१८४२. तूं डाळ-डाळ, मैं पान-पान।

तू डाल-डाल, मैं पात-पात।

१८४३. तू पी तूं पी करत ही, मिरगा तज्या पिराण।

तू पी, तू पी कहते-कहते ही हिरन-हिरनी मृत्यु को प्राप्त हुए।

संदर्भ कथा—हिरन और हिरनी बड़े प्यासे थे। उन्हें एक गड्ढे में थोड़ा सा जल मिला जिससे कठिनाई से एक प्राणी की प्यास बुझ सकती थी। हिरन हिरनी में बड़ा प्रेम था। वे एक दूसरे से कहने लगे कि पानी तुम पीलो, तुम पीलो, लेकिन दोनों में से किसी ने पानी नहीं पीया और दोनों ही एक दूसरे की मनुहार करते करते ही मर गये। इनको मृत देख कर किसी स्त्री ने अपनी साथिन से पूछा कि न तो यहां कोई व्याध दिखलाई पड़ता है और न ही इनको कोई तीर लगा है, तब ये दोनों कैसे मर गये ? तब साथिन ने उसे पूरी घटना बतलाई। दोनों में हुआ संवाद यों है—

खड़्यो न दीखै पारधी, लग्यो न दीखै बाण।
मैं तनै पूछूं हे सखी, ये किस बिध तज्या पिराण ?
जळ थोड़ा नेहा घणां, लग्या प्रीत का बाण।
तूं पी तूं पी करत ही, मिरगा तज्या पिराण॥

१८४४. तूं वेस्यां, मैं भांड।

तू वेश्या है तो मैं भांड हूँ।

सन्दर्भ कथा—किसी धार्मिक पर्व का दिन आया तो एक वेश्या ने सोचा कि आज तो एक ब्राह्मण को भोजन करवा कर पुण्य लूटना चाहिए। लेकिन वेश्या के घर भोजन करने के लिए कोई ब्राह्मण तैयार नहीं होता था, इसलिए उसने एक [illegible] का वेश बनाया और उपयुक्त ब्राह्मण की खोज में निकल पड़ी। उधर एक भांड ने सोचा कि आज तो पर्व का दिन है, इसलिए कहीं भर पेट मिष्ठान्न की तजवीज बिठानी चाहिए। यों सोच कर वह तिलक-छापे लगा कर और पंडित का वेश बनाकर बाजार में जा बैठा। [illegible] बनी वेश्या को यह ब्राह्मण वेश धारी भांड उपयुक्त लगा और उसे भोजन करवाने के लिए अपने घर लिवा लाई। उसने 'पंडितजी' को भर पेट भोजन करवाया। भोजन करवा चुकने के बाद उसने कहा कि हे ब्राह्मण

देवता ! मैं तो वास्तव में एक वेश्या हूँ। मेरे घर कोई ब्राह्मण भोजन करने के लिए नहीं आता था, इसीलिए मैंने खतरानी का वेश बनाया था। इस पर भांड ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया कि तुम इसके लिए जरा भी पश्चात्ताप न करो। तुम वेश्या हो तो मैं भी भांड हूँ। पर्व के दिन न्यौता देकर कोई भांड को जिमाता नहीं, इसीलिए मैंने भी जीमने की गरज से ही ब्राह्मण का वेश बनाया था—

तूं खतराणी मैं पांडियो, तूं वेस्यां मैं भांड।
तेरै जिमाये मेरै जीमे, पत्थर पड़सी रांड॥

१८४५. तूं रोवै रोटियां नै, मैं घलास्यूं दाळ।

तुम रोटी देने में ही भींक रही हो, लेकिन मैं दाल और लूंगा।

१८४६. तूं रोवै है छाक नै, मैं बूझण आई हूं 'क आटो उधारो कीं पां ल्याऊं ?

तुम छाक के लिए कलप रहे हो, लेकिन मैं तो अभी यह पूछने के लिए आई हूँ कि रोटी बनाने के लिए आटा उधार किससे लाऊं ?

छाक = खेत में काम करने वाले के लिए घर से पहुंचाया जाने वाला दो पहर का भोजन।

१८४७. 'तेरा कक्का भेळा होवै, जद सिरमाळी रोटी भेळा होवै।

जब तेरह ककार (कड़ायला, कुरछी, कामळिया आदि) एकत्र होते हैं, तब श्रीमाली भोजन करते हैं।

१८४८. तेरा कम्म ई तनै कुटावै।

तेरे कर्म ही तुझे कुटवाते हैं।

संदर्भ कथा—एक डोम बड़ा आलसी था। उसे भूख लगी तो रोटी बनाने के श्रम से बचने के लिए सूखा बाजरा ही चबा गया। भूख जोरों की लगी थी इसलिए उसे बाजरा बड़ा स्वाद लगा और चबाता ही चला गया। भर पेट खा लेने के बाद उसने कहा कि लोग व्यर्थ में ही बाजरे को कूटते हैं, पीसते हैं और रोटी बनाने का श्रम करते हैं, इसे तो यों हीं चबा लिया करें तो अच्छा है। लेकिन सूखा बाजरा अधिक मात्रा में चबा लेने से उसे 'पोखाळा' (अतिसार) हो गया और वह शौच जाते-जाते तंग आ गया। तब झुंझला कर बोला की अरी बाजरी, तूझे न कोई कूटे, न पीसे, लेकिन तेरे कर्म ही तुझे कुटवाते हैं।

१८४९. तेरा जायोड़ा भी कदे पगां चालसी के ?

तुम्हारे जन्मे हुए भी क्या कभी अपने पैरों पर चलेंगे ?

अकुशल व्यक्ति के ऊटपटांग कामों के प्रति व्यंग्य।

१८५०. 'तेरा दिनां को होवै पाख, तो अन्न मँहगो समझो बैसाख।

माह के किसी पक्ष में १३ दिन हों तो वैशाख में अन्न महँगा रहे।

१८५१. तेरा बेंगण मेरी छा, भला मंगारचा मेरी मा ।
जो निठल्ला आदमी व्यर्थ में इधर-उधर की करता फिरे ।

१८५२. तेरा मरग्या बादस्या, मेरा मरचा वजीर ।
आये धानी घर करां, पड़ें दुनी में सीर ।।
धानी नामक विधवा के प्रति किसी विधुर की उक्ति—तेरा बादशाह (पति) मर गया है और मेरा वजीर (पत्नी) । इसलिए अब दोनों मिलकर नया घर बसालें जिससे हम भी दुनिया से अलग-थलग न रह कर उसमें मिल जाएँ ।
रू० तेरै हा दो बळदिया, मेरै ही दो टाली ।
तूं फिरै हो रांडियो, मैं थी बैठी ठाली ।।

१८५३. तेरी मेरी बणै नां, तेरै बिना सरै नां ।
तेरी मेरी बनती भी नहीं और तेरे बिना सरता भी नहीं ।
रू० तेरै बिना चैन नईं, तेरै सागै रै'ण नईं ।

१८५४. तेरै मन कुछ और है, करता कै कुछ और ।
आदमी कुछ सोचता है और भगवान् कुछ और ही कर देता है ।

१८५५. तेरै ल्होड़िये नै नूंतो है, 'क मेरै तो सै ई ढाई सेरिया है ।
एक आदमी ने किसी औरत से कहा कि तुम्हारे छोटे बेटे को न्योता है, उसे हमारे घर भोजन करने के लिए भेज देना । औरत ने उत्तर दिया कि छोटा और बड़ा क्या, मेरे तो सभी अढाई सेर भोजन करने वाले हैं ।
जब किसी घर में सभी भोजन-भट्ट हों ।

१८५६. तेरो चून गंडकड़ा खा, मेरो हँसती को के जा ?
तेरे आटे को कुत्ते खा रहे हैं, इस पर मेरे हँसने में क्या लगता है ?
दूसरे की हानि पर सन्तुष्ट और प्रसन्न होने की दुष्प्रवृत्ति ।

१८५७ तेरो टको टकूलड़ो, मेरो टको लाल ।
दूसरे की चीज को क्षुद्र एवं अपनी चीज को बढ़ा-चढ़ा कर बतलाना ।

१८५८ तेरो तो घड़ो ई फूट्यो, मेरो बण्यो बणायो घर ढह्यो ।
तुम्हारा तो केवल घड़ा ही फूटा है, मेरा तो बना-बनाया घर ढह गया है ।
सदर्भ कथा—एक तेली तेल से भरा घड़ा लिए शहर की ओर जा रहा था । राह में उसे शेखचिल्ली मिला । तेली ने उससे कहा कि यह घड़ा अमुक स्थान तक ले चल, तुझे दो आने दूंगा । शेखचिल्ली ने घड़ा [illegible] सिर पर उठा लिया और [illegible] के [illegible] लगाता हुआ चलने लगा । तेली से मुझे जो दो आने मिलेंगे, उनके अंडे लाऊंगा, अंडों में से जो बच्चे निकलेंगे, उनकी मुर्गियां बन जाएंगी, उन मुर्गियों को बेच कर एक बकरी लाऊंगा, उससे अनेक बकरियां पैदा होंगी; उन को बेच कर भैंस लाऊंगा और फि-

भैंस को बेच कर बीवी ले आऊंगा; बीवी के बच्चे होंगे और जब वे मेरे पास आकर कहेंगे कि अब्बाजान चलो, अम्मीजान खाना खाने को बुलाती हैं तो मैं उनसे अकड़ कर कहूँगा—चलो वे, अभी नहीं खाएँगे। यों कहने के साथ ही उसने हाथ का फटकारा लगाया तो घड़ा नीचे गिर कर फूट गया। तेली ने शेखचिल्ली से कहा कि यह क्या किया? शेखचिल्ली ने उसकी बात की उपेक्षा करते हुए संजीदगी से उत्तर दिया—तेरा तो घड़ा ही फूटा है, मेरा तो बना-बनाया घर ही ढह गया है।

रू० तूं तो वीं काळी कळूंटी (भैंस) नै ईं रोवै है, अठै तो केसर सा (मुर्गा) ढहग्या।

१८५९. तेरो माजणो धेलै को कर द्यूंगा, 'क घणी आच्छी बात, पैली तो छिदाम को ई थो।

"तेरी आबरू गँवा कर अधेले की कर दूंगा!"

उत्तर मिला, "अभी तक तो मेरी आबरू एक छदाम की ही थी, आप उसे बढा कर अधेले की कर देंगे, फिर और क्या चाहिए?"

छदाम = छः + दाम, पैसे का चौथाई भाग। दो छदाम का एक अधेला।

१८६०. तेरो यार मरग्यो, 'क किसी गळी को?

किसी ने किसी कुलटा से कहा कि तेरा यार मर गया। लेकिन कुलटा के तो अनेक यार थे, इसलिए उसने पलट कर पूछा कि कौनसी गली वाला?

१८६१. तेरो राज गयो, ईं को ईमान गयो।

किसी ने छल से नवाब का राज्य हथिया लिया तो मौलवी ने अपदस्थ नवाब को आश्वस्त करते हुए फतवा दिया कि तेरा राज्य चला गया तो क्या हुआ, उसका ईमान भी तो चला गया है।

१८६२. तेल जितणो खेल।

जितना तेल, उतना खेल।

नटों में लड़की को छुटपन से ही तेल पिलाना शुरू कर देते थे और उसके हाथ-पाँव मोड़ते रहते थे जिससे उसके शरीर में अधिक लचक आ जाती थी और तमाशा दिखलाते समय वह अपने अंगों को विशेष रूप से मोड़ कर अधिक आकर्षण पैदा कर सकती थी।

१८६३. तेल तो तिलां में सैं ही निकळसी।

तेल तो तिलों में से ही निकलेगा।

पैसा तो असामी से ही प्राप्त होगा।

१८६४. तेल देखो, तेल की धार देखो।

तेल देखिये, तेल की धार देखिये।

संदर्भ कथा—एक महाजन का किसी तेली पर ऋण था । जब तेली ने रुपये नहीं दिये तो महाजन ने हाकिम के पास फरियाद की । हाकिम ने तेली को तलब किया तो तेली ने तेल का एक घड़ा हाकिम के घर भेज दिया । तब हाकिम ने महाजन से कहा कि तेली के पास रुपया होगा तब मिलेगा, तुम उसे तंग मत करो । इस पर महाजन ने एक मोहर हाकिम के पैर के नीचे सरकादी । अब महाजन का पक्ष मजबूत हो गया और हाकिम ने तेली को डांटते हुए कहा कि तुझे सेठ के रुपये अभी देने होंगे । तेली ने अपने तेल के घड़े का स्मरण कराते हुए हाकिम से कहा कि तेल देखिये, तेल की धार देखिये । इस पर हाकिम बोला कि देखा तेरा तेल फुलेल, मेरे तलवे ने और ही लग गई है ।

१८६५ तेल बाकळा भैरूं पूजा ।

भैरों जी तेल और 'बाकळों' (सिजाये हुए मोठ) से ही प्रसन्न होते हैं ।

१८६६. तेली को तेल बळै, मुसालची की गांड बळै ।

तेल तो तेली का जलता है और मशालची व्यर्थ ही कुढ़ता है ।

१८६७ तेली को बळद सौ कोस चालै तो भी घरे को घरे ।

तेली का बैल रात-दिन घानी में चल कर भी वहीं का वहीं रहता है ।

१८६८. तेली सें खळ ऊतरी, रैई बळीतै जोग ।

तेली की घानी से उतरने के बाद खली जलाने योग्य ही रह गई ।

रू० ठाकर में घर छूटगी, भांडां लीनी भोग ।
    तेली सें खळ ऊतरी, रैई बळीतै जोग ॥

१८६९. तैरू की रांड होवै ।

कुशल तैराक भी कभी न कभी धोखा खा कर डूब जाता है जिसके फलस्वरूप उसकी औरत विधवा हो जाती है ।

रू० घणा मेहा सिरर चुवै, भूपति ही भाजन्त ।
    वैदां ही की रांड हुवै, तैरू डूब मरंत ॥

१८७० तोलैगी जद रोवैगी ।

अब तो खुश है, लेकिन तौलने पर जब वास्तविकता का पता लगेगा तो रोवेगी ।

सन्दर्भ कथा—एक औरत किसी धुनिये के पास कुछ रुई धुनवाने लेकर आई । धुनिये ने उसमें से कुछ रुई चुरा कर रखली और शेष धुन कर उसे लौटा दी । धुनी जाने के कारण रुई फूल गई और अधिक दिखाई पड़ने लगी । औरत मन ही मन खुश थी कि धुनिये ने रुई में से अधिक रुई दे दी है । धुनिये ने उसकी बात ताड़ ली और वह मन ही मन कह उठा—

हांसै है जे रोवैगी, जद तकड़ै माल चढ़ावैगी ।

१८७१. तोळो वड़ो 'क रत्तो ?

तोला भारी या रत्ती ?

संदर्भ कथा—एक ठाकुर ने एक सुनार को अपने घर पर बिठला कर उससे गहना गढवाया। सुनार दिन भर गहना गढता रहता और ठाकुर की बाई बराबर उसके पास बैठी एक टक देखती रहती। उसकी आंखें भी बड़ी-बड़ी थीं जिससे सुनार ने समझा कि बाई बहुत कड़ी निगरानी रखती है। इसलिए उसे सोने में खोट मिलाने का साहस नहीं हुआ। जब सारा गहना गढा जा चुका तो बाई ने सुनार से पूछा—'सोनी जी, तोळा वड़ा या रत्ता' (वजन में तोला अधिक होता है या रत्ती) ? इस पर सुनार ने जान लिया कि यह तो निपट ना समझ है। इसलिए उसने मन ही मन कहा, 'बाई जी का तो फेर घड़ावरा का मत्ता।' फिर उसने प्रकट रूप में ठाकुर से कहा कि ठाकुर साहब गहना मेरे मन-मुआफिक नहीं बना है, इसलिए सारा गहना दुबारा गढूंगा, भले ही इसमें मुझे दोहरा श्रम करना पड़े। ठाकुर ने स्वीकृति द दी और जब उसने दुबारा गहना गढा तो उसमें मन चाहा खोट मिला दिया।

१८७२. थां गत सो म्हां गत।

अब तो जो गति तुम्हारी होगी, वही हमारी भी होगी—(दो अभिन्न साथियों का पारस्परिक कथन)।

रू० तो गत सो मो गत।

१८७३ **थारी म्हारी बोली में, इतरो ही फरक।**
तूं तो कहै फरेस्ता अर मैं कहूं जरख॥

तुम्हारी और हमारी बोली में इतना ही फर्क है कि तुम जिसे फरिश्ता कहते हो, उसी को मैं जरख कहता हूँ।

सन्दर्भ कथा—किसी मुसलमान की कब्र को खोद कर एक जरख (लकड़बग्घा) उसकी लाश को निकाल कर ले गया। एक जाट ने उसे ऐसा करते देख लिया और उसने उसके घर जाकर उसके घर वालों से यह बात कही तो वे बोले कि कैसा जरख ? वह तो फरिश्ता था। इस पर जाट ने उपरोक्त कहावती पद कहा।

रू० बोली बोली को आंतरो, बोली बोली को फरक।
कोई कहे परेस्ता, अर कोई कहे जरख॥

१८७४. थारै आया, कुण कुहाया।

तुम्हारे यहाँ आये और 'कौन' कहलाये।

संदर्भ कथा—चमारों के यहाँ विवाह था। निमन्त्रित लोग आते थे और खाना खाकर न्योते का रुपया देते जाते थे। पंच लोग खाट पर बैठे आने वालों की निगरानी कर रहे थे और न्योते के रुपयों का हिसाब भी

रहे थे। एक चमार ने खाना तो खूब डट कर खाया, लेकिन उसके पास न्योते में डालने के लिए रुपया नहीं था, इसलिए वह छिप कर पंचों की खाट के नीचे खिसक गया। लेकिन उसने खाना अधिक खा लिया था, अतः वह खाट के नीचे ही उलट-पुलट होने लगा। पंचों ने डांट कर पूछा कि खाट के नीचे कौन है ? बस ! चमार को बहाना मिल गया। वह खाट के नीचे से निकला और तड़ाक से बोला—तुम्हारे यहाँ आये तो 'कौन' कहलाये। अच्छा, कौन तो कौन ही सही। यों कह कर वह फुर्ती से चलता बना।

रू० कुण तो कुण ई सरी।

१८७५. **थारो म्हारो के रूसणो ?**

तुम्हारा-हमारा क्या रूठना !

काम के समय तो बहाना लेकर रूठ जाए और खाने के समय मन जाए।

संदर्भ कथा—एक चुहिया घर का कोई काम-धंधा नहीं करती थी। एक दिन चूहे ने उसे पीट दिया तो वह नीम के नीचे जाकर सो गई। चूहा जब भी उसे किसी काम के लिए पुकारता तो वह कह देती—तुमने मुझे पीटा क्यों था, अब मैं काम करने के लिए नहीं आती -

मनै मारी थी, मनै कूटी थी,
मैं नीम तळै जा सूती थी,
मैं क्यूं आऊं मेरो के लियो।

निदान चूहे ने घर का सारा काम अकेले ही किया। लेकिन खाना तैयार होने पर जब उसने चुहिया को खाने के लिए पुकारा तो वह झट से बोल पड़ी—मुंह धोकर अभी आ रही हूँ, भला आपका और मेरा कैसा रूठना ?

आऊं छूं जी आऊं छूं,
मुखड़ो धोकर आऊं छूं,
थारो म्हारो के रूसणो ?

१८७६. **थावर कीजे थरपना, बुध कीजे ब्योहार।**

स्थापना शनिवार को और व्यवहार बुधवार को प्रारम्भ करना चाहिए।

१८७७. **थावर की थावर गाँव थोड़ा ई बळै ?**

हर शनिवार को गाँव थोड़े ही जला करते हैं ?

ऐसा अंधविश्वास रहा है कि यदि शनिवार को गाँव में आग लग जाए तो कम से कम सात शनिवारों तक आग लगती है। लेकिन ऐसा नहीं हुआ करता। निपूती स्त्रियां पुत्र कामना की इच्छा से दूसरों के बहकावे में आकर या अंधविश्वास के कारण किसी के झोंपड़े में आग लगा देती थीं, यह काम शनिवार को किया जाता था। लेकिन हर शनिवार को ऐसा नहीं हो सकता।

१८७८. थोड़ो नफो घणी कुसळ ।

थोड़ा नफा लेकर माल बेचने में अधिक कुशल है ।

१८७९. थोथा पिछोड़ै, उड़-उड़ जाए ।

थोथे अनाज को सूप द्वारा फटकने पर सारा अनाज उड़ उड़ के चला जाता है ।

सारहीन काम करने से कोई लाभ नहीं होता ।

१८८०. थोथी चिड़ी कपूरी नांव ।

झूठ मूठ का आडम्बर ।

रू० (१) एक तिल अर मांय सैं काणों, रात्यूं पीव चलायो घाणों ।
ले ले कुलड़ा उलट्यो गांव, थोथी चिड़ी कपूरी नांव

(२) एक टाट नौ जणां सीर, नितकी जेठ रंधावै खीर ।
सवारी उठकै नूंतै गांव, थोथी चिड़ी कपूरी नांव ।।

१८८१. थोथो चणो, बाजै घणो ।

थोथा चना अधिक आवाज करता है ।

मूर्ख व्यक्ति अधिक बोलता है ।

रू० च्यार बीछिया टन-टन बाजै, नो मण काजळ नैण विराजै ।
झीणो घूंघट नखरो घणो, थोथो चणो बाजै घणो ।।

१८८२. थोथो थूक बिलोणैं सैं गरज कोनी सरै ।

थोथी बातें बनाने से गरज पूरी नहीं होती ।

रू० थूक का पकोड़ा उतारयांई गरज कोनी सरै ।

१८८३. थोथो संख पराई फूंक सैं बाजै ।

थोथा शंख दूसरे की फूंक से बजता है ।

जिसमें गांठ की अक्ल न हो, वह दूसरों के कहे अनुसार ही कहता और करता है ।

१८८४ दक्खण धनुष करै मेह हाण, विग्रह टीडी पड़ै सुकाण ।

दक्षिण दिशा में इन्द्र धनुष दिखलाई पड़े तो अकाल व उत्पात हों ।

१८८५. दगाबाज दूणो नवै, चीतो चोर कवाण ।

धोखेबाज, चीता, चोर और धनुष जितने अधिक झुकते हैं, उतने ही अधिक घातक होते हैं ।

नवनि नीच कै अति दुखदाई । जिमि अंकुस धनु उरग बिलाई ।

रू० नमण नमण बहु आंतरो, नमण नमण बहु बाण ।
अै तीनूं अवका नवै, चीता चोर कवाण ।।

१८८६. दगो कंई को सगो नईं ।

दगा किसी का सगा नहीं ।

सन्दर्भ कथा—एक पंडित नित्य राजा को कथा सुनाने जाया करता था । राजा ने पंडित से कहा कि कथा सुनने के लिए मेरे पास अधिक समय नहीं रहता, इसलिये आप मुझे सार रूप में ही कथा सुना दिया करें । पंडितजी सार रूप में दो बातें कह दिया करते—दगा किसी का सगा नहीं; करंता सो भोगंता । राजा उसे सोने की एक मोहर दे दिया करता । यह देख कर राजा के नाई को बड़ी डाह हुई । उसने पंडित का पत्ता काटने की युक्ति सोची और अगले ही दिन उसने पंडित की भर्त्सना करते हुए कहा कि तुम काहे के पंडित हो ? राजा मांस खाता है, शराब पीता है और तुम उसके मुँह में मुँह दिये रहते हो । जब राजा तुमसे बात करता है तो उसके मुँह की हवा तुम्हारे मुँह में जाती है, जिससे तुम्हारा भी धर्म भ्रष्ट होता है । इसलिए कल से मुँह पर पट्टी बांध कर आया करो । पंडित को राज-नाई की बात उपयुक्त लगी और उसने हाँ भरली । उधर नाई ने राजा से कहा कि महाराज ! आपने यह कैसा पंडित रख रखा है ? यह तो कहता है कि राजा के मुँह से बड़ी दुर्गन्ध आती है, इसलिए कल से मुँह पर पट्टी बांध कर आया करूंगा । यह बात राजा को बड़ी बुरी लगी और उसने पंडित को दण्ड देने का निश्चय कर लिया ।

अगले दिन पंडित अपने मुँह पर पट्टी बांध कर आया और कथा सुना कर जाने लगा तो राजा ने उसे एक की बजाय दो मोहरें दीं और साथ ही उसे एक चिट्ठी भी दी कि यह चिट्ठी अभी कोतवाली जाकर कोतवाल को दे देना । पंडित बाहर निकला तो दरवाजे के बाहर ही उसे नाई मिला । उसने एक मोहर नाई को दे दी और उससे कहा कि यह चिट्ठी तुम कोत-वाल को दे आओ । नाई खुश हो गया और चिट्ठी लेकर कोतवाली गया । कोतवाल ने चिट्ठी पढ़ी और नाई को पकड़ कर झट से उसकी नाक काटली, क्योंकि चिट्ठी में राजा ने कोतवाल के नाम यही आदेश लिखा था कि चिट्ठी लाने वाले की नाक तुरन्त काटली जाए । इस प्रकार नाई को दगा करने का फल मिल गया—

दगा किसी का सगा नहीं, कर देखो रे भाई ।
चिट्ठी उतरी बामण ऊपर, नाक कटायो नाई ।।

रू० दगो करयो वणिये की जोय, पूत खसम नै लीनी रोय ।

१८८७. **दड़की क्यूं 'क सांड हां ।**
पोटा क्यूं करो 'क गऊ का जाया हां ।
दड़ोकते क्यों हो ? सांड हैं ।
गोवर क्यों फेंकते हो ? गाय के जाये हैं ।
विरोधी को निर्बल देख कर गरजने लगते हैं और सबल देखकर मेमियाने लगते हैं ।

१८८८ **दद्दो तो जाणूं नईं, लल्लै आखर सार ।**
कभी कुछ देना तो सीखा ही नहीं, यहां तो केवल लेना ही सार है ।

१८८९. **दबी चुस्सी कान कटावै ।**
दबा हुआ आदमी हानि सहन करने के लिए विवश होता है ।

१८९०. **दमड़ां को लोभी बातां सैं कोनी रीझै ।**
धन का लोभी बातों से सन्तुष्ट नहीं होता ।

१८९१. **दमड़ी का कामण फळसै ताईं चालै ।**
दमड़ी के 'कामण' (टोने) फलसे तक ही प्रभावी रहते हैं ।
मामूली मूल्य की वस्तु का प्रभाव भी नगण्य होता है ।
दमड़ी = एक पैसे का आठवां भाग ।

१८९२ **दमड़ी का छाणां, धुवांधार मचाई ।**
एक दमड़ी के कण्डे जला कर धुआँधार मचादी ।
व्यर्थ का आडम्बर ।

१८९३. **दया-मया है 'क ?**
'क दोनूं ईं भाजगी ।
स्वामीजी का कोई भक्त बड़े समय बाद दिसावर से लौटा तो उसने स्वामीजी को प्रणाम करते हुए उनसे पूछा कि महाराज ! हम पर दया-मया तो है न ? बावाजी खिसिया कर बोले—दोनों ही भग गईं ।

संदर्भ कथा—एक स्वामीजी के पास दया और मया नामक दो चेलियां रहती थीं । बाद में उन्होंने कृपाराम नामक एक नवयुवक को चेला बनाया तो वह उन दोनों को ले भागा । स्वामीजी इस बात से बड़े दुखी थे । एक दिन स्वामीजी का कोई श्रद्धालु भक्त काफी समय बाद उनके दर्शन करने आया तो उसने सहज भाव से उनसे पूछा कि महाराज ! हम पर दया मया तो है न ? स्वामीजी चुप रहे । तब भक्त ने फिर पूछा—क्यों महाराज ! बोले कैसे नहीं, कृपा तो है न ? अब स्वामीजी का दुःख उबल पड़ा और वे झल्लाकर बोले – अरे, वह दुष्ट 'कृपला' ही तो दया-मया को भगा कर ले गया ।

१८९४. **दरजियां आळी पाल मार दी ।**

दर्जियों वाली पाल मार डाली ।

संदर्भ कथा—जोधपुर नगर के पास पाल नाम का गांव है । एक बार जोधपुर से कुछ दर्जिनें जंगल में कण्डे बीनने गईं तो पाल के किसी आदमी ने उनसे कण्डे छीन लिये । इस पर दर्जी उत्तेजित हो उठे और गज व कतरनी ले लेकर पाल मारने को चले । चलते-चलते रात हो गई तो वे सब गांव के बाहर ही एक लम्बी कतार में इस प्रकार सो गये कि एक का सिर दूसरे की टांगों के नीचे रहे । किन्तु जो दर्जी पंक्ति में सबसे आगे था, उसने सोचा कि लड़ाई होने पर मैं ही सबसे पहले न मारा जाऊँ और वह अपनी जगह से उठकर सबसे अन्त में आ सोया । दूसरे और तीसरे ने भी वैसा ही किया और फिर तो रात भर यही क्रम चलता रहा । यों करते करते सवेरा हुआ तो उन्होंने देखा कि वे तो जोधपुर नगर के दरवाजे तक आ पहुँचे हैं । अब सबने सलाह की और यह तय रहा कि आज तो घर चलो, फिर कभी मौका लगाकर पाल पर हमला करेंगे ।

१८९५. **दलाल कै दिवाळो नईं मसीत कै ताळो नईं ।**

दलाल का दिवाला नहीं पिटता, क्योंकि वह घर की पूँजी लगाकर काम नहीं करता और मस्जिद के ताला नहीं लगाया जाता क्योंकि वहां चोर आयेगा भी तो क्या ले जाएगा ?

१८९६. **दसां डावड़ो, वीसां बावळो, तीसां तीखो, चाळीसां चोखो, पचासां पाको, साठां थाको, सतरां सूळो, अस्सी लूलो, नव्वै नांगो, सोवां तो भागो ई भागो ।**

मनुष्य की पूर्ण आयु सौ साल की मानी गई है । प्रथम दस वर्ष की अवस्था तक वह बालक रहता है, बीस वर्ष तक अल्हड़पन, तीस तक तेज, चालीस तक पूरा समझदार बनता है, पचास तक परिपक्व हो जाता है, साठ तक थकने लगता है, सत्तर तक जर्जर होने लगता है, अस्सी तक घुटनों आदि में दर्द रहने के कारण पंगु जैसा हो जाता है, नव्वे तक कपड़े-लत्ते की सुध-बुध खोने लगता है, और सौ में तो महाप्रयाण कर जाता है ।

संदर्भ कथा—ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचना की तो उन्होंने आदमी, बैल, कुत्ता और घुग्घू (उल्लू) चारों को चालीस-चालीस साल की उम्र प्रदान की । आदमी ने तो कहा कि मुझे चालीस वर्ष की उम्र बहुत कम दी गई है, लेकिन शेष तीनों ने कहा कि हमारी उम्र बहुत लम्बी करदी गई है । इसलिये उन तीनों ने अपनी उम्र में से बीस-बीस साल की उम्र आदमी को दे दी ।

जब आदमी पृथ्वी पर आया तो उसने अपनी उम्र के चालीस वर्ष तो खूब अच्छी तरह बिता दिये। लेकिन आगे के बीस वर्ष उसे बैल से उधार मिले थे, इसलिये वह अपने परिवार के पालन-पोषण में बैल की तरह खटने लगा। वह साठ का हो गया तो अब उसे बीस वर्ष कुत्ते की आयु के बिताने थे। अब बेटे सयाने हो गये थे और अपनी इच्छा के मुताबिक चलने लगे थे। बाप उन्हें टोकता तो बेटे कहते कि आप दिनभर (कुत्ते की तरह) भों-भों मत किया करिये। यों मन मारकर उसने कुत्ते की आयु पूरी की। अब वह अस्सी वर्ष का हो गया तो उसे घुग्घू की आयु के बीस वर्ष मिले। उसके अंग शिथिल हो गये, आँखों से दिखलाई देना बन्द हो गया और वह घुग्घु की तरह आंखें बन्द कर मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगा।

१८९७. **दांतण करयां सवारै न्हायां, रिण काव्यां अर बैर बुझायां।**
मेह बरस्यां अर बेटो जायां, आणंद होय छः बात बणायां॥

प्रातःकाल दाँतुन करना, नहाना, ऋण मुक्त होना, वैर मिटाना, मेह बरसना और पुत्र-जन्म, ये छहों बातें आनंद दायिनी होती हैं।

१८९८. **दांत भलाई टूट ज्यावो, 'लो कोनी चवै।**

दांत भले ही टूट जाएँ, लोहे को नहीं चबाया जा सकता।

१८९९. **दांतलै खसम को रोवतै को बेरो पड़ै न हांसतै को।**

दंतुले पति का कुछ पता ही नहीं चलता कि वह रो रहा है या हँस रहा है।

१९००. **दाई रांड मांगत का ई लेगी।**

अकर्मण्य और निठल्ले व्यक्ति के प्रति व्यंग्य।

रू० दाई टक्को लेगी अर जाती कूंडो फोड़गी।

१९०१. **दाई सें पेट छाना कोनी।**

दाई से सगर्भा स्त्री का पेट छिपा नहीं रहता।

हमसे क्या छिपाते हो, हम सब जानते हैं।

१९०२. **दाणां चुगती मोडी मारी, गादड़ मारयो तीस्यो।**
अबकै खोज बड़ां का लीन्या, जड़ा मूळ सें जास्यो॥

सन्दर्भ कथा—किसी ठाकुर ने दाने चुगती हुई एक कमेड़ी (पंडुकी) मारली और फिर तालाब पर पानी पीने के लिये आये हुए एक गीदड़ को मार लिया। अब वह अपने को बड़ा वीर-बहादुर समझने लगा। एक दिन उसने जंगल में शेर के खोज (पद चिन्ह) देखे तो शेर की शिकार करने की मंशा से उन खोजों के पीछे-पीछे चलने लगा तो किसी ने उपरोक्त कहावती पद कहा कि कमेड़ी और प्यासे गीदड़ को मारकर तुम अपने को बड़ा शिकारी समझने लगे हो, लेकिन यदि शेर से पाला पड़ गया तो वह तुम्हें समूल ही हज्म कर जाएगा।

१६०३. **दाणै-दाणै पर म्होर छाप है।**

हर दाने पर खाने वाले का नाम (अप्रकट रूप से) लिखा होता है।

१६०४. **दाता दे, भंडारी को पेट फूटै।**

दाता देता है और भंडारी कुढ़ता है।

१६०५. **दाता सें सूम भलो जो झटकै उत्तर दे।**

झूठे आश्वासन दे कर रोज-रोज टालने वाले दाता की अपेक्षा तो वह कंजूस ही अच्छा जो पहली बार में ही ना कह देता है।

१६०६ **दादो इसो सावो काढ्यो, 'क फेरां कै दिन जनेत आई रैई।**

पंडित–दादा की होशियारी का क्या कहना, उसने विवाह का ऐसा मुहूर्त्त निकाला कि विवाह वाले दिन ही बरात आई रही।

१६०७. **दादोजी घी खाया करता, म्हारी हथेळी सूंघल्यो।**

दादाजी घी खाया करते थे, विश्वास न हो तो हमारी हथेली सूंघ कर देखलो, उसमें आज भी घी की गंध आती है।

१६०८. **दान की बाछी का दांत कोनी गिण्या जावै।**

दान में प्राप्त होने वाली बछिया के दांत नहीं गिने जाते।

१६०९. **दान-दायजा बहज्या, छाती कूटा रहज्या।**

अधिक दान-दहेज के लालच में जब निकम्मी बहू ले आते हैं, तब यह कहावत कही जाती है। दहेज तो एक बार ही मिलता है लेकिन निकम्मी बहू जिन्दगी भर घरवालों की छाती पर मूंग दलती रहती है।

कन्या पक्ष वालों की ओर से कभी 'कन्या धन' के रूप में कुछ धन वर-पक्ष वालों को दिया जाता था जिसने बाद में दहेज का रूप ले लिया और आज तो इसका रूप बहुत भी भयंकर एवं कष्टदायक हो गया है।

१६१०. **दानो दुसमण नादान दोस्त सें चोखो।**

नादान दोस्त की अपेक्षा दिलेर और बुद्धिमान दुश्मन अच्छा।

सन्दर्भ कथा—चार आदमी कमा कर दिसावर से आ रहे थे। सुविधा और सुरक्षा की दृष्टि से उन्होंने अपनी सारी कमाई के बदले एक-एक लाल खरीद लिया था। जब ठगों की बस्ती नजदीक आई तो उन्होंने एक वृक्ष के नीचे बैठ कर सलाह की और चारों आदमियों ने अपना-अपना लाल निगल लिया। वृक्ष पर बैठा एक चोर यह सब देख रहा था। चारों वहाँ से चलने लगे तो लालों को हथियाने की इच्छा से वह भी उनके साथ हो लिया। थोड़ी ही देर में वे ठगों की बस्ती में पहुँच गये। ठगों के पास एक ऐसा सुग्गा था जो यह बतला दिया करता था कि अमुक मुसाफिर के पास इतना धन है। उन पांचों को देखकर सुग्गे ने कहा कि इन मुसाफिरों के पेट में

लाल हैं । ठगों ने उन सब को घेर लिया और बोले कि तुम्हारे पेट चीर कर हम लाल निकालेंगे । चोर ने सोचा कि मैं पहले मर कर इन चारों के प्राण बचा सकता हूँ । इसलिये उसने ठगों से कहा कि हमारे पास लाल नहीं हैं। यदि तुम्हें विश्वास न हो तो मेरा पेट चीर कर देख लो, तुम्हें लाल मिले तो इन सबके पेट भी चीर डालना, नहीं तो नाहक क्यों नर हत्या का पाप अपने सिर लेते हो । ठगों ने उसकी बात मानली । उसका पेट चीरा गया, लेकिन उसमें से लाल प्राप्त न होने पर उन्होंने उन चारों को छोड़ दिया और इस प्रकार उस 'दाना दुश्मन' ने शेष चारों की जान बचा दी ।

१६११. दाम काढ़ै काम ।

दाम से ही सब काम बनते हैं ।

यों तो एक पैसे के पच्चीसवें भाग को दाम कहा जाता था, लेकिन यहाँ दाम से तात्पर्य धन से है जो राजनीति का भी एक अङ्ग (साम, दाम, दण्ड, भेद) रहा है ।

दाम–दुकड़ा यौगिक शब्द है । ६। दुकड़े का एक आना और १०० दुकड़े का एक रुपया होता था । इसे आज का पैसा कह सकते हैं ।

१६१२. दाळ-भात को खाणो, फळसै ताईं जाणो ।

दाल-भात का खाना और घर के दरवाजे तक जाना ।

दाल-भात का खाना हल्का होता है और इसे खाकर लम्बी मंजिल तय नहीं की जा सकती ।

रू० रोटी कह मैं आऊँ जाऊँ, खीच कहै मैं ठेठ पुगाऊं ।
  घाट कहै म्हारो फुसकर नांव, म्हारै भरोसै न जाये गांव ।।

१६१३. दाळ-भात लाम्बा (मोठा) जीकारा), अै बाई परताप तुमारा ।

वृद्ध धनिक को अपनी बेटी ब्याहने वाले बाप की अपने दामाद के घर विशेष खातिर होती है ।

१६१४. दावो कर्यो, तकादो गयो ।

कर्जदार पर न्यायालय में दावा कर देने के बाद कर्ज अदायगी के लिए तकाजा नहीं किया जा सकता ।

१६१५. दास सदा उदास ।

दास सदा चिंतित रहता है, क्योंकि वह परतन्त्र होता है और उसे हर घड़ी मालिक की इच्छा का ध्यान रखना पड़ता है ।

१६१६. दिखणादो 'मे कदे न आवै, जे आवै तो ढूंढा ढावै ।

दक्षिण की तरफ का मेह प्रायः नहीं आता, और कभी आता है तो मकानों को धराशायी कर देता है ।

१९१७. दिन आयां रावण मरै ।

समय आने पर ही रावण मरता है ।

समय आने पर रावण जैसे दुर्दान्त राक्षस को भी मरना पड़ता है ।

१९१८. दिन कटै काम सें, रात कटै नींद सें, गैलो कटै साथ सें ।

दिन काम से, रात नींद से और रास्ता साथ से कटता है ।

१९१९. दिन करै सो वैरी नईं करै ।

समय जो कर देता है, वह वैरी भी नहीं कर पाता ।

रू० दीहा जे कारज करत, सो वैरी न करंत ।
दीह पलट्टया रावणा, पाथर नीर तरंत ।।

१९२०. दिन को उगणों हो अर टाबरां की आंख खुलणी ही ।

यह संयोग ही ऐसा बना कि इधर दिन उगा और उधर बच्चों की आंखें खुलीं ।

संयोग से ही काम बन गया ।

१९२१ दिन चेत्यां ईं काम बणै ।

दिन चेतने से ही काम बनता है । अच्छे दिन आने से ही लाभ होता है ।

संदर्भ कथा—एक नगर में दो सेठ रहते थे । दोनों ही खूब मालदार और परस्पर गहरे दोस्त । संयोग से एक सेठ को बड़ा घाटा लगा और उसके पास कुछ भी नहीं रहा । दूसरे सेठ ने उसे दो-तीन बार एक-एक लाख रुपये व्यापार करने के लिए दिये, लेकिन वे भी चले गये । तब उसने अपने मित्र से कहा कि तुम्हारे दिनमान अभी अच्छे नहीं हैं, इसलिए अभी व्यापार मत करो और चूंकि व्याज को रेवड़ ही पहुँच पाता है, इसलिए तुम रेवड़ पालना शुरू कर दो । दूसरे दिन सेठ ने उसे चार बकरियां खरीद दीं, लेकिन कुछ ही दिन बाद उनमें से दो मर गईं । सेठ ने दो बकरियां और खरीद दीं, किन्तु काफी प्रयत्न करने के बावजूद भी बकरियों की संख्या चार से अधिक न बढ़ी ।

परन्तु एक दिन ऐसा भी आया कि बकरियों की संख्या बढ़ने लगी और कुछ ही दिनों में बीस बकरियां हो गईं । उसने इसकी सूचना अपने मित्र सेठ को दी तो वह बोला कि अब तुम्हारा दिन चेत गया है, अतः अब जोरों से कारोबार करो । सेठ ने वैसा ही किया और वह शीघ्र ही पहले की तरह मालदार बन गया ।

रू० दिनमान चेत्यां ईं काम बणै ।

१६२२. दिन चोखो होवै जद हाट चालै, नूंता आवै ।
दिन माड़ो होवै जद हाट उठै, पावणा आवै ।।

दिन अच्छा होता है तो दुकान भी चलती है और भोजन के निमन्त्रण भी आते हैं। लेकिन जब दिन खराब आता है तो दुकान भी उठ जाती है और पाहुने आते हैं।

१६२३. दिन जातां वार कोनी लागै ।

समय बीतते देर नहीं लगती ।
रू० दिनां नै जातां के वार लागै ।

१६२४. दिन दीखै न फूड़ पीसै ।

जब तक सूर्य दिखलाई नहीं देता तब तक फूहड़ स्त्री यही समझती है कि अभी तो रात है और वह पीसना प्रारम्भ नहीं करती ।
रू० बादळ में दिन दीखै, फूड़ दळै न पीसै ।

१६२५. दिन में गरमी रात में ओस,
बिरखा जा पूगी सौ कोस ।

वर्षाकाल में दिन में गरमी रहे और रात में ओस पड़े तो जानो कि वर्षा दूर चली गई ।

१६२६. दिन में दो बार, महीनै में दो बार, साल में दो बार ।

दिन में दो बार शौच जाना, महीने में दो उपवास रखना और साल में दो बार (चैत्र व आसोज में) जुलाब लेकर पेट साफ करना स्वास्थ्य के लिए हितकर है ।

१६२७ दिनूगे को भूल्योड़ो संज्या नै घरां आज्या तो भूल्योड़ो कोनी बाजै ।

सवेरे का भूला, शाम को घर आ जाए तो भूला हुआ नहीं कहलाता ।
आदमी थोड़ी भूल करते ही संभल जाए तो ज्यादा क्षति नहीं उठाता ।

१६२८. दिल लाग्यो गधेड़ी सें तो परी के चीज है ?

यदि गधी के साथ ही मन लग गया है तो फिर परी भी कुछ नहीं ।
जिसका जिसके साथ मन लग जाए, उसके लिए वही सर्वश्रेष्ठ ।
ऊधो मन माने की बात ।

१६२९. दिल्ली की कुमाई, दिल्ली में गुमाई ।

बड़े शहर में आय अधिक होती है तो व्यय भी अधिक होता है ।

१६३०. दिल्ली नै दोखां लगी, दारू रंडी राग ।

सुरा, सुन्दरी और राग के कारण दिल्ली की मुगलिया हुकूमत का पतन हो गया ।

१६३१. **दिवाळो काढै तीन जणां, हुण्डी, चिट्ठी व्योपार घणां ।**
तूं क्यूं काढै चौथा जणा ? पैदा थोड़ी खरच घणां ।।
अपने बूते से बहुत अधिक हुंडी-चिट्ठी और व्यापार करने वाले का कभी न कभी दिवाला पिट जाता है तथा यही हालत उस आदमी की भी होती है जो आय से अधिक व्यय करता है ।

१६३२. **दीखत का ही सोवणा, रोहीड़ै का फूल ।**
रोहिड़े का फूल देखने में तो बहुत सुन्दर होता है, लेकिन उसमें सुगन्धी जरा भी नहीं होती ।
सुन्दर, किन्तु गुण रहित आदमी के लिए प्रयुक्त ।
रू० (१) दीखत ही नीको लगै, भँवर न जावै भूल ।
रंग रूड़ो गुण वायरो, रोहिड़े को फूल ।।
(२) कारज किणही न आवसी, वास विहूणो गुल्ल ।
रूप रूड़ो गुण वायरो, रोहिड़ै रो फुल्ल ।।

१६३३. **दीप माळका दीवा बुझावैं, होळी झळ उत्तर दिस जावे ।**
आसाढी पून्यू दखणी वाव, तो अन्न विकैगो आनै पाव ।।
दीपावली के दीपक हवा के कारण बुझ जाएँ, होली की ज्वाला उत्तर दिशा की ओर जाये और आषाढ़ शु० पूर्णिमा को दक्खिनी हवा चले तो अन्न एक आने पाव अर्थात् बहुत मँहगा विके ।
जिस समय इस कहावत का निर्माण हुआ होगा उस समय अन्न का भाव मनों में रहता होगा । इसीलिए एक आना पाव अन्न बहुत ही मँहगा समझा जाता था । वि० सं० १६५६ के भयंकर दुर्भिक्ष के समय भी अन्न का भाव सात-आठ सेर का था, फिर भी हजारों आदमी हहरा कर मर गये कि इतना महँगा अन्न कैसे खा पायेंगे । हाँ, आज जब अन्न ग्रामों में बिकने लगा है, तब यदि एक आना पाव अन्न बिके तो उसे बहुत सस्ता और ईश्वरीय वरदान ही माना जाएगा ।

१६३४. **दीये की देवळ चढै क्यूं कोई रीस करै ।**
नागरचाळो ठाकरो, सांगो गोड़ सिरै ।।
देने वाले का ही नाम होता है, इसमें गुस्सा करने की कोई बात नहीं । नागर चाळा के ठाकुरों की तुलना में सांगा गौड़ कुछ भी नहीं था, लेकिन उसकी उदार वृत्ति के कारण उसे ठाकुरों से श्रेष्ठतर कहा गया ।

१६३५. **दीवे-लीवे से तो डूम राजी होवै ।**
देने-लेने में तो डोम खुश होते हैं ।
यह बात कभी लड़के वाले की ओर से तब कही जाती थी जब लड़की वाला उसके यहां अपनी लड़की का सम्बन्ध करने जाता था और दान-दहेज की

बात उठती थी। लेकिन अब तो लड़के वालों के लिए दहेज ही सर्व-प्रमुख मुद्दा बन गया है।

रू० देज-लेज सें तो डूम राजी होवै।

१६३६. **दीवा बीती पंचमी, जो शनि मूल पडंत।**
दूणा तीणा चौगणा, मंहगा नाज करंत॥
कार्तिक शु० ५ को यदि मूल नक्षत्र और शनिवार हो तो अन्न चार गुना तक मँहगा हो।

१६३७. **दीवा बीती पंचमी, सोम सुकर गरु मूल।**
डंक कहै हे भड्डळी, सातूं निपजै तूल॥
कार्तिक शु० ५ को यदि मूल नक्षत्र में सोम, गुरु या शुक्रवार पड़े तो सातों प्रकार के अन्न पैदा हों।

१६३८. **दीवाळी का दीवा दीठा, काचर बोर मतीरा मीठा।**
दीपावली तक काचर, बेर और मतीरे मीठे हो जाते हैं।

१६३९. **दीवाळी जे हुवै मंगळवारी, तो हँसै करसो रोवै ब्योपारी।**
दीपावली के दिन मंगलवार हो तो अन्न अधिक पैदा होगा जिससे किसान खुश होगा और अन्न का संग्रह करने वाला व्यापारी घाटा लगने से रोयेगा।

१६४०. **दीवै की बाती नै अर बहू नै घणी उकरेळणी आछी कोनी।**
दीपक की बत्ती को और बहू को अधिक उभाड़ना अच्छा नहीं।

१६४१. **दीवै जोगा भाग होता तो रातीनो क्यूं होतो?**
दीपक का प्रकाश देखना भाग्य में बदा होता तो रतौंधी ही क्यों होती?

१६४२. **दीवो चासण नै तेल कोनी, अर आंगणै में नाच घलावै।**
घर में दीपक जलाने के लिए तो तेल नहीं और आंगन में नाच करवाये।

१६४३. **दीवै तळै अंधेरो।**
दीपक के नीचे अन्धेरा रहता है।
हर आदमी की अपनी कमजोरियां होती हैं।

१६४४. **दुख 'कैणै को कोनी, 'सैणै को होवै।**
दुःख दूसरों से कहने के लिए नहीं, स्वयं सहने के लिए होता है।

१६४५. **दुनियां कैयां ईं कोनी टिकण दे।**
दुनिया किसी भी प्रकार टिकने नहीं देती।
हर बात की आलोचना की जाती है।

संदर्भ कथा—एक साधु रास्ते से कुछ हट कर जमीन पर लेटा हुआ था। सहारे के लिए उसने बालू का तकिया सा बना लिया था। पानी भरने के लिए जाती हुई कुछ पनिहारिनें उधर से गुजरी तो उनमें से एक ने कहा

साधु हो गया है, लेकिन फिर भी तकिया लगा कर ऐश करता है। साधु ने यह बात सुनी तो उसने मिट्टी को समतल कर दिया और यों हीं लेट गया। कुछ देर बाद पनिहारिनें लौटीं तो उनमें से एक ने कहा—साधु हो गया, लेकिन गुस्सा नहीं गया।

रू० (१) दुनियां नै कुण जीतै ?

(२) दुनियां की जीभ कुण पकड़ै ?

१९४६. **दुनियां ठगिये मक्कर सें, रोटी खाइये सक्कर सें।**

दुनिया को मक्कारी से ठगिये तो शक्कर से रोटी खाइये।

१९४७ **दुनियां दुरंगी है।**

दुनिया दो रंगी है। सामने कुछ कहती है तो पीठ पीछे कुछ। सुख में व्यवहार दूसरा होता है, दुःख में दूसरा।

रू० दुनियां दुरंगी, मक्का सराय। कहीं खैर खूबी, कहीं हाय-हाय।

१९४८. **दुनियां है अर मतलब है।**

सारी दुनिया स्वार्थ की है।

संदर्भ कथा—एक स्त्री अपने पति में बड़ा अनुराग दिखलाया करती थी। एक दिन पत्नी ने कई तरह के मिष्टान्न बनाये, लेकिन इसी बीच पति घर के एक खंभे में पैर फँसा कर और मृतवत होकर पड़ रहा। स्त्री ने जब देखा कि उसका पति मर गया है तब उसने खूब छक कर भोजन किया और फिर इतमीनान से रोने बैठी। पास-पड़ोस के लोग इकट्ठे हो गये। वे उसके पति का पैर निकालने के लिए खंभे को तोड़ने लगे तो वह बोली कि नाहक खंभे को क्यों तोड़ रहे हो, यह तो अब मर ही गया है, इसका पैर काट कर निकाल लो।

१९४९. **दुनियां पराये सुख दूबळी है।**

दुनिया के लोग एक-दूसरे को सुखी देखकर डाह के मारे घुलते रहते हैं।

१९५०. **दुनियां में दोई गरीब है, कै बेटी कै बैल।**

संसार में गरीब दो ही हैं, बेटी और बैल।

सन्दर्भ कथा—चार मुसाफिर कहीं जा रहे थे। राह में प्यास लगी तो चारों एक कुएँ पर गये। वहाँ एक पनिहारिन पानी भर रही थी। एक ने उसके पास जाकर पानी मांगा तो उसने पूछा कि तुम कौन हो? मुसाफिर ने उत्तर दिया कि मैं गरीब हूँ। इस पर पनिहारी बोली कि दुनिया में गरीब तो दो ही है, तुम तीसरे कहां से आ गये? उसने उसे पानी नहीं पिलाया और वह एक तरफ जाकर बैठ गया। दूसरे ने अपने को मुसाफिर, तीसरे ने जबरदस्त और चौथे ने अपने आपको बेवकूफ बतलाया। लेकिन पनिहारिन

का कहना था कि ये सब तो दो-दो ही हैं। फिर वह उन्हें वहीं बिठलाकर अपने घर गई और घर से मिठाई का एक थाल भर कर लाई। इसी बीच किसी ने उसके पति से कह दिया कि तुम्हारी औरत को तो चार आदमी भगा कर ले जा रहे हैं। उसने राजा के पास पुकार की तो राजा ने उन सब को पकड़ मंगवाया और चारों को कड़ा दण्ड देने की आज्ञा दे दी। तब औरत ने राजा को सारी बात स्पष्ट करते हुए कहा कि दुनिया में गरीब दो ही हैं—बेटी और बैल, इनको जिसके हाथों सौंप दिया जाता है, उसी के साथ इन्हें जाना पड़ता है। मुसाफिर भी दो ही है, चांद और सूरज जो निरन्तर चलते ही रहते हैं। जबरदस्त भी दो हैं, दाना और पानी एवं मूर्ख भी दो ही हैं—एक मेरा पति और दूसरे आप स्वयं क्योंकि मेरे पति ने तो बिना सोचे समझे आपको आकर कह दिया एवं आपने सबको पकड़ मंगवाया और बिना जांच-पड़ताल किये ही इन चारों को दण्ड भी सुना दिया। तब राजा ने लज्जित होकर उन सब को छुट्टी दे दी।

१९५१. **दुहागण की बरियां चांद ई आथमज्या।**

दुहागिन जब अर्घ्य देने जाती है तो चांद भी छिप जाता है।

दुहागिन = पति द्वारा तिरस्कृता, जिसकी ओर से पति विमुख हो गया हो।

१९५२. **दूध अर दळियो खा मेरी लाडो, क्यूं झूरै है मेवां नै।**

कोई सम्पन्न घराने की लड़की थळी में किसी ऐसे स्थान में ब्याही गई जहाँ खाने पीने की चीजें अति सामान्य थीं। लेकिन अब तो उसे उसी पर संतोष करना होगा—

सागर फोग थळी का मेवा, सरज्या है कोई देवां नै।
दूध अर दळियो खा मेरी लाडो, क्यूं झूरै है मेवां नै।

१९५३. **दुवधा में दोनूं गया, माया मिली न राम।**

दुविधा में दोनों ही चले गये, न माया मिली, न राम मिले।

न खुदा ही मिला न विसाले सनम।

रू० राघो तूं समझ्यो नईं, घर आया था स्याम।
दुवधा में दोनूं गया, माया मिली न राम॥

१९५४. **दुसमण की किरपा बुरी, भली सैण की त्रास।**
आडंग कर गरमी करै, जद बरसण की आस॥

दुश्मन की कृपा की अपेक्षा अपने वालों की त्रास अच्छी। जब आकाश में बादल घिरते हैं तब गर्मी तो होती है, लेकिन वर्षा की आशा भी बन्ध जाती है।

१९५५. दूज वर की गोरड़ी, हाथ-पग की मोरड़ी ।

पुरुष की पहली पत्नी के मर जाने पर जब वह दूसरी पत्नी लाता है तो उसकी इच्छा पूर्ति का विशेष ध्यान रखता है कि कहीं उसका अन कहा न हो जाए ।

रू० दूज वर की गोरड़ी, हाथ पग की मोरड़ी ।
दगड़ दगड़ खाऊंगी, बोलै तो मर जाऊंगी ।।

१९५६ दूध अर दुहावणी दोनूं 'रैणी चाये ।

दूध भी रहे, दोहनी भी रहे ।
दोनों काम बनने चाहिएँ ।

१९५७. दूध का दूध, पाणी का पाणी ।

दूध का दूध और पानी का पानी (नीर-क्षीर) हो जाना ।
यथोचित न्याय होना ।

सन्दर्भ कथा—गाँव की एक गूजरी पास के शहर में दूध बेचने के लिए जाया करती थी । रास्ते में एक छोटी सी नदी पड़ती थी । गूजरी जितना दूध घर से लाती थी, उतना ही पानी नदी में से मिला लेती थी । दूध देते कई दिन हो गये तो वह एक दिन हिसाब करवा के दूध के सारे रुपये ले आई । वह नदी के किनारे आकर दूध का बरतन धोने लगी कि इतने में एक बंदरिया आई और रुपयों की पोटली को उठा कर ले गई । गूजरी चिल्लाने लगी । लेकिन बंदरिया पोटली को लेकर एक वृक्ष पर चढ गई । उसने पोटली से लेकर एक रुपया गूजरी की तरफ फेंका और दूसरा नदी में । वह अन्त तक इसी प्रकार एक रुपया गूजरी की तरफ और दूसरा नदी में फेंकती गई । गूजरी को उसके दूध के रुपये मिल गये और पानी के रुपये पानी में चले गये ।

बांदरी भोळी, गूजरी स्याणी ।
दूध का दूध, पाणी का पाणी ।।

१९५८. दूध को दाझेड़ो, छा नै ई फूंक-फूंक कर पीवै ।

दूध का जला छाछ को भी फूंक-फूंक कर पीता है ।

१९५९. दूध दही का पावणां, छा नै ई अणखावणां ।

दूध दही से भी मँहगे पाहुनों को अन्न छाछ के लिए भी नहीं पूछते ।

१९६०. दूध देती की तो लात भी 'सैई जावै ।

दूध देने वाली गाय की तो लात भी सहनी पड़ती है ।
जिससे लाभ होता हो, उसकी कड़ी बात भी सहन करनी पड़ती है ।

१६६१. दूध पीवती बिल्ली गंडकड़ां में पजगी ।

दूध पीती हुई बिल्ली कुत्तों में जा फंसी ।

मौज-मजे करने वाला व्यक्ति दुष्टों के चंगुल में फँस गया ।

१६६२. दूध वेचो भांवें पूत बेचो ।

किसी समय दूध वेचना भी पुत्र को वेचने की तरह निषिद्ध माना जाता था । यह पुरानी बात है, जब घर-घर में गायें रहती थीं । लेकिन दूध-पूत की सौगन्ध तो आज भी बहुत बड़ी मानी जाती है ।

१६६३ दूध भी धोळो, छा भी धोळी ।

दूध भी सफेद, छाछ भी सफेद ।

जो आदमी छल-प्रपंच न जाने और दूसरे की बात का झट से विश्वास करले ।

१६६४. दूध होतो, बूरो होतो, कचोळो होतो अर दूध को कचोळो भर कर, अर बूरो आंगळी सें मिला कर पीता, पण अब तो आंगळी-आंगळी ई आपकी रैई है ।

हमारे यहाँ कभी बड़ी मात्रा में दूध हुआ करता, बूरा होता, कटोरा होता और हम कटोरे को दूध से भर कर, उसमें बूरा डाल कर एवं बूरे को उँगली से मिला कर पीया करते, लेकिन अब तो केवल उँगली ही शेष है, बाकी सब नदारद ।

पुरानी सुखद स्मृतियां मनुष्य को सालती रहती है ।

बूरा = देसी खांड को गला कर, साफ करके और चाशनी बना कर तैयार किया जाता था ।

१६६५. दूव तो खूब ई 'रैसी, घास-फूस बळ ज्यासी ।

खरे आदमी का सदा बोल-बाला रहेगा, झूठ-कपट करने वाले नष्ट हो जाएँगे ।

१६६६. दूबळै नै दो साढ !

दुर्बल मवेशी के लिए दो आषाढ और भी कष्टकर हो जाते हैं ।

१६६७ दूवळो धीणों पराई छा सें खोवै ।

जब घर में गाय-भैंस हों, लेकिन दूध बहुत कम देती हों तो छाछ की आवश्यकता रहते हुए भी दूसरों के यहाँ छाछ मांगने के लिए जाने में संकोच होता है ।

रू० दूवळी खेती धणी नै मारै ।

१६६८. दूयां पैली फाटै दूध, वा को क्या कीजिए ?
नई घिरत में सार, वां नै ढोळ दीजिए ।

दूध दुहने से पहले ही फटे तो उसमें घी क्या निकलेगा ? ऐसे दूध को तो जमीन में गिरा देना ही अच्छा है ।

१६६६. दूर का ढोल सुहावणा लागै ।

दूर के ढोल अधिक सुहावने लगते हैं ।

रू० दूर का डूंगर सुहावणा लागै, कनै गयां वै ई भाठा का भाठा ।

१६७०. दूर जंवाई फूल बरोबर, गांव जंवाई आधो ।
घर जंवाई गधै बरोबर, चाये जैयां लादो ।।

दूर रहने वाले दामाद का अधिक सम्मान रहता है, गाँव वाले का आधा और घर-जंवाई की कद्र तो गधे के बराबर रह जाती है ।

१६७१. दूसरां की आस में भूख मरै ।

दूसरों की आशा में भूखों रहना पड़ता है ।

सन्दर्भ कथा—एक स्त्री का पीहर भी उसी गाँव में था और सुसराल भी उसी गाँव में थी । दोनों ही तरफ परिवार बहुत बड़े थे । कोई त्यौहार आया तो उसने सोचा कि पीहर एवं सुसराल वालों के यहाँ से खाने-पीने की सामग्री पर्याप्त आयेगी ही, इस लिए मैं क्यों खाना बनाने का झंझट करूं ? लेकिन किसी के यहाँ से कोई सामग्री नहीं आई तो वह भूखी ही सो रही—

रांध्यो पी'र अर सासरै, रांध्यो सो परवार ।
एक न रांध्यो आपकै, भूखी सूती बार ।।

१६७२. दूसरै की थाळी में घी घणों दीखै ।

हर आदमी को दूसरे की थाली में घी अधिक दिखलाई पड़ता है ।

रू० दूसरै की थाळी में लाडू बडो दीखै ।

१६७३. दूसरै पर बुरी चींतै, जिकी आप पर ई पड़ै ।

जो दूसरे का बुरा सोचता है, उसका स्वयं का ही बुरा होता है ।

१६७४. देखणा सो भूलणा नईं ।

किसी विशिष्ट स्थान, वस्तु या उत्सव आदि को देखने का मौका मिले तो चूकना नहीं चाहिए ।

१६७५. देख पराई चोपड़ी, क्यूं ललचावै जी ?
रूखी सूखी खाय कर, ठंडो पाणी पी ।।

दूसरे की चुपड़ी रोटी देख कर मन ललचाना अच्छा नहीं । अपनी रूखी-सूखी खाकर और ठंडा पानी पीकर संतोष करना ही अच्छा है ।

रू० भोळो भर भूंडो भलो, प्यारो अपणो पीव ।
देख पराई चोपड़ी, क्यूं तरसावै जीव ।।

१९७६. **देख पराई चोपड़ी, जा पड़ वेईमान।**
एक घड़ी की सरमा-सरमी, दिन भर को आराम।

हे वेईमान! दूसरे की चुपड़ी हुई रोटी देख कर उस पर टूट पड़। एक घड़ी के लिए थोड़ी शर्म उठानी पड़ेगी, लेकिन फिर दिन भर का आराम हो जाएगा।

१९७७. **देख मरदां की हथफेरी, अम्मा तेरी 'क मेरी ?**

मरदों की हथ फेरी देखो और पहचानो कि अम्मां उसकी है या तुम्हारी ?

सन्दर्भ कथा—एक औरत बड़ी कलहकारिणी थी। एक दिन अपनी सास की भरपूर वेइज्जती करने की नीयत से वह पेट-दर्द का वहाना वना कर लेट गई और हाय-तोवा मचाने लगी। वैद्यों और सयानों ने सब तरह के उपाय कर लिये, लेकिन दर्द हो तो मिटे।

अन्त में पति ने अपनी पत्नी से ही पूछा कि तुम्हारा दर्द कैसे दूर हो, यह तुम्हीं बतलाओ। पत्नी ने उत्तर दिया कि इसका एक मात्र उपाय यही है कि तुम अपनी माँ का सिर मुँडवा कर, मुँह काला करके और उसे गधे पर चढा कर मेरे आगे से निकालो। पति अपनी पत्नी की दुष्टता को भाँप गया, लेकिन उसे मजा चखाने की मंशा से उसने हाँ भरली। उसकी सुसराल उसी गाँव में थी, अतः उसने तुरन्त ही अपनी सास के पास जाकर पत्नी वाला नुसखा उसे बतलाया। बेटी की ममता के कारण माँ ने वह सब स्वीकार कर लिया और उसी रूप में सजा कर वह उसे अपनी पत्नी के पास ले आया। पत्नी ने सोचा कि उसका पति अपनी माँ को ही लाया है। इसलिए उसने व्यंग्य से इठलाते हुए कहा—

देख बनी का चाळा, सिर मूंड्या मुँह काळा।

इस पर पति भी तपाक से वोल पड़ा—

देख मरदां की हथफेरी, अम्मा तेरी है 'क मेरी।

पति की बात सुन कर और अपनी माँ को पहचान कर पत्नी सन्न रह गई।

१९७८. **देखा-देखी साधै जोग, छीजै काया वाढै रोग।**

दूसरों की देखा-देखी करने से आदमी हानि ही उठाता है।

संदर्भ कथा—एक बार संत कबीरदास कहीं जा रहे थे। रास्ते में प्यास लगी तो उन्होंने एक लुहार की दुकान पर जाकर पानी मांगा। लुहार सीसा गला रहा था और उसने वह गला हुआ सीसा ही कवीर जी के पात्र में डाल दिया। कवीर जी ने सोचा कि दाता ने जो दिया, वही स्वीकार कर

लेना चाहिए। उन्होंने पात्र उठाया, राम का नाम लेकर उस गले हुए सीसे को पीया और आगे बढ गये। पीछे-पीछे उनका शिष्य आ रहा था। उसने भी कबीर जी की देखा-देखी वैसा ही किया, लेकिन सीसा पीते ही वहीं ढेर हो गया।

१६७६. देखो काका, मोठां के करी, लिया हा नौ सेर, वेच्या नौ धड़ी।

देखो काकाजी, मोठों ने क्या गजब ढाया है, खरीदे तो थे नौ सेर के भाव और वेचने पड़े नौ धड़ी के भाव।

एक धड़ी=पांच सेर।

अकाल और जमाने के अनुसार अन्न के भावों में बड़ा अन्तर रहता था। मोठ में जल्दी घुन लग जाते हैं अत: इसे अधिक समय तक रोक पाना संभव नहीं होता था और जमाना होने पर मोठ अधिक सस्ता विकता था—

रू० तिलड़ी तोड़ तिलां में दीनी, मोवन माळा मोठां में।
सीसफूल साई में दीन्यो, औरूं घाटो मोठां में।।

१६८०. देख्या बाप घर, करै आप घर।

लड़की जैसा अपने बाप के घर में देखती है, वह सुसराल जाने पर वहां भी वैसा ही करती है।

रू० देख्या बाप कै, करै आप कै।

१६८१. देण लेण नै कुछ नईं, हामळ भरूं किरोड़।

जो आदमी देने की वात तो खूब वढा चढा कर करे, लेकिन दे कुछ नहीं।

सन्दर्भ कथा—एक दरिद्र ब्राह्मण की सेवा से प्रसन्न होकर भगवान् ने उसे एक शंख दिया। ब्राह्मण अपनी आवश्यकतापूर्ति के लिए जो भी वस्तु शंख से मांगता, उसे तत्काल प्राप्त हो जाती। पड़ोसी को इसका पता चला तो उसने शंख चुरवा कर मंगा लिया। अब ब्राह्मण फिर संकट में पड़ गया। इस बार भगवान् ने उसे एक बड़ा शंख दिया। ब्राह्मण इससे सौ रुपये मांगता था तो शंख जोरों से बोलता—सौ ले, हजार ले, दस हजार ले, लेकिन देता पाई भी नहीं। इस पर पड़ोसी ने पहले वाला शंख तो ब्राह्मण के यहां रखवा दिया और बड़ा शंख चुरवा कर मंगवा लिया। पड़ोसी इससे जो भी मांगता, शंख उससे कहीं अधिक देने की घोषणा करता, लेकिन देता कुछ भी नहीं। इस पर वह पछताने लगा तो शंख बोला—

वा ही संखी सोहणी, मैं हूँ संख ढपोळ।
देण लेण नै कुछ नईं, हामळ भरूं किरोड़।।

१९८२. देण–लेण नैं रामजी को नांव है ।
यहां देने-लेने को कुछ भी नहीं है ।
रू० देण लेण नैं कुछ नईं, लड़नैं कूं मजवूत ।

१९८३ देणियें नै पुन्न होवै तो लेणियें नै पाप जरूर होवै ।
यदि दान देने वाले को पुण्य होता है तो लेने वाले को पाप अवश्य होता है ।

१९८४. देणै का बाट और, लेणै का बाट और ।
देने के बटखरे दूसरे, लेने के दूसरे ।
देता है तो कम तौल वाले बटखरे से और लेता है तो अधिक तौल वाले से ।

१९८५. देणै को दिवाळियो, लेणै को साह ।
देने के लिए दिवालिया और लेने के लिए शाह ।
रू० लेणा हो तो चोखा लेवां, लैर लगादयां प्यादी ।
देणा हो तो कछु न देवां, करता फिरो फरियादी ।

१९८६. देणै को नांव ईं लेणो है ।
उधार ली हुई चीज का पैसा जो समय पर चुका देता है, उसे ही फिर उधार मिलता है ।

१९८७. देणो अर मरणो बराबर ।
देना और मरना बराबर है ।

१९८८. दे दे सो आपको ।
जो दूसरों के हित में लगा दिया जाए, वही अपना है ।

१९८९. देबी दे तो दे, नईं भैरूं त्यार है ।
देवी दे तो दे, नहीं तो भैरों देने के लिए तैयार है ।
एक न दे तो दूसरा देने को तत्पर है ।

१९९०. देबी बीखै का दिन काटण आई, लोग परचा मांगै ।
देवी दुःख के दिन काटने आई है और लोग उससे 'परचे' मांगते हैं अर्थात् देवी से कोई करश्मा या चमत्कार दिखलाने को कहते हे ।

१९९१. देबी मंढ में बैठी ही मरड़का करै है, कदे वाणियें नै बेटो कोनी दियो है ।
देवी अपने मंढ (थान = छोटा देव मंडप) में बैठी ही इठला रही है, उसने कभी वनिये को बेटा नहीं दिया है ।

संदर्भ कथा—एक बनिये के कोई पुत्र नही था । उसने भैरोंजी की मनौती मानी कि यदि उसके एक पुत्र हो जाए तो वह भैरोंजी को एक भैंसा चढा देगा । कुछ समय वाद उसे एक पुत्र की प्राप्ति हो गई तो वह एक भैंसे को लेकर भैरोंजी के 'मंढ' पर गया, लेकिन उससे भैंसे की वलि देते नही बनी । कुछ देर की ऊहापोह के वाद उसने भैंसे की नाथ भैरोंजी की मूर्ति से बांधकर भैरोंजी को भैंसा समर्पित कर दिया और हाथ जोड़ कर अपने घर

आ गया। थोड़ी देर तक तो भैंसा वहां खड़ा रहा, लेकिन फिर उसका मन उचट गया और वहां से चल पड़ा। चूंकि मूर्ति भैंसे की नाथ से बंधी हुई थी, इसलिए वह भी साथ ही घिसटने लगी। वहीं एक देवी का 'मंढ' भी था। भैरों की यह दशा देख कर देवी ने व्यंग्य से पूछा—भैरों, आज इस प्रकार क्योंकर घिसटते जा रहे हो? इस पर भैरों ने झल्ला कर उत्तर दिया कि तुम मंढ में बैठी हुई ही ऐंठ दिखला रही हो, कभी बनिये को बेटा देती तो पता लग जाता।

१९९२. देवी में गुण होसी तो पुजारा, रोही में ई ढूंढ लेसी।

देवी में कोई करामात होगी तो उसके पुजारी उसे जंगल में भी ढूंढ लेंगे।

१९९३. दे रै पांच्या आसीस, 'क मैं के द्यूं' मेरी आंतड़ी देसी।

किसी ने भूखे को भोजन देकर कहा कि आशिष तो देते जाओ। इस पर उसने उत्तर दिया कि मैं अपने मुंह से क्या आशिष दूं? असली आशिष तो मेरी अंतड़ियां (अंतरात्मा) देंगी।

१९९४. देव देख्या अर जात पूरी होई।

देवता के दर्शन हुए और जात्रा पूरी हुई।

रू० देवता कै गया अर जात पूरी होई।

१९९५. देवां सें दाना ठाडा होग्या।

देवताओं की अपेक्षा भी दानव जबर हो गये।

१९९६ देस चोरी, परदेस भीख।

भूखा आदमी परदेश में भीख मांग कर भी पेट भर लेता है क्योंकि वहां सब अपरिचित होते हैं, लेकिन अपने देश (गांव) में भीख मांगने में उसे संकोच होता है। पर चूंकि, उसे गांव के लोगों का भेद मालूम होता है, अतः चोरी आसानी से कर सकता है।

१९९७. देस जिसा भेस।

जैसा देश, वैसा वेश। वेश के अनुकूल वेश।

१९९८. देसी टोरड़ी, दिसावरी चाल।

रू० देसी कुतिया, बिलायती बोली।

१९९९. दो एक नांव काळिये का ई लेई।

दो-एक नाम काले के भी ले लेना।

सन्दर्भ कथा— एक आदमी को काले नाग ने काट लिया। उस गांव में एक आदमी झाड़ा लगाने वाला था। वह बिच्छू के झाड़े का एक टका और सांप के झाड़े का एक रुपया लेता था। सांप के द्वारा काटे हुए आदमी ने उसके पास जाकर कहा कि मुझे बिच्छू ने काट लिया है, यह टका लो और

झाड़ा लगा दो। जब वह विच्छू का झाड़ा लगाने लगा तो उस आदमी ने कहा कि भाई दो-एक नाम काले (नाग) के भी ले लेना।

जब कोई आदमी टका देकर रुपये का काम करवाना चाहे।

२०००. दो घड़ी को धामड़ कूटो, सारै दिन की सैल।

दो घड़ी की मार-पीट, शेष पूरे दिन की मौज।

सन्दर्भ कथा—एक माली के पास दो बैल थे। एक बैल तो खूब काम करता था, लेकिन दूसरा बिलकुल 'पैल' (काम से जी चुराने वाला) था। जब भी माली उसे जोतता, वह बीच में ही बैठ जाता और मारने-पीटने पर भी नहीं उठता। तब हार कर वह उसे छोड़ देता और दूसरे बैल से ही सारा काम लेता, जिससे उसे जरा भी आराम नहीं मिल पाता। एक दिन उसने अपने साथी बैल से पूछा कि मुझे भी अपना पीछा छुड़ाने की युक्ति बतलाओ। तब दूसरे बैल ने कहा कि तुम भी मेरे वाला नुसखा ही आजमाओ, दो घड़ी की मार पीट और फिर सारे दिन का आराम—

सुण रै भाई पैल, कैयां छूटै गैल।
दो घड़ी को धामड़ कूटो, सारै दिन की सैल॥

२००१. दो घर डूबता एक ई डूब्यो।

जब पति-पत्नी दोनों एक जैसे गये-गुजरे हों।

रू० सोढै जिसी सांखळी, सांखळी जिसो सोढो।
दो घर डूबता, एक ई डूब्यो॥

२००२. दो घोड़ां पर सागै कोनीं चढ्यो जा।

दो घोड़ों पर एक साथ सवारी नहीं की जा सकती।

रू० (१) दो घोड़ां पर सागै चढ्यां रान फाटज्या।
(२) दो न्यावां में सागै कोनी चढ्यो जा।

२००३. दो ठगां ठगाई।

दोनों ही ठग हैं और परस्पर एक दूसरे को ठगने की चेष्टा कर रहे हैं।

रू० दो सगां सगाई।

२००४. दो तो माटी का ई बुरा।

दो तो मिट्टी के बने भी बुरे होते हैं।

दो कमजोर आदमी भी एक बलवान् को गिरा लेते हैं।

२००५ दोनूं खोई बूवना, आदेसां जुंहार।

सन्दर्भ कथा एक राजा के मन में वैराग्य जगा तो वह राज-पाट छोड़ कर जोगी बन गया। लेकिन जब जोग नहीं सधा तो एक विधवा कुम्हारी से

नाता जोड़ कर कुम्हार बन गया। जब वह राजा था, तब लोग उसे 'जुहार' करते थे और जोगी बना तो 'आदेश बाबाजी' कहते थे। लेकिन अब तो वह दोनों से ही गया—

राजा सें जोगी भयो, जोगी सें भयो कुम्हार।
दोनूं खोई बूबना, आदेसां जुंहार ॥

रू० मूंड मुंडायो काणो भयो, फेरचो घर को दुआर।
दोनूं खोई बूबना, आदेस न जुंहार ॥

२००६. **दोनूं हाथ रळाया धुपै।**
दोनों हाथ मिलाने से ही धुलते हैं। पारस्परिक सहयोग से ही काम बनता है।

२००७. **दो पोई दो काख में, के ढूंढै अब राख में?**
तुमने दो रोटियां बनाई थीं जो तुम्हारी बगल में हैं, अब राख में क्या ढूंढते हो?

२००८. **दो बुरां बुराई होवै।**
कसूर दोनों पक्षों का होता है।

२००९. **दो लड़ै जिकां में एक तो पड़ै ई।**
दो आदमी लड़ते हैं तो उनमें से एक तो गिरता ही है।

२०१०. **दो सावण दो भादवा, दो कातिक दो 'मा।**
ढांढा ढोरी वेच कर, नाज विसावण जा॥
जिस वर्ष दो सावन, दो भादों, दो कार्तिक अथवा दो माघ हों उस वर्ष अकाल पड़ता है, इसलिए उचित है कि पशुओं को वेच कर अनाज ख़रीद लो।
रू० दो सावण दो भादवा, दो काती दो 'मा।
मोती वेचो सेठजी, नाज खरीदो 'सा॥

२०११ **धणी को धणी कुण?**
मालिक का मालिक कौन?

२०१२ **धणी नै खावणियों गंडक गैलै वगतै को के मुलायजो वरतै?**
जो कुत्ता स्वयं अपने मालिक को भी काट खाता है, वह राहगीर का भला क्या लिहाज रखेगा?

२०१३ **धन का 'तेरा मकर पचीस, अै सरदी का दिन अड़तीस।**
तेरह दिन धन की संक्राति के और पच्चीस दिन मकर की संक्रांति के, कुल ३८ दिनों तक जोरदार जाड़ा पड़ता है।
रू० धन का पंदरा, मकर पचीसां।
जाड़ा चिल्ला, दिन चाळीसां॥

२०१४. **धन खेती, ध्रिक चाकरी ।**
खेती करना धन्य है, नौकरी को धिक्कार है ।
रू० (१) उत्तम खेती मध्यम बान, निखद नोकरी भीख निदान
(२) धन खेती ध्रक चाकरी, धन-धन विणज बेपार ।
ध्रक-ध्रक वां का जीवणा, जो नित उठ लदै करतार ।।

२०१५. **धन जा, जैंको विसवास जा ।**
जिसका धन चोरी चला जाता है, वह दूसरों के प्रति अविश्वास करने लगता है ।

२०१६. **धन तो घिरती फिरती छायां है ।**
धन तो छाया की तरह अस्थाई है ।
रू० सुख-दु:ख तो ढळती-फिरती छायाँ है ।

२०१७. **धन धाणियां को, गुवाळ कै हाथ में लकड़ी ।**
ग्वाला जिन पशुओं को चराता है, वे तो दूसरों के हैं, उसकी स्वयं की तो केवल वह लकड़ी है जिससे वह पशुओं को हाँकता है ।

२०१८. **धन धन माता राबड़ी, जाड़ हालै न जावड़ी ।**
अपनी तो 'राबड़ी' ही अच्छी जिसे खाने में न जाड़ चलानी पड़े न जवड़ी ।

२०१९. **धन बिनां किसी मरोड़ ?**
धन के विना कैसी ऐंठ ?

२०२०. **धनवंतै कै कांटो लाग्यो, सार करै सब कोय ।**
निरधनियों डूंगर सें गुड़गो, बात न पूछी कोय ।।
धनवान के पैर में कांटा भी गड़ जाता है तो सब लोग हमदर्दी जताने आते हैं और निर्धन पहाड़ पर से भी गिर पड़े तो उसे कोई नहीं पूछता ।

२०२१. **धनष पड़ै बंगाली, बरसै सांझ सकाळी ।**
यदि पूर्व दिशा में इन्द्र धनुष दिखलाई पड़े तो प्रात: या सायंकाल तक वर्षा हो जाए ।

२०२२. **धरती की धणियाप किसी ?**
धरती पर कैसा स्वामीत्व ?
धरती सदा एक की होकर नहीं रहती ।

२०२३. **धरती परै सरकज्या ये, 'क छैला पाँव धरैगा ।**
अधर छैल के प्रति व्यंग्य ।

२०२४. **धरम की जड़ पताळ में ।**
धर्म की जड़ पाताल में होती है ।
रू० धरम की जड़ सदां हरी ।

२०२५. धरम को धरम, करम को करम ।
जब किसी काम के करने से धर्म और कर्म दोनों सधते हों ।

२०२६ धरमसाळ को बैठणो, सदावरत को चून ।
तीजी विधवा बामणी, आं नै वरजै कूण ?
उपरोक्त तीनों को कौन रोके ?

२०२७. धरोड़ में के बुधवार ।
धरोहर लौटाने में कैसा बुधवार ?
किसी के यहाँ किसी की धरोहर जमा करवाई हुई हो तो उसे लौटाने में वार क्या देखना ? वह जब भी मांगे तभी देनी अपेक्षित है ।

२०२८. धाई भली न फत्ती, दोनू रांड कपत्ती ।
दोनों ही एक जैसी दुष्टा हैं ।

२०२९. धाई भैंस कनै बैठी, भूखी भैंस के करै ?
धाई भैंस तो बैठी जुगाली करती है लेकिन उसके पास भूखी भैंस क्यों बैठी रहे ? उसे तो घूम फिर कर अपना पेट भरना चाहिए ।
रू० धीणोड़ी कै सागै हीणोड़ी मरज्याय ।

२०३०. धानी धन की भूखी कोनी, साकै की भूखी है ।
धानी धन की भूखी नहीं, लेकिन साके की भूखी है ।
स्पर्धा की लालसा बड़ी प्रबल होती है, कोई किसी से घटकर रहना नहीं चाहता ।

संदर्भ कथा—देवरानी के घर में जेठानी की अपेक्षा तंगी थी । जेठ के ऊँट को घी दिया जा रहा था तो वह 'अरड़ा' रहा था । इस पर देवरानी ने अपने पति से कहा कि तुम अपने ऊँट के गले में पानी ही डालो कि जिससे यह 'अरड़ाये' और लोग जानें कि तुम भी अपने ऊँट को घी पिला रहे हो ।
अरड़ाना – बलबलाना, ऊँट की बलबलाहट ।
ऊँट का स्वभाव होता है कि चाहे उसके गले में घी डालें, चाहे गुड़-फिटकरी या और कुछ, वह तो अरड़ाता ही है ।

२०३१. धाय तेरी छा राबड़ी, गंडकां सें तो कढा ।
तेरी छाछ-राबड़ी तो भरपाई, इन कुत्तों से तो पिंड छुड़वादे ।
रू० (१) धाया थारी वांग, म्हारो कचोळो तो दे ।
(२) धाया तेरा दूध-दलिया, धक्के भी क्यूं दे ?

२०३२. धायो उगाळ गेरै ।
सम्पन्न व्यक्ति किसी न किसी काम में पैसा लगाता ही है ।

२०३३. **धायो मीर, भूखो फ़कीर, मर्यां पीछै पीर।**
मुसलमान सम्पन्न हो तो अमीर, भूखा होने पर फकीर और मरने पर पीर।

२०३४. **धायो रांगड़ धन हड़ै, भूखो हड़ै पिराण।**
पेट भरा होने पर रांघड़ दूसरों का धन हरता है और भूखा होने पर प्राण।

२०३५. **धीकै जितरै धिकणदयो।**
जब तक निभे, निभने दो।

संदर्भ कथा – एक ब्राह्मण सर्वथा अनपढ़ था, लेकिन अपने को बड़ा पंडित प्रदर्शित किया करता था। एक दिन उसने नगर सेठ के पास जाकर कहा कि सेठजी, मुझे कोई काम दीजिए। सेठ ने कहा कि आप दुर्गाजी के मंदिर में नित्य पाठ किया कीजिये। सेठ ने उसका मासिक वेतन तय कर दिया और वह पाठ करने हेतु मंदिर में चला गया। लेकिन वह तो कुछ भी जानता न था, इसलिए बार-बार यही पाठ करने लगा, "मैं दुर्गा को नहीं जानता, मैं दुर्गा को नहीं जानता।" कुछ दिन बाद सेठ ने दूसरे पंडित को और भेजा, लेकिन वह भी वैसा ही था। इसलिए वह पाठ करने लगा, "दुर्गा मुझ को नहीं जानती, दुर्गा मुझ को नहीं जानती?" तीसरा पंडित आया तो उसने पाठ प्रारम्भ किया, "ऐसा क्योंकर निभेगा।" अन्त में चौथा पंडित आया और पाठ करने लगा, 'निभे जितना निभने दो।"

२०३६. **धीरां की देवळी, उतावळां का मसाण।**
धीर की देवली स्थापित की जाती है और बिना सोचे-समझे जल्दबाजी करके मर जाने वाले को मरघट में लेजाकर जला दिया जाता है और उसका कोई स्मृति चिन्ह नहीं बनता।
सोच विचार कर धैर्य-पूर्वक काम करना हितकर, जल्दबाजी करना अहितकर।

२०३७. **धीरै धीरै जायसी, सब देवन को साथ।**
रै'सी देवी काठ की, पत्थर को पारसनाथ॥

संदर्भ कथा—किसी मंदिर में बहुतसी मूर्त्तियां थीं जिनमें से देवी की एक मूर्त्ति काठ की, पार्श्वनाथ की पत्थर की और शेष सब धातु की थीं। मंदिर के मालिक ने किसी नये पुजारी को पूजा करने के लिए रखा तो वह धीरे-धीरे धात्विक मूर्त्तियों को पार करने लगा। एक दिन मंदिर के मालिक ने मंदिर में आकर देखा तो उसे मूर्त्तियां थोड़ी लगीं। उसने पुजारी से पूछा तो पुजारी ने उपरोक्त कहावती पद सुनाते हुए कहा कि मंदिर में तो काष्ठ-निर्मित देवी की मूर्त्ति एवं पाषाण निर्मित पार्श्वनाथ की मूर्त्ति, यही दो रहेंगी, बाकी तो धीरे धीरे सभी चली जाएँगी।

उस समय संभवतः काठ और पत्थर की मूर्त्तियों की बाजार में मांग नहीं रही होगी, लेकिन अब तो काठ व पत्थर की कलात्मक मूर्त्तियों की भी चोरी होने लगी है।

२०३८. **धीरै धीरै ठाकरां, धीरै सब कुछ होय।**
माळी सींचै सौ घड़ा, रुत आयां फळ होय।।
धीरे-धीरे, यथा—समय ही सब काम पूरे होते हैं, जल्दबाजी करने से कुछ नहीं होता। माली चाहे किसी वृक्ष में सौ घड़े पानी सींचे, लेकिन फल तो ऋतु के अनुसार ही लगेंगे।

२०३९. **धुर आसाढ दुतिया दिवस, निरमळ चंद उगंत।**
सोमा सुकरां सुरगुरां, जळ थळ एक करंत।
आषाढ कृष्ण द्वितीया को चन्द्रमा निर्मल दिखलाई दे और इस दिन सोम, शुक्र या गुरुवार हो तो वर्षा भरपूर होगी।

२०४०. **धुर बरसाळै लूंकड़ी, ऊंची धुरी खिणन्त।**
भेळी होय जे खेल करै, तो जळधर अति बरसन्त।
यदि वर्षा ऋतु के आरम्भ में लोमड़ियां अपनी 'धुरी' ऊँचाई पर खोदें एवं परस्पर मिल कर क्रीड़ा करें तो जानो कि वर्षा भरपूर होगी।

२०४१. **धेलै की न्यूंतार, मांडै कै बांथ घालै।**
नाममात्र का सहयोग देकर सर्वेसर्वा बनने का प्रयत्न।
न्यूंतार = विवाह आदि के अवसर पर 'न्यौते' के रूप में कुछ धन-राशि देने वाले को न्यूंतार कहते हैं। यह राशि संबंधियों एवं मित्र वर्ग आदि की ओर से दी जाती है।

२०४२. **धेलै बीघै आळी में चालै जिकै नै कोई नीं अणखै।**
अत्यन्त सादगी से चलने वाले को कोई नहीं अनखता।

२०४३. **धोती आळो लेज्या, टोपी आळै को नांव होज्या।**
ले जाए कोई और नाम, किसी दूसरे का हो जाए।
रू० घूंघटिये आळो लेज्या अर चुरगटिये आळो को नांव होज्या।

२०४४. **धोबण सें के तेलण घाट, बींकै मोगरी बींकै लाठ।**
धोबिन से घटकर तेलिन भी नहीं। उसके यहाँ मोगरी है तो उसके यहाँ लाठ।

२०४५. **धोबी की हांते गधा खा।**
धोबी के श्राद्ध पर उसके निमित्त निकाली गई भोज्य सामग्री को गधा ही खाता है।

२०५९. **नकटा देव, सुरड़ा पुजारा ।**
निर्लज्ज देवता, बेशर्म पुजारी ।

२०६०. **नकटी नथ को के करै ?**
नकटी के लिये नथ की क्या उपयोगिता ?
रू० नाक की नकटी अर नथ विना अलूणी ।

२०६१. **नगद नाणां, बीन परणीजे काणां ।**
धन के वल पर गलत काम भी सही हो जाता है ।

२०६२. **नगारखानै में तूती की आवाज को के थाग ?**
नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुने ?

२०६३. **नट विदया आज्या, जट बिदया कोनी आवै ।**
नट की कलाबाजी सीखी जा सकती है, लेकिन जाट की युक्ति नहीं ।

सन्दर्भ कथा—एक बार किसी नट-मण्डली ने राजा के यहाँ तमाशा दिखलाया । दर्शकों में एक जाट भी बैठा हुआ था । उसने राजा के सामने ही नट-मण्डली के सरदार से कहा कि तुम जो कलाबाजियां दिखलाते हो, वे तो अभ्यास से आ सकती हैं, लेकिन जो करतब मैं दिखला सकता हूँ, वह तुम नहीं दिखला सकते । नटों के पूछने पर जाट ने कहा कि जब तुम अगली बार आओगे तब दिखलाऊँगा ।

नट-मण्डली चली गई। इधर वर्षा ऋतु आई तो जाट के खेत में मतीरे की बेलें खूब फैलीं । जाट ने एक बेल के छोटे फल को नाल सहित घड़े में डाल दिया और वह फल घड़े के अन्दर ही बढ़ने लगा । मतीरा खूब बड़ा हो गया तो जाट ने बेल के साथ उसका सम्बन्ध विच्छेद कर दिया । अगली बार जब वह नट-मण्डली फिर उस गाँव में आई तो जाट उस घड़े को राजा के पास ले गया । उसने राजा से कहा कि मैंने इस मतीरे को घड़े के अन्दर डाल दिया है, अब आप इन नटों से कहें कि वे घड़े को बिना फोड़े अपनी हिकमत से इसे बाहर निकाल दें । लेकिन नटों के सरदार ने ऐसा कर पाने में अपनी असमर्थता प्रकट कर दी ।

२०६४. **नटेड़ो बाणियों बुरो ।**
एक बार ना करने के बाद बनियां सहज ही हां नहीं करता ।
रू० नटेड़ो बाणियों, वळ में आवै जद जाणियों ।

२०६५. **नट्यां ई' घी घलै ।**
ना कहने वालों को ही घी डाला जाता है ।
भोजन के समय चावल-खिचड़ी आदि में ऊपर से घी डाला जाता है ।

सम्मानित लोग जो थाली पर हाथ आड़े करके घी के लिए ना करते हैं, उन्हें तो वलात् घी डाला जाता है और मांगने वालों की उपेक्षा कर दी जाती है।
रू० घी तो आडै हाथां ईं घलै।

२०६६. नणद को नणदोई, गळै लाग कर रोई।
ननद का ननदोई, कोई निकट का रिश्तेदार नहीं होता।
झूठ-मूट की आत्मीयता प्रकट करना।
रू० नणद को नणदोई, गळै लाग कर रोई।
पाछी फिर कर देख्यो, तो सगो न सोई।

२०६७. नणद नै जिमाई, जेठूती आंगणै आई।
जेठ की वेटी का घर के आंगन में आना और ननद को जिमाना वरावर है।

२०६८ नथ खोई, नणद नै देई।
नथ खो जाने पर भावज यह मानकर संतोष कर लेती है कि ननद को ही दी सही।
रू० ऊंट गयो, लाली कै लेखै।

२०६९. नदी किनारै रूंखड़ो, जदकद होय विणास
नदी-तट का वृक्ष कभी भी धराशायी हो सकता है।
रू० (१) अफली खेती अलप धन, गैली सें घरवास।
नदी किनारै रूंखड़ो, जदकद होय विणास।।
(२) संपत थोड़ी रिण घणो, वैरी वाड़ै वास।
नदी किनारै रूंखड़ो, जद कद होय विणास।।

२०७०. नया घड़ाया वाजसी, नरड़ का निसाण।
नरहड़ के नक्कारे अव तो नये वनवाने पर ही वजेंगे।
रू० नोपत वावर साह की, लेग्यो सांगो राण।
नया घड़ाया वाजसी, नरवरगढ़ नीसाण।।

२०७१ नया घोड़ा, नया मैदान।
नये घोड़े, नया मैदान।
अव तो सव कुछ नये सिरे से ही होगा।

२०७२. नयो मुल्लो घणों अल्ला-अल्ला पुकारै।
रू० (१) नयो मुल्लो घणी जोर सें वांग देवै।
(२) नई मोडी पातरै में पादै।
(३) नयो वळद खूंटो तोड़ै।
(४) नई जोगण, डूंगां ताईं जटा।

२०७३ नर चींती होवै नई, हर चींती ततकाळ ।

आदमी के मंसूबे धरे रह जाते है, भगवान् जो करना चाहते हैं, वही होता है ।

रू० नर चींती होवै नई, हर चीती ततकाळ ।
मतो कर्‌यो वैकुंठ को, धर दीन्यो पाताळ ।।

२०७४ नर तिरिया भेळा हुयां, होय घणेरो मेह ।

पुरुष ग्रह और स्त्री संज्ञक नक्षत्र परस्पर मिलें तो वर्षा भरपूर हो ।

२०७५ नर नानेरै जाय ।

मनुष्य में मातृकुल के गुण आते है ।

रू० (१) नर नानेरै, घोड़ो दादेरै ।
(२) मा पर पूत, पिता पर घोड़ो ।
घणों नईं तो थोड़ो-थोड़ो ।।

२०७६. नरां में नाई, पखेरुग्रां में काग ।

मनुष्यों में नाई और पक्षियों में कौवा अधिक चालाक होता है ।

रू० नरां में नाई, पखेरुग्रां में काग ।
पाणी मांयलो काछबो, तीनूं दग्गै बाज ।।

२०७७. नस्ट देव की भिस्ट पूजा ।

अनिष्ट करने वाले देवता की भ्रष्ट पूजा ही होती है ।
जब कोई सीधे से नहीं मानता तब दण्ड नीति अपनानी होती है ।

२०७८ नांव को सीतळदास, बतळायो तो भोभरदास ।

नाम तो शीतलदास, लेकिन बतलाया तो निकला भोभरदास ।
भोभर = बहुत गरम राख जिसमें आग की चिनगारियां भी होती हैं ।

२०७९ नांव जिसाई गुण ।

नाम के अनुसार ही गुण ।

संदर्भ कथा—'ठीकरा' नामक गाँव के ठाकुर का नाम भिखारीदास था । वह नाम के अनुरूप ही बड़ी हीन प्रवृत्ति का था । एक दिन उसे एक चारण मिला जो उसकी आदत को जानता था, इसलिये उसने ठाकुर से व्यंग्य में पूछा—

गाँव को नांव कद हाथ लेस्यो ठाकरां ।
नांव को भेष कद धारस्यो ?

अर्थात् अपने गाँव का नाम 'ठीकरा' हाथ में लेकर अपने नाम के अनुरूप (भिखारीदास) भीख मांगना कब शुरू करोगे ?

२०८०. **नांव मोटा, घर में टोटा।**
नाम तो खूब है, लेकिन घर में तंगी है।
रू० नांव मोटा, दरसण खोटा।

२०८१ **नसीब की खोटी, खा प्याज रोटी।**
जब भाग्य अच्छा नहीं तो खाने के लिये प्याज-रोटी ही मिलेगी।

२०८२ **नाई आळो ठोलो, बाणियें आळो टक्को।**
सन्दर्भ कथा—एक नाई ने किसी बनिये की हजामत बनाकर उसके सिर में एक 'ठोला' (ठोंग) जमा दिया। बनिये को बड़ा बुरा लगा, लेकिन उसने युक्ति से काम लेना ही ठीक समझा और बनिये ने बनावटी हर्ष प्रकट करते हुये नाई को एक टका पुरस्कार स्वरूप दे दिया। अब तो नाई को इसका चसका लग गया। अगली बार उसने एक ठाकुर की हजामत बनाई और हजामत बना चुकने के बाद उसके सिर में भी एक ठोंग लगा दिया। इस पर ठाकुर को गुस्सा आया और उसने अपनी तलवार से नाई का सिर उड़ा दिया।

२०८३. नाई कीं का कारज सारै ?
नाई किसका काम सुधारे ?

२०८४. **नाई की परख नुंआं में।**
नाई की होशियारी की परीक्षा नख काटने में होती है।

२०८५. **नाई-नाई, सिर पर बाळ कित्ता 'क ?**
'क जजमान अभी आगै आज्या है।
हजामत बनवाने वाले ने जब नाई से पूछा कि मेरे सिर पर कितने बाल हैं तो नाई ने उत्तर दिया कि अभी तुम्हारे सामने आ जाते हैं।

२०८६. **नाई दाई बैद कसाई, आं को सूतक कदे न जाई।**
नाई, दाई, वैद्य और कसाई का अशौच कभी नहीं जाता।

२०८७. **नागां का लाल तुर्रा।**
बदमाशों के लाल तुर्रे।
तुर्रा = कलगी; पर या फुंदना जो पगड़ी आदि में लगाया जाता है।
रू० नागां कै नौबत बाजै, दो घड़ाका अबथा लागै।

२०८८. **नागा-लुच्चा सैं सें ऊंचा।**
बदमाश और लुच्चे सब से ऊंचे।
रू० (१) नागी बूची सैं सें ऊंची।
(२) नागो तो राम सें ई बुरो। राम तो करतो सो करै अर नागो झट बुरो-बिगाड़ कर दे।

२०८६. नागी भली 'क छींकै पांव ?

नंगी अच्छी या छीके पर पाँव रख कर जाना अच्छा ?

सन्दर्भ कथा—एक स्त्री का पति दिसावर गया हुआ था, अतः अपने जेठ के साथ उसका अनुचित सम्बन्ध हो गया। उसने अपने सोने के स्थान पर एक छींका टांग रखा था। उसकी ननद उसके पास ही खटिया डालकर सोया करती, लेकिन भौजाई आधी रात को चुप-चाप छीके पर पाँव रखकर जेठ के पास चली जाती। ननद को इस बात का पता लग गया, लेकिन उसने इस रहस्य को प्रकट नहीं किया।

एक दिन घर में भौजाई अपने कपड़े उतार कर नहा रही थी कि सहसा उसका जेठ घर में आ गया। अब तो उसने एक तूफान खड़ा कर दिया कि जेठ ने मुझे नहाते समय नग्न अवस्था में देख ली। मेरा पातिव्रत-धर्म नष्ट हो गया, अतः अब अनशन करके प्राण त्याग दूंगी। सब लोगों ने उसे बहुत समझाया-बुझाया, लेकिन वह टस से मस नहीं हुई। तब उसकी ननद ने उसे एकान्त में लेजाकर एक बात कही जिसे सुनते ही भौजाई ने ननद के पाँव पकड़ कर रोटी खाली। वह बात यों है—

तेरो जेठ अर मेरो बीर, जिणनै देखत ढक्यो सरीर।
बारह मास मोहि देखत भया, मैं मुख सेती कुछ ना कह्या।
अब लाग्यो कहणै को डाव, नागी भली'क छींकै पाँव ?

२०९०. नागी रांड के धोवै अर के निचोवै ?

नंगी क्या धोये और क्या निचोये ?

रू० (१) नागी को लाय में के दाजै ?
(२) नागी नाचै फाटै के ?

२०९१. नागो जाणै मेरै सें डरयो, लाजां मरतो घर में बड़्यो।

भला आदमी झगड़ा-टंटा नहीं करना चाहता और संकोच-वश अपने घर में चला जाता है तो बदमाश यही समझता है कि वह मेरे से डर गया।

२०९२. नाचण आळी नै बिछिया चाये।

नाचने वाली को बिछिये चाहिएँ।

किसी भी काम के लिए उपयुक्त सामग्री अपेक्षित होती है।

२०९३. नाचण लागगी जद क्यांको घूंघटो ?

जब नाचने ही लगी तब लज्जा कैसी ?

रू० तूं हीं कंत उतारयो चित्त, मैं ही और करूंगी मित्त।
तू मुझ सेती कीधो ऐसो, नाचण लागी घूंघट कैसो ?

२०९४. नाच न जाणै, आंगणों बांको।

नाचना तो जाने नहीं और आंगन को टेढा बतलाये।

२०९५. **नाज का नाज में, ब्याज का ब्याज में, राज का राज में, वाज का वाज में।**
अनाज की कमाई अनाज में, ब्याज की ब्याज में, राज की राज में और आवाज की आवाज में लग जाती है।
वाज से तात्पर्य उस आवाज से है जो सट्टेबाज सट्टा करते समय लगाते हैं।

२०९६. **नाज को कोठलियो हो, गुड़ग्यो तो गुड़ग्यो।**
अनाज का कुठला ही तो था, ढह गया तो ढह गया।
सन्दर्भ कथा—एक औरत का पति मर गया तो वह जोर-जोर से रोने लगी। उसके पड़ौस में ही एक नशेबाज रहता था, वह भी सहानुभूति जतलाने के लिए उसके घर आया। नशेबाज के पूछने पर औरत ने बतलाया कि वह न तो शराब पीता था, न भांग पीता था और न चरस, गांजा या तम्बाकू का ही सेवन करता था। इस पर नशेबाज बड़ी उपेक्षा और लापरवाही से बोला—तब ऐसे आदमी को क्या रोती हो? वह तो अनाज का कुठला मात्र था सो ढह गया।

२०९७. **नाजर गूजर मेर कुता, सोयां पीछै सात मता।**
इन चारों का विचार बड़ी जल्दी पलट जाता है।

२०९८. **नाजरजी ! बेल बधज्यो, 'क बस म्हारै ताईं।**
किसी ने नाजिरजी को आशीर्वाद दिया कि आप की वंशवृद्धि हो। इस पर नाजिरजी बोले कि बस! हमारे तक जो होनी थी, हो गई, आगे और वंश-वृद्धि नहीं होगी।
नाजर = नाजिर, पुरुष वेश में रहने वाला खोजा या हिजड़ा।
रिपोर्ट मर्दुमशुमारी राज मारवाड़ के अनुसार नाजिर और हिजड़े में यह अन्तर है कि नाजिर के दाढी मोंछ नहीं होती जब कि हिजड़े के होती है। हिजड़े जनाने वेश में रहते हैं और गाते बजाते हैं। इसलिए उन्हें अपनी दाढी मोंछें जल्दी-जल्दी मुँडवानी पड़ती हैं और इसीलिए यह कहावत भी प्रसिद्ध है कि हिजड़े की कमाई मोंछ मुड़वाई में चली जाती है। नाजिर पुरुष वेश में रहते हैं और गाने-बजाने का पेशा नहीं करते। राजस्थान के भू० पू० देशी राज्यों में कई नाजिर बड़े नामिक एवं राज-काज में दक्ष हो गये हैं।

२०९९. **नाजो नाज बिना रहज्या, काजळ-टीकी बिना कोनी रैवै।**
नाज-नखरे वाली औरत अन्न के बिना भले ही रह जाए, शृंगार-पिटार बिना नहीं रहती।

२१००. **नातरायत की तीजी पीढ़ी गढ चढै।**
नातरायत राजपूत विधवा का नाता कर देते थे, इसलिए उनके विवाह संबंध असली माने जाने वाले राजपूतों में नहीं होते थे। लेकिन तीसरी पीढ़ी में जाते-जाते इनकी लड़कियां बड़े ठाकुरों में ब्याही जाने लगती थीं।

२१०१. **नाथी एक, निजारैं आळा बोळा ।**
नाथी तो एक और उसके ग्राहक अनेक ।

२१०२. **नादीदी का नौ फेरा ।**
नदीदी रे नौ फेरे ।

२१०३ **नादीदी को खसम आयो, भर दोपारी दियो ज़गायो ।**
नदीदी का पति बहुत समय बाद घर आया तो उसने भरी दोपहरी में भी दीपक जलाया ।

रू० (१) नादीदी को खसम आयो, दिन में ई दिवलो जोयो ।
(२) नादीदी कै होई कटोरी, पाणी पी-पी होई पदोरी ।
(३) नादीदी कै लोटो होयो, रात्यूं उठ-उठ पाणी पीयो ।

२१०४ **नानी ई नानीं, पण है तो पूणी तेरा वरस की ई ।**
पद में बड़ी होने पर भी कम उम्र के कारण परिपक्वता का अभाव ।

२१०५. **नानी कूवै में पड़्योड़ी है ।**
नानी कुएँ में गिरी हुई है ।
आजकल तो विवाह सम्बन्ध करने के समय दहेज को ही सर्वाधिक प्रमुखता दी जाती है, लेकिन पहले घर-घराना भी विशेष रूप से देखा जाता था । यदि परिवार पर कोई लांछन होता तो विवाह-सम्बन्ध करते समय अड़चन पैदा हो जाती थी ।

संदर्भ कथा—एक सेठ के चार बेटे थे । तीन के विवाह हो चुके थे । चौथे की सगाई आई तो सेठ को ज्ञात हुआ कि लड़की वाले बहुत सम्पन्न हैं. लेकिन लड़की की नानी कुए में गिर कर मर गई थी । इस पर सेठ ने तो अनिच्छा जाहिर की, लेकिन लड़के की माँ के जोर देने पर सम्बन्ध कर लिया ।

एक बार सेठ ने घर आकर कहा कि कारोबार में बहुत घाटा लग गया है और रकम हाथों हाथ चुकानी है, इसलिए सब स्त्रियां अपना-अपना गहना लादें । साख बनी रहेगी तो गहने फिर बन जाएंगे । इस पर सेठानी व तीन बहुओं ने तो अपने गहने लादिये लेकिन चौथी सर्वथा नट गई । उसे अधिक कहा-सुना गया तो वह बोली कि मैं जीतेजी गहना नहीं दूंगी, यदि तुम मुझे अधिक तंग करोगे तो मैं कुए में गिर कर आत्महत्या कर लूंगी ।

२१०६. **नानी खसम करै, दोयती डंड भरै ।**
नानी का दण्ड दोहिती पर ।
अपराध कोई करे और दण्ड किसी को मिले ।

२१०७. नानी रांड कुंआरी मरगी, दोयती का नौ-नौ फेरा।
नानी तो कुंआरी ही मर गई और दोहिती के नौ-नौ फेरे।
जब कोई गरीब आदमी मालदार बन जाने पर अधिक आडम्बर करे।

२१०८. नापै सौ गज, फाड़ै कोनी एक गज।
देने-दिलाने की शेखी तो बहुत बघारे, लेकिन दे-दिलाये कुछ नहीं।
रू० नापै घणों, फाड़ै थोड़ो।

२१०९. नामरदी तो खुदा ई देदी, मार-मार तो कर।
नामर्दी तो खुदा के घर से मिली है, लेकिन मार-मार तो कर।

२११०. नामी चोर मारचो जा, नामी 'सा कुमा खा।
नामी चोर मारा जाए, नामी शाह कमा खाये।

२१११. नायां की जनेत में सै ई ठाकर।
नाइयों की बारात में सभी ठाकुर।

२११२. ना'र की खाल ओढ्यां गधेड़ो सिंघ कोनी बणै।
शेर की खाल ओढ लेने से गधा कभी शेर नहीं बन सकता।

संदर्भ कथा—एक गधे को जंगल में किसी मृत शेर की खाल पड़ी मिल गई तो वह उसे ओढकर जगल का राजा बन बैठा। लेकिन गीदड़ ने एक दिन उसे घास चरते देख लिया और फिर उसके पद चिन्ह देखने पर तो उसे निश्चय हो गया कि यह तो गधा ही है। उसने अन्य जानवरों से भी यह बात कही, लेकिन 'जंगल के राजा' का सामना करने की हिम्मत किसी में नहीं हुई। तब गीदड़ एक गधी को 'जंगल के राजा' के दरबार में लाया। जेठ का महीना था, गधी के खुर जैसे ही गरम हुए वह रेंकने लगी। अब 'जंगल का राजा' भी अपने को न रोक सका। वह भी जोरों से रेंकने लगा। गीदड़ ने शेर वाली खाल खींचली तो जंगल के राजा का असली रूप सामने आ गया और सब जानवरों ने मिलकर उसे मार डाला।

२११३. ना'रां का 'मूं कुण धोया है?
शेरों के मुंह किसने धोये हैं?

२११४. नारी स्यारी कींगरी, अर चौथा जूवा।
भाग्या सोई ऊबरचा, बैठ्या सो मूवा॥
इन चारों से जो दूर रहा, वह तो बचा और जो इनमें रम गया, वह बर्बाद हो गया।
स्यारी = स्यार; चौपड़ की गोटी।
कींगरी = किंगिरी = छोटा चिकारा या सारंगी।

२११५. **निकळ गई गणगौर, 'क मोल्यो मोड़ै आयो ।**

गनगौर तो निकल गई और पति अब घर आया है ।

गनगौर, तीज आदि पर्वो पर पति घर रहे, यह पत्नी की आकांक्षा होती है । लोक गीतों में भी पत्नी की यह आकांक्षा मुखर है ।

मोल्यो = पति के लिए लघुता और तिरस्कार व्यंजक संबोधन ।

रू० मोड़ी चेती, संग दूर गयो ।

२११६ **निखट्टू गयो हाट, को ताखड़ी न बाट ।**

निकम्मा आदमी दुकान पर गया भी तो क्या करे ? तौलने के लिये उसके पास न तकड़ी (तराजू) है, न बटखरे ।

२११७. **निनाणमें की बाकी लाग्यां फेर सोक्युं भूलज्या ।**

निन्यानवे के फेर में पड़ने पर मनुष्य सब कुछ भूल जाता है ।

संदर्भ कथा—एक सेठ के पास बहुत धन था, लेकिन फिर भी वह शरीर से कृश रहता था । एक दिन सेठानी ने अपने घर के पास रहने वाले जुलाहे की ओर संकेत करते हुए अपने पति से कहा कि यह गरीब जुलाहा इतना हृष्ट-पुष्ट रहता है, जबकि आप इतने मालदार होकर भी इतने कृश रहते हैं । सेठ ने हँस कर उत्तर दिया कि यह निन्यानवे के फेर में नहीं पड़ा है । सेठानी ने जब पूछा कि यह क्या होता है तो सेठ ने एक पोटली में ९९ रुपये बांध कर जुलाहे के घर में डाल दिये । शाम को जुलाहा घर आया और उसे ९९ रुपये मिले तो उसने सोचा कि इन्हें पूरे सौ कर दूं । यों सोच कर उसने अपनी उस दिन की कमाई का एक रुपया उसमें मिला दिया । इससे उस दिन उसके घर में खाना नहीं बना । जुलाहे को अब धन संग्रह करने की चिन्ता लग गई । वह घुलने लगा और जल्दी ही सेठ से भी अधिक कृश हो गया ।

२११८. **नींद कै बिछावरण नईं, भूख कै लगावरण नईं ।**

जब आंखों में नींद जोरों से घुल रही हो तो बिछौने की परवाह नहीं की जाती और जब भूख जोरों से सता रही हो तब बढ़िया शाक-सब्जी आदि की ।

रू० नींद न देखै टूटी खाट, भूख न देखै जूठा भात, प्यास न जाणै धोबी घाट ।

२११९. **नींद बेचकर ओजको मोल कुण लेवै ?**

नींद को बेचकर उनींदापन कौन खरीदे ?

ओजको = चौंक कर जाग पड़ना । उनींदापन ।

२१२०. नींवोळी सूकै नीम पर, पड़ै न नीचै श्राय ।
अन्न न निपजै एक कण, काळ पड़ैगो श्राय ॥

यदि नींवोलियां पक कर नीम पर ही सूक जाएँ, नीचे न गिरें तो जानो कि अकाल पड़ेगा ।

२१२१. नीचा-नीचा काकलासर तो आ ढुक्या ।

नीचे से नीचे काकलासर तो आ ढुके ।

सन्दर्भ कथा—काकलासर एक छोटा सा गाँव है जो चूरू जिले में है । एक बार बीकानेर के महाराजा काकलासर व्याहने के लिये आये । दूल्हे के वेश में महाराजा ऊँचे हाथी पर सवार थे और घर का द्वार बहुत नीचा था । इसलिये तोरण मारने के लिए महाराजा झुके, लेकिन फिर भी तोरण दूर रह गया । इस पर किसी ने महाराजा से कहा कि अन्नदाता, कुछ और नीचे । वहीं एक चारण खड़ा था । वह व्यंग्य पूर्वक बोल पड़ा कि बीकानेर के महाराजा काकलासर तो आ ढुके, अब इससे नीचे और क्या आयेंगे ।

२१२२. नीचो करचो कांधो, देखण आळो आंधो ।

शर्म से कंधा (गर्दन) झुका लेने के बाद भी कोई देखे तो देखने वाला ही अन्धा है ।

२१ ३. नीत गैल बरकत होवै ।

नीयत के अनुसार ही बरकत होती है ।

संदर्भ कथा—(१) एक राजा शिकार खेलता हुआ जंगल में भटक गया । संगी-साथी सब पीछे छूट गये । प्यास के मारे उसका दम घुटने लगा । कुछ दूरी पर उसे एक झोंपड़ी दिखलाई दी तो राजा वहाँ गया । वहाँ एक बुढ़िया थी । उसने अपने खेत में से एक गन्ना तोड़ा और गन्ने के रस से कटोरा भर कर राजा को दिया । राजा को वह अमृत जैसा स्वादिष्ट लगा । वह तृप्त हो गया । लेकिन राजधानी में पहुँच कर उसने गन्ने की खेती पर भारी कर लगा दिया ।

संयोग से दूसरी बार भी राजा भटक कर उसी बुढिया के पास पहुँचा । बुढिया ने पांच-सात गन्नों का रस निकाला तो कटोरा भरा । लेकिन राजा को वह पहले जैसा स्वादिष्ट नहीं लगा । उसने बुढिया से पूछा कि पिछली बार तो एक ही गन्ने के रस से प्याला भर गया था एवं वह स्वादिष्ट भी बहुत था । लेकिन इस बार गन्नों में न तो उतना रस है और न मिठास, इसका क्या कारण है ? बुढिया ने उत्तर दिया कि यहाँ के राजा की नीयत खराब हो गई है जिससे गन्ने के रस में भी अन्तर आ गया है । राजा का सिर लज्जा से झुक गया ।

(२) एक किसान के दो बेटे थे, लेकिन दोनों ही अकर्मण्य। किसान के मरने के बाद उनके घर में बहुत तंगी आ गई। तब लड़कों की माँ ने अपने बेटों से कहा कि अमुक सेठ तुम्हारे बाप का दोस्त है, तुम उसके पास जाकर कुछ रुपये उधार ले आओ और खेती करो। दोनों लड़के गये और उनका परिचय पाकर सेठ ने उन्हें सौ रुपये दिलवा दिये। दोनों को बड़ी आसानी से रुपये मिल गये थे, अतः उन्होंने सोचा कि अब तो कई दिन गुलछर्रे उड़ाएँगे। रास्ते में आते समय वे एक तालाब पर ठहरे और तालाब में नहाने घुसे तो एक चील रुपयों की 'न्योळी' को उठा ले गई। दोनों भाई फिर सेठ के पास गये तो सेठ ने उन्हें फिर सौ रुपये दिलादिये। इस बार वे नहाने के लिए तालाब में घुसे तो एक भैंस रुपयों की पोटली पर गोबर कर गई। लड़कों को थैली नहीं मिली तो वे दोनों फिर सेठ के पास गये और सेठ ने तीसरी बार भी उन्हें रुपये दे दिये।

सेठ के व्यवहार का उन पर बड़ा असर हुआ और उन्होंने गुलछर्रे उड़ाने की बजाय मेहनत से खेती करने का निश्चय कर लिया। इस बार उन्होंने एक सेर बाजरे का आटा मोल लिया और उसी तालाब पर पहुँच कर रोटी बनाने की सोचने लगे। एक भाई ने आग जलाने की इच्छा से भैंस वाले गोबर को उठाया तो उसे रुपयों की पोटली मिल गई। दूसरा भाई लकड़ियों की तलाश में एक खेजड़ी के पास पहुँचा तो उसे वृक्ष की डाल से एक रस्सी लटकती दिखलाई दी। वह रुपयों वाली 'न्योळी' की रस्सी थी और उसके खींचते ही 'न्योळी' नीचे आ गिरी। अब उनकी समझ में यह बात आ गई कि पहले हमारी नीयत खराब थी, इसलिए रुपये चले गये और अब हमारी नीयत साफ है तो गये हुए रुपये भी वापस मिल गये।

२१२४. **नूंतो नूंतै को, नूंतो जूतै को।**
नूंतो आयै जायै को, नूंतो गीत गायै को।

न्योता या तो न्योते के बदले में दिया जाता है अथवा धौंस पट्टी से। न्योता उसको मिलता है जिसका आना-जाना हो या जो उसके यहाँ काम धंधा करता हो।

रू० नूंतो आवरण-जावरण को, नूंतो टावर खिलावरण को।

२१२५. **नूंत्या पंदरा, आया बीस, घर का रळ कर होग्या तीस।**

न्योता तो पंद्रह व्यक्तियों को दिया था, लेकिन बीस आ गये और घर वालों को मिला कर तो तीस हो गये।

अनुमान से दुगने जीमने वाले हो गये।

२१२६. **नूं त्यो बामरण वैर गावै ।**

यदि किसी ब्राह्मण को भोजन का निमंत्रण तो दे दिया जाय, लेकिन किसी विशेष कारणवश उसे भोजन न कराया जा सके, तो वह दूसरों के आगे निंदा करता है। जब अशौच (स्यावड़, सूतक) आदि के कारण ब्राह्मण भोजन नहीं करता तो उसे भोजन-सामग्री या नकद राशि देकर संतुष्ट किया जाता है।

२१२७. **नेकी कर अर कूवै में गेर ।**

किसी का उपकार करके उसे भूल जाना चाहिए।

२१२८ **नेकी जावै नौ कोस, बदी जावै सौ कोस ।**

कीर्ति की अपेक्षा अपकीर्ति अधिक फैलती है।

२१२९. **नेम निमाणा, धरम ठिकाणा ।**

२१३०. **नैकारै खेती नीपजै ।**

नकारते रहने से खेती अधिक फलती है।

२१३१ **नैचो धारयां भगवान मिलै ।**

दृढ निश्चय से ही भगवान् मिलते हैं।

२१३२. **नोकरी की जड़ झाड़लै में ।**

मालिक जब चाहे तभी नौकर को हटा सकता है।

रू० (१) नोकरी की जड़ धरती सें सवा हाथ ऊंची।
(२) नोकरी घणी आकरी।
(३) नोकरी न कीजिये, घास खोद खाइये।
और खोदै आस-पास, आप दूर जाइये ॥

२१३३. **नो गोदी नो आंगळी, नो नानेरै जाय ।**
हुकम होवै तो और जणां, काळ पड़यां के खाय ।

बहुत अधिक संतान वाली स्त्री के प्रति व्यंग्य।

२१३४. **नो नगद न तेरा उधार ।**

तेरह रुपये में उधार बेचने की अपेक्षा नौ रुपये में नकद बेचना अच्छा।

२१३५. **नो नाथां में नाथ कुहाऊं षट दरसण में आगो ।**
औरां कै गळ सेळी सींगो मेरै गळ में पागो ॥

बिना माने-ताने ही हर काम में जबरन आगे रहने वाला व्यक्ति।

२१३६. **नो पेठा तेरा लगवाळ, गधी नै लेग्यो कोटवाळ ।**

संदर्भ कथा—किसी राजा के यहां तरह-तरह के अनेक कर लगते थे। एक बार एक कुम्हार अपनी गधी पर लाद कर वहां पेठे (एक प्रकार का कुम्हड़ा) बेचने के लिए लाया। पेठे केवल नौ थे और लाग वसूल करने वाले तेरह। जब नौ आदमियों ने पेठे ले लिए तो कोतवाल उसकी गधी को ही ले भागा।

२१३७. **नो में ल्यायो नारो, च्यार को चरायो चारो अर गायक आवै जिको पांच धामै ।**
नौ रुपये में बैल खरीदा, चार रुपये का उसे चारा खिला दिया और जो भी ग्राहक आता है, वह कुल पांच रुपये धामता है ।
घाटे का सौदा ।

२१३८. **न्याऊ ई न्याऊ, पण तेरो तो खसम हूँ ।**
पति अपनी पत्नी से कहता है कि मैं चाहे कितना ही गया-गुजरा हूँ, लेकिन तेरा तो खसम हूँ ।
रू० चोदू ई चोदू, पण तेरो तो खसम ई हूँ ।

२१३९. **न्याऊ दिन आवै जद एक कानी सें कोनी आवै ।**
बुरा दिन आता है तो एक तरफ से नहीं, चारों तरफ से आता है ।

२१४० **न्याऊ बात तो साची होज्या, पण चोखी बात साची कोनी होवै ।**
किसी की कही हुई बुरी बात तो सत्य हो जाती है, लेकिन अच्छी बात सत्य नहीं होती ।

सन्दर्भ कथा—एक आदमी निहायत गरीब था । उसने सुन रखा था कि आदमी के मुँह से दिन भर में निकली हुई बातों में से एक बात अवश्य सत्य हो जाती है । उसके पास पीतल की एक टोकनी थी । एक दिन सवेरे ही उसने वह टोकनी अपने सामने रखली और बार-बार कहने लगा, 'बनजा सोने की, बनजा सोने की' । लेकिन टोकनी सोने की नहीं बनी । ऐसा करते-करते शाम होने लगी तो उसने झल्ला कर कहा कि सोने की नहीं तो लोहे की ही बनजा, और उसके इतना कहते ही टोकनी लोहे की बन गई ।

२१४१. **न्यारै घरां का न्यारा बारणां ।**
अलग घर का अलग दरवाजा ।

२१४२. **न्याव को अर भाव को कोई नै बेरो कोनी पड़ै ।**
किसी को यह सुनिश्चित पता नही होता कि न्यायाधीश क्या निर्णय देगा और अगले दिन किसी वस्तु का क्या भाव रहेगा ।

२१४३. **न्हाणो धोणो तो बामण को धरम है ।**
नहाना-धोना तो ब्राह्मण का धर्म (कर्तव्य) ही है ।

सन्दर्भ कथा—एक ब्राह्मण का एक सेठ के यहाँ आना जाना था । एक दिन सेठ ने पंडितजी से पूछा कि क्यों पडितजी स्नान तो कर आये होंगे ? लेकिन जाड़े के कारण पंडितजी ने स्नान नही किया था, इसलिए कुछ बोले नहीं । किन्तु उनके मन में यह पछतावा जरूर रहा कि यदि आज नहा कर आया होता तो सेठजी अवश्य ही कुछ देते । यद्यपि पंडितजी जाड़े में स्नान

करने से बहुत कतराते थे, फिर भी सेठ से कुछ प्राप्त होने की आशा में वे अगले दिन बड़े तड़के उठे, स्नान किया, तिलक-छापे लगाये और सेठ की हवेली की ओर चल पड़े। सेठ ने उन्हें देख कर कहा कि पंडितजी, आज तो नहा-धो कर आये लगते हैं। पंडितजी तपाक से बोले—हाँ सेठ सा'ब नहा-धोकर आया हूँ। इस पर सेठ ने लापरवाही से कहा कि पंडितजी अच्छा किया, नहाना धोना तो ब्राह्मण का धर्म ही है। सेठ का उत्तर सुन कर पंडितजी का उत्साह ठंडा पड़ गया।

२१४४. **न्हाया जित्तो ई पुन्न।**

जितना नहा सके, उतना ही पुण्य।

जितना दान-पुण्य कर पाये, अथवा किसी का भला कर पाये, उतना ही अच्छा।

२१४५. **पंच कोसी प्यादो रवै, दस कोसी असवार।**
कै तो नार कुभारजा, कै रांडोलो भरतार॥

यदि पैदल घर आने वाला व्यक्ति संध्या हो जाने के कारण अपने घर से पांच कोस की दूरी पर रुक जाए और सवार दस कोस की दूरी पर रुक जाए तो यही समझना चाहिए कि या तो पत्नी कुभार्या है अथवा पति पुंसत्व-हीन है।

२१४६. **पंचां को कैं'णो सिर माथै, पण नाळो अठै ई पड़सी।**

पंचों का निर्णय सिर-आंखों पर, लेकिन मेरे घर का नाला तो यहीं गिरेगा।
पंचों का निर्णय मौखिक रूप से तो स्वीकार, लेकिन कार्य रूप देने से इन्कार।

२१४७. **पंचां में परमेसर बोलै।**

पंचों के मुँह भगवान् बोलते हैं।

पंच पंचायती का अस्तित्व भारतीय समाज में प्राचीन काल से रहा है। साहित्य के अतिरिक्त शिलालेखों से भी इसकी पुष्टि होती है। चन्द्रगुप्त द्वितीय के सांची प्रस्तर अभिलेख (सन् ४१२–१३ ई०) में 'पञ्चमण्डल्या' का स्पष्ट उल्लेख हुआ है जो आधुनिक पंचार्हत या पंचायत का ही द्योतक है। मानस में तुलसीदासजी ने भी पंचों को पूरा महत्त्व दिया है (जो पांचहि मत लागै नीका, करहु हरपि हियँ रामहि टीका।)। पुरालेखों में भी पंच-पंचायती, का उल्लेख (पंच पंचायती, राज दरबार झूठो पड़ै) पर्याप्त मिलता है। लेकिन कालान्तर में पंच-पंचायती की स्थिति शोचनीय बनती गई जिसके फलस्वरूप ऐसी कहावतों का भी निर्माण हुआ—

पांच पंच छठो पटवारी, खुल्ला केस चुरावै नारी।
फिरतो घिरतो दातण करै, जां कै पाप सें कीड़ा मरै॥

२१४८. पंडत को पढायो पाधो, पाधै को पढायो आधो ।
अर आधै को पढायो, कीं न काईं ।

पंडित का पढाया हुआ पाधा, पाधे का पढाया हुआ आधा और आधे का पढाया हुआ कुछ भी नहीं।

जिसका स्वयं का ज्ञान अधूरा है, वह दूसरों को क्या पढाये ?

२१४६. पंडत तो माघ ।

पंडित तो माघ ही है ।

माघ अपनी एक मात्र ज्ञात कृति 'शिशुपालवधम्' (महाकाव्य) के बल पर अमर हैं। ये श्रीमाल या भीनमाल (राजस्थान) के रहने वाले थे ।

२१५०. पंसेरी में पांच सेर की भूल ।

पांच सेर में पांच सेर की भूल ।

२१५१. पक्कै घड़ै कै कारी कोनी लागै ।

पक्के घड़े को कारी नहीं लग सकती ।

कारी = जोड़ या पैवन्द ।

संदर्भ कथा—एक किसान की औरत बड़ी कर्कशा थी । उसकी देखा-देखी उसकी बेटी भी वैसी ही बन गई थी । लेकिन लड़की का पति उसे ब्याह कर अपने घर ले गया तो उसने शुरू में ही उस पर ऐसा आतक जमा दिया कि वह एक दम सीधी हो गई । एक बार उसका बाप उससे मिलने आया तो बेटी के बदले हुए स्वभाव को देख कर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ । अपने घर जाकर उसने भी अपने दामाद वाली नीति अपनाने की चेष्टा की तो उसकी औरत ने कहा कि लड़की तो कच्चे घड़े के समान थी और इसलिए वह डर गई, लेकिन मैं तो पके घड़े की तरह पक चुकी हूं, अतः अब तुम्हारा रोब मेरे ऊपर नहीं जमेगा ।

२१५२. पगड़ी गई भैंस कै पेट ।

पगड़ी भैंस के पेट में चली गई ।

जब एक आदमी घूस देकर अपना काम बनाना चाहे, लेकिन प्रतिपक्षी उससे बड़ी घूस दे दे तो पहले वाले की घूस उसके नीचे दब जाती है ।

संदर्भ कथा—एक महाजन का किसी गूजर पर कुछ ऋण था । जब गूजर ने रुपये नहीं दिये तो महाजन ने हाकिम के पास फरियाद की और उसे अपने पक्ष में करने के लिए उसे एक पगड़ी बंधवादी । इस पर गूजर ने एक भैंस हाकिम के घर भिजवादी । अब गूजर का पक्ष प्रबल हो गया । जब पेशी हुई तो हाकिम ने महाजन से कहा कि तुम गूजर को तंग मत करो, उसके पास जब रुपये होंगे, तभी मिलेंगे । इस पर जब महाजन ने अपनी पगड़ी को हाथ लगाते हुए हाकिम से कहा कि मेरी पगड़ी की लाज रखिये तो हाकिम बोला —पगड़ी तो भैंस के पेट में चली गई ।

२१५३. **पग तीखो मुख चरपरो, निपट निलज्जो होय ।**
नाक काट गुद्दी धरै, करै दलाली सोय ।।
जो चलने-फिरने में तेज हो, वाचाल हो और शर्म-संकोच न करे, वही दलाली कर सकता है ।

२१५४. **पग पूजै, सिर कूटै ।**
पद में बड़ा होने के कारण तो पूजनीय, लेकिन नीच कर्मों के कारण पीटे जाने योग्य ।

२१५५. **पग बळै तो जूती पैरजे, धरती पर जाजम कोनी बिछै ।**
यदि घाम से तप्त धरती पर चलने से पैर जलते हों तो जूते पहनलो; ऐसा नहीं हो सकता कि तुम्हारे लिए सारी धरती पर जाजिम बिछाई जाए ।
जाजम = जाजिम; वेल-बूटे छपी हुई एक मोटी चद्दर ।

२१५६. **पग में सें कांटो काढै तो ई पीड़ होवै, कपूत होयां भी बेटै नै घर सें कैयां काढ्यो जावै ?**
यदि पैर में से कांटे को भी निकालते हैं तो पीड़ा की अनुभूति होती है, फिर कपूत होने पर भी बेटे को घर से कैसे निकाला जा सकता है ?

२१५७. **पगला देख कर ठिरग्या, मुखड़ो देख कर बळग्या ।**
नव वधू के पैर देख कर तो मन को शीतलता प्राप्त हुई, लेकिन जब घूंघट उठाकर मुंह की ओर देखा तो मन जल-भुन गया ।

२१५८. **पगां सें गांठ दियोड़ी, हाथां से कोनी खुलै ।**
ऐसा होशियार व्यक्ति जो अपने पैरों से गांठ लगादे तो दूसरे उसे हाथों से भी न खोल पायें । बात की बात में ऐसी उलझन पैदा करदे, जिसे सुलझाना दूभर हो जाए ।

२१५९. **पटै लिखाई मोठ बाजरी मांगै चावळ-दाळ ।**
राघो-चेतन यूं कवै, चिट्ठी तो समाळ ।।
भाग्य में जब मोठ-बाजरा खाना ही बदा है, तब चावल-दाल की आकांक्षा करना निरर्थक है ।

२१६० **पड़ग्या खल्ला उड़गी खेह, फूल फड़क सी हो'गी देह ।**
जूते पड़ने से खेह उड़ गई और देह फूल की तरह हलकी-फुलकी हो गई ।
निर्लज्ज आदमी अपनी बेइज्जती होने पर अधिक इठलाता है ।

२१६१. **पड़ पड़ कर ई असवार होवै ।**
ठोकर खाकर ही मनुष्य होशियार बनता है ।

२१६२. **पड़वा दूज वैसाख की, होय उजाळै पाख।**
बादळ थिर रह जाय तो, आछी निपजै साख।।

वैसाख शु० प्रतिपदा और द्वितीया को आकाश में बादल स्थिर रह जाएँ तो जमाना अच्छा हो।

२१६३ **पड़वा पाठ भुळावणी, छोरां नैं खिलावणी।**

प्रतिपदा के दिन पढने से विद्या क्षीण हो जाती है अथवा पाठ विस्मृत हो जाता है। इसलिए कुछ वर्षो पूर्व तक गुरुओं की पाठशालाओं में प्रतिपदा को छुट्टी रहती थी।

यह मान्यता रामायण काल में भी थी। सीताजी का पता लगा कर हनुमानजी जब लंका से लौटे तो समुद्र के किनारे पर प्रतीक्षा करते हुए वानरों से उन्होंने सीता के विषय में जानकारी देते हुए कहा कि जिस प्रकार प्रतिपदा के दिन स्वाध्याय करने वाले विद्यार्थी की विद्या क्षीण हो जाती है, उसी प्रकार सीता का शरीर भी दुर्बल हो गया है—प्रतिपत्पाठशीलस्य विद्येव तनुतां गता—वा० रामायण, सुन्दर काण्ड ५९/३१

रू० पड़वा पाटी भांगणी, बीज पाटी सांमणी।

२१६४. **पड़्यो पारस वेचै तेल, औ देखो कुदरत का खेल।**

किसी तेली के पास पारस था, लेकिन वह उसे सामान्य पत्थर समझ कर वटखरे के स्थान पर तेल-तौलने के काम में लेता था। इसी को लक्ष्य करके किसी ने कहा कि यह भाग्य का खेल ही है जो पारस पास में होने पर भी यह तेल वेच रहा है।

रू० (१) पढ्यो फारसी वेचै तेल, औ देखो कुदरत का खेल।
(२) पढ्यो फारसी वेचै आटो, यो देखो किसमत को घाटो।।

२१६५. **पढ़ले वेटा फारसी, तळै पड़्यो सो हारसी।**

सूत्र रूप में सार वात यह है कि जो नीचे दवेगा, वही घाटे में रहेगा।

२१६६. **पढ्यो पण गुण्यो कोनी।**

पढा तो सही, लेकिन मनन नहीं किया। पढने के वाद मनन करना आवश्यक है।

संदर्भ कथा—राज पंडित का वेटा काशीजी से पढ कर आया तो राजा ने उसकी परीक्षा लेने के लिए उसे दरवार में वुलाया और उससे पूछा कि मेरी मुट्ठी में क्या है? लड़का ज्योतिप पढ़ कर आया था और उसने अपनी विद्या के वल पर वतलाया कि आपके हाथ में एक गोल वस्तु है जिसमें छेद है और वह सफेद पत्थर जैसी है। अव राजा ने उसका नाम पूछा जो उसकी

सहज बुद्धि पर निर्भर करता था। लड़के ने सोचा कि चक्की का पाट गोल होता है, उसके बीच में छेद होता है और वह पत्थर तो है ही, इसलिए झट से बोल पड़ा कि आपके हाथ में चक्की का पाट है। उसकी बात सुनकर राजा सहित सारे दरबारी हँस पड़े। तब राजा ने उससे कहा कि तुम पढे तो अवश्य हो, लेकिन गुने नहीं। तुमने यह नहीं सोचा कि चक्की के पाट का यहाँ क्या काम, और वह आदमी की मुट्ठी में कैसे आ सकता है? तब राजा ने अपनी मुट्ठी खोल कर उसे दिखलाई और कहा कि यह देखो, मेरी मुट्ठी में मोती है।

२१६७ **पतळा पतळा पोवै, पी'र कां नै रोवै।**
मोटा मोटा पोवै. सणक सणक सोवै॥

जो स्त्री पतली-पतली रोटियां पोती है और घर के सदस्य भोजन भट्ट होते हैं तो उसे बड़ी रात गये तक रोटियां बनानी पड़ती हैं और वह तंग आकर पीहर वालों को कोसती है कि मुझे कैसे घर में ब्याह दी। लेकिन मोटी-मोटी रोटियां पोये तो जल्दी जाकर आराम से सो सकती है।

२१६८ **पतळी छा जांवरा सें क्यूं खोवै?**

अधिक पतली छाछ और किसी काम में न भी आये तो जामन के काम तो आही सकती है।

रू० पतळी छा खाटै सें क्यूं खोवै?

२१६९. **पथवारी में ई पग सूजग्या, गंगाजी तो दूर है।**

पथवारी में ही पैर सूज गये तब गंगाजी तक कैसे जा पाओगे, गंगाजी तो बहुत दूर है।

पथवारी = जब किसी मृतक का पुत्र या अन्य सम्बन्धी मृतक के फूल' गंगाजी में प्रवाहित करने जाता है तब पीपल के वृक्ष के नीचे पथवारी का पूजन करके जाता है। जवारे बोये जाते हैं और उसके लौटने तक उसकी स्त्री अन्य स्त्रियों के साथ नित्य आकर उन्हें सींचती है, गीत गाये जाते हैं (सींचंगी बांकी नार सवाई)। पथवारी—पथ की रानी मानी जाती है (पथवारी ये माता, पथ की राणी)। पथिक की मंगल कामना और निर्विघ्न यात्रा के लिए पथवारी का पूजन किया जाता है। गंगाजी जाने वाला व्यक्ति जब लौटता है तो पहले पथवारी के स्थान पर ही आकर रुकता है, तब घर से स्त्रियां गीत गाती हुई वहाँ आती हैं और उसे गीत गाते हुए ही घर ले जाती हैं।

२१७० **पपीहो पिउ पिउ करै, मोरां घणो अजग्ग।**
छत्र करै मोर्‌यो सिरै, तो नदियां बहै अथग्ग॥

पपीहा बार-बार पिउ पिउ करे, मोर अधिक बोलें और छत्री तानें तो वर्षा इतनी अधिक होगी कि नदियो में उफान आ जाएगा।

२१७१. परणीजे जिको ई गाईजै ।

जिसका विवाह होता है, उसी के गीत गाये जाते हैं ।

२१७२ परणीज्या नईं तो जान तो गया ई हां ।

विवाह नहीं हुआ तो क्या, वरात तो गये ही है ।

हम भी कुछ जानकारी तो रखते ही हैं ।

रू० व्याया कोनी तो के होयो, जान तो गया हां ।

२१७३. परतख नै परमाण के ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या आवश्यकता ?

२१७४. परनारी कै पीव नैं, बेसर यूं बरजंत ।
जैसे धजा सिकन्द की, पंथी मना करंत ।।

पर नारी से प्रेम करने वाले को वेसर हिलहिल कर वैसे ही मना करता है, जैसे सिकन्दर के जहाज पर लगी ध्वजा युक्त पुतली खतरे की तरफ बढ़ने से मना करती थी ।

कहते हैं कि सिकन्दर महान् के जहाज पर ध्वजा युक्त पुतली लगी रहती थी जो जहाज-चालक को खतरे से दूर रहने का पूर्व संकेत दे देती थी ।

२१७५. परनारी पैनी छुरी, तीन ठोर सें खाय ।
धन छीजैं जोवन हड़ै, पत पंचां में जाय ।।

पर नारी से प्रेम करना पैनी छुरी के समान है । वह धन और यौवन का हरण करती है और पंचों में प्रतिष्ठा गवा देती है ।

रू० पर नारी पैनी छुरी, पांच ठौर सें खाय ।
धन छीजै जोवन हड़ै, पत पंचां में जाय ।
जीवत काढै काळजो, अन्त नरक ले जाय ।।

२१७६. परभाते गेह डम्बरा, दोपारां तपंत ।
रात्यूं तारा निरमळा, चेला करो गछंत ।।

प्रात: वादल, दोपहर में गर्मी और रात को निर्मल तारे दिखलाई दें तो अकाल पड़े, इसलिए गुरु अपने चेले से अन्यत्र चलने को कहता है ।

रू० (१) परभाते गेह डम्बर छाय, सांझा सीळी वाळ चलाय ।
रात्यूं तारा तट्टम-तट्ट, कंत दिसावर चालो चट्ट ।।
(२) दिन में वादळ, रात तारलिया ।
चाल कंत जठै, जीवै टाबरिया ।।

२१७७. परमातमा गंजै नैं नख न देवै ।

ईश्वर गंजे को नाखून न दे ।

२१७८ **परवाई चालै घणी, बिधवा पान चबाय ।**
आ तो ल्यावै मेह नै, वा काहू संग जाय ।
परवा हवा अधिक चले तो वह वर्षा को ले आती है और विधवा पान चबाने लगे तो वह नया पति करती है ।

२१७९. **परवा ऊपर पछवा फिरै तो घर बैठी पणिहार भरै ।**
यदि परवा हवा पर पछवा (पश्चिमी) हवा आ जाए तो पनिहारिन अपने घर पर ही पानी भरे, उसे अन्यत्र जाने की आवश्यकता नहीं, अर्थात् वर्षा खूब हो ।
रू० परवा ऊपर पछवा चालै, ज्यूं सक्कर पर घी ।

२१८०. **परवारिया को पूत, मंगायो हुक्को ल्यायो जूत ।**
परिवारिया का पूत, ऐसा सपूत, मंगाया हुक्का, लाया जूत ।
कहा कुछ, किया कुछ ।

२१८१. **परसाद में दो गुण; देवता भलो मानैं, घरकां को मीठो 'मुं' होज्या ।**
देवता को प्रसाद चढ़ाने में दोहरा फायदा, देवता प्रसन्न हो और घर वालों के मुँह मीठे हो जाएँ ।

२१८२. **पराई आस जाय निरास, आपकी आस भोग विलास ।**
दूसरों की आशा करना निरर्थक । अपने ही बल-बूते पर ऐश कर सकते हैं ।

२१८३. **पराई खाई खीचड़ी, गैणै मेल्यो जीव ।**
दूसरे का अन्न खाने वाला, अपनी स्वतन्त्रता को गिरवी रख देता है ।

२१८४. **पराई पीड़ परदेस बराबर ।**
दूसरे की पीड़ा से सर्वथा उदासीन ।

२१८५ **पराई सोड़ में सोवै जिको पादणो कुहावै ।**
दूसरों के घर रहने वाले का सम्मान नहीं रहता ।

२१८६. **पराया पूत कीं नै कमा कर घालै ?**
पराये पूत दूसरों को कब कमा कर देते हैं ?

२१८७. **पराये घरां नौ माचां पर कम्मर खुलै ।**
अपने घर में चाहे भूंजी भांग न हो, लेकिन दूसरों के घर पर जाते हैं तो बड़ी ठसक दिखलाते हैं ।

२१८८. **पराये दुख दूबळा थोड़ा, पराये सुख दूबळा बोळा ।**
दूसरों के दुःख से दुखी होने वाले तो विरले ही होते हैं, लेकिन दूसरों को सुखी देखकर जलने वाले अधिक होते हैं ।
रू० पराये सुख दूबळो ।

२१८९. परालब्ध पैली वणी, पीछै बण्यो सरीर।
शरीर से पहले ही प्राणी का भाग्य बन जाता है।
जीव का भाग्य पहले से ही सुनिश्चित हो जाता है।

२१९०. पलक पखवाड़ो, घड़ी छः मास।
जिसका कहदे कल, उसका क्या व्हाल ?
वह झूठा ऋणी जो आजकल करके वर्षों का समय निकाल दे।
रू० पलक पखवाड़ो घड़ी महीनो, संझ्या बारा मास।
ठाकर तो तड़कै की कैवै, जैंको के विसवास ?

२१९१. पल्लै कोडी कोनी, नांव किरोड़ीमल।
पास में कौड़ी नहीं और नाम किरोड़ीमल !
रू० (१) नांव हजारीलाल, घाटो ग्यारासै को।
(२) पैरण नै घाघरो ई कोनी, नांव सिणगारी।
(३) नांव धापली, फिरै टुकडा मांगती।
(४) पगां पांगळी, नांव फुदकी।

२१९२. पांगळी डाकण घरकां नै खा।
पगु डाकिन कहीं जा तो सकती नहीं, अतः अपने घर वालों को ही खा जाती है।
निकृष्ट आदमी अपने घर वालों को ही पीड़ा पहुँचाता है।
रू० चोदू रांगड़ो घर कां नै मारै।

२१९३. पांच आंगळियां पूंचो भारी।
पांचों उँगलियों से ही पोंहचा वलिष्ठ होता है।
सगठन में ही ताकत है।

२१९४. पांच पंच मिल कीजे काज, हारे जीते आवै न लाज।
जब पांच प्रमुख एक मत होकर कोई काम करते हैं, तब उस काम में हारने पर भी संकोच नहीं उठाना पड़ता।

२१९५ पांच-पांच घड़ी का मोर कुरळा कुरळा कर मरग्या जद पाव कै पपैये की के चिकारी ?
ऐसी मान्यता है कि मोर और पपीहे बोलते है तब वर्षा आती है। लेकिन जब पच्चीस-पच्चीस सेर के मोर बोल-बोल कर मर गये और वर्षा न आई तब बेचारे पाव भर के पपीहे की क्या विसात ?

२१९६. पांच सात की लाकडी, एक जणै को भार।
किसी काम को सब लोग मिल-बांट कर करें तो आसान होता है, लेकिन एक के लिये भार-स्वरूप हो जाता है।

२१९७. **पांचां मीत पचीसां ठाकर, सोवां सग्गो सोई ।**
इतरां खातर मतां बिगाड़ो, होणी हो सो होई ॥
पांच रुपये की खातिर मित्र से, पच्चीस के लिए ठाकुर से और सौ रुपये के लिये सगे-सम्बन्धी से बात नहीं बिगाड़नी चाहिए ।

२१९८ **पांचूं आंगळी एकसी कोनी होवै ।**
हाथ की पांचों उँगलियाँ एक जैसी नहीं होतीं ।
घर या समाज में सब लोग एक जैसे नहीं होते ।

२१९९. **पांचूं थोक पराया लाडा, मरोड़ घणी ।**
पाचों वस्त्र तो दूसरों से उधार लेकर पहन रखे हैं, तिस पर ऐंठ इतनी अधिक ?
झूठा दंभ ।

२२००. **पांचूं भाई पांच ठोड, मोको आयां एक ठोड ।**
यों तो पांचों भाई अलग-अलग, लेकिन आवश्यकता पड़ने पर सब एक हो जाते हैं ।
पाँचों उँगलियां अलग-अलग होते हुए भी खाने के समय एक साथ आ जुटती हैं ।

२२०१. **पांत में दुभांत क्यूं ?**
एक ही पंक्ति में बैठाकर भोजन कराने वालों के साथ भेद-भाव नहीं होना चाहिये ।

२२०२. **पांव उभाणा जायसी, कोड़ीधज कंगाल ।**
चाहे करोड़पति हो चाहे कंगाल, मरने पर तो सब नंगे पैरों ही जाएँगे ।

२२०३. **पांव पिछाणै मोचड़ी, नैण पिछाणै नेह ।**
चोर पिछाणै च्यानणों, मोर पिछाणै मेह ।
जूती पैर को, नेत्र स्नेह को, चोर प्रकाश को और मोर मेह को पहचानता है ।

२२०४ **पांवरी कुत्ती अर पूंछ में कांगसियो !**
खाज से विकृत कुतिया (जिसके बाल झड़ गये हैं) और पूँछ में कंघा ?
रू० (१) पांवरी सांड, बनाती कूंची ?
(२) पांवरी सांड अर नारनोळ को भाड़ो ?
(३) पांवरी सांड, पकवान की भूखी ?
(४) पांवरी कुत्ती अर कोठ्यार की रुखाळी ?

२२०५. **पाखी आळो पैली चिमकै ।**
पीठ पर घाव वाला पशु (ऊँट आदि) कौवे को देखते ही चौंक पड़ता है, भले ही वह घाव में चोंच न मारे ।

२२०६. **पागड़ी जावो आगडी, सिर सलामत चाये ।**
इज्जत जाये तो जाये, सिर सलामत चाहिये ।
उस व्यक्ति के प्रति व्यंग्य जो इज्जत की अपेक्षा स्वार्थपूर्ति को अधिक महत्व देता है ।

२२०७ **पाडियो भैंस की आंख पैंली ई पिछाण ले ।**
भैंस का कटरा पहले ही अपनी माँ की आँख पहचान लेता है । यदि दुहने के वक्त उसका रुख अनुकूल नहीं होता तो वह उसके स्तनों की ओर नहीं लपकता ।

२२०८. **पाडै को अर पराई जाई को राम बेली ।**
भैंसे का और पराई जाई का भगवान् ही मालिक ।

२२०९. **पाड़ोसी को टाबर तावड़ै बाळचोड़ो ई चोखो ।**
पड़ौसी के बालक को किसी काम के मिस व्यर्थ ही धूप में भेजकर संतोष की अनुभूति करना ।
रू० सीरी को टाबर तावड़ै बाळचोड़ो ई चोखो ।

२२१०. **पाणी का ई सांसा, जठै क्यां का बासा ?**
जहाँ पानी भी सुलभ न हो, वहाँ कैसा रहना ?

२२११. **पाणी तो निचाण में ई जासी ।**
पानी तो नीचे की ओर ही बहेगा ।
रू० (१) आखर पाणी निचाण आया सरसी ।
(२) आखर नेम निमाणां, धरम ठिकाणां होयां सरसी ।

२२१२. **पाणी पाळा पातस्या, उतराधा आवै ।**
पानी, पाला और पादशाह (बादशाह) उत्तर की ओर से ही आते हैं ।

२२१३ **पाणी पीकर के जात पूछणी ?**
पानी पी चुकने के बाद जाति क्या पूछनी ?

२२१४. **पाणी पीकर मूत तोलै ।**
बहुत अधिक सयानप लगाने वाले व्यक्ति के प्रति व्यंग्य ।
रू० मिण मिण कर मूतै ।

२२१५. **पाणी पीये छाण कर, सगो (सगपण) करिये जाण कर ।**
पानी छान कर पीना चाहिये और विवाह–सम्बन्ध अच्छी तरह जान-पहिचान करके करना चाहिये ।

२२१६ **पाणी पीवै छाण, जीव मारै जाण ।**
पानी तो छान कर पीता है और जीव हिंसा जानबूझ कर करता है ।

२२१७. **पाणी पैली पाळ बांध्योड़ी आडी आवै ।**

पानी आने से पहले ही पाल बनानी सार्थक है ।

संकट आने से पहले ही उपाय करना अपेक्षित है ।

२२१८. **पाणी वै'ता भला अर साधु रमता भला ।**

पानी वहता अच्छा और साधु रमता अच्छा ।

वहता पानी निर्मला, पड़्या सो गंदळा होय ।

२२१९ **पाणी में खोज पड़्या ।**

चोर की तलाश उसके खोज (पद चिन्ह) देख कर की जाती है, लेकिन पानी के खोजों का क्या पता चले ?

२२२०. **पाणी में बड़ कर कोई सूको कोनी नीकळै ।**

पानी में घुस कर कोई सूका नहीं निकल पाता ।

२२२१. **पाद को पदमसिंग कर दियो ।**

तिल का ताड़ वना दिया ।

रू० मैल का ना'र होग्या ।

२२२२. **पादा फूहड़ क्यूं कर जाणी ?**

रूआ घड़ा उघाड़ा पाणी, जीं में काग करै कलवाणी ।

निपट फूहड़ स्त्री की पहिचान क्या है ?

यही कि, उसके यहाँ पानी के घड़े पुराने होते हैं जो खुले रखे रहते हैं और जिनमें कौवे चोंच मार मार कर क्रीड़ा करते रहते हैं ।

२२२३ **पाप की पाण आये विना कोनी रैवै ।**

एक वार तो पाप के पैसे की चमक-दमक आती ही है ।

२२२४. **पाप को घड़ो भरयां ई फूटै ।**

पाप का घड़ा भरने पर ही फूटता है ।

२२२५. **पाप को बाप लोभ ।**

पाप का वाप लोभ होता है । लोभ के वशीभूत होकर ही आदमी पाप कर्म करता है ।

सन्दर्भ कथा - एक दिन राजा ने अपने मंत्री से पूछा कि पाप का वाप कौन है ? मन्त्री कोई उत्तर नहीं दे पाया तो राजा ने कहा कि दस दिन में इसका उत्तर नहीं दोगे तो तुम्हारा मन्त्री पद छिन जाएगा । मंत्री घर आ गया और राजा के प्रश्न का उत्तर पाने के लिए नगर में घूमने लगा । घूमते-घामते वह एक वेश्या के घर पहुँच गया । वह ब्राह्मण था, लेकिन वेश्या ने प्रलोभन देकर उसे अपने यहाँ रहने एवं शराब व मांस—सेवन के लिये राज़ी कर लिया । मंत्री को एक तो अपने पद का लोभ था और दूसरे वेश्या ने उसे प्रलोभन दिया था, अत वह उसके साथ सहवास करने को भी

तत्पर हो गया। इस पर वेश्या ने उसके गाल पर एक चांटा जड़ दिया। मंत्री नाराज होने लगा तो वेश्या बोली कि मैंने तुम्हारे प्रश्न का ही उत्तर दिया है। तुम ब्राह्मण होकर भी लालच वश शराब, मांस और वेश्यागमन के लिये उतारू हो गये, जबकि ब्राह्मण के लिये ये सारे पाप-कर्म वर्जित और निंद्य हैं। इसलिए जानो कि लोभ ही पाप का बाप है।

२२२६. **पापड़ सें काम 'क पड़ापड़ सें ?**
आम खाने हैं या पेड़ गिनने हैं ?

२२२७. **पापी कै मन में पाप बसै।**
पापी के मन में सदा पाप-भावना ही बसती है।

२२२८. **पापी पुन्न नईं करै, दूणो डंड राज में भरै।**
पापी किसी पुण्य कार्य में पैसा नहीं लगाता, भले ही उससे दुगना पैसा दण्ड स्वरूप सरकार में भरदे।

२२२९. **पारखी ई परख करै।**
पारखी ही अच्छे-बुरे या खोटे-खरे की परख कर सकता है।

संदर्भ कथा—एक बार किसी बादशाह के दरबार में एक आलिम आया। उसने एक तीर चलाकर मोर का चित्र बना दिया तो बादशाह ने खुश होकर उसके लिए नित्य एक सेर आटा और एक पैसे भर घी रोज का निश्चित कर दिया। दूसरा हुनर दिखलाने पर बादशाह ने उसके पांचों कपड़े बनवा दिये और तीसरा हुनर दिखाने पर उसके लिए एक चारपाई का प्रबन्ध करवा दिया। आलिम को बादशाह की गुणग्राहकता पर बड़ा अफसोस हुआ।

जब बादशाह ने उससे पूछा कि तुम अपने सारे हुनर दिखला चुके हो या कुछ बाकी है तो आलिम ने कहा कि और तो सब दिखा चुका हूँ, एक हुनर बाकी है, और वह यह कि मैं किसी भी आदमी को देखकर यह बतला सकता हूँ कि वह अपने माँ-बाप की असली संतान है या वर्णशंकर। इस पर बादशाह ने उससे कहा कि कल हमारे सब दरबारियों की पहचान करना। आलिम ने हाँ भर ली। सारे दरबारी उसकी करामात देख चुके थे अतः सभी रात को उसके यहाँ पहुँचे और उसे मुँह मांगी राशि देकर इस बात के लिये राजी कर लिया कि वह किसी को वर्णशंकर नहीं बतलायेगा। अगले दिन दरबार जुड़ा तो आलिम ने बादशाह से कहा कि पहले आप से ही प्रारम्भ करता हूँ और यह घोषणा करता हूँ कि आप एक भठियारे के अंश हैं, विश्वास न हो तो अपनी माताजी से जाकर पूछलें, क्योंकि इसका पता माँ को ही होता है—

मन की बात मन ही जाणैं, काया जाणैं आपदा ।
गीता अरथ कृष्ण जाणैं, माता जाणैं सो पिता ।।

इस पर बादशाह महल में गया और उसकी माँ ने प्रकारान्तर से यह बात स्वीकार कर ली । तब उसने अलिम को बुलाया और पूछा कि तुम्हें इस बात का पता कैसे चला ? आलिम ने उत्तर दिया कि मैंने आपका पुरस्कार देखकर ही यह अनुमान लगाया । सुनकर बादशाह शर्मिन्दा हो गया ।

२२३०. **पारो सारो ना मरै, गंधक तेल न होय ।**
गरु कवै रे बाळका, कई गया घर खोय ।।

गुरु अपने शिष्य से कहता है कि पारा पूरी तौर पर मरता नहीं और गंधक से तेल नहीं निकलता । इस पर शिष्य अपने गुरु को उत्तर देता है कि समर्थ सिद्ध पुरुष हो तो ये दोनों काम संभव हैं—

पारो तो सारो मरै, गंधक तेलज होय ।
चेलो 'कै गरुजी सुणो, सा पुरषां पां होय ।।

२२३१. **पाव की हांडी में सेर कद खटावै ?**
पाव की हँडिया में सेर नहीं खटाता ।
अकिंचन के पास थोड़ी सम्पत्ति आ जाने से ही वह इतराने लगता है ।
जस थोरेहुँ धन खल इतराई ।
रू० पाव की हांडी में सेर ऊरै जद फूटै ई ।

२२३२ **पाव चून, चौबारै रसोई ।**
चून केवल पाव भर और रसोई चौबारे में !
थोथा प्रदर्शन ।
रू० (१) पाव चून चौबारै रसोई, घर की रोटियां सें बामणी नै खोई ।
(२) पाव चून चौबारै रसोई, आवो रै गाँव को जीमल्यो ।

२२३३ **पावणां सें पीढी कोनी चालै ।**
पाहुनों से वंश नहीं चलता ।

२२३४. **पाव बीघो धरती जीं में अड़ावो न्यारो ।**
कुल पाव बीघा खेत और उसमें भी अड़ावा अलग छोड़ दिया, फिर खेती क्या हो ?
अड़ावा = चरागाह, चरनी ।

२२३५. **पासो पड़ै, अनाड़ी जीतै ।**
पाँसा अनुकूल पड़ने से अनाड़ी भी जीत जाता है ।

२२३६. **पिछलै मे'वां ईं जमानो हु' ज्याया करै है।**

वर्षा काल के उत्तरार्द्ध में वर्षा होने पर भी जमाना हो जाया करता है। जब किसी औरत की पहले वाली संतान जीवित न रहे और बाद की छोटी संतान ही हो, तब प्रायः यह कहावत कही जाती है।

२२३७. **पिटेड़ो अर खायोड़ो भूलै कोनी।**

किसी से पिटा हुआ एवं किसी के यहाँ भोजन किया हुआ भूलता नहीं।

२२३८. **पिसारी कै तो चावणैं को ई ला'वो।**

पीसने वाली को तो चबा लेने में ही लाभ।

जब अनाज पीसने वाली को अनाज पीसने के लिये देते हैं तो वह उसमें से अनाज तो नहीं ले जा सकती, लेकिन इस बीच जितना अनाज वह चबाले, उतना ही लाभ।

रू० पीसण आळी नै तो चाबण सें ईं लावो।

२२३९. **पींघळग्यो सो पींघळग्यो पण नीचै लकड़ी कुण करग्यो ?**

पिघल गया तो पिघल गया, लेकिन नीचे लकड़ी कौन लगा गया ?

सदर्भ कथा—एक आदमी ने किसी झाड़ में अपनी तलवार छिपा दी थी। एक चोर ने तलवार तो निकाल ली और उसके स्थान पर एक दांती (हँसिया) रख दी। जब तलवार का मालिक आया और उसने अपनी सीधी तलवार के स्थान पर मुड़ी हुई दांती देखी तो उसने अपने साथी से कहा कि मैंने बिल्कुल सीधी तलवार रखी थी, इसे टेढी-मेढी कौन कर गया ? साथी ने कहा कि तुम्हारी तलवार कच्चे लोहे की बनी हुई थी और जेठ-आषाढ की धूप में तपकर यह टेढी हो गई। इस पर उसने फिर पूछा कि यह तो ठीक है, लेकिन इसके नीचे लकड़ी कौन लगा गया—

मैं मेली थी सीदम सादी, वांकळ-चींकळ कुण करग्यो ?
जेठ साढ को पड़चो तावड़ो, काचो लोवो पींघळग्यो।
पींघळग्यो सो पींघळग्यो, पण नीचै लकड़ी कुण करग्यो ?

२२४०. **पीछै घोड़ो दौड़ै, घोड़ी दौड़ै।**

बाद में न जाने कैसी परिस्थिति पैदा हो जाए, इसलिए अभी तय कर देना ठीक है।

२२४१ **पीतळ कांसी लोह नैं पड़चो काट चढ जाय।**
जळधर आवै दौड़तो, इण में संसै नांय॥

पीतल, कांसी और लोहे पर जंग चढ़ने लगे तो वर्षा शीघ्र ही आये।

२२४२ **पीपळ तळै हां भरकर, कीकर तळै नटज्या।**

पीपल के नीचे हां भरे, कीकर के नीचे नट जाए।

पल-पल में बात पलटने वाला आदमी।

रू० नीम तळै सौगन खा, पीपळ तळै नटज्या।

२२४३ **पी'र कां की आस करै, जिकी भाईड़ां नै खा ।**

पीहर पर आश्रित रहने वाली स्त्री अपने भाइयों को ही हानि पहुँचाती है।

२२४४. **पी'र सें ल्यावै दांतळी, घरां कुहाड़ी जाए ।**

पीहर से तो दांती लाती है और अपने घर कुल्हाड़ी की हानि हो जाती है। पीहर से जितना लाती है, उससे अधिक का नुकसान घर पर हो जाता है।

२२४५. **पीसा खरचियो लेखै लेखै, म्हारी बाई एक आंख सें देखै ।**

संदर्भ कथा—लड़की वालों ने छल से अपनी कानी लडकी के फेरे फेर दिये। उधर वर-पक्ष वाले खूब पैसा लुटा रहे थे। जब फेरे हो चुके तो लड़की वालों ने अपनी चाल पर इठलाते हुए लड़के वालों से कहा कि आप उचित तौर पर ही पैसा खर्च करें क्योंकि हमारी बाई तो एक आंख से ही देखती है अर्थात कानी है। लेकिन दूल्हे को दोनों आंखों से ही दिखलाई नहीं देता था। इसलिए उन्होंने नहले पर दहला लगाते हुए कहा—

वड़ै सगां की या ही वात, म्हारै बनै नै दिन सूझै न रात।

इसी प्रकार की एक अन्य कथा है जिसमें एक बूढा मियां जिसके मुँह में केवल एक ही दांत है, शादी करता है। लेकिन उधर बीबी के मुँह में एक दांत भी नहीं है। निकाह हो जाने के बाद मियां गर्व से कहता है –

मरद तो इकदंता ही भला।

बीबी उत्तर देती है—

मुँह में हाड का के लाड ?
मुँह तो सफम सफा ही चोखा।

२२४६ **पीसा देकर सुआसणी क्यूं ब्यावै ?**

पैसे खर्च करके भी सुआसिनी (वहिन, भानजी आदि) क्यों ब्याहे ?

२२४७. **पीसै कनै पीसो आवै ।**

पैसे के पास पैसा आता है।

संदर्भ कथा—एक सेठ के यहाँ एक नौकर रहता था। नौकर ने एक दिन सेठ से पूछा कि आपके पास इतना पैसा कैसे आता है ? सेठ ने उत्तर दिया कि पैसे के पास पैसा आता है। शाम को दुकान बंद करने के बाद जब सेठ चला गया तो नौकर ने अपनी जेब से एक नकद रुपया निकाला और किवाड़ों की दरार में उस रुपये को लगा कर दुकान में रखे रुपयों को बुलाने की चेष्टा करने लगा। लेकिन रुपया उसके हाथ से छूट कर दुकान में चला गया। सबेरे जब नौकर ने सेठ को यह घटना सुनाई तो सेठ ने मुसकरा कर कहा कि तुम्हारे पास केवल एक रुपया था और मेरे रुपये अधिक थे, इसलिए तुम्हारे रुपये को मेरे रुपयों ने खींच लिया।

रू० पीसै सें पीसो कमायो जावै।

२२४८. **पीसै की पैदा नीं, काम की मेदा नीं ।**

एक पैसे की आमदनी नहीं और काम से फुरसत नहीं ।

२२४९. **पीसै की भाजी, टक्कै को बघार !**

एक पैसे की भाजी और उसमें टके का छौंक !

यों तो टके का भाव स्थान और समय के अनुसार भिन्न भिन्न रहा है, जैसे *बीलाड़ा के राजसिंह के यात्रा-वर्णन* के अनुसार १६ फरवरी, १६७८ ई० को चूरू में टके का भाव १६/३७।। प्रति रुपया था । लेकिन अंगरेजी ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने तांबे का जो टका प्रचलित किया था वह दो पैसे का होता था और आकार में लगभग चांदी के रुपये के बराबर होता था ।

२२५०. **पीसै बिना बुध बापड़ी ।**

पैसे के अभाव में बुद्धि कुंठित हो जाती है ।

२२५१. **पीसो आवतो ई दीखै, जावतो कोनी दीखै ।**

पैसा आता है तो सब को दिखलाई पड़ जाता है (सब की चर्चा का विषय बन जाता है), लेकिन जाता हुआ किसी को दिखलाई नहीं पड़ता ।

२२५२. **पीसो पास को, हथियार हाथ को ।**

पास का पैसा और हाथ का हथियार ही वक्त पर काम देता है ।

रू० (१) पीसो हाथ को, भाई साथ को ।

(२) माया अंट की, विद्या कंठ की ।

२२५३. **पीसो माई पीसो बाप, पीसै बिना बड़ो संताप ।**

आज के युग में पैसा ही मां-बाप है । पैसे के अभाव में बड़ा संताप रहता है । तुलसीदासजी ने भी दरिद्रता को सबसे बड़ा दुःख कहा है—नहिं दरिद्र सम दुख जग माहीं ।

२२५४. **पीसो हाथ को मैल है ।**

पैसा तो हाथ का मैल है, वह खर्च करने के लिए ही होता है ।

रू० पीसै नै आदमी कमावै, आदमी नै पीसो कोनी कमावै ।

२२५५. **पीस्योड़ी दुआई अर मूंडेड़ै मूंड को बेरो कोनी पड़ै ।**

पिसी हुई दवा और मूंड मुंडवाये हुये साधु का कुछ पता नहीं चल पाता ।

२२५६. **पुजारी की पागड़ी, ऊंटवाळ की जोय ।**
बेजारा की मोचड़ी, पड़ी पुराणी होय ।।

पुजारी की पगड़ी, किराये पर ऊंट चलाने वाले की स्त्री एवं बीमार की जूतियां पड़ी पड़ी ही पुरानी हो जाती हैं ।

रू० सरद रितु की च्यानणी, हीण पुरष की नार ।
विन वरत्यां बोदी होवै, मौतै की तरवार ।।
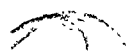
२२५७. **पुन्न की जड़ सदां हरी ।**

पुण्य की जड़ सदा हरी रहती है ।

सन्दर्भ कथा—एक दरिद्र ब्राह्मण कुछ पढा लिखा न था । लेकिन वह नित्य दरबार में आकर राजा को आशीर्वाद देते हुए कहता, चिरंजीवी रहो, पुण्य की जड़ सदा हरी ।' राजा उसे सोने का एक टका दे दिया करता । दरबारियों को डाह हुई और उन्होंने राजा के कान भरे कि 'पुण्य की जड़' देखनी तो चाहिए । इस पर राजा ने ब्राह्मण से पुण्य की जड़ दिखलाने के लिए कहा । ब्राह्मण ने हां भरी और दूसरे दिन दोनों दो घोड़ों पर चढ कर उत्तर दिशा की ओर चल पड़े । बहुत दूर जाने पर उन्हें हरे-हरे वृक्षों के समूह दिखलाई पड़े, चारों ओर हरियाली छाई हुई थी जहाँ हृष्ट-पुष्ट गायें चर रही थीं । वहाँ का वातावरण बड़ा ही सुखद था । कुछ और आगे बढने पर बहुत सुन्दर-सुन्दर महल दिखलाई पड़े जो बहुमूल्य वस्तुओं से अटे पड़े थे और जहाँ खासी चहल-पहल थी । लोगों से पूछने पर ज्ञात हुआ कि यह सारा वैभव उसी पुण्यात्मा राजा का है । कुछ और आगे चलने पर एक महात्मा की कुटिया आई जहाँ वे तपस्या कर रहे थे । उन्होंने राजा और ब्राह्मण का बड़ा सत्कार किया । भगवान् के घर से पांच पनवाड़े उतरे जो महात्मा, राजा, ब्राह्मण और दोनों घोड़ों ने बड़े चाव से खाये । राजा को ऐसा स्वादिष्ट भोजन कभी स्वप्न में भी नसीब न हुआ था । ब्राह्मण ने राजा से पूछा—क्यों राजन्, पुण्य की जड़ देखी ? राजा ने विनम्र भाव से कहा—हाँ महाराज ! खूब देखी ।

अब राजा के दरबार में पंडित का सम्मान और भी बढ़ गया । दरबारियों ने फिर राजा के कान भरे कि इस ब्राह्मण के एक अति सुन्दर कन्या है जो आपके ही योग्य है । राजा का मन चलायमान हुआ और उसने यह बात ब्राह्मण से कही । ब्राह्मण ने उत्तर दिया कि आप एक बार पुण्य की जड़ और देख लीजिए और फिर आप जैसा कहेंगे, कर दिया जाएगा । अगले दिन राजा फिर ब्राह्मण को साथ लेकर पुण्य की जड़ देखने गया । लेकिन इस बार सारे ही दृश्य विपरीत दिखलाई पड़े वृक्ष झुलसे हुए थे, चारों ओर कूड़े के ढेर लगे हुए थे और गरम लू चल रही थी । तब राजा ने अपनी गलती महसूस की । उसने ब्राह्मण से क्षमा याचना की और योग्य वर के साथ उसकी बेटी का विवाह कर दिया ।

२२५८. **पुन्न पांगळो होवै ।**

पुण्य तो पंगु होता है ।

पुण्य कार्य को दूसरे लोग आगे बढाते हैं, तभी वह आगे बढ़ता है ।

२२५६. **पुराणी बैली अर चिमकणा नारा ।**
वहली पुरानी और बैल चौंकने वाले ।
न जाने बैल कब चौंक जाएँ और बहली को किसी दीवार आदि से टकरा कर चकनाचूर कर दें ।

२२६०. **पुराणो सो स्याणो ।**
जो पुराना, सो सयाना ।

संदर्भ कथा—एक सेठ का दिसावर में बहुत अच्छा कारोबार था । सेठ की मृत्यु हो जाने पर उसके बेटे ने नये-नये आदमियों को रख लिया और पुराने मुनीमों की छुट्टी कर दी । वे सारे नौसिखिये थे और सेठ का बेटा भी स्वयं अपने कारोबार को संभाल पाने में अक्षम था, अतः कारोबार में ढिलाई आ गई । एक दिन उसके ऊपर एक बड़ी हुंडी आई । हुंडी दर्शनी थी, अतः उसके रुपये तत्काल दिये जाने अपेक्षित थे । लेकिन रोकड़ में रुपये नहीं थे । तब सेठ के लड़के ने अपनी माँ के कहने से पुराने मुनीम को बुलाया । जाड़े की ऋतु थी, मुनीम काफी वृद्ध था और जाड़े के कारण कांप रहा था । सेठ ने उसके तापने के लिए 'सिघड़ी' मंगवाई । इतने में हुंडी वाले का आदमी भुगतान लेने के लिए आ गया । वृद्ध मुनीम हुंडी को पढने लगा और पढते पढते ही उसने अपने कांपते हाथों से हुंडी 'सिघड़ी' में डाल दी । इस पर मुनीम ने अफसोस प्रकट करते हुए हुंडी वाले से कहा कि हुंडी तो आग में जल गई, तुम इसकी पैठ मंगवालो । उसने कहा कि कोई बात नहीं, पैठ मंगवाली जाएगी । यों पुराने मुनीम की चतुराई से सेठ के बेटे को रुपया एकत्र करने का अवसर प्राप्त हो गया ।

मियादी हुंडी का भुगतान हुंडी में लिखी मियाद पूरी होने पर किया जाता था, लेकिन दर्शनी हुंडी का भुगतान तत्काल करना होता था ।

हुंडी के गुम हो जाने या नष्ट हो जाने पर उसकी पैठ और पैठ के गुम हो जाने पर पर-पैठ लिखी जाती थी ।

२२६१. **पुळ का वाया मोती नीपजै ।**
समय पर किया हुआ काम ही समुचित फल देता है ।

संदर्भ कथा—अमरकोट का सोढा देपालदे जैसलमेर व्याहा था । वह गौना करके लौट रहा था । वहू रथ में बैठी थी, रथ कुछ अन्य लोगों के साथ आगे-आगे चल रहा था, देपालदे पीछे पीछे घोड़े पर चढा आ रहा था । उसने देखा कि एक चारण खेत में हल चला रहा है । लेकिन उसके पास एक ही बैल है और दूसरे बैल के स्थान पर उसने अपनी औरत को जोत रखा है । देपालदे यह देख कर द्रवित हो गया । उसने चारण से कहा कि तुम मेरे साथ

चलो, मैं रथ के बैलों में से एक बैल तुम्हें दिलवा देता हूं। लेकिन चारण ने इन्कार कर दिया। तब देपालदे ने कहा कि तुम अपनी औरत को भेज दो, वह बैल ले आयेगी। लेकिन उसने फिर ना करते हुए कहा कि जितनी देर में वह बैल लेकर आयेगी, उतनी देर जोताई रुक जाएगी और जमीन सूख जाएगी। तब देपालदे ने चारण से कहा कि इसकी जगह मैं हल में जुत जाता हूं, तुम इसे भेज दो। देपालदे ने पहिचान के लिए अपना कोड़ा चारणी को दे दिया और स्वयं हल में जुत गया। चारणी ने रथ के पास जाकर देपालदे की बहू से उसके पति का संदेश कहा तो वह बोली कि तुम्हारे वाला बैल बड़ा कमजोर है और वह इस बैल के साथ नहीं चल पायेगा, इसलिए तुम दोनों ही बैलों को ले जाओ। यों कह कर उसने दोनों बैल चारणी को दे दिये। चारणी दोनों बैलों को लेकर खेत में पहुँची तो देपालदे को और भी अधिक संतोष हुआ और वह अपने घोड़े पर सवार होकर आगे बढ़ गया।

जब फसल पकी तो चारण ने देखा कि जितनी दूर में देपालदे ने हल खींचा था, उतनी दूर के बूटों में अन्न के दानों के स्थान पर मोती उत्पन्न हुए हैं। मोतियों को देख कर चारण बोला कि यदि ऐसा पता होता तो हे देपालदे, मैं तेरे से ही अधिक देर तक हल चलवाता—

जे जाणूं जिणवार, निज भळ मोती नीपजै।
वाहूं तो वड वार, तो ही सूं देपाळदे ॥

२२६२. पूछता नर पंडिता।

जिज्ञासु व्यक्ति पूछ पूछ कर ही पंडित बन जाता है।

२२६३. पूणी न सूत, जुलावै सें जूतम जूत।

सूत न कपास, जुलाहे से लट्ठमलट्ठा।

२२६४. पूत कमावै च्यार पहर, ब्याज कमावै आठ पहर।

बेटा तो चार पहर ही कमाता है, लेकिन ब्याज तो आठों पहर कमाता है। बेटा तो रात्रि में सो जाता है, लेकिन ब्याज तो चलता ही रहता है।

२२६५ पूत का पग पालणं ईं दिखज्या।

पूत के पैर पालने में ही दिखलाई पड़ जाते हैं।

२२६६. पून में पून मिलज्या।

हवा में हवा मिल जाती है।

संदर्भ कथा—एक ब्राह्मणी रैगरों के मोहल्ले में आकर रही जो कच्चे चमड़े को साफ करते थे। पहले तो दुर्गन्ध के कारण उसकी नाक फटती थी, लेकिन धीरे-धीरे उसकी घ्राण शक्ति वैसी ही बन गई। एक दिन उसने

अपनी पड़ोसिन से कहा कि जब मैं यहाँ आकर बसी थी, तब तो बड़ी दुर्गन्ध आती थी, लेकिन अब तो नहीं आती। इस पर उसने कहा कि तुम भी हमारे में मिल गई अर्थात् जैसे हमें दुर्गन्ध की अनुभूति नहीं होती, वैसे ही अब तुम्हें भी नहीं होती।

२२६७. **पेट कै आगै नां है।**
चाहे कोई कैसा ही भोजन भट्ट हो, आखिर तो उसे ना करनी ही पड़ती है।

२२६८. **पेट पिरोत, 'मूं जजमान।**
पेट पुरोहित है और मुँह यजमान।

२२६९. **पेट भूखो भलाईं रैवो, पीठ भूखो कोनी रैवण दे।**
वह क्रूर मालिक जो अपने पशु को खाना तो पूरा नहीं देता, लेकिन उसकी पीठ पर भरपूर बोझ लादता रहता है।

२२७०. **पेट में ईं पग है।**
पेट भरने पर ही चाल आती है।
रू० पेट में पड़ै रोटी, नाचै बोटी-बोटी।

२२७१. **पेट में पाप अर गऊमुखी में जाप।**
मुँह में राम, बगल में छुरी।

२२७२. **पेठा लाग्या न पापड़ी, भू दड़कदे आ पड़ी।**
बड़ी आसानी से बेटे का विवाह हो गया, कुछ भी न करना पड़ा और बहू घर में आ गई
रू० फळिया करचा न पापड़ी, भू दड़कदे आपड़ी।

२२७३ **पैंडो भलो न कोस को, बेटी भली न एक।**
करजो भलो न बाप को, सायब राखै टेक।।
पैदल तो कोस भर चलना भी बुरा, बेटी एक भी बुरी और कर्जा बाप का भी बुरा। इन तीनों से भगवान् ही बचाये।
रू० लैणो भलो न बाप को, बेटी भली न एक।
पैंडो भलो न कोस को, सायब राखै टेक।।

२२७४. **पैल पड़वा गाजै, दिन बैंतर बाजै।**
आषाढ की प्रथम प्रतिपदा को आकाश में बादलों की गरज हो तो बहत्तर दिनों तक हवा ही चले, वर्षा न हो।

२२७५ **पैली आतमा, पीछै परमातमा।**
पहले आत्मा, फिर परमात्मा।

२२७६. **पैली कहदे जिको घणखाऊ कोनी बाजै।**
जो पहले कहदे कि मैं इतनी रोटियां खाऊंगा, उसे अधिक खाने वाला नहीं कहा जाता।

२२७७. **पैली चावै घूघरी, पीछै गावै गीत ।**
काम करने से पहले ही पारिश्रमिक ।
रू० पैली घूघरी, पीछै गीत ।

२२७८ **पैली पेट पूजा, फेर काम दूजा ।**
पहले खाना खाये, फिर दूसरे काम को हाथ लगाये ।

२२७९. **पैली मांड पीछै दे, फेर घटै मेरै सें ले ।**
कागज रोकड़िये से कहता है कि तुम पहले लिखो और फिर दो, उसके बाद तुम्हारी रोकड़ में कुछ घटे तो मेरे से लो ।
जो पहले लिख कर बाद में देता है, उसमें भूल नहीं पड़ती ।

२२८०. **पैली रहतो यूं तो तमियो जातो क्यूं ?**
यदि पहले से ही यों (निचले) रहते तो तंविया क्यों गँवाना पड़ना ?

२२८१. **पैलो सुख निरोगी काया ।**
शरीर से निरोग रहना सर्व प्रथम सुख है ।
पद्य पैलो सुख निरोगी काया, दूजो सुख हां घर में माया ।
तीजो सुख पतिवरता नारी, चौथो सुख पुत्र अग्याकारी ।
पांचवां सुख सुथान वासा, छठा सुख राज में पासा ।
सातवां सुख विद्या फळ दाता, अै सातूं सुख रच्या विधाता ।।

२२८२. **'पो खालड़ी को 'खो ।**
पौष के महीने में जाड़ा वहुत पड़ना है जिससे त्वचा फट जाती है ।

२२८३. **पोटो पड़ै जिको कीं न कीं लेकर ऊठै ।**
गाय भैंस आदि का गोवर जमीन पर गिरता है तो कुछ न कुछ साथ लेकर ही उठता है ।

२२८४. **पोतड़ां का विगड़्योड़ा, धोतड़ां में कोनी सुधरै ।**
वचपन से ही जिनकी आदत विगड़ जाती है, वह उनके वड़े होने पर भी नहीं सुधरती ।

२२८५ **पोता भू की रावडी, दोयता भू की खीर ।**
मीठी लागी रावड़ी, खाटी लागी खीर ।।
पोते की वहू की वनाई 'रावड़ी' जैसी रुचिकर लगती है, वैसी दोहिते की वहू की खीर भी नहीं लगती ।

२२८६. **पोयो र धोयो, चढायो र खायो ।**
पौष में दिन वहुत छोटे होते हैं । पकाने-खाने में ही दिन पूरा हो जाता है ।

२२८७. **पोल को टक्को पोल में गयो ।**
पोल का टका पोल में चला गया ।

२२८८. **पोल में पोल तूं भी धिका।**
पोल में पोल तू भी चला।
सन्दर्भ कथा—किसी राजा के राज्य में वड़ी पोल थी। एक परदेशी वहां आया तो उसने राजा से कहा कि आप के राज्य में तो पोल वहुत है। राजा ने उत्तर दिया कि पोल में पोल तू भी चला। इस पर उसने एक मोहर वनवाली और गढ के दरवाजे पर वैठ गया। अव जो भी गढ में प्रवेश करता, वह उस को रोक कर कहता कि पहले पोल-माता की छाप लगवाओ, तभी अन्दर जा सकोगे। वह हर आदमी से एक टका ले लेता और छाप लगा देता। यों वह भी पोल में पोल चलाने लगा।

२२८९. **प्यारी कै पान, दुप्यारी कै मेंहदी।**
जो अपने पति को प्यारी होती है, उसे पान अधिक रचता है और दुप्यारी को मेंहदी अधिक रचती है।

२२९०. **फलको जेट को, वेटो पेट को।**
फुलका जेट का ही अच्छा होता है क्योंकि वह गरम और नरम रहता है एवं वेटा जन्मा हुआ ही निहाल करता है, गोद-मोल का नहीं।

२२९१. **फाकै सैं फिकर वुरो।**
फाके की अपेक्षा फिक्र वुरी। फाका खेत को क्षति पहुँचाता है और फिक्र शरीर को खा जाती है।

२२९२. **फागण में सी चौगणो, जै वाजैगी वाळ।**
यदि शीत लहर चले तो फाल्गुन में सर्दी चौगुनी वढ़ जाती है।

२२९३. **फाटे अम्मर थेगळी कोनी लागै।**
फटे आकाश को पैवन्द नहीं लगाई जा सकती।

२२९४. **फाटेड़ी लूगड़ी अर नांव दिखणादी चीर।**
फटी हुई सामान्य ओढनी और नाम दखिनी चीर।
दखिनी चीर का उल्लेख राजस्थानी लोक गीतों में प्रचुर मिलता है—मेरै सायव को वणदे मोळियो, राणी सती माता दाखण चीर जी।
वाईजी देस्यां थांनै दखणी रो चीर।
रू० फूट्यो आंक आवै कोनी अर नांव आलम खां।
आलिम = विद्वान्

२२९५. **फाट्या गाभा मत देखो, घर दिल्ली है।**
फटे कपड़ों को ही मत देखो, आदमी वड़ा समर्थ है।

२२९६. **फाट्योड़ै गाभै कै कारी लागज्या, फूट्योड़ै करम कै कोनी लागै।**
फटे हुए कपड़े को पैवन्द लग सकती है, लेकिन फूटे भाग्य का कोई उपचार नहीं।

२२९७. **फाट्योड़ै नै सीम्यां सरै, रूस्योड़ै नै मनायां सरै ।**
फटे हुए कपड़े को सीना पड़ता है और रूठे हुए को मनाना पड़ता है ।

२२९८. **फाड़नियें नै सीमणियों कद नावड़ै ?**
फाड़ने वाले को सीमने वाला कदापि नहीं पा सकता ।
रू० (१) पुरष विच्यारो के करै, जे घर में नार कुनार ।
वो सीमै दो आंगळी, वा फाड़ै गज च्यार ।।
(२) बावो ल्यावै पोटां पोटां, माई खोवै ऊँटां ऊँटां ।

२२९९. **फिरै सो चरै, बंध्यो भूख मरै ।**
इधर-उधर घूम फिर कर तो पशु अपना पेट भर लेता है, लेकिन जो खूंटे से ही बंधा रहता है, वह तो भूखों ही मरता है ।
यही बात आदमी के लिए भी लागू पड़ती है ।

२३००. **फूट्या भाग फकीर का, भरी चिलम गुड़ जाए ।**
भाग्यहीन व्यक्ति का बना-बनाया काम भी बिगड़ जाता है ।

२३०१. **फूड़ को मैल फागण में ऊतरै ।**
फूहड़ स्त्री जाड़े में तो स्नान करती नहीं, फाल्गुन में जब वातावरण में गरमी आने लगती है, तभी शरीर का मैल उतारती है ।

२३०२. **फूड़ चालै, नौ घर हालै ।**
फूहड़ चलती है तो पास-पड़ौस के घरों को भी हिला डालती है ।
रू० (१) फूअड़ चाली कड़ मचकोड़, आधो कूंळो लेगी तोड़ ।
(२) राबड़ी में राख रांधै, चून चाटै पीसती ।
देखो रै या फूड़ नार, चालै पल्ला घींसती ।।

२३०३. **फूड़ रांड की फेरां ताईं ऊछळ ।**
फूहड़ स्त्री की फेरे होने तक छूट ।
उसका कोई भरोसा नहीं, वह अन्तिम समय तक ना कर सकती है ।

२३०४. **फूफी खसम कराय दे, 'क मैं ईं हेरती फिरूं हूं ।**
फूफी, मुझे खसम करवादे । फूफी ने उत्तर दिया कि मैं स्वयं ही अपने लिए खोजती फिर रही हूँ ।
रू० खाला खसम करा दे, 'क मैं ई ढूंढती फिरूं हूँ ।

२३०५. **फूफो रूसैगो तो भूवा नै ईं राखैगो 'क ।**
फूफा रूठेगा तो बूआ को ही हमारे घर न भेजेगा और क्या करेगा ?

२३०६. **फूल की जगां फांगड़ी तो करणी ईं पड़ै ।**
फूल की जगह पंखुड़ी लगाकर नाम-मात्र की पारिवारिक जिम्मेदारी तो निभानी ही पड़ती है ।

२३०७. **फूल फूल छाव भरै ।**
एक-एक फूल करके ही छबड़ा भर जाता है।
रू० बूंद बूंद घड़ो भरै ।

२३०८. **फूलां फूलगी, लैर का दिन भूलगी ।**
थोड़ी सी सम्पन्नता आने पर ही आदमी पिछले दिनों को भूलकर इतराने लगता है ।

२३०९. **फूल्या फूल्या ई चरचा है, कदे जाड़ तळै कांकरो कोनी आयो है ।**
सदा सफलता ही मिलती रही है, कभी आपत्ति में फँसोगे तब पता चलेगा ।

२३१०. **फेरां की बखत कन्या तिसाई होवै ।**
फेरों का समय होने पर कन्या को प्यास लगती है ।
रू० फेरां की बखत कन्या हंगाई होवै ।

२३११. **फोग आलो भी बळै, सासु सुदी भी लड़ै ।**
फोग की लकड़ी गीली होने पर भी जल जाती है । सास सीधी होने पर भी वहू को डाँटती है ।

२३१२. **फौज की अगाड़ी मारै, घोड़ै की पिछाड़ी मारै ।**
फौज के अग्रिम भाग (हरावल) में खतरा अधिक रहता है और घोड़े की पिछाड़ी मारती है ।
रू० चेजै की अगाड़ी मारै, ब्या की पिछाड़ी मारै ।

२३१३. **बंदो कै मैं धन करूं, करकै करूं गुमान ।**
साईं हाथ कतरणी, राखैगो उनमान ।।
मनुष्य इस बात का इच्छुक रहता है कि उसके पास धन हो जाए तो वह भी ऐंठ दिखलाये । लेकिन ईश्वर के हाथ में कैंची रहती है और वह मनुष्य को उसके डौल के अनुरूप ही रखता है ।
रू० मन जाणै हाथी चढ़ूं, मोती पैरूं कान ।
हाथ कतरणी राम कै, राखैलो उनमान ।।

२३१४ **बंदो तो गंदो है ।**
मनुष्य तो गन्दा है, पापी है ।

२३१५. **बंधी भारी लाख की, खुली बिखर जाय ।**
सब एक संगठन में बंध कर रहें, तभी तक कीमत है । झाड़ू के तिनकों की तरह अलग-थलग बिखर जाने पर कोई कीमत नहीं ।
रू० कागा लाख विकाइया, कोठी लाख पंचाय ।
बंधी भारी लाख की, खुली बिखर जाय ।।

२३१६. **बंधी मूठी लाख की, खुली मूठी राख की ।**
भ्रम बना रहे, तभी तक इज्जत है ।

२३१७ बकरै की मा कै दिन खैर मनावै ?

बकरे की माँ कितने दिन अपने बच्चे की कुशल मनायेगी, एक न एक दिन उसकी बलि लग ही जायेगी।

रू० बकरै की मा कै थावर टाळै ?

२३१८. बकसीस सौ-सौ, लेखो जौ-जौ।

इनाम चाहे सौ रुपये का दिया जाए, लेकिन हिसाब पाई-पाई का होना चाहिए।

२३१९. बखत ऊपर नईं बीणजै, सो बाणियों गिंवार।

जो बनिया उचित अवसर पर व्यापार नहीं करता, वह गँवार है।

रू० मन तोलो तन ताखड़ी, नणां विणजण हार।
औसर देख न विणजियो, सो बाणियों गिंवार॥

२३२०. बखत को मोल है, आदमी को कोनी।

वक्त की कीमत है, आदमी की नहीं। वक्त अनुकूल होने पर आदमी जो कुछ भी करता है, फब जाता है, लेकिन दिन पलटने पर वह कुछ भी नहीं कर पाता।

बीर घणां बांका भया, निभी न एकण सार।
तिण डूबै लोढा तिरै, अपणी अपणी बार॥

२३२१. बखत न्याऊ आवै, जद तन का कपड़ा ई बैरी होज्या।

जब बुरा वक्त आता है तो मनुष्य के शरीर के कपड़े भी उसके वैरी हो जाते हैं।

प्रतिकूल वक्त आने पर आत्मीयजन ही शत्रु हो जाते हैं।

२३२२. बटोड़ै में तो छाणां ईं नीकळै।

'बटोड़े' में से तो उपले ही निकलते हैं।

२३२३. बडका नईं मरता तो घर की फौज भेळी हो ज्याती।

यदि पूर्वज न मरते तो घर की फौज एकत्र हो जाती।

यदि संग्रह ही करते, व्यय न करते तो अपार सम्पत्ति जुड़ जाती।

२३२४. बड़ में बोलतो बोलतो, पीपळ में बोलण लागज्या।

प्रसंग को छोड़कर कहीं का कहीं बोलने लगे।

२३२५. बड़ां की बड़ी ई बात।

बड़ों की बातें भी बड़ी।

रू० (१) बड़ी रातां का बड़ा ई तड़का।
(२) बडै घरां का बडा ई बारणां।
(३) बडी हवेल्यां का बडा ई कलेवा।

२३२६. **वडी भू का वडा भाग, छोटो बनड़ो घणों सुहाग ।**
यदि वह की अवस्था अधिक और पति की कम होगी तो वह अधिक समय तक सोहाग का सुख भोगती रहेगी ।

२३२७. **वडै गाँव जाऊं, बडा लाडू खाऊं ।**
आदमी को दूसरी जगह अधिक लाभ नजर आता है और इसलिए वह वहाँ जाने के लिए लालायित रहता है ।
रू० माळवै जाऊं, मांडा खाऊं ।

२३२८. **वडै घरां बेटी देई, मिलणै का सांसा ।**
बड़े घर में बेटी ब्याह दी तो अब उससे मिल पाना भी कठिन हो गया ।

२३२९. **वडै बडां की डैरू वाजै ।**

२३३०. **वडो देखै कीयो, टाबर देखै हीयो ।**
बड़ा तो किसी के किये हुए काम को देखकर संतुष्ट होता है और बालक मन देख कर । बालक के साथ जो स्नेह करता है, वह उसी के साथ हिल–मिल जाता है ।

२३३१. **वड़ो पकोड़ो वाणियों, तातो लीजे तोड़ ।**
इनका उपयोग गरम-गरम ही करना चाहिए ।
रू० वड़ो पकोड़ो वाणियों, कांसी और कसार ।
अेता ताला तोड़िये, ठंडा करै विकार ।।

२३३२. **बद चोखो, बदनाम बुरो ।**
वद अच्छा, बदनाम बुरा ।

२३३३. **बदी कै अर राम कै बैर है ।**
बुराई करने वाला भगवान् को भी नहीं सुहाता ।
रू० (१) घणी वदी राम वैर ।
(२) वदी को सिर नीचो ।
(३) वदी कै घोड़ै चढै जिकै नैं पड़्यां सरै ।

२३३४. **बरसै भरणी, छोडै परणी ।**
यदि भरणी नक्षत्र में वर्षा हो तो अकाल पड़े और पति को आजीविका हेतु अपनी पत्नी को छोड़कर अन्यत्र जाना पड़े ।

२३३५. **बळद ब्यावै तो कोनी, पण बूढ़ो तो होवै ।**
बैल प्रसव तो नहीं करता लेकिन बूढा तो होता ही है ।
रू० बांझ ब्यावै तो कोनी, पण बूढी तो होवै ।

२३३६. वळदां खेती, घोड़ां राज ।

खेती बैलों से होती है और राज घोड़ों के बल पर ।

रामायण, महाभारत-काल में रथों को, फिर हाथियों को और मध्ययुग में घोड़ों को सामरिक महत्त्व प्राप्त रहा । मध्य युग में तो किसी अच्छे घोड़े या घोड़ी के लिए बड़ा संघर्ष तक हो जाता था ।

रू० वळदां खेती घोड़ां राज, मरदां सुधरै पर का काज ।

२३३७. बळ बिना बुध बापड़ी

बल के अभाव में बुद्धि निरीह बन जाती है ।

रू० बळ सें लकड़ी फाटै ।

२३३८. वसंत पंचमी अर सिवरात, सीळी सातें रखियो ख्यांत ।
धुंध धूर अर उत्तर बाय, दियो अन्न कोई नहीं खाय ।।

वसंत पंचमी, शिवरात्रि और शीतला सप्तमी को आकाश में धुंध, कुहरा एवं उत्तर दिशा का वायु हो तो अन्न प्रचुर मात्रा में उत्पन्न हो ।

२३३९. वहू नटणै आळी कुण ?

वहू ना कहने वाली कौन होती है ?

सन्दर्भ कथा—एक औरत किसी के यहां छाछ मांगने गई । घर में मालकिन तो थी नहीं, उसके बेटे की बहू थी । उसने कह दिया कि आज तो छाछ नहीं है । वह औरत वापिस जा रही थी तो उसे राह में उस घर की मालकिन मिल गई । उसने उससे उपालंभ के स्वर में कहा कि मैं तो तुम्हारे घर छाछ लाने गई थी और तुम्हारी बहू ने कह दिया कि छाछ नहीं है । इस पर मालकिन क्रोध प्रकट करते हुए बोली कि बहू ना कहने वाली कौन होती है ? तुम मेरे साथ घर चलो । दोनों घर आईं तो सास ने बहू को डांटते हुए कहा कि बहू ! मेरे होते तू ना कहने वाली कौन होती है ? फिर उसने छाछ लेने वाली औरत से कहा कि बहू को ना कहने का अधिकार नहीं था, अब मैं कहती हूं कि छाछ नहीं है, तुम अपने घर जाओ ।

२३४० वांका वांका पग बाई पदमां का ।

ये तो टेढे-टेढे पैर बाई पदमा के ही हैं ।

इसके पीछे एक अर्द्ध ऐतिहासिक कथा भी है ।

२३४१. वांझड़ी जापै की पीड़ के जाणै ?

प्रसव की पीड़ा बांझ क्या जाने ?

रू० जीं कै पग में कदे ब्याई ई कोनी फाटी, वो पराई पीड़ के जाणै ?

२३४२. वांट कर खाणा, सुरग में जाणा ।

जो मिल-बांट कर खाता है, वह स्वर्ग में जाता है ।

२३४३. **वांडिये कुत्तै को लाय में के दाजै ?**
वेशर्म को कैसी लज्जा ?

२३४४. **बांदरै नै विच्छू खाय, ऊनाळै लागै लाय !**
रायकणी जे डाकण होज्या, ऊंटां चढ चढ खाय ।
बन्दर यों हीं बहुत चपल होता है और उसे बिच्छू काट खाये तो फिर कहना ही क्या ? गीष्म ऋतु में आग लग जाए तो उसकी प्रचंडता और भी बढ़ जाती है । इसी प्रकार रायकणी (राईका जाति की स्त्री, ये ऊंटों को पालने चराने का धंधा करते हैं) यदि डाकिन बन जाय तो वह ऊंटों पर चढ़ चढ़ कर लोगों को खाने लगे ।

२३४५. **बांदरो बूढो होज्या तो ई फलांग लगाणी कोनी भूलै ।**
बंदर बूढा हो जाने पर भी छलांग लगाना नहीं भूलता ।

२३४६. **बांदी कींका घोड़ा वकस दे ?**
बांदी किसको घोड़ा बख्श दे ?
घोड़ों का मालिक ही घोड़े वख्श सकता है ।
रू० सां' णी कींका घोड़ा वकस दे ?

२३४७. **बांदी तेरो व्या करद्यां ? 'क आगै ई वीस तो करचोड़ा है, एक और कर द्यो ।**
मालिक ने बांदी (दासी) से पूछा कि तेरा विवाह कर दें ?
बांदी ने उत्तर दिया—भले ही कर दीजिए, वीस बार पहले हो चुके हैं, एक वार और सही ।

२३४८. **बांदी दूसरां का पग धो देवै, पण आपका कोनी धोया जा ।**
बांदी दूसरों के पैर तो धोती रहती है, लेकिन उससे अपने पैर नहीं धोये जाते ।

२३४९. **बांदी ये ! 'क हां दूदोजी,**
'क नई', वस नांव ई' भूलग्या हा ।
मालिक ने बांदी को पुकारा तो बांदी ने मालिक का नाम लेकर पूछा— दूदोजी, कहिये क्या आज्ञा है ? इस पर मालिक (दूदोजी) ने कहा कि कुछ नहीं, बस अपना नाम ही भूल गया था जो तूने याद दिला दिया ।

२३५०. **बांदी होकर कमावै तो बीबी होकर खावै ।**
परिश्रम करके कमाये तो फिर मौज से खाये ।
रू० दासी की ज्यूं करै तो राणी की ज्यूं बरतै ।

२३५१. **बांध्या तो बळद ई कोनी रैवै ।**
बंधन में तो बैल भी नहीं रहना चाहते फिर नौकर या मजदूर आदि को उनकी इच्छा के बिना कैसे रखा जा सकता है ?

२३५२. **बांस चढी नटणी कहै, होत न नटियो कोय ।**
मैं नट कर नटणी भई, नटै सो नटणी होय ।।
बांस पर चढी हुई नटिनी सब तमाशवीनों से पुकार कर कहती है कि जिस के पास पैसा हो वह ना न करे । मैंने कभी ना की थी जिसके फलस्वरूप मैं नटिनी बनी एवं जो कोई ना कहेगा उसे भी नटिनी बनना पड़ेगा ।

२३५३. **बाई का फूल बाई कै लागग्या ।**
जिस काम से जो आय हुई, वह उसी में लग गई ।

२३५४. **बाई कैवतां रांड नीकळै ।**
ऐसा अनाड़ी आदमी जो कहना कुछ चाहे और मुँह से कुछ और निकल जाये ।
जिसे बोलने की भी तमीज न हो ।

२३५५ **बाई गैल घर आपै ई मिलज्या ।**
बाई के अनुरूप घर अपने आप ही मिल जाता है ।

२३५६. **बाई जाऊं जाऊं करै ही, बीरो लेवण नै आग्यो ।**
बाई जाने के लिए उत्सुक थी और भाई लेने आ गया ।

२३५७. **बाईजी चाल्या तो घणाई चटकै-मटकै, पण जा पड्या ।**
बाईजी चले तो खूब चटक-मटक से, लेकिन गिर पड़े ।

२३५८. **बाईजी पेट में सें तो नीकळ्या, पण हांडी में सें कोनी नीकळ्या ।**
बाईजी पेट में से तो निकले, लेकिन हँडिया में से नहीं निकल पाये ।
मध्य युग में अधिकतर राजपूत अपनी नवजात कन्याओं को मरवा डालते थे और उन्हें हँडिया में बन्द करके कहीं फिकवा दिया जाता था । यह प्रथा १९वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक चलती रही । बीकानेर के महाराजा रत्नसिंह ने सन् १८३७ ई० में गया यात्रा के समय अपने राजपूत सरदारों से नवजात कन्याओं को न मारने की प्रतिज्ञा करवाई थी ।

२३५९. **बाईजी महलां सें उतर्‌या, भोडळ को भळको ।**
बतळाया बोलै नईं, बोलै तो डबको ।
जो स्त्री शृंगार-पिटार तो खूब करे और ऐंठ में भी भरी रहे, लेकिन जिसे बोलने का भी सलीका न हो ।

२३६०. **बाई तो घणी ई सोवणी पण आंख में फूलो ।**
बाई खूबसूरत तो बहुत है, लेकिन आंख में फूला है ।
एक बड़ा ऐब सारे गुणों पर पानी फेर देता है ।

२३६१ **बाई नै बाई परणाई, कर सिणगार सासरै आई ।**
दोनूं ढूंगा एकै ढाळ, जै गोपाल जै गोपाल ।
जब स्त्री को पुंसत्वहीन पति मिल जाए ।
जब दोनों पक्ष एक जैसे गये–गुजरे हों ।

२३६२. **बाई बत्तीसी तो बीरो छत्तीसो ।**
भाई भी बहिन से घटकर नहीं है ।

सन्दर्भ कथा—एक भाई अपनी बहिन के घर गया । लेकिन बहिन बड़ी कंजूस थी । इसलिए जब भोजन का समय हुआ तो उसने उसके लिए खाना नही बनाया और एक थाली में थोड़े से गेहूँ और एक पानी का लोटा भाई के लिए भिजवा दिया । भाई के पूछने पर बहिन ने कहा कि सारी चीजें गेहूँ से ही बनती हैं, इसलिये यों समझो कि मैंने तुम्हारे लिये सभी खाद्य-पदार्थ सुलभ कर दिये । भाई निरुत्तर हो गया ।

कुछ समय बाद बहिन की लड़की का विवाह निश्चित हुआ । भाई भात भरने आया तो उसने एक थाली में थोड़ी सी धुनी हुई रूई रख कर बहिन को दे दी । बहिन के पूछने पर भाई ने उत्तर दिया कि सारे वस्त्र रूई से ही तो बनते है, इसलिये रूई के रूप में मैंने तुम्हारे लिए घाघरा, ओढना आदि सारे वस्त्र ला दिये है ।.
रू० बाई बीरां जोगी ई है ।

२३६३. **बाको बा'यो को बा' यो ई रहग्यो ।**
मुँह खुला का खुला रह गया । अवाक् रह गया । हां या ना कुछ नहीं कह पाया ।

संदर्भ कथा—एक जाट ठाकुर की कोटड़ी में मुजरा करने आया तो ठाकुर ने सोचा कि जाट से कुछ न कुछ हथियाना चाहिए । इसलिए उसने जाट से कहा कि बावो'सा तो स्वर्ग सिधार गये और घर में कुँअर का जन्म हुआ है । ठाकुर ने सोचा कि यदि जाट बावो 'सा की मृत्यु का दु:ख प्रकट करेगा तो इस पर कुँअर के जन्म पर खुशी प्रकट न करने की तोहमत लगा कर इससे कुछ ऐंठ लूंगा और यदि कुँअर के जन्म की खुशी पर हर्ष प्रकट करेगा तो बावो 'सा की मृत्यु पर खुश होने का दोष लगा कर कुछ हथिया लूंगा । लेकिन जाट भी सयाना था, वह ठाकुर की चाल को समझ गया और बोला कि बावो'सा का मरना और कुँअर सा'ब का जनमना, दोनों को सुनकर मेरा तो मुँह फटा का फटा रह गया, कुछ भी कहने की स्थिति में नहीं हूँ ।

२३६४. **बागळ कै बागळ पावणी, 'क एक डाळ कै तूं ईं लूमज्या ।**
किसी बागल के यहाँ दूसरी बागल मेहमान बनकर आई तो मेजबान बागल ने उससे कहा कि यहाँ और तो क्या धरा है, मेरी तरह तूभी एक डाल से लटक जा ।

वागळ – चमगीदड़ की तरह का एक जन्तु जो पैर ऊपर और सिर नीचा कर के औंधा लटकता है ।

२३६५ वागां में दाख पकै जद कागलां का कागलिया फूलज्या ।
दाख पकै जद काग कै होय कंठ में रोग ।

२३६६. वा चिड़कली कोनी जिकी हरड़दे उड़ज्या ।
यहाँ वह चिड़िया नहीं है जो जरा डराते ही झट से उड़ जाए ।
तुम्हारी भभकी का यहां कोई असर होने वाला नहीं है ।

२३६७. वाजी थाळी, डणरै करम री काळी ।
वाज्यो सूपड़ो, हुओ भूंपड़ो ।
किसी किसी जाति में लड़कियों का विवाह पर्याप्त रुपये लेकर किया जाता था । इसलिए घर में लड़की का जन्म होने पर जब छाज बजाया जाता था, तब तो इसे हर्षोल्लास का अवसर माना जाता था और लड़के के जन्म पर थाल का बजना उदासीनता पैदा कर देता था ।

२३६८ वाट चाये जिता घलाले, पतासो घालूं नी एक ।
तराजू में बटखरे चाहे जितने डलवालो, लेकिन बताशा तो एक भी नहीं डालूंगा ।
रू० (१) ढींगा चाये जितरा घलाले, पतासो घालूं नी एक ।
(२) वात चाये जिती करवाले, देऊं नी फूटी कोडी ।

२३६९. वाड़ कै सा'रै दूब वधै ।
वाड़ के सहारे से दूब बढ जाती है ।
समर्थ के सहारे से दुर्बल का पोषण हो जाता है ।

२३७०. वाड़ में मूत्यां किसो वैर नीकळै ?
दुश्मन की वाड़ में पेशाब कर देने मात्र से वैर का प्रतिकार थोड़े ही हो सकता है ?

२३७१. वाड़ लगाई खेत नै, वाड़ खेत नै खाय ।
वाड़ तो खेत की रक्षा के लिये लगाई जाती है, लेकिन जब स्वयं वाड़ ही खेत को खाने लगे, तब क्या हो ?
जब रक्षक ही भक्षक बन जाए ।
रू० राजा डंडै रीत नै रोवै किण डिग जाय ।
वाड़ लगाई खेत नै, वाड़ खेत नै खाय ।।

२३७२. वाडा वाडा राड़ क्यां की ? 'क आंख कै डोळै की ।
किसी ने 'वाडे' से पूछा कि किस बात की लड़ाई है, तो 'वाडे' ने उत्तर दिया—आंख के कोये की ।
वाडा = जिसकी आंख का कोया बराबर न हो ।
रू० काणा काणा राड़ क्यांकी ? 'क आंख कै कोये की ।

२३७३ **बाड़ी बारा हाट अठारा, घर बैंक्यां चौईस ।**

यदि मालिन की बाड़ी पर चीज लेने जाएँ तो बारह सेर के भाव, दुकान पर लें तो अठारह सेर के भाव और यदि वह स्वयं घर पर देने के लिये आये तो चौबीस सेर के भाव दे जाती है ।

२३७४ **बाण न छोडै बाणियों, जे सुरगापत जाय ।**
सायब सें सौदो करै, टक्को पीसो खाय ।।

वनियां लेन-देन की अपनी आदत को नहीं छोड़ता । यदि वह स्वर्ग में भी चला जाए तो वहाँ भी भगवान् से सौदा करके कुछ कमाने का प्रयत्न करता है ।

२३७५. **बाणियां पूरो तोलिये, 'क कोई हाट भी चढै ?**

बनिये ! पूरा तौलना ।

वनिये ने उत्तर दिया—तुम हाट पर चढो तब तो तौलूं ?

२३७६. **बणियें की ताखड़ी चाल्यां तो वो कैईं कै सा'रै कोनी रैवै ।**

बनिये की तकड़ी चलती रहे तो वह किसी की परवाह नही करता, अपना निर्वाह ठाट से कर लेता है ।

सन्दर्भ कथा—एक वनियां अपनी दुकान पर उदास मुँह बैठा था । गाँव का ठाकुर उधर से निकला तो उसने वनिये से पूछा कि सेठजी, आज उदास क्योंकर बैठे हो ? सेठ बोला कि क्या करें, तकड़ी ही नहीं चलती । इस पर ठाकुर ने बनिये से व्यंग्य में कहा कि कल से हमारे अस्तबल जा कर घोड़ों की लीद तौला करो, तुम्हारो तकड़ी चल जाएगी । सेठ ने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया और अगले दिन अस्तबल में जाकर प्रत्येक घोड़े की लीद तौल-तौल कर लिखने लगा । यह देख कर साईस असमंजस में पड़ गये । उन्होंने सेठ से लीद तौलने का कारण पूछा तो सेठ बोला कि तुम ठिकाने से पैसा तो पूरा लेते हो और घोड़ों को दाना कम देते हो, इसलिए लीद तौल कर इस बात की जांच-पड़ताल की जाएगी कि तुम कितना दाना कम देते हो । साईस वास्तव में चोरी करते थे, इसलिए सब ने मिल कर सेठ का महीना वांध दिया और उससे आग्रह किया कि वह इसकी शिकायत ठाकुर से न करे । दूसरी बार जब ठाकुर उक्त बनिये की दुकान के आगे से निकला तो वनियां प्रसन्नचित्त था, क्योंकि उसकी तकड़ी चल गई थी ।

२३७७. **बाणियें की बारा पुन्यूं होवै ।**

वनिये की बारह पूनो (पूर्णिमा) होती है, इनमें से एक भी सफल हो जाए तो वह निहाल हो जाता है ।

२३७८ **बाणियें की बेटी के जाणै मांस को सुग्राद ?**
बनिये की बेटी माँस के स्वाद को क्या जाने ?
जिस वस्तु से जिसका कभी कोई वास्ता ही न पड़े, उसके विषय में वह क्या जाने ?

२३७९. **बाणिये की मूंछ ऊंची तो ऊंची अर नीची तो नीची ।**

सन्दर्भ कथा—एक ठाकुर के पास कुछ रुपये इकट्ठे हो गये तो वह बड़ी ऐंठ जताने लगा । एक दिन वह पास के कस्बे में कुछ सामान खरीदने के लिए अपने घोड़े पर सवार होकर एक बनिये की दुकान पर गया तो बनिये ने भी अपनी मोंछों पर बल लगाया और बड़े रोब के साथ ठाकुर से बात की । इस पर ठाकुर जल गया और उसके मना करने पर भी जब बनियां नहीं माना तो उसने बनिये से कहा कि आज से हमारा और तुम्हारा वैर समझो और इसका निपटारा अमुक दिन होगा । बनिये ने ठाकुर की चुनौती स्वीकार करली और ठाकुर अपने गाँव चला गया । घर जाकर ठाकुर ने लड़ाई करने की तैयारी शुरू कर दी । उसने अपने सगे-सम्बन्धियों को भी बुला लिया और कई वैतनिक सैनिक इकट्ठे कर लिए । ठाकुर उन सब को खूब खिलाता-पिलाता । अन्त में लड़ाई का निश्चित दिन भी आ गया । ठाकुर अपने दल-बल सहित बनिये की दुकान पर पहुँचा और उसने बनिये को ललकारा कि आजाओ मैदान में, लेकिन बनिये ने कोई तैयारी नहीं की थी । उसने ठाकुर से कहा, ठाकुर सा'ब आपकी और मेरी कैसी लड़ाई ? आप को मेरी मोंछों का बल अखरता है तो मैं अभी खोल देता हूँ । यों कह कर बनिये ने अपनी मोंछों के बल खोल दिये और झगड़ा समाप्त हो गया । ठाकुर ने लड़ाई की तैयारी में अपना सारा धन बर्बाद कर दिया था और वह पछताता हुआ अपने आदमियों के साथ लौट गया ।

२३८०. **बाणियें कै काम को अर राम कै नांव को ओड़ कोनी ।**
बनिये के काम और भगवान् के नाम स्मरण की कोई इति नहीं ।

२३८१ **बाणियें को रोड़ै में, रजपूत को घोड़ै में अर बामण को कड़ाये में ।**
पैसा होने पर बनियां मकान बनाना चाहता है, राजपूत घोड़ा खरीदना चाहता है और ब्राह्मण तरह-तरह के पकवान खाना चाहता है ।

२३८२. **बाणियों कै तो आंट में दे, कै खाट में दे ।**
बनियां या तो फँस जाने पर देता है या बीमार पड़ने पर ।

२३८३. **बाणियों खाट में तो बामण ठाट में ।**
बनियां बीमार होता है तो ब्राह्मण की बन आती है ।
रू० बाणियों ठाट में तो बामण खाट में ।

२३८४. वाणियों मेवैं को रूंख होवैं ।
वनियां तो मेवे का वृक्ष होता है जो कुछ न कुछ देता ही रहता है ।

२३८५. वाणियो लिखै, पढै करतार ।
वनिये की लिखावट को ईश्वर ही पढ सकता है ।
वनियें प्राय: मुडिया में लिखते हैं जिसमें मात्रा आदि नहीं लगती और कई अक्षर एक जैसे ही लिखे जाते हैं, इसलिए उसे पढना बड़ा कठिन होता है ।

२३८६. बाण्यां तेरी बाण, कोई सक्यो न जाण ।
पाणी पीवैं छाण, अणछाण्यो लोई पीवैं ।।
हे वनियें ! तेरे स्वभाव को कोई नहीं जान पाता । तू पानी तो छान कर पीता है, लेकिन लहू को विना छाने ही पी जाता है ।

२३८७. बात कै 'तां बार लागै, संजोग पीतां बार कोनी लागै ।
बात कहने में तो देर लगती है, लेकिन संयोग मिलते देर नही लगती । संयोग मिले तो काम आनन-फानन में वन जाता है ।

२३८८. बातड़ल्यां घर ऊजड़ै, बातड़ल्यां घर होय ।
बात से ही काम वन जाता है, वात से ही विगड़ जाता है ।
रू० (१) वातां हाथी पाइये, बातां हाथी पांव ।
(२) बोली गधै चढावैं, वोली घोड़ै चढावैं ।
(३) बात बात सब एक है, पण बात-बात में फेर ।
वै हीं 'लो की कुस घड़ै, वै ही की समसेर ।।

२३८९. बात रैवै दिन बीतज्या ।
समय निकल जाता है, लेकिन बात रह जाती है ।
पद्य - साजन सिलो न खाइये, जे सोनै की बाळ ।
बात रैवै दिन बीतज्या, समय पलटज्या काळ ।।

२३९०. बातां का टक्का लागै ।
बातों के टके लगते है ।
इस प्रकार की अनेक लोक कथाएँ हैं कि जब एक सह-यात्री दूसरे से कहता है कि कोई बात कहो तो रास्ता कटे । इस पर दूसरा कहता है कि बातों के टके लगते है । तव वह टके देकर बातें सुनता है और उनकी सत्यता को आजमाता है ।

२३९१. बातां बीसर तो ब्या कोनी बीगड़न देंचां ।
वातों की कमी के कारण तो विवाह को विगड़ने नहीं देंगे और कोई सहयोग भले ही न दें ।

२३९२ **वातां सारू हर मिलै तो म्हांनै ई कहज्यो ।**
यदि वातें वनाने से ही भगवान् मिलते हों तो हमें भी वतलाना, हम भी मिल लेंगे ।

२३९३. **वाद तो रावण को ई कोनी चाल्यो ।**
दुराग्रह तो रावण का भी नहीं चल पाया, सामान्य आदमी की तो बात ही क्या है ?

२३९४. **वादळ की छायां सें कै दिन काम सरै ?**
वादल तो अस्थायी होता है, उसकी छाया से कितने दिनों तक काम चल सकता है ?

२३९५. **वादळ देख कर ई घड़ो फोड़ गेरचो ।**
आकाश में वादल को देख कर ही पास के घड़े को फोड़ डाला ।
अधिक प्राप्ति की आशा में पास की वस्तु भी नष्ट कर डाली ।

२३९६. **वादळ रैवै रात को वासी, तो जाणो चोखस 'मे आसी ।**
यदि वादल रात भर रह जाए तो जानो कि वर्षा अवश्य आयेगी ।

२३९७. **वान वनोरा पोती खा, फेरां की वरियां दादी तूं जा ।**
'वान-वनोरे' तो पोती खाती है और फेरों के वक्त दादी से कहती है कि फेरे करवाने तू चली जा ।

२३९८. **वाप अर वात एक ई होवै ।**
वाप और वचन एक ही होता है ।

२३९९. **वाप कै धन सौंत को, वेटी नै देसी रीत को ।**
वाप के घर में चाहे कितना ही धन हो, लेकिन वेटी को हिसाव से ही दिया जाता है ।

२४००. **वाप न मारी ऊंदरी, वेटो तीरदाज ।**
वाप ने तो कभी चुहिया भी नहीं मारी और वेटा तीरन्दाज वना फिरता है ।
रू० वाप न मारी लूंकती वेटो गोळंदाज ।

२४०१. **वावू वड़ो न भइयो, सव सें वड़ो रुपइयो ।**
न वावू वड़ा है, न भैया; सवसे वड़ा रुपैया है ।

२४०२. **वावै को तो वैरी ई पड़चो हूं ।**
वावा का तो दुश्मन ही हूँ ।

संदर्भ कथा—एक लड़का अपनी वहादुरी की वड़ी शेखी वघारा करता, लेकिन उसका वावा हँस कर टाल दिया करता था । एक दिन लड़का अपने वावा की तलवार लेकर और ऊंट पर सवार होकर किसी गाँव गया । उसका वावा शाम को उसी रास्ते पर डाकू का वेश वना कर एक टीले के ऊपर वैठ

गया । जब लड़का लौटा और अंधेरा होते होते उस टीले के पास पहुँचा तो डाकू बने बाबा ने अपनी बदली हुई आवाज में ऊंट-सवार को ललकारते हुए कहा कि जान प्यारी हो तो ऊंट और तलवार वहीं छोड़ दो । लड़का डर गया और दोनों चीजें उसे सौंप कर पैदल ही घर की ओर चल पड़ा । बाबा ऊंट पर सवार हुआ और दूसरे रास्ते से घर आ गया । उसने तलवार तो खूंटी पर टांग दी और ऊंट को पिछवाड़े बांध दिया ।

कुछ रात गये जब लड़का घर पहुँचा तो बाबा ने पूछा की ऊंट कहाँ है ? लड़का उदास होकर बोला कि क्या बताऊं बाबा, आज तो बीस डाकू एक साथ ही मिल गये । मैंने चार-पांच को तो धराशायी कर दिया, लेकिन वे संख्या में अधिक थे, इसलिए ऊंट को तो वे ले गये । लेकिन जब लड़के को इस बात का पता चला कि यह तो बाबा ही था, तो उसने क्रोध में भर कर कहा कि यदि उस वक्त यह पता चल जाता कि डाकू के वेश में तुम्हीं हो तो तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े ही कर डालता ।

२४०३. बाबै सूँ ई बाई ?

सन्दर्भ कथा—एक लड़की बड़ी वाचाल थी । इसलिए कोई युवक उसके साथ शादी करने को तैयार नहीं होता था । आखिर एक युवक ने हां भरी और विवाह हो गया । जब दूल्हा-दुलहिन बहली में बैठे जा रहे थे तब कन्या पक्ष वालों की ओर से दिये गये 'पापड़-मूंगोड़ी' के 'माट' (चौड़े मुँह के मिट्टी के बड़े घड़े) परस्पर भिड़-भिड़ कर आवाज करने लगे । दूल्हे ने उन्हें चुप रहने का आदेश दिया, लेकिन वे क्या मानते ? तब उसने फिर कड़ी आवाज में उनसे कहा कि मुझे जरा भी बड़बड़ाना नहीं सुहाता, या तो चुप हो जाओ, नहीं तो तुम्हें फोड़ डालूंगा । परन्तु जब वे नहीं माने तो वह लाठी लेकर बहली से उतरा और उसने उन मटकों को फोड़ डाला । इससे दुलहिन के मन में भय बैठ गया और उसका बोलना अत्यंत सीमित हो गया । वह पति की आज्ञा में चलने लगी । पति ने उसे समझा रखा था कि जब घर में कोई मेहमान आये और मैं दाईं आंख से इशारा करूं तो उसे खिचड़ी में घी डाला करो और बाईं आंख से इशारा करने पर तेल । वह वैसा ही किया करती । एक बार उसका बाबा उससे मिलने के लिए आया तो पति ने बाईं आंख का इशारा किया । इस पर उससे न रहा गया और बोल पड़ी कि क्या बाबा से भी बाईं ?

२४०४. बाबो गयो नौ दिन, नौ आया एक दिन ।

बाबा नौ दिनों तक दूसरों के यहाँ खाना खाने गया, लेकिन उसके यहाँ नौ आदमी एक ही दिन आ गये । हिसाब बराबर हो गया—

वावो गयो नौ दिन, नौ आया एक दिन ।
लेखो करचो मन परचायो, वावो कित गयो न आयो ।।

२४०५. **वावो गयो बीज नै अर सिट्टा पाक्यां आयो ।**
वावा गया तो था खेत में वोने के लिए बीज लाने और सिट्टे पकने पर लौटा ।

२४०६. **वावो घरे आणो चाये, भलाईं गैलै-गैलै आओ, भलाईं छप्पर फाड़ कर ।**
वावा घर पर आना चाहिए, भले वह किसी रास्ते से आये ।
काम होना चाहिए, भले वह किसी जरिये से हो ।

२४०७. **वावोजी ! आज संख तो सुदियां बजायो ?**
'क दुआरकाजी में टक्का नौ दिया है, मेरै जचै जद बजाऊं ।
जव किसी ने वावाजी से कहा कि आज तो कुछ जल्दी शंख वजा दिया तो वावाजी ने उत्तर दिया कि मैंने द्वारकाजी में इसे नौ टके देकर खरीदा है, अव मैं अपनी इच्छा हा तभी वजा सकता हूँ ।

२४०८. **वावोजी की झोळी में जेवड़ा ।**
वावाजी की झोली में तो केवल रस्सियां ही निकलीं ।
वावाजी एक दम कोरे, नाम मात्र के वावाजी निकले, सिद्धि या चमत्कार कुछ नहीं ।

२४०९. **वावोजी को नांव के ? 'क बैंगण पुरी ।**
जद तो बावोजी का वावोजी अर तरकारी-रोटी भी सागै ।
किसी भक्त के पूछने पर वावाजी ने अपना काम बैंगनपुरी वतलाया तो भक्त खुश होकर बोला-वाह ! वावाजी के वावाजी और तरकारी व रोटी साथ में ।

२४१० **वावोजी, तिलक तो चौड़ा काढ्या, 'क सूक्यां फाटसी ।**
वावाजी अपने तिलक तो वहुत चौड़े निकाले ?
वावाजी ने उत्तर दिया कि सूकने पर फटेंगे (सूकने पर पता चलेगा) ।

इसके पीछे एक नायक की कथा है जो छाज आदि वनाने का काम किया करता था और दिन में साधु का स्वांग वना कर भिक्षाटन के लिए जाया करता था । एक दिन उसने वची हुई वाध (चमड़े की डोरी) अपने माथे पर लपेट ली और जव साधु का वेश वनाने लगा तो वाध को उतारना भूल गया एवं उसी के ऊपर चंदन का लेप कर लिया ।

२४११. **वावोजी ! धूणी तापो हो ?**
'क वच्चा, काया ई जाणै है ।
किसी ने महात्माजी से पूछा कि महात्माजी आप धूनी तप रहे हैं ? महात्मा ने उत्तर दिया कि मुझ पर जो वीत रही है, उसे काया ही जानती है ।

२४१२. **बावोजी ! भडारै में कुत्तो बड़ग्यो ।**
'क जड़दचो, जिको आगलै घर सें भी खोटी होज्या ।
चेले ने मठाधीश से कहा कि बाबाजी, मंडार में कुत्ता घुस गया । लेकिन भंडार घर तो सर्वथा खाली था, इसलिए बाबाजी बोले कि कुत्ते को अन्दर ही बन्द कर दो कि जिससे यह दूसरे घर जाकर भी कुछ खा न पाये ।

२४१३ **बावोजी ! हरजस गावो । 'क रोणै सें धापां जद नीं ।**
बाबाजी, हरिजस गाइये । कि रोने से फुरसत मिले तब न गायें ।
अन्य झंझटों से अवकाश मिले तो भगवान् का भजन करें ।

२४१४. **बाबो बेचूं हूं । 'क बावै नै वेच्या करै है के ?**
'क मोल इसो कैस्यूं, जिको कोई लेवै ई कोनी ।
एक ने कहा कि अपने बाबा को बेच रहा हूं । दूसरे ने कहा कि कहीं बाबा को भी बेचा जाता है ? इस पर पहले ने जवाब दिया कि बाबा की कीमत ऐसी लगाऊंगा कि कोई खरीद ही न सके ।

२४१५. **बाबो मरचो टीमली जाई, रैया तीन का तीन ।**
बाबा मरा तो टीमली (लड़की का नाम) पैदा हो गई, रहे वेही तीन के तीन ।

२४१६ **बाबो सैनै लड़ै, बाबै नै कुण लड़ै ?**
बड़ा होने के कारण बाबा तो सबको डांटता है, लेकिन बाबा को कौन डांटे ?
रू० बावो सैं नै मारै, बावै नै कुण मारै ?

२४१७. **बामण कह छूटै, बळद बह छूटै ।**
बैल जमीन को जोत कर छूट जाता है और ब्राह्मण कह कर ।

२४१८. **बामण कै हाथ में सोनै को कचोळो ।**
अन्य कोई आजीविका न होने पर ब्राह्मण माग कर ही अपना निर्वाह कर लेता है ।
रू० बामण हाथी चढ्यो ई मांगै ।

२४१९. **बामण को जी लाडू में ।**
ब्राह्मण के प्राण लड्डू में बसते हैं ।
रू० वातां रीझै बाणियों, रागां सें रजपूत ।
बामण रीझै लाडुवां, बाकळ रीझै भूत ।।

२४२०. **बामण नै दी बूढी गाय, धरम नईं तो दाळद जाय ।**
ब्राह्मण को बूढी गाय दान में दी । इससे यदि पुण्य लाभ न भी हुआ तो भी बूढी गाय को खिलाने-पिलाने से तो पिण्ड छूटा ।

२४२१. **बामण नै बतळायो, लैरां लाग्यो आयो ।**
ब्राह्मण को बतलाते ही वह कुछ प्राप्ति की आशा में पीछे लग जाता है ।

२४२२. **बामण सीरी मत करै, खेती विना ईं सार ।**
वो जीमैगो जीमणां, तूं काढैगो गाळ ।।

सन्दर्भ कथा—एक जाट ने एक ब्राह्मण के साझे में खेती की। जाट तो रोज खेत में काम करता था, लेकिन ब्राह्मण को भोजन का निमंत्रण मिल जाता तो वह जीमने चला जाता और इतना खा आता कि फिर उससे कोई काम न होता। आसोज का महीना आया। फसल पक कर तैयार हो गई, लेकिन उधर श्राद्ध पक्ष लग गया, ब्राह्मण नित्य न्योता जीमने लगा और इधर जाट उसे कोसता ही रहा।

२४२३. **बामण सें बामण मिल्यो, पूरबलै जलम का संस्कार ।**
देण लेण नै कुछ नईं, नमसकार ई नमसकार ।।

पूर्व जन्म के संस्कारों से दो ब्राह्मण परस्पर मिले तो दोनों एक दूसरे को नमस्कार ही नमस्कार करते हैं। देने-लेने को किसी के पास कुछ नहीं।

२४२४. **बारठ जी को तो बस आंगळो आंगळो ई है ।**

सन्दर्भ कथा एक बारहठ के घर में कसाला था। लेकिन गाँव में उस की प्रतिष्ठा अच्छी थी। एक बार कोई मेहमान उसके घर आया तो उसने दूसरों के यहाँ से सारी चीजें मांग कर मेहमान की अच्छी खातिर कर दी। रात को जब वह मेहमान को दूध पिलाने के लिए दूध के कटोरे में चीनी मिलाने के लिए अपनी उँगली फिरा रहा था तब मेहमान ने बारहठ से कहा कि बारहठजी, आपने तो मेरी बड़ी अच्छी खातिर की है। इस पर बारहठ बोला कि बारहठजी की तो यह उँगली ही है जिसे दूध के कटोरे में चला रहा हूँ, शेष सारी चीजें तो मांगी हुई ही हैं।

२४२५. **बार बडा 'क त्यूंहार ?**

बार बड़ा या त्यौहार ?
सामान्य तौर पर भले ही किसी वार को किसी विशिष्ट काम के करने का निषेध हो, लेकिन यदि उस दिन कोई त्यौहार हो तो वार की अड़चन नहीं मानी जाती।

२४२६. **बा'रा कोसां बोली पळटै, बनफळ पळटै पाकां ।**
सौ कोसां तो साजन पळटै, लखण न पळटै लाखां ।।

स्थान और समय परिवर्तन के साथ सब चीजों में बदलाव आ जाता है, लेकिन मनुष्य की आदत नहीं बदलती।

२४२७ **बारा बरस काठ में रैयो, घड़ी कै ताईं पग तुड़ायो ।**

बारह वर्षों तक काठ में रहा और मुक्त होने का समय आया तो शीघ्र छूटने की उतावली में पैर तुड़वा बैठा।

काठ=यह दो तराशे हुए लकड़ों से बनाया जाता था। दोनों के बीच में छेद होते थे और इन छेदों में अपराधी के पैर डाल कर दोनों लकड़ों को कस देते थे।

२४२८. **बारा बरस सें बांझ व्याई, पूत ल्याई पांगळो।**
बारह वर्ष बाद तो बांझ ने पुत्र प्रसव किया और वह भी पंगु।

२४२९. **बारा बरस सें बाबो बोल्यो, बोल्यो—पड़ैं अकाळ।**
बारह वर्ष बाद अपना मौन भंग करके बाबा बोला तो यही बोला कि अकाल पड़ेगा।
रू० कै तो बाबो बोल्यो ई कोनी अर बोल्यो तो घरकां नै खाऊं।

२४३०. **बारा बामण बारा बाट, बारा खाती एकैं घाट।**
बारह ब्राह्मण एकत्र होते हैं तो सब अलग-अलग मत प्रकट करते हैं, लेकिन बारह खाती एकत्र होते हैं तो वे एक ही वाणी बोलते हैं।

२४३१. **बारा मुट्ठी, एक लप।**
सर्वथा मूर्ख।
रू० आठूं गांठां ऊत।

२४३२. **बारी आयां बूढळी नाचै।**
अपनी बारी आने पर बुढ़िया भी नाचेगी।

२४३३. **बारै बरसै, घर का तरसै।**
बाहर तो माल लुटाये और घर वाले तरसते रहें।

२४३४. **बाळ उपाड़्यां किसा मुरदा हळका होवै ?**
बाल उखाड़ने से मुरदे थोड़े ही हलके हो जाते हैं ?

२४३५. **बाळकां वेद, बूढां व्याकरण।**
वेद मंत्रों को तो बालक भी कंठाग्र कर लेते हैं, लेकिन व्याकरण के भेदों को बड़े ही समझ पाते हैं।
रू० गळ में घालै गूदड़ी, निहचै मांडै मरण।
घो ची ली पू जद करै, जद आवै व्याकरण।।
घो = घोखना, रटना। चि = चितारना, चिंतन करना। लि = लिखना। पू = पूछना।

२४३६. **बाळूं सोनो कान जो तोड़ै।**
ऐसे सोने को जला देना ही अच्छा जो कान तोड़े।
रू० जद की परणी तद की परखी, कदे नै बोलै मन की हरखी।
जद बतळाऊं कड़की बोलै, बाळूं सोनो कान जो तोड़ै।।

२४३७. बावळा गाँव मत बाळिये, 'क भली चितारी ।

किसी ने पागल से कहा कि गाँव न जला देना तो पागल बोला कि यह तो अच्छी याद दिलाई ।

रू० बावळा लाय ना लगाई, 'क यारां तो एक नई सिखाई ।

२४३८. बावळी ही अर भूतां खदेड़ी ।

पगली तो थी ही और फिर भूत पीछे लग गये ।

रू० बावळो अर भांग पीलो ।

२४३९. बास छोड, पड़ बास क्यूं ?

पड़ोस की उपेक्षा करके दूर वालों को क्यों ?

२४४०. बिंदरावन में रैं'णो, राधे गोविंद कैं'णो ।

जो वृन्दावन में रहेगा, वह राधे-गोविन्द कहेगा ।

२४४१. बिंधग्या सो मोती ।

जो बिंध गये सो मोती ।

२४४२. बिगड़ी तो चेली बिगड़ी, बावोजी तो सिध का सिध ।

भ्रष्ट और बदनाम हुई तो चेली हुई, बाबाजी तो सिद्ध के सिद्ध ।

२४४३. बिगड़ी बणावै बाणियों ।

बनियां बिगड़ी हुई बात को भी बना लेता है ।

रू० बणी बणावै बाणियों ।

२४४४. बिगड़्योड़ो तीवण सुधरै कोनी ।

बिगड़ा हुआ तीवन सुधरता नहीं ।

तीवण = शाक-सब्जी, दाल, कढ़ी आदि ।

बिगड़ी हुई संतान सुधरती नहीं ।

२४४५. बिच्छू को झाड़ो तो जाणै ई कोनी अर सांप की वांवी में हाथ घालै ।

बिच्छू का झाड़ा तो जाने ही नहीं और सांप की वांवी में हाथ डाले ।

२४४६. बिणज करैगा बाणियां ।

व्यापार-वाणिज्य तो बनिये ही करेंगे ।

संदर्भ कथा—एक सेठ के घर के पड़ोस में एक पंडितजी रहते थे । उन्होंने सेठ से पूछा कि आप इतना धन कैसे कमाते हैं ? सेठ ने कहा कि हम तो व्यापार करते हैं, उसी से पैसा बढ़ता है । पंडितजी ने फिर पूछा कि मैं किस चीज का व्यापार करूं तो सेठ ने कहा कि आप तो पंडित हैं, इसलिए पत्रों का व्यापार ही कर लीजिए । पंडित ने बहुत सारे पत्रे छपवा लिए लेकिन पहले से जो पत्रे (पंचांग) प्रचलित थे, उनके सामने इन नये पत्रों को कौन पूछता ? पत्रे बिके नहीं और साल पूरा होने को आया तो पंडितजी बोले—

विणज करो रे वाणियों, म्हे विणजां सें धाया ।
अब कै जै पतड़ा विकज्या तो औरूं गंगा न्हाया ।।

रू० विणज करैगा वाणियां और करैगा रीस ।

२४४७. **विनां बजाई बाजै है ।**

यह तो विना बजाये ही बज रही है ।

सन्दर्भ कथा—एक रात को कुछ चोर एक गाने-बजाने वाले के घर में घुसे । वहाँ चोरों को और कुछ नहीं मिला तो एक ने ढोलक उठाली, दूसरे ने सारंगी और तीसरे ने इकतारा ले लिया । इतने में जाग हो गई और चोर भाग छूटे । घर वालों ने और पास पड़ौस के लोगों ने भी उनका पीछा किया । चोर एक खेत में घुस गये । खेत में फसल पकी खड़ी थी और बाजरी के सिट्टे इतने घने थे कि रास्ता पा सकना कठिन था । जिसने गले में ढोलक डाल रखी थी, वह तो और भी कठिनाई से आगे बढ रहा था । जैसे तैसे वह भागता था, बाजरे के सिट्टे ढोलक पर तड़ातड़ पड़ते और ढोलक बजती जाती थी । उसके साथियों ने उससे पुकार कर कहा कि तू ढोलक न बजा, क्योंकि ढोलक की आवाज को लक्ष्य करके ही वे लोग हमारा पीछा कर रहे हैं । इस पर ढोलक वाले ने कहा कि मैं कहाँ बजा रहा हूँ, यह तो विना बजाये ही बज रही है ।

रू० गळै पड़ी बाजै है ।

२४४८. **विनां बाप को छोरो बिगड़ै, बिना माय की छोरी ।**

बिना बाप का पुत्र और बिना मां की लड़की बिगड़ जाती है ।

२४४९. **विनां मनां का पावणां, तनै घी घालूं 'क तेल ?**

अनचाहे मेहमान को भोजन में घी डालूं या तेल ?

रू० (१) तेरो गयो टपकलो, मेरी गई हमेल ।
बिनां मनां का पावणां, तनै घी घालूं 'क तेल ।।

(२) विनां मनां का पावणां, बिन जीम्यां ई जाय ।

२४५०. **बिनां रोये तो मा ई बोबो कोनी दे ।**

विना रोये तो माँ भी शिशु को स्तन पान नहीं कराती ।

२४५१. **विभीषण बिनां भेद कुण बतावै ?**

विभीषण के बिना लंका का भेद कौन दे ?
अपने वाला ही शत्रु को भेद देता है ।

२४५२. **बिलाई को मन मळाई में ।**

बिल्ली का मन हर समय मलाई में रहता है ।

२४५३. **बिल्ली आळी चाल तो सिखाई ई कोनी ।**

बिल्ली वाली चाल तो सिखलाई ही नहीं ।

सन्दर्भ कथा—एक बार एक शेरनी ने अपने बच्चे को शिकार आदि की चाल (पैंतरे) सिखलाने का भार बिल्ली मौसी को सौंपा। बिल्ली ने उसे अनेक दांव-पेंच सिखला दिये। लेकिन जब सिंहनी का बच्चा कुछ बड़ा हुआ तो वह एक दिन बिल्ली पर ही झपटा। बिल्ली झट से उछल कर वृक्ष पर चढ गई। शेर का बच्चा देखता ही रह गया और उसने उपालंभ के स्वर में बिल्ली से कहा कि मौसी, तूने यह चाल तो मुझे सिखलाई ही नहीं। इस पर बिल्ली ने उत्तर दिया कि यदि यह चाल सिखला देती तो आज जीवित कैसे रह पाती ?

२४५४. **बिल्ली की चाल जाणो, कुत्तै की चाल आणो**
किसी काम के लिये जाते समय बिल्ली की चाल से जाना चाहिए और लौटते समय कुत्ते की चाल से लौटना चाहिए।

२४५५ **बिल्ली कै पेट में घी कोनी पचै।**
बिल्ली के पेट में घी नहीं पचता।

२४५६ **बिल्ली कै भाग को छींको टूटगो।**
बिल्ली के भाग्य से ही छींका टूट गया।

पद्य—सोक मुई न पिव घर आया, मन का चींत्या फळ पाया।
दुरजण केरा हिवड़ा फूटा, बिल्लै भागै छींका टूटा॥

२४५७. **बिल्ली बजारिया तो घणां ईं करले, पण कुत्ता करण दे जद नीं ?**
बिल्ली बाजार की सैर तो खूब करले, लेकिन कुत्ते करने भी दें ?

२४५८. **बिस दे देणो, पण बिसवास नईं देणो।**
विष देने की अपेक्षा विश्वासघात करना अधिक बुरा है।

२४५९. **बीघै बीघै भूत, बिसवै बिसवै सांप।**
राजस्थान की मरु-भूमि में बीघे-बीघे पर भूत एवं बिस्वे-बिस्वे पर सांप रहते हैं।

२४६०. **बीज जिसो ई फळ।**
जैसा बीज, वैसा फल।

२४६१. **बीजावरगी बाणियें, दूजो गूजर गोड़।**
तीजो मिलज्या दायमो, करै टापरो चोड़॥
ये तीनों मिल जाएँ तो फिर घर को बर्बाद करके ही छोड़ते हैं।

२४६२. **बीन कै मूंडै लाळ पड़ै, जद जनेती के करै ?**
जब दूल्हे के मुँह से ही लार गिरती हो तब बराती क्या करें ?
जब मुखिया ही निकम्मा हो तब उसके पीछे चलने वाले क्या करें ?

२४६३. बीन बिना किसी बरात ?

दूल्हे के विना कैसी वरात ?

२४६४. बीन मरो चाये बीनणीं, बामण का टक्का त्यार है।

चाहे दूल्हा मरे चाहे दुलहिन, ब्राह्मण तो अपने नेग के टके ले लेता है।

रू० वामण तो हथलेवो जुड़ाणें को सीरी है।

२४६५. बीबी तुझै हँसली घड़ादयूं ? मियां मोकूं नाज।

मियां के घर में घाटा था और दो जून रोटी भी नसीब नहीं होती थी, लेकिन जब उसने बीबी से हँसली (गले का एक आभूषण) घड़वा देने के लिए पूछा तो बीवी बोली कि मुझे तो खाने के लिये अनाज ला दो।

रू० बीबी तनै हमेल ? 'क मियां मोकूं नाज।

२४६६. बुध पैरै बागा, कदे न रैवै नागा।

जो बुधवार को नया वस्त्र धारण करता है, वह कभी नंगा नहीं रहता।

२४६७. बुध बावणी, सुक्कर लावणी।

बुधवार को हल जोतना चाहिए और शुक्रवार को फसल काटनी चाहिए।

२४६८. बुध बिनां बिदया बापड़ी।

बुद्धि के विना विद्या निरीह होती है।

रू० बळ विनां बुध बावळी।

२४६९. बूडळी नै पापड़ बेलतां बोळा दिन होग्या है।

बुढिया को पापड़ बेलते बहुत दिन हो गये हैं।

इसे ना-समझ मत जानो।

२४७०. बूढ घोड़ी कै लाल लगाम।

बुढापे में अधिक बनाव-शृंगार करना भद्दा लगता है।

रू० (१) गये जोबन डंबर करै, सो माणस अग्यान।

(२) संन्यासी घर मांडियो, नवरंगी नार परणियो।

बुढापै भिसळयो डोकरो, बूढी गाय गळ टोकरो॥

२४७१. बूढां बरकत होवै।

बूढों से ही बरकत होती है।

संदर्भ कथा—एक बारात में सब छैल-छबीले युवक ही बराती बनकर गये। उन्होंने किसी बूढे को साथ नहीं लिया। लेकिन एक बूढा ऊँट के बोरे में छुप कर उनके साथ चला गया। उधर कन्या पक्ष वालों ने वरातियों की परीक्षा लेने हेतु उनसे कहलवाया कि सौ गांठों वाला थांभ भेजिये। किसी युवक की समझ में नहीं आया कि अब क्या किया जाए। तब बूढे ने बोरे में से निकल कर कहा कि डाभ का एक तिनका भेज दो। ऐसा ही किया

गया और कन्या पक्ष वाले मान गये। इस प्रकार बूढे ने सबकी लाज रखली।

२४७२. **बूढै को अर बाळक को मन एकसो होवै ।**
बूढ़े और बालक का मन एक जैसा होता है।

२४७३. **बूढै बळद नै अर बूढै माइत नै जोतले जितरो ई लावो।**
बूढे बैल से और बूढे माँ–बाप से जितना काम ले लें वही नफे में।

२४७४. **बूर को लाडू खावै सो पिसतावै, न खावै सो पिसतावै ।**
बूर का लड्डू खाये सो भी पछताये, न खाये सो भी पछताये।
रू० काठियो लाडू खावै सो पिसतावै, न खावै सो पिसतावै।

२४७५. **बेईमान का घोड़ा मैदान में थकै ।**
बेईमान के घोड़े मैदान में हार जाते हैं।

२४७६. **बे का घाल्या टळै कोनी ।**
विधाता के अंक झूठे नहीं होते।
इस संदर्भ की अनेक कथाएँ लोक प्रचलित हैं।
रू० (१) बे का घाल्या ना टळै, टळै रावण का खेल।
रैई कुंआरी डूमणी, घाल पटां में तेल ॥
(२) हर लिख्या सो बे लिख्या, लिख लिख घाल्या अंक।
राई घटै न तिल वधै करल्यो कोड़ जतन्न ॥
(३) बे का घाल्या ना टळै, छठी रात का अंक।
राई घटै न तिल वधै, रह तू जीव निसंक ॥
(४) हिरण खुरी दो आंगळी, धरती लाख पसाव।
बे का घाल्या ना टळै, जां फांसी तां पाव ॥

२४७७. **बेटा स्याणो होई, 'क बापू फोड़ां सारू ।**
बाप ने बेटे को सीख दी कि बेटे सयाने होना। बेटे ने उत्तर दिया कि पिताजी, जितनी मुसीबतें आयेंगी, उन्हीं के अनुसार सयाना बनता जाऊंगा।

२४७८. **बेटा होया स्याणा, दाळद गया पुराणा ।**
बेटे सयाने (कमाने वाले) हुए तो घर का पुराना दारिद्रय चला गया।

२४७९. **बेटी अर जंवाई तो रूसेड़ा चोखा ई ।**
बेटी और दामाद रूठते हैं तो अच्छा ही है, उन पर होने वाले व्यय की बचत हो जाएगी।

२४८०. बेटी और बळद जूओ कोनी गेरै ।
बेटी और बैल बंधन में ही रहते है ।
रू० मुँह सें कीं बोलै नईं, करो किसी कै गैल ।
पराधीन दोनूं सदां, जग में बेटी बैल ॥

२४८१. बेटी की खुराक गिण्यां, जुंवाई आळी बट्टै में वै' ज्या ।
घर में बेटी के लिए तो अन्य सदस्यों की तरह सदैव सामान्य खाना ही बनाया जाता है और दामाद के लिए विविध प्रकार के व्यंजन बनाये जाते हैं । लेकिन बेटी की खुराक का हिसाब लगायें तो दामाद की खुराक बट्टे मे चली जाती है ।

२४८२. बेटी की मा राणी, भरै बुढापै पाणी ।
यदि किसी स्त्री के सब बेटियां ही हों तो उसे बुढापे में पानी भरना पड़ता है, क्योंकि बेटियां सुसराल चली जाती है और बेटा न होने से घर में बहू आती नहीं ।

२४८३. बेटी जाई जिको पंगात्यां बैठसी ।
बेटी वाला चाहे कितना ही बड़ा क्यों न हो, बेटे वाले से नीचे ही बैठता है । यही स्थिति रामायण काल में भी थी—संसार में कन्या के पिता को चाहे वह भूतल पर इन्द्र के तुल्य ही क्यों न हो, वर पक्ष के लोगों से अपमान उठाना पड़ता है (देखें, वा. रामायण, अयोध्या., ११८।३५) ।

२४८४. बेटी जाय जमारो हारचो ।
जिसके यहाँ बेटी जन्मी, उसका जन्म लेना ही व्यर्थ हो गया ।
महाभारत में भी बेटी को संकट माना गया है—आदि पर्व, १५८।११
रू० बेटी जाई रै जगनाथ, जैको हेटै आयो हाथ ।

२४८५. बेटी बाप कै घरे कोनी खटावै ।
बेटी बाप के घर में नहीं खटा सकती ।
रू० (१) बेटी मा कै पेट में खटाज्या, बाप कै आंगणै में कोनी खटावै ।
(२) बेटी अर माल घर में कोनी खटावै ।

२४८६ बेटी हांते की सीरी होवै पांती की कोनी होवै ।
बटी के माँ बाप स्वेच्छा से जो दे दें, उसी पर बेटी का अधिकार होता है । बेटों की तरह घर में उसका बटवारा नहीं होता ।

२४८७. बेटै सें बेटी भली, जै कोई होय सपूत ।
निकम्मे बेटे की अपेक्षा तो सुयोग्य बेटी ही अच्छी ।
इस संदर्भ की एक अर्द्ध ऐतिहासिक कथा बड़ी प्रसिद्ध है जिसके अनुसार गढ चौटाला के ठाकुर 'अड़सी' (अरसी = अरिसिंह) के कोई पुत्र नही था, केवल ल्हालर नाम की एक कन्या थी। लेकिन ल्हालर बड़ी चतुर एवं

दिलेर थी और उसने अपने पिता की दोनों अन्तिम इच्छाओं को पूर्ण किया था—

अड़सी कै ल्हालर नईं होती, अड़सी जातो ऊत ।

२४८८. **वेस में सें कांचळी नीकळघावै, पण कांचळी में सें वेस कोनी नीकळै ।**

वेस में से कंचुकी निकल सकती है, लेकिन कंचुकी में से वेस नहीं निकल सकता ।

वेस = स्त्री की पूरी पोशाक—घाघरा, ओढ़ना और चोली या कब्जा आदि ।

२४८९. **वेसां चाली सासरै, सात घरां संताप ।**

वेश्या सुसराल चली तो उसके अनेक चहेते संतप्त हो उठे ।

२४९०. **वेई घोड़ा, वेई मैदान ।**

फिर वे ही घोड़े और वही मैदान ।

२४९१. **वै चिड़कली कोनी जिको हरड़क देसी उडज्या ।**

यह वह चिड़िया नहीं जो जरा डराते ही हरड़ से उड़ जाए ।

तुम्हारी भभकी का यहाँ कोई असर होने वाला नहीं है ।

२४९२. **बैठ्यो मोजां मार सिपाइड़ा, कदे'क डाळो नूं जासी ।**

भगवान् के भरोसे बैठे मौज करो, कभी न कभी काम बन ही जाएगा ।

२४९३. **वै पाणी मुलतान गया ।**

अब वह बात वापिस नहीं आने की ।

रू० (१) प्यावत ही जद पिया नहीं, तैं जोगी अभमान किया ।
भटक्यां साधु फिरो दिवाना, वै पाणी मुलतान गया ।।

(२) गैली पैली समझी नईं, मैंदी का रंग कहां गया ।
अब प्रेम नहीं उस प्यारी सें, वै पाणी मुलतान गया ।।

२४९४. **वैम की दारू कोनी ।**

वहम की कोई दवा नहीं ।

रू० वैम की दारू लुकमान हकीम पां ईं कोनी ।

२४९५. **वैराग को के म्हूरत ?**

वैराग्य का क्या मुहूर्त ?

सन्दर्भ कथा—एक राजा के चार रानियां थीं । एक दिन उसके साले की पत्री आई कि मेरे सोलह रानियां हैं और मैं प्रत्येक रानी से एक-एक दिन मिल कर १६ दिनों बाद वैराग्य ले लूंगा । राजा उस समय नहा रहा था और उसकी पट्टरानी उसको नहला रही थी । अपने साले की पत्री पढ कर राजा ने व्यंग्य से कहा कि वैराग्य का भला क्या मुहूर्त, पता नहीं कि १६ दिनों में क्या हो ? अपने भाई के प्रति रानी इस व्यंग्य को नहीं सह सकी और तुनक कर बोली कि मेरा भाई तो ऐसा वैरागी नहीं है, लेकिन

आप तो हैं न ? रानी की बात सुन कर राजा नहाते हुये ही उठ खड़ा हुआ और जंगल की ओर चल पड़ा। उसकी चारों रानियों ने उसे रोकने का बड़ा प्रयत्न किया लेकिन वह नहीं रुका।

२४९६. **वैरी कै घर घोड़ो बंधियो, न मरियो, न चुरयो, न बिकयो, खड़्यो-खड़्यो ई चरियो।**

वैरी के घर ऐसा घोड़ा बंधे जो न मरे, न जिसे चोर ले जाएँ, न विके, केवल खड़ा-खड़ा चरता ही रहे।

२४९७. **वो ई कुंहाड़ो, वो ई बंसो।**

वही कुल्हाड़ा और वही बेंट।

संदर्भ कथा—किसी गाँव में 'बावळी माता' की बड़ी मान्यता थी। चोरी करने वाले का हाथ माता की मूर्ति से छुआते ही चिपक जाता था और चोर द्वारा अपराध स्वीकार करने पर ही छूटता था। एक रात को सैंसा नामक खाती 'रावले' की एक उत्तम भैंस चुरा कर लाया और हाथ चिपकने के भय से रातोंरात देवी के 'मंढ' को कुल्हाड़े से फोड़ने लगा। माई ने उससे कहा कि तू मेरा मंढ न फोड़, तेरा हाथ नहीं चिपकेगा। इस पर सैंसा आश्वस्त होकर अपने घर चला गया। अगले दिन गाँव में भैंस के चोरी चले जाने का शोर मचा और सारे ग्रामवासी माता की मूर्ति को हाथ लगा-लगा कर अपनी निर्दोषिता साबित करने लगे। जब सैंसे की बारी आई तो उसने माता से चेतावनी के स्वर में कहा—

सुण ये माता बावळी, भैंस गई है रावळी।
मैं हूँ खाती सैंसो वो ई कुंहाड़ो वो ई बैंसो॥

इस पर सैंसे का हाथ मूर्ति से नहीं चिपका।

२४९८. **बोर कै सागै कीड़ो खायो जा, म्होर कै सागै कोनी खायो जा।**

बेर के साथ कीड़ा खाया जा सकता है, मोहर के साथ नहीं खाया जा सकता।

२४९९. **बो 'रो ब्याज भी लें, बेगार भी लें अर गरज बधाऊ में करावै।**

बोहरा ब्याज भी लेता है, बेगार भी लेता है और गरज ऊपर से करवाता है।

२५००. **बोलतै का ठोरड़ बिकै।**

बोलने वाले का ठोरड़ू भी बिक जाता है।

जिसको बोलना आ जाता है, उसका काम आसानी से बन जाता है, जिसका मुँह सिला रहता है, वह कोरा रह जाता है।

रू० (१) कवि कुहाड़ो पाछणो, जे मुख भूंठो होय।
गळियारां रुळतो रवै, बात न बूझै कोय॥

(२) बोलबो न सीख्यो, सब सीख्यो गयो धूड़ में।

२५०१. **बोलै वड़ में लादै पीपळ में ।**
बोले कहीं, मिले कहीं । कहे कुछ, करे कुछ ।

२५०२. **बोलै राह, चालै कुराह ।**
बात तो राह की कहे और चले कुराह ।
रू० बोलै साफ, पेटै पाप ।

२५०३. **बोलै सो ई बाछड़ा खोलै ।**
जो बछड़ों को खोलने की सलाह देता है, उसे ही खोलने के लिए कहा जाता है ।
रू० बोलै सो मरै ।

२५०४. **बोल्या अर लादचा ।**
बोलते ही पता चल गया कि कितने पानी में है ।
रू० भरिया सो झळकै नईं, झळकै सो आदा ।
या पुरखां की पारखा, बोल्या अर लादचा ।।

२५०५. **ब्याज नै घोड़ा ई कोनी नावड़ै ।**
ब्याज को घोड़े भी नहीं पा सकते क्योंकि ब्याज आठों पहर चलता है ।
ब्याज की मार बड़ी बुरी होती है—
गाती तो छाती ढकै, ढकै पाघड़ी सीस ।
ब्याज नपूतो के ढकै, करै पांच का तीस ।।

२५०६. **ब्याज नै रेवड़ नावड़ै ।**
ब्याज को रेवड़ ही पहुँच सकता है ।

२५०७. **ब्याज भाड़ो दिछणां, बाकी रैई सो कुछ नां ।**
ब्याज, भाड़ा और दक्षिणा समय पर ही लेलें तो लेलें, बाद में कुछ नहीं मिलने का ।

२५०८. **ब्या तो बीगड़चो, घर का तो जीमो ।**
ब्याह तो बिगड़ा सो बिगड़ा अब घर के लोग तो भोजन करो ।

२५०९. **ब्या बिगाड़ां पार को, यो तो म्हारै घर को ।**
हम दूसरों का विवाह भी बिगाड़ देते हैं, फिर यह तो हमारे घर का है, इसको बिगाड़ना तो हमारे बायें हाथ का खेल है ।

२५१०. **ब्या बिगाड़ै दो जणां, कै मूंजी कै 'मे ।**
बो धेलो खरचै नईं, बो दड़ादड़ दे ।।
विवाह को दो ही बिगाड़ते हैं, या तो मूंजी या मेह । कंजूस तो अधेला खर्च नहीं करता और मेह दड़ादड़ वर्षा करके सारी व्यवस्था बिगाड़ देता है ।

२५११. **व्या मण मूंगां में भी होज्या, मण मोतियां में भी होज्या ।**

विवाह मन भर मूंगों में भी हो जाता है और मन भर मोतियों में भी ।
विवाह थोड़े में भी हो जाता है और विवाह में अनाप-शनाप खर्च भी किया जा सकता है ।

२५१२. **भँवरो जाणै सरव रस, जिण चाखी वणराय ।**
घुण जाणै किम बापड़ो, सूका लाकड़ खाय ।।

समग्र वनस्पतियों का आस्वादन करने वाला भौंरा ही सब रसों को जानता है, सूके लक्कड़ों को खाने वाला वेचारा घुन क्या जाने ?

२५१३. **भगतण नै के आसण सिखावै ?**

वेश्या को कोई क्या आसन सिखलाये ?
काम शास्त्र में चौरासी आसन माने गये हैं ।

२५१४. **भगतां भेळा मिल गया, कुण जाणै कुम्हार ?**

भक्तों की मंडली में मिल गये तो अब कौन जाने कि यह कुम्हार है ।

२५१५. **भगवान कै घरे देर है, पण अंधेर कोनी ।**

ईश्वर के घर देर है, अन्धेर नहीं ।
पापी को देर-सबेर अपने दुष्कर्मों का फल भुगतना ही पड़ता है ।

२५१६. **भगवान तो बासना को भूखो है ।**

भगवान् तो भाव के भूखे हैं ।
रू० देवता तो वासना को भूखो है ।

२५१७. **भगवान देवै जद छप्पर फाड़ कर देवै ।**

ईश्वर देना चाहे तो छप्पर फाड़ के दे देता है । जब कहीं से भी प्राप्ति की आशा न हो तो ईश्वर चाहे जिस रूप में दे देता है ।

सन्दर्भ कथा—एक निर्धन ब्राह्मण को भगवान् का बड़ा भरोसा था । ब्राह्मणी जब भी उससे कमा कर लाने को कहती, वह यही उत्तर देता कि भगवान् को देना होगा तो वह छप्पर फाड़ कर ही दे देगा । एक दिन जब वह किसी गाँव जा रहा था तो रास्ते में एक पीपल के वृक्ष के नीचे ठहरा । वहाँ उसे कोई चमकती हुई वस्तु दिखलाई पड़ी तो उसने उस स्थान को खोदा । खोदने पर हीरे-मोतियों से भरा एक कलश निकला । लेकिन ब्राह्मण ने कलश को वहीं गाड़ दिया और अपने घर आ गया । रात को जब उसने ब्राह्मणी को यह घटना सुनाई तो ब्राह्मणी ने कहा कि आप को वह कलश ले आना चाहिए था । ब्राह्मण ने उत्तर दिया कि भगवान् को देना होगा तो वह छप्पर फाड़ कर ही दे देगा ।

ब्राह्मण के झोंपड़े के बाहर खड़े चोरों ने यह संवाद सुना तो वे तत्काल ही उस पीपल के नीचे पहुँचे। लेकिन कलश में तो सांप और बिच्छू भरे थे। ब्राह्मण की दुष्टता पर उन्हें बड़ा क्रोध आया और उन्होंने यह निश्चय किया कि उस दुष्ट ब्राह्मण को छप्पर फाड़ कर ही यह धन देना चाहिए। वे कलश को उठा लाये और उन्होंने ब्राह्मण का छप्पर ऊपर से फाड़ कर कलश को औंधा दिया। लेकिन कलश को औंधाते ही सारे सांप बिच्छू हीरे-मोतियों में बदल गये।

२५१८. भगवान सब चोखी करै।

ईश्वर जो करता है, अच्छा ही करता है।

२५१९. भगवान सें बडो भगत।

भक्त तो भगवान् से भी बड़ा होता है।

२५२०. भठियारी घर सें कींका पलोथण लगादे ?

भठियारी अपने घर से पलोथन नहीं लगाती।

पलोथण = फुलका बेलते समय उसके साथ लगाया जाने वाला सूका आटा।

२५२१. भणियों बूझै है 'क दायमों ?

पढा हुआ पूछते हो या दाहिमा ?

दाहिमा ब्राह्मण अनपढ होने पर भी हुनरमन्द माना जाता है, इसलिए उसकी पढाई के बारे में पूछना बे-मानी है।

पद्य भली करी रैं दायमा, अण पढिया ई भट्ट।
मरतो-मरतो मारग्यो, दिरा पेट में लट्ठ।।

२५२२. भदरा जें कै लागसी, जें कै रिध-सिध।

भद्रा वहीं लगती है, जहाँ ऋद्धि-सिद्धि का निवास हो।

संपन्न व्यक्ति से ही किसी न किसी बहाने कुछ ऐंठा जाता है।

२५२३. भरम बण्यो रैवै इत्तै ई ठीक है।

जब तक भ्रम बना रहे, तभी तक अच्छा है, भ्रम खुल जाने के बाद कुछ भी नहीं।

रू० भरम की रोटी है।

इस आशय की एक कथा है कि एक सेठ बूढा हो गया तो पुत्र-वधुओं ने उसकी सर्वथा उपेक्षा करदी, क्योंकि उन्हें यह विश्वास हो गया कि श्वसुर के पास अब कुछ भी नहीं है। लेकिन सेठ के कानों में सोने की 'मुरकी' (एक आभूषण) थी। उसने मुरकी निकाल कर चुपचाप तांबे के पैसे खरीदे और उन पर सोने का झोल' (मुलम्मा) फिरवा कर उन्हें अपने पास रखने लगा। जब पुत्र-वधुओं को इस बात का सुराग लगा कि ससुरजी के पास सोने की मोहरें हैं तो श्वसुर की सेवा करने के लिए उनमें होड़ लग गई।

२५२४. भरी जवानी पीसो पल्लै, राम चलायां सीधो चल्लै ।

भरपूर जवानी हो और पास में प्रचुर पैसा हो तो ईश्वर की मर्जी से ही वह सीधी राह चल सकता है अन्यथा कुमार्ग में भटक जाता है ।

रू० धन जोबन अर ठाकरी, तिण ऊपर अविवेक ।
ऐ च्यारूं भेळा हुयां, अनरथ करै अनेक ।।

२५२५. भरोसै की भैंस पाडो ल्याई ।

पूरे भरोसे वाली भैंस ने भी 'पाडी' के स्थान पर 'पाडा' जन दिया ।
जिस काम से विशेष लाभ की आशा हो, लेकिन वैसा लाभ न हो ।

रू० भली करी रै वोयता, घोड़ी पाडो ल्याई ।

२५२६. भलो करतां बुरो होवै ।

ऐसा जमाना आ गया है कि भला करने पर भी परिणाम बुरा ही होता है ।

रू० होम करतां हाथ वळै ।

२५२७. भांग मांगै भूगड़ा, सुलफो मांगै घी ।
दारू मांगै खूंसड़ा, खुसी आवै तो पी ।।

भांग भुने चने और मुलफा घी मांगता है । लेकिन शराब पीने वाले को तो जूते ही लगते हैं ।
ठेके से अनाप-शनाप शराब पी कर निकलने वाले लोग प्राय: गलियों में झखते-बकते हैं, जिससे उनको जूते लग जाते हैं ।

२५२८. भांडां की भैंस सोटां सें पावसै ।

भांडों की भैंस लट्ठ पड़ने पर ही दूध देने को तत्पर होती है ।

२५२९. भाई को भाई बैरी ।

भाई का भाई ही दुश्मन ।
इस संदर्भ के अनगिनत उदाहरण उपलब्ध हैं—बाली-सुग्रीव, रावण-विभीषण, कौरव-पाण्डव आदि ।

रू० भाई जित्ती खाई, बाकी की छींकै टांग दी ।

२५३०. भाई जित्तै मायरो, मा जित्तै पी'र ।

जब तक माँ जीवित रहती है, तभी तक बेटी का पीहर में विशेष आवागमन और आदर रहता है और जब तक भाई रहते हैं तभी तक 'मायरा' आता है ।
मायरा = बहिन के पुत्र या पुत्री के विवाह पर पीहर की ओर से दी जाने वाली धनराशि, आभूषण एवं वस्त्र आदि ।

२५३१. भाई बराबर बैर नईं, भाई बराबर सैण नईं ।

भाई के बराबर वैरी नहीं और भाई के बराबर सुहृद नहीं ।

२५३२. भाई बेटी तो ब्यावै कोनी और क्युईं बाकी छोड़ै कोनी ।
भाई अपने भाई की बेटी तो व्याहता नहीं एव परस्पर विरोध होने पर उसका बुरा करने में अन्य कोई कसर छोड़ता नहीं ।

२५३३. भाई मूरा, लेखा पूरा ।
पूरा-पूरा हिसाब हो गया । कोई लाभ-हानि या घटत-बढत नहीं ।

२५३४. भाखड़ी कै कांटै को आगड़ी ताईं जोर ।
भाखड़ी = गोखरू की जाति का एक क्षुप । इसमें कांटेदार छोटे फल लगते हैं। ऊंट इन्हें बड़े चाव से खाते हैं एवं दवा में भी इनका उपयोग होता है । भाखड़ी का कांटा अधिक लम्बा नहीं होता, इसलिए शरीर में ज्यादा गहरा नहीं पैठ सकता ।
क्षुद्र आदमी रुष्ट होने पर भी विशेष क्षति नहीं पहुँचा सकता ।

२५३५ भागतै भूत की लंगोटी ई चोखी ।
भागते भूत की लंगोटी हाथ लग जाए तो वह भी नफे में ।
डूबती हुई रकम में से जो प्राप्त हो जाए, वही लाभ ।
रू० भागतै भूत का झूंटा ई चोखा ।

२५३६ भागलपर जाइये ना, जाइये तो कुछ लाइये ना, लाइये तो रोइये ना ।
भागलपुरी चीजें चलने में अच्छी नहीं मानी जाती थीं ।

२५३७. भागवान को टाबर भूगड़ा चावै तो ई कैवै 'क मोळायो चावै, पण गरीब को चावै तो कह दे 'क भूख मरतो चावै है ।
मालदार का लड़का भुने हुए चने चबाता है तो लोग यही कहते हैं कि यह शौकिया चबा रहा है, लेकिन गरीब का लड़का चबाता है तो कहते हैं कि यह भूखों मरता चबा रहा है ।

२५३८. भागवान को पाड़ोसी नारकी में जा ।
मालदार का पड़ोसी नरक में जाता है ।

२५३९ भागां का बळिया, रांधी खीर अर होग्या दळिया ।
जब भाग्य साथ नहीं दे तो खीर का दलिया हो जाता है ।
भाग्य के विपरीत होने पर भूने हुए तीतर भी उड़ जाते हैं ।

२५४०. भाग्यां पोछै बावड़ै, जीं नै ईं स्याबास ।
युद्ध से एक वार विमुख होकर भी जो पुनः युद्धार्थ लौट पड़ता है, उसे भी शाबाशी देनी चाहिए ।

२५४१. भाठै सें भाठो भिड़ै जद बासते ई ऊपड़ै ।
पत्थर से पत्थर टकराता है तो आग की चिनगारियां ही निकलती हैं ।
जब दो समान पराक्रमी भिड़ते हैं तो मुकाबिला बड़ा सख्त होता है ।

२५५२. भींत जा आळै सें, घर जा साळै सें।

दीवार आलों से कमजोर हो जाती है और घर सालों से।

भाई की अपेक्षा साला अधिक प्रिय लगता है—

गुड़ सें तो गंडेरी प्यारी, वीं सें प्यारो राळो।
भाई सें भतीजो प्यारो, सैं सें प्यारो साळो॥

२५५३ भीज्या कान, होया असनांन।

कान भीग गये तो स्नान पूरा हो गया।

मरु भूमि में पानी का अभाव रहता है, अतः सिर पर डाला हुआ पानी कानों तक आ जाए तो स्नान पूरा हुआ मान लिया जाता है।

२५५४. भील कै के ढील?

भील के यहाँ विलम्ब किस बात का?

२५५५. भील भंगी भगतण भोपा, देतां लेतां बाजै बोभा।

इनके साथ लेन-देन करने में बखेड़ा ही रहता है।

२५५६. भुआं बिना किसो आंगणों।

बहुओं के बिना घर का आंगन शोभायमान नहीं होता।

स० मेहा मंडण बीजळी, सरवर मंडण पाळ।
बाप जो मंडण डीकरो, घर की मंडण नार॥

२५५७. भुआं हाथां चोर मरावै, चोर भऊ का भाई।

बहुओं के हाथों चोर मरवाये और चोर बहू के भाई।

जब चोर और पहरेदारों की मिली-भगत हो।

२५५८. भूंडी रांड भूण सो मायो, फर–फर फिरै बबूरी।
मुरड़ाटै माणस बण बैठी, राम घड़ै थी सूरी।

निपट भोंडी और बेशऊर स्त्री के लिए प्रयुक्त।

२५५९. भू आई सासु हरखी, पगां लागी अर परखी।

नव-वधू घर में आई तो सास आनंदित हुई, लेकिन बहू ने जैसे ही सास के पैर छुये, सास जान गई कि बहू कैसी है।

२५६०. भू कै पेट में बेटो तो है, पण होसी म्हां मरयां।

बहू के गर्भ में बेटा तो है, लेकिन जन्मेगा हमारे मरने पर।

लाभ तो होगा, लेकिन हमारे जीते जी नहीं।

२५६१. भूख बुरी है ठाकरां, कँवर करेला खाय।

भूख बड़ी बुरी होती है, इसमें न खाने योग्य चीजें भी मजबूरन खाई जाती हैं। संवत् १९५६ के अकाल में लोग खेजड़े की छाल भी खा गये थे।

२५६२. भूख मिट्यां पीछै पकवान?

भूख मिट जाने के बाद पकवान भी अच्छा नहीं लगता।

२५६३. भूखै की आडी आज्या, झूठै की कोनी आवै।

भूखे की कभी न कभी भगवान् सुन लेता है और वह संपन्न बन जाता है, लेकिन झूठा नहीं फलता।

२५६४ भूखो तो थाळी में घाल्यां ईं पतीजै।

भूखे की थाली में जब भोजन परोस दिया जाता है, तभी उसे इतमीनान होता है, आश्वासनों से नहीं।

२५६५. भूखो पूछै जोतसी, धायो पूछै वैद।

निर्धन तो ज्योतिषी से पूछता रहता है कि उसके दिनमान कब फिरेंगे और सम्पन्न व्यक्ति वैद्य से पूछता रहता है कि हाजमा या पुष्टि के लिए उसे क्या लेना चाहिए?

२५६६ भूखो बामण सोवै, भूखो जाट रोवै।
भूखो बाणियों हँसै, भूखो रांगड़ कसै॥

भूखा ब्राह्मण (न्योते की प्रतीक्षा में) सोता है, भूखा होने पर जाट रोने लगता है, भूखा बनियाँ हँसता है और भूखा राजपूत लूट-पाट के लिए कमर कसता है।

२५६७. भू! घर-बार तेरो ई है, पण ढक्यो ढूम्यो राखी, कोई चीज कै हाथ मतना लगाई।

वहू! घर-बार सब तुम्हारा ही है, लेकिन किसी चीज को हाथ न लगाना। नाम-मात्र का अधिकार।

२५६८. भूत मरै, पलीत जागै।

भूत मरता है और प्रेत चैतन्य हो जाता है।

२५६९. भूतां कै लाडुवां में अळायची को सुआद?

भूतों के लड्डुओं में इलायची का स्वाद ढूंढना दुराशा मात्र है।

२५७०. भू परोस्या खावैगा, बिन मारयां मर ज्यावैगा।

पुत्र वधू अपने श्वसुर को बिना मन से और सामान्य खाना परोसती है, अतः कुपोषण के कारण श्वसुर जल्दी ही मर जाता है।

२५७१. भूल कमाई में कोनी गिणी जावै।

भूल तो लेनी-देनी होती है। भूल का पैसा कमाई में नहीं गिना जाता।

२५७२. भूल को टक्को भूल में गयो।

भूल का टका भूल में चला गया।

२५७३. भूल गया राग रंग, भूल गया जकड़ी।
तीन चीज याद रैई, तेल लूण लकड़ी॥

तेल-नोन और लकड़ी की चिंता में मनुष्य सारे राग-रंग भूल जाता है।

२५७४ भूवा मिस लेवै तो भतीजां मिस देवै।

बूआ के मिस लेती है तो भतीजों के मिस देना भी पड़ता है।

२५७५. भेख की खोटी नईं कैणी ।
भेष की निंदा नहीं करनी चाहिए ।

२५७६. भेड़ पर लाणो कुण छोडै ?
भेड़ पर ऊन कौन छोड़ता है ?

२५७७ भेड़ सुपारी सार के जाणै ?
भेड़ के लिए सुपारी का क्या उपयोग ?

२५७८. भेभळ राणी चोरटी, रात्यूं सिट्टा मोरती ।
भेभल रातों-रात खेत को बड़ा नुकसान पहुँचा देती है ।
भेभल = कृषि को क्षति पहुँचाने वाला पंख-युक्त एक छोटा कीट ।

२५७९. भेळै भांडा खुड़कै ई ।
साथ-साथ रहने वालों में कभी कहा-सुनी भी हो जाती है ।

२५८० भैंस काळी होवै, पण दूध तो धोळो ई होवै ।
भैंस का रंग भले ही काला हो, लेकिन उसका दूध तो सफेद ही होता है ।
रंग की अपेक्षा गुण को देखना चाहिए ।

२५८१. भैंस की कमाई, भैंस में चली जा ।
भैंस की कमाई भैंस पर ही लग जाती है ।

२५८२. भैंस कै आगै बीण बजाई, गोबर को इनाम ।
गुण-ग्राहक ही गुण की कद्र कर सकता है ।
रू० भैंस पदमणी नै हार पै'रा दियो, के जाणै वा नौसर हारै नै ?

२५८३. भैंस कै मूं'डै में तूंबो खटाज्या, बकरी कै मूं में कद खटावै ?
भैंस के मुँह में ही तूम्बा खटा सकता है, बकरी के मुँह में नहीं ।

२५८४. भैंस को पोटो सूकतो सो सूकै ।
भैंस का पोटा' सूकते सूकते ही सूकता है ।
संपन्न घराने की संपत्ति छीजते-छीजते भी काफी समय निकाल देती है ।

२५८५ भैंस को मूत, भैंस ई पीज्या ।
भैंस का मूत्र भैंस ही पी जाती है ।
पोखरों आदि पर जहाँ भैंस पानी पीती है, वहीं मूत्र-त्याग भी करती है, वह मूत्र पानी में मिल जाता है और उसे भैंस ही पी जाती है ।

२५८६. भैंस को सींग लपोदर नांव ।

२५८७. भैंस तो भलाईं पाडी लियावो, पण भू कै बेटो होणो चायै ।
भैंस तो भले पाडी ही जने, लेकिन बहू के बेटा होना चाहिए ।
दोनों तरफ स्वार्थ-पूर्ति ।
भैंस के नर बच्चे अर्थात् पाडे की अपेक्षा पाडी की कीमत अधिक होती है ।

२५८८. **भैंस भिराड़ी 'मा में ब्याई, धणी छोड़ धिराणी नै खाई।**
माघ के महीने में भैंस का ब्याना मालकिन के लिए घातक होता है।

२५८९. **भैंस रांड आपको रंग तो कोनी देखै अर छत्तै नै देख कर बिदकै।**
भैंस अपना रंग तो नहीं देखती और छाते को देख कर चौंकती है।

२५९०. **भैंस सगै कै खेत सार के जाणै ?**
भैंस क्या जाने कि यह खेत उसके मालिक के समधी का है।

२५९१. **भैंसो मार कर वेसवारां ताईं क्यूं खोवै ?**
भैंसे को मार कर मसाले की कमी क्यों रखी जाए ?
जब किसी काम के लिए प्रचुर धन-राशि व्यय करदी तो छोटी-मोटी राशि के लिए उसे क्यों बिगाड़ा जाए ?

२५९२. **भै कोनी मारै, भैसाण मारै।**
भय की अपेक्षा भय का हौआ अधिक मारता है।

२५९३. **भै बिना प्रीत कोनी।**
भय बिनु होइ न प्रीति।

२५९४. **भोपी सैं काम 'क मंड ढा'णो ?**
भोपी से प्रयोजन है या मंढ ढहाने से ?

२५९५. **भोळै ढाळै को राम रुखाळो।**
भोले का रक्षक भगवान् है।

२५९६. **भोळै बामण भेड़ खाई, औरूं खाऊं तो राम दुहाई।**
भोले ब्राह्मण ने भूल से भेड़ खाली, यदि वह फिर खाये तो उसे राम दुहाई है।
भूल से किसी हानिप्रद काम को कर लेने पर पश्चाताप प्रकट करना कि फिर कभी यह काम न करूंगा।

२५९७. **भोळो वाछड़ियो दूध पीवै, स्याणो चावै डोका।**
जब तक बछड़ा नादान और छोटा रहता है, तब तक तो उसे उसकी माँ का दूध पिलाया जाता है, लेकिन बड़ा और सयाना होने पर उसे कड़वी (ज्वार-बाजरे के सूखे डण्ठल) डाली जाती है।

२५९८. **भोळो सज्जन वैरी की गरज पाळै।**
नादान दोस्त शत्रु के तुल्य होता है। वह अपनी नादानी से वैरी की तरह हानि पहुँचा देता है।
रू० मूरख मितर सौ वैरयां की गरज सारै।

२५९९. **मंगतै को अर मांगतोड़ै को उतावळ को वैर है।**
भिखारी को भिक्षा के लिए जल्दी नहीं मचानी चाहिए एवं ऋणदाता को ऋण की वसूली में धैर्य से काम लेना चाहिए।

संदर्भ कथा—एक सेठ का किसी किसान पर ऋण था। उसने ऋण की वसूली के लिए अपने आदमियों को कई बार उसके गाँव भेजा, लेकिन किसान उन्हें टरका दिया करता। वह उनके खाने-पीने की व्यवस्था भी समय पर नहीं करता, अतः वे लोग तंग आकर खाली हाथ लौट आते। तब सेठ ने अपने बड़े मुनीम को भेजा और मुनीम ने किसान के घर जाकर डेरे डाल दिये। खाने का समय हुआ तो किसान की औरत ने मुनीम को सुना कर कहा—'तप रे तवा तीन दिन'। लेकिन उसकी बात सुनकर मुनीम जरा भी विचलित नहीं हुआ। उसने किसान की औरत को सुना कर कहा—'आये नींद नौ दिन', और वह खूंटी तान कर सो गया। अब तो वह बहुत चकराई और उसने अपने पति से कहा कि यह तो रुपये लेकर ही जाएगा, इसे रुपये देकर विदा करो, नहीं तो इसे खिलाने-पिलाने का खरच और लगेगा। तब किसान ने ब्याज सहित रुपये देकर मुनीम से फारखती लिखवाली।

२६००. **मंगळ महषी रवि तुरी, बुद्ध बैल सनि ऊंट।**
अजा शुक्र नहीं खींचिये, इतणा करै अपूठ॥
मंगलवार को भैंस, रवि को घोड़ी, बुध को बैल, शनि को ऊँट एवं शुक्रवार को बकरी खरीद कर लाना अशुभ एवं हानिकर होता है।

२६०१. **मंतर मैं पढूं, बिल में हाथ तूं दे।**
मंत्र मैं पढ़ता हूँ, साँप के बिल में हाथ तुम डालो।
अपने को सुरक्षित रख कर दूसरे को खतरे के काम में डालना।

२६०२. **मंदी भैंस की पूंछ उठा-उठा कर देखै।**
यदि कोई अधिक सस्ते मूल्य पर अपनी भैंस को बेचे तो ग्राहक को शंका हो जाती है कि अवश्य ही इसमें कोई न कोई खोट है।

२६०३. **मकोड़ो बोल्यो 'क मा मैं गुड़ की भेली उठा ल्याऊं ?**
'क बेटा तेरी कड़तू कानी तो देख।
मकोड़े ने अपनी माँ से पूछा कि माँ, क्या मैं गुड़ की भेली उठा लाऊँ ?
माँ ने उत्तर दिया कि तू पहले अपनी कमर की ओर तो देख।
जब कोई बूते से बाहर काम कर डालने की डींग हांके।

२६०४. **मघा 'मे बरसावियां, धान घणेरो होय।**
मघा नक्षत्र में वर्षा होने से अन्न खूब पैदा होता है।
रू० (१) जे बरसै मघा तो करै धान का ढिगा।
(२) मघा को बरसणो अर मा को पुरसणो बराबर।
(३) मघा चूकियां पड़सी काळ।

२६०५. **मजूरी में के हजूरी ?**
मजदूरी करने के बाद जी हुजूरी की क्या आवश्यकता ?

२६०६. **मण घी देणो कर राख्यो हैं ।**

संदर्भ कथा—ठाकुर के घर में घाटा था, फिर भी वह घोड़ी रखता था। लेकिन घोड़ी बहुत दुबली थी, क्योंकि उसे खाने को भर-पेट घास भी नहीं मिलती थी। एक दिन ठाकुर के यहाँ कोई मेहमान आया तो उसने घोड़ी को देखकर ठाकुर से कहा कि घोड़ी तो बहुत दुबली हो रही है। इस पर ठाकुर ने उत्तर दिया कि हमने तो घोड़ी को मन भर घी देने का आश्वासन दे रखा है, तिस पर भी यह दुबली रहे तो क्या उपाय ?

कोरे आश्वासन से पेट नहीं भरता।

२६०७. **मत मरियो बूढ़ै की जोय, मत मरियो बाळक की माय ।**

बूढे की स्त्री और बालक की माँ न मरे।

वृद्धावस्था में पत्नी ही पति की समुचित देख-भाल करती है।

२६०८. **मद कुमाऊ कुमावै कोनी तो घर तो आवै ?**

अनकमाऊ कुछ न भी कमाये तो भी घर तो आये !

रू० मद कमाऊ सदांई दूसरां कै आधीन रैवै ।

२६०९. **मन उमराव, करम दाळदी ।**

मन तो महत्त्वाकांक्षी, लेकिन भाग्य दुर्बल ।

रू० मन तो राजा को सो अर करम कमेड़ी को सो ।

२६१०. **मन का लाडू फीका क्यूं ?**

मन के लड्डू फीके क्यों ?

रू० मन का लाडू फीका क्यूं ? फीका क्यूं तो कमती क्यूं ?

२६११. **मन कै पाळ कोनी ।**

मन के पाल (मेड़) नहीं होती। वह सदा और अधिक के लिए ललचाता रहता है।

रू० मन कै धाप कोनी ।

२६१२. **मन कै हारे हार है, मन कै जीते जीत।**

यदि मनुष्य हार मानकर बैठ जाता है तो कुछ भी नहीं कर सकता, लेकिन यदि दृढ़ निश्चय से काम में जुट जाता है तो सफलता प्राप्त कर लेता है।

२६१३. **मन भावै, मूंड हलावै ।**

आन्तरिक इच्छा तो है, लेकिन दिखावे के लिए सिर हिला कर ना करता है।

२६१४. **मन मिले का मेळा ।**

मन मिले, तभी मिलना सार्थक है।

रू० मन मिले का मेळा, चित मिले का चेला ।

२६१५. **मन्नै घड़गी, जिकी बाड़ में ईं बड़गी ।**

जो अपने बराबर किसी को न समझे।

२६१६. मरज्याणा कबूल है, पण जौ का दळिया नई खाणा।
मर जाना कबूल है, लेकिन जौ का दलिया खाना मंजूर नहीं।
रू० भूखा सो ज्याणा, पण जौ का दळिया नई खाणा।

२६१७. मरण नै मरग्यो, पण मन हथलेवै में ई रैयो।
मरने के बाद भी मन हथलेवे में ही रहा।
संदर्भ कथा विवाह की प्रबल इच्छा होने के बावजूद भी एक ठाकुर का विवाह नहीं हो सका और वह कुँआरा ही मर गया। मरने के बाद जब उसे पिण्ड देने लगे और पिंड देने वाले ने जब कहा कि पिंड लो, तब सहसा ठाकुर को कुछ क्षणों के लिए होश आया और उसने उत्सुकता से पूछा—क्या हथलेवा ?
इसी प्रकार किसी कुँआरे ठाकुर को गयाजी में पिंड देने के सम्बन्ध की भी लगभग ऐसी ही बात कही जाती है।

२६१८. मरणियें कै गैल कोनी मरयो जा।
मरने वाले के पीछे मरा नहीं जाता।

२६१९. मरणियें नै मारणियों कोई कोनी।
जो मरने का हौसला रखता है, उसे मारने वाला कोई नहीं।

२६२० मरणै कै दुख रोटी खावै।
अत्यन्त आलसी आदमी, जो रोटी खाने का श्रम भी इस भय से करता है कि रोटी न खायेगा तो मर जाएगा।

२६२१. मरणो है जिको ज्यान सें जाणो है।
मरना कोई हँसी-खेल नहीं, जहान से जाना है।

२६२२. मरतां का के गाडा जुपै है ?
मरते क्या देर लगती है ?
रू० मरतां की के नौबत घुरै है ?

२६२३. मरद तो मूंछ्याळ वंको, नैण वंकी गोरियां।
सुरहळ तो सींगाळ वंकी, पोड़ वंकी घोड़ियां।
किसी ने कहा कि बल खाती मूँछों वाला मरद, बांके नेत्रों वाली युवती, सुन्दर सींगों वाली गाय और सुन्दर सुम वाली घोड़ी ही सराहनीय है।
इस पर दूसरे ने उसकी बात का प्रतिवाद करते हुये कहा कि नहीं—वचन पर दृढ़ रहने वाला मरद, उत्तम कोख वाली नारी, दूध देने वाली गाय एवं तेज चाल वाली घोड़ी ही वास्तव में सराहनीय है—

मरद तो जवान वंको, कूख वंकी गोरियां।
सुरहल तो दूधार वंकी, तेज वंकी घोड़ियां॥

२६२४. **मरद नै खोवै खटाई, लुगाई नै खोवै मिठाई ।**
मरद को खटाई खोती है एवं औरत को मिठाई ।

२६२५. **मर पड़ कर तो खसम करयो अर वो ई हींजड़ो नीसरयायो ।**
बड़ी मुश्किल से तो खसम किया और वह भी हिजड़ा निकला ।

२६२६. **मरसी 'लौ कै पींजरै, ऊवरसी चोड़ै ।**
मृत्यु आने पर कोई लोहे के मजबूत पिंजड़े में भी नहीं बच सकता और मृत्यु न आये तो खुले में भी कोई डर नहीं ।

संदर्भ कथा—राज-ज्योतिषी को उदास देखकर राजा ने उससे उदासी का कारण पूछा तो ज्योतिषी ने कहा कि मेरे लड़के का विवाह है और इसके भाग्य में ऐसा लिखा है कि इसे तीसरे फेरे में ही एक सिंह उठाकर ले जाएगा । राजा ने कहा कि मैं ऐसा कदापि नहीं होने दूंगा ।

राजा ने लोहे का एक बड़ा और मजबूत पिंजड़ा बनवाया । फेरे होने के समय वर-वधू, आदि के अतिरिक्त स्वयं राजा भी तलवार लेकर पिंजड़े के अन्दर बैठ गया । पिंजड़े के चारों ओर सख्त पहरा बिठला दिया गया और फेरे होने लगे । तीसरा फेरा शुरू होते ही राजा की तलवार की मूठ पर अंकित शेर जीवित हो गया, उसने वर को अपने जबड़ों में कस कर पकड़ लिया, पिंजड़े का द्वार अपने आप खुल गया और शेर उसे ले भागा । किसी से कुछ करते-धरते न बना । इसी लिए कहा है—

मरसी 'लौ कै पींजरै, ऊवरसी चोड़ै ।
करणा होसी राम का, चित यूं हीं दोड़ै ।

२६२७. **मरी क्यूं ? 'क सांस कोनी आयो ।**
मरी कैसे ? संक्षिप्त उत्तर मिला—सांस न आने से ।

२६२८. **मरी तो आथ ई कोनी अर भूतणी भी होगी ।**
मरने से पहले की भूतनी भी बन गई ?

२६२९. **मरे पूत कीं आंख्यां बडी-बडी होज्या ।**
मरने के बाद मनुष्य की विशेषताओं को बढा-चढा कर बताया जाता है ।
रू० मरे पूत की आंख्यां कटोरा सी बतावैं, होवो मांवै पानी की चीर जिसी ई ।

२६३०. **मरै जिको तो बोली सैं ईं मरज्या, नई गोळी सैं ई कोनी मरै ।**
लज्जाशील व्यक्ति का तो अपमान-जनक शब्द से ही मरण हो जाता है, लेकिन निर्लज्ज तो गोली से भी नहीं मरता ।

२६३१ **मरै न खाट खाली करै ।**
न मरे, न खाट खाली करे ।

जब कोई बीमार लम्बे समय तक खाट में पड़े रहने पर भी न मरे एवं घर वाले उसकी परिचर्या करते-करते तंग आजाएं।

२६३२. **मरै है, पण मलार गावै है।**
मरता है, फिर भी राग-रंग सूझता है।

२६३३. **मरो दूसरा, सुरग में मैं जायाऊं।**
मरे कोई और एवं स्वर्ग में मैं चला जाऊं।
मेहनत और कोई करे एवं उसका लाभ मुझे मिल जाएं।

२६३४. **मरो मा, जीवो मांवसी; घी घालै न गोडा चालै।**
अपने स्वार्थ के कारण आदमी माँ की अपेक्षा भी मौसी को अधिक महत्व देता है।

२६३५. **मरयां पीछै बाबै की गांड में घी लगा बोकरो!**
उपचार तो पहले ही हो सकता है, मरने के बाद चाहे कुछ भी करते रहो, सब व्यर्थ।

२६३६. **मरचो ऊंट घिसाई मांगै।**
मरे ऊंट की घिसवाई और देनी होती है।
रू० (१) गयो धन बोळाई मांगै।
(२) मुरदै नै कफन और देणो पड़ै।

२६३७. **मरचोड़ै पर एक कस्सी गेरो, चाये सौ कस्सी गेरो।**
निंद्य कर्म करने वाले को चाहे एक बार अपमानित करें, चाहे सौ बार।

२६३८ **मांग-तांग कर खीरी ल्याई, नांव धरचो बसंदर!**
मांग कर तो खीरी (जलता हुआ छोटा कोयला) लाई और नाम रखा है वैश्वानर?
रू० मांग तांग कर छा ल्याई अर सुरजी नै छांटो!

२६३९ **मांग-तांग कर मटको, करचो, खोस लियो मन फीको करचो।**
मांगी हुई चीज पर ऐंठ कब तक चले?
रू० पराई रकम को के निवाच?

२६४०. **मांगणियें कै सो घर लटै, कोई घालै कोई नटै।**
भिक्षुक तो पूरे गाँव में भिक्षा मांगता है, कोई देता है, कोई नहीं देता।
रू० मांगणियें कै सो घर लटै, कोई घालै कोई नटै।
कोई न दे तो जावै कठै, सगळा ई दे तो धरै कठै।।

२६४१. **मांगै कुण था, लैर पड़-पड़ कर घालै था।**
मांगता कौन था, लोग पीछे पड़ कर डालते थे।

सन्दर्भ कथा—एक बार अकाल पड़ा तो मियांजी के खेत में अन्न का एक दाना भी नहीं हुआ। उन्होंने एक फकीर को मांगते देखकर सोचा कि

यह काम अच्छा है । उन्होंने भी मांगना शुरू कर दिया, लेकिन वे मांगते समय अपने हाथ पीछे की ओर रखते थे । अगले वर्ष जमाना हुआ और मियांजी के खेत में भी खूब अच्छी फसल हुई । एक रोज मियांजी मलार गाते हुए अपने खेत से आ रहे थे कि एक लड़की ने उन्हें पहचान कर अपनी माँ से कहा—यह वही आदमी है जो पिछले वर्ष हमारे यहां रोटी मांगने आया करता था । मियांजी को लड़की की बात सुनाई पड़ गई तो तैश में आकर बोले—मांगता कौन था ? लोग पीछे पड़ कर स्वयं ही देते थे ।

२६४२. **मांग्या मिलै रै माल, जां कै काई' कमी रै लाल ?**
जिसे मांगने से ही मिल जाए, उसे किसी बात की कमी क्यों रहे ?
रू० मूंड मुंडायां ईं सरज्या, जिको क्यूं कुमावै ?

२६४३. **मांज्या थाळ, उतरचा बार ।**
दोपहर के भोजन के बाद थालियां मांज लेने पर वह बार (दिन) पूरा हुआ मान लिया जाता है ।

२६४४. **मांयला घाव कै बीबी जाणै, कै राव ।**
आन्तरिक पीड़ा को या तो पति जाने या पत्नी ।

२६४५. **मांवसी कै मूंछ होती तो वींनै ईं मामो कैवता ।**
मौसी के मौंछें होतीं तो उसे भी मामा कहते ।

२६४६. **मांवसी राम-राम, 'क आ बेटा खाल्यूं ।**
राम राम करते ही हज्म कर जाने को तत्पर ।

२६४७. **मा ई बात कोनी मानै, जद मांवसी कद मानै ?**
जब माँ ही बात न माने तब मौसी भला कब माने ?

२६४८. **मा ई मारै, मा ई बुचकारै ।**
मां मारती है तो वही पुचकारती भी है ।

२६४९. **मा का सराया पूत कोनी सराया जा ।**
मां के सराहने से ही पुत्र सराहनीय नहीं हो जाता, जब दूसरे लोग उसकी सराहना करें तभी वह प्रशंसनीय है ।

२६५०. **'मा की मोळ, जेठ की तेजी ।**
माघ की मंदी और जेठ की तेजी अच्छी समझी जाती है ।

२६५१. **माता जाया सात पूत, करम दिया बांट-चूंट ।**
मां ने सात बेटे जने, लेकिन सब के भाग्य अलग-अलग ।

२६५२. **मान बड़ा 'क दान ?**
दान की अपेक्षा सम्मान बड़ा है ।

२६५३. **मा न मा को जायो, सो ई देस परायो ।**
जहाँ सभी अपरिचित हों ।

२६५४. **मान रै पांच्या पांचां की, नईं मानूं पचासां की ।**
पांच आदमी जो कहें उसे मान लेना चाहिए ।
उत्तर मिला—तुम पांच की कहते हो, मैं पचास की भी नहीं मानता ।
दुराग्रही मनुष्य किसी का कहना नहीं मानता ।

२६५५. **मानै तो देव, नईं भींत को लेव ।**
भावना हो तो मिट्टी की मूर्त्ति में भी देवता का निवास है, नहीं तो देव मूर्त्ति भी निरी मिट्टी या पत्थर ही है ।

२६५६. **मानै नी तानै नी, मैं लाडै की भूवा ।**
मान न मान, मैं तेरा मेहमान ।
रू० विगर बुलाई आगै आवै, काम करै अरण हुवा ।
मांडा गिरणै न जानियां, मैं लाडै की भुवा ।।

२६५७. **मा कै चूंघ्यां पार पड़सी, वाप कै चूंघ्यां पार कोनी पड़ै ।**
जायज वात कहने से ही काम होगा, नाजायज वात कहने से नहीं ।

२६५८. **मा को वदळो कोनी ऊतरै ।**
माँ का ऋण नहीं चुकाया जा सकता ।

२६५९. **माठो धोरी ठोठ गुर, कुवैं'ज खारो नीर ।**
गांव कुठाकर कुअस्त्री, पांचूं दहै सरीर ।।
काम से जी चुराने वाला वैल, मूर्ख गुरु, कुएँ का खारा पानी, निकम्मा ठाकुर और कुभार्या ये पांचों ही पीड़ादायक होते हैं ।

२६६०. **माड़ो देख कर भिड़नो नईं, मोटो देख कर डरणों नईं ।**
शरीर से कृश दिखलाई देने वाले से भिड़ना नहीं चाहिए और मोटे-त.जे को देखकर डरना नहीं चाहिए ।

२६६१. **माड़ो भूत वाकळां सें ईं राजी ।**
दुर्वल भूत सिजाये हुए मोठों से ही संतुष्ट हो जाता है ।

२६६२. **माना चाली सासरै, मनावरण आळो कूरण ?**
मानवती रूठ कर सुसराल चली तो अव उसे कौन मना सकता है ?

२६६२. (व) **मा वाप मरग्या, अैईं घर की करग्या ।**
जव तक माँ-वाप जीवित रहते हैं, वेटी का पीहर में आना-जाना वना रहता है । लेकिन उनके मरने के वाद आवागमन लगभग वन्द हो जाता है और उसे सुसराल में ही रहना पड़ता है ।

२६६३. **मा भठियारी, पूत फतेखां ?**
माँ तो भाड़ भोंकती है और वेटा ऐंठ दिखलाता है ।
रू० मा तो गोवर चुगती फिरै, वेटो वटोड़ा वकसै ।

२६६४. मा ! मामा भलेरा भोत, 'क रामारचा भाई तो मेरा ई है ।

माँ मामा बड़े अच्छे हैं । इस पर मां बोली कि वे अच्छे कहाँ से होते, भाई तो मेरे ही हैं ।

सन्दर्भ कथा—एक लड़का अपने मामों के साथ कतार लादा करता था । एक दिन उसने अपनी माँ से कहा कि मेरे मामा तो बड़े अच्छे हैं । माँ ने बेटे की बात सुनकर आश्चर्य से पूछा कि कैसे ? लड़का बोला कि वे सबसे पहले मेरा ऊँट लदवाते हैं और बाद में अपने लादते हैं । इसी प्रकार सामान उतारते समय सबसे बाद में मेरे ऊंट का सामान उतारते हैं । यह सुन कर उसकी माँ ने व्यंग्य से कहा कि निगोड़े, इसमें अच्छे क्या हुए ? वे सबसे पहले तेरा ऊंट लदवा देते हैं तो जब तक उन सबके ऊंट नहीं लद जाते, तब तक तेरा ऊंट व्यर्थ में ही बोझ मरता है तथा यही बात बोझा उतारते समय भी होती है । तेरे मामा अच्छे कहां से होंगे ? आखिर भाई तो मेरे ही है ।

रू० मा, मामा किसा क ? 'क मेरा ई भाई है ।

२६६५ मामी कै माचा होता तो रावळै सोवण नै क्यूं जाती ?

मामी के घर में खाट होती तो वह सोने के लिए 'रावळे' क्यों जाती ?
रावळा = रनिवास

२६६६ मामी तो सी मरती 'पो में मरगी, भाणजी को नांव बुगची ?

मामी जाड़े के मारे ठिठुर कर मर गई और भानजी का नाम रखा है बुगची ?
बुगची = बुकचा, जिसमें कपड़े आदि भर कर रखे जाते थे ।

२६६७. मामै को व्या अर मा परोसगारी ।

मामा की शादी और माँ परोसने वाली, फिर और क्या चाहिए ?

रू० नाथै का तिल, नाथो ई तुलारो ।
घर की निजर, घर को थुथकारो ।
मामै को व्या, मा परोसगारी ।
जीमो बेटा रात अंध्यारी ।।

२६६८. मा, मैं स्यामी हो ज्यास्यूं, 'क लखपती होवै तो जाणूं ?

पतन की ओर जाना तो नितान्त आसान है, आदमी अपना उत्थान करे, तभी वह प्रशंसनीय है ।

२६६९. मायतां सैं कुण धाप्यो है ?

मां-बाप से कौन अघाता है ?

२६७०. माया तेरा तीन नांव, परसी परसो परसराम ।

सम्पत्ति के अनुसार मनुष्य के नाम में भी परिवर्तन होता रहता है। गरीब को परसी जैसे लघुता सूचक नाम से पुकारते हैं, कुछ सम्पत्ति अर्जित करने पर उसे परसो कहने लगते हैं और विशेष सम्पत्तिशाली होने पर उसी आदमी को परसराम कहा जाने लगता है।

संदर्भ कथा—एक सेठ के जगराम नाम का एक ही लड़का था। घर में लक्ष्मी का ठाट-बाट था और जगराम की शादी भी सम्पन्न घर में हुई थी। लेकिन अपने पिता के मरने पर जगराम ने कुसंगति में पड़ कर सारी सम्पत्ति बर्बाद कर डाली और घर में फाके पड़ने लगे। उसकी स्त्री अपने पीहर चली गई। तंग आकर जगराम भी मजदूरी की तलाश में निकला और भटकते-भटकते अपनी सुसराल पहुँच गया। इस फटे हाल में सुसराल वालों ने भी उसे नहीं पहचाना और उसे नौकर रख लिया। वह पानी लाने, लकड़ी झोंकने आदि का काम करने लगा और उसका नाम झोकिया पड़ गया।

एक दिन जगराम की स्त्री अपनी माँ से कह रही थी कि तुम्हारे दामाद ने और सब कुछ तो बर्बाद कर डाला, लेकिन मेरी सास ने मुँह-दिखलाई में मुझे जो चार बहुमूल्य लाल दिये थे, वे उसके हाथ नहीं लगे, क्योंकि उनको मैंने अमुक स्थान पर छिपा दिया था। 'झोकिया' ने उन दोनों की बात सुन ली। वह नौकरी छोड़कर अपने घर आ गया। उसने चारों लाल निकाले और उन्हें बेचकर पुनः कारोबार प्रारम्भ किया तथा शीघ्र ही पहले की तरह मालदार बन गया। अब वह अपनी स्त्री को लेने सुसराल पहुँचा तो सुसराल वालों ने उसकी खूब खातिर की। इस पर वह बोला—

माया तूं है सुलखणी, नाम होयो जगराम।
इण हीं आंगण फिर गयो, धरयो झोकियो नाम॥

२६७१. माया मिलगी सूम नै, नां खरचै नां खाय ।

सूम अपने धन को न तो परमार्थ में लगाता है, न भोगता है।

धन की तीन गतियां मानी गई हैं—दान, भोग और नाश। सूम न तो दान करता है न उपभोग, अतः उसके धन की तीसरी गति ही होती है—

माया बोली सूम नै, मैं तेरै सें चाली।
खाट गूदड़ा सिर पर धरले, हेली करदे खाली॥

२६७२. मार कै आगै भूत भागै ।

मार के डर से भूत भी भागता है।

सन्दर्भ कथा—एक किसान की बहू बड़ी कर्कशा थी। वह नित्य प्रति अपने पति को घर के आंगन में बिठला कर इक्कीस जूते लगाया करती। इससे तंग आकर वह एक दिन भाग निकला और पास के नगर में चला गया। लेकिन बहू भी एक ही थी। वह जिस जगह पर अपने पति को बिठला कर जूते मारा करती थी, अब उस खाली जगह पर ही उसके नाम से जूते मार कर अपने नियम का निर्वाह करने लगी। उस स्थान के नीचे एक हँडिया गाड़ी हुई थी, जिसमें मंत्र-बल से एक भूत को बन्द किया हुआ था। अब वे जूते उसी भूत के सिर पर पड़ते। जूतों की मार से भूत विकल हो उठा, लेकिन वह निरुपाय था।

जूतों के आघात से एक दिन हँडिया फूट गई तो भूत उसमें से निकल कर वेतहाशा भागा और उसी नगरी में जा पहुँचा। एक दिन उसे वही किसान दिखलाई पड़ा तो भूत ने उससे कहा—जूत भाई, राम-राम। किसान के पूछने पर उसने आप बीती सुनाते हुए कहा कि हम दोनों ने एक ही औरत के हाथ से जूते खाये हैं, इसलिए हम 'जूत भाई' हैं। किसान बोला कि मुझे यहाँ आये इतने दिन हो गये, लेकिन कोई अच्छी आय नहीं हुई। भूत ने कहा कि इसका उपाय मैं किये देता हूँ। मैं अभी जाकर अमुक सेठ के वेटे के शरीर में प्रवेश करता हूँ, मैं किसी के निकाले नहीं निकलूंगा लेकिन जब तुम आओगे तो तुरन्त निकल जाऊंगा। इस काम के बदले तुम सेठ से मोटी रकम वसूल कर लेना। लेकिन इस बात को याद रखना कि मैं दुबारा किसी के शरीर में प्रवेश करूं तो वहां भूल कर भी न आना, यदि आओगे, तो तुम्हें जान से मार डालूंगा। किसान ने यह बात स्वीकार कर ली और योजनानुसार किसान को सेठ से मुँह मांगी रकम प्राप्त हो गई।

अगली बार भूत ने राजा के कुँअर के शरीर में प्रवेश किया और किसी के निकाले नहीं निकला। राजा को पता चलने पर उसने किसान को तत्काल ही बुलावा भेजा। किसान दुविधा में फँस गया। न जाए तो राजा मारे और जाए तो भूत मारे। अन्ततः उसने एक युक्ति निकाली। उसने अपनी धोती के 'पायचे' मारे, जूतियां हाथ में लीं और बड़े जोरों से भागता हुआ राजा के वेटे के पास यह कहता हुआ—पहुँचा—भूत भाई, रांड आई अर्थात् वह जूते लगाने वाली औरत यहाँ भी आ पहुँची है। इतना सुनते ही भूत के होश फाख्ता हो गये, जूतों की मार का स्मरण कर वह कांप उठा और अविलम्ब ही राजकुँअर के शरीर से निकल कर भाग गया।

२६७३ **मारणियें सें बंचाणियों वडो होवै।**

मारने वाले की अपेक्षा बचाने वाला अधिक समर्थ होता है।

मारणियें सें बंचावणियें का हाथ लांबा होवै।

२६७४. मारणियें को हाथ पकड़चोजा, पण झूठै की जबान कोनी पकड़ी जा ।

मारने वाले का हाथ तो पकड़ा जा सकता है, लेकिन झूठ बोलने वाले की जबान नहीं पकड़ी जा सकती ।

२६७५ मारवाड़ मनसूबै डूबी ।

मारवाड़ के लोग मंसूबे अधिक बांधते रहते हैं—

मारवाड़ मनसूबे डूबी, पूरब डूबी गाणां में ।
खानदेस खुरदां में डूबी, दच्छण डूबी दाणां में ।

२६७६ मारै आप, चढ़ावै ताप ।

सबको मारता तो ईश्वर ही है, लेकिन ज्वर आदि किसी न किसी बहाने से ।

२६७७. माल उडै दरबार का, नांव फते को होय ।

माल किसी का उड़ता है और नाम किसी का होता है ।

२६७८. माल गैल जगात है ।

माल के अनुसार ही जकात लगती है ।

२६७९. मालजादी को डंड फकीरां पर क्यूं ?

दुश्चरित्रा का दण्ड फकीरों पर क्यों पड़े ?

२६८०. माल पर चाल आवै ।

माल पर अपने आप चाल आने लगती है ।

रू० माल पर पग मत्तै ई उठै ।

२६८१. माली मलका मारसी, लोग पड़्या झख मारसी ।

माली (नाम विशेष) तो ऐसे ही नजारे मारेगी और लोग यों हीं झख मारते रहेंगे । माली किसी की परवाह नहीं करती ।

२६८२. मिनकी कै कैयां छींको थोड़ो ई टूटै ।

बिल्ली के कहने से छीका थोड़े ही टूटता है ।

२६८३. मिनखां नै मुंगता करया, ढोर करया जजमान ।

विधाता ने पंडितों को तो याचक बना दिया और ढोर जैसी बुद्धि वालों को यजमान—

वे' माता तूं बावळी, तेरा घुरड़ र काटूं कान ।
मिनखां नै मुंगता करया, ढोर करया जजमान ।।

२६८४. मिनखां मिनखां भीड़, मिनखां मिनखां छीड़ ।

मनुष्यों के जमा होने से भीड़ एवं उनके जाने से बिखराव ।

२६८५. मिन्नी तो काठ की घड़ा लेसी, पण म्याऊं म्याऊं कुण करसी ?

बिल्ली तो काठ की बनवालोगे, लेकिन म्याऊं-म्याऊं कौन करेगा ?
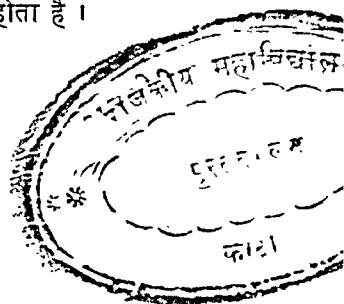
२६८६. मियां जीता रैसी तो फजीती और घणी ईं हो ज्यासी ।

मियांजी की फजीती (फजीहत) नामक लड़की मर गई तो 'फजीती' की माँ रोने लगी। इस पर पड़ोसिन ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा कि रोती क्यो हो ? मियांजी जीते रहेगे तो 'फजीती' (फजीहत) और बहुत होगी ।

२६८७. मियांजी रोवो क्यूं ? 'क सूरत ई इसी है ।

मियांजी रोते क्यो हो ? रो कहां रहा हूँ, सूरत ही रोनी है ।

२६८८. मियां मरया जद जाणिये, जद चाळीसा होय ।

मियां को तभी मरा समझना चाहिये कि जब उसका चेहलुम हो जाए ।
जब कोई काम पूरी तरह निबट जाए, तभी उसे सम्पन्न हुआ मानना चाहिए ।

रू० जाट मरयो जद जाणिये, जद बरसोदी होय ।

२६८९. मियें की दोड़ मैजत ताईं ।

मियां की दौड़ मस्जिद तक ।

२६९०. मियों बीबी दो जणां, क्यूं खावै वै जौ-चणां ?

जब घर में मियां-बीवी दो ही है, तब जौ-चने क्यों खाये ?

२६९१. मियों बीबी राजी तो के करैगो काजी ?

जब मियां-बीबी रजामन्द है, तब काजी क्या करेगा ?

संदर्भ कथा—एक जाट और मियां दोस्त थे । मियां की शादी थी । जाट भी उसमे शरीक हुआ । लेकिन निकाह करवाने वाला काजी रुष्ट होने के कारण नही आया । तब जाट ने कहा कि निकाह मै करवा देता हूं । जाट ने मियां और बीवी को पास-पास बिठलाया और बोला—

मियो बीबी राजी, के करैगो काजी ।
ढकणी में दही, निका होई सही ।।

२६९२. मिली भिटी, पीड़ मिटी ।

भेट हो गई तो अवसेर मिट गई ।

२६९३. मींडकी कै ईं जुखाम ?

मीडकी को भी जुकाम ?

रू० चीचड़ी अर खाज ?

२६९४ मींडा खड़वड़ में रैंणो चोखो कोनी ।

सन्दर्भ कथा—एक राजा को मेढो की लड़ाई करवाने का शौक था और बहुत से मेढे भी उसकी घुड़साल में रहते थे । नगर में वन्दरो का एक यूथ भी रहता था । यूथपति ने एक दिन सभी बंदरों से कहा कि यहा रहने

में कुशल नहीं है, क्योंकि मेंढे प्रायः रसोड़े में घुस जाते हैं और रसोइये क्रोधी हैं। इन्होंने कभी जलते हुए ठुंठ से मेंढों को मारा वे तो बचने के लिये घुड़साल में आएँगे और घुड़साल में आग लगने से घोड़े जल जायेंगे। घोड़ों के जलने की औषधि हमारी चर्वी से तैयार होती है अतः राजा अपने घोड़ों की खातिर हमें मरवा डालेगा, इसलिए शीघ्र ही यहाँ से अन्यत्र चले चलो। लेकिन वंदर नहीं माने। इस पर यूथपति तो चला गया और पीछे से वैसा ही हुआ, जैसा उसने कहा था। परिणाम स्वरूप सारे वन्दर मारे गये।

२६९५. **मीठी छुरी, झैर की भरी।**
मधुर भाषी किन्तु कपटी मनुष्य विष बुझी छुरी के समान।

२६९६. **मीठै कै लालच तो जूठो भी खायो जा।**
मीठै के लालच से तो जूठा भी खा लिया जाता है।

२६९७. **मुंगतै आगै मुंगतो मांगै, वींकी अक्कल कम।**
भिखारी के आगे भिखारी हाथ पसारे तो वुद्धि का घाटा ही समझना चाहिये।

दमदमी पर दमदमी, दम दमी पर दम।
मुंगतै आगै मुंगतो मांगै, वीं की अक्कल कम।

२६९८. **मुजरै को मारचो मरै है।**
सम्मान की भूख से मरा जा रहा है।

२६९९. **मुरदां का मुसाण ठिकाणां, मांगै रोटी घालै छाणां।**
मुरदों का ठिकाना मसान होता है जहां रोटी मांगने पर गोवर के कण्डे मिलते हैं।

२७०० **मुरदां कै सागै कांधिया कोनी बळै।**
मृतक के शव को अपने कंधों पर ढोकर ले जाने वाले उसके साथ थोड़े ही जलते हैं?
रू० मुरदा ई बळसी, कांधिया कोनी बळै।

२७०१. **मुळक बिनां रूप अडोळो।**
मुसकराहट के विना रूपवान् भी वेडौल लगता है।

२७०२. **मुसाणां में गयोडा लकड़ा पाछा थोड़ा ई आवै?**
मसानों में गई हुई लकड़ियां वापिस नहीं आतीं।

२७०३. **मूंग मोठ में कुणसो घाट बाद?**
मूंग-मोठ में कोई छोटा वड़ा नहीं।

२७०४. **मूंग ल्यो मूंग, 'क लिया कोनी 'क लेस्यां कोनी।**
संदर्भ कथा—राजस्थान में दामाद सुसराल जाता है तो उसके लिए मूंग-भात वनाये जाते हैं। एक वनिये का लड़का अपनी सुसराल गया तो

उसकी सास स्वयं उसे भोजन करवा रही थी और बार-बार उससे मूंग लेने का आग्रह कर रही थी। लेकिन कुछ समय पूर्व दामाद ने मूंगों का संग्रह किया था और उसमें उसे पर्याप्त घाटा लग रहा था इसलिए उसने सोचा कि उसकी सास उसे ताना मार रही है, अतः जब पुनः सास ने और मूंग लेने का आग्रह किया तो दामाद खीझ कर बोल पड़ा—मूंग लिये नहीं, या लेंगे नही, नफा-नुकसान तो यों ही होता रहता है।

२७०५. 'मूं चिलकै, पेट बिलकै।

ऊपर से तो टीप-टाप, लेकिन पेट भूखा।

२७०६ 'मूंडा देख कर टीका काढै।

संदर्भ कथा—एक बार दो दामाद साथ-साथ अपनी सुसराल पहुँचे। एक मालदार था और दूसरा सर्वथा निर्धन हो गया था। सास ने मालदार दामाद की तो खूब खातिर की, उसे अनेक प्रकार के पकवान परोसे और वह स्वयं उसके पास बैठकर उसे जिमाने लगी, लकिन निर्धन दामाद की कोई कद्र नहीं थी, उसे दूर बिठलाया गया और साधारण खाना परोसा गया। इस पर उसने सास से कहा—

कै सासुजी म्हारा भाग पातळा, कै थे म्हांनै भूली ?
वां नै घाली माल-मळाई, म्हांनै घाली थूली।

इस पर सास ने उत्तर दिया—

नां कंवरजी थारा भाग पातळा, नां मैं थांनै भूली।
'मूंडा देखकर टीका काढ्या, मार गबागब थूली।।

रू० 'मूं लैर थप्पड़।

२७०७. 'मूंडै कै लाळ लाग्योड़ी बुरी।

मुँह को लार लगी हुई बुरी होती है।

सदर्भ कथा—एक जाट गायें भैसे रखता था और घी बेचने का काम किया करता था। एक दिन उसकी स्त्री ने देखा कि 'कढावनी' मे दूध गरम हो गया है और उस पर मलाई आ गई है, लेकिन मलाई मे एक तिनका पड़ा हुआ है। तिनके को फेंक देने से पहले उसने सोचा कि तिनके में जो मलाई लग गई है उसे व्यर्थ क्यों जाने दूं ? यह सोचकर उसने तिनके को चूस लिया। मलाई उसे बड़ी स्वाद लगी और उसके मुँह लार लग गई। अब वह नित्य दूध पर से मलाई उतार कर खाने लगी, जिसके फलस्वरूप घी की मात्रा बहुत कम हो गई। उसका पति घर आया और उसने घी की कमी का कारण पूछा तो पहले तो वह चुप रही, लेकिन जाट के जोर देने पर उसने सारी स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा—

तिणकलिये डबोई रावत, तिणकलिये डबोई।

२७०८. **'मूंडै मांगी तो मौत ई कोनी मिलै ।**
मुँह मांगी तो मौत भी नहीं मिलती ।

२७०९. **'मूं सूई सो, पेट कूई सो ।**
मुँह तो छोटा सा, लेकिन पेट बड़ा ।
मुँह छोटा, लेकिन पूरा भोजन भट्ट ।

२७१०. **मूततै नै छिदाम पाई, पूण पीसो घाट ई सरी ।**
मूत्र-विसर्जन करते हुए को छदाम मिली तो पौन पैसा कम ही सही ।
अनायास जो मिल जाए, वही अच्छा ।
छदाम = एक पैसे का चौथा भाग ।

२७११. **मूरख की सारी रैण, चतर की दो घड़ी ।**
चतुर मनुष्य दो घड़ी में जो आनन्द ले लेता है, मूर्ख पूरी रात में भी नहीं ले पाता ।
रू० *मगर मकोड़ो मूढ नर, तीनूं लाग मरंत ।*
भंवर भुजंग 'र सुघड़ नर, डस कर दूर रहंत ।।

२७१२. **मूरखां कै किसा सींग होवै ?**
मूर्खों की पहचान के लिए उनके सिर पर सींग नहीं लगे होते, अपने कामों से ही वे अपनी मूर्खता जाहिर कर देते हैं ।

२७१३. **मूळ सैं ब्याज प्यारो ।**
मूल धन की अपेक्षा व्याज अधिक प्यारा लगता है। इसलिए व्याज के लालच में मूल धन को भी जोखिम में डाल दिया जाता है ।
रू० पूत सैं पोतो प्यारो ।

२७१४. **मूसळ कै अणी नईं, बेसां कै धणी नईं ।**
मूसल के अनी नहीं होती और वेश्या के पति नहीं होता ।
रू० मूरख में ग्यान नईं, दरांती कै म्यान नईं ।

२७१५. **'मे बावो आयो, सिट्टा-फळी ल्यायो ।**
मेह के आगमन से ही सिट्टे-फली आदि उत्पन्न होते हैं ।

२७१६. **मेर अर मोर ऊंचै पर राजी ।**
मेर और मोर ऊंचे स्थान पर खुश रहते हैं ।
मेर = एक जाति विशेष ।

२७१७. **मेरा मियां घर नईं, मुझे किसी का डर नईं ।**
मालिक घर पर न हो तो फिर डर किस बात का ?

२७१८. **मेरी नाजो को के के दुखै ? जो-जो सारै सो सो दुखै ।**
नाजुक-मिजाज औरत का पति जितना ही उसकी सुख-सुविधा का खयाल रखता है, उसकी फरमाइशें आगे से आगे बढती जाती हैं ।

२७१९. **मेरी मा गैली, दे रिपिये की धेली। मेरा बाबा बावळा, दे रिपिये का पावला।**
एक ने कहा कि मेरी मां गहेली है जो रुपया लेकर आठ आने वापिस करती है। इस पर दूसरा बोला कि मेरा बावा बावला है जो रुपये के चार आने ही देता है।
रू० मेरी मा इसी भोळी 'क कुड़छी गेर कर चमचो उठा ल्यावै।

२७२०. **मेरै लाल कै कुण कुण यार ? धोबी छींपी अर मणियार।**
जब कोई आदमी सर्वथा ओछी संगति में रहे।
रू० बावोजी का भायला, कै गूजर कै गोड़।

२७२१. **मेरो के दोस, मेरो सारो घर एकसो।**
मुझ अकेले को ही क्यों बुरा बतलाते हो ? मेरे घर में तो सभी एक जैसे हैं।

२७२२. **मेरो खुदावकसियो ढाई सेर की लपसी खाज्या, पण खाज्या किस भड़वै की ?**
माँ ने बेटे की तारीफ में कहा—मेरा खुदावख्श अढाई सेर तक लपसी खा जाए। इस पर किसी ने पूछा—खा तो जाए, लेकिन खा जाए किस भड़ुए की ?

२७२३. **'मेवा तो बरसत भला, होणी हो सो होय।**
जो होना होता है, वह तो होकर ही रहता है, लेकिन मेह का तो बरसना ही अच्छा।
वर्षा की बाढ में किसी के सौ घोड़े, सौ ऊंट, स्त्री और पुत्र बह गये, फिर भी उसने यही कहा—

सौ घोड़ा सौ करहला, पूत सपूती जोय।
'मेवा तो बरसत भला, होणी हो सो होय॥

मरु भूमि में वर्षा की उत्कट प्रतीक्षा रहती है—

मान महोड़ण मन रखण, दूव्यां संधण नेह।
और तो सै ई रूसियो, तूं मत रूसै मेह॥

रू० 'मे अर पावणां तो आवता ई चोखा।

२७२४. **'मेवां मोळ, पूनां तेज।**
वर्षा होने से अन्न के भाव गिरते हैं, हवा चलने से चढते हैं।

२७२५. **'मेवा वांही बरस सी, जां राजी होसी राम।**
मेह वहीं बरसेगा, जहाँ प्रभु प्रसन्न होंगे।

२७२६. **मैं अर मेरी बाजरी तूं अर तेरो रिपियो।**
संदर्भ कथा—किसी आदमी ने एक परिचित दुकानदार से एक रुपये का बाजरा लिया और रुपया नाम लिख लेने के लिए कहा। इस पर

दुकानदार बोला कि अब तो तेरी और मेरी ताकत बराबर है - मैं और मेरा बाजरा एवं तू और तेरा रुपया। लेकिन बाजरा तुझे देदूं तो मैं अकेला रह जाऊंगा और तुम्हारे पास तीन जोर हो जाएँगे, अतः तुम्हें नहीं पा सकूंगा। और यों कह कर उसने बाजरा देने से इन्कार कर दिया।

२७२७. मैं अर मोती इयकोती घाली।

मैंने और मोती ने इक्कीस रुपये थाली में डाले।

किसी काम में दूसरे के साथ अपना नाम जोड़ कर झूठ-मूठ का श्रेय लेने की चेष्टा।

२७२८. मैं ई तो मा हूं जद पूत रसमड़ा जी लियो।

संदर्भ कथा—किसी आदमी को सन्निपात हो गया। उसकी औरत ने उससे पूछा कि क्या तुम मुझे पहचानते हो, मैं कौन हूं? पति ने लड़खड़ाती जबान से उत्तर दिया कि तू तो माँ है न? इस पर निराश होकर पत्नी बोली कि यदि मैं ही माँ हूँ तब तो मेरे पूत-रतन तुम जी लिए अर्थात् तुम्हारे बचने की क्या उम्मेद करूं?

२७२९. मैं गळो कटावै।

अहंकार सर्वनाश कर देता है।

बकरा मैं मैं करता है तो उसके गले पर छुरी चलाई जाती है।

तु० मैं मैं की गळै छुरी।

२७३०. मैंगो रोवै एक बार, सैंगो रोवै बार-बार।

महँगी वस्तु खरीदने वाले को तो एक बार ही उसका महँगापन खलता है, लेकिन सस्ती चीज खरीदने वाला बार-बार [illegible] है।

२७३१. मैं तनै सिलोक लागूं ? के तूं तनै ई पूछले।

जैसा मैं तुम्हें लगता हूँ, वैसे ही तुम मुझे लगते हो।

२७३२. मैं तो मरूं मेरी ताई, तूं क्यूं मरै पराई जाई ?

[illegible] पति की पत्नी के प्रति उक्ति—मुझ पर तो विपदा पड़ी है, इसलिए इसे झेलना ही पड़ेगा, लेकिन तू मेरे साथ क्यों मरती है?

२७३३. मेंदी में पत्तां-पत्तां रंग, पण पीस्यां।

मेंहदी के पत्ते-पत्ते में रंग है, लेकिन उसका पता पीसने से ही होता है।

भगवान् कण-कण में व्याप्त है लेकिन भक्ति से ही प्रकट हो सकते हैं।

२७३४. मैं पीया, मेरा ढँग पीया, बाकी का कूवा [illegible]।

मैंने पानी पी लिया, मेरे ढोर ने पानी पी लिया, [illegible]

[illegible]

२७३५. **मोट्यारां की दूर बलाय ।**
वला भी मरदों से दूर रहती है ।

२७३६ **मोट्यारां की माया, विरछां की छायां ।**
सब कुछ पुरुषों के पीछे ही है, छाया वृक्षों से ही होती है ।
रू० मोट्यारां गैल ई भला वानां है ।

२७३७. **मोठां साटै घुण पिसज्या ।**
मोठों के साथ घुन भी पिस जाते हैं ।

२७३८. **मोडा करै मलार, पराये घर ऊपरां ।**
वेशधारी साधु दूसरों के बल पर मौज उड़ाते हैं ।

२७३९. **मोडा घणां वैकूंठ सांकड़ी ।**
वेशधारी साधु इतने अधिक हैं कि उनके लिए स्वर्ग में भी स्थान कम पड़ गया है ।

२७४०. **मोडा टोडा वाकरा, चौथी विधवा नार ।**
इतरा तो भूखा भला, धाया करै खुआर ।।
वेशधारी साधु, ऊंट, बकरा और विधवा स्त्री ये भूखे ही अच्छे, अधिक खाने पर ये खुराफात ही करते हैं ।

२७४१. **मोड़ा निमाई तो आया ई करै है।**
जिन्दगी में कठिनाइयां भी आती ही हैं ।

२७४२. **मोत को अर पावणै को बेरो कोनी, कद आज्या ।**
मृत्यु और अतिथि का पता नहीं होता कि कब आ जाएँ ।

२७४३. **मोत को घर खांसी, राड़ को घर हांसी ।**
खांसी से अनेक रोग पैदा होते हैं जिनसे मृत्यु भी हो जाती है। हँसी में लड़ाई के बीज छिपे होते हैं ।
द्रौपदी ने दुर्योधन की हँसी उड़ाई थी जो महाभारत का कारण बन गई ।

२७४४ **मोत टळै कोनी ।**
मृत्यु टाले नहीं टलती ।
रू० मोत आवै जद आटै की सूळी सें ई मरज्या ।

२७४५. **मोत दिखायां ताप आसंगै ।**
मृत्यु का भय दिखलाने पर आदमी ज्वर की हां भरता है ।
यों तो आदमी जरा भी दण्ड भुगतने के लिए तैयार नहीं होता, लेकिन अधिक सजा सुनाने से थोड़ी पर सहर्ष तैयार हो जाता है ।

२७४६. **मोत मांदगी मामलो, मंदी मांगणहार ।**
अै पांचूं मम्मा बुरा, भली करै करतार ।।
मृत्यु, बीमारी, मुकद्दमा, मंदी और ऋणदाता ये पांचों ही बहुत बुरे होते हैं, इनसे भगवान् ही बचाये ।

२७४७ **मोत सें मोकाण भारी पड़गी ।**

मानमपुरसी तो मौत से भी भारी पड़ गई ।

२७४८. **मोत सें मोळ बुरी ।**

व्यापारी मृत्यु की अपेक्षा भी मंदी को बुरी मानता है ।

रू० (१) मोत देदेई, मोळ ना देई ।

(२) मोळ पड़ी जद जाणियें, झुकता तोलै तोल ।
नरम गरम घर में धरै, मीठा बोलै बोल ।।

२७४९. **मोत हरावै, भूख निवावै ।**

मृत्यु के आगे सब को हार माननी पड़ती है और भूख के आगे झुकना पड़ता है ।

२७५०. **मोथा बुरी बलाय, खीर में लूण घलावै ।**

उजड्ड आदमी बुरी बला हैं जो खीर में खांड के स्थान पर नमक डलवाते हैं ।

२७५१. **मोर नाचै ई नाचै, पण पगां कानी देख कर रोवै ।**

मनुष्य भले सब तरह से सुखी हो, लेकिन एक ही दुःख या अभाव उसके सारे सुखों को फीका कर देता है ।

२७५२. **मोरां बिन डूंगर किसा, मे बिन किसी मलार ।**
तिरिया बिन तीजां किसी, पिव बिन किसा त्यूंहार ।।

मोरों के बिना कैसा पर्वत, मेह के बिना क्या मलार, पत्नी के बिना कैसी तीज एवं पति के बिना कैसा त्यौहार ?

२७५३. **मोरियो मेहू-मेहू तो घणोई करै, पण बरसणो तो इन्दर कै सारै ।**

मोर मेहू मेहू तो खूब करता है, लेकिन मेह बरसाना तो इन्द्र के हाथ है ।

२७५४. **म्याऊं को 'मूंडो कुण पकड़ै ?**

म्याऊं का ठौर कौन पकड़े ?

२७५५ **म्हादेवजी सें मंत्तर छाना कोनी ।**

भगवान् सदा-शिव से मंत्र क्या छिपे हैं ?

रू० म्हादेवजी नै कोई के मंत्तर सिखावै ?

२७५६. **म्हारली बरियां कठै मरग्यो हो ?**

मेरी बिरियां कहां मर गये थे ?

संदर्भ कथा—एक ज्योतिषी किसी को विवाह का मुहूर्त बतला रहा था और कह रहा था कि इस मुहूर्त में विवाह करने पर वधू सदा सोहागिन बनी रहती है । ज्योतिषी की विधवा बेटी ने अपने बाप की यह बात सुनी तो मन ही मन कह उठी कि मेरी बिरियां तुम कहां मर गये थे ?

२७५७. **म्हारी बिल्ली अर म्हारै सें ई म्याऊं ?**

हमारी बिल्ली और हमें ही डराये ?

२७५८ म्हारै घर में म्हे बडा, जीजी होरै जेठ ।

अपने घर में हम बड़े है, जीजी के घर में जेठ ।

अपने अपने घर में सभी वड़े हैं ।

२७५९. म्हारै छापोली की चाकी अर थे छापोली व्याया, आपां दोनूं साढू ।

हमारे घर में छापोली (एक गाँव का नाम) की चक्की है और तुम छापोली व्याहे हो, अतः अपन दोनों साढू ।

अकारण रिश्ता जोड़ने की चेष्टा ।

२७६०. म्हारै सें गोरी जीं कै पीळिये को रोग ।

मेरे से अधिक गौर वर्णवाली कोई अन्य स्त्री हो ही नहीं सकती, यदि तुमने कोई ऐसी औरत देखी है तो वह निश्चय ही पीलिया रोग से ग्रस्त है ।

पीलिया = एक रोग, जिसमें शरीर का रंग पीला पड़ जाता है, यहाँ तक कि रोगी के कपड़े भी पीले हो जाते हैं ।

२७६१. म्हावतां सें यारी अर दरुजा सांकड़ा ?

महावतों के साथ यारी और घर का दरवाजा सँकरा ?

वड़ों से दोस्ती और उनके आतिथ्य की कोई व्यवस्था नहीं ।

२७६२. म्हेई खेल्या, म्हेई ढाया ।

स्वयं ही किसी काम का प्रारंभ करे और स्वयं ही उसका अंत कर दे ।

२७६३. म्हांको गोलो होकर गाजर खा छै ?

हमारा गोला होकर भी गाजर जैसी तुच्छ वस्तु खा रहा है ?

सन्दर्भ कथा—एक ठाकुर ने अपने गोले को गाजर खाते देख कर उससे कहा कि अरे, हमारा गोला होकर भी तू गाजर जैसी घटिया चीज खा रहा है? गोले ने उत्तर दिया कि यह भी कहाँ नसीब होती है, मैंने तो कुत्ते के मुँह से छीनी है, आप कहते हैं तो मैं इसे कुएँ में डाल देता हूँ । लेकिन ठाकुर तो झूठी ऐंठ दिखला रहा था, वह स्वयं भूखा था । इसलिए उसने धीरे से गोले से कहा कि ला, यह गाजर मुझे दे दे, कुएँ में मत डाल देना, नहीं तो इसके लिए मुझे भी कुएँ में गिरना पड़ेगा ।

२७६४. यारां चोरी पीरां दगा ।

यारों के साथ चोरी और पीरों के साथ दगाबाजी नहीं करनी चाहिए ।

२७६५. यारी का घर दूर है ।

यारी निभा पाना वड़ा कठिन है ।

२७६६. या देवी बोळा भगत तारयां है ।

इस देवी ने न जाने कितनों को पार लगाया है ।

किसी कुलटा के प्रति व्यंग्योक्ति ।

२७६७ यो ई जंवाई है जद तो खिला लिया दोयता ।
इस दामाद के वल पर तो नानी मुश्किल से ही दोहितों को खेला पायेगी ।
नामरद दामाद के प्रति व्यंग्य ।

२७६८. यो मेळो तो एक दिन खिडणो ईं है ।
जिन्दगी का मेला तो एक दिन समाप्त होना ही है ।

२७६९. यो ही म्हारो आसरो, कै पीर कै सासरो ।
औरत के दो ही आश्रय हैं, पीहर व सुसराल ।

२७७०. रंक रीझै तो रो दे ।
रंक रीझे भी तो क्या दे दे ?
किसी की कष्ट गाथा सुन कर वह रो भले ही दे, इसके अतिरिक्त वह उसकी क्या सहायता कर सकता है ?

२७७१. रंग न्यारा-न्यारा, सुवाद एक ई है ।
संदर्भ कथा—एक राजा की पुत्र-वधू अत्यंत रूपवती थी । उसको देख कर राजा का मन चलायमान हो गया और वह उसे किसी प्रकार प्राप्त करने की चेष्टा करने लगा । वहू को भी श्वसुर की इस कुत्सित इच्छा का पता चल गया और उसने युक्ति से ही काम लेना ठीक समझा । उसने श्वसुर को रात के समय महल में आने का संकेत दे दिया । राजा व्यग्रता से रात होने की प्रतीक्षा करने लगा । उधर वहू ने चार नीवू मंगवाये और उनके दो दो टुकड़े करके और उन्हें भिन्न-भिन्न रंगों से रंग कर एक मेज पर रख दिया । राजा आया तो वहू ने उससे कहा कि पहले आप मेज पर रखी हुई आठों चीजों को चख कर उनके स्वाद मुझे वतलायें । राजा ने आठों टुकड़ों को चख कर कहा कि यद्यपि इनके रंग भिन्न भिन्न हैं, लेकिन स्वाद सब का एक ही है । इस पर पुत्रवधू ने उसकी कामवासना की भर्त्सना करते हुए कहा कि जिस प्रकार इन नीवुओं के रंग भिन्न हैं लेकिन स्वाद एक ही है, उसी प्रकार स्त्रियों के रंग भी भिन्न-भिन्न होते हैं, लेकिन वात एक ही है । तुम्हारे रनिवास में जितनी रानियां हैं, उनसे अधिक मेरे में भी कुछ नहीं है, अतः तुम अपने माथे पर कलंक का टीका क्यों लगवाते हो ? वात राजा की समझ में आ गई और वह वहू से माफी मांग कर लौट गया ।

२७७२. रंग राजा, पोत परजा ।
कपड़े का रंग चटक हो तो उसकी मांग अधिक रहती है, भले ही उसका पोत घटिया हो ।

२७७३. रंडी किसकी जोरू, भड़वा किसका साला ?
वेश्या किसकी पत्नी और भड़ुआ किसका साला ?

२७७४. **रजपूत की तरवार सें नईं मरै जिको कायथ की कलम सें मरज्या ।**

राजपूत की तलवार से तो आदमी बच सकता है, लेकिन कायस्थ की कलम के नीचे आने के बाद नहीं बच सकता ।

२७७५. **रजपूती कोई कै बाप की कोनी ।**

शूरवीरता किसी की बपौती नहीं ।

२७७६. **रण की तो बातां ईं चोखी लागै ।**

युद्ध की तो बातें ही अच्छी लगती हैं, रण भूमि में जाना सहल नहीं ।

२७७७. **रण जीत्यो जा, जण कोनी जीत्यो जा ।**

रण जीता जा सकता है, लेकिन जनता को नहीं जीता जा सकता ।
दुनिया की जबान नहीं पकड़ी जा सकती ।

२७७८. **रण में नईं जावै, इत्तै ई सूरमा बाजै ।**

जब तक रणभूमि में नहीं जाता, तभी तक शूरमा कहलाता है ।

२७७९. **रमता राम, बैठ्या सो ई मुकाम ।**

साधु तो रमता रहता है, वह जहाँ बैठ जाए, वही उसका मुकाम ।

२७८०. **रळायां हाथ धुपै ।**

दोनों हाथ मिलाने से ही धुलते हैं ।
दोनों पक्ष रल-मिल कर काम करें तभी सफलता मिलती है ।

२७८१. **रळियां में जलम्योड़ा, गळियां में भटकै ।**

महलों में जन्मे हुए गलियों में भटकते फिर रहे हैं ।

२७८२. **रसिये की ज्यान टक्को सी है ।**

रसिक निपट अकेला ही है ।

२७८३. **रांगड़ कै रैकारै की गाळ ।**

राजपूत को 'अरे' कहना ही उसके लिए गाली है ।

२७८४. **रांड कै मारयोड़ै की अर गांव में रुळेड़ै की कोई दाद-फिराद कोनी ।**

स्त्री द्वारा पिटे हुए एवं गाँव में भटकने वाले की कोई सुनवाई नहीं ।

२७८५. **रांड कै रांड पगां लागी, 'क मेरै जिसी तूं ।**

एक विधवा ने दूसरी के पैर छुये तो वह बोली—जैसी मैं, वैसी तू ।

२७८६. **रांड कैवै जिकी निपूती कुहावै ।**

दूसरे को गाली देने वाले को स्वयं भी गाली सुननी पड़ती है ।
रू० महलां बैठ्यो कैवै जिको कुरड़ी बैठे सें सुणै ।

२७८७. **रांड भांड नईं छेड़िये, पणघट पर दासी ।**
भूखो सिंघ न छेड़िये, सूत्यो सन्यासी ॥

विधवा स्त्री, भांड, पनघट की दासी, भूखे सिंह एवं सोये हुए संन्यासी से कभी छेड़-छाड़ नहीं करनी चाहिए ।

२ ८८. **रांड रंडापो काट दे, पण रंडवा काटण दे जद नी ।**

विधवा तो वैधव्य का शेष जीवन संयम से निकाल दे, लेकिन रँडुवे निकालने दें तब न !

२७८९. **रांड सें वेसी तो गाळ ई कोनी ।**

सुहागिन स्त्री के लिए रांड से बड़ी कोई गाली नहीं ।

२७९०. **रांड स्याणी तो होवै, पण होवै खसम मरयां ।**

स्त्री सयानी तो होती है, लेकिन होती है पति के मरने के वाद ।

२७९१. **राई ओलै प्हाड़ रैज्या ।**

कभी कभी बहुत छोटी वात के पीछे बहुत बड़ा रहस्य छिपा होता है ।

२७९२. **राई का भाव राते गया ।**

राई के वे भाव रात में ही चले गये ।

संदर्भ कथा—एक वनिये के घर में रात को चोर घुसा । वनिये ने उसे देख लिया लेकिन उसे पकड़े कौन ? तव उसने अपनी स्त्री से पूछा कि आज मैं दुकान से जो राई लाया था, उसे बहुत सुरक्षित रखना । राई की बड़ी मांग निकली है और यह कल सोने के भाव विकेगी । वनिये की स्त्री ने उत्तर दिया कि मुझे इस वात का क्या पता था ? मैंने तो सारी राई एक घड़े में भर कर रसोई में रखदी है, सुवह ही उसे बहुत संभाल कर रख दूंगी । चोर ने लुके-छिपे दोनों का संवाद सुना तो उसने सोचा कि और वस्तुओं को ढूंढने की बजाय इस राई के घड़े को ले चलना ही सबसे अधिक लाभप्रद रहेगा । इसलिए वह राई के घड़े को उठा कर ले गया और अगले दिन उसे वेचने के लिए वाजार में गया । लेकिन वाजार में तो राई के भाव में कोई वृद्धि नहीं हुई थी । अन्त में वह घड़ा लेकर उसी वनिये की दुकान पर पहुँचा । वनिये ने उसे पहचान लिया और बोला—

वखत वखत को मोल है, वाण्यो अकल उपाई ।
राई का भाव राते गया, अव टक्कै की सेर ढाई ।।

२७९३. **राई को साख, पेठै को नातो ।**

राई जितना छोटा साख एवं पेठे (कुम्हड़े) जितना बड़ा नाता एक समान ।

२७९४. **राई घटै न तिल वधै, 'वेमाता का लेख ।**

विधाता के लेख में यत्किंचित् भी घट-वढ नहीं होती ।

२७९५. **राख पत, रखाय पत ।**

तुम दूसरों की इज्जत करोगे तो दूसरे तुम्हारी इज्जत करेंगे ।

२७९६ राखी पून्यूं कै दिनां, श्रवण नछत्तर होय।
विरखा आछी होयसी, धान घणेरो होय।।
रक्षा बंधन (श्रावण शु० पूर्णिमा) को श्रवण नक्षत्र हो तो वर्षा एवं अन्न प्रचुर हो।

२७९७ राग, रसायण, निरतगत, नटबाजी, वैदंग।
अश्व चढण, व्याकरण पढण, जाणत जोतिस अंग।
धनष-वाण, रथ हांकवो, चित चोरी, ब्रह्म ग्यान।
जळ तिरवो, धीरज वचन, चौदा विद्या निधान।।
राग, रसायन, नृत्य, नटवाजी, वैद्यक, घुड़सवारी, व्याकरण व ज्योतिष का ज्ञान, धनुषवाण चलाना, रथ संचालन, दूसरे के चित्त को मोह लेना, ब्रह्म ज्ञान, तैरना और धीर गंभीर वाणी बोलना, ये चौदह विद्यायें मानी गई हैं और इनको जानने वाले को चौदह विद्या निधान कहते हैं।

राजस्थान की लोक-कथाओं में राजा भोज को चौदह विद्या निधान कहा गया है। यद्यपि चौदह विद्याओं के नामों में अन्तर पाया जाता है, तथापि चौदह विद्या संबंधी उल्लेख हजारों वर्ष पूर्व भी मिलते हैं। महाराजा संक्षोभ के खोह ताम्र अभिलेख वर्ष २०९ (सन् ५२८-२९ ई०) में महाराजा को चौदह विद्या स्थानों का तत्वज्ञ बतलाया गया है (चतुर्दशविद्यास्थान· विदितपरमार्थस्य)।

२७९८. राग रसोई पागड़ी कदे कदे वण जाय।
राग, रसोई और पगड़ी कभी कभी ही ठीक बैठ पाती हैं।

२७९९. रागो भलो न पिरागो।
दोनों ही एक जैसे हैं। दोनों में से एक भी भला नहीं।

२८००. राज को सिर ऊपर कर गैलो।
राज का रास्ता माथे के ऊपर से निकलता है।
राजा के अनुचित आदेश को भी मानना पड़ता है।

२८०१. राज पोपां बाई को, लेखो राई-राई को।
यह पोपां बाई का राज्य है जहाँ राई-राई का हिसाब ले लिया जाता है।

२८०२. राजा को दान, परजा को अस्नान।
राजा को जो पुण्य दान करने से होता है, प्रजा को तीर्थ-स्नान करने से ही हो जाता है।

२८०३. राजा को दूसरो, छेरी को तीसरो, रंक को रूसबो खासरखूसा।
राजा का दूसरा बेटा, बकरी का तीसरा और गरीब का रूठना कुछ भी नहीं। राजा का एक पुत्र ही उसका उत्तराधिकारी बनता था, दूसरे

भाइयों को तो वह जो कुछ दे देता, उसी पर उन्हें संतोष करना पड़ता था। बकरी के दो ही स्तन होते हैं, अतः उसका तीसरा बच्चा क्या चूंघे ? इसी प्रकार रंक का रूठना भी बे–मानी है, वह क्या कर सकता है ?

२८०४. **राजा को वेटो केरड़ी मारी, म्हे क्यूं कैवां ?**
राजा के वेटे ने बछिया मार दी, लेकिन हम क्यों कहें ?

२८०५. **राजाजी कै तो सोनै का पागड़ा ? 'क आंकै गुड़ का होवै तो ई थोड़ा है।**
राज़ा की सवारी को देख कर एक देहाती स्त्री ने आश्चर्य में भर कर अपनी साथिन से कहा कि राजाजी के तो सोने के 'पागड़े' (रकाव) हैं। इस पर दूसरी बोली कि हांजी, इनके क्या कमी ? इनके तो गुड़ के पागड़े हों तो भी थोड़े हैं।
उसकी दृष्टि में गुड़ जैसी दुर्लभ वस्तु कोई न थी।

२८०६. **राजाजी कै बेटो जायां सै ई राजी।**
चाहे मन से चाहे वे मन से, राज़ा के पुत्र होने पर सभी हर्ष प्रकट करते हैं।

२८०७. **राजा जोगी अगन जळ, इणकी उळटी रीत।**
डरता रहज्यो परसराम, थोड़ी पाळै प्रीत॥
राजा, योगी, अग्नि और पानी से डर कर ही रहना चाहिए। इनसे अधिक प्रीति करना अच्छा नहीं।

२८०८. **राजा तो एक राम ई है।**
सही माने में तो राजा केवल राम ही है।

२८०९. **राजा बांधै दळ, वैद बांधै मळ।**
राजा दल वांधता (एकत्र करता) है और वैद्य रोगी के मल को बांधता है। बंधकर मल आना स्वास्थ्य का लक्षण माना जाता है। कहावत भी है 'मळ में ईं वळ हैं'।

२८१०. **राजा मानै सो राणी, और भरै सै पाणी।**
राजाओं के अनेक रानियां होती थीं, लेकिन जिस पर राजा की विशेष कृपा होती थी, उसी का अधिक दबदबा रहता था। राजा की चहेती होने से कभी कभी तो पासवानों का रुतवा भी रानियों से अधिक बढ जाता था।
रू० राजा मानै सो राणी, धरती मानै सो पाणी।

२८११ **राजा रूठै नगरी राखै, हर रूठ्यां कां जाणां ?**
राजा रूठता है तो उसके नगर या राज्य का परित्याग किया जा सकता है, लेकिन भगवान् रूठ जाए तो फिर ठौर कहाँ ?

२८१२. **राड़ कै सिर-पग कोनी होवै ।**
लड़ाई–झगड़े के सिर–पैर थोड़े ही होते हैं। झगड़ा तो अकारण भी हो जाता है।

२८१३. **राड़ में जावां न रण में जूझां, आपकी कैवां न पराई बूझां ।**
दूसरों से कोई प्रयोजन न रखने वाला आदमी ।

२८१४. **राड़ सें वाड़ भली ।**
झगड़ा करने की अपेक्षा तो वाड़ कर लेना अच्छा है ।

२८१५. **राणीजी धमाळ गावै तो सै जणी नाड़ हलावै ।**
रानीजी धमार गाती हैं तो सभी स्त्रियां उनकी खुशामद में गरदन हिलाती हैं।

२८१६. **राणीजी नै काणी ना कैवो, पी'र नेड़ो ई है ।**
रानीजी को कानी न कह देना अन्यथा पीहर नजदीक ही है, रूठ कर पीहर चली जाएँगी ।

२८१७. **राणी नै काणी कुण कैवै ?**
कानी होने पर भी रानी को कानी कौन कहे ?

२८१८. **रात की कमाई पड़ी पाई ।**
रात में जितना काम कर लिया जाए, वह नफे में है ।
रू० रात आगै के उँवार है ।

२८१९. **रात च्यानणी, वात आंख्यां देखी मानणी ।**
रात तो चांदनी अच्छी, वात आंखों देखी सच्ची ।

२८२०. **राबड़ी चोखी होवै तो ब्या में कोनी रांधै के ?**
रावड़ी ही उत्तम–पदार्थ हो तो क्या विवाह में न रांधी जाए ?

२८२१. **राबड़ी रांड ई कैवै, 'क मनै दांतां सें खावो ।**
रावड़ी को दांतों से चवाने की आवश्यकता नहीं पड़ती, लेकिन वह भी कहती है कि मुझे दांतों से चवा कर खाओ ।
जव कोई अदना आदमी विशेष सम्मान प्राप्ति के लिए उत्सुक हो ।

२८२२. **राबड़ी रोटी खावतां-खावतां ई घाटो आसी तो धूळ तो फाकी ई कोनी जा ।**
यदि रावड़ी–रोटी जैसा सामान्य खाना खाने से भी घाटा पड़ेगा तो पड़ेगा ही, क्योंकि धूल तो फाँकी ही नहीं जा सकती ।

२८२३. **राबड़ी सें कान चेप राख्या है ।**
बड़ी कठिनाई से किसी प्रकार निर्वाह–मात्र कर पाते हैं ।

२८२४. **राव तिहारो रोस, जीवतड़ो भूलूं नईं ।**
हे रावड़ी, तेरे रोष को मैं जीवन–भर नहीं भूल सकता ।

संदर्भ कथा—एक पंडित के घर में घाटा था और वह किसी प्रकार रावड़ी–रोटी खाकर अपना निर्वाह करता था। जब रावड़ी–रोटी खाते-खाते ऊब गया तो उसने बाहर जाने का विचार किया। उसका एक यजमान आगरा रहा करता था। पंडित उसके पास आगरा पहुँचा। सेठ ने सोचा कि पंडितजी और तो सब चीजें खाते ही हैं, अतः उनके लिए विशेष तौर पर रावड़ी बनाई गई। रावड़ी को देख कर पंडितजी खड़े हो गये और हाथ जोड़ कर बोले—

राव तिहारो रोस, जीवतड़ो भूलूं नईं।
छोडी थी सौ कोस, आई आगै आगरै॥

२८२५. **राम कह कर रहीम के कं'णो।**
जो एक बार कह दिया, उसे क्या पलटना ?

२८२६ **राम की डांग पर डेरो है।**
सारा काम राम–भरोसे है।

२८२७. **रामजी ऊपर चढ्यो देखै है।**
रामजी सब कुछ देखता है, चाहे कोई कितना ही छुप कर कुकर्म करे, उससे छिपा नहीं रहता।

२८२८ **राम झरोखै बैठ कर, सबका मुजरा लेय।**
जैसी जाकी चाकरी, वैसा ही फळ देय॥
जो जैसा करता है, भगवान् उसे वैसा ही फल देता है।

२८२९. **रामदेवजी नै मिल्या जिका ढेढ ई ढेढ।**
रामदेवजी को सब ढेढ ही मिले।
रू० रामदेवजी नै मिल्या जिका सै कामड़िया ई कामड़िया।

२८३०. **राम राखै जीं नै कोई नीं ताखै।**
जिसका रक्षक भगवान् है, उसे कोई क्षति नहीं पहुँचा सकता।

२८३१. **रामलली कै तीन सै, रामलाल कै तीन।**
रामलली के चहेते तो तीन सौ हैं और रामलाल के तीन।
नर्तकी का नृत्य देखने के लिए तो अपार भीड़ जमा हो जाती है, लेकिन रामकथा सुनने वाले इने–गिने लोग।

२८३२. **रावण कै रोणियों ईं कोनी रैयो।**
रावण का परिवार बहुत बड़ा था (नौ लख पूत, सवा लख नाती), लेकिन उसकी मृत्यु पर कोई रोने वाला भी न रहा।
रू० रांड को रोणियों ईं कोनी।

२८३३ **रावतजी का नौ हळ चालै, साढे आठ पराया।**
आधै हळ में चौथी पांती, रावत का हळ आया ॥
रावतजी के नौ हल चलते हैं जिनमें साढे आठ तो दूसरों के हैं, शेष आधे हल में उनका केवल चौथाई हिस्सा है, फिर भी वे हल रावतजी के ही कहलाते हैं।
विना बात का श्रेय।

२८३४. **रावळी घोड़ी का सै असवार।**
रनिवास की घोड़ी पर सभी सवार होना चाहते हैं

२८३५. **रावळै को तेल पल्लै में ई चोखो।**
रनिवास का तेल पल्ले में भी अच्छा।
संदर्भ कथा—दिवाली आई तो रनिवास की सभी बांदियों आदि को तेल बांटा जाने लगा। एक औरत के पास तेल लेने के लिए कोई पात्र नहीं था, अतः उसने अपनी ओढनी का पल्ला आगे करके उसी में तेल डलवा लिया, जिससे तेल लेने वालियों में उसका भी नाम दर्ज हो गया और आगे के लिए उसकी लाग चालू रह गई।
रू० रावळै को तेल, झोळी मे ई झेल।

२८३६. **रावळै जीमां हां।**
जो लोग दूसरों के यहाँ ही भोजन करते हैं, उन्हें अनाज आदि के भावों का पता क्यों हो?
संदर्भ कथा—एक बारहठ दूसरे गाँव गया तो किसी ने उससे पूछा—बारहठजी, आपके यहाँ बाजरे का क्या भाव? बारहठजी बोले हमें क्या पता? हम तो 'रावळै' जीमते हैं। उसने फिर पूछा कि घी का क्या भाव? बारहठजी ने उत्तर दिया—घी भी वे ही डाल देते हैं।

२८३७. **रिपिया थारी रात, जायो न कोई जलम सी।**
जिस रात्रि में रुपये का जन्म हुआ, उस रात्रि में और कोई नहीं जन्मा अर्थात् रुपये जैसी करामात किसी अन्य में नहीं।
रू० (१) रिपिया तेरी रात, दूजो नर जायो नई।
जे जायो परभात, तेरै जिसा गुण नई ॥
(२) रिपिया तेरी रात, दूजो नर जलम्यो नई।
जे जलम्या दो च्यार, तो जुग में जीया नई ॥

२८३८. **रिपिये की जड़ काळजै में होवै।**
रुपये की जड़ कलेजे में होती है अर्थात् रुपया अत्यंत प्यारा लगता है।

२८३९. **रिपियो जीं ताव घड़्यो जावै, वीं ताव ई पाछो आवै।**
(धात्विक) रुपया जिस ताव से घड़ा जाता है, उसी ताव से वापिस आता है। यदि ऋणदाता थोड़ी भी ढिलाई बरते तो रुपया नहीं आता।

२८४०. **रिपियो तो आपको खोटो अर दोस परखणियें नै दे ।**
रुपया तो अपना खोटा और दोष परखने वाले को दे ।

२८४१. **रिपियो परखै बार-बार, मिनख परखै एक बार ।**
रुपये को बार-बार परखते हैं, लेकिन मनुष्य को एक बार ही परखा जाता है ।

२८४२. **रीझ खीझ दोनूं पचै, जंको के बिसवास ?**
जिस आदमी के रीझने या खीझने का आभास भी न मिले, उसका कोई भरोसा नहीं कि वह क्या कर डाले ।

२८४३. **रुक्या काम तो रावण का ई रहग्या !**
रुके हुए काम तो रावण के भी अधूरे ही रह गये ।
कहते हैं कि रावण आकाश को सीढियां लगाना चाहता था, अग्नि को निर्धूम बनाना चाहता था एवं सोने में सुगन्ध करना चाहता था, लेकिन उसके ये काम पूरे नहीं हो पाये । हाँ, आधुनिक वैज्ञानिकों ने इनमें से दो काम तो पूरे कर दिये हैं—बिजली के रूप में अग्नि को निर्धूम बना दिया है एवं राकेट के माध्यम से आकाश को सीढियां लगादी हैं ।

२८४४. **रूंगासिये को राम फळै ।**
बेईमानी करने वाले को भगवान् उसका फल देते हैं ।

२८४५. **रूइया सुख सोइया, घीया न लूखा खाय ।**
लोहा लकड़ा बिणजतां, जलम अकारथ जाय ।।
रूई व कपड़े का व्यापार करने वाला आराम से सोता है, घी का व्यापार करने वाला लूखी रोटी नहीं खाता, लेकिन लोहे और काठ का कारोबार करने वालों का जन्म तो व्यर्थ ही जाता है ।
लोहे और काठ का व्यापार आरामदायक न होकर कष्टकर ही होता है ।

२८४६. **रूप की रोवै करम की खा, रूप की धिराणी पाणी नै जा ।**
सुन्दर किन्तु मंद भाग्य वाली तो पानी भरती देखी जाती हैं एवं कुरूप होने पर भी भाग्यशालिनी ऐश करती है ।
रू० रूप की रोवै, करम की सुख नींद सोवै ।

२८४७. **रूपलालजी गरू, और सै चेला ।**
रुपया ही गुरु है, शेष सब चेले ।
आज के युग में रुपया ही सर्वप्रमुख है, शेष सब गौण ।

२८४८. **रूपली पल्लै तो उजाड़ में चल्लै ।**
पास में रुपया हो तो जंगल में भी मंगल हो जाता है ।
रू० जर पल्लै तो उजाड़ में चल्लै ।

२८४९. **रेवड़ में कुण गयो ? 'क बावो,**
'क बावो ना'रियां सें बेसी ।

रेवड़ की सुरक्षा हेतु रेवड़ के साथ कौन गया ? उत्तर मिला—बावा । इस पर प्रश्नकर्त्ता ने कहा—बावा तो भेड़ियों से भी अधिक मांस भक्षी है । भेड़िया तो आये न आये, लेकिन बाबा तो वहां मौजूद ही है, अतः वह एकाध भेड़-बकरी को जरूर मार कर खा जाएगा ।

रू० (१) गायां में कुण गयो ? 'क गीधो ।
रोवो क्यूं नीं रांडो, रोज पड़यो सीधो ।।
(२) गायां में कुण गयो ? 'क गोदो ।
तो मारदयो विलोवणो मोदो ।।

२८५०. **रे कैवै जिको तूं कुहावै ।**

जो दूसरे को अरे कहता है, वह स्वयं अपने लिए तू कहलवाता है ।

२८५१. **रैवै तो आपसैं, नईं रैवै कोनी सागी बाप सें ।**

स्त्री स्वयं अपने शील पर कायम रहना चाहे, तभी रह सकती है, अन्यथा किसी भी प्रकार से नहीं ।

२८५२ **रोटी साटै रोटी, के पतळी के मोटी ?**

रोटी के बदले रोटी, फिर इसमें पतली और मोटी क्या करना ?

२८५३. **रोड़तां रोड़तां ईं ऊफणसी, जैंको तो कोई उपाव ई कोनी ।**

यदि चूल्हे पर चढाई गई वस्तु तत्परता से रोड़ते रहने पर भी उफनती है तो इसका क्या इलाज ?

यदि पूरा प्रयत्न करने पर भी बात बिगड़ती है तो क्या वश ?

रू० च्यारूं हाथ-पगां सें दाबतां-दाबतां ईं इज्जत जासी तो वीं को उपाव ई कोनी ।

२८५४ **रोवण नै ईं बरियां को है नीं ।**

रोने के लिए भी फुरसत नहीं है ।

संदर्भ कथा—एक किसान अपने समधी से मिलने उसके खेत पर गया। समधी ने उपालंभ के स्वर में कहा कि आजकल तो आपके दर्शन भी नही होते । आगन्तुक किसान ने कहा कि क्या करें, इतना अधिक काम रहता है कि मरने की भी फुरसत नहीं रहती । किसान की समधिन भी वहीं काम कर रही थी, समधी की बात सुन कर वह बोली—समधीजी ! कहीं ऐसा जुल्म न कर बैठना, आजकल हम फसल काटने में लगे हैं, ऐसे में तुम मर गये तो हमें रोने की भी फुरसत नहीं मिलेगी ।

२८५५. **रोवती नै राखी, 'क सागै ई ले चाल ।**

रोती हुई को दिलासा देकर चुप की तो कहने लगी कि मुझे तो अपने साथ ही ले चलो ।

२८५६. रोवतो जावै जिको मुवै की खवर ल्यावै।

जो पहले से ही किसी काम के लिए रोता-झींखता जाता है, वह किसी के मरने की खवर लेकर ही लौटता है।

रू० (१) रोवतो जावै जिको मरचोड़ै की सुणावणी लेकर आवै।

(२) रोवतो सो जावै, ठिणकतो सो आवै।

२८५७. रोहण तपै किरतका वरसै, घूघूकार जमानो दरसै।

यदि रोहिणी तपे और कृतिका वरसे तो भरपूर जमाना हो।

२८५८. रोहण तो सारी तपै, आखो तपै जे मूर।
पड़वा तपै जे जेठ की, तो निपजै सातूं तूर॥

रोहिणी एवं मूल खूव तपे और जेठ मास की प्रतिपदा भी तपे तो सातों प्रकार के अन्न पैदा हों।

२८५९ रोहण वाजै म्रिग तपै, गैलो हाळी क्यूं खपै?

यदि रोहिणी नक्षत्र में आंधियां चलें और मृगशिरा नक्षत्र में गरमी पड़े तो पगला किसान अपने को खेती के काम में क्यों खपाये? क्योंकि अकाल पड़ेगा।

रू० रोहण वाजै मिरगलो तपै, तो राजा झूझै परजा खपै।

२८६०. लंका नै के मूंदड़ी दिखावै?

सोने की लंका को कोई क्या मुंदरी दिखलाये?

२८६१. लंका नै तो हड़मानजी त्रेता में ई वाळदी ही।

हनुमानजी ने लंका तो त्रेता में ही जलादी थी।

संदर्भ कथा—एक सुनारी के पास थोड़ा सोना था। उसने सोचा कि यदि इसे आभूषण वनाने के लिए देवर या जेठ को दूंगी तो वे खोट मिला देंगे, इसलिए जव जव वह अपने पीहर आई तो उसने अपने वाप को सोना देकर आभूषण वना देने के लिए कहा। वाप ने अपने वेटे से कहा कि वाई को इस सोने के आभूषण वना दो। लेकिन जव वह आभूषण वना रहा था तो वाप ने सोचा कि भाई कहीं वहिन का लिहाज करके सोने में खोट मिलाने से न रह जाए, इसलिए उसने संकेत करते हुए कहा कि राजा रामचन्द्र तो समदर्शी थे, वे कोई भेद भाव नहीं वरतते थे। इस पर लड़के ने अपने वाप को आश्वस्त करते हुए उत्तर दिया कि हनुमानजी ने लंका तो त्रेता में ही जलादी थी अर्थात् तुम जिस काम के लिए कह रहे हो, वह मैंने पहले ही कर दिया है।

रू० सुनार तो मां की हँसली मांय सैं भी काढ ई ले।

२८६२ लंका में किसा दाळदी कोनी होवै?

सोने की लंका में क्या दरिद्र नहीं रहते?

२८६३. लंका में राम दुहाई फिरगी ।
लंका में राम की दुहाई फिर गई ।
सारी व्यवस्था एवं प्रशासन ही बदल गया ।

२८६४. लंका में सै ई नौ गजा ।
लंका में सभी नौ गज लंबे ।
जहाँ सभी एक जैसे 'लांघा वलाय' जबरदस्त) हो, कोई घटकर न हो।

२८६५. लगाई है देखां लगैगी तो, नार पराई है फबैगी तो ।
दूसरे की वस्तु को हड़पने की युक्ति तो भिड़ाई है, देखें क्या परिणाम निकलता है ।

२८६६ लड़ण वेळा देये, बिछुड़ण वेळा ना देये ।
दो साथियों में परस्पर मन-मुटाव का अवसर भले ही पैदा हो जाए, लेकिन उनके बिछुड़ने का अवसर न आये ।

२८६७. लड़तां की तो मा ई दो होवै ।
पारस्परिक लड़ाई के समय तो दो सहोदर भाइयों की माँ भी दो (अलग-अलग) हो जाती हैं अर्थात् वे जरा भी लिहाज नहीं बरतते ।

२८६८. लडाई डीकरी, हलाई खीचड़ो बिगड़ै ।
लड़की अधिक लाड से और खिचड़ी रोड़ने से बिगड़ जाती है ।
खिचड़ी से यहाँ तात्पर्य चावल-मूंगों की खिचड़ी से है । सीजने से पहले रोड़ देने से चावल-मूंगों की खिचड़ी खराब हो जाती है । हाँ, मोठ बाजरे की खिचड़ी को रोड़ना आवश्यक होता है ।
रोड़ना = डोई या चम्मच आदि से चलाना ।

२८६९. लड़ाई में तो सिर ई फूटै, लाडू थोड़ा ई फूटै ।
लड़ाई में तो सिर ही फूटते हैं, लड्डू थोड़े ही बटते हैं ?
रू० लड़ाई में तो लाठी ई बरसै, लाडू थोड़ा ई बंटै ?

२८७०. लड़ै बरोबर, रोवै बाद ।
लड़ता तो बराबर है और रोता अलग से है ।
लड़ाई भी बराबर करता है और शिकायत भी करता है ।

२८७१. लदणियां ई लदै ।
खर्च करने वाले ही खर्च कर सकते हैं ।

२८७२. लांबा हेला, ओछी बीख ।
शोर अधिक, देना-लेना कम ।

२८७३. लांबी 'बां दूर ताईं' पसरै ।
लम्बी भुजा दूर तक फैलती है ।
समर्थ और उदार व्यक्ति दूर वालों को भी सहयोग देता है ।

२८७४. लाख कमाया, जीवता आया ।
जीवित घर आ गये, इसे ही लाख रुपये की कमाई समझो ।
रू० (१) लख लूंट्या ग्रे डूमणी, जे घर आवै डूम ।
(२) कुसळां आया धाड़वी, धाड़ै ऊपर धूळ ।

२८७५. लाखां लोहां चम्मड़ां, पैली किसा बखाण ।
बहू बछेरां डीकरां, नीमटियां परवाण ।
लाख, लोहा, चमड़ा, बहू, बछेड़े एवं पुत्र इनकी पहले से ही क्या प्रशंसा की जाए, ये कैसे निकलते हैं, इसका पता तो बाद में ही लगता है ।

२८७६. लाज तो आँख्यां की होव ।
लज्जा तो आंखों की होती है, घूंघट या परदे की नहीं ।

२८७७. लाठी के डर बानर नाचै ।
बेंत के डर से बन्दर नाचता है ।
भय दिखलाने से काम होता है ।

२८७८. लाठी टूटै न भाडो फूटै ।
लाठी भी न टूटे और भांडा भी न फूटे ।
दोनों काम हो जाएँ । दोनों पक्ष संतुष्ट हो जाएँ ।

२८७९. लाठी भींत बिचालै आग्या ।
लाठी और दीवार के बीच में आ गये, बच कर निकलने का कोई रास्ता नहीं ।

२८८०. लाठी हाथ में तो सगळा साथ में ।
लाठी हाथ में तो सभी साथ में ।
हाथ में लाठी होने से आदमी का हौंसला बढ जाता है ।

२८८१. लाडू की कोर चाखै जठै ई मीठी ।
लड्डू की कोर जहां से भी चखी जाय, मीठी ही होती है ।
रू० मिसरी की रोटी खावै जठै सें ई मीठी ।

२८८२. लाडू पर तो भगवान को भी मन चालै ।
लड्डू पर तो भगवान् का भी मन चलता है ।
सन्दर्भ कथा—एक बार मोतीचूर का लड्डू भगवान् के पास गया और बोला कि प्रभो, मुझे तो जो भी देखता है, खा जाने को लपकता है, मुझे अपनी रक्षा का कोई उपाय बतलाइये । इस पर भगवान् बोले कि मन तो मेरा भी ललचाता है, इसलिए तुम्हें जो कुछ कहना हो दूर से ही कहो ।

२८८३. लाडू फूटसी जठै भोरो खिडसी ई खिडसी ।
लड्डू फूटते हैं तो उनके छोटे-बड़े टुकड़े भी बिखरते ही हैं अर्थात् दूसरों के पल्ले भी कुछ न कुछ पड़ता ही है ।

२८८४. लातां का देव बातां सें कोनी मानै ।

लातों के देवता बातों से नहीं मानते ।

जो समझाने-बुझाने से राह पर न आये और पीटने से ही माने ।

२८८५. लाद दे लदायदे लादण आळा साथ दे ।

जब कोई आदमी सारा ही काम दूसरों से करवाना चाहे ।

२८८६. लापरवाई सदां दुखदायी ।

लापरवाही सदैव हानिप्रद ही होती है ।

२८८७. लाबद्या को ओड़ कोनी ।

लालसा का कोई अन्त नहीं ।

२८८८. लाय लागी, दोपारां की टेम अर जेठ को म्हीनो, फेर कीं नै नेड़ै आवण दे ?

जेठ का महीना, दोपहर का समय और ऐसे समय में आग लग जाए तो वह किसे नजदीक आने दे ?

जब सारा ही बानक एक जैसा बन जाए ।

२८८९. लाय लाग्यां कुवो कद खुदै ?

आग लगने के बाद कब कुआं खुदे और कब उससे पानी निकाल कर आग बुझाई जा सके ?

रक्षा का उपाय पहले से ही करना चाहिए ।

२८९० लाल किनारी धोतियां, दो-दो मुरकी कान ।
बेग पधारो बाघजी, या सुनारां की जान ।।

संदर्भ कथा—सुनारों की एक बरात दूसरे गाँव जा रही थी । रास्ते में उन्होंने पड़ाव किया तो बाघजी नामक डाकू ने बरात को लूटना चाहा । लेकिन चूंकि सुनारों का पहनावा भी राजपूतों जैसा ही था, इसलिए उसने सोचा कि यह बरात कहीं राजपूतों की न हो । उसने भेद लेने के लिए अपने एक भेदिये को उनके पास भेजा । उस वक्त वे लोग 'अमल' (अफीम) कर रहे थे एवं एक दूसरे की मनुहार करते हुए कह रहे थे —'लो एक धांस तो और लो ।' इस पर भेदिया जान गया कि यह सुनारों की बरात है और उसने उपरोक्त कहावती दोहा कह कर बाघजी को शीघ्र धावा करने का संकेत दे दिया ।

२८९१. लाचल गळो कटावै ।

लालच गला कटवा देता है ।

लालच के वशीभूत होकर आदमी अपने प्राण गँवा बैठता है ।

रू० लालच बुरी बलाय ।

२८९२. **लिख-लिख भेजूं पत्तर में, तूं सत्तर में ना भैतर में।**

संदर्भ कथा—एक सेठ का बेटा किसी वेश्या में बुरी तरह अनुरक्त हो गया। इस पर सेठ ने उसे दिसावर भेज दिया। यद्यपि वह दिसावर चला गया, तथापि उसका मन उसी वेश्या में लगा रहा। एक बार उसका कोई मित्र 'देस' आने लगा तो सेठ के बेटे ने उसे एक कीमती उपहार दिया और कहा कि यह उपहार तुम मेरी ओर से अमुक वेश्या को दे देना और इतना ही कहना कि यह उपहार तुम्हारे सबसे अधिक प्रिय व्यक्ति ने भेजा है, वह झट से तुम्हें मेरा नाम बतला देगी। मित्र ने तदनुसार ही उपहार लाकर वेश्या को दिया और उसके सबसे प्रिय व्यक्ति का नाम पूछा। वेश्या ने उसे सत्तर नाम बतलाये, लेकिन उनमें सेठ के बेटे का नाम नहीं था। उसने कहा कि इनमें तो उसका नाम नहीं है। इस पर वेश्या ने याद कर के दो नाम और बतलाये, लेकिन उनमें भी सेठ के बेटे का नाम नहीं था। तब उसने अपने मित्र को लिखा कि तुम जिसकी याद में घुले जा रहे हो, उसे तो तुम्हारा नाम भी याद नहीं है—लिख-लिख भेजूं पत्तर में, तूं सत्तर में ना भैतर में।

२८९३. **लिख्या होवै जित्ताई मिलै।**

भाग्य में जितना लिखा होता है, उतना ही मिलता है।

रू० लिख्या है लिलाड़ लेख, वीं में नईं मीन मेख।

२८९४. **लिछमी कैईं कै पीढो घाल कर कोनी बैठै।**

लक्ष्मी किसी के यहाँ पीढा डाल कर नहीं बैठती अर्थात् किसी एक ही घर में स्थिर नहीं रहती।

रू० लिछमी थिर कोनी रैवै।

२८९५. **लीद ई खावै तो हाथी की खावै जिको पेट तो भरै।**

चोरी आदि निंद्य कर्म करे भी तो ऐसा करना चाहिए कि जिससे भूख तो भाग जाए।

'गुनाह और बेलज्जत', जैसा काम न करना चाहिए।

२८९६. **लीप्यो-पोत्यो आंगणो, फैरी ओढी नार।**

लिपा-पुता आंगन और उसमें शृंगार की हुई बहू का फिरना घर की शोभा है।

२८९७. **लुगाई एक घर का दो घर करादे।**

दो सगे भाई मिल-जुल कर एक घर में रह सकते हैं, लेकिन उनकी स्त्रियों को यह सह्य नहीं, वे एक घर के दो घर करवा कर ही सन्तुष्ट होती हैं।

एक उदर का ऊपन्या, जामण जाया वीर।
नारी कै पानै पड़्या, नईं तरकारी में सीर॥

२८९८. **लुगाई का वरस नईं पूछणा चाये ।**
स्त्री से उसकी उम्र नहीं पूछनी चाहिए ।

२८९९. **लुगाई की अक्कल गुद्दी में होवै ।**
स्त्री की बुद्धि गरदन के पिछले हिस्से में होती है अर्थात् हानि उठा लेने के वाद ही वह सोचती है ।
रू० लुगायां में अक्कल होती तो पागड़ी ई कोनी बांधती के ?

२९००. **लुगाई की कमाई मोट्यार खावै तो टांटिये को ई विष उतरज्या ।**
स्त्री की कमाई पर पलने वाले पति का स्वभाव वर्रं जैसा उग्र हो तो भी उसकी उग्रता समाप्त हो जाती है ।

२९०१. **लुगाई कै पेट में टावर खटाज्या, पण वात कोनी खटावै ।**
स्त्री के पेट में वच्चा खटा जाता है, लेकिन वात नहीं खटाती ।
वह रहस्यपूर्ण वात को भी गुप्त नहीं रख पाती ।

कहते हैं कि महाभारत के युद्ध के वाद जव कुन्ती ने युधिष्ठिर को यह वतलाया कि कर्ण भी तुम्हारा भाई थां तो युधिष्ठिर को वड़ा दुख हुआ और कुन्ती से बोला कि यह वात तुमने हमें पहले क्यों नहीं वतलाई ? इसके साथ ही युधिष्ठिर ने यह शाप भी दिया कि आगे से नारी किसी वात को छिपा कर नहीं रख पायेगी ।

२९०२. **लुगाई को खसम मोट्यार, मोट्यार को खसम मांगतोड़ो ।**
स्त्री का खसम आदमी और आदमी का खसम ऋणदाता ।

२९०३. **लुगाई लड़ी अर कूवै में ।**
स्त्री लड़ी और कुएँ में गिरी ।
घर में लड़ाई-झगड़ा होने पर स्त्रियां प्रायः कुएँ में गिरकर आत्महत्या कर लेती थीं ।

२९०४. **लुट्यां पीछै डूमणी, भागी वारा कोस ।**
लुट जाने के वाद डोमनी वारह कोस तक भागती ही चली गई ।
काम विगड़ जाने के वाद तत्परता दिखाना व्यर्थ है ।
पद्य—रात्यूं चाली ऊंगती, दिन में आयो होस ।
लुट्यां पीछै डूमणी, भागी वारा कोस ।।

२९०५ **लूंकी कै लख उपाय ।**
लोमड़ी अनेक उपाय जानती है ।
जो आदमी वहुतेरे हथकण्डे जानता हो ।

२६०६ **लूंट को मूसळ ई चोखो ।**
लूट में प्राप्त मूसल ही अच्छा ।
मुफ्त में जो मिले वही अच्छा ।

२६०७. **लूखा भोजन मग वहण, वडका बोली नार ।**
मंदर चुवै टपूकड़ा, पाप तणां फळ च्यार ।।
लूखा भोजन, पैदल यात्रा, बढ़ बढ़ के बोलने वाली स्त्री एवं टपकने वाला घर ये चारों पापों के परिणाम स्वरूप ही मिलते हैं ।

२६०८ **लूखो भोजन, भूत भोजन ।**
लूखा भोजन भूतों का भोजन माना गया है ।

२६०९. **लूण फूट फूट कर नीकळै ।**
नमक हरामी करने वाले को समुचित फल भोगना पड़ता है ।

२६१०. **लूण बखेरै जिकै नै आंख्यां सैं चुगणों पड़ै ।**
नमक को जो व्यर्थ में इधर-उधर बिखेरता है, उसे वह नमक आंखों से उठाना पड़ता है ।

२६११ **लूण बिना, पूण रसोई ।**
नमक के अभाव में भोजन पौना होता है ।
व्यंजनों में चाहे कितने ही मसाले डाले जाएँ, नमक के अभाव में वे फीके रहते हैं (लवन बिना बहु व्यंजन जैसे) ।

२६१२ **लूली लेव देवै तो दो जणां कड़ सामै ।**
लूली लिपाई करती है तो दो आदमी उसकी कमर को सहारा देने के लिये चाहिएँ ।
रू० लूली भारी काढै तो दो जणां वीं की कड़ सामै ।

२६१३. **लेकर दियो, कमाकर खायो, तो झख मारण नै जग में आयो ?**
यदि लिया हुआ ऋण लौटायें और कमा कर खायें तो क्या झख मारने को इस दुनिया में आये हैं ।
जो लेकर देना और कमाकर खाना हराम समझते हों ।

२६१४. **लेख मिटाया ना मिटै ।**
भाग्य के लेख मिटाये नहीं मिटते ।

२६१५. **लेखो चोखो, प्रीत चौगणी ।**
दोनो तरफ हिसाब साफ हो तो प्रीति चौगुनी बढ़ती है अन्यथा उसे टूटते देर नहीं लगती ।

२६१६. **लेणा एक न देणा दोय ।**
कोई आनी जानी नहीं—

दूर देस सें साजन आया, ऊंची मैंड़ी पिलंग बिछाया।
खाय-पीय कर रहिया सोय, लेणा एक न देणा दोय ।।

तुम एक लेते नहीं, मैं दो देता नहीं।

संदर्भ कथा—एक कछुवे और कौवे में मित्रता थी। कछुवा एक बड़े ताल में रहता था और कौवा एव उसके किनारे एक वृक्ष पर। एक दिन किसी चिड़ीमार ने कौवे को अपने जाल में फँसा लिया तो कछुवे ने कौवे से कहा कि तुम कौवे को छोड़ दो, मैं तुम्हें कौवे के बदले एक कीमती मोती दे दूंगा। चिड़ीमार के हां भरने पर कछुवे ने मोती ला दिया। लेकिन मोती को देख कर चिड़ीमार को लालच हो आया और उसने कछुवे से कहा कि पहले तुम मुझे इसकी जोड़ी का एक और मोती लाकर दोगे तभी मैं कौवे को छोड़ूंगा। कछुवे ने उससे कहा कि मैं तुम्हें मोती ला दूंगा, तुम कौवे को छोड़ दो। इस पर चिड़ीमार ने कौवे को छोड़ दिया।

कछुवे ने पानी में डुबकी लगाई तथा उसे एक मोती और ला दिया। लेकिन चिड़ीमार बोला कि यह इसकी जोड़ी का मोती नहीं है। इस पर कछुवे ने उससे कहा कि एक बार तुम मुझे वह मोती दो तो मैं उसकी जोड़ी का मोती ढूंढ कर ला दूं चिड़ीमार ने मोती दे दिया और कछुवा पानी में जाकर बैठ गया। कुछ देर की प्रतीक्षा के बाद जब चिड़ीमार ने कछुवे को पुकारा तो कछुवे ने वहीं से जवाब दे दिया—

खुदा करै सो होय, लेणा एक न देणा दोय।

अर्थात् खुदा जो करता है, वही होता है। तुम एक मोती लेते नहीं और मैं दो देता नहीं।

२९१७. **लेय उवासी कूतरो, आंख्यां बरसावै तोय।
आभै सामो जोय तो, मेह घणेरो होय ।।**

यदि कुत्ता उवासी ले, उसकी आंखों से पानी गिरे और वह आकाश की तरफ देखे तो वर्षा खूब हो।

२९१८. **ले ये फुल्ली पैलो फेरो, यो मरज्या तो और भलेरो।**

ले फुल्ली (नाम विशेष) पहला फेरा ले, यदि यह मर जाये तो इससे अच्छा दूसरा तैयार है।

वह दुराचारिणी स्त्री जो बार-बार विवाह करे।

२९१९. **ले रछाणी बैठ्यो नाई, नायण नै ली पास बुलाई।
चढ्यो काट राछां कै माहीं, आगम बिरखा देय बताई ।।**

नाई के राछों (उस्तरा आदि) पर काट चढना वर्षा के आगमन की पूर्व सूचना है।

२९२०. **ले ले करयां तो डाकण ई' को लेनी ।**
ले, ले करने से तो डाकिन भी वच्चे को नहीं लेती ।

२९२१. **लेवै रोक बतावै नारो, मांगै तो काढ़ै तरवारो ।**
नकद ऋण लेकर बैल वतलाता है एवं मांगने पर तलवार निकाल लेता है । आजादी से पूर्व तक अधिकतर ठाकुर प्रायः ऐसा ही करते थे ।
रू० देख्यो रांगड़ थारो भायला चारो ।
दियो तो रोक वतावै नारो,
मैं पकड़्यो नारो तो तैं काढ्यो तरवारो ।

२९२२. **लोभै लाग्यो बाणियों, चूंटी लागी गाय ।**
बावड़ै तो बावड़ै, नईं आगड़ै ई जाय ।।
लोभ लगा वनिया एवं हरे अंकुरों को चरती हुई गाय वापिस फिरें तो फिरें अन्यथा ये आगे ही बढ़ते रहते हैं ।

२९२३. **'लौ जाणै लुहार जाणै, खाती की वलाय जाणै ।**
लोहा जाने और लुहार जाने, खाती को इनसे क्या प्रयोजन ?

२९२४. **ल्या वांदी कोई ऐसा नर, पीर ववरची भिस्ती खर ।**
ज्योतिष, रसोई, पानी लाने एवं बोझा ढोने का काम भी ब्राह्मण अकेला ही कर लेता था ।

२९२५. **वकील को हाथ पराये गोजिये में ।**
वकील का हाथ अपने आसामी की जेब में रहता है ।

२९२६. **वळै न ढोलो पावणो, वळै न वागड़ देस ।**
ये पुर पट्टन ये गली, वहुरि न देखै आय ।

२९२७. **वाही नार सुलाखणी, जां कै कोठी धान ।**
वही नारी सुलक्षणी है, जिसकी कोठी धान से भरी रहती है । जो अन्य वस्तुओं की अपेक्षा अन्न संग्रह को अधिक महत्व देती है ।

२९२८. **वेस्या वरस घटावै, जोगी वरस वधावै ।**
वेश्या हमेशा अपने को कमसिन प्रकट करती है और योगी अपनी उम्र वढ़ा कर वतलाता है । इसीसे दोनों का सिक्का जमता है ।

२९२९. **संख अर खीर भरयो ।**
शंख एवं खीर भरा, फिर और क्या चाहिए ?
सोने में सुहागा ।

२९३० **संगत को असर आये विना कोनी रैवै ।**
संगति का असर आये विना नहीं रहता । आदमी जैसी संगति में रहता है, वैसे ही गुण-अवगुण ग्रहण कर लेता है ।

इस संदर्भ की एक कथा है कि एक वनजारा अपनी 'वाळद' सहित एक तालाब के किनारे ठहरा हुआ था। वहीं एक ग्वाला अपने रेवड़ को पानी पिला रहा था और स्वयं भी जानवरों की तरह पानी में मुँह डालकर पानी पी रहा था। वनजारे ने ग्वाले की यह हरकत देखी तो उसने वनजारिन से कहा कि यह 'तुख्म ताशीर' है, लेकिन वनजारिन ने कहा कि नहीं, यह सोहवत (संगति) का असर है। दोनों में विवाद बढ़ गया और वनजारा अपनी वनजारिन को उस ग्वाले के पास छोड़ कर चला गया। वनजारिन ने उसे पढ़ाया-लिखाया, अच्छी संगति में रखा और उसे सुसभ्य वना दिया। वह राजा के दरवार में जाने लगा और राजा ने उसे नगर का 'जकाती' वना दिया। अगली बार वनजारा उस नगर में आया तो उसे उसी जकाती के आगे जकात के मामले को लेकर हाथ-पैर जोड़ने पड़े। उसने उसे पहचाना नहीं। लेकिन वनजारिन भी वहीं थी, उसने अपने पति को उसका सही परिचय दिया तो वनजारा मान गया कि आदमी जैसी सगति में रहता है, वैसा ही वन जाता है।

२९३१. **संगत वडां की कीजिये, वढत वढत वढ जाय।**
वकरी हाथी पर चढी, चुग चुग कूंपळ खाय।।
संगति हमेशा वड़ों की ही करनी चाहिए। वकरी ने हाथी की संगति की तो हाथी ने उसे अपनी पीठ पर चढाली और अव वह चुन-चुन कर वृक्षों की हरी कोंपलें खा रही है।

२९३२. **संगत सार अनेक फळ, भूंड भँवर कै संग।**
फुलड़ां चढ हर कै चढ्यो, चरण पखाळै गंग।।
एक भूंडिये की संगति एक भ्रमर से हो गई और वह भी उसके साथ फूल में वंद हो गया। अन्य फूलों के साथ वह फूल भी शिवजी पर चढाया गया और गंगाजल से सिंचित हुआ। भ्रमर की संगति से ही उसे यह सौभाग्य प्राप्त हो सका।
भूंडिया = गोवर में रहने वाला एक पंखयुक्त कीट।

२९३३. **संतोष में ईं सुख है।**
संतोष में ही सच्चा सुख है।
जव आवे संतोष धन, सव धन धूरि समान।

२९३४. **संदेसां खेती कोनी होवै।**
संदेशों से खेती नहीं होती। खेती करने वाले को स्वयं उसमें खपना होता है।
रू० संदेसां विणज, पर हाथां खेती ?

२९३५. **संपत में लिछमी को वासो।**
एकता में लक्ष्मी का निवास है।

सन्दर्भ कथा—(१) एक सेठ को स्वप्न में लक्ष्मीजी ने दर्शन दिये और कहा कि अब मैं तुम्हारे यहां से जा रही हूँ। सेठ ने लक्ष्मीजी से रहने के लिए बड़ी विनय की, लेकिन लक्ष्मीजी ने कहा कि मैं तो नहीं रह सकती, तुम्हें और कोई चीज मांगनी हो तो मांग सकते हो। तब सेठ ने कहा कि मेरे घर में सदा 'सम्पत' (एकता, पारस्परिक मेल) बनी रहे। इस पर लक्ष्मीजी बोली कि जहाँ आपस में मेल रहता है, वहीं मैं रहती हूँ, इसलिये मुझे भी अब यहाँ रहना ही होगा।

(२) एक सेठ के घर में भूख ने डेरा डाल दिया, अन्न के लाले पड़ गये तो सेठ सभी घरवालों को लेकर अन्यत्र चला। रास्ते में जंगल पड़ा तो उसने सोचा कि चलते-चलते कुछ लकड़ियां काट कर ले चलें तथा कुछ रस्सियां बट लें तो पास के शहर में इन्हें बेच कर कुछ पैसे प्राप्त कर लेंगे। सेठ के कहते ही सब लोग काम में जुट गये। वहीं वृक्ष पर एक भूत रहता था। उनको इस प्रकार जुटे देखकर वह डर गया और उसने आकर सेठ से पूछा कि तुम लोग क्या करना चाहते हो? सेठ ने उत्तर दिया कि इन रस्सियों से तुझे बांध कर ले जाएँगे। भूत डर गया और बोला कि तुम ऐसा न करो, मैं तुम्हें काफी धन दे दूंगा। सेठ के हां भरने पर भूत ने उसे प्रचुर धन दे दिया और सेठ उस द्रव्य को लेकर सपरिवार अपने घर लौट आया।

उसके पड़ोसी ने सेठ से पूछा तो सेठ ने सारी घटना उसे बतला दी। अब पड़ोसी भी अपने सब घर वालों को लेकर उसी स्थान पर पहुँचा। उसने सबको लकड़ियां तोड़ने और रस्सियां बटने के लिये कहा, लेकिन किसी ने कहा—मैं थक गया हूँ, किसी ने कहा—मुझे नींद आ रही है, किसी ने कहा कि मुझे भूख लगी है। उन सब में जरा भी एकता नहीं थी। उनको देखकर भूत नीचे उतरा और उसने मुखिया से पूछा कि तुम क्या करना चाहते हो? उसने जवाब दिया कि हम तुझे बांधकर ले जाएँगे। इस पर भूत बोला कि तुम अपने घरवालों को ही एकता के सूत्र में नहीं बांध पा रहे हो तो मुझे क्या बांधोगे? यहाँ से अविलम्ब भाग जाओ, नहीं तो सबको मार डालूंगा। इस पर वह सबको साथ लेकर वहाँ से उसी समय भाग आया।

२६३६. **सक्करखोरै नै सक्करखोरो मिलई ज्या।**
जैसे को तैसा मिल ही जाता है।

२६३७. **सगळां नै काम प्यारो है, चाम प्यारो कोनी।**
सबको काम प्यारा है, चाम नहीं।

इस आशय की एक प्रसिद्ध बाल कथा है जिसका सारांश यह है कि हलदी और सोंठ दो बहिनें थीं। एक बार हलदी अपने ननिहाल गई तो

राह में जिसने भी जिस काम के लिए कहा, वह करती गई और ननिहाल में भी खूब दौड़ दौड़ कर काम करती रही। इसलिए वह सब के मन भा गई और जब लौटने लगी तो सब की यही इच्छा रही कि हलदी यहाँ से न जाए। लेकिन जब वह जाने लगी तो सभी ने उसे तरह-तरह की चीजें दीं। रास्ते में भी उसने जिनका काम किया था, उन्होंने भी उसे विभिन्न प्रकार की चीजें दीं। जब वह घर पहुँची तो सोंठ के मन में डाह पैदा हुई और वह भी ननिहाल के लिए चल पड़ी। लेकिन न तो रास्ते में उसने किसी का कोई काम किया और न ननिहाल में ही। इसलिए कुछ समय बाद ही उन्होंने मामूली चीजें देकर सोंठ को वापिस भेज दिया। राह में भी उसे कुछ नहीं मिला। घर आकर जब उसने अपनी माँ से इसकी शिकायत की तो माँ ने यही कहा कि सब को काम प्यारा है, हलदी ने काम किया, इसलिए उसे अनेक प्रकार की चीजें मिलीं, तू ने काम नहीं किया, इसलिए तुझे क्या मिलता ?

२९३८ **सगळां नै राजी राखणो दो'रो।**

सब को खुश कर पाना अत्यंत कठिन है।

संदर्भ कथा—एक वृद्ध पिता अपने युवा पुत्र के साथ घोड़ी पर चढा चला जा रहा था। इस पर गाँव वालों ने कहा कि देखो, ये कैसे निर्दयी है जो एक घोड़ी पर दोनों लद गये हैं। इस पर बेटा पैदल चलने लगा तो राह चलते लोग कहने लगे कि देखो, बेचारा लड़का तो पैदल चल रहा है और बाप इतना बड़ा होकर भी स्वयं घोड़ी पर चढा चलता है। इस पर बाप पैदल चलने लगा और बेटा घोड़ी पर सवार हो गया तो आगे मिलने वाले लोगों ने कहा कि देखो कैसा जमाना आ गया है, जो बूढा बाप तो पैदल चलता है और नौजवान बेटा घोड़ी पर सवार है। तब दोनों ही पैदल चलने लगे तो लोग बोल पड़े—इन भाग्यहीनों को तो देखो जो पास में घोड़ी होने पर भी पैदल चल रहे हैं.।

२९३९. **सगळै करमां की बाजै है।**

सब जगह भाग्य ही काम करता है।

२९४०. **सगाई दो जणां, ब्या सौ जणां।**

सगाई तय करने में दो आदमी ही पर्याप्त होते हैं एवं विवाह के अवसर पर अधिक आदमियों से शोभा होती है।

रू० सगाई दोवां, ब्या सोवां।

२९४१. **सगो सगै की जड़, आप तो बावै सठवां सगै न बतावै दड़।**

एक समधी दूसरे का हितैषी होता है, वह स्वयं घटिया जमीन जोत कर समधी को तैयार की हुई भूमि जोतने के लिए बतलाता है।

रू० सगो सगै की जड़, मार खूंसड़ा फड़ांफड़ (व्यंग्य)

२६४२. **सगो समरथ कीजिए, जद-कद आवै काम ।**
समर्थ को समधी बनाना चाहिए जो वक्त पड़ने पर काम आये ।

२६४३. **सज्जन सोई जाणिये, चोड़ै देवै बजाय ।**
सज्जन उसे ही समझना चाहिए जो स्पष्ट बात कहदे ।
रू० साफ कै'णां, सुखी रै'णां ।

२६४४. **सत मत छोडो सूरमा, सत छोड़्यां पत जाय ।**
सत की बांधी लिच्छमी, फेर मिलैगी आय ।।
आदमी सत्य पर दृढ रहे तो गई हुई लक्ष्मी भी लौट आती है ।

२६४५. **सतलड़ी लभु लभु करै है ।**
सतलड़ी मिलने ही वाली है ।

संदर्भ कथा—दो नशेबाज बैठे गपशप कर रहे थे । एक ने कहा कि यदि इस वक्त मुझे एक सतलड़ी (सात लड़ियों की माला) मिल जाए तो कैसा रहे ? दूसरा बोला कि सतलड़ी मिल जाए तो चार मेरी और तीन तुम्हारी । इसी बात को लेकर दोनों में तकरार बढ गई और दोनों लड़ मरे । दोनों की बात सुन कर किसी ने पूछा कि वह सतलड़ी है कहाँ, जिसके लिए लड़ रहे हो ? इस पर दोनों बोले कि सतलड़ी अभी मिली कहाँ है, लेकिन संभव है, जल्दी ही मिल जाए ।

२६४६. **सती सराप देवै नीं, छिनाळ को सराप लागै नीं ।**
अपनी महानता के कारण सती तो शाप देती नहीं और छिनाल का शाप फलता नहीं, इसलिए शाप के डर से क्यों डरें ?

२६४७. **सदां एकसी कोनी रैवै ।**
सब दिन एक जैसे नहीं होते ।
किसी के सदा अच्छे दिन नहीं रहते तो बुरे भी नहीं रहते ।

२६४८. **सदां दिवाळी संत कै, आठूं पहर अनंद ।**
संत के लिए तो सदा दीवाली ही रहती है, वह हर परिस्थिति में मगन रहता है ।
रू० सावण सूको न भादुवो हर्यो ।

२६४९. **सदां न जग में जीवणा, सदां न काळा केस ।**
मनुष्य अजर-अमर नहीं होता । वह बूढा भी होता है और मरता भी है, इसलिए जो भी सत्कार्य कर सके, कर लेना चाहिए ।

२६५०. **सदां भवानी दाहणी, सनमुख रहे गणेस ।**
पांच देव रच्छा करै, बिरमा बिसनु महेस ।।
भवानी और गणेश सदा अनुकूल रहें एवं ब्रह्मा, विष्णु और शिव सहित ये पांचों हमारी रक्षा करें ।

२६५१. **सपूत की कमाई में सगळां को सीर।**
सपूत की कमाई में कुल, परिवार के अतिरिक्त समाज का भी हिस्सा रहता है क्योंकि वह अपने धन का उपयोग दूसरों के हित में करता है।
रू० सपूत को सौ पीढी सीर।

२६५२ **सपूत तो पाड़ग्रोसी को ई चोखो, जिको ओड़ी वरियां आडो आवै।**
सपूत तो पड़ोसी का भी अच्छा जो वक्त पड़ने पर काम आता है।

२६५३. **सब सें भली चुप।**
मौन रहना सब से अच्छा।

संदर्भ कथा—दो पडोसिनें आपस में खूब लड़ती थीं। रोटी खा-पीकर जैसे ही वे निवृत्त होतीं, वाक्युद्ध में जुट जातीं और शाम तक वैसे ही झगड़ती रहती। एक स्त्री के बेटे की बहू आई तो उसने अपनी सास को कुछ लड्डू दिये और कह दिया कि जब पड़ोसिन लड़ने के लिए आये तो तुम ये लड्डू खाती रहना, कुछ बोलना नहीं। कुछ समय बाद पड़ोसिन ने आकर वाक्-युद्ध शुरू किया, लेकिन वह कुछ नहीं बोली और लड्डू खाती रही। इससे वह थक कर जल्दी चली गई। बहू ने तीन-चार दिन तक यही नुसखा काम में लिया और पड़ोसिन ने आना बन्द कर दिया।
रू० मूरख को मुख बांबई, निकसत वचन भुजंग।
ता की औषध मौन है, विष नही व्यापै अंग॥

२६५४. **सबूरी बड़ी होवै।**
सब्र करना बड़ी बात है।

२६५५. **समदर में खस खस कै दाणै को के थाग लागै?**
समुद्र में खसखस के दाने की क्या बिसात?
खसखस = पोस्ते का दाना जो आकार में राई के दाने के बराबर होता है। सोना तोलने के लिए इसका उपयोग किया जाता था और सोना तोलने की यह सबसे छोटी इकाई होती थी।
८ खसखस = १ चावल, ८ चावल = एक रत्ती।

२६५६. **समदर में रह कर मगरमच्छ सें वैर कोनी खटावै।**
समुद्र में रह कर मगर से वैर नहीं निभ सकना।

२६५७. **समदर सुसै तो ई गोडां सुधो पाणी लाधज्या।**
समुद्र सूखता है तो भी घुटनों जितना पानी तो रह ही जाता है। किसी संपन्न व्यक्ति का धन छीज जाता है तो भी उसके पास बहुत कुछ मिल जाता है जो किसी सामान्य आदमी के पास नहीं मिल पाता।

२६५८. **समरथ नै दोष कोनी ।**

समर्थ को दोष नहीं ।

समरथ कहुँ नहिं दोषु गोसाईं ।

२६५९. **समै दिवाळी, पोकर न्हाण ।**

दीपावली और पुष्कर का स्नान । दीपावली के अगले दिन ही पुष्कर स्नान प्रारम्भ हो जाता है । पुष्कर हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है । कार्तिक शुक्ला एकम से पूर्णिमा तक यहाँ मेला लगता है और तीर्थ यात्री स्नान करके पुण्य लाभ लेते हैं ।

२६६०. **समै बड़ो बळवान है, नर को के बळवान ।**
भीलां लूंटी गोपियां, वो ई अरजन वै ई बाण ।।

समय ही बलवान् है, समय के सामने बड़े से बड़ा आदमी भी कुछ नहीं । समय पलटने से जगत् विख्यात धनुर्धर अर्जुन के देखते-देखते भीलों ने गोपियों को लूट लिया, न उसकी धुनर्विद्या काम आई न उसके बाण ।

२६६१. **सरकणै में सुनार बैठ्यो है, खोटो खरो परखा लेई ।**

संदर्भ कथा—एक चमार और एक सुनार साथ-साथ किसी गाँव जा रहे थे । जंगल में उन्हें दो लुटेरे मिल गये । सुनार तो 'सरकने' में छुप गया, लेकिन लुटेरों ने चमार को पकड़ लिया । उसके पास केवल चांदी का एक रुपया मिला जो उन्होंने छीन लिया । चमार ने सोचा कि मैं तो लुट गया, लेकिन सुनार बच गया । इसलिए उसे पकड़वाने की मंशा से उसने लुटेरों से कहा कि सरकने में सुनार बैठा हुआ है, मेरा रुपया उससे अभी परखवालो, फिर मैं जिम्मेदार नहीं होऊंगा । तब उन्होंने सुनार को जा पकड़ा और उसके पास जो कुछ मिला, लेकर चलते बने । लेकिन अब चमार को संतोष हो गया ।

सरकना = कांस की जाति का एक क्षुप ।

२६६२. **सरदारी बिच्यारी, रै कर बोली नारी ।**
जी कर मांग्या दम्मां, अै तीनूं काम निकम्मां ।

सरदारी या सत्ता बेचारी बन जाए अर्थात् उसकी अवमानना होने लगे, पत्नी अपने पति को 'अरे' कह कर पुकारे एवं ऋणदाता जी हुजूरी से ऋण की वसूली करना चाहे तो ये तीनों ही काम निरर्थक हैं ।

२६६३. **सरप जे निगळै सरप नै, स्याम सेत को भेद ।**
काळ पड़ै काळो गिल्यां, सम्वत करै सफेद ।।

यदि काला सांप सफेद सांप को निगल जाए तो दुर्भिक्ष एवं सफेद सांप काले को निगले तो सुभिक्ष हो ।

२९६४. **सरप रिझ्यो पकड़ायले, म्रिग रीझ्यो खा मार ।**
नर रीझ्यो कुछ दे नहीं, वां को धरक जमार ।।
रीझने पर सांप अपने को पकड़वा लेता है, और हिरन भी मार खा जाता है, लेकिन यदि आदमी रीझ कर भी कुछ न दे तो उसे धिक्कार है ।

२९६५. **सळुं साटै भैंस काट गेरै ।**
अपने जरा से स्वार्थ के लिए जो दूसरे का बड़ा नुकसान करने में भी न हिचकिचाये ।
सळुं = भैंस के चमड़े की पतली डोर ।

२९६६. **सलाम साटै मियें नै क्युं रुसाणो ?**
केवल सलाम के लिए मियां को क्यों नाराज किया जाए ?
मामूली बात के लिए किसी को क्यों रुष्ट किया जाए ?

२९६७. **सहजां पाकै सो मीठो ।**
स्वाभाविक रूप से डाल पर पकने वाला फल ही विशेष मीठा होता है ।

२९६८. **सही सवारै सूम को नांव लियां रोटी कोनी मिलै ।**
प्रातः काल सबसे पहले सूम का नाम लेने से रोटी नसीब नहीं होती ।
प्रातः काल किसी बड़े दातार का नाम लेना अच्छा समझा जाता है और चूंकि सबसे बड़ा दातार ईश्वर ही है, अतः सबसे पहले उसी का नामस्मरण करते हैं (भाख पाटी खोल टाटी, राम देसी दाळ बाटी) ।

इसी प्रकार ब्राह्ममुहूर्त में 'लाखा-फूलाणी' भी गाया जाता है । लेकिन सूम का नाम लेना निषिद्ध माना जाता है ।

सन्दर्भ कथा—एक गाँव में एक सूम रहता था । कोई भी सवेरे-सवेरे उसका नाम नहीं लेता था । गाँव के ठाकुर ने कहा कि यह सब बकवास है, मैं आज प्रातः ही उसका नाम लेता हूँ और देखता हूँ कि रोटी कैसे नहीं मिलती । उसने सूम का नाम लिया और किसी काम से बाहर चला गया । जाते समय वह खीर बनाने का आदेश दे गया । लेकिन उसका कोई काम सफल नहीं हुआ । घर लौटने पर जब वह खीर से भरी थाली उठा कर पीने को हुआ तो पास खड़ी घोड़ी ने लात फटकारी । थाली कांसी की थी और गिरते ही फूट गई—

सही सवारै सूम को, निरणा ल्यो मत नाम ।
थाळी फूटी खीर की, सरयो न कोई काम ।।

२९६९. **सांच नै आंच कोनी ।**
सांच को आंच नहीं ।
रू० सांच बोल, पूरो तोल, चाये जठै डोल ।

२६७०. सांप कै डस्योड़ै नै दीतवार कद आवै ?

सांप के काटे हुए को रविवार कब आये ?

जब उपचार की तत्काल आवश्यकता हो और उपचार करने वाला कहे कि अमुक दिन आना।

झाड़-फूंक करने वाले बहुधा किसी निर्धारित दिन को ही झाड़ा लगाते हैं।

रू० संझ्या कै मरयोड़ै नै दिन कद ऊगै ?

२६७१. सांप कै वचिये को के छोटो अर के वडो ?

सांप के बच्चे का छोटा और बड़ा क्या ? छोटा सांप भी जहरीला होता है।

२६७२. सांप कोनी देख्यो, सांप की लीक ई देखी।

झूठा आदमी जो बहुत झूठ बोलता है, लेकिन अंत में यथार्थ पर आ जाता है।

सन्दर्भ कथा -- एक झूठे आदमी ने आकर कहा कि आज तो सौ सांप एक ही जगह पर देखे। लेकिन लोगों के बार बार पूछने पर सांपों की संख्या घटती गई और अंत में वह बोला कि सांप तो एक भी नहीं देखा, लेकिन सांप की लकीर जरूर देखी।

२६७३. सांप चालती मौत है।

सांप तो चलती हुई मृत्यु है।

२६७४. सांप न होता तो गूगो कुण धोकतो ?

यदि सांप न होते तो गोगा की पूजा कोई क्यों करता ?

यदि दुष्ट न होते तो भले आदमियों को कौन पूछता ?

गोगाजी लोक देवता हैं। ये ददरेवा (जिला, चूरू) के राणक थे। ये सांपों के देवता माने जाते हैं।

रू० सांपां कै डर गूगो धोकै।

२६७५. सांप बिल में वड़ै जद सीधो होज्या।

सांप बाहर तो टेढा-मेढा चलता है, लेकिन बिल में घुसते समय सीधा हो जाता है।

बाहर बड़ी ऐंठ दिखलाने वाला अकड़बाज भी घर में प्रवेश करता है तो सीधा हो जाता है।

२६७६. सांप भी मरज्या अर लाठी भी न टूटै।

सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे।

काम भी बन जाए और हानि भी न उठानी पड़े।

२६७७. सांप संपळोटिया तो घणा ई देख्या, इजगर बायो अबकै।

छोटे-मोटे सांप-संपोले तो बहुत देखे—लेकिन अजगर को तो इस बार ही देखा है।

सामान्य दुष्टों से तो काम पड़ता रहा है, लेकिन दुष्टों के सरदार से अभी पाला पड़ा है।

२९७८. सांपां का खोज अळाय जाणै ।

दुष्टों के रहस्य को जानने वाले ही जानते हैं ।

२९७९. सांपां कै के मांवसी ?

सांपों के कैसी मौसी ? वे मोसी के संबंध को क्या जानें ?

रू० (१) सांपां कै किसा साख ?

(२) सांपां कै के मांवसी, सुनारां कै के साख ?

२९८०. सांपां कै ब्या में जीभां की लपालप ।

सांपों के विवाह में तो जीभों की लपालप ही होती है

रू० (१) सांपां कै सांप पावणां, जीभां का लपकारा ।

(२) जीमणा न जूठणा, ना कंधी ना खाट ।
सांपां कै ब्या में, जीभां की लपलपाट ।।

२९८१. सांवरो सरणागत है ।

भगवान् ही शरणागत का रक्षक है ।

सन्दर्भ कथा—किसी राजा ने एक बहुत बड़ा तालाब बनवाया, लेकिन वह पानी से नहीं भरा । पंडितों से पूछने पर उन्होंने राजा से कहा कि जब तक तालाब में नर बलि नहीं दी जाएगी, यह नही भरेगा । अब नर बलि के लिए आदमी की तलाश शुरू हुई । उसी नगर में एक गरीब बनिया रहता था जिसके तीन बेटे थे । बड़ा बेटा बाप को एवं छोटा माँ को विशेष प्रिय था । इसलिए उन्होने राजा से पर्याप्त धन लेकर अपने मँझले लड़के को बलि के लिए दे दिया । अब उसकी रक्षा कौन करे ? उसने भगवान् की शरण ली और प्रार्थना करने लगा ।

माता पिता धन का लोभी, राजा लोभी सागरा ।
देई देवता बळि का लोभी, सरणागत रख सांवरा ।।

भगवान् ने बालक के अन्तःकरण से निकली पुकार सुनी । घनघोर वर्षा हुई और एक ही बार में तालाब लबालब भर गया ।

२९८२. सांस जितरै आस ।

जब तक श्वास, तब तक आश ।

अंतिम सांस तक भी आशा बनी रहती है ।

२९८३. सांस बटाऊ पावणो, आयो न आयो ।

सांस का कोई भरोसा नहीं, आये न आये ।

जिन्दगी का कोई भरोसा नहीं ।

२९८४. सांसी की पंचायती भंगी करै ।

सांसी की पंचायत भंगी करते हैं ।

२६८५. **सांसी कै क्यां को दिवाळो ?**
मांग कर खाने वाले का दिवाला क्या निकले ?

२६८६. **साईं तो सूं बीनती, तूं परणी मत मार ।
रावण सीता ले गयो, वै दिन आज समाळ ।।**
हे भगवान्, किसी की पत्नी को मत मारो। ऐसा करने से पहले उन दिनों को याद करो, जब रावण सीता को हर कर ले गया था। तुम स्वयं भुक्त-भोगी हो, अतः पत्नी वियोग का दुःख तुम अच्छी तरह जानते हो।

२६८७. **सागी होयां तो साह ।**
व्यापारी को भले ही किसी सौदे में लाभ न हो, लेकिन घाटा न लग कर उसकी पूरी रकम वसूल हो जाए तो भी वह शाह ही है।
रू० सागी विणजै सो साह कुहावै ।

२६८८. **सागै सोवै, 'मूं ल्हकोवै ।**
साथ भी सोये और मुँह भी छिपाये ।

२६८९. **साच कैणो, सुखी रैणो ।**
सत्य कहना, सुखी रहना ।

२६९०. **साची कैई अर मा मारी ।**
कटु सत्य कहने से माँ भी मारती है ।

सन्दर्भ कथा—एक विधवा स्त्री काजल-टीकी आदि शृंगार भी करती थी और लोग दिखावे के लिए माला भी जपती थी। उसका एक मात्र लड़का कुछ सयाना हुआ तो एक दिन उसने अपनी माँ से पूछ लिया कि पिता जी को मरे तो कई वर्ष हो गये, तुम यह शृंगार किस पर करती हो ? बेटे की बात माँ को बुरी लगी और उसने उसे पीट दिया।
रू० (१) साची कैई, जाणै भाठै की मारी ।
(२) साची कैणियों बाप को सो मारणियों लागै ।

२६९१. **साठां कोसां लापसी, सौवाँ कोसां सीरो ।
कान पड़्यां छोडै नईं, बाईजी थारो बीरो ।।**
ऐसा भोजनभट्ट जो लपसी मिलने की बात सुन कर साठ कोस एवं हलवा खाने के लिए सौ कोस पैदल चला जाता है ।

२६९२. **साठा सो पाठा ।**
साठ वर्ष की अवस्था में आदमी पट्ठा बन जाता है ।

२६९३ **साठी बुध नाठी ।**
जो आदमी बुढापे में निरर्थक बातें करे अथवा कोई दुष्कर्म करे तो प्रायः उसे 'साठी बुध नाठी' होना कहा जाता है ।

२९९४. **साढू साख, गंडक भाई ।**

साढू का रिश्ता कोई खास रिश्ता नहीं माना जाता ।

रू० साढू साढू गंडक भाई, रोटी ऊपर कैर ।
वो घरै वो गुड़ पड़ै, अन्त वैर को वैर ।।

२९९५. **सात वार, नौ त्यूंहार ।**

हिन्दुओं में पर्व-त्यौहार अधिक मनाये जाते हैं और कभी कभी तो एक दिन में दो-दो भी । इसी को लक्ष्य करके कहा गया है कि वार तो सात ही होते हैं, लेकिन त्यौहार नौ ।

२९९६. **सात मामां को भाणजो भूखो ई रैज्या ।**

सात मामों का भानजा भूखा ही रह जाता है, क्योंकि हर मामा यही सोच लेता है कि दूसरा मामा ही उसे भोजन करवायेगा ।

रू० (१) सीर कै वावै नै स्याळिया खा ।
(२) सीर को धन स्याळिया खा ।
(३) सातां की मा नै स्याळिया खा अर एक की मा गंगाजी जा ।

२९९७. **सात हाथ सुलखणां, हांडी पड़्यां कुलखणां ।**

यदि घर के सभी आदमी मिल कर उद्योग करें तो घर को बनते देर नहीं लगती, लेकिन सभी आदमी अकर्मण्य और केवल खाने वाले ही हों तो घर में दारिद्रय छा जाता है ।

२९९८. **साता वीसी सैंकड़ो तो मण को छप्पन सेर ।**

यदि तुम सात वीसी अर्थात् एक सौ चालीस के सौ गिनोगे तो मैं चालीस सेर के मन की बजाय छप्पन सेर का मन गिनूंगा ।

वीसी = बीस । पांच वीसी के सौ होते हैं ।

आम तौर पर देहातों में अनपढ़ लोग बीस तक ही गिनना जानते थे और पांच बार बीस-बीस गिन कर सौ की संख्या पूरी करते थे ।

२९९९. **साधां कै के सुवाद ? अणविलोयो ई आवण दे ।**

सन्दर्भ कथा—(१) एक साधु किसी के घर छाछ मांगने गया तो घर की मालकिन बोली कि अभी बिलौना बिलोया नहीं है । इस पर साधु बोला कि कोई बात नहीं, साधुओं को स्वाद से क्या प्रयोजन है, बिना बिलोया (मक्खन निकाले बिना, मलाई युक्त) ही आने दो ।

(२) एक साधु किसी के यहाँ भिक्षाटन के लिए गया । घर की मालकिन ने उससे पूछा कि भिक्षा में रोटी लोगे या खिचड़ी ? साधु ने उत्तर दिया—हम साधुओं को किसी चीज से परहेज नहीं, रोटी के ऊपर ही खिचड़ी भी रख लाओ ।

३०००. साधु तो रमता ई भला ।

साधु तो रमता रहे तभी अच्छा है । किसी स्थान या व्यक्ति से मोह करना उसके लिए वर्जित है ।

हंसा जेहा ऊजळा, पाथर जेहा चित्त ।
कांधै घाली मेखळी, जोगी किसका मित्त ?

३००१. सामर पड़्यो सो लूण ।

सांभर झील में जो कुछ गिरता है, वही नमक बन जाता है ।
साँभर राजस्थान की प्रसिद्ध नमक-उत्पादक झील है ।

३००२. सारी रात रोई, मरचो कोनी एक ई ।

पूरी रात रोई और मरा नहीं एक भी ।
सब किया कराया निष्फल गया ।

३००३. सारी रात हरजस गाती गाती, तड़काऊ केसिये वैरी का गीर दिया ।

पूरी ज़िन्दगी तो भक्ति-भावना में गुजार दी और अन्तिम समय में राग-रंग सूझा ।

३००४. सारीसै सै कीजिए, ब्या वैर अर प्रीत ।

विवाह सम्बन्ध, शत्रुता और प्रीति बराबर वालों से ही करनी चाहिए ।

सन्दर्भ कथा—एक चिड़िया ने एक भैंस से मित्रता करली । वह दिन भर उसकी पीठ पर फुदकती रहती । एक दिन उसने भैंस से कहा कि मैं बीट करके अभी आती हूँ । भैंस बोली कि मेरे ऊपर ही करले और चिड़िया ने बीट कर दी । कुछ देर बाद भैंस बोली कि मैं 'पोटा' करूंगी । चिड़ी बोली कि मेरे ऊपर ही करले । यों कह कर चिड़िया जमीन पर बैठ गई । भैंस ने पोटा किया और चिड़ी उसके नीचे दब कर मर गई ।
पोटा करना = गोबर के रूप में मल विसर्जन करना ।

३००५. साळी छोड सासुवां सैं ई मसखरी ?

साली, सलहजों को छोड़कर सास से ही मसखरी करने लगे ?
बराबरी वालों से ही दिल्लगी करनी अपेक्षित है, बड़ों से नहीं ।

३००६. सावण का पंचक गळै, नदी बहन्ता नीर ।

सावन के पंचकों में वर्षा हो जाये तो इतनी वर्षा हो कि नदियों में बाढ़ आ जाए ।

३००७. सावण की छा भूतां नै, जेठ की छा पूतां नै ।

सावन की छाछ भूतों को और जेठ की छाछ पूतों को ।
सावन की छाछ किसी काम की नहीं होती, लेकिन जेठ की छाछ बड़ी गुण-कारी होती है और कठिनाई से मिल पाती है ।

३००८. **सावण कै आंधै नै हरचो ई हरचो सूझै ।**

सावन के अन्धे को हरा ही हरा सूझता है ।

३००९. **सावण पैली पंचमी, चंदा छिटक करै ।**
कै जळ दीखै कूप में, कै कामण सीस धरै ।।

सावन वदि पंचमी की रात को यदि चांदनी छिटकी रहे तो पानी या तो कुएँ में दिखलाई पड़ेगा या पनिहारिन के सिर पर रखे घड़ों में अर्थात् वर्षा नहीं होगी ।

रू० सावण पैली पंचमी, जोरां चलै वयार ।
थे जावो पिव माळवै, मैं जाऊं मौसाळ ।।

३०१०. **सावण मास सूरियो चालै, भादूड़ै पुरवाई ।**
आसोजां में पिछवा चालै, ज्यूं ज्यूं साख सवाई ।।

(आसोजां में पिछवा चालै, गाडा भर भर ल्याई)

सावन में वायव्य कोण की हवा चले, भादों में परवा और आश्विन में पछवा हवा चले तो अन्न खूब पैदा हो ।

सूरियो = पश्चिमोत्तर दिशा की हवा ।

३०११. **स्रावण में चालै परा तो सबसें बुरा ।**
बामण होकर बांधै छुरा तो सबसें बुरा ।

सावन में परवा हवा चले तो बहुत बुरी और ब्राह्मण छुरा धारण करे तो बहुत बुरा ।

३०१२. **सासरो सुख बासरो, तीन दिनां को आसरो ।**

सुसराल में अधिक समय तक रहने से इज्जत नहीं रहती ।

सन्दर्भ कथा—एक जँवाई सुसराल गया तो उसकी बड़ी आव-भगत हुई । यह देखकर उसका मन वहीं रम गया । सवेरे सो कर उठा तो उसने कोयले से दीवार पर लिख दिया—'सासरो सुख बासरो', उसकी सलहज ने सोचा कि इसका मन तो यहीं लग गया है, इसलिये उसने वहीं लिख दिया—'तीन दिनां को आसरो' । इस पर दामाद ने लिखा, 'रहस्यां मास दो मास' । लेकिन सलहज ने प्रत्युत्तर में लिखा—'देस्यां खुरपी, खुदास्यां घास' । इस पर वह समझ गया और वहां से विदा हो गया ।

३०१३. **सासु का धमूका बहू ई सैवै ।**

सास की डाँट-डपट बहू को ही सहनी पड़ती है ।

३०१४. **सासु का जीकारा भू नै भारी पड़ै ।**

सास का बहू को जी कहकर पुकारना स्वयं बहू के लिये ही भारी पड़ता है ।

३०१५. सासु खाती पावणां, भू बटाऊ खाय ।

सास तो पाहुनों को ही खाती थी और बहू तो अतिथियों को भी खाने लगी। वहू तो सास से भी आगे निकल गई ।

३०१६. सासुजी की सीख फळसैं सुधी ।

सासजी की सीख घर के द्वार तक ।

घर के द्वार से निकलते ही बहू अपनी सास की शिक्षा को भुला देती है ।

३०१७ सासुजी, मेरैं टाबर होवै जद मनैं जगा देयो,
'क तूं ईं सात गाँव जगासी ।

आसन्न प्रसवा बहू ने सास से कहा कि मैं तो सो रही हूँ, जब मेरे बालक जन्मे तो मुझे जगा देना। इस पर सास बोली कि तू स्वयं ही सब को जगा लेगी ।

३०१८. सासु नै भावै कलेवा, भू काढै गैल का केवा ।

सास तो सोचती है कि वहू मुझे बुढापे में आराम देगी और वहू पिछली बातों को याद करके सास से बदला निकालती है ।

केवा = प्रतिशोध, वैर का बदला ।

३०१९. सासु विना किसो सासरो ?

सास के बिना कैसी सुसराल ?

रू० (१) सासु जितरैं सासरो, आसू (आसोज) जितरैं 'मे ।
(२) सासु जितरैं सासरो, मा जितरैं पी'र ।
(३) सास बिनां काईं सासरो, खांड विना काईं खीर ।

३०२०. सासु मरगी कटगी बेड़ी, भू चढगी हर की पेड़ी ।

सास मर गई तो वहू का बंधन कट गया और वह निहाल हो गई ।

३०२१. सिंघ गाजै तो हाथी लाजै ।

सिंह राशि पर सूर्य के रहते बादल गरजना करे तो हस्त नक्षत्र में वर्षा कम हो ।

३०२२. सिंघ नईं देख्यो, तो देखले बिलाई ।
जम नईं देख्यो, तो देखले जंवाई ।।

यदि सिंह न देखा हो तो बिल्ली को देखलो और यम को न देखा हो तो दामाद को देख लो ।

३०२३. सिंघ नै पकड़्यो स्याळियो, जे छोड़ै तो खाय ।

सियार ने भूल से शेर को पकड़ लिया, यदि अब वह उसे छोड़े तो शेर उसे खा जाए ।

भई गति सांप छछूंदर केरी ।

३०२४. **सिंघां का भाई बघेरा, वैं नौ कूदै वै तेरा ।**

वाघ भी शेरों के ही भाई हैं, कम नहीं । यदि शेर नौ हाथ की छलांग लगाते हैं तो वाघ तेरह हाथ की ।

३०२५. **सिंघां कै आळां में हाथ दियां, हाथ काढले ।**

शेर की मांद में हाथ डालने से वह हाथ निकाल लेता है ।

जबरदस्त से छेड़ छाड़ करने पर वह छेड़खानी का मजा चखा देता है ।

३०२६. **सिंघां कै जाया भेड़िया, भेड़चां कै जाई कोळ ।**
कोळां कै जाया ऊंदरा, जद माची रापारोळ ।।

शेरों के भेड़िये जन्मे, भेड़ियों के 'कोळ' और 'कोळों' के चूहे जन्मे ।

इस प्रकार निरन्तर ह्रास होते रहने से सब कुछ चौपट हो गया ।

कोळ = घूस; चूहे की जाति का वड़े आकार वाला एक जीव ।

३०२७. **सिमाई देसी 'क बींत में देखूं ?**

दर्जी अपने ग्राहक से पूछता है कि तुम कपड़ा सिलवाने की सिलवाई दोगे अथवा मैं ब्योंत में उसकी कसर निकालूं ?

मजदूर किसी न किसी रूप में अपनी मजदूरी ले ही लेता है ।

३०२८. **सिर को बोझ पगां नै आवै ।**

सिर पर रखे वोझ का भार अन्त में पैरों पर ही आता है ।

३०२९. **सिर जा, सिरवाड़ो कोनी जा ।**

रस्सी जल जाने पर भी ऐंठ नहीं जाती ।

३०३०. **सिर पर ओक मांडचां पेट कोनी भरै ।**

सिर के ऊपर 'ओक' माडने से पेट नहीं भरता । मुंह के आगे ओक मांडने से ही पेट भरता है ।

ओक = अंजलि, जिसे मुंह के आगे लगा कर पानी पीते हैं ।

३०३१. **सिर पर बंध्या न सेवरा, रण चढ किया न रोस ।**
लाहा जग में क्या लिया, पिया न चम्मड़पोस ।।

यदि सिर पर सेहरा न बंधा (दूल्हा न बना), युद्धार्थ न चढा और चम्मड़पोस न पिया तो संसार में आने का लाभ क्या हुआ ?

चम्मड़पोस = वह हुक्का जिसका जलपात्र चमड़े का होता है ।

हुक्के के पक्ष और विपक्ष में काफी कहा गया है ।

हुक्का तूं हुड़हुड़ियो नई, गाज्यो नई गजराज ।
थां विन सूनी कोटड़ी, वठै रांडड़ियां को राज ।।
हुक्को पीयां हुरमत गई, लाज सरम गई छूट ।
घी वेच कर लेई तमाखू, गई हिये की फूट ।।

रू० जलम अकारथ ही गयो, भड़ सिर खग्ग न भग्ग ।
तीखी तरी न मरियां, गौरी गळै न लग्गा ।।

३०३२. **सिर पर भौंटको, तंबू में वड़ण दे।**
सिर पर तो कांटों का भार और तम्बू में घुसने को तैयार।
रू० (१) सिर पर खेई, तम्बू में वड़णदगो।
(२) दयावै पिंड लखावै फेरा, सिर पर खेई तंवू में डेरा।

३०३३. **सिर वडा सिरदार का, पग वडा मऊदार का।**
सिर तो सरदार का वड़ा होता है और पैर दरिद्री के।

३०३४. **सिर भलाईं कट ज्यावो, नाक नईं कटणी चाये।**
सिर जाये तो जाये, इज्जत नहीं जानी चाहिये।

३०३५. **सिरमाळी जीवता कुमावै न मुवां खावै।**
श्रीमाली जीते जी जो जोड़ता है, वह उसके मौसर, श्राद्ध आदि में खर्च किया जाता है। इन कार्यों में श्रीमाली अधिक व्यय करते हैं।

३०३६. **सिल डूबै, लोडा तिरै।**
सिल डूबती है, लोढा तैरता है।
एक अपराधी को सजा मिल जाती है और दूसरा मुक्त घूमता है।
लोढा = वट्टा; पत्थर का वह टुकड़ा जिससे सिल पर रखकर किसी चीज को पीसते हैं।

३०३७. **सींत करू, दूर ले ज्याऊ, दोनूं भाई सागै जाऊ!**
सभी काम मुफ्त में करना चाहे और वे भी पूरी छूट व सहूलियत के साथ।

३०३८. **सीख में मुजरो वाकी।**
विदाई में केवल मुजरा (सलाम) करना वाकी है।

३०३९. **सीख वां नै दीजिये, जां नै सीख सुहाय।**
वांदर सीख सिखावतां, घर वैये को जाय॥
शिक्षा उसी को देनी चाहिए, जिसे वह अच्छी लगे अन्यथा इसका परिणाम शिक्षा देने वाले के लिए ही बुरा होता है, जैसे वन्दर को शिक्षा देने से वया का घर वर्वाद हो गया।

संदर्भ कथा—वर्षा में भीगता हुआ एक वंदर वृक्ष की डाल पर वैठा था। उसी वृक्ष पर एक वया ने घर वना रखा था और वह उसमें आराम से वैठा हुआ था। वंदर को वर्षा में भीगते देखकर वया ने उससे कहा कि — मनुष्य की तरह तुम्हारे हाथ-पांव हैं, फिर तुम अपने लिये घर क्यों नहीं वना लेते—

हाथ तेरै पांव तेरै, मिनख की सी देह।
वयो कैवै वांदरा, तूं घर क्यूं नीं कर लेय॥

लेकिन वंदर को वया का यह उपदेश अच्छा नहीं लगा और उसने झुंझला कर उसका घर नष्ट-भ्रष्ट कर डाला।

३०४०. **सीख सरीरां ऊपजै, दीयां लागै डाम ।**

सीख तो स्वयं के हृदय में ही उत्पन्न होती है, देने से तो डाम ही लगते हैं
डाम लगाना = तप्त लोहे से दागना ।
रू० सीख सरीरां ऊपजै, देई न आवै सीख ।
अण मांग्या मोती मिलै, मांगी मिलै न भीख ॥

३०४१. **सीतळ पातळ मंद गत, अलप अहार निरोस ।**
अै तिरिया में पांच गुण, अै तुरिया में दोस ॥

शीतल स्वभाव, कृशवदन, मंद गति, अल्पाहार एवं रोष रहित होना ये पांचों स्त्री में गुण एवं घोड़ी में अवगुण हैं ।

३०४२. **सीधी आंगळियां घी कद नीकळै ?**

सीधी ऊँगलियों से घी नहीं निकलता ।
जब सीधेपन से काम न हो तो कड़ाई करने पर ही काम हो पाता है ।

३०४३. **सीयाळै खाटू भलो, ऊनाळै अजमेर ।**
नागाणो नित नित भलो, सावण बीकानेर ।

शीत ऋतु में खाटू, ग्रीष्म में अजमेर, सावन में बीकानेर अच्छा लगता है और नागौर तो सभी ऋतुओं में अच्छा है ।
उपरोक्त चारों ही स्थान राजस्थान में हैं ।

३०४४. **सीयाळै में सी मरी, ऊन्याळै में लूवां ।**
राघो चेतन यूं कवै, पुन होसी क्युईं दीयां ।

राघो चेतन का कथन है कि पुण्य तो दान से ही होता है, शारीरिक कष्ट उठाने से नहीं ।

३०४५. **सीर की तो होळी होया करै है ।**

सीर की तो होली ही होती है, अन्य किसी काम में सीर-साझा होने से झगड़ा हुए बिना नहीं रहता ।
रू० सीर की होळी तो बळज्या, पण सीर को लाप बळै न बुझै ।

३०४६. **सीर सगाई चाकरी, राजीपै को काम ।**

साझेदारी, सगाई और नौकरी—दोनों पक्षों की रजामंदी से ही हो सकती हैं ।
रू० सीर सगाई चाकरी, खुसी दावै को काम ।

३०४७. **सीळी हो सपूती हो, सात पूत की मा हो,**
'क रांड नौ तो मेरै आगै ई है ।

एक स्त्री ने दूसरी स्त्री के पैर छूये तो उसने आशीर्वाद देते हुए कहा—शीलवती हो, पुत्रवती हो, सात पुत्रों की माँ हो । इस पर पहली स्त्री बोली कि मेरे नौ पुत्र तो पहले से ही हैं, क्या तुम उनमें से दो को मारना चाहती हो ?

३०४८. सुक्करवारी बादळी, रही सनीचर छाय।
डंक कहै हे भड्डळी, बरस्याँ बिना न जाय।
यदि शुक्रवार के दिन आकाश में बादल छायें और वे शनिवार तक बने रहें तो वर्षा करके ही जाएँगे।

३०४९. सुख सोवै कुम्हार की, चोर न मटिया लेय।
कुम्हारी आराम से निश्चिन्त होकर सोती है क्योंकि वह जानती है कि चोर उसकी मिट्टी को चुरा कर नहीं ले जाएगा।
जिसके पास अधिक धन होता है, वह चोरी की आशंका से निश्चिन्त होकर नहीं सो पाता।
रू० सुख सोवै कुम्हार की, चोर न मटिया लेय।
गधो पगाएँ बांधकर, छाज सिराएँ देय।।

३०५०. सुथार की बेटी सासरै जावै अर गतराड़ो गाती मारै।
गतराड़ा या हिजड़ा सुथार के घर डेरा डालता था और जब तक वह अपने दस्तूर का सवा रुपया नहीं ले लेता था, सुथार की बेटी को सुसराल नहीं जाने देता था।

३०५१. सुदी छिपकली घणां जिनावर मोसै।
सीधा दिखलाई पड़ने वाला परोक्ष में अधिक पाप करता है।

३०५२. सुनार कै आगै के सूई बेचै ?
सुनार के सामने चालाकी नहीं चल सकती।

३०५३. सुनार नै घड़तां अर लुगाई नै जणतां नई देखणी।
सुनार को गढ़ते समय और स्त्री को प्रसव करते समय नहीं देखना चाहिए।

३०५४. सुपना सूण सिधां का बाचा, कोई एक झूठा कोई एक साचा।
स्वप्न की बात, शकुन एवं सिद्धों के वचन झूठ भी निकल जाते हैं और सत्य भी।
रू० सुगन सरोधा सिध का बाचा, कोई एक झूठा कोई एक साचा।

३०५५. सुपनै की सौ म्होर सें भी के काम सरै ?
स्वप्न में यदि सोने की सौ मोहरें भी मिल जाएँ तो क्या लाभ ?
रू० कहणी तो रांचै नई, रहणी रांचै राम।
सुपनै की सौ म्होर सें, कोडी सरै न काम।

३०५६. सुपनै देखै सांखळी, नापासर का रूंख।
सांखली अब स्वप्न में ही नापासर के वृक्ष देख पायेगी।
नापा सांखला ने भू० पू० बीकानेर राज्य की स्थापना में राव बीका की मदद की थी और उसने अपने नाम पर नापासर नामक गाँव बसाया था। उसकी

कोई लड़की दूर-दराज व्याही गई होगी। उन दिनों आवागमन के साधन बहुत कम थे और विवाहित लड़की की सुसराल अधिक दूर होने पर उसका बार-बार पीहर आना संभव नहीं होता था। इसी को लक्ष्य करके उपरोक्त कहावत बनी है।

३०५७. **सुरग नरक अठै ई है।**
स्वर्ग और नरक यहीं (धरती पर ही) हैं।
आदमी जैसा करता है, उसका फल उसे यहीं मिल जाता है।

३०५८. **सुलफिया यार किसका, दम लगाई अर खिसक्या।**
सुलफेबाज किसका मित्र ? वह तो दम लगा कर चलता बनता है।
मतलबी यार मतलब बनते ही किनारा कर जाता है।

३०५९. **सुसरा, भू उघाड़ी, 'क सुसरै की फूटगी के ?**
किसी ने श्वसुर से कहा कि तुम्हारी पुत्र वधू के पास तो पहनने को वस्त्र भी नहीं हैं। श्वसुर ने जवाब दिया कि मैं भी अंधा नहीं हूं, लेकिन मजबूरी का क्या इलाज ?

३०६०. **सुसरो बैद, कुठोड़ खाई।**
श्वसुर वैद्य है, लेकिन बहू की तकलीफ कुठौर है, उसका इलाज कैसे करे ?

३०६१. **सूंकळी बकरी, टूंकळी चढगी।**
जब कोई सामान्य आदमी ऊंचे स्थान पर प्रतिष्ठित हो जाए।

३०६२. **सूई भी सागै कोनी चालै।**
दुनिया से कूच करते समय आदमी एक सूई भी साथ नहीं ले जा सकता।

३०६३. **सूझै सें बूझ्यो भलो।**
सूझने की अपेक्षा पूछ लेना अच्छा है।
अपनी जानकारी की पुष्टि दूसरों से कर लेनी अच्छी।

३०६४. **सूती गंगा बगै है।**
कोई कहने-सुनने वाला नहीं है, चाहे सो करो।

३०६५. **सूत्यां की तो पाडा ई जणै।**
सोने वालों की भैंस तो पाडा ही जनेगी।

सन्दर्भ कथा—दो पड़ोसियों की भैंसें साथ-साथ व्याने वाली थीं। दोनों उनके व्याने की प्रतीक्षा कर रहे थे। रात अधिक हो गई तो एक ने कहा कि दोनों के जागने से क्या लाभ ? एक आदमी सो जाए और भैंस जब व्याने को हो तो उसे जगा लिया जाए। यों कह कर वह सो गया और दूसरा जागता रहा। थोड़ी देर बाद दोनों भैंसें व्या गईं। जो जाग रहा था, उसकी भैंस ने पाडा प्रसव किया और सोने वाले की भैंस ने पाडी। लेकिन चूंकि पाडी की

कीमत अधिक होती है, अत: जागने वाले ने पाडी को अपनी भैंस के साथ लगा दिया और पाडे को दूसरी भैंस के साथ। फिर उसने अपने साथी को जगाया। जागने पर उसने पाडी को देख कर कहा कि यह तो मेरी भैंस के अनुरूप है, लेकिन दूसरे ने कहा—नहीं, तुम्हारी भैंस तो पाडा ही लाई है। इतने में एक तीसरा आदमी वहां आ गया और सारी स्थिति जानकर उसने कहा—चाहे जो हो, सोने वालों की भैंस तो पाडा ही जनती है।

रू० सूत्यां की पाडा जलमै, जागतां की पाडी।

२०६६. सूत्योड़ै नै तो जगावै, पण जागतोड़ै नै के जगावै ?

सोये हुए को तो जगाया जा सकता है, लेकिन जागते हुए को क्या जगाये ? हिसाब में भूल हो तो वह दुरुस्त की जा सकती है, लेकिन जो जान-बूझ कर बेईमानी करे, उसका क्या इलाज ?

२०६७. सूदै पर दो लदै।

सीधे पर दो लदते हैं।

२०६८. सूना खेत सुलाखणा, हिरणा चर चर जाए।

सूने खेतों को तो हिरन ही चरते हैं।

जो अपने धंधे को स्वयं नहीं संभालता, उसका लाभ दूसरे ही उठाते हैं।

२०६९. सूनी पा'गी रसिया, घाल फोरी।

हे रसिक ! अब तो तुम्हें सूनी मिल गई हूं अत: चाहे जैसे उत्पात मचाओ।

२०७०. सूनै घर में हर कोई आ बड़ै।

सूने घर में कोई भी आ घुसता है।

कमजोर को हर तरह की व्याधि घेर लेती है।

२०७१. सूम कै घर में वयांकी धूम ?

सूम के घर में कैसी धूम धाम ?

२०७२. सूमण पूछै सूम नै, काहे मुक्ख मलीन।
कै गांठी सें गिर पड़्यो, कै काऊ नै दीन ?
ना गांठी सें गिर पड़्यो, ना काऊ नै दीन।
देवत देख्या और कूं, या सें मुक्ख मलीन।

सूम घर आया तो उसकी स्त्री ने उससे पूछा कि आज उदास क्यों हो ? क्या कुछ गांठ से गिर पड़ा अथवा किसी को कुछ दे दिया ? इस पर सूम ने उत्तर दिया कि न तो गांठ से कुछ गिरा और न हाथ से किसी को कुछ दिया, लेकिन किसी और को देते हुए देखा तो उदासी छा गई।

२०७३. सूरज कुण्डाळ्यो चांद जलेरी, टूटै टीवा भरज्या डैरी।

सूर्य और चन्द्रमा के चारों ओर चक्र दिखलाई पड़े तो भरपूर वर्षा हो।

३०७४. सूरबीर की मौत कायर कै हाथ होवै ।

शूरवीर की मृत्यु कई बार कापुरुष के हाथों होती है क्योंकि आगे आकर तो वह उसका सामना कर नही पाता, इसलिए वह उसे धोखे से मार डालता है ।

३०७५. सूरबीर तो चल दिया, पड़ी रह गई गल्ल ।

शूरवीर तो चले गये, लेकिन उनकी वीरता की कहानियां शेष है—

राव गया ल्हालर गई, गई जमीं सें हल्ल ।
सूरवीर तो चल दिया पड़ी रह गई गल्ल ।।

३०७६. सेर की हांडी में सवा सेर कोनी खटावै ।

सेर की हँडिया में सवा सेर नहीं खटाता ।

३०७७. सेरे'क चून उधारा री, कोई गुड़ दे तो,
गटक मलीदा करल्यूं कोई घी दे तो,
मरतो पड़तो खाल्यूं री, कोई कर दे तो ।

यदि कोई गुड़ दे तो सेर भर चून भी उधार लेलूं एवं कोई घी दे और मलीदा बनादे तो खा भी लूं ।

सारी चीजें मुफ्त में लेकर एवं सारे काम मुफ्त में करवा कर भी ऊपर से अहसान जताना ।

३०७८. सेरे'क दूध अर आध पाव बूरो मिलज्या तो बावै की हर ई कोनी हालै ।
'क मिलै ई कोनी, मिल्यां तो घिरस्ती को ई बाळ बांको को होवैनी ।

संदर्भ कथा—एक जाट अपनी भैंस दुह रहा था। राह चलते एक साधु ने दूध प्राप्त करने की मंशा से उसके पास आकर कहा कि यदि साधु-बाबा को सेर भर दूध और आध पाव बूरा मिल जाए तो फिर उसका कोई बिगाड़ नही हो सकता । लेकिन जाट भी सयाना था, उसने साधु को टरकाने की नीयत से कहा कि मिलता ही कहां है ? मिल जाए तब तो साधु क्या, गृहस्थी का भी बाल बांका न हो ।

३०७९. सेल घमोड़ा जो सहै, सो जागीरी खाय ।

जो युद्ध में सेलों के वार सहता है, वही जागीरी का उपभोग भी करता है ।

३०८०. सेल सिमरणी जंगी घोड़ा, सोख घणां नै राखै थोड़ा ।

सेल, सुमिरनी और जगी घोड़ा रखने का शौक तो बहुतों को होता है, लेकिन रखते है बहुत कम ।

३०८१. सेलड़ चूंघै बाछड़ो, बहू चोर कर खाय ।
परवा चालै टावरी, कदे न निरफळ जाय ।।

बछड़ा यदि गाय के साथ-साथ रह कर उसका दूध चूंघता रहे, बहू चोर कर भी खाये एवं परवा हवा तेज चले तो ये निष्फल नहीं जाते । यदि बछड़ा दूध

चूंघता रहता है तो वह अच्छा और मजबूत बैल बन जाता है, बहू चोर कर भी घी-दूध खाती है तो उसकी कोख से जन्म लेने वाला बालक हृष्ट-पुष्ट होता है एवं तेज चलने वाली परवा हवा तो बड़ी दूर से भी वर्षा ले आती है ।

३०८२. **सैंस भुजा को धरणी देवै, जद दो भुजा आळो के करै ?**

सहस्र भुजाओं वाला ईश्वर जब देता है तो दो भुजाओं वाला आदमी क्या बाधा पहुँचा सकता है ?

३०८३ **सै आप-आप को भाग खावै ।**

सब अपने अपने भाग्य का खाते हैं ।

सब अपना-अपना भाग्य साथ लाते हैं ।

३०८४. **सैं'जां चुड़लो फूटग्यो, हळका होग्या हाथ ।**

सहज में ही पिण्ड छूट गया ।

बाई का बंधरण कट्या, भली करी रुगनाथ ।
सैं'जां चुड़लो फूटग्यो, हळका होग्या हाथ ।।

३०८५. **सै झुकतै पालड़ै का सीरी है ।**

सभी झुकते हुए पलड़े के सीरी हैं । सभी जीतने वाले के साथ रहना चाहते हैं ।

रू० (१) सै होये होये का सीरी है ।
(२) सै चोखी-चोखी का सीरी है ।
(३) सै खाणैं का सीरी है ।

३०८६. **सै पूरिया ई पूरिया है ।**

सन्दर्भ कथा—एक बार किसी राजा ने साधु-महात्माओं को भोज दिया और ऐसा प्रबंध किया कि कोई साधु का वेश बना कर असाधु भोज में सम्मिलित न हो । जब साधुओं की पंगत जीमने बैठी तो राजा स्वयं अपने हाथ से उन्हें परोसने लगा । परोसते-परोसते जब वह एक साधु के पास पहुँचा तो कुछ ठिठक गया । राजा को उसकी शक्ल कुछ जानी-पहचानी सी लगी । राजा ने उसे गौर से देखा तो उसे भान हुआ कि यह तो उसका पूरिया नामक चरवादार (साईस) है । राजा ने उसे पहचान कर तेज आवाज में पूछा—अरे पूरिया ? पूरिया तत्काल ही खड़ा हो गया और नम्रता से बोला कि अन्नदाताजी—यहाँ जितने साधु बैठे हैं, वे सब पूरिये ही पूरिये हैं, आपने मुझे पहचान लिया और ये सब अपरिचित हैं, बस इतना ही अन्तर है ।

३०८७. **सै भूखा उठै, पण भूखा सोवै कोनी ।**

भगवान् सब की उदर-पूर्ति करते हैं । सब भूखे उठते हैं, लेकिन भूखे सोते नहीं ।

३०८८. सोखीन बुढिया अर चटाई को लँगो !

शौकीन बुढिया और चटाई का लहँगा !

३०८९. सोखीनां की के सैनाणीं ?

कांच कांगसी सुरमादानी ।

शौकीनों की यह पहचान है कि वे हर वक्त अपने पास कांच (शीशा), कंघा और सुरमादानी रखते हैं ।

सुरमादानी तो आज कल फैशन से बाहर हो गई है, लेकिन आज के बहुत से शौकीन कंघा अवश्य रखते हैं ।

३०९०. सोगन अर सीरणी तो खाणै की ई होवै ।

सौगन्ध और शीरनी तो खाने के लिए ही होती है ।

झूठे आदमी के लिए सौगन्ध खाना भी शीरनी खाने के तुल्य ही है ।

३०९१. सोड़ गैल पग पसारणा चायें ।

आय के अनुसार ही व्यय करना चाहिए ।

३०९२. सोत तो काचै चून की ई बुरी ।

सौत तो कच्चे आटे से बनी भी बुरी ।

रू० (१) कांटो बुरो करील को, अर बदळी की घाम ।
सोत बुरी है चून की, अर साझै को काम ।।
(२) सोत तो कूंळै मांड्योड़ी ई बुरी ।

३०९३. सोनी को बेटो संहगो सरूप, वाणियें को बेटो मंहगो करूप ।

सुनार का लड़का सुन्दर होते हुए भी सस्ता और बनिये का बेटा कुरूप होते हुए भी महँगा है ।

किसी समय यह बात रही होगी, लेकिन आज कल वैसी स्थिति नहीं रही है। अब तो आम तौर पर बनिये के बेटों की पूछ बहुत कम रह गई है और वे दूसरों की तुलना में तेजी से पिछड़ते जा रहे हैं ।

३०९४. सोनै की कटारी खाकर थोड़ी ई मरेजा ?

सोने की कटार बहुमूल्य तो होती है, लेकिन उसे पेट में घुसेड़ कर थोड़े ही मरा जाता है ?

रू० सोनै की कटारी पेट में थोड़ी घाली जा ।

३०९५. सोनै कै थाळ में तांबै की मेख ।

थाल तो सोने का और उसमें मेख तांबे की ?

रू० देव सोनै का गांड पीतळ की ।

३०९६. सोनो गयो करण कै साथ ।

सोना तो कर्ण के साथ ही चला गया अर्थात् उस के जैसा स्वर्णदानी दुनिया में और नहीं है।

कर्ण की दानवीरता लोक-विश्रुत है। कहा जाता है कि वह हर प्रातः सवा मन सोने का दान दिया करता था और इसलिए आज भी प्रातःकाल का समय राजा-कर्ण का समय कहलाता है। कर्ण ने भारत के लोक जीवन पर अपनी जो छाप छोड़ी है, वह आज भी अमिट है।

इसी प्रकार सिकन्दर ने भी अपनी छाप छोड़ी है। आज भी जिसका भाग्य तीव्र होता है, उसके लिए कहा जाता है कि अमुक आदमी का दिन सिकन्दर है। इसी तरह राजा के लिए राम ने और सती के लिए सीता (सीता सतवंती) ने अपना स्थान बना रखा है।

३०९७. सोनो देकर स्यावड़ का न्होरा क्यूं ?

३०९८. सोनो सुनार को, सोभा संसार की।

सोना तो वास्तव में सुनार का होता है और शोभा उसके द्वारा बनाये गये आभूषणों को पहनने वालों की।

३०९९ सोरठियो दूहो भलो, भली मरवण की बात।
जोबन छाई धण भली, तारां छाई रात॥

दोहा सोरठिया अच्छा, बात मरवण (ढोला-मारू) की अच्छी, यौवन संपन्न पत्नी अच्छी एवं तारों से झिलमिलाती रात अच्छी।

३१००. सोळ समैयो पंदरा क्यूं ?

सोलह के सवाये बीस होते हैं, पन्द्रह नहीं।

जो आदमी नफे के स्थान पर मूल में भी घाटा करदे।

३१०१. सोळा साल सें माथो न्हायो, जेळी सें सुळझायो।

फूहड़ स्त्री ने सोलह वर्षों से तो माथा नहाया और 'जेळी' से बाल सुलझाये। जेळी = लकड़ी के दो सींगों वाली एक लंबी लाठी जिससे कँटीली झाड़ियां आदि हटाई जाती हैं।

३१०२. सौ अक्कल तूज्या, एक अक्कल आडी आवै।

सौ युक्तियां धरी रह जाती हैं और एक ही उपयुक्त युक्ति काम आती है।

संदर्भ कथा—किसी जंगल में एक सांप, एक कछुवा और एक हिरन रहते थे। कछुवा कहता कि मैं पचास युक्तियां जानता हूं, सांप कहता कि मैं सौ युक्तियां जानता हूं। लेकिन हिरन सदा यही कहता कि मैं तो एक ही युक्ति जानता हूं और वह यह कि आपत्ति के समय भाग कर अपना बचाव किया जाए। हिरन की बात सुन कर दोनों उसकी हँसी उड़ाया करते।

एक वार वन में दावाग्नि भड़क उठी। हिरन तो उसे देखते ही भाग गया लेकिन कछुवे और सांप को अपनी युक्तियों पर भरोसा था, अतः वे नही भागे। आग बुझने पर जब हिरन उस स्थान पर लौटा तो उसने देखा कि सांप एक जली रस्सी की तरह वहां पड़ा है और कछुवा गेंद की तरह। यह देख कर वह बोला—

सौ की होगी सीदड़ी, पचासां की दड़ी।
आछी म्हारी एकली, लांबै-खाळ खड़ी।।

३१०३ सौ का भाई सट्ठ।

सौ और साठ तो भाई-भाई ही हे अर्थात् वरावर है।

सन्दर्भ कथा—गॉव के साहूकार का एक कुँजड़े पर सौ रुपये का ऋण था। वार-वार टोकने पर भी जब कुँजड़े ने ऋण अदा नही किया तो सेठ उसके घर गया और बोला कि आज तुम्हें रुपये देने ही पड़ेंगे। इस पर कुँजड़ा बोला कि आप सौ रुपये मागते है, लेकिन सौ और साठ तो भाई-भाई है, इसलिए आप को तो वास्तव मे साठ रुपये ही देने है। लेकिन इन साठ मे आधे रुपये छूट के रहेगे। इस प्रकार शेष तीस रुपये देने रहे। इनमे से दस रुपये तो फिर कभी दे दूंगा, दस किसी से दिलवाऊगा और दस का क्या देना-लेना, चलो हिसाव चुकता हुआ—

सौ का भाई सट्ठ, आधा नै गयो नट्ठ।
दस देंगे, दस दिलायेंगे और दस का क्या देना-लेना।।

३१०४. सौ की सवाई ई चोखी, दो की दूणी भे के काम की?

सौ के सवाये भी अच्छे, दो के दुगने भी किस काम के?

सौ के सवाये एक सौ पच्चीस होते है अर्थात् पच्चीस रुपये का मुनाफा हो जाता है, दो के दुगने भी कर लिए तो दो रुपये का ही मुनाफा हुआ।

३१०५. सौ, गायक अर एक हब्बो।

दुकानदार के यहाँ कोई अपने वाला आदमी माल खरीदता है तो वह उससे सामान्य ग्राहक की अपेक्षा अधिक मुनाफा लेता है क्योंकि अपनत्व के मारे वह कुछ वोल नही पाता और यही समझता है कि दुकानदार तो अपना ही है, वह अपने से ज्यादा थोड़े ही लेगा।

३१०६. सौ जूती अर हुक्कै को पाणी।

ऐसा कभी नही हो सकता, जो ऐसा कहे उसे-सौ जूते लगाये जाएँ एवं हुक्के का पानी पिलाया जाए।

अपनी वात का वलपूर्वक समर्थन करना।

३१०७ सौ दवा, एक हवा।

शुद्ध वायु का सेवन सौ दवाओं के वरावर लाभप्रद है।

३१०८. सौ दिन चोर का तो एक दिन साहूकार को भी ।

चोर सौ दिनों तक चोरी करता है, लेकिन एक दिन साहूकार का भी आता है और चोर पकड़ा जाता है ।

रू० सौ दिन सासु का तो एक दिन भू को भी ।

३१०९. सौ धोती अर एक गोती ।

एक सगोत्री अन्य सौ के बराबर होता है ।

३११०. सौ नकटां में एक नाक आळो ई नक्कू बाजै ।

सौ नकटों में एक नाक वाला हो तो वह नक्कू बन जाता है ।

सौ चोरों में एक साहूकार हो तो उसकी बेकद्री ही होती है ।

३१११. सौ न्होरा अर टांग जोर ।

सौ निहोरे खाने से जो काम नहीं होता, वह टांग के जोर से हो जाता है ।

३११२. सौ पट्टा, एक लट्ठा ।

सौ पट्टेबाजों को एक लट्ठबाज हरा देता है ।

रू० सौ रांघड़ा, एक सांघड़ो ।

३११३. सौ बरसां को चिणनियों, पांच बरस को चिणावणियों ।

मकान चिनने वाला चाहे बड़ी उम्र का और चिनवाने वाला कम उम्र का हो, लेकिन चिनने वाले को उसी का कहना मानना पड़ता है ।

३११४. सौ में फूल सैंस में काणों, सवा लाख में ऐंचाताणो ।
मांझरियो सब को सिरदार, गंजै आगै निमसकार ॥

जिसकी आंख में फूला हो वह सौ आदमियों में, काना हजार में और ऐंचाताना सवा लाख आदमियों से भी धूर्त माना जाता है । लेकिन इन से भी ऊपर मांझरा (बिल्ली जैसी आंखों वाला) होता है और गंजे को तो नमस्कार ही है ।

रू० सौ में सूर सैंस में काणो, सब सें खोटो ऐंचाताणो ।
ऐंचाताणो करी पुकार, कंजै सें रहियो हुंसियार ॥

३११५. सौवां पीछै भी साहजी क्यूं ?

सौ के बाद भी साहजी की बारी क्यों आये ?

संदर्भ कथा—एक सेठ यात्रा पर जा रहा था । साथ जाने वाले सौ हथियार-बंद रक्षक तैयार हो चुके थे । जब सारी तैयारी पूरी हो चुकी तो रक्षकों के सरदार ने साहजी से निवेदन किया कि अब विदा होना चाहिए । साहजी ने उससे पूछा कि अभी समय क्या हुआ होगा ? सरदार बोला कि आधी रात बीत रही है । यह सुन कर सेठ बोला कि यह तो चोरी-डाके

का वक्त है, इस वक्त नहीं चलेगे। सरदार ने कहा कि हम सौ आदमी आपके साथ हैं और जब तक हम सौ के सौ काम न आ जायेंगे, आपके ऊपर कोई आंच नहीं आयेगी। इस पर सेठ बोला कि सौ के बाद भी साहजी की बारी क्यों आये ? और साहजी ने यात्रा स्थगित कर दी।

३११६ **सौ सुनार की, एक लुहार की।**

लुहार की एक ही चोट सुनार की सौ चोटों के बराबर है।

जबरदस्त एक ही बार में सारी कसर निकाल लेता है।

३११७. **सौ सौ चूसा खा कर बिलाई हज करण नै चाली।**

अनगिनत पाप करके अब तीर्थ यात्रा को चले हैं।

३११८. **सौ स्याणा, एक मत।**

सौ सयाने, एक मत।

३११९. **स्याणी सासरै जा अर बावळी सीख दे।**

सयानी सुसराल जा रही है और बावली उसे शिक्षा देती है।

३१२०. **स्याणो आदमी लीक कोनी पीटै।**

सयाना आदमी लीक नहीं पीटता।

सन्दर्भ कथा—किसी मंदिर में एक सूरदास पूजा किया करता था। वह दो रोटी बना कर भगवान् को भोग लगा देता और फिर उन रोटियों को खा लिया करता। लेकिन मंदिर में एक बिल्ली हिल गई और जैसे ही सूरदास भगवान् की मूर्ति के आगे रोटियां रखकर हाथ जोड़ता, वैसे ही वह रोटियों को उठाकर भाग जाती। पुजारी भूखा रह जाता। तब उसने एक युक्ति निकाली। उसने काठ की एक बड़ी मेख बनवाई और जब वह भोग लगाता तो उस मेख को रोटियों में ठोंक देता, जिससे बिल्ली उन्हें नहीं लेजा पाती।

सूरदास की मृत्यु के बाद उसका एक चेला पूजा करने लगा। यद्यपि वह अन्धा नही था, तथापि गुरु की परिपाटी को निभाने के लिए वह भी रोटियों में मेख अवश्य ठोंकता। उसके बाद तीसरा पुजारी आया। वह कुछ समझ-दार था। उसने किसी वयोवृद्ध से मेख ठोंकने का रहस्य पूछा और सारी बात जानकर उसने रोटियों में मेख ठोंकना बंद कर दिया।

३१२१. **स्यामीजी नै साटै की, दे खसम कै भाठै की।**

साधु-मोडों को तो साटे की रोटी देती है और पति को कोरा रखती है।

कुछ स्त्रियां पति की तो उपेक्षा करती है और साधु संन्यासियों की आवभगत करती हैं।

साटा = पूड़ी आदि बेलने से पूर्व उसमें जो घी दिया जाता है, उसे साटा कहते हैं।

३१२२. **स्या'मीं मिलज्या काणो, तो बैकूंठ भी नईं जाणो ।**
यात्रा के लिए प्रस्थान करते समय यदि काना सामने मिल जाए तो लाभप्रद यात्रा भी स्थगित कर देनी चाहिए ।

३१२३. **स्याळ सींगी सफेद बाजा, क्या करे उसका रूठ्या राजा ।**
जिसके पास उपरोक्त दोनों चीजें हों, उसे किसी बात की कमी नहीं रहती और रूठा हुआ राजा भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता ।

३१२४. **स्याळो भोगी को, ऊन्याळो जोगी को ।**
भोगी के लिये शीत ऋतु एवं योगी के लिए ग्रीष्म ऋतु अच्छी होती है ।

३१२५. **हँगायो अर उमायो रैवै कोनी ।**
शौच की हाजत वाला और उमंग में भरा हुआ रोके नहीं रुकता ।

३१२६. **हँसती हँसती कूवै में जा पड़ी ।**
हँसी-हँसी में बात बिगड़ गई ।

३१२७. **हँसली तो घड़ाल्यूं, पण घर को धणी बस में कोनी ।**
हँसली तो घड़वालूं, लेकिन पति ही वश में नहीं तब क्या हो ?
हँसली = गले का एक आभूषण ।

३१२८. हठीला हठ छोड़ दे, 'क कठै पग भी मंडै ?

सन्दर्भ कथा—एक सियार ने किसी सिंह को शिकार करते देखा तो उसने अपनी सियारिन से आकर कहा कि मुझे भी शिकार करने की कला आ गई है। सियार की बात सुनकर सियारिन को हँसी आ गई । इस पर गीदड़ ने उसे डांटा और शिकार करने के लिये जोरों से दौड़ पड़ा । थोड़ी ही दूरी पर एक ऊंट चर रहा था । गीदड़ ने झाड़ में घुस कर उसके मुँह पर पंजा मारा । ऊंट ने अपनी गरदन ऊंची उठाई तो गीदड़ भी साथ ही लटका चला गया । सियारी ने अपने पति की यह हालत देखी तो उसने उससे पुकार कर कहा—हठीले हठ छोड़ दो । सियार ने उत्तर दिया कि मैं तो अपना हठ छोड़ने के लिए तैयार हूँ, लेकिन कहीं जमीन पर पैर भी तो टिक पायें, कम्बख्त ने पांच हाथ ऊपर उठा रखा है—

सुन्दर का बोल मेरै मन भावै ।
पण धरती पर पाँव मंडण भी पावै ?

३१२९. हड़क्यो भड़क्यो तीन दिन ई रैवै ।
पागल कुत्ते के काटने से हड़काया हुआ तीन दिन ही जीवित रहता है ।

३१३०. हणमानजी को बळ याद दयायां आवै ।
हनुमानजी को अपना बल याद दिलाने से ही याद आता है ।

३१३१. हतकार की रोटी, चौवटै ढकार ?
हत्कार की रोटी खाये और बाजार के चौराहे पर डकार ले ।
थोथे अहंकार का प्रदर्शन ।

३१३२. हथणी मोल न म्हैसरणी मोल ।
माहेश्वरियों में कभी विवाह सम्बन्ध हेतु लड़की की बड़ी कीमत चुकानी पड़ती थी ।

३१३३. हथेळी में सिरसूं कोनी उगै ।
हथेली में सरसों नहीं उग सकती ।
रू० हथेळी में सिरसूं कानी 'वाई जा ।

३१३४. हम चौड़ा, गळियारा सांकड़ा ।
हम चौड़े, रास्ता संकरा ।
अतिशय अभिमानी व्यक्ति के लिए जो झूठे घमंड में भरा रहता है ।

३१३५. हर कठै अर मन कठै ।
ईश्वर कहीं और मन कहीं ।
हाथ में तो माला फिरती रहे एवं मन कहीं और रमता रहे ।

सन्दर्भ कथा—एक मौलवी अपना मुसल्ला बिछा कर नमाज पढ रहा था कि एक कामातुर नायिका अपने यार के पास जाती हुई उधर से गुजरी । वह अपनी धुन में जा रही थी । उसने मौलवी या उसके मुसल्ले को नहीं देखा और वह मुसल्ले पर पैर रखती हुई चली गई । इस पर मौलवी को बड़ा गुस्सा आया और उसने सोचा कि लौटते वक्त उसकी खबर लूंगा । बहुत देर बाद जब वह लौटी तो मौलवी उस पर बरस पड़ा और उसे पीटने के लिये उतारू हो गया । इस पर युवती ने कहा—

नर रांची जान्यो नहीं, तैं कस लख्यो सुजान ।
पढ़ि कुरान बोरो भयो, नहीं रांच्यो रहमान ।।

अर्थात् हे सुजान, मैं तो मनुष्य में अनुरक्त थी, इसलिये मेरा ध्यान तुम्हारे मुसल्ले की ओर नहीं गया । लेकिन तुम तो खुदा से लौ लगाये थे, फिर भला तुमने कैसे जाना कि मेरा पैर चादर पर पड़ गया है ? तुम तो बस कुरान पढ़ कर घमंड में भूल गये हो, वास्तव में तुम्हारा मन ईश्वर में लगा ही नहीं है । उसकी बात सुनकर मौलवी लज्जित हो गया ।

३१३६. हरख्यो हरख्यो फिरत है, आज हमारो ब्या ।
तुळसी गाय बजाय कर दियो काठ में पा ।।
दूल्हा हर्षित होकर घूम रहा है कि आज उसका विवाह है, लेकिन उसे यह पता नहीं है कि वास्तव में गा बजाकर उसे काठ में दिया जा रहा है. अर्थात् बंधन में जकड़ा जा रहा है ।

३१४७. हवा हवा को मोल है ।

परिस्थिति के अनुसार मूल्यों में भी परिवर्तन होता रहता है ।

३१४८. हस्त बरसै चितरा मंडरावै, घर बैठ्यो करसो सुख पावै ।

हस्त नक्षत्र में वर्षा हो एवं चित्रा नक्षत्र में बादल मंडरायें तो अच्छा जमाना होने से किसान सुखी हो ।

रू० हस्तीड़ो तो 'मे बरसावै, चितरा उमड़्या बादळ लावै ।
समैं निपजसी सांतरो, करसां कै मन मोद न मावै ।।

३१४९. हस्ती जातो पूंछ हलावै, घर बैठ्यां गीऊं निपजावै ।

हस्त नक्षत्र के समाप्त होते होते यदि वर्षा हो जाए तो गेहूँ की खेती के लिए बहुत लाभदायक हो ।

३१५०. हांडी में रूप, पेई में सिरणगार ।

अच्छा खाने-पीने से रूप निखरता है एवं पेटी में आभूषण आदि हों तभी शृंगार हो सकता है ।

३१५१. हांसी में खांसी होज्या ।

हँसी-हँसी में झगड़ा हो जाता है ।

रू० हांसी में फांसी होज्या ।

संदर्भ कथा—एक सेठ के घर में बड़ा घाटा आ गया और रोटियों के भी लाले पड़ गये । तब उसकी स्त्री ने कहा कि ऐसा कब तक चलेगा, कुछ दिन मेरे पीहर चलकर रहा जाए । उसके कहने पर सेठ अपनी स्त्री एवं इकलौते बालक को लेकर अपनी सुसराल की ओर चल पडा । लेकिन रास्ते में उसकी स्त्री ने सोचा कि अपने दामाद को ऐसी गिरी हालत में देख कर मेरे पीहर वाले क्या कहेंगे, और मेरी भाभियां तो तानों के मारे जीने ही नहीं देंगी । यों सोचकर वह पानी पीने के बहाने अपने पति को कुएं पर ले गई और अवसर पाकर उसे कुएं में धकेल दिया । फिर वह अपने छोटे बालक को लेकर पीहर चली गई ।

इधर सेठ को किसी ने कुएं में से निकाल दिया और वह एक शहर में जाकर धंधा करने लगा । थोड़े ही समय में उसके पास काफी धन हो गया और वह अपनी बहू और बेटे को अपने घर ले आया । बेटा भी अब सयाना हो गया था, अतः उसने उसका विवाह कर दिया । लेकिन बहू बड़ी कर्कशा आई । वह सास से नित्य ही झगड़ती रहती थी । एक दिन सेठ भोजन कर रहा था । सूर्य की धूप उस पर पड़ रही थी तो उसकी स्त्री ने अपने आंचल से छाया करदी । यह देख कर सेठ को हँसी आ गई कि एक दिन तो इसने मुझे कुएं में धकेला था और आज आंचल से छाया कर रही

है। पुत्रवधू को इस रहस्य का पता लगा तो उसे सास को छकाने का गुरु-मंत्र मिल गया। वह बात-बात पर उससे कहने लगी कि तुम तो वही हो न ! जिसने श्वसुरजी को कुएं में धकेला था ? इससे दुखी होकर सेठानी ऊपर के कमरे में चली गई और वहीं फांसी लगाकर मर गई। थोड़ी देर बाद सेठ आया और पत्नी की दशा देखकर वह भी फांसी लगाकर मर गया। मां-बाप को मरा देख कर बेटे को बड़ा दुःख हुआ और उसने भी फांसी लगा ली। अब बहू अकेली क्या करती ? उसने भी उन तीनों का अनुसरण करना ही अच्छा समझा और इस प्रकार जरासी हँसी ने चारों की जान ले ली।

३१५२. **हाकम को 'मूं तोप होवै।**
हाकिम का मुंह तोप होता है, पता नहीं, वह क्या हुक्म दे दे।

३१५३. **हाकम चल्यो जा, पण हुकम रैज्या।**
हाकिम चला जाता है, लेकिन उसका दिया हुआ हुक्म कायम रह जाता है।
रू० हाकम चल्योजा, हुकम कोनी जा।

३१५४. **हाकम बैद रसोइया, नट वेस्यां अर भट्ट।**
इण सें कपट न कीजिये, इणका रच्या कपट्ट॥
हाकिम, वैद्य, रसोइया, नट, वेश्या और भट्ट से छल नहीं करना चाहिए क्योंकि इनसे कुछ छिपा नहीं रहता।

३१५५. **हाक मारचां किसो कूवो खुदै ?**
हाँक मारने से कुआँ नहीं खुदता।

३१५६. **हाकमी गरमाई की, दुकानदारी नरमाई की।**
हाकिमी कड़ाई से होती है और दुकानदारी नम्रता से।

३१५७. **हाजर में हुज्जत नईं, गैर में तलासी नईं।**
जो पास में है, उससे इन्कार नहीं; जो नहीं है, उसका कोई उपाय नहीं।

३१५८. **हाट जा वजार जा, भांवें करल्या चोरी।**
जे कमाणै की जुरत नईं, तो क्यूं परणै थो गोरी ?
पत्नी अपने अनकमाऊ पति से कहती है कि चाहे हाट-बाजार से कमा कर लाओ, चाहे चोरी करके, लेकिन घरेलू सामान तो लाना ही पड़ेगा। यदि तुम्हारी कमाने की जुरअत नहीं थी तो विवाह क्यों किया था ?

३१५९. **हाडो ले डूब्यो गणगोर।**
हाडा अपने साथ गणगौर को भी ले डूबा।

हाडा चौहान क्षत्रियों की एक शाखा है। राजस्थान में बूंदी और कोटा इनके राज्य रहे हैं। कविराजा श्यामलदास द्वारा लिखित 'वीर विनोद' नामक ग्रन्थ (पृ० ११४, बूंदी की तवारीख) के अनुसार बूंदी के राव बुद्ध-

सिंह का छोटा भाई जोधसिंह वि० सं० १७६३, चैत्र शु० ३ को गनगौर के दिन नाव में बैठ कर जैतसागर तालाब में सैर कर रहा था सो मस्त हाथी के हमला करने से गनगौर एवं अन्य साथियों सहित तालाब में डूब कर मृत्यु को प्राप्त हुआ और उस दिन से वहां गनगौर का त्यौहार मनाना बन्द हो गया।

३१६०. **हाथ कंगण नै आरसी के ?**
हाथ में पहने हुए कंगन को दर्पण में देखने की क्या आवश्यकता ?
प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या जरूरत।

३१६१. **हाथ को गास अर बैकूंठां को बास।**
जो अन्न का दान देता है, वह वैकुंठ में जाता है।
खाने के लिए अन्न उपलब्ध हो तो यहीं वैकुंठ है।

३१६२. **हाथ पसारणै सें पग पसारणा चोखा।**
किसी के आगे हाथ पसारने की अपेक्षा मरना अच्छा।

३१६३. **हाथ पोलो देस गोलो।**
हाथ का दातार हो तो सब कोई उसका काम करने के लिए तैयार रहते हैं।

३१६४. **हाथ में लियो कांसो तो मांगणै को के सांसो ?**
जब हाथ में भिक्षा-पात्र ले लिया तब मांगने में हिचक कैसी ?

३१६५. **हाथ सुमरणी, बगल कतरणी।**
हाथ में सुमरनी एवं बगल में कतरनी।
रू० (१) 'मुं में राम, बगल में छुरी।
(२) हिरदै घात, गऊमुखी में जाप।

३१६६. **हाथां लगावै, पगां बुझावै।**
इधर-उधर के भाठे भिड़ाने वाला आदमी।

३१६७. **हाथी आगै लकड़ी है।**
हाथी के आगे लकड़ी है, चाहे तो छोड़ दे, चाहे तो तोड़ दे।
रू० हाकम कै 'मूंडै न्याव है।

३१६८. **हाथी का दांत खाणै का दूसरा अर दिखाणै का दूसरा।**
हाथी के खाने के दांत और, दिखाने के और।

३१६९. **हाथी कै गैल यूं हीं गंडक घूंसता रवै।**
हाथी के पीछे यों हीं कुत्ते भौंकते रहते हैं, वह उनकी परवाह नहीं करता।
नीच आदमी बड़ों की निंदा करते रहते हैं, लेकिन वे उनकी बातों पर ध्यान ही नहीं देते।

३१७०. **हाथी कै पग में सगळा पग समाज्या।**
हाथी के पदचिह्न में सब जानवरों के पद चिह्न समा जाते हैं।
रू० हाथी कै खोज में सगळा खोज समाज्या।

३१७१. **हाथी नै हिलावड़ो कुण कैवै ?**
समर्थ को कौन दोष दे ?

३१७२. **हाथियां सें हळ कोनी वाया जावै ।**
हाथियों से हल नहीं चलवाये जाते ।

३१७३. **हाथी मरचो तो ई लाख को ।**
हाथी मरने पर भी लाख रुपये का ।
हाथी के दांतों आदि की बड़ी अच्छी कीमत मिलती है ।

३१७४ **हाथी सें हजार पेंड, लाख पेंड लूंड सें ।**
तिरिया सें तेतीस पेंड, कोड़ पेंड भूंड सें ॥
उपरोक्त चारों से बचकर ही रहना चाहिये ।
भूंड = निंदा, अपकीर्ति ।

३१७५. **हाथी हजार को, म्हावत कोडी च्यार को ।**
कीमत हाथी की होती है, महावत की नहीं ।

३१७६. **हा बिना धा कोनी ।**
अपनत्व के बिना ममता नहीं ।

३१७७. **हामणियां रे ! 'क हां भाई । काम करैगो ? ना भाई ।**
कामचोर व्यक्ति को काम करते मौत आती है ।
रू० हामणियां रे, 'क हाय मावड़ी,
'क यूं क्यूं करचो ?
'क मैं देख्यो कोई काम उठासी ।

३१७८. **हाय घोड़ो, दिन थोड़ो ।**
पूरा दिन हाय-तोवा करते ही बीतता है ।

३१७९. **हारलो नीं डोरलो, बोरलो ई बोरलो ।**
गहने के नाम पर हार, डोर कुछ नहीं, केवल एक बोर है जिसका ही बार-बार बखान किया जा रहा है ।

३१८०. **हारे को बिसराम, तमाखू बापड़ी ।**
तंबाकू हारे हुए मनुष्य का श्रम मिटाती है, उसे ताजगी प्रदान करती है ।

३१८१. **हारै सो विच्यारै ।**
हारने वाला ही तरह-तरह के सोच विचार करता है ।

३१८२. **हारचो आक चावै ।**
जीवन में हारा हुआ (असफल) व्यक्ति ही आक चवाता है ।
वह मजबूरी में न करने योग्य काम भी करता है ।

संदर्भ कथा—एक सेठ कभी बड़ा मालदार था लेकिन दुर्भाग्य से एकदम गरीब हो गया । घर में दो जून खाने को भी न रहा । तब उसने

अपनी स्त्री को भेज कर पड़ोसिन से दस रुपये उधार मंगवाये और कमाने के लिए चल पड़ा। चलते-चलते वह एक गाँव में पहुँचा। गाँव बड़ा था, बहुतेरी दुकानें थीं, ऊँचे-ऊँचे मकान भी थे, लेकिन सभी आदमियों के बाल और नाखून बढे हुये थे। वह जान गया कि यहाँ कोई नाई नहीं है। सेठ ने बड़ी ही अनिच्छा और मजबूरी से नाई का काम करने का निश्चय कर लिया। वह निकटवर्ती शहर में गया और राछों सहित एक रछैनी खरीद कर पुनः उस गाँव में पहुँचा। हजामत करवाने वालों का जमघट लग गया और उन्होंने मुँह-मांगे दाम 'नाई' को दिये। उसके पास जल्दी ही अच्छी रकम जुट गई और वह घर को लौट पड़ा। घर पहुँचने पर जब उसकी औरत ने उससे पूछा कि इतनी जल्दी इतना धन कहाँ से ले आये तो उसने एक दीर्घ निश्वास लेकर कहा कि आक चबा कर लाया हूँ।

३१८३. **हारचो जुवारी दूणो डाव धरै।**
हारा हुआ जुआरी दुगना दाँव लगाता है। उसे यही आशा रहती है कि इस बार सारी कसर निकाल लूंगा।

३१८४. **हाल ताईं तो बेटी बाप कै है।**
अभी तक तो बेटी बाप के यहाँ ही है।
अभी तक तो कुछ नहीं बिगड़ा है।

३१८५. **हाळी कातिक में स्याणो होवै।**
किसान कार्तिक में सयाना होता है।
कार्तिक में फसल पक जाने पर वह ऊहापोह करता रहता है कि यदि ऐसा करते तो ऐसा हो जाता।

३१८६. **हिंदुवां में छोटै नै ईं मुसकल।**
हिन्दुओं में जो छोटा होता है उसी को मुश्किल होती है क्योंकि छोटा-मोटा हर काम उसे ही करना होता है। छोटे की उपस्थिति में बड़ा काम नहीं करता।

३१८७. **हिंदु कैवतो सरमावै, लड़तो कोनी सरमावै।**
काम करवाते समय तो मजदूरी आदि तय करने में हिन्दू संकोच करता है, लेकिन फिर झगड़ने में संकोच नहीं करता।

३१८८. **हिरण बड़ा'क हर बड़ा, सुगन बड़ा'क स्याम ?**
अरजन रथ नै हांक दे, भली करै भगवान ।।
प्रस्थान के समय हिरन को बाईं ओर आया देख कर अर्जुन को शंका हुई तो किसी ने कहा कि शकुन बड़ा है या भगवान् ? जब स्वयं भगवान् तुम्हारे रथ

को हाँकने वाले हैं तब अपशकुन कैसा ? इसलिए निर्भय होकर रथ को चलाने दो ।

यात्रा के समय हिरनों का दायें आना अच्छा शकुन माना जाता है—

मृगमाला फिरि दाहिनि आई । मंगल गन जनु दीन्हि देखाई ।

३१८६. हिरणां कै सींगां की गादड़ां नै कद सुहात ?

हिरनों के सींग गीदड़ों को कब सुहायें ?

३१६०. हिली-हिली बांदरी, गुड़ मतीरा खाय ।

जिसे चोरी की आदत पड़ जाती है, उससे रहा नहीं जाता ।

३१६१. हिसाब बैठै ज्यूं को ज्यूं, छोरा-छोरी डूब्या क्यूं ?

हिसाब बराबर ज्यों का त्यों बैठता है, फिर छोरे-छोरी क्योंकर डूब गये ?

संदर्भ कथा—एक कायस्थ अपने परिवार सहित किसी गाँव जा रहा था। रास्ते में एक उथली नदी पड़ी। कायस्थ ने फीते से इस किनारे से लगा कर उस किनारे तक की गहराई का औसत निकाला तो तीन फुट निकला । उसने सोचा कि इतनी गहराई में कोई नहीं डूबेगा । इसलिए वह सब के साथ नदी में उतर गया । लेकिन आगे चल कर उसके लड़के-लड़की पानी में डूब गये। इस पर उसने दुबारा पानी की गहराई का औसत निकाला तो उतना ही निकला । इस पर वह बोल पड़ा कि हिसाब ज्यों का त्यों बैठता है, फिर लड़के-लड़की डूब कैसे गये ?

३१६२. हींजड़ां की कुमाई मूंछ मुंडाई में चली जा ।

हिजड़ों की कमाई मोंछ मुंडवाई में चली जाती है ।

हिजड़ों के मोंछें होती हैं, लेकिन वे जनाने वेश में रहते हैं, अतः उन्हें बार बार मोंछें मुंडवानी पड़ती हैं और इस तरह नाच-बजा कर जो कुछ वे लाते हैं, वह मोंछों को मुंड़वाने में ही चला जाता है ।

३१६३. हीणी लरड़ी तेरा जगां सें कटै ।

ऊन काटते समय दुर्बल भेड़ तेरह जगह पर कट जाती है ।

कमजोर को ही विशेष हानि होती है ।

३१६४. हीणो जेठ देवरां बरोबर ।

हीन जेठ देवरों के बराबर। छोटे भाइयों की बहुएँ भी उससे लज्जा नहीं करतीं ।

३१६५. हीरां की परख जूंरी करै ।

हीरों की परख जौहरी ही कर सकता है ।

३१६६. हुंडी अर पैठ दोनूं ईं खोटी ।

हुंडी के गुम हो जाने पर उसके बदले पैंठ लिख कर दी जाती थी और इस पैठ को दिखलाने पर भुगतान मिल जाता था । लेकिन जब हुंडी और पैठ दोनों ही खोटी हों तो भुगतान क्या मिले ?

३१९७. हुकम हमारा, जोर तुमारा ।

हुक्म हम देते हैं, तुम्हारे में ताकत हो तो उसकी अनुपालना करवालो ।

३१९८. हुणियारां सें देस भर्‌या पड़्या है ।

उनहारों से देश भरा है ।

हमशक्ल बहुतेरे मिल जाते हैं ।

३१९९. हूं तो गांव की बेटी, पण भुआं सें सेलो पडूं हूं ।

हूँ तो गाँव की बेटी, लेकिन बहुओं से तेज पड़ती हूँ ।

किसी कुलटा की गर्वोक्ति ।

३२०० होडां होळी, होडां पोळी; होडां बेटो जण ये भोळी ।

एक ईर्षालु स्त्री ने पड़ोसिन की देखा-देखी खूब जोरों से होली मनाई एवं उसके घर की पोल के अनुरूप ही पोल बनवाई । लेकिन कुछ समय बाद पड़ोसिन ने पुत्र प्रसव किया तो ईर्षालु स्त्री के पति ने अपनी स्त्री से कहा कि अब पड़ोसिन की होड़ में तू भी पुत्र प्रसव करे तब जानूं ।

३२०१. होणी माता नै निमसकार है ।

भवितव्यता को नमस्कार है ।

रू० होणी कद टळै ?

३२०२. होत की भैण, अणहोत को भाई ।

बहिन तो संपन्नता में ही स्नेह जनाती है, लेकिन भाई विपत्ती में भी अपनत्व रखता है एवं सहायता करता है ।

रू० सपूत को बाप, कपूत की माई,
होत की भैण, अणहोत को भाई,
निरधन होय सासरै मत जाई,
पीठ पीछै नार पराई ।

३२०३. होत को के सराये, अणहोत को के विसराये ।

जिसके पास आवश्यकता से अधिक हो उसकी क्या प्रशस्ति की जाए और जिसके पास न हो उसकी क्या निंदा की जाए ?

३२०४. होय शुक्र अस्त आसोज मास ।
सब लोग सुखी आनन्द तास ।

आसोज मास में शुक्र का अस्त होना सबके लिए आनंददायक होता है ।

३२०५. होळी गई दमोदर आयो ।

संदर्भ कथा—होली के दिनों में गाँव के लोगों ने एक किसान को बड़ा तंग किया जिससे उसने घर से बाहर निकलना छोड़ दिया । जिस रात होली जलाई गई तो उसने संतोष की सांस ली और बोला कि अब कल से बाहर

निकलूंगा। लेकिन बड़े तड़के ही उसने गनगौर पूजने वाली लड़कियों को 'दामोदर वासदेवा' गाते सुना तो उदास होकर बोला कि अब तो एक के बदले दो आ गये हैं, इनसे भला कैसे पिंड छूटेगा।

रू० एक गई, दो आया।

३२०६. **होळी तो कपूत सें सुधरै।**

होली तो कपूतों से ही सुधरती है क्योंकि वे ही अधिक ऊधम मचाते हैं।

३२०७ **होळी पीछै धावळो, मार खसम कै मूंड।**

होली के बाद धावले की क्या उपयोगिता ?

रू० तीजां पीछै तीजड़ी, होळी पीछै ढूंढ।
फेरां पीछै चूनड़ी, मार खसम कै मूंड।

३२०८. **होळी बळबा की वखत, कुणसी बाजै बाय।**
पूरब दिस की जे होवै, राजा परजा सुख थाय।

होली 'मंगळाते' (जलाते) समय यदि पूर्व दिशा की वायु हो तो राजा और प्रजा के लिए शुभ होती है।

३२०९. **होळी बीती सावण आयो, पांचें बीती पख बोळायो।**

होली बीतने पर सावन शीघ्र आ जाता है और पंचमी तिथि के बीतने पर पक्ष पूरा हो गया, ऐसा मान लिया जाता है।

79973

सन्दर्भ-सूची

१. श्री भागीरथ कानोड़िया (मुकुन्दगढ) का संग्रह।

२. श्री गोविन्द अग्रवाल (चूरू) का संग्रह।

प्रकाशित पुस्तकें :

१. राजस्थानी कहावतें, सम्पादक—डा. कन्हैयालाल सहल।

२. राजस्थानी कहावतें : एक अध्ययन—डा. कन्हैयालाल सहल।

३. राजस्थानी हिन्दी कहावत कोश (प्रथम जिल्द), सम्पादक-विजयदान देथा, भागीरथ कानोड़िया।

४. प्रकृति से वर्षा ज्ञान (पूर्वार्द्ध व उत्तरार्द्ध), डा. जयशंकर देवशंकरजी शर्मा।

५. रिपोर्ट मर्दुम शुमारी—राज मारवाड़, बाबत सन् १८९१ ई०।

पत्र-पत्रिकाएँ :

मरु भारती (पिलानी), वरदा (बिसाऊ), राजस्थान भारती (बीकानेर), विश्वंभरा (बीकानेर), राजस्थानी (कलकत्ता), शोध पत्रिका (उदयपुर)।

गौण स्रोत :

१. वाल्मीकीय रामायण (गीता प्रेस, गोरखपुर)।

२. रामचरित मानस (गीता प्रेस, गोरखपुर)।

३. भारतीय अभिलेख संग्रह (खण्ड—३), अनु० गिरिजाशंकरप्रसाद मिश्र।

४. चूरू मण्डल का शोध पूर्ण इतिहास, गोविन्द अग्रवाल।

कहावतों के साथ दी गई अधिकांश संदर्भ कथाएँ 'मरु भारती' (पिलानी) के विविध अंकों में धारावाहिक रूप में प्रकाशित श्री गोविन्द अग्रवाल के 'राजस्थानी लोक कथा कोश' से ली गई है।

कहावतों की पाण्डुलिपि तैयार करते समय चूरू के श्री चन्द्रशेखर व्यास से समय-समय पर चर्चा होती रही है।

विशेष सूचना :

प्रस्तुत 'राजस्थानी कहावत कोश' के एक सम्पादक श्री गोविन्द अग्रवाल, 'चूरू मण्डल का शोध पूर्ण इतिहास' आदि अनेक ग्रन्थों के प्रणेता एवं 'मरु श्री' शोध-पत्रिका के सम्पादक श्री गोविन्द अग्रवाल हैं। चूरू के ही श्री गोविन्दराम धानुका जो प्रायः कलकत्ता रहते हैं और प्रो० गोविन्द अग्रवाल के नाम से लिखते है, वे सर्वथा दूसरे हैं।